

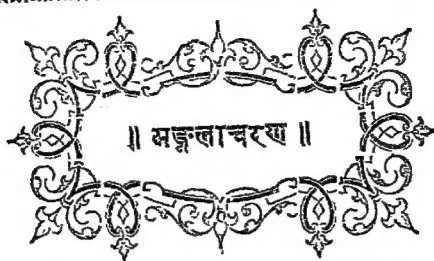
॥ॐ॥ प्रशस्तिः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ श्रीमद्वीरजिनेन्द्र तीर्थतिलकः सद्भूत
संपन्निधिः । संजज्ञे सुगुरुः सुधर्मगणप्युक्त
स्यान्वये सर्वतः । पुण्येचांद्रकुलेऽभवत्सु
विहिते पक्षे सदाचारवान् । सेव्यः शोभन
धीमतां सुमति सानुद्द्योतनः सूरिराट् ॥

१ ॥ आसीत्तत्पदपंकजैक सधुक्कत् श्रीवर्द्ध
मानाभिधः । सूरिस्तस्य जिनेश्वराख्यगणप्युक्त
ज्जातो विनेयोत्तमः । यः प्रापत् शिवसिद्धि
पंक्तिशरदि (११ ट०) श्रीपत्तनेवादिनो ।
जित्वासद्विवदंकातो खरतरेत्याख्यं नृपादे
सुखात् ॥ २ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ गच्छेचारुतरे वृहत्खरतरोऽश्विचंद्र
सूरीश्वराः । राजंते सलुजेन्द्र सेवितपदाः ।
शास्त्रार्थवागीश्वराः । स्तत्यादाब्जपराग
पानमधुपालक्ष्मीप्रधानावराः । सन्नोलादि
गुणैर्युता सुगुरुवः संतोह सद्बीधराः ॥१॥

॥ॐ॥ तेषां विनयेन सुमोहनेन । सच्चक्ष्ण
पूजादिविचारगम्भी । संकीर्तितेयं खलु
बालशिखा । सिद्धांतसारार्थविदां सुदेवै ॥२॥



॥ भङ्गलाचरण ॥

॥०॥ तीन तत्वकों नमन कर । सेजं सद्गुरु पाय ।
 देवी भगवती सानिधै । वचन अष्टत रस आय ॥ १ ॥
 चौरासी लक्ष जोनिसे । जे रक्षा जीव अनन्त । लोह मि
 थ्यात वसै प्रद्या । पायो दुःख नहीं अन्त ॥ २ ॥ परम देव
 परमात्मता । चिदानन्द गुणचंग । भव्य जीवको हित अणी ।
 भेद कछा सज्ज अङ्ग ॥ ३ ॥ गणधर गैतम आदि सज्ज ।
 रचिया अङ्ग अनूप । लिखरण ऊं प्रणखुं सदा । ज्ञान आ
 तमगुण भूप ॥ ४ ॥ आचारज उवजाय सुनि । भगवन वच
 न उपेत । भाष्य टोका निर्युक्ति कर । प्रगट कीया संकोत
 ॥ ५ ॥ भगवती सुख सांहे कछा । आगमना पंच अंग ।
 सरधै जे भवि प्राणिया । पारसे नित उठरङ्ग ॥ ६ ॥ जैवता
 वरतो सदा । सज्ज जगपंथव ज्ञान । पिण उपगारी भव्य
 कों । ए श्रुतज्ञान प्रधान ॥ ७ ॥ दुष्ट कर्म संयोग से ।
 चित बैठै नहीं ज्ञान । पिण जाणुं सुरतर सलो । ए ही
 क धर्म प्रधान ॥ ८ ॥ प्रबल भाव्य संयोग से । पारस दर
 सण पाय । पारस फरखां लोह सज्ज । गुणकञ्चण सस
 पाय ॥ ९ ॥ जिन दरसण सुज्ज बनवख्यो । जे प्रगटे चित
 आय । कर्मशुद्ध दल जीपको । सिवरमणी वरं जाय ॥ १० ॥
 सिव पुर जोवा कारखे । सलकित हृदकौ हेत । बाल अञ्ज
 तोहन भणी । रत्नसानर गुण देत ॥ ११ ॥ ॥०॥

॥ॐ॥ (सुभचिंतक) सब जैनधर्मी सज्जन पुरुषोंको पढ़ने का वास्तै । बड़त पुस्तक से । बड़त रत्नवस्तु को । संग्रह करके । (यह) रत्नसागर (वा) मोहनगुण माला (प्रथम भाग) प्रसिद्ध किया है (इससे) बारै मासके अवस्य कर्त्तव्य । (पूर्वाचार्योंके रचित) पोसा पट्टिकमणादिकके सुल । (तथा) पोसा पट्टिकमणा करणेंकी विधि । भक्तामर । कल्याण मंदर । साते स्मरण (इत्यादि) बने बने स्तोत्र । सेतुंजरास । सिखरजीको रास । गौतम रास । (इत्यादि) कोईतरै के बने बने स्तवन । देवपूजा करणेंकी विधि । उली करणेंकी संपूर्ण विधि । और कोईतरै की तपस्या करणेंकी विधि । चैवमाससे फाल्गुन मास तक । अनुक्रम से सब पर्वोंके अधिकार तथा सेवन करणेंकी विधि । (और) स्नात । अष्ट प्रकारी (इत्यादिक) कोईतरैकी पूजायां । के ईतरै की सि उजायां (केई लावण्यां) । केई तरैके होलीके स्तवन । के ईतरैके रागरागणी के स्तवन । केई तरैके श्रीदादाजी के स्तवन । (इत्यादिक) बड़त रत्नवस्तु का संग्रह किया है । (साख्यात) यह पुस्तक रत्नवस्तु का समुद्र है । इसीसे (रत्नसागर) नाम रक्खा है ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ और जो इस पुस्तकमें रत्नवस्तु है । (सो) आत्माके मोहनगुण । ज्ञान । दर्शन । चारित्र । प्रगट करणेंकी श्रेणी है । (जिससे) मोहनगुणमाला (नाम रक्खा है)

॥ॐ॥ और सब पाठकगणकों प्रथम अपण नित्यनेम सीखना चाहिये । (इसीसे) प्रथम पाठकगणके उपगारा र्थ । (भाषासंयुक्त) सब नित्यनेमका संग्रह किया है (इससे)

(प्रथम भाग) नाम रक्खा है ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (इसके) द्वितीय भागमें । कोई तरैके । देवचंदजी । समे सुन्दर जी । क्षमाकल्याणजी । महाराजके प्रश्नोत्तर के ईतरैके बोल विचार (इत्यादिक) कोई रत्न वस्तु के संग्रह करणेंका उमेद है (सो) श्रीसंघके सहाय से होसकै गा ॥

॥ॐ॥ और सब भव्य जीवोंसे (यह प्रार्थना है) । इस पुस्तककों वज्रत विवेकसे यत्न करके रखणा (जिसमें) ज्ञानकी आसातिना नहो ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ और कषाय प्रमादादिक कै वस (जो) हमारा कसूर मालुम हो (तो) श्रीसंघ माफ करो । अणक राजाके तुल्य । गुणग्राही प्रणा धारण करकै । इस पुस्तकके गुण ग्रहण करो । इस पुस्तकसे कितने जीवोंके सब्बम प्राप्त होगा । यह पुस्तक धर्मरूपी कल्पद्रुमका बीज है । सेवन करणेंसे । मनचिंतित फल प्राप्ति होगा ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ और दिनप्रमाण साठघन्टी है ता है । (जिसमें) दो चार घन्टी तो । इस पुस्तकको जहर वाचणो पढणो रखणा । इस पुस्तककों पढते कुठ भूल मालुम हो (तो) विद्वज्जन कों पूठकै निश्चै करणा । प्रथम हमने यह पुस्तक ठपाया है (इसमें) कोई ठिकाणें । युक्त हरफ कम होणेंसे । ईकार । ऊकार । एकार । जूदा भिलाके लगा है । (इसी से) कोई ठिकाणें ढापैके दोष से । काना । मात । ठीक से न जठा हो । कुठ भूल मालुम हो (अथवा) कोई पुस्तक से संग्रह करणें में । चरमचक्षुसे (वा) मतिके स्वमसे । कोई ठिकाणें हरफका कम वेसपणा रहा हो (अथवा)

कोई तरैको भाषा मिलणेंसे । कुठ भाषाके दूषण मालुम हो
(अथवा) सिद्धांतसें विरुद्ध । उठो अधको कुठ बी लिखणें में
आयो हो (तो) बिकरण सुद्धै मिश्रामिदुक्कनं देताऊं ॥०॥

॥०॥ (शुद्धिपत्र) ॥०॥

॥०॥ सब पाठकगणकों मालुम रहै ॥०॥

॥०॥ पृष्ठ ५८ । पंक्ति शेषकी में । साते स्वरण सह
होते । अजित शान्ति स्तोत्र के एक पदमें । दो तीन हरफ
ठापै कौ दोषसें । उलटा होगया है । (उहां) ऐसा पद चहि
यै) अजियं निचियं च गुणेहि महासुणि सिद्धि गयं । अजि
यस्सय संति महासुणि० ॥०॥ ॥०॥

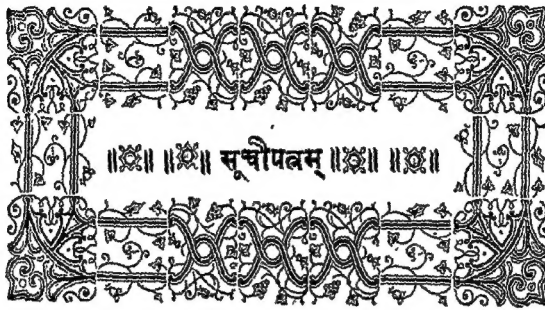
॥०॥ पृष्ठ ४१७ । पंक्ति १२ । पञ्चसण पर्वधिकारै
(नाससें) अमुद्ध ॥ (नामसें) सुद्ध ॥०॥

॥०॥ पृष्ठ ४७१ में । पंचकल्याणक जीकी टीप चलते
(जहां) मार्गशिर्ष द्वाष्णपक्ष है (उहां) शुक्लपक्ष चहियै
(जहां) शुक्लपक्ष है (उहां) द्वाष्णपक्ष चहियै ॥०॥

॥०॥ और कोई ठिकाणें कुठ भूल मालुम हो (तो)
उपगार बुद्धिसें गुरुके पास सुद्ध कराकै पढ़णा । ठग्नस्थकौ
अल्प बुद्धिसें यथावस्थित उपियोग रह सत्ता नहीं ॥०॥

॥०॥ (ठिकाना) ॥०॥

(यह पुस्तक) कोई भयजीवकौ लैणेंकी (वा) देशान्तरसें स
झाणें कौ इह्या हो (तो) कलकत्ता । बन्नावजार तुजापट्टीसें
निज कोठी 'लंबर (१४)' सेठिया गोत्र । श्रीगुह्य ससेरचन्द
की रूपचन्दजीकी नामको पत्र देखेसें । निठरावल प्रथम
मेजणेसें । जलदी पड़चैगा ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥



॥ प्रकरण नामः ॥

॥ पत्राङ्कः ॥

स्वर व्यंजन युक्तादि वर्णमाला	१
शिखावाक्य	४
वाक्यमंजरी	५
संघिसुत्र	७
हितोपदेश	७
ठिन् भगवन्तके नाम	१०
प्रतिक्रमण सुत्र सह	१२
साधुप्रतिक्रमण । चत्वारि मङ्गलं	१३
आवक प्रतिक्रमण । बंदिषु सुत्र	१८
१० पञ्चखाण । नवकारखादि	५२
१० पञ्चखाणोंके आगारों के अर्थ	५७
१० पञ्चखाण आगार संख्या गाथा	८०
सुहृत्पत्नी पद्मिलेहण । सुत्र अर्थ साचो	८१
वापनाचार्यकी कौ १३ पद्मिलेहण	८२

॥ॐ॥ प्रकरण ॥ॐ॥

॥ॐ॥ पत्राङ्क ॥ॐ॥

लघु अतीचार । आजूणा चौपहर० . . .	४२
वृद्ध अतीचार । नाणंमि दंसणं०	४३
जय तिङ्गअण वर कप्प रुक्ख०	५५
सति स्मरण सह	५८
लघुशांति । शांतिं शांति०	७२
बन्तो शांति । भो भो भव्या०	७४
बन्तो नवकार । किंकप्यत्तर०	७८
तिजय पङ्क्त (१७०) जिन स्तोत्रः	८१
दोसावहार । ६ ग्रह शांति स्तोत्रः	८२
जगद्गुरु० । ग्रहशांति स्तोत्रः	८३
जिनपंजर । आत्मरक्षा स्तोत्रः	८४
लघु जिनसहस्र नाम स्तोत्रः	८५
श्रीशीतल जिन स्तोत्रः	८८
श्रीशंखेश्वर पार्श्वजिन स्तोत्रः (१)	९०
श्रीपार्श्वजिन स्तोत्रः (२)	९१
२४ जिन नामगर्भित स्तोत्रः	९३
मङ्गलाष्टक स्तोत्रः	९५
परमात्मा गुण स्तोत्रः ०	९४
चतुसरण मंगलीक स्तोत्रः	९५
ऋषि मंजुल स्तोत्रः	९६
भक्तामर स्तोत्रः	१००
कल्याणमंदर स्तोत्रः	१०५
श्रीसेव ज रास	११०

॥ॐ॥ प्रकरण ॥ॐ॥

॥ॐ॥ पत्राङ्क ॥ॐ॥

श्रीसिखरजी को रास	११६
श्रीगौतम स्वामीको रास	१३०
श्रीगौतम स्वामी के श्लोक	१३३

॥ॐ॥ अथ पनरै तिथीकी धुयां सह ॥ॐ॥

महीमंजरी पुन सोवन्नदेहं०	१३३
पंच विदेह विषै विहरंता०	१३७
समदमोत्तम वस्तु०	१३७
वरमुत्तिवहार सुतारगणं०	१३८
पंचानंतक सुप्रपंच०	१३८
वीरं । देवं । नित्यं । वंदे०	१३८
यदं हि नमना देव०	१३८
विश्वनाथक लायक०	१३८
चौबीसे जिनवर०	१४०
मूरति मनमोहन०	१४०
अखसेन नरेश्वर०	१४१
अख प्रवज्या नमि०	१४१
सुख समकित दायक०	१४२
मिल चौबिह सुरवर०	१४२
द्रे द्रेकि धप मप धु धु०	१४३
सेवुंज गिर नमियै०	१४३
निरुपम सुख० नवपद धुई	१४४
बलि २ ऊं ध्याउं० पञ्चपण धुई	१४५
गिरनार मंजरी श्रीनेमिजिन धुई ..	१४५

॥ॐ॥ प्रकरण ॥ॐ॥

॥ॐ॥ पन्नाङ्क ॥ॐ॥

श्रीसीतल जिन युई	१४३
श्रीसर्वज्ञ ज्योतीरूपं०	१४३
पापायां पुर० दीवाली युई	१४७
सिद्धारथ ताता० दीवाली युई ...	१४८

॥ॐ॥ अथ प्रनरै तिथीके वने छोटे स्तवन ॥ॐ॥

सुगुणसनेही साजन०	१४८
श्रीसंखेसर पास०	१५०
सफल संसार अवतार०	१५०
मनमोहन माहाराज०	१५२
जय जय श्रीजिनराज०	१५३
प्रणखुं श्रीगुरुपाय० पंचमी० ...	१५४
प्रांचमि तप तुमे करो रे०	१५६
भविष्या श्रीजिनविंश जुहारो० ..	१५७
अंतरनामी सुण अलवेसर०	१५८
जयकारी जिनराज पुरसादाणी० ..	१५८
अमल कमल जिम धवल०	१५९
सुण सुण सेलुंज गिर खामी०	१६०
वरअंगण सुरतरु फल्यो जी०	१६०
पासजिनेसर जगति लोए०	१६१
समवसरण बैठा भगवंत०	१६३
तुं सेरै मनसे प्रभु तुं मे०	१६४
ओरा साहब हो श्रीसीतल०	१६५
चौरासी आसातना स्त०	१६६

॥ॐ॥ प्रकरण ॥ॐ॥

॥ॐ॥ पत्राङ्क ॥ॐ॥

चौबीस जिन देहमान स्त०	...	१६८
२४ जिन आयुप्रमाण स्त०	...	१६८
तेसठसिलाका पुरुष स्त०	...	१७०
मुहपत्ती पद्मिलेहण स्तवन	...	१७२
श्रीविमलाचल सिरतिलो०	..	१७४
ऋषभजिनेसर दिनकरसाहब०	...	१७५
बीर सुणो मोरी बीनती०	...	१७६
चौबीस दंढक स्तवन	...	१७८
इरियावही मित्रामिदुबद संख्या०	१८२
पंच समवाय स्तवन०	...	१८४
१४ गुणठाणा स्तवन	...	१८८
नवतत्व भाषागर्भित स्तवन	...	१८९
२४ दंढक भाषागर्भित स्तवन	...	१८८
जीवविचार भाषागर्भित स्तवन	..	२०२
समवसरण विचारगर्भित स्त०	...	२०६

॥ॐ॥ अथ सिञ्जायमाला ॥ॐ॥

ढंढण रिपजीने बंदणा०	२०८
धन्नाऋषि सिञ्जाय	...	२१०
कर्मसिञ्जाय देवदाणव०	२११
शौता जी सि०	२१३
अनाथी ऋष सि०	...	२१४
प्रतिक्रमण सि०	...	२१५
सात विसन सि०	...	२१५

। ॐ॥ प्रकरण ॥ ॐ॥

॥ ॐ॥ पत्राङ्क ॥ ॐ॥

उपदेस सि०	२१६
श्रीबाहुवलजी सि०	२१७
चेलणा महासती सि०	२१८
भूलो मनभमरा० वैराग्य सि० ...	२१८
बीरा म्हांरा गज थकी ऊतरो०	२२०
श्रीअरणक सुनी सि०	२२१
उतपत जोय जीव आपणी०	२२२
विजय सेठ विजया सेठाणी०	२२७
इखुकार राजा कमलावती राणी चौ०	२३०
उपदेशमाला पोसह सिब्जाय	२३४
राई संधारा राबो पोसह सि०	२३६

॥ ॐ॥ अथ आठ दिन कृत्य विधिः ॥ ॐ॥

प्रभात सामायक विधिः	२३८
राई प्रतिक्रमण विधिः	२४०
प्रभात सामायक पारण विधिः... ..	२४६
सिंजगकाल सामायक विधिः	२४७
देवसी प्रतिक्रमण विधिः	२४८
अठ पहरी पोसहविधिः	२५२
पांचे शक्ररुवे देववन्दन विधिः	२५५
पञ्चक्लाण पारण विधिः	२५६
राई संधारा विधिः	२५८
पोसहपारणविधिः	२६१
दिनकों चौपहरी पोसाविधिः	२६१

॥ॐ॥ प्रकरण ॥ॐ॥

॥ॐ॥ पत्राङ्क ॥ॐ॥

रात्रीको चौपहरौ पोसा विधि:	२६५
२४ थंनला पदिलेहणपाठ	२६५
२४ थंनला कहां करणा०	२६६
पत्नी । चौमासी । संबन्धरी । प्रति०...	२६६
ठम्मासी तपचिंतन विधि:	२७०
प्रतिक्रमण करनेका कारण०	२७२

॥ॐ॥ अथ पूजावली ॥ॐ॥

देवचंदलीकृत स्नातपूजा	२७६
देवचंदलीकृत अष्टप्रकारौपूजा	२८४
सतरभेदी पूजा	२८२
आरतीकरणविधि:	५०८
जै जै आरतौ शान्तिमुमारी०	५०८
नवपद जीकी बानी पूजा	५०८
नवपदजीकी सामग्री०	५२५
नवपद पूजा करनेकी विधि:	५२५
नवपद बासच्छेप पूजा	५२३
ऋषिमंजल (२४) प्रकारी पूजा	५२८
नवपद आरतौ०	५४५
ऋषिमंजल आरतौ०	५४५
ऋषिमंजल सुगनेकी पूजनकी विधि:	५४६
नव अंग पूजन दूहा	५४७
शिखाकारक दूहा	५४८
भगवंतकी मंदर आयेकी पूजा करणेकी विधि:	५४८

॥ॐ॥ प्रकरण ॥ॐ॥

॥ॐ॥ पत्राङ्क ॥ॐ॥

॥ॐ॥ भावस्तवननाधिकारे ॥ॐ॥

नव चैत्यवन्दन नव स्तवन नव शुद्धि ३५८
(२४) जिन जूदा २ चैत्यवन्दन २४ ३६६
अष्टापद नंदीस्वरादि ठूठकर चैत्य० ३७३
नवपद चै० । जो धुरि श्रीअरिहंत० ३७४
पुनः नवपद चै० । श्री अरिहंत उदार० ३७५
नवपद वृद्धस्तवन । सुरमणी सह० ३७५
नवपद स्तवन । तीर्थनायक जिनवरू जी० ३७६
नवपद ध्यान घरो रे भविका० ३७७
नवपद शुद्धि ३७७
जैती संयुक्त नवपद उली करणविधि: ३७८
गुरुकी पास तप ग्रहणकी विधि: ३८८
संक्षेप मंजल जजमणाविधि: ३८८

॥ॐ॥ हादस मास पर्वनाधिकार सह ॥ॐ॥

॥ॐ॥ प्रथम चैत्रमास मध्ये चतुर्पर्वनाधिकारः ॥ॐ॥

१ नवपद उलीस्वरूप ४००
२ अष्टापद उली करणविधि: ४०१
३ चैत्रसुद १३ श्रीवौरजन्मा० ४०२
४ चैत्र सुद १५ सेवन विधि: ४०२
चैत्री पुनम स्तवन ४०४
नंदीसर द्वीपस्तवन ४०७
नंदीसर तपस्याग्रहणविधि: ४०८
बैसाख मास अक्षय तृतीयाधिकार: ४०९

॥ॐ॥ प्रकरण नामः ॥ॐ॥ पत्राङ्क ॥ॐ॥

ज्यैष्ठ मास पर्वधिकारः	४१०
आषाढ मास पर्वधिकारः	४१०
श्रावणमास तपस्याधिकारः	४११
३७ ठुठकर तपस्याकरण विधिः	४१२
भाद्रमास पर्यषण पर्वधिकारः	४१७
आश्विन मास पर्वधिकारः	४२०

॥ॐ॥ कार्तिक मध्ये चतुपर्वधिकारः ॥ॐ॥

(१) दीपमाला पर्वधिकार गुणनो	४२१
निर्वाणकी आरती	४२२
निर्वाण स्त० । मारगदेशक मोक्षनो०	४२४
(२) ग्यानपंचमी पर्वधिकारः	४२४
ग्यानपंचमी देवबंदन विधिः	४२५
इग्यारै अंगकी सिद्धायां ११ (सह)	४२८
(ज्ञान को स्तवन) मेरै मनमानी ज्ञान०	४२८
(आगम स्तवन) । श्रुत अतिहमलो०	४२८
(३) कार्तिक चौमासा पर्वधिकारः	४२८
(४) कार्तिक पूर्णमासी पर्वधिकारः	४४०
(सिद्धगिरी स्तवन) । ते दिन क्यारे आव०	४४१
आज आपे चालो सहियो सिद्धाचल०	४४२
नमो रे नमो सेवुंज गिरी रे०	४४२
अंगरुमाहो म्हाने अति वणो०	४४४
यावा निनाणुं करिये विमल सिर०	४४५
मार्गशिर्ष (मोल ११) पर्वधिकारः	४४६

॥ॐ॥ प्रकरण ॥ॐ॥

॥ॐ॥ पत्राङ्क ॥ॐ॥

सोन एकादशी गुणनो करण विधिः	४४७
पोष सास (पोष १०) पर्व्याधिकारः	४५२
श्रीपार्श्व प्रभु जन्मकल्याणक स्तवन	४५३
वाणी ज्ञाना वादनी०	४५४
माघमास (मेरु देरस) पर्व्याधिकारः	४५८
फालगुन मास (चौमासा होली) पर्व्याधिकारः	४६०

॥ॐ॥ होरी खेलनविचार स्तवन माला ॥ॐ॥

होरी खेलियै नर बहुरन ऐ सो दाव	४६४
(सय बोखो पास०) । मधुवनमें जाचमची०	४६५
यादव मनमेरे० । (दूज सुणलै०) । सांवरो सुख०	४६६
नेना हरखा० । (मनमोहनगज०) । रंगलव्यो गुन०	४६७
(चिदानंद खेलै फाग०) । होरी आई मेरो मनभयो०	४६८
(होरो खेलो नेमसे०) । मेरे घटकी गरारिया०	४६९
मेने देखी अनोखी होरी रे०	४६९
मंजुराजै गिरनार० । मङ्गल कलसः	४७०

॥ॐ॥ प्रसिद्ध सब तपस्याके स्तवन (श्री) विधिः ॥ॐ॥

भँचकल्याणक लीकी टीप गुणनो	४७१
पंचकल्याणक तपस्या विधिः	४७४
(पखवासै को स्तवन) । जंबुद्वीप सोहस्र०	४७५
पखवासै तपकी विधिः गुणनो	४७७
दस पञ्चक्वाण फलगर्भित दृढ़ स्तवन	४७८
१० पञ्चक्वाण तपकरण विधिः	४८०
वीशस्थानक दृढ़ स्तवन	४८१

॥ॐ॥ प्रकरण ॥ॐ॥

॥ॐ॥ पत्राङ्क ॥ॐ॥

वीशस्थानकडली तपकरण विधिः	४८३
वीशस्थानक गुणनो कांडसुग प्रमाण०	४८५
(रोहणी तप स्तवन) । सासन देवत०	४८७
रोहणी तपस्था करण विधिः	४८९
(ठम्भासी तप स्तवन) । गोर्तम स्वामी०	४९१
ठम्भासी तपकरण विधिः	४९२
(वारैमासी तप स्तवन) । विभुवन नायक०	४९३
वारैमासी तपस्था विधिः	४९४
अष्टाईसलब्धि स्तवन	४९५
अष्टाईस लब्धि तपकरण विधिः	४९८
(चवदै पूर्व स्तवनी) । जिनवर श्रीवधमान०	४९८
१४ पूवे तपकरण विधिः	५०१
तिलक तपस्था स्तवन	५०१
तिलक तपस्था करण विधिः	५०३
१६ कपायंगंजन तपको स्तवन	५०४
सोलिया तपकरण विधिः	५०५
४५ आगम तपकरण विधिः	५०५
४५ आगमका नाम गुणनो	५०६
११ गणधर तपगुणनो विधिः	५०८
नवकार तपगुणनो करण विधिः	५०८
सव तप प्रथमं गुरुकी पास ग्रहण विधिः	५१०
सव तप पारण विधिः	५१२
सूतक विचारः	५१३

॥ॐ॥ प्रकरण ॥ॐ॥

॥ॐ॥ पताङ्क ॥ॐ॥

आवकै (१४) नियम चितारण विधि: ...	५१४
गुलकै पास बारै प्रत ग्रहण विधि:	५१६
(कुनिमालका) । ऋषभ प्रमुखजिन पायं०	५२३
ठिन्नुं जिन नामगर्भित दृढ स्तवन	५२८
उपधान तप वर्णन स्तवन	५३०

॥ॐ॥ अथ राग रागणी के स्तवन माला ॥ॐ॥

॥ॐ॥ राग कल्याणसे लेके सब रागके मिलैगा ॥ॐ॥

टुकजिजर० । (लोक चवदके०) । सविसखि वन०	५३३
हो जिन तेंद्र० । (रुहारा ऋषभा०) । मनलीनो०	५३४
(अजित२ जिन ध्यान०) । यह अरजी मोरी०	५३५
सुजरो मानी लौकै होगौरीराय०	५३५
तुं भेना प्रभु० । (हम जाणत है०) । पंघौना पं०	५३६
तेवीसमा जिनराज जोनै थांहरै०	५३७
(कैसे काज सरै०) । राजरी वधाई वां०	५३७
मोतिनकी माला जिनगल सोहै०	५३७
(रहे तुम आज क्युं०) । हेमाय बांकली करम०	५३८
रुहानुप्यारो लागै० । (मेरो प्रियापर०) । वरधि तव०	५३९
यावली मे रं० । (चिहं डरवदरि०) । मोरवापपइया०	५४०
समऊ नरजी० । (मत कर मान०) । निस दिनजोउ०	५४१
आजतो हमारै० । (वावरो रे आज०) । ऋषभविहा०	५४३
सुणमनहोणजा० । (सहियोरै मिल०) । मनवाजिनंद०	५४३
चालो देखोरै० । (मेरो मनवस०) । जिनराज नाम०	५४४
सुणो सुजाणनेम० । (तेरै दरसको०) । थारै सुखदा०	५४५

॥ॐ॥ प्रकरण ॥ॐ॥

॥ॐ॥ पत्राङ्क ॥ॐ॥

(ऐसीविध तैने पाई०) । मोहि अपनो करजाणो०	५४६
नेमजिणंदजीसें आंख० । (आजप्रभु तोरै चरण०)	५४७
रातगई अव प्रातहोन० । (तुमविन दीनानाथ०)	५४७
भोरभयो अव जाग० । (जागरे सब रैनवि०)	५४८
सांवरो सलूणो० । (आज ऋषभधर०)॥ अंगणकलप०	५४९
ऊठोनें मोरे० । (भजंमन नाभिनंदन०)	५५०
आवो नेम रहजावो सदन०	५५०
अधम जग कामभये आगीवानं	५५१
आयोसही अव जाउं कहां० । (घटो२ पल२ ठि०)	५५२
तुमतो भले विराजो जी	५५२
सिखरगिरेन्द्र० । (सांवरियामें दौठो दरस०)	५५३
चरम प्रभु अरज हमारी धारो०	५५४
(लावणी) । खबर नहीं है जुगमें पलकी०	५५५
(लावणी) । अरज हमारी सुणो दीनपति०	५५६
सुक्ति जाणेंकी दिगरी	५५६
अनुभवपद पाणेंकी दिगरी	५५८
आज हर्षभयो विभुवन नायक कुंथ०	५५९
असीतल जिणचंद अनंत गुणाकर०	५६०
हठरथ नन्दानन्द पुराण अतिसय धर०	५६१
वीरप्रभु तेरी० । (सदा सहाई सांति जिनेसर०)	५६२
प्रभुजोकी सहमा अजवनी०	५६३
(कातो सहोच्छव बघाई) । आज नगरमें०	५६३
हमारै आज आनन्द बघाई । प्रभुवीर०	५६४

॥ॐ॥ प्रकरण ॥ॐ॥

॥ॐ॥ पत्राङ्क ॥ॐ॥

(आवककी करणी) । आवकतुं ऊठे ५६५

सुण अरदासा सुगुण निवासा ५६७

चौपद खेलन विचार सिञ्जायः ५६७

सेबुंज खेलन विचार सि० ५६८

श्रीमहावीर खामीको पारणो ५६९

(सब पापादिक आलोचण) । बेकरजोनी वी० ५७३

सब पापादिक आलोचणको पञ्चावती सि० ५७५

॥ॐ॥ श्रीदादाजी स्तवनमाला ॥ॐ॥

श्रीदादाजी अष्टप्रकारी पूजा ५७६

श्रीदादाजी लघु अष्टप्रकारी पूजा ५८१

श्रीदादाजीकी आरती ५८३

बिलसै षड्वि सप्तद्विमिलो ५८३

श्रीजिनदत्तसूरिजी उत्पत्ति स्तोत्र ५८५

श्रीजिन कुशलसूरिजी उत्पत्ति स्तोत्र ५८५

श्रीजिन कुशलसूरिजीको ठन्द ५८७

सहाई मेरै श्रीजिन० । (दादा चिरंजीवो) ५९०

गानै जिनकुशल गंगालै ५९१

आयोर् जी समरंतां दादोजी ५९२

भायामक्तिसु० । (कुशलसूरिंद गुरु०) ५९३

(आज करोरे उवाह०) । में निरख्या गुरुमा० ... ५९४

चरणकीरे । (कुशलगुरु अत्र मोहि०) २९५

कुशल गुरु कुशल करो भरपूर० ५९५

सद्गुरु पूजण जावस्यां० ५९६

॥ॐ॥ प्रकरण ॥ॐ॥

॥ॐ॥ पत्राङ्क ॥ॐ॥

(आयो सज्ज श्री०) । सदासहाई कुशल०	५८७
जिन कुशलसूरिंद । (ठलपती थारै०)	५८८
सदगुरुजी सुणो० । (सदगुरुके चरणचित्त०).....		५८९
गुरुपूज रचोरे । (कैसे अवसर०)	६००
श्रीजिन कुशलसूरी सर० । (श्रीगणधर गुरु०)...		६०१
कुशल गुरु देखके दरसन०	६०१
कुशलगुरु दरसन० । (पूजो भजोरे भाई०)		६०२
हुंतो अरजकक करजोमने जी	६०३
(लावण्य) । सदगुरुजी म्हांरा सरणें आयां०	६०३
(वधाई) । आजकी धनी म्हांरै हरष वधाई०...		६०४
श्रीखरतर गज समाचारी तिथिप्रमाण०	...	६०५
खकुलप्रकाशन मङ्गलकलशः	६०८

॥ॐ॥ परमसंगल श्रीदादाजीके काव्यसवइया ॥ॐ॥

॥ॐ॥ दासानुदासा इव सर्वदेवाः । यदीय पादाब्जतले
लुठति । मरुस्यलौ कल्पतरुः स जीया । ज्जुगप्रधानो जिनद
त्तसूरिः ॥ १ ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ चिंतामणिः कल्पतरुर्वराकौ । कुर्वन्ति भव्याः
किमुकामगव्याः । प्रसीदतः श्रीजिन्दत्त सूरः । सर्वपदाह
स्ति प्रदे प्रविष्टाः ॥ १ ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ नोयोगो न च योगिनी न च नराधीशस्य नो
ज्ञाकिनी । नोवेत्ताल पिशाच राक्षसगणाः नो रोगशोगौ
भयं । नो मारी न च विग्रहः प्रभृतयः प्रीत्या प्रणत्युच्चकैः ।
सस्ते श्रीजिनदत्तसूरि गुरवो नामाक्षरं ध्यायति ॥१॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ सर्वईयालि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ बावन्न वीर कियै अगणै वस चौसठ जोगण
पय लगार्ई । दाइण साइण व्यन्तर खेचर भूतर प्रेत पि
साच पुलार्ई । बीज तद्रक् कद्रक् भद्रक् अद्रक् रहैजु खट
क् न कार्ई । कहै भमसीह लंबै कुणलीह दीयै जिनदस श्री
एक दुहाई ॥ १ ॥ इति ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ राजै शुभ ठौर ठौर ऐसौ देवनही ओर दादौ
दादौ नाम ते जगल जस गायो है । आपणैही भाय
आय पूजै लखलोक पाय प्यासनकुं रांन मांजि पांणी आं
न पायो है । वाठ वाठ शलु थाट हाट पुरपाटणमें देख
नेह नेहचुं कुशल वरतायो है । धर्मसीह ध्यानधरै सेवकां
कुशल करै साचौ श्रीजिनकुशल गुन नामयुं कहायो है ॥ १ ॥

॥ॐ॥ कुशल अंग उतरंग कुशलविणजै व्यापारै ।
कुशल देव देहरै । कुशल धन राजदुवारै । पुत्य प्रसायै
कुशल कुशल श्रीसंघ भणी जै । ब्राह्मण आवै कुशल । कु
शल घर घर गाई जै । श्रीजिनचंद्र सूरि पुहपहधर । ना
म मंत्र आरति टलै । श्रीजिनकुशल सूरि पाय पूजतां ।
नवनिधान लक्ष्मी मिलै ॥ १ ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ कुशल वदो संसार । कुशल सज्जन घर चाहै ।
कुशलै मद्गलवार । लखिपर कुशलै आवै । कुशलै धनवर
संत । कुशल धन धनरुवनौ । कुशलै शोभा थड । कुशल
पहिरौय चुवनौ । ए रसौ नाम सद्गुरु तणौ । कुशलै
जगरलीया मणौ । भट्टारक श्रीजिनकुशल सूरि नाम ग्रहणै
करौ । घर घर होत वधावणौ ॥ २ ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

रत्नसागर

॥ॐ॥ (वा) ॥ॐ॥

। मोहनगुणमाला ।

॥ॐ॥ उकारं विंदुसंयुक्तं । नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ॥

कामदं मोक्षदं चैव । उकाराय नमो नमः ॥ १ ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय । सर्वाभीष्टार्थदायिने ॥
सर्वलब्धिनिधानाय । गौतमस्वामिने नमः ॥ॐ॥ १ ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ अज्ञानतिमिरान्धानां । ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
नेत्रमुन्मीलितं येन । तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१॥ॐ॥

॥ॐ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीसारदायै नमः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ सरस्वती महाभागे । वरदे कामरूपिणी ॥ विश्वरूपी
विशालाक्षी । देविद्या परमेश्वरी ॥१॥ॐ॥ सरस्वती मया
दृष्टा । वीणापुस्तकधारिणी । हंसवाहनसंयुक्ता । विद्या
दानवरप्रदा ॥२॥ॐ॥

॥ॐ॥ (स्वरवर्णः) ॥ॐ॥

अ आ इ ई उ ऊ

व्यङ्गमत्तमत्कृत्यत्स ।

॥ ॐ ॥ न्य न्य न्य न्य द्य द्य न्य न्य न्य द्य द्य द्य न्य न्य त्त्य च्य त्त्य त्त्य ।

ल्लच्छन्तन्द्रद्वन्द्वलत्प्र । ज्वद्वत्तत्स्वत्स ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ (१० १०० १००० १००००)

॥ ॐ ॥ (शिखा वाक्य) ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ गुरुशुभूपयाविद्या । पुष्कलेन धनेन वा । अथवा विद्याया विद्या । चतुर्थं नैव कारणं ॥ १ ॥ ॐ ॥ विदित्वं च नृपत्वं च । नैव तुल्य कदाचन । स्वदेशे पूज्यते राजा । विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ २ ॥ ॐ ॥ पण्डिते च गुणाः सर्वे । मुखे दोषा हि केवलं । तस्मान्मुखं सहस्रेषु । प्राज्ञ एको विशिष्यते ॥ ३ ॥ ॐ ॥ नक्षत्रभूषणं चन्द्रो । नारीणां भूषणं पतिः । दृष्टिव्या भूषणं राजा । विद्या सर्वस्य भूषणं ॥ ४ ॥ ॐ ॥ माताशत्रुः पिता वैरो । वालो येन न पाठितः । न शोभते सभां मध्ये । हंस मध्ये वको यथा ॥ ५ ॥ ॐ ॥ लालयेत्यञ्च वर्षाणि । दशवर्षाणि ताम्रयेत् । प्राप्तं तु षोडशे वर्षे । पुत्रं मिल वदाचरेत् ॥ ६ ॥ ॐ ॥ वरमेको गुणौपुत्रो । न च मूर्ख शतान्यपि । एकचन्द्रस्तमो हन्ति । न च तारागणादपि ॥ ७ ॥ ॐ ॥ अविद्यां जीवनं शून्यं । दिशः शून्यास्त्व बांधवा । पुत्रहीनं गृहं शून्यं । सर्व शून्याः दरिद्रता ॥ ८ ॥ ॐ ॥ न च विद्या समो बंधु । न च व्याधि समो रिपुः । न चापत्य समः सेहो । न च दैवात्परं बलं ॥ ९ ॥ ॐ ॥ किं तया क्रियते धेन्वा । या न सूते न दुग्धदा । कोऽर्थः पुत्रेण जातेन । यो न विद्वान् न भक्तिमान् ॥ १० ॥ ॐ ॥

उपदेशो हि मूर्खाणां । प्रकोपाय न शान्तये । पयः पानं
भुजङ्गानां । केवलं विपवर्द्धनं ॥११॥ ॐ ॥ मातृवत्परदारांश्च ।
परद्रव्याणि लोष्टवत् । आत्मवत् सर्वभूतानि । वीक्षन्ते
धर्मबुद्धयः ॥ १२ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (अथ वाक्यमंजरी) ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ श्रीसद्गुरुस्थो नमः ॥ श्रीवाग्वादिन्यै नमः ॥ ॐ ॥
प्रातस्त्याय श्रीपरमेश्वरं चिन्तयेत् । तदनन्तरं हस्तौ प्रादौ
सम्यक् प्रक्षाल्य स्नात्वा आगन्तव्यं । परमेश्वरस्य पूजा वि-
धेया (देवः पूज्यः) ॥ ॐ ॥ धर्मशास्त्र मध्ये किं किमुक्तं नास्ति
धर्मशास्त्रे सर्वं वर्त्तते । धर्मशास्त्र मत्वं तं समीचीनं ॥ ॐ ॥
सरस्वती स्तोत्रं स वीर्यं भवति । सद्यः प्रीतिजनकं भवति ।
इदं सरस्वती स्तोत्रं सद्यः प्रत्यय कारकं भवति ॥ ॐ ॥ कवि-
ता समीचीना । कवित्वं कथमायाति । गुरुसमीपे गत्वा
सम्यक् पठनीयं । ततो ज्ञानं भवति । तदा कवित्वमायाति ।
तस्मादादौर्ध्वं ज्ञानं सम्पादनीयं ॥ ॐ ॥ सदा प्रियं ब्रूयात् ।
प्रियवादी सर्वस्य प्रियो भवति ॥ ॐ ॥ विद्याहि परमं धनं ।
यस्य विद्याधनमस्ति । स सदा सुखेन कालं नयति । अमेण
यत्नेन च विद्या भवति । तस्मात् विद्यालाभाय अमो यत्नश्च
विधेयः । विद्यां विना दृष्ट्वा जीवनं ॥ ॐ ॥ आलस्यं सर्वेषां
दोषाणामाकरः । अलसा विद्यासुपार्जयितुं न शक्नुवन्ति ।
धनं न लभन्ते । अलसानां चिरमेव दुःखं । तस्मादालस्यं
परित्यजेत् ॥ ॐ ॥ वोऽस्मानध्यापयति । सोऽस्माकं परम गुरुः ।
सहि पितृवत् पूजनीयः । विद्यादाता जन्मदाता च वा

वेव समानौ । समं माननौयौ च ॥ॐ॥ क्रोधं यत्नेन वर्जये
त् । क्रोधवशेन परुषं भाषते । ततः प्रहरेत क्रोधोहि महा
न् शत्रुः ॥ॐ॥ सर्वं परवशं दुःखम् । सर्वमात्मवशं सुखम् ।
एतदेव सुखदुःखयोर्लक्षणम् ॥ॐ॥ परहिंसायां परापकारेच
बुद्धिर्नकार्या । तयोः समं पापं नास्ति ॥ॐ॥ यथाशक्ति परेषा
मुपकारं कुर्यात् । परोपकारो हि परमो धर्मः ॥ॐ॥ अहं
कारं परिहरेत् । नाहंकारात् परोरिपुः ॥ॐ॥ संतुष्टस्य सदा
सुखम् । आत्मनः सुखमन्विहेत् । सन्तोषमूलं हि सुखम् ॥

॥ॐ॥ (अथ सन्धिसुतः) ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ सिद्धो वर्णः । समाग्नायः । तत्र चतुर्दशादौ
स्वराः । दशसमाना । तेषां द्वौ द्वावन्यो । अन्यस्य सवर्णौ ।
पूर्वो ह्रस्वः । परो दीर्घः । खरो वर्णः । वर्जो नामौ । एका
रादीनि संध्यक्षराणि । कादीनि व्यंजनानि । ते वर्गाः पञ्च
पञ्च । वर्गीणां प्रथम द्वितीयौ । शषसाश्च घोषाः । घोषवंतो
ऽन्ये । अनुनासिकाः ङञणनमाः । अन्तस्थाः यरलवाः ।
उष्माणः शषसहाः । अः इति विसर्जनीयः । कः इति जिह्वा
मूलीयः । पः इत्युपमानौ । अं इत्यनुस्वारः । पूर्वपरयो
रर्थोपलब्धौ पदम् । अस्वरं व्यंजनं । परं वर्णनयेत् । अन
तिक्रमयन् विश्लेषयेत् । लोकोपचारात् ग्रहणं सिद्धिः ॥ॐ॥
इति संधौसूतः प्रथमश्चरणः समाप्तः ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (द्वितीयोपदेसः) ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धि

स्थिता । आचार्या जिनसासनोन्नतिकराः पूज्या उपा
ध्यायकाः । असिद्धांत सुपाठका सुनिवरा रत्नवयारा
धकाः । पंचै ते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तवोमङ्गलं ॥१॥

॥ॐ॥ (अर्थः) ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अर्हन्त भगवंत । असरणसरण । भवभय हरण ।
सिवसुख करण । तरण तारण । प्रवहण समान । (ऐसे)
श्रीवीतराग देव । जिणुंके वचनानुसारे । भव्यजीवां को ।
परम मङ्गलकारौ हितोपदेस देते हैं ॥ॐ॥ (एते पंच पर
मेष्ठिनः प्रतिदिनं वः युष्माकं मङ्गलं कुर्वन्तु) । यह पंच
परमेष्ठि निरन्तर श्रीसंघपते मङ्गलकरा । (कैसे हैं पंचपर
मेष्ठि) (अर्हन्तो भगवंत इन्द्रमहिता) । प्रथम परमेष्ठि ।
श्रीअरिहंत देवः । अष्टकर्म शलुकुं हणें (सो) अरिहंत
कहियै । फेर अरिहंत कैसे है । (भगवंत) ज्ञानवंत है ।
केवल ज्ञान केवल दर्शन संयुक्त है । (तथा) भगशब्दका
१४ अर्थ है ॥ भगोऽर्क (सूर्य) १ । ज्ञान २ । महात्मा ३ ।
यश ४ । वैराग्य ५ । मुक्ति ६ । रूप ७ । वीर्य ८ । प्रयत्न
९ । इच्छा १० । श्रीलक्ष्मी ११ । धर्म १२ । ऐश्वर्य १३ । योनि
१४ । यह चवद्वै अर्थोंमें से । सूर्य १ । योनि २ । दो अर्थ
वर्जकर । १२ अर्थ भग शब्दका मिलै (जिससे) भगवंत कहि
यै (पुनः किं विशिष्ट) फेर अरिहंत कैसे है (इन्द्रमहिता)
चौसठ इन्द्रोंके पूजनीक । द्वादसगुणें करी विराजमान है
(सो द्वादश गुण कैसे) प्रथमतो अरिहंतको अद्भुतरूप । रो
गादि रहित । प्रखेद मलादि रहित । सुगंध शरीर हो ॥१
सासोखासकी कमलजैसी सुगन्ध हो ॥२॥ लोही मांस गा

यके दूध जैसा सपेद हो ॥३॥ आहारनीहारकी विधि अ
 इसहो । प्राणी देख सक्ता नहिं ॥४॥ ए चार अतिसय गु
 णतो जन्मकथासे हो । शेषआठगुण) केवल ज्ञान उत्पन्न
 होणेंसे प्रगट हो । (अशोकवृक्षः) भगवन्तके सरौरसे ।
 बारै गुणो जं चो अशोकवृक्ष हो । जिसकी ठायाँवैसणें से
 रोगसोगादिक दूर हो ॥ १ ॥ ❀ ॥ (सुरपुष्पवृष्टिः) देवगण
 पंचवर्ण फलोंकी जानु पर्यन्त वर्षा करै । आकाससे पद्मता
 सीधापद्मै । विंढनौचै रहै । अंघ्रिनी ऊपर रहै ॥२॥ (दिव्य
 अग्नि) योजन पर्यंत । देवता । मनुष्य । तिर्यंच । सब जीव ।
 अग्रणी २ भाषामें । यथावस्थित समजै (जाणै) भगवंत
 हमरी भाषामें उपदेश देते है ॥❀॥ (कहावी है) ॥ ❀ ॥
 एगइं गिराणेंगे । संदेह देहियं समंठित्ता । तिऊअण
 मणुंसा संता । अरिहंता ऊंति मे सरणं ॥ १ ॥ ३ ॥ (आ
 मर ४) भगवंतके दोनुं पासे इंद्र चामर ढालता रहै ॥४॥
 (आसनज्ज ५) भगवन्तके बैठणेंको । इंद्रादिक रचित ।
 फिटक रत्नमई सिंहासण रहै ॥ ५ ॥ (भामंजल ६) भग
 वन्तके पिठांजी भामंजल रहै (जिससे) भगवन्तके चार
 मुख । चारुंदिश तरफ मालुम हो । भगवंत तो पूर्व
 दिशा मुख कर बैठै । और तीन दिशमें । भगवन्तके
 प्रतिविंब इंद्रादिक स्थापन करै । पर भगवन्त के अति
 सय से । चारुंदिश । बारैइं परषदाको । अपणेंसन्मुख
 उपदेश देता मालुम हो ॥ ६ ॥ (इंद्रभी ७) आकाश
 में देव इंद्रभी वाजिवानै ॥ ७ ॥ (रातपलं) भगवन्त
 के विहार कालै (वा) स्थिति कालै । हमेसां मस्तकपर ।

तीन ठब रहै ॥ ८ ॥ (यह आठ गुण देवगणके किये हो)। ऐसे अरिहंत। देवाधिदेव। चौतीस अतिशय विरालमान। पैंतीस वचनगुण शोभित। एक हज्जार आठ लक्षणांलंकित। अङ्गरै दूषण रहत। शांत दांत। कृपासागर। त्रैलोक्यनाथ। जगत्पथके गुरु (वर्त्तमान का लैं) महा विदेहक्षेत्रे। केवलज्ञान। केवलदर्शनसे। लोका लोकका भाव देखते थके। पृथ्वीमंडलपर भव्य जीवुंके मनोरथ पूरण करते थके। विचरते है (ऐसे) अग्रंतगुणें सुसोभित। अरिहंत देव यौसंध में सदा मङ्गल करो ॥१॥ (तथा सिद्धाश्च सिद्धि स्थिता) (दूसरै पदै) सिद्ध महाराज को नमस्कार ऊवो। (सिद्ध महाराज कैसे है) अष्ट कर्म काष्टको। शुक्लध्यान रूप अग्निसें भस्मकर। सिद्धगतिकों प्राप्तभये (ऐसे) अनंत ज्ञान। अनंतदर्शन। अनंत चारित्र्य। अनंत तप। अनंत वीर्यसंयुक्त। जन्म जरा मरण रोग सोक भयादिकसें विप्रमुक्त। चवदै राजलोकमें सब जीवोंके मनोगत भाव। एक समयमें जाणते थके। देखते थके पिण। आत्मगुणां में मग्न रहै है (ऐसे) सिद्ध महाराज। यौसंध में सदा मङ्गल करो ॥ २ ॥ (आचार्या जिनशासनोन्नति करा) (तीसरा परमेष्ठि) श्रीआचार्य महाराज को नमस्कार ऊवो। (कैसे है) (ठत्तीस गुण करी विराजमान। मुक्तिमार्गके साधक। वर्म शलूके विराधक। अबुध जीव प्रतिबोधक। क्षमागुण भंडार। समदृष्टी। तरण तारण। धर्मके धोरौ। जिन सासनकी उन्नतिके कारण हार (ऐसे) पर उपगारी आचार्य महाराज यौसंध में

सदा मङ्गलकरो ॥ ३ ॥ (पुज्या उपाध्यायका । श्रीसिद्धांत
सुपाठका) (चोथा परमेष्ठि) श्रीउपाध्याय महाराजकों
नमस्कार ऊवो (कैसे हैं) द्वादशांगी सुवार्थके जाणकार ।
नय निक्षेपा गमापर्याय संयुक्त । सिद्धांतकों पढाएवाले ।
ज्ञानचक्षु देणवाले । (ऐसे) २५ गुण करी बिराजमान ।
श्रीउपाध्याय महाराज श्रीसंघमें सदा मङ्गल करो ॥ ४ ॥
(सुनिवराः रत्नवयाराधकाः) (पंचम परमेष्ठि) सब
साधु सुनिराज (सो कैसे हैं) ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३
यह तीन रत्नके आराधक हैं । पांचे सुमते सुमता । तीने
गुप्तेगुप्ता । ठक्कायके पीहर । कुक्खी संबल । चारित्रपाव ।
मोक्षमार्गके साधक । (ऐसे) सब साधु सुनिराज । सत्ता
ईस गुण करी सोभित । श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ ५ ॥
इति हितोपदेशः उभय अर्थार्थ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ठिनुंजिन नामः ॥ ॥

॥ ॥ (अतीत चौबीसी) ॥ ॥

- | | |
|------------------------|-------------------------|
| १ ॥ श्रीकेवलज्ञानोजी । | २ ॥ श्रीनिर्वाणीजी । |
| ३ ॥ श्रीसागरजी । | ४ ॥ श्रीमहायशजी । |
| ५ ॥ श्रीविमलदेवजी । | ६ ॥ श्रीसर्वानुभूतिजी । |
| ७ ॥ श्रीश्रीधरजी । | ८ ॥ श्रीदत्तखामीजी । |
| ९ ॥ श्रीदामोदरजी । | १० ॥ श्रीसुतेजनाथजी । |
| ११ ॥ श्रीखामीजी । | १२ ॥ श्रीसुनिसुव्रतजी । |
| १३ ॥ श्रीसुमतिनाथजी । | १४ ॥ श्रीशिवगतिजी । |
| १५ ॥ श्रीअस्तागजी । | १६ ॥ श्रीनीश्वरजी । |

- १७ ॥ श्रीअनिलनाथजी । १८ ॥ श्रीयशोधरजी ।
 १९ ॥ श्रीकृतार्धजी । २० ॥ श्रीजिनेश्वरजी ।
 २१ ॥ श्रीशुद्धमतीजी । २२ ॥ श्रीशिवकरजी ।
 २३ ॥ श्रीस्यन्दनजी । २४ ॥ श्रीसम्प्रतिस्वामीजी ।
 इति अतीत चतुर्विंशति तिर्यंकरेभ्यो नमः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (वर्त्तमान चौबीसी) ॥ॐ॥

- १ ॥ श्रीवृषभदेवजी । २ ॥ श्रीअजितनाथजी ।
 ३ ॥ श्रीसंभवनाथजी । ४ ॥ श्रीअभिनन्दनजी ।
 ५ ॥ श्रीसुमतिनाथजी । ६ ॥ श्रीपद्मप्रभुजी ।
 ७ ॥ श्रीसुपार्श्वनाथजी । ८ ॥ श्रीचंद्राप्रभुजी ।
 ९ ॥ श्रीसुविधिनाथजी । १० ॥ श्रीशीतलनाथजी ।
 ११ ॥ श्रीअथांसजी । १२ ॥ श्रीवासुपुज्यजी ।
 १३ ॥ श्रीविमलनाथजी । १४ ॥ श्रीअनन्तनाथजी ।
 १५ ॥ श्रीधर्मनाथजी । १६ ॥ श्रीशान्तिनाथजी ।
 १७ ॥ श्रीकुण्डनाथजी । १८ ॥ श्रीअरनाथजी ।
 १९ ॥ श्रीमल्लिनाथजी । २० ॥ श्रीसुनिसुव्रतजी ।
 २१ ॥ श्रीनमिनाथजी । २२ ॥ श्रीनेमनाथजी ।
 २३ ॥ श्रीपार्श्वनाथजी । २४ ॥ श्रीमहावीरस्वामीजी ।
 इति वर्त्तमान चतुर्विंशति तिर्यंकरेभ्यो नमः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (अनागत चौबीसी) ॥ॐ॥

- १ ॥ श्रीपद्मनाभजी । २ ॥ श्रीसूरदेवजी ।
 ३ ॥ श्रीसुपार्श्वजी । ४ ॥ श्रीस्वयंप्रभुजी ।

- ५ ॥ श्रीसर्वानुभूतिजी । ६ ॥ श्रीदेवश्रुतजी ।
 ७ ॥ श्रीउदयप्रभुजी । ८ ॥ श्रीपेङ्गलप्रभुजी ।
 ९ ॥ श्रीपोट्टिलप्रभुजी । १० ॥ श्रीशतकौर्त्तिदेवजी ।
 ११ ॥ श्रीसुव्रतनाथजी । १२ ॥ श्रीअममनाथजी ।
 १३ ॥ श्रीनिष्कपायदेवजी । १४ ॥ श्रीनिष्पुलाकदेवजी ।
 १५ ॥ श्रीनिर्ममनाथजी । १६ ॥ श्रीचित्तगुप्तिनाथजी ।
 १७ ॥ श्रीसमाधिनाथजी । १८ ॥ श्रीसंवरनाथजी ।
 १९ ॥ श्रीयशोधरजी । २० ॥ श्रीविजयनाथजी ।
 २१ ॥ श्रीसल्लिप्रभुजी । २२ ॥ श्रीदेवप्रभुजी ।
 २३ ॥ श्रीअनन्तप्रभुजी । २४ ॥ श्रीभद्रङ्करजी ।
 इति भविष्यच्चतुर्विंशति तिर्थकरेश्वरो नमः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (वीसविहरमानं नामानि) ॥ॐ॥

- १ ॥ श्रीसीमन्वरजी । २ ॥ श्रीयुगमन्वरजी ।
 ३ ॥ श्रीबाह्जजी । ४ ॥ श्रीमुवाह्जजी ।
 ५ ॥ श्रीसुजातजी । ६ ॥ श्रीस्रगंभुजी ।
 ७ ॥ श्रीकृष्णभाननजी । ८ ॥ श्रीअनन्तवीर्यजी ।
 ९ ॥ श्रीसुगमभुजी । १० ॥ श्रीविमलजी ।
 ११ ॥ श्रीवज्रधरजी । १२ ॥ श्रीचंद्राननजी ।
 १३ ॥ श्रीचंद्रवाह्जजी । १४ ॥ श्रीभुजङ्गजी ।
 १५ ॥ श्रीनिमप्रभुजी । १६ ॥ श्रीईश्वरजी ।
 १७ ॥ श्रीविरामेनजी । १८ ॥ श्रीमहाभद्रजी ।
 १९ ॥ श्रीदेवप्रभुजी । २० ॥ श्रीअजितवीर्यजी ।

॥ॐ॥ इति विंशति विहरमानं तिर्थकरेश्वरो नमः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (चार साखतानामः) ॥ॐ॥

- १ ॥ श्रीकृष्णमाननजी । २ ॥ श्रीचंद्राननजी ।
 ३ ॥ श्रीवारिषेणजी । ४ ॥ श्रीवर्द्धमानजी ।
 इति चत्वार नाम साखता भवति ॥ॐ॥ ॥ॐ॥



॥ॐ॥ श्रीपंचपरमेष्ठिने नमः॥ॐ॥ गमो अरिहंताणं ॥
 गमो सिद्धाणं ॥ गमो आयरियाणं ॥ गमो उवज्जायाणं ॥
 गमो लोए सब्बसाह्णं ॥ एसो पंच गमुक्कारो ॥ सब्बपाव
 प्पणासणो ॥ मंगलायंच सब्बेसिं ॥ पढमंहवद्द मंगलं ॥१॥
 पढ ६ ॥ संपद्द ८ ॥ अत्तर ६८ ॥ गुरु ७ ॥ लघु ६१ ॥

॥ॐ॥ अथ सकल तिर्यंकर नमस्कार लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ श्रीदृष्टदेवाय नमः ॥ॐ॥ जयउसामिहि ॥ २ ॥
 रिसह सेत्तुंजि उज्जितं पल्लनेमिजिण । जयउवीरसच्च
 उरमंद्गण । भववृद्धि सुणि सुव्वय । मज्जरिपास दुह
 दुरिअ खंद्गण । अत्रर विदेहजि तिल्ययर । चिज्जंदि

सिद्धिदिसिजंकेवि । तोआणागवरंपयं । वंदुंजिणसव्येवि ॥२॥
 कम्मभूमिहि २ ॥ पट्टसंपय ॥ उक्कोसउ सत्तरिसउ । जिणव
 राणाधिहरंतलभभइ । नदकोडोकेवलिण । कोडिसहरनवसाऊ
 संपय संपदूजिणवरवीसखुण । दुइकोडोवरणाणि । ससणाको
 डोसहसदुइ । युणिजइ निच्चविहाण ॥१॥ सत्ताणवइसहसा
 लन्हा ठमन्नअट्टकोडोओ चउसट्ठायासौआ । तिल्लकेचेइ
 एवंदे ॥२॥ वंदेनवकोडिसयं । पणवौसंकोडिलक्खतेवन्हा ।
 अट्टावोससहसा । चउसयअट्टासिआपडिमा ॥३॥ जंकिंचि
 नामतित्थं सग्गेपायालेमाणुसेलोए जाइं जिणविंवाइं । ताइं
 सव्वाइं वदामि ॥४॥ ॥ गमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं
 ॥१॥ आइगराणं तित्थगराणं सयंसंवुद्धाणं ॥ २॥ पुरिसोत्त
 माणं पुरिससोहाणं पुरिसवरमुंडरीआणं पुरिसवर गंवहं
 त्थोणं ॥ ३॥ लोसुत्तमाणं लोगनाहाणं लो गहिआणं लोगप्र
 देवाणं लोगप्रज्जोद्धगराणं ॥४॥ अभवदयाणं चक्खुदयाणं
 मग्ग दयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥५॥ धत्तादयाणं धम्मदे
 सिआणं धम्ममायगाणं । धम्मसारहोणं धम्मवरचाउरंतच
 क्खद्वीणं ॥६॥ अण्णडिहयवरणाणं ठंसणुधनाणं धिचट्ठउ
 साणं ॥७॥ जिगाणं जावयाणं तिणाणं तादयाणं । बुद्धाणं
 बोहिआणं तुत्ताणंलोअगाणं ॥८॥ सक्खूणं सक्खट्टरिसीणं
 भिक्खमयलसगयसरंत सक्खवमक्कावाह मपुणरावत्ति
 पिदिगइनामधेयं द्वाणंसंपत्ताणं समोजिणाणं जिच्चभयाणं
 ॥९॥ जेअअइआसिहा जेअभयिसंति । अणागएकाले संपदू
 प्ररुत्तमाणा मज्जेतिविहेणवंदामि ॥ १॥ ॥ पट् ॥३॥ संपदा
 ॥८॥ अज्ज ॥२॥ ७॥ गम ॥३॥ लउ ॥२॥ ४॥ ॥ जावंतिचेइ

आइ । उट्टे अअहेअतिरिअलोएय । सव्वाइं ताइं बंदे । इह
 संतो तत्थसंताइं ॥ १ ॥ इत्थाभिखमासम० । इत्थाका०
 भगवन् । जावंतकेविसाह् । भरहेरवएमहाविदेहेअ । सव्वे
 सितेसिपणओ । तिविहेण तिदंढविरआणं ॥ २ ॥ अत्तर
 ॥ ७२ ॥ ॥ नमोहत्तसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः । ॥
 ॥ उवसग्गहरंपासं । पासंवंदामिकम्मघणसुक्कं । विसहर
 विसनिन्नासं । मंगलकल्लाणआवासं । १ । विसहरफुलिंग
 मंतं । कंठेधारेइजोसयामणुओ । तस्सगहरोगमारो ।
 दुट्ठजराजन्तिउवसामं । २ । चिट्ठउदूरेमंतो । तुण्णपणामो
 विवड्ढफलोहोइ । नरतिरिएसुविजोवा । पावंति नदुक्ख
 दोहग्गं ॥ ३ ॥ तुहसम्मत्तेल्ले । चिंतामणिकप्पपाय वभभाहिए ।
 पावंतिअविग्घेणं । जीवाअयरामरंठाणं ॥ ४ ॥ इअसंयुओ
 महायस । भत्तिभरनिभरेणहिअण । तादेव दिज्जवोहिं
 भवेभवेपासजिणचंदं ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ जयवौयराय जगगुरु होउमसं तुहपभावओ । भयवं
 भवनिब्बेओ । मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्ध
 चाओ । गुरुजणपूआपरत्थकरणंच । सुहगुरुजोगोतब्बयण
 सेवणा आमवमखंढा ॥ २ ॥ ॥ अरिहंतचेइयाणं । वंद
 णवत्तियाए । अनत्थूकही । एक नवकारनोकावसग्गकरी
 एकथूईनीगाथा कहै इतिचैत्यवंदनकं ॥ ॥

अथ इरियावही ।

इत्थाभिखमासमणो वंदितं जावणिज्जाए निसोहि
 आए मत्थएणवंदामि ॥ इतिक्षेमाश्रमणदंडकः ॥ गुरु ३

नप २५॥ (इह्वाकारेण संदिस च भगवन्) इरिआवहियं पडिक्क
 मामि इह्वा इह्वा मिपडिक्क मिउं । इरिआवहियाय विराहणा
 ए गमणा गमणे प्राणक्क मणे वोअक्क मणे ङरिअक्क मणे उसा
 उत्तिंग पणगटगमट्टोमक्कडा संताणा संकमणे जेमेजीवा
 विराहिया । एरिदिआ वेदंदिआ तेदंदिआ चउरिंदिआ
 पंदिदिआ । अभिहया वत्तिआ लेसिया संघाइआ संघ
 दिआ । परिआविया किनामिया उह्विया ठाणा उह्वाण
 संकामिया जोदियाओववरोदिया तम्ममिह्वा मिदुक्कंडं ॥
 ३॥ ७॥ ३॥ तमउत्तरोकरणेणं पायत्तिक्ककरणेणं विसो
 जोकरणेणं विसल्लोकरणेणं पायाणं कप्पाणं गिरायाणद्वया
 ठामिकाउसणं ॥ ३॥ पट ३२ संपदा ८ शुक् २४ लघु १७५
 एवं ॥ १८८ ॥ ३॥ अन्नचउमनिणं नोससिणं खानिणं
 ओणं जंभाइणं उदुणं वायनिसरणं भमलिणपित्तसुह्वा
 ण ॥ १॥ सुउमेहिं वंगनचालिं सुउमेहिं जेनमंचालिं सुह
 मेहिं दिदिमंचालिं ॥ २॥ एवमाइणं आगारेहिं अभगो
 अदगादिओ इज्जमेका उमग्गो ॥ ३॥ जावअरिअंताणं भगवं
 ताणं लोपेण नपारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं जाणे
 णं कप्पाणं ओसमि ॥ ३॥ १॥ १॥ लोपमउज्जोअरणं । धम्म
 तिउरं विणे । अरिअंतिक्कित्तहम्मं । चउवोसं पिकेवली ॥ १॥
 उभमसिणं वं उं । संभव मभिनंदणं वं सुमइज्ज । पउम
 अणं वसणं । जितं वचं वसं उं ॥ २॥ सुविं वसुपुण्डंतं ।
 मोअणं पिके वसुपुण्डंतं । विसदमं तं वजितं । धम्मं
 मतिं वं उं ॥ ३॥ कं वं वं मतिं । वं सुविं वसुपुण्डंतं
 मिजितं वं वं मतिं वं ॥ ४॥ तं वं वं वं ॥ ५॥ तं

मएअभियुआ । विज्जअरयमत्ता पच्चौणजरमरणा । चउवी
 संपिज्जिणवरा । तित्थयरासेपसोयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिअ वंदिअ
 महिआ । जेतेलोगस्सउत्तमासिद्धा । आरोग्गवोहिलाभं ।
 समाहिवरसुत्तमंदितु ॥ ६ ॥ चंदेसुनिस्सालयरा । आइच्चेसु
 अहिअंपयासयरा । सगरवरगभोरा । सिद्धासिद्धिमस
 दिसंतु ॥ ७ ॥ पद २८ संपदा २८ गुरु २८ लघु २२८
 [एवंसर्वअक्षर ॥ २५६ ॥] सच्चलोअरिहंतचेदुआणं करे
 मिकाउसगं ॥ १ ॥ प्रस्वरवरदोवद्धे । धायइसंढेअ
 जंवुदोवेअ । अरहेरवयविदेहे । घस्साइगरेनमंसाणि ॥ १ ॥
 तमतिमिरपडल विडंसणस्स । सुरगणनरिंदमहिअस्स ।
 सौमाधरस्सवंदे । पुप्फाडिअ मोहजालस्स ॥ २ ॥ जाई जरा
 मरणसोगप्रणासणस्स । कल्लाणपुक्खलविसाल सुहोवहस्स
 कोदेवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स । धम्मस्ससारसुअलम्भकरेप
 मायं ॥ ३ ॥ विह्वेभोपयत्तं णमोजिणमए नंदोसयासंजमे ।
 देवन्नाग सुवस्सकिंनरगण स्सम्भूअभावच्चिए । लोगोजत्थप
 यच्चिओ जगमयंतेलोक्कनच्चासुरं धम्मोवड्डउमारओ विज
 यत्तं धम्मोत्तरंवड्डओ ॥ ४ ॥ सुअस्सभगवत्तं करेमिका
 उसगं ॥ पद १६ संपदा १६ गुरुअ ३३ लघुअ १८२ एवं
 २१६ । ॥ वंदणवत्ति आए पण्णवत्तिआए सक्कारवत्तिआए
 सस्साणवत्तिआए बाहिलाभवत्तिआए निस्सवसगं वत्ति
 आए सिद्धाए सेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्डमा
 णाए ठामिकाउसगं ॥ १ ॥ अन्नत्थजससिएणं नोससिएणं
 इत्यादि ॥ १ ॥ सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं । लो
 गगलसुवगयाणं णमोसयासव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जोदेवाणविदेवो

जंदेवापंजलौनमंसंति । तंदेवदेवमहिअं । सिरसावंदेसहा
 वोरं ॥ २ ॥ इकोविणमुकारो । जिणवरवसहस्रवड्ढमाणस ।
 संसारसागराओ । तारिइनरंवनारिंवा ॥ ३ ॥ उज्जितसेल
 सिहरे । दिक्खानाणंनिसीहिअणस । तं धम्मचक्रवडिं ।
 अरिठ्ठनेमिंनमंसाभि ॥ ४ ॥ चत्तारिअड्ठदसदोअ वंदिआ ।
 जिणवराचउवीसं । परमट्ठनिट्ठिअड्ठा । सिद्धासिद्धिंममदि
 संतु ॥ ५ ॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं । सम्महिद्धि
 समाहिगराणं । करेमिकाउसग्गं ॥ १ ॥ अणत्थजससिएणं
 इत्यादि संपदा २० पद २० गुरु अक्षर ३१ लघु १६७ एवं
 १६८ ॥ संसारदावानलदाहनीरं । समोहधूलौहरणे
 समीरं । मायारसादारणसारसीरं । नमामिवीरं गिरि
 सारधीरं ॥ १ ॥ भावावनामसुरदानवमानवेन ॥ चूला
 विलोलकमलावलिमलितानि । संपूरिताभिनत लोकसमी
 हितानि । कामंनसामिजिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधा
 गाधंसुपदपदवीनौरपूराभिरामं । जीवाहिंसाविरललहरै
 संगमागाहदेहं । चूलावेलं गुरुगममणौ संकुलं दूरपारं ।
 सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधुसेवे ॥ ३ ॥ आमूलालो
 लधूलौ वज्रलपरिमला लौढलोलालिमाला । ऊंकाराराव
 सारा मलदलकमला गारभूमौनिवासे । ठायासंधारसारि
 वरकमलकरे तारहाराभिरामे । वांणीसंदोहदेहे भवविर
 हवरं देहिसेदेविसारं ॥ ४ ॥ इति वीरस्तुतिः ॥

। वांदणां ।

॥ ॥ इच्छामिखसासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निरी

हिआए । अणुजाणह मेमिउगहं निसीही । अहो कायं
 काय । संभासं खमणिज्जो भेकिलामो अप्पकिलंताणं वड्डसु
 भेणभे दिवसोवइळंतो । जत्ताभे जवणि जं चभे । खासेमिखमास
 मणो देवसिअं वइळमं आवसिआए पडिक्कामिखमासम
 णाणं देवसिआए आसायणाए तिच्चीसन्धवराए जंकिंचि
 मिन्नाए । मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए । कोहाए
 माणाए मायाए लोभाए । सब्बकालिआए सब्बमिच्छोवया
 राए सब्बधम्माइक्कसणाए आसायणाए । जोमेअईयारोकओ
 तस्सखमासमणो पडिक्कामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं
 वोसरामि ॥ ॥ अत्तर ॥ १६८ ॥



। साध्वालोयणा ।

॥ ॥ इत्थाकारेण संदिसह भगवन् । देवसिअं आलो
 एमि । इत्थंआलोएमि । जोमेदेवसिओ अईआरोकओ ।
 काईओ वाईओ माणुसिओ । उस्सुत्तो उम्मागो अक्कप्पो
 अकरणिज्जो दुव्जाओ दुव्विचिंतिओ । अणायारो अणत्थि
 यवो । असमणपावगो । नाणेत्तहदंसणे चरित्ते । सुएसामाइए
 तिएहंगुत्तीणं । चउगहं कसायणं । पंचगहं महवयाणं । छगहं
 जीवनि कायाणं । सत्तगहं पिंडेसणाणं । अट्ठगहं पवयणमाईणं ।
 नवगहं वंभचेरगुत्तीणं । दसविहेसमणधम्मो । समणाणं जोगाणं
 जंखं डिअं जंविरा हिअं । तस्समिन्नामिदुक्कडं ॥ ॥

। आवकआलोयणा ।

॥ ॥ इत्थाकारेण संदिसह भगवन् । देवसियं आलोएमि

इत्थं आलोएमि । जोमे देवसिओ अइयारोकओ । काईओ
वाईओ माणसिओ । उस्सुत्तो उम्मागो अकप्पो । अकरणिज्जो
दुब्भाओ दब्बिचिंतिओ । अणायारो अणल्लियओ असा
वगपावगो । नारेतंह दंसणे चरित्ता चरित्ते । सुए सामाइए
तिएहंगुत्तोणं । चउएहंकसायाणं । पंचगहंमणुव्याणं । तिएहं
गुणव्याणं । चउएहं सिक्खाव्याणं । वारसविहस सावग
धम्मस । जंखंडिअं जंविराहिअं । तस्स मिच्छामिदुक्खं ॥३॥

॥३॥ ठाणेकमणे चंकमणे आउत्ते अणाउत्ते । हरिअक्काय
संघे वीयकायसंघे थावरकायसंघे ठप्पइयासंघे । सव्वस
विदेवसिअ । द्धिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ । इच्छाकारे
णसंदिसह । इत्थंतस्समिच्छामिदुक्खं ॥ १ ॥३॥ संधाराउव
इणकौ । आउट्ठणकौ । परिअट्ठणकौ । पसारणकौ । ठप्पइयासं
वट्ठणकौ । अच्चक्खु विसयकायकौ । सव्वस्सविराइअ ।
दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ । इच्छाकारेणसंदिसह ।
इच्छंतस्समिच्छामिदुक्खं ॥ १ ॥३॥ इच्छाकारेणसंदिसह
भगवन् । अभूट्ठिओमि अभिंतरे । देवसिअंखालेउं । इत्थं
खामेमि देवसिअं । जंकिंचि अपत्तिअं परपत्तिअं । धत्ते पाणे
विणए वेयावच्चे । आलावे संलावे । उच्चासणे सदासणे ।
अंतरभासाए उवरिभासाए । जंकिंचि मज्झविखंय परिही
णं सुद्धमंवा वायरंवा । तुम्भेजाणह अहंनजाणाभि । तस्स
मिच्छामिदुक्खं ॥३॥ इति गुरुवंदणा ॥३॥

॥३॥ करेमि मंते सामाइयं । सावज्जं जोगं पखख्खा
मि । जावनियमं पज्जुवासामि । दुविहं तिविहेणं । मग्गसं
वायाए काएणं । न करेमि न कारवेमि । तच्च धत्ते ।

प्रतिक्लमामि । निंदामि । गरहामि । अप्पाणं वोसिरामि
 ॥३॥ करेमि भंते पोसहं । आहार पोसहं । देसउ । स
 व्वउ वा । सरौरसक्कार पोसहं । सव्वउ वंभचेर पोसहं ।
 सव्वउ अक्कावार पोसहं । सव्वउ चउव्विहे पोसहे । रुव
 ज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावदिवसं अहोरत्तिं वा पव्वजु
 वासामि । दुविहं तिबिहेणं । मण्णेणं वायाए काएणं ।
 न करेमि न क्कारवेमि । तस्स भंते । प्रतिक्लमामि निंदामि ।
 गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥३॥ आयरियउवव्भाए ।
 सौसेसाहज्जिए कुलगणेवा । जेमे कयाकसाया । सब्बे तिवि
 हेण खाभेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समणसंवस्स । भगवउ अंजलिं
 करियसीसे । सव्वं खमावइत्ता । खमामि सव्वस्स अहियंमि
 ॥२॥ सव्वस्स जौवरासिस्स । भावउ धम्मनिहियनियचित्तो ।
 सव्वं खमावइत्ता । खमामि सव्वस्स अहियंमि ॥ ३ ॥॥॥
 ॥ सुवर्णशालिनी देयाद् । द्वादसांगी जिनोद्भवा । श्रुतदेवी
 सदाभय । मसेज्जुतसंपदं ॥ १ ॥ चतुवर्णायसंवाय । देवो
 भवनवासिनी । निहंत्य दुरितान्येषा । करोतु सुखमक्षतं ॥२॥
 यासां क्षेपगतास्सन्ति । साधवः श्रावकादयः । जिनाज्ञां
 साधयन्तस्मा । रक्षन्तु क्षेपदेवताः ॥ ३ ॥॥॥ इति क्षेपदेव
 तास्तुतिः ॥॥॥

॥॥॥ जय महायश १ । जय महाभाग जय चिंति य
 सुहृत्फल य । जय सत्त्व परमत्यजाण य । जय १ गुरु गरिम
 गुरु । जय दुहत्तसत्ताणताण य । यंभण्यद्विय पासजिण ।
 भविइभोमभवत्थु । भय अवणिंताणंतगुण । तुज्झतिसंऊ
 नमोत्थु ॥१॥

अथ सामायक पोसहपारवागाथा ।

॥ॐ॥ भयवं दसममहो । सुदंसणो धूलभह्वयरोय ।
सफलौकयगिहचाया । साह्र एवंविहा ऊंति ॥ १ ॥ सा
ह्रण वंदणेणं । नासइ पावं असंकियाभावा । फासुअदाणे
निज्जर । अभिग्गहो नाणमाईणं ॥ २ ॥ ठउमत्यो मढ
मणो । कित्तियमित्तं पि संभरइजीवो । जंचन संभरामि
अहं । मिह्वामेदुक्कं तस्स ॥ ३ ॥ जंजंमणेण चित्तिय । मसुहं
वायाइभासियं किंचि । असुहं काएणकयं । मिह्वामे दुक्कं
तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसंठियस्स । जीवस्स जइजो
कालो । सोसफलो बोधवो । सेसो संसारफलहेज्ज ॥ ५ ॥ॐ॥
सामायकविधै लौघो विधै कौघी विधिकरतां अत्रधि आ
सातना लागो होय दसमनका दस वचनका वारै काया
का वत्तोस दूषणां मांह जो कोई दूषण लागो होय सो
सह्र मनकर वचनकर कायाये करी मिह्वामिदुक्कं ॥ॐ॥
इति सामायिक पोसहपारवागाथा ॥ॐ॥

॥ॐ॥ सिरियंभणयद्वियपाससांमिणो । सेसतित्थसामीणं ।
तित्थसमुन्नयकारणं । सुरासुराणंच सब्बेसिं ॥ १ ॥ एस
महं सरणत्थं । काउसग्गं करेमि । सत्तोए भत्तीएगुणसु
द्विय । संवस्स समुन्नयनिमित्तं ॥ २ ॥ॐ॥ नमोस्तु, वर्द्धमाना
य । सुवर्द्धमानाय कम्मणा । तज्जयाव्याप्तमोक्षाय । परो
क्षाय कुतीर्थिनां ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या । ज्या
यः क्रमकमलावलिं दधत्या । सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं ।
कथितं संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कखायतापाह्दित
जंतुनिर्दृतिं । करोति यो जैनसुखावुदोद्गतः । सशुक्रमा

सोऽङ्गवदृष्टिसखिभो । ददातु वृष्टिं मयि विस्तरो गिरां ॥
 ३ ॥ श्वसितसुरभिगंधा लौढभृङ्गौकुरङ्गं । मुखशशिनम
 जस्तं विभ्रतौ याविभर्त्ति । विकचकमलमुच्चैः सास्त्व
 चित्यप्रभावा । सकलमुखविधालौ प्राणभाजां श्रुताङ्गौ ॥
 ४ ॥ इति वीरस्तुतिः ॥

॥ प्रसमयतिमिरतरणिं । भवसागरवारितरणवरतर
 णिं । रागपरागसमौरं । वंदे देवं महावीरं ॥ १ ॥ निरु
 द्वसंसारविहारकारि । दुरन्तभावारिगणानिकामं । निर
 न्तरं केवलिसत्तमा वो । भवावहं मोहभरं हरंतु ॥ २ ॥
 संदेहकारि कुनयागम रुढगूढ । संमोहपंकहरणामलवारि
 प्रूरं । संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं । वीरागमं परमसि
 द्विकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमलभरलोभा लौढलोलालि
 माला । वरकमलनिवासे हारनीहारहासे । अविरलभवका
 रा गारविब्रित्तिकारं । कुरुकमलकरेमे मङ्गलं देविसारं ॥
 ४ ॥ इति वीरस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना । कमलमुखी कमलगर्भ
 समगौरी । कमलेस्थिता भगवती । ददातु श्रुतदेवतासौख्यं
 ॥ १ ॥ ज्ञानादिगुणयुतानां । स्वाध्यायध्यान संयमरतानां ।
 विदधातु भुवनदेवी । शिवसदासर्व साधूनां ॥ २ ॥ यस्यां चैव
 समाश्रित्य । साधभिः साध्यते क्रिया । साक्षेव देवतानित्यं ।
 भूयान्नः सुखदायिनी ॥ ३ ॥ इति चैव देवता स्तुतिः ॥

॥ श्रीसेटीतटनीतटे पुरवरे श्रीस्थंभनेखर्गिरौ । श्री
 पूज्याभयदेवसूरिविबुधा धीशैः समारोपितः । संसक्तः स्तुति
 भिर्जलैः शिवफलस्फूर्त्युत्फणापल्लवः । पाश्र्वः कल्पतरुः समे

प्रथयतां नित्यमनोवांछितं ॥१॥ आधिव्याधिहरो देवो । जीरा
वह्निशिरोमणिः पार्श्वनाथोजगन्नाथो । नतुनाथो नृणां
श्रिये ॥ २ ॥ ॐ ॥ इति पार्श्वस्तुतिः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ कल्पाणकमलागेहं । नीलदेहं महासहं । नवधन्वा
विधं पार्श्वं । सदाध्यायामिमानसं ॥१॥ इति ॥ ॐ ॥ चउक्कसाय
पद्मिस्तुल्लूरणदूज्जयमयणमाणमसमूरण । सरसपिण्गवस्स
गयगामिय । जयउपासभुवणत्तयसामिय ॥ १ ॥ जसत्तणुं
तिकडपसिण्णिव्वउ सोहइफणमणिकिरणालिव्वउ । ननवजल
हरतडिलयलंठिय । सोजिणपासपयव्वउ वंठिय ॥ १ ॥ ॐ ॥
इति श्री पार्श्वनाथस्तुतिः ॥ ॐ ॥

। ॐ । सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं । सर्वकल्याणकारणं । प्रधानं सर्व
धर्माणां । जैनं जयतु शासनं ॥ १ ॥ मङ्गलं भगवान् वीरो
मङ्गलं गौतमः प्रभुः । मङ्गलं स्थूलभद्राद्या । जैनो धर्मास्तु
मङ्गलं ॥ २ ॥ ॐ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः । परिहितनिरता
भवन्तु भूतगणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं । सर्वत्र सुखौ भवतु
लोकः ॥ ३ ॥ ॐ ॥ दासानुदासा इव सर्वदेवा । यदौय पादा
व्रजतले लुठन्ति । मरुस्थली कल्पतरुः सजौयात् । युग
प्रधानो जिनदत्त सूरिः ॥ ॐ ॥ सिद्धांतसिद्धिर्जगदेकबंधु ।
युगप्रधानः प्रभुतां दधानां । कल्याणकोटो प्रकटो करोतु ।
सूरोच्चरो श्रीजिनभद्रसूरिः ॥ ५ ॥ ॐ ।

॥ अथ साधुप्रतिकमणसूत्र ॥

। ॐ । चत्तारि मङ्गलं । अरिहंता मङ्गलं । सिद्धा मङ्गलं ।
साहमङ्गलं । केवलिपण्णत्तो धम्मो मङ्गलं ॥ १ ॥ चत्तारि

लोगुत्तमा । अरिहंतालोगुत्तमा । सिद्धा लोगुत्तमा । साह
 लोगुत्तमा । केवलिपयस्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ २ ॥ चत्ता
 रिसरणं पवज्जामि । अरिहंते सरणं पवज्जामि । सिद्धे
 सरणं पवज्जामि । साहसरणं पवज्जामि । केवलि पयस्तं
 धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ ३ ॥ इत्थामि पडिक्कमिडं । * पगा
 मसिज्जाए । निगामसिज्जाए । संथारा उवट्ठणाए । परिय
 ट्ठणाए । आउट्ठणाए । पसारणाए । ठप्पइया संवट्ठणाए ।
 कुइए कंकराइए । ठोएजंभाइए । आमोसेसरक्खामोसोआउ
 लमाउलाए । सोअणवत्तिआए । इत्थो विप्परियासिआए ।
 दिट्ठो विप्परियासिआए । मणं विप्परियासिआए । पाणभो
 यण विप्परियासिआए । जोमे देवसियो अइआरोकड ।
 तस्समित्थामि दुक्कडं । पट्ठिक्कमामिगोअरचरिआए । मिक्ख
 यरिआए । उग्गवाडकवाड उग्गवाडणाए । साणावत्थादारा
 संवट्ठणाए । मंज्जीपाळुडिआए । वलिपाळुडिआए । ठवणा
 पाळुडिआए । संकिएसहसागारे । आणेसणाए । पाणेसणाए
 आणभोयणाए । पाणभोयणाए । वोअभोयणाए । हरिअ
 भोयणाए । पत्थाकम्मिआए । पुराकम्मिआए । अदिट्ठहडाए ।
 दगसंसट्ठहडाए । रयसंसट्ठहडाए पारिसाडणि आए पारिट्ठा
 वणिआए । उहासणभिकवाए । जंउमामेणं उप्पायणेसणाए
 अपरिमुडं पडिग्गहिअं । परिभत्तंवा जंनपरिट्ठवणिअं । तस्स
 मित्थामिदुक्कडं ॥ ३ ॥ पडिक्कमामि चाउक्कालं । सिज्जायस्स
 अकरणयाए । उभडं कालं मंजोवगरणस्स । अप्पडिलेहणा
 एदुप्पडिलेहणाए । अप्पमज्जणाए दुप्पमज्जणाए । अइक्कमे
 त्रइक्कमे । अइयारे अणायारे । जोमेदेवसिडं अइआरोकड ।

तस्मिन्नामि दुःखं ॥ ॐ ॥ पडिक्कमामि एगविहेअसंजमे ।
 पडिक्कमामि दोहिंवंधणेहिं । रागबंधणेणं दोसबंधणेणं ।
 पडिक्कमामि तिहिंदंनेहिं । मणदंनेणं वयदंनेणं काय
 दंनेणं । पडिक्कमामि तिहिंगुत्तीहिं । मणगुत्तीए वयगु
 त्तोए कायगुत्तीए । पडिक्कमामितिहिंसल्लेहिं । मायासल्लेणं
 नीयाणासल्लेणं मित्रादंसणसल्लेणं । पडिक्कमामि तिहिंगा
 रवेहिं । इट्ठीगारवेणं रसगारवेणं सायागारवेणं । पडिक्क
 मामि तिहिं विराहणाहिं । नाणविराहणाए दंसणविरा
 हणाए चरित्तविराहणाए । पडिक्कमामिचउहिंकसा
 एहिं । कोहकसाएणं भाणकसाएणं मायाकसाएणं लोह
 कसाएणं । पडिक्कमामि चउहिंसखाहिं । आहारसखाए
 भयसखाए मेज्जणसखाए परिणहसखाए । पडिक्कमामिच
 उहिंविगहाहिं । इत्थिकहाए भंत्तकहाए देसकहाए राय
 कहाए । पडिक्कमामिचउहिंजाणेहिं । अट्ठेणंजाणेणं रुहे
 णंजाणेणं धम्मेणंजाणेणं सुक्खेणंजाणेणं । पडिक्कमामि पंच
 हिंकिरिआहिं । काइयाए । अहिगरणियाए । पाउसिआ
 ए । पारितावणीआए । पाणायवायकिरिआए । पडिक्कमा
 मिपंचहिं कामगुणेहिं । सहेणं रुवेणं रसेणं गंधेणं फासेणं
 पडिक्कमामिपंचहिं महव्वणहिं । पाणायवायाउविरमणं सुसा
 वायाउविरमणं अट्ठिन्नादाणाउविरमणं मेज्जणाउविरमणं
 परिणहाउविरमणं । पडिक्कमामि पंचहिंसमईएहिं । इरि
 आसमिईए भासासमिईए एसणासमिईए आयाणभंजमत्त
 निकखेवणासमिईए उच्चारपासवण खेलजल्लसंधाण पारिट्ठा
 वणिआसमिईए । पडिक्कमामि ठहिं जीवनिकाएहिं । पुटवि

सुहेसु । पन्नरस कम्मभूमीसु । जावंति केविसाह । रयह
 रणगुल्लपट्टिगहधारा । पंचमहव्यधारा । अट्टारसहस्र
 सीलंगधारा । अक्खयायारचरित्ता । तेसव्वे । सिरसा
 मणसा । मत्थएणवंदामि ॥ खामेमि सव्व जीवे । सव्वे जीवा
 खसंतुमे । मित्तीमे सव्वभूएसु । वेरंमज्जन केणई ॥ १ ॥
 एवसहं आलोइअनदिअ । गरहिअ दुगुंठिअं सभं । तिवि
 हेण पट्टिकंतो । वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ २ ॥ ॥
 इति ओसाधुप्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥ ॥

॥ ॥ सच्चित्त १ । दव्व २ । विगई ३ ॥ वाहण ४ । तंवो
 ल ५ । वत्थ ६ । कुसुमेसु ७ ॥ पाणहि ८ । सयण ९ । विले
 वण १० ॥ वंभ ११ । दिसि १२ । गहाण १३ । भत्तेसु १४ ॥
 इति चउद नियम गाथा ॥ ॥

। अथ वंदित्तसूत्र ।

॥ ॥ वंदित्तु सव्वसिद्धे । धम्मयारिएअ सव्वसाहअ ।
 इहामि पट्टिकमिउं । सार्वगधम्मोइआरस ॥ १ ॥ जोमेव
 याइआरो । नाणेतहदंसणे चरित्तेअ । सुहमोअ वाय
 रोवा । तंनिंदे तंच गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहेपरिगहम्मो ।
 सावज्जे बह्वविहेअ आरंभे । कारावणे अकरणे । पट्टिकमे
 देस्सिअं सव्वं ॥ ३ ॥ जंबद्धमिंदिएहिं । चउहिं कसाएहिं अप्प
 सत्थेहिं । रागेणव दोसेणव । तं निंदे तंच गरिहामि ॥ ४ ॥
 आगमणे निग्गमणे । ठाणेचं कमणे अणामगे । अभिउगे
 अनिउगे । पट्टिकमे ॥ ५ ॥ संकाकंखविगिंठा । पसंसतहसं
 थवो कुलिंगीसु । सम्मत्तसइआरे । पट्टिकमे ॥ ६ ॥ उक्काय

समारंभे । प्रयणेऽथ प्रयावणेऽथ जे दोसा । अत्तहाय परडा ।
 उभयद्वाचेव तंनिंदे ॥ ७ ॥ पंचसहस्रगुणव्याणं । गुणव्या
 णं च तिगहमइआरे । सिकखाणं च चउण्हं । पडिक्कमे० ॥ ८ ॥
 पढमे अणुव्यम्मी । थूलगपाणाइवायविरइउ । आयरिअ
 मप्पसत्थे । इत्थपमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वहबंघठविष्ठेए । अइभा
 रेभत्तपाणवुष्ठेए । पढम वयस्स इआरे । पडिक्कमे० ॥ १० ॥
 बीएअणुव्यम्मी । परिथूलग अलिअवयण विरइओ । आय
 रिअमप्पसत्थे । इत्थपमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहस्सारहस्स
 दारे । मोसुवएसेअकूडलेहेअ । बीअवयस्सइआरे । पडिक्कमे०
 ॥ १२ ॥ तइएअणुव्यम्मी । थूलगपरदब्ब हरणविरइउ । आ
 यरिअमप्पसत्थे । इत्थपमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पउगे ।
 तप्पडिहूवे विरइगमणेअ । कूडतुल्लकूडमाणे । पडि० ॥ १४ ॥
 चउत्थेअणुव्यम्मी । निच्चं परदारगमण विरइउ । आय
 रिअमप्पसत्थे इत्थपमा० ॥ १५ ॥ अपरिग्गहोया इत्तर ।
 अणंग वीवात्त तिव्वअणुरागे । चउत्थवयस्सइआरे । पडिक्क०
 ॥ १६ ॥ इत्तोअणुव्यए पंचमम्मी । आयरिअमप्पसत्थंमि ।
 परिमाणपरिष्ठेए । इत्थ० ॥ १७ ॥ धणधन्तखित्तवत्थु ।
 रुप्पसुवस्सेअ कुविअ परिमाणे । दप्पएचउप्पयम्मी पडि० ।
 १८ । गमणस्सय परिमाणे । दिसासुउड्डं अहेयतिरिअं
 च । वुड्डिअइ अंतरद्वा । पढमन्निगुणव्यएनिंदे ॥ १९ ॥
 मज्जंमिअ मंसंमिअ । पुप्फेअफलेअ गंधमल्लेअ । उवभोग
 परीभोगे । बीअन्निगुणव्यए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडि
 वुहे । अप्पोलदुप्पोलिएअ आहारे । तुष्ठोसहिमक्खणया ।
 पडि० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसात्ती । भात्ती फोत्तीसु वज्जए

कम्भं । वाणिज्जं चैव दंतलक्ख । रस केसविसविसयं ॥ २२ ॥
 एवं खुज्जंतपिप्पुणं कम्भं । निज्जंतणं च दवदाणं । सरदहंत
 लावसोसं । असईपोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गिसुसल
 जंतग । तण्णकडे मंतमूलभेसिज्जे । दिग्गे दिवावएवा । पट्ठि०
 ॥ २४ ॥ गहाणवट्ठण वन्दगविलेवणे । सहखवरसगंधे । वत्था
 सणआभरणे । पट्ठि० ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कइए । मोहरिअहि
 गरण भोगअइरित्ते । दंजंमिअण्डाए । तईअम्भिगुणवएनिंदे
 ॥ २६ ॥ तिविहेदुप्पणिहाणे । अणवडाणे तहासइ विज्जणे ।
 सामाइयवित्तकए । पढमेसिक्खावएनिंदे ॥ २७ ॥ आणवणे
 पेसवणे । सहखवेअ पुग्गलक्खेवे । देसाविगासिअम्भो ।
 वीएसिक्खावएनिंदे ॥ २८ ॥ संथाख्खारविहो । पमायतह
 चैवभोचणाभोए । पोसहविहिविरोए । तइएसिक्खावएनिं
 दे ॥ २९ ॥ सच्चित्तनिकखमणे । पिहणववएसमंखुरेचैव ।
 कालायक्कमदाणे । चउत्थे सिक्खावएनिंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु
 अ द्हिएसुअ । जोमे असंजएसुअणुकंपा । रागेखवदोसिणव
 तंनिंदेतं चगरिहामि ॥ ३१ ॥ साहसुसंविभागो । नकडंतव
 चरणकरणगुत्तीसु । संतेफासुअदाणे तंनिंदे तं चगरिहा
 मि ॥ ३२ ॥ इहलोएपरलोए । जीविअसरणेअआसपडगे ।
 पंचविहो अइआरो मामज्जंज्जमरणंते ॥ ३३ ॥ काएणका
 इअस्स । पट्ठिक्कमे वाइअस्सवायाए । मणसामाणसिअस्स ।
 सवस्सवयाइयारस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्खागारवेसु । सखा
 कसायदंठेसु । गुत्तीसुअ समिईसुअ । जोअइआरोतंनिंदे ॥
 ३५ ॥ सम्मदिट्ठो जीवो । जइविज्जपावं समायरेकिंचि ।
 अप्पोसिहोइवंधो । जेणननिहं चसंकुणइ ॥ ३६ ॥ तंपिज्जसप

प्रिक्रमणं । सम्परिआवसउत्तरगुणंच । खिप्पंउवसामेइ ।
 वाहिवसुसिखिउविज्जो ॥ ३७ ॥ जहाविसंकुट्टेगयं । मंत
 मूल विसारया । विज्जाहणंत मंतेहिं । तोतंहवइ निविसं
 ॥ ३८ ॥ एवं अडुविहंक्कम् । रागदोससमज्जिअं । आलो
 अंतोअ निंदितो । खिप्पंहणइसुसावउ ॥ ३९ ॥ कयपावो
 विमणूसो । आलोइअनिंदितु गुरुगुणसे । होइअइरेग
 लज्जउ । उहरीअभरुवभारवहो ॥ ४० ॥ आवसएण एण ।
 सावउजइवि बड्डरउहोइ दक्खणमंतकिरिअं । काहीअ
 चिरेणकालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणावडुविहा । नयसं
 भरिआपप्रिक्रमणकाले । मूलगुण उत्तरगुणे । तंनिंदेतंचग
 रिहामि ॥ ४२ ॥ तस्सधम्मस्सकेवलिपणत्तस्स । अम्भुट्ठिमि
 आराहणाए । विरउमिविराहणाए । तिविहेणपप्रिक्रं तो ।
 वंदामिजिणेचउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंतिचेइआइ । उडुअ
 अहेअतिरिअलोएअ । सवाइंताइं वंदे । इहसंतातयसंताइं
 ॥ ४४ ॥ (भगवन्/जावंतिकेविसाह । भरहेरवण महाविदेहे
 अ । सवे सितेस्सिणउ । तिविहेणतिदंमविरिआणं ॥ ४५ ॥
 चिरसंचियपावपणासणीए । भवसयसहस्स महणीए । चउ
 वीसजिणविणिग्गयकहा । बउलंतुमेदिअहा ॥ ४६ ॥ मममंग
 लमरहंता । सिद्धासाहसुअंचधम्मोअ । सम्महिट्ठिदेवा ।
 दिंतुसमाहिंचवोहिंच ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणंकरणे । किच्चा
 णमकरणेहि पप्रिक्रमणं । असहहणेअतहा । विवरीअ
 परवणाएअ ॥ ४८ ॥ खामेमिसव्वजीवे । सवे जीवाखमंतुमे
 भित्तीमेसव्वभूएसु । वेरंमज्जनकेणइ ॥ ४९ ॥ एवमहंआलोइ
 अनिंदिय । गरहिअदुगुंठियंसम्भं । तिविहेणपप्रिक्रं तो ।

वंदामिजिणेचउवौसं ॥ ५० ॥ ❀ ॥ इति श्री यावकप्रतिक
मणसूत्र समाप्तः ॥ ❀ ॥

। अथ दसपञ्चक्खाणविचार लिख्यते ।

॥❀॥ तहां प्रथमचउदै नियमसंभारै सोइसतरै पञ्चक्खा
णकरै ।❀। उग्गएसूरे नमोक्कारसहियं (सुंठसीं) पञ्चक्खाइ
चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं ।
असत्थणाभोगेणं । सहसागारेणं । महत्तरागारेणं । सब्ब
समाहिवत्तियागारेणं ॥ विगइउपञ्चक्खाइ । असत्थणाभो
गेणं । सहसागारेणं । लेवालेवेणं । गिहत्थसंसिद्धेणं ।
उक्खित्तविवेगेणं । पत्तुच्चमक्खिणं । पारिद्धावणियागारेणं
महत्तरागारेणं । सब्बसमाहिवत्तियागारेणं । देसावगासियं
भोगपरिभोगं पञ्चक्खाइ । असत्थणाभोगेणं । सहसागारेणं
महत्तरागारेणं । सब्बसमाहिवत्तियागारेणं । वोसरइ ॥
इति नवकारसौपञ्चक्खाण ॥ १ ॥

॥❀॥ तथा जो यावक नियम संभारै नहीं । सो विगइका
[अर] देसावगासीका आगार नपचखै । निकेवल । नवकार
सौ आदिक पञ्चक्खाण करै ॥ यथा ।

॥ ❀ ॥ उग्गएसूरे नमोक्कार सहियं पञ्चक्खाइ । चउ
व्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं ।
असत्थं । सह । वोसरामि । इति नवकारसौ पञ्चक्खाण ॥
आगार २॥

॥❀॥ पोरसीं (सुंठसीं) पञ्चक्खामि । उग्गए सूरे चउव्वि
हंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । असत्थं

सहसा० । पट्टस्यकालेणं । दिसामोहेणं । साङ्गवयणेणं ।
सव्व० । विगईउ पञ्चक्वामि । इत्यादि पुर्व्वकीपरैकहणा ।
इति पोरसी पञ्चक्वाण ॥ २ ॥ आगार ६ ॥

॥ ॥ इसीमाफं साठपोरसीनो पञ्चक्वाण जाणवो
(इतना विशेष है । पोरसिं पञ्चक्वाइ (इहां) साठपोरसिं प
ञ्चक्वाइ कहणो ॥ इति साठपोरसीपञ्चक्वाण आगार ६ ॥
॥ ॥ सूरें उगए । पुरमडुं अवडुं (वा) पञ्चक्वाइ । चउब्बि
हंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अख० ।
सह० । पट्ट० । दिसामो० । साङ्ग० । मह० । सव्व० । विग
इउ पञ्चक्वाइ इत्यादि पूर्व्ववत् । इति पुरमडुपञ्चक्वाण ॥
३ ॥ आगार ७ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पोरसिं साठपोरसिं (वा) पञ्चक्वाइ । उगए
सूरें । चउब्बिहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं ।
साइमं । अख० । सह० । पट्ट० । दिसा० । साङ्ग० ।
सव्व० । एकासणं व्यासणं (वा) पञ्चक्वाइ । दुविहं ।
तिविहंपि आहारं । असणं । खाइमं । साइमं । अख० ।
सह० । सागारि आगारेणं । आउट्टणपसारेणं । गुरुअम्भु
डाणेणं । पारि० । मह० । सव्व० । देसावगासियं । इत्यादि
पूर्व्ववत् ॥ ४ ॥ इति एकासण व्यासण पञ्चक्वाण आगार ८ ॥

॥ ॥ पोरसिं साठपोरसिंवा पञ्चक्वाइ । उगएसूरें
चउब्बिहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं ।
अख० । सह० । पट्टस्यका० । दिसा० । साङ्ग० । सव्व० ।
एकासणं एगहाणं पञ्चक्वाइ । दुविहं । तिविहं । चउब्बिहंपि
आहारं । असणं । खाइमं । साइमं । अन्न० । सह० ।

सागारि आगारेणं । गुरुअभमुद्गारेणं । पारिद्धाव० । मह० ।
सव्व० । देसाव० । इत्यादि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकद्वाराण
पञ्चक्खाण । आगार ७ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पोरसिं साढपोरसिं (वा) पञ्चक्खाइ । उग्गए
सूरे चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । सा० ।
अस्य० । सह० । पट्ठ० । दिसामो० । साज्ज० । सव्व० । आयं
विलं पञ्चक्खाइ । अस्यत्थ० । सह० । लेवालेवेणं । गिहत्थसं
सिद्धेणं । उक्खित्तविवेगेणं । पारिद्धा० । मह० । सव्व० ।
एकासणं पञ्चक्खाइ । तिविहंपि आहारं । असणं । खाइमं ।
साइमं । अस्य० । सह० । सागारिआगारेणं । आउट्ठणप
सारेणं । गुरुअभमुद्गारेणं । पारिद्धा० । मह० । सव्व० ।
वोसरइ ॥ ६ ॥ इति आविल पञ्चक्खाण । आगार ८ ॥

॥ ॐ ॥ पोरसिं साढपोरसिं (वा) पञ्चक्खाइ उग्गएसूरे ।
चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं ।
अस्यत्थ० । सह० । पट्ठ० । दिसा० । साज्ज० । सव्व० ॥ निब्बिग
इयं पञ्चक्खामि । अन्न० । सह० । लेवालेवेणं । गिहत्थ
संसिद्धेणं । उक्खित्तविवेगेणं । पट्ठच्चमक्खिणं । पारि० ।
मह० । सव्व० । एकासणं पञ्चक्खाइ तिविहंपि आहारं ।
असणं । खाइमं । साइमं । अन्न । सह । सागा० । आउट्ठ० ।
गुरु० । पा० । सह० । सव्व० । देसावगासियं भोगपरिभोगं
पञ्चक्खामि । अस्य० । सह० । मह० । सव्व० । वोसरामि ॥
इति निवोपञ्चक्खाण ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सूरे उग्गए अभमत्तं पञ्चक्खामि चउव्विहंपि
आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अस्य० । सह० ।

मह० । सव्व० । देसावगासियं भोगपरिभोगं पञ्चक्खामि ।
अण० । सह० । म० सव्व० वोसरामि ॥ ॐ ॥ इति चउ
व्विहार उपवास पञ्चकखाण ६ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सूर उग्गए अम्भत्तडुं पञ्चक्खामि तिविहंपि
आहारं । असणं । खाइमं । साइमं । अण० । सह० ।
पाणहार पोरसिं । साठपोरसिं । पुरमडुं । अवडुंवा । पञ्च
क्खाइ । अण० । सह० । पल्लण० । दिसा० । साज्ज० । सव्व० ।
देसावगासियं भोगपरिभोगं पञ्चक्खामि । अ० । स० । म०
सव्व० । वोसरामि ॥ ॐ ॥ इति तिविहार उपवास पञ्चकखाण ॥

॥ ॐ ॥ पोरसिं साठपोरसिं पुरमडुं अवडुंवा पञ्च
क्खामि उग्गएसूरे चउव्विहंपि आहारं असणं । पाणं ।
खाइमं । साइमं । अण० । सह० । पल्ल० । दिसा० । साज्ज० ।
सव्व० । एकासणं एगड्डाणं दत्तियं पञ्चक्खामि तिविहं चउ
व्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण० ।
सह० । सागा० । गुरु० । मह० । सव्व० । विगइउ पञ्चक्खा
मि इत्यादि पूर्ववत् देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ ॐ ॥ इति
दत्तिपञ्चकखाण ६ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ दिवसचरमं पञ्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं ।
असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण० । सह० । मह० ।
सव्व० । वोसरइ ॥ इति दिवसचरमपञ्चकखाण १० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ दिवसचरिमं पञ्चक्खामि दुविहंपि आहारं ।
असणं । खाइमं । अण० । सह० । मह० । सव्व० ।
वोसरामि देसावगासियं पूर्ववत् ॥ ॐ ॥ इति दिवस
चरमदुविहार पञ्चकखाण ॥ ॐ ॥

॥ॐ॥ पाणहारदिवसचरिमं पञ्चक्वामि अण० । सह० ।
मह० । सव्व० । वोसिरामि ॥ॐ॥ इति पाणहार उपवास
रो पञ्चक्खाण ॥ॐ॥

॥ॐ॥ भवचरिमं पञ्चक्खाइ तिबिहंपि चउव्विहंपि आ
हारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण० । सह० ।
मह० । सव्व० । वोसरइ ॥आगार॥ (भवचरिम दोआगार
कापिणहोय) ॥ॐ॥ इति भवचरिमपञ्चक्खाण ॥ॐ॥

॥ॐ॥ तथा इमगंठसहिं । सुंठसहि । अंगुडसहि । प्रमुख
अभिगूह पञ्चक्खाणकै पिण ए च्यार आगार । अण० ।
सह० । मह० । सव्व० । वोसरइ । पांचमो चोलप्रट्टागारेणं
सो साधकै होय ॥ॐ॥ इति अभिगूह पञ्चक्खाण ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अहसं भंते। तुह्माणं समीवे। देसावगासियं पञ्चक्खा
मि । दब्बउ । खित्तउ । कालउ । भावउ । दब्बउणं देसावगा
सियं । खित्तउणं इत्यवा अणत्थवा । कालउणं मज्झत्तधारणा
प्रमाणे । जावनियमं पञ्चक्वामि । भावउणं जावगहेणं नग
हिज्जामि । ठलेणं नठलिज्जामि । असेणकिविरायंकेणवा ।
एसो परिणामो नपप्पिवज्जइ । ताअभिगूह । अणत्थणा
भोगेणं सहस्रागारेणं । महत्तरागारेणं । सव्वसमाहिवत्तिया
गारेणं । वोसरइ ॥ॐ॥ इति देसावगासीपञ्चक्खाण ॥ॐ॥

॥ ॐ॥ तथा साधु पञ्चक्खाणकरै । तवदेसावगासी नही
पचखै । अश्रुतिविहार उपवासमें आबिलमें निवीमें एकासण
प्रमुखमें पाणसकाइ आगारपञ्चक्खै (सोदिखावेहै) पाणस
लेवाडेणवा । अलेवाडेणवाअत्येणवा वहलेणवा ससित्येणवा
असित्येणवा वा वोसरइ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ प्रत्याख्यान आगारार्थं लिखते । उगए सूरै न
 मोकार सहियं पञ्चखाइ चउव्विहं पि आहारं । (अर्थ) इहां गुरु कहै
 पञ्चखाइ । शिष्य कहै पञ्चखामि । पञ्चखाइका अर्थ सर्वठिकाणें
 अंगीकार वाची जाणनो (जैसें) सूरज उदय ज्ञयांवाइ । नवकारसी अत
 अंगीकार करूं । यह पञ्चखाण (मज्झिमे कहतां) दोषड़ी काल उपरांत ।
 जहां लक्ष नवकार गुणकर पारं नहिं । तहां तक (चउव्वि०) । आहं आ
 हारनो त्यागरूप अत अंगीकार करूं । सो आहार प्रकारको आहार
 कहतेहैं । असणं ॥ पाणं ॥ खाइमं ॥ साइमं । (असणं व्याख्या) असण
 कहतां । अन्न । चोषा ज्वारि वरटी मूंग चिया गज्जं प्रमुख सर्वधानं ।
 सन्नू गज्जं को आदिलेकर सब तरैको आटो ॥ सब तरैका साग तरकां
 री । लाइप्रमुख सर्वपकवान । खूणादिक सर्वकंद । दूध दही मांडादि
 क । सर्वकवली वस्तु । हींग वेसण विरहाली । लूण सैधवादिक । इत्या
 दिक सर्व अग्र्यमांहि जाणना ॥ १ ॥ (पाणं । व्याख्या) आकण
 जवोदक तुषोदक तंदुलोदक उष्णोदक (शुद्धोदक कहितां) सर्व अप्य
 काय । इतनी जातका पांणो ॥ २ ॥ (खाइमं । व्याख्या) खादिम । सूखडी
 नालेर खजूर द्राख सेक्योधानं आंवा केला काकडी अखरोट खारक
 विदाम प्रमुख सब जातनोमेवो । सब जातनाफल ॥ खादिमजाणवा ॥ ३ ॥
 (साइमं । व्याख्या) खादिम । तंबोल सूंठि मिरच पौंदर हरडै बहेडा
 तुलसी कसेलो काथो जेष्ठीमधु तज तमाल पत्र इलायची लवंग वाय
 विडंग अजमो अजमोद कुलंजण चिणकबोवा कचूर नागर मोथ
 कंटासेलियउ कुंभटउ पांन सुपारी पुहकरमूल जवासामूल वावची
 बांउलछालि धवछालि खेजड छालि खयरसार ए सर्वखादिम जाणवा
 ॥ ४ ॥ ॐ ॥ हिंयै अनाहार कहतेहैं ॥ नींवछालि मूल पांन सिली गोमूत्र
 गिलोय किरायतो अतिविस कूडउ मूकडिराख रोचिणी छालि पौंप
 लामूल वज धमासउ रींगणी एलियो चिणोठी कचर बोरिनामूल
 इत्यादि अणाहार पिय इच्छासंयुक्त छोडणा (यहजो) इच्छाविना

अनिष्ट पणें लीजै । जवतो अनाहारहै । जो इच्छासंयुक्त भावतालीजैतो
 आहार को दूषण लगै । अब पञ्चक्खाणकै आगारोंका अर्थ जाण्यं
 बिना पञ्चक्खाण करै । सो आधो पञ्चक्खाण कह्यो । इस कारण
 किष्किमात्र आगारोंका अर्थ लिखते हैं । जिस पञ्चक्खाणका जितना
 आगार है ॥ सो आगार रख करि हमारै पञ्चक्खाण है । (अमृत्यणा
 भोगेणं ॥ १ ॥ व्याख्या) अनाभोगटाली । अनाभोग कछिवै अत्यन्त
 विरुद्ध होयेंसे (किया जो) पञ्चक्खाण यादनरहै । भूलकर कोई चीज
 सुं हमें घाली होय । बाखाणमें आई होय । पिया जाय्यां पीछे तत्काल
 नाख देवै तो पञ्चक्खाण भाजै नही । जाय्यां पछै भक्षण करै तो
 पञ्चक्खाण भाजै निर्वै सेती ॥ १ ॥ ॥ पच्छन्न कालेणं । (व्याख्या)
 कालकी प्रच्छन्नता । आकाशै गई उडती होय । वा आकाशै बहलकाया
 होय । तथा पर्वत प्रमुखकोओट आवजावे । खरज न दीसै । तब
 भरम सुं पञ्चक्खाण काल संपूर्ण छवो जाण कर भोजन करै तो व्रत
 भंग न होय ॥ ३ ॥ ॥ सहसागारेणं । (व्याख्या) सहसाकार कहीवै
 अत्यन्त उतावलकै जोगै । अथवा अकस्मात् विलोभतां तोलतां द्रुत
 प्रमुखको छोटो सुखमें पडै । तो । व्रतभंग न होय ॥ २ ॥ ॥
 दिसा मोहेणं (व्या०) दिसाकों अजाणतो वैसे । जे दिशा भूल
 मनुष्य । पूर्वदिशाकुं पश्चिम दिसि जायें । इस कारणसे । पञ्चक्खाण
 काल पूर्णछवा बिनां भोजन करै तो व्रतभंग न होय ॥ ४ ॥ ॥ साडव
 येणं (व्याख्या) साधूकै वचनसे उम्पाडा पोरिसी आदिक भरमसंयुक्त
 सुणकर । पञ्चक्खाण काल पूरण छवो जाणि कर भोजन करै
 तो व्रतभंग न होय ॥ ५ ॥ ॥ सब्ब समाहि वत्तिया गारेणं
 (व्याख्या० ।) पञ्चक्खाण काल पूरण छवां प्रथमहीज अकस्मात्
 शूलदिक रोग ऊपजै । तिससे परिणामोंकी धिरता रहै नही ।
 आर्त्त रौद्र ध्यान उत्पन्न होय । तब उसरोगीकुं रोग मिटावण
 वावत औषधादिक देवै । वा आपलेवै । तो पञ्चक्खाण भंग नही ॥ ६ ॥

महत्तरागारेणं (व्या०) पञ्चकव्याण पालयेसे । जितनी कर्मों की निर्जरा होती है । उसनिर्जरासे अधिक निर्जरा होणेका कारण । और कोई पुरुषसेवन नहीं आवै । असा जो । चैत्यसंघादि सम्बन्धो प्रयोजन होणें सें । पञ्चकव्याण काल पूरण छवा विनां भोजन करै तो व्रत भंग नहीं ॥ ७ ॥ ॐ ॥ सागारी आगारेणं (व्या०) गृहस्थ देखतां साधु भोजन न करै । असी जीन राजकी आज्ञा है । इसीसे कोई साधुने एकासनादिक पञ्चकव्याण किया है । वह साधु भोजन अवसरै भोजन करणेंकुं बैठै है तिस वषत कोईक गृहस्थ साधु पास आय बैठै । तब साधु उस ठिकाणां सुं उठ कर ओरठिकाणें जाय करि भोजन करै तो व्रत भंगनहीं । अगृहस्थको वह आगार ऐसे है जिस पुरुषकी निजर लगती होय तो उस आयां उठि कर ओर ठिकाणें भोजन करै तो पञ्चकव्याण भंग नहीं ॥ ८ ॥ ॐ ॥ आलट्टण पसारणं (व्या०) पगप्रमुख जो एकट्टे करणेंसे । तथा पसारणेंसे । थोडासा आसन चल जाय । तोभी व्रत भंग नहीं ॥ ९ ॥ ॐ ॥ गुरु अवमुद्राणें (व्या०) आपका गुरु आणेंसे । तथा आपसे कोई बडा पुरुष आणेंसे । विनय निमित्तै । एकासनादि व्रतमें । भोजन करतो प्रिय आसन छोड उठ खडो होय । तो भी व्रत भंग नहीं ॥ १० ॥ ॐ ॥ पारिद्वावणिद्यागारेणं (व्या०) (सब पञ्चकव्याणां में यह आगार साधुका है) जिस आहार नाखणेंसे वज्रत जीव विराधना होती जाण कर (गुरु कहै) यह आहार परठोमत । एसरस आहार है । ऐसी आज्ञा देवे तो एकासनादि व्रतधारी साधु । दूसरी वखत आहार करै । तो भी व्रत भंग नहीं ॥ ११ ॥ ॐ ॥ लेवालेवेणं (व्या०) भोजन करणेंका थाल प्रमुख भाजन । तिसकै माहि हतादिक विगय द्रव्यका अंश लग्या है । तिसकुं हाथ प्रमुख सें पूंछगेरा । तिस पर भी किञ्चित वेस लुप्तमा रह गया है । उस भाजनमें आयंविद्यादि व्रतधारी भोजन करै । तो भी व्रत भंग नहीं ॥ १२ ॥ ॐ ॥ उक्खितविवेगेणं (व्याख्या)

आयंविद्यादि पञ्चक्खाणमं ॥ नही खाणें योग्य जो विगय द्रव्य प्रमुख ।
 (तिसका फरस) खाणें योग्य द्रव्यसें होगया होय । वहखाणें में
 आवै । तो भी व्रत भंग नही । परंतु जो विगय आदि दे करि पतला
 द्रव्य सोहायसें उठाय सक्ते नही । ऐसे द्रव्यसें फरस ऊँचा होय । तो
 उसणें खाणसें व्रत भंग नही होय ॥ १३ ॥ ॥ गिहव्य संसिद्धेणं (व्या०)
 भोजन पुरसे जिस सेती । असौ कुडखी आदि दे करिभाजन । विगय
 प्रमुख द्रव्य सें बेमालुम खरडी होय । प्रत्यक्षनि जरसें कदाचिलालुम
 न होय । तब जो उसही वासणसें भोजन पुरसै । तोभी व्रत भंग नहो
 होय ॥ १४ ॥ पडुच्चसुक्खिएणं (व्या०) सर्वथा लखी रोटी वाघराप्रमुख द्रव्य
 किच्चिन्मात्र भृतादिकसुं बेमालुम चोपडणें में आवा है । परंतु भृतादिक
 का सवाद नही मालुम पड़ताहै । तो (नीवी) पञ्चक्खाण मध्य उस द्रव्य
 कुं खाणेंमें आवैतो व्रत भंग नही । और जो धारविगय लेवै तो व्रत
 भंग होय ॥ १५ ॥ ॥ इति पञ्चदशसङ्खानां प्रत्याख्याना काराणां
 लेखतोऽयं संपूर्णम् ॥



॥ ॥ दोषेव नमुक्कारो । आगाराच्छ ऊंति पोरसिए । सत्ते
 वयपुरमड्ढे । एगासणंमि अट्टेव ॥ १ ॥ सत्ते गट्ठाणस्यो । अट्टेवय
 आयंवलंमि आगारा । पंच वयमत्तट्टे । छप्पाणे खरिमच्चत्तारि ॥ २ ॥
 पंचचउरो अभिग्गहे । निव्वीए अट्टनवय आगारा । अप्पावरणे पंचउ
 चवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्यानाथा ॥ ॥

॥ ॐ ॥ सुख अर्थ साचो सरदङ्ग १॥ सम्यक्तमोहनौ २ ॥
 मिथ्यात्वमोहनौ ३॥ मिथ्यमोहनौ ४॥ परिहरं ४॥ (यह
 चार पद्मिलेखन सुहृत्पत्नीषोलतीविरीयां कही जै) । काम
 राग १॥ स्नेहराग २॥ द्वष्टिराग ३॥ परिहरं (यहसातेबोल
 प्रथम कही जै) । सुगुरु १॥ सुदेव २॥ सुधर्म ३॥ आद
 रं । कुगुरु १॥ कुदेव २॥ कुधर्म ३॥ परिहरं । ज्ञान
 १॥ दर्शन २॥ चारित्र ३॥ आदरं । (यहनवपद्मिलेखनद्रावै
 हाथे करीयै) । ज्ञानविराधना १॥ दर्शनविराधना २॥
 चारित्रविराधना ३॥ परिहरं । मनोगुप्ति १॥ वचन
 गुप्ति २॥ कावगुप्ति ३॥ आदरं । मनोदंष्ट १॥ वचन
 दंष्ट २॥ कावदंष्ट ३॥ परिहरं । (यह नव पद्मिलेखन जी
 मणै हाथे करीयै) । ए पचवीस बोल सुहृत्पत्नीना जाणवा ।
 हिवै पचवीस पद्मिलेखन अङ्गनी कहैठै ॥ छाप्यालेस्या १॥
 नीललेस्या २॥ कापोतलेस्या ३॥ परिहरं । मायैनि लाडै ।
 ऋद्धिगारव १॥ रसगारव २॥ सातागारव ३॥ सुखै परि
 हरं । मायाशल्प १॥ निवाणाशल्प २॥ मित्रादंशणशल्प ३॥
 हीयै परिहरं । क्रोध १॥ मान २॥ (एदोय जीमणैकांधै
 काखे) । माया १॥ लोभ २॥ (एदोय द्रावैकांधै वगलै) ।
 हास्य १॥ रति २॥ अरति ३॥ (एतीन द्रावै हाथेपरिहरं) ।
 भय १॥ शोक २॥ दुगंठा ३॥ एतीन जीमणै हाथे परि
 हरं । प्रथीकाय १॥ अप्पकाय २॥ तेजकाय ३॥ (ए तीन द्रावै
 पणै परिहरं) । वाउकाय १॥ वनस्पतिकाय २॥ वसकाय ३॥
 (ए तीन जीमणैपणै परिहरं) ॥ इति सुहृत्पत्नी पद्मिलेखन
 संपूर्णम् ॥ ॐ ॥

॥ ❀ ॥ थापनाचार्यनौ तेरै पट्टिलेहणना ॥ १३ बोल
चिंतवौजै सो लिखिते हैं । सुइखरूपधारुं १॥ ज्ञान १॥
दर्शन २॥ चारित्रसहित ३॥ सरदहणासुद्धि १॥ मरूपणा
सुद्धि २॥ दर्शनासुद्धि ३॥ सहित पंचाचारपालू १॥
पलावुं २॥ अनुमोडुं ३॥ मनोगुप्त १॥ वचनगुप्त २॥ काय
गुप्त ३॥ एवं १३ बोल श्रीधर्मरत्नप्रकरण सूत्रवृत्तौ ॥ ❀ ॥

। अथ आलोचनालिख्यते ।

॥ ❀ ॥ आजूणा चार पहर दिवसमें जे में जौव
विराध्या होय । सातलाख पृथ्वीकाय । सातलाख अप
काय । सातलाख तेजकाय । सातलाख वाजकाय । दश
लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय । चवद्वैलाख साधारण वन
स्पतिकाय । दोयलाख वेन्द्रौ । दोयलाख तेंद्री । दोय
लाख चउरिंद्री । चारलाख देवता । चारलाख नारकी ।
चारलाख पंचेन्द्रीतिर्यंच । चवद्वैलाख मनुष्य । एवं चार
गति । चौरासीलाख जौवायोनिमें । जो कोई जौवहणयो
होय । हणायो होय । हणतां प्रतें भलो जाख्यो होय । तेस
ह मन । वचन । कायादं करो मित्रामिदुकडं ॥ ❀ ॥ प्राणाति
पात १ । मृपावाद २ । अदत्तादांन ३ । मैथुन ४ । परिग्रह
५ । क्रोध ६ । मांन ७ । माया ८ । लोभ ९ । राग १० ।
द्वेष ११ । कलह १२ । अध्याख्यान १३ । परपरोदाद १४ ।
पशुन्य १५ । अरति रति १६ । मायासृपावाद १७ ।
मिथात्वसत्य १८ । एअडारहपाप्रस्थानक सेव्या होय ।

सेवाया होय । सेवतांप्रते भलाजाखा होय । ते सह मन
वचन कायाइ करी । मिठा मि दुकडं ॥३॥ ज्ञान दर्शन ।
चारित्र्य । पाटी । प्रोथी । ठवणी । कमली । नवकरवाली ।
देवगुरुधर्मनो आसातनाकरी होय । पनरै कर्मदाननो आ
सेवनाकरी होय । राजकथा । देशकथा । लीकथा । भोला
कथा । करी होय । ओर जोकोई पाप परनिंदा ये करी
कीधुं होय । करायं होय । करतांप्रते अणुमोटा, होय ।
ते सरजे । मन । वचन । कायाये करी । दिवसअतीचार
आलोचने करी । पढिक्कमणा मांहे आलोचं । तस मिठा
मि दुकडं ॥ इति आलोचनलघुअतीचार ॥३॥

। अथ दृढअतीचार लिख्यते ।

॥ ३॥ नाणंमिदंसणंमिअ । चरणंमितवेथ तहयविर
यंमि । आयरणंआयारो । इअ सो पंचहाभण्ड ॥ १ ॥
अर्थः । ज्ञानाचार १ ॥ दर्शनाचार २ ॥ चारित्र्याचार ३ ॥
तपाचार ४ ॥ वीर्याचार ५ ॥ एवं पांचविधि आचारनां हि
निकोअतीचार । पक्षदिवसमां हि । सूक्ष्म वादर । नांणतां
अणनांणतां । ऊओ होइ । तेरह मनवचनकायाइ करी मि
ठामिदुकडं ॥३॥ (तलज्ञानाचारना आठअतीचार) । वाळे
विण वज्रमाणे । उवहाणे तहयनिज्जवणे । वंजसअत्यतदु
भए । अइविहोनाणमाचारो ॥१॥ ज्ञानदालवेलानां हि पढि
उंगुण्डं नही । अकालै पढिउं । विनयहीन । वज्रमानहीन
उपधानहीन । श्रीउपाध्यायदाने । नही पढिउं । अथवा अने

राकनें पट्टिउं । अनेरो गुरु कह्यो । व्यंजन अर्थ तदुभय ।
 कूपोपख्यो । देववां दणै । पडिक्कमणै । सिञ्जाय करतां पढतां
 गुणतां । कूडो अचर कानेमाव । अधिकोउठो । आगलपाठ
 लभण्यो । सूत्र अर्थ कूडाभण्यो । मणीनेवोसाख्यो । तपोधन
 तणैधमे । काजो अणउधख्यो । दांडीअणपडिलेही । वसतो
 अणसोधी । असिञ्जाई अणोऊाकालवेलांमाहि । दसवैका
 लिंक प्रमुख । सिद्धांतभण्यो गुरुयो । योगवह्नांप्रै भण्यो ।
 ज्ञानोपगरण पाठो पोथो ठवणी कवली नवकरवाली सां
 पना सांपनी । बहोदसरी । उलीयाकागलप्रमुख प्रते ।
 आसातनाऊई । पगलागो । थूकलागो । उंसौसैमूंक्योकने
 ठतां आहारनीहारकीधो । ज्ञानद्रव्य भक्षणउपेक्षणकीधो ।
 प्रज्ञापराधै विणख्यो । विणसतोउवेख्यो । उतौसक्तोसारसं
 भालनकीधी । ज्ञानवंत प्रते मल्लख्यो । अवज्ञाआसातना
 कीधी । कोईप्रते भणतां गुणतां प्रदेषमत्सर अंतराय अप
 वातकीधो । मतिज्ञान । श्रुतिज्ञान । अधिज्ञान । मनपर्यव
 ज्ञान । केवलज्ञान । ए पांचज्ञानतणी । असहृहणाकीधी ।
 कोईतोतलोवोवलोहख्यो वितर्को । आपणा जाणपणातणो
 गर्वचिंतव्यो ॥३॥ अष्टविधज्ञानाचारविषईउ जिकोअतो
 चार । पक्षदिवसमाहि । सूक्ष्मवादर । जाणतां अजाणतां
 ऊवोहोय । तेसऊ मन वचन कायाइं करी मिश्रमिदुक्कन
 ॥३॥ दर्शनाचारनाआठअतीचार ॥३॥ निसंक्रिय निक्कं
 खिअ । निवृत्तिगिह्या अमृददिह्यैअ । उववृहथिरौंकरण ।
 वल्लुपभावणे अट्ट ॥ १ ॥ देवगुरुधर्मतणैविपै । निसंकपणो
 नकीधो । तथाएकांत निश्चयधख्यो नहौ । सगलाईमत

भलाहै । एहवी अद्वाकौधी । धर्मसंबंधियाफलतखै विषै ।
निःसंदेहबुद्धधरौनही । चारिबियासाधुसाधवीतणा मलि
मलीनगावदेधौ । दुगंठाउपजावौ । मिथ्यात्वौतणौ पूजा
प्रभावनादेधौ । मूढदृष्टि पणोकोधो । संघमांहि गुणवंत
तणौ । अनुपहंणा । अस्थिरीकरण । अवात्सल्य अग्री
ति अभक्तिचिंतवी । संघमांहि धिरीकरण । वात्सल्यशक्ति
छते प्रभावनानकोधी । देवद्रव्यविणसिड । विणसतुं उवे
षीड । ठतोशक्ते सारसंभालनकोधी । साधर्मिकस्य कलह
कर्मकोधो । जिनभवनतणौ चौरासौ आसातनाकोधी ।
गुरु प्रते तेतीस आसातना कीधी । अत्रौ वक्ते देवपूजा
कोधी । बिडुं ठामपाखै देवपुज्या । वासकूपीकलसतणोठव
कोलागो । मुखतलोवाफलागी । ठवणारिय हाथ थकौ
पनीड । पदिलेहवोवीसाखो । नवकरवालीनें पगलागो ।
दर्शनाचार विषईडजिकोअतीचार० ॥ ३ ॥ ॥ ॥

॥॥॥ चारिबाचारना आठअतीचार ॥ पणिहाणयोग
जुत्तो । पंचहिंसमईहिं तिहिंगुत्तीहिं । एसचरित्तायारो ।
अइविहोहोइनायजो॥१॥ इरियासमिती १॥ भासासमिती
२॥ एषणासमिती ३॥ आयाणभंडमत्तनिकखेवणासमिती
४॥ उचारपासवणखेलजल्लसंधाणपारिडावणीयासमिती ५॥
मनोगुप्ति १॥ वचनगुप्ति २॥ कायगुप्ति ३॥ पंचसमितौ
तीनगुप्ति । रुनीपरें पालीनही ॥॥॥ साधुतणैसदैव अष्ट
विध चारिबाचार विषईडजिको अतीचार० ॥ ४ ॥

॥॥॥विशेषतः आवक्तणें धर्में औसम्यक्तमूलवारहवत
औसम्यक्ततणा पांच अतीचार ॥॥॥ संकाकंखविगंठा । पसं

सतइसंयत्रोकुलिंगीसु । संका श्रीअरिहंततणी । बल अति
 सथज्ञानलक्ष्मी गांभीर्यादिकगुण । साखतोप्रतिमा । चारि
 लियानाचारिव । जिनवचनतणो संदेहकीधो । (आकांक्षा)
 प्रह्ला विष्ण महेश्वर चेलपाल गोगो गोवदेवता ग्रह
 पूजा विष्णुइग । हनुमंत । इत्येवमादिक । ग्रामगोव देश
 नगर जूजूआ । देवदेहराना प्रभावदेपी । रोगिं आतंके ।
 इहलोक परलोकार्थे पूज्या मान्या । बौद्धसांख्यादिक
 सन्यासी । भरता । भगत । लिंगिया । योगी । दरवेश ।
 अनेराई दर्शनियानो । कष्टअंलचमत्कारदेपी । परमार्थ-
 जाण्यांविण भूल्या । अनुमोद्या । कुशाक्षशीख्या । सांभ-
 ल्या । सगाध । संवत्सरौ । होली । बलेव । माहीपूनिम ।
 अजाप्रतिवा । प्रेतबीज । गोरबीज । विणायगचोथ ।
 नागपांचम । ऊलणाठड । सीलसातम । द्रोआठम । नउ
 ली नवम । अहवदसम । व्रतइग्यारस । वत्सवारस ।
 धनतेरस । अनंतचौदस । आदित्यवार । उत्तराइन । नवो
 दक । ज्यागभोगउतारणा कीधा । पौपलपाणीवालपा ।
 बलाब्या । घरबाहिर । कूई तलाव नदो समुद्र कुंड पुन्यहेतु
 स्नानकीधा । दानदौधा । ग्रहणशनीश्वर माहमास नवरावि
 नाहिया । अजाणनाथाप्या । अनेराई व्रतोलाकीधा करा
 व्या विचिकित्ता धर्मसंबन्धियाफलतणो संदेहकीधो । जिण
 अरिहंत । धर्मनाआगर । विश्वोपकार सागर । मोक्षमार्ग
 दातार । देवाधिदेवबुद्धैसुद्धभावै नपज्या नमान्या । महातमा
 ना भातपाणीतणो दुगंठाकीधौ । कुचारिलिया देखी ।
 चारिलियाऊपरि अभावहुड । मिथ्यात्वीतणी प्रभावना

देखी । प्रसंसाकीधो । प्रौतिमांडी । दाक्षिणलगै तेहनोधर्म
मान्युं ॥ ॐ ॥ श्रीसमकित विषै । अनेरोजिकोअतीचार ।
पक्षदिवसमाहि । सूक्ष्मवादर जाणतां अजाणतां झुठ होय
ते सह मनवचनकायाइं करी मिथ्यामिदकपुं ॥ १ ॥ ॐ ॥ पहि
लै प्राणातिपात विरमणवतै पांच अतीचार ॥ ॐ ॥ वह बंध
ठविष्टेण । अइभारेभक्तपाणवुष्टेण । द्विपद चौपद प्रते रीस
वसे गाढोवाउ प्रहारवात्यो । गाढै बंधनवांध्या । घणै
भारपीडा । निर्लाठनकर्मकौघा । चारिपाणीतणीवेला सा
रसंभारनकीधो । लहिणैदेणै किणही प्रते लंघाव्युं ।
तेणै भूखे आपणजीव्या । अणगलपाणी वावख्यो । रुद्रै
गल्यो नही । गलाव्योनही । अणगलपांखीजोल्या । लूग
माघोया । ईंधण अणसोध्योलात्युं । साप कानपजुरा ।
सुलहला । माकप । जूआं । गोर्गीमा । साहतां मूआंदू
षव्यां । रुद्रैथानकनमूक्या । कोमो । मकोमो । उदेही ।
वीवेलो । कातरा । चूमेलि । पतंगिया । मेमका । अल
सिया । ईलौ । कूति । डांस । मसा । बगतरा । माषौ
प्रसुष । जेकेईजोव । विणठा चांपिया । दूहव्या । मालाह
लावतां । पंखौ काग चिमकलाना ईंमा फुटा । अनेरा
एकेद्रियादिक जिकेजीव । विणठा । चांप्या । दूहव्या ।
हालतां । चालतां । अनेरुं कांदूकामकाज करतां विद्वंसपुं
कौधुं । जीवरचारुद्रै नकौधो । संधारोसूकव्यो । सुत्याधान
तावद्रैदीघा । दलाव्या । भरमाव्या । घाटला । तावडैमा
टव्या । मूक्या । मूकाव्या । जीवाकुलभूमिलीपावी । वासौ
नार राषौ । रषावी । दलणें षांडणें लीपणै । रुद्रैज

यणा नकीधौ । आठमचउदसना नियमभागा । घूणीक
 रावौ ॥ पहिला प्राणा तिपातव्रतविषईउ । अनेरो० ॥ १ ॥
 ॥ ॥ ॥ बीज थलच्छावाद विरमणव्रते । पांच अतोचार ॥ ॥ ॥
 सहस्रारहस्यदारे । मोखवणसेय कूटलेहेय ॥ सहसाकार ।
 किणहेकप्रते । अशक्तोआलदीधो । किणइकप्रते । एकाते
 वातकरतादेखो । तुम्हे तो राजविरुद्धचिंतवोठो । इत्यादिक
 कछु । खदारमन्त्र भेदकीधो । अनेराई किणहीनो । मंल
 आलोचनमर्मप्रकाशो । किणहीने कूटी वडदीधो । कूटो
 लेखलिख्यो । कूटीसाषभरो । थापणमोसोकोधो । कन्या-
 टोर । गा । भूम । संबंधिया । लहणै । दयणै । व्यवसायवाद
 वढावढिकरता । मोठको ऊठ वोख्यु । हाथ पग मणी
 गालतीधौ । करणकामोद्या । अधर्म वचन बोल्या ॥ ॥ ॥
 बोजै छषावादव्रत० ॥ २ ॥ ॥ ॥ तीजै अदत्तादानविरमण
 व्रतना पांच अतोचार ॥ तेनाहण्णउगे । घरवाहिर खेव
 खलेपराईवस्तु । अणमोकलावी । लीधो । दीधो । वावरी ।
 चोरौनोवस्तु मोललीधो । चोरधाहीत प्रते संवलदीधुं ।
 संकेतकछु । विरुद्ध राज्यातिक्रमकीधो । नवापुराणा सरस
 विरस सजोव निर्जीव वस्तुतणा भेलसंभेल कोधौ । खोटै
 तोल मान माप वुहछा । फाणचोरौकीधौ । साटै लांच
 लीधौ । माता पिता पुत्र कलल परिवार वंचौ । जुदीगांठ
 कीधो । किणहीने लेखपलेखै भूलख्युं । पत्नीवस्तु उलवौ
 लीधौ ॥ ॥ ॥ तीजै अदत्तादान व्रत० ॥ ३ ॥ ॥ ॥ चौथै खदा
 रसंतापमैथुनव्रतै पांच अतोचार ॥ अपरिगृह्याइत्तर ।
 अणम वीवाह तिब्बअणुरागे ॥ अपरिगृहीतागमन । इत्तर

परिगृहीतागमन । विधवा । वेस्त्रा । स्त्रीकुलाङ्गना । खंदार
 सोक्ततै विधै । दृष्टिविपर्यासकौधो । सरागवचन बोल्या ।
 आठम चउदस अनेराई पर्व तिथितणा नियमभागा । घर
 घरणाकौधो । कराव्या । अनुमोदीया । कुविकल्पचित्तव्या ।
 अनङ्गकौडाकौधो । पराधाविवाहजोडा । कामभोग तणै
 विधै तीव्राभिलाषकौधो । कुस्त्रलाघा । नटविटपुरुषसुं हासुं
 कौधुं ॥ ३३ ॥ चोषै सैथु नव्रतवि० ॥ ४ ॥ ॥ पांचमैपरि
 गृह परिमाणप्रतै पांचअतीचार । धन धनखित्तवत्यु ॥ धन
 धान्य खेव वस्तु रूप्य सुवर्ण कुप्य द्विपद चतुष्पद नवविध
 परिग्रहतणा । नियम उपरांत दृष्टिदेखी । मूर्च्छालगै संचे
 पनकौधो । माता पिता पुत्र कललादिकतणै लेखैकौधो ।
 परिग्रहपरिमाणलेई पण्यो नही । पढीबीसारिउ । नियम
 बीसारिया ॥ पांचसै परिग्रहपरिमाण व० ॥ ५ ॥ ॥ ठडै
 दिगविरमणव्रतै पांच अतीचार ॥ ३४ ॥ गमणस्यं परिमाणे
 ऊर्द्धदिसि । अधोदिसि । तिर्यगदिसि । जायवाआयवातणो
 नियम जे कोईअजाणैभागो । एकगमासं कोप्ती । बीजीग
 मावधारी । विस्मृतिलगै अधिकभूमिगया । पाठवणो आवी
 मोकली ॥ ३५ ॥ ठडै दिग्व्रतवि० ॥ ६ ॥ ॥ सातमै भोगो
 पभोगपरिमाणव्रत ॥ जेहना भोजनआथी पांचअतीचार ॥
 अनेकर्म ऊंती १५ ॥ एवं २० अतीचार ॥ ३६ ॥ सच्चित्त
 पतिव्रते । अपोलदुपोलयंचआहारे० ॥ सच्चित्ततणै नियम
 लीधै अधिक सच्चित्तलीधुं । तथा सच्चित्तमिलीवस्तु । अप
 काहार । दुपकाहार । तुष्टोषधीतणोभक्षणकौधुं । होला
 चंनो पङ्ककाकप्ती भक्षणाकौधो । सुस्त्याधानप्रमुख भक्षण

कौधा ॥ सच्चित्द्वयविग्रह । पाण्डु तं वोलवत्थ कुसुमेसु ।
 दाहणसयणविलेखण । बंभदिसिंहानभत्तेषु ॥ १ ॥ एच
 वदै नियम । दिनप्रतै संभास्यासंचेप्यानही । लेईनियम
 भांग्या । बावीस अभक्ष । वत्तीस अनंतकायमांहि ।-आटो
 मूला गाजर पोमालू सूरण सेलरा । कात्रीआंबली ।
 गोलहंघाधा । चोमासा प्रसुखमांहे । वासौ कटोलनीरोटी
 घाधी । विज्जं दिवसनो दहौलीधुं । मधु मज्झा माषण
 माटी । वैगण पौलू पीचू पपोटा । पौपौ विस । होम ।
 करहा । घोलवडा । अणजाण्याफल ठीवरं । अथाणुं ।
 आमणं बोर क्कान्नुं मीठुं । तिल । पसपस । काचाकोठ
 वडाखाधा । रात्रीभोजन कौधुं । लगवगतीवेलाइं
 व्यालूकौधुं । दिवसउग्यांविणसीराव्या । तथा पनरैकम्मा
 दान । इंगालीकम्मे । वणकम्मे । साडीकम्मे । भाडीकम्मे ।
 फोम्रीकम्मे । दंतवाणिज्ये । रसवाणिज्ये । केशवाणिज्ये ।
 विषवाणिज्ये । जंतपौलणकम्मे । निर्लंठणकम्मे । दवगि
 दावणया । सरदहतलावसोसणया । असई पोसणया पांच
 वाणिज्य । पांचकर्मा । पांचसामान्य । महारंभ लीहालक
 राव्या । इं ठवाहनीवाहपचाव्या । आणी चिणा पकवान
 करीवेच्या । वासौमाषणतपाव्या । अंगोठाकौधा । कराव्या ।
 तिलादिकसंचीया । फागुणमासउपरांतराख्या । कूकण ।
 सूडाप्रसुखपोस्या । अनेरुंजेकाईवज्जसावदा कठोरकर्मा
 दिकसमाचख्यो ॥ ॥ ॥ सतनजोगोपभोगव्रतविष० ॥ ॥
 ॥ ७ ॥ ॥ आठमाअनर्थदंष्ट्र विरमणव्रतना । पांच अती
 चार । कंदप्पे कुक्कइए० । कंदप्पे लगे विठनीपरै । हास्यकुव

हल सुखादि अंगकुचंटाकीधौ । मूरखपणालगै । कुणही
 नैअसंभइवाक्य बोल्या । खांजा । कटारो । कुसि । कुहाडा ।
 रथ । ऊषल । मूसल । अंगन । धरटोआदिक । सजकरी
 सेल्या । मांग्या आप्या । कनकवस्तुढोरलेवराल्या । अनेहं
 कांइपापोपदेसदौधुं । अंगोल नाहण दांतण प्रगधो
 अणपाणो । तेलअधिकआल्या । हींडोलैहोच्या । राज
 कथा । देसकथा । भुक्तकथा । स्त्रौकथा । पराईवात
 कीधौ । आर्त रोद्र ध्यानध्याया । कर्कसवचन बोल्या ।
 करणकामोडा । संभेडालाया । भेसा सांढ कूकड सौंढा
 श्रानादिऊऊतां कलहकरतांजोया पाधिलगै अदेखाई
 चिंतवी । माटी । मौठुं । कणकपासिआ । काजविण
 चांप्या । तेह ऊपरवयटा । आलैवनस्यतोषुंदौ । ठाठ ।
 पाणी । धौ रस तेल गुल । आमलवेतस । वेरजादि
 कतणा भाजनउषाडा मूक्या । तेसांहि । कौडी । कंथ आ
 माखो । उंदर । गिरोलौ । प्रमुखजौवविणटा । सूना
 प्रमुखजौव क्रौडाहेतै बांदिराख्या वणौनिद्राकीधौ । राग
 द्वेष लगै । एकनेरिद्विपरिवारबांठो । एकनें मृत्यु हाणि
 विमासौ ॥ आठमाअनर्थ दंडव्रतविषण ॥ ८ ॥ ॥ नवल
 सामायकव्रतपांच अतोचार ॥ ॥ ॥ तिविहिदुष्पणिहाणे ।
 सामायकलौधै । मनआहटदोहटचिंतव्युं । वचनसावह्य
 बोत्युं । काथअणपडिलेह्युं हलाव्युं । ठतीवेलाइं सारा
 थकनलौधं । सामायकलेईउषादुसुखबोल्या । ऊधआवी
 कीधौ । बीजदीवातणी उजोहोलागी । कण कपासीया
 माटी मौठुं नौल फूल हरोकायना संघट्टुआ । पुरषपतिव्यं

वैसतां नवकारभण्युनही । ऊठतां दिवसचरम नकीधुं ।
 निवीआं विल उपवासादिकतंपकरी । काचोपाणौपीधुं । वम
 नथयुं ॥ ॐ ॥ वाह्य तपप्रतवि ॥ ॐ ॥ अभ्यंतरतप ॥ ॐ ॥
 प्रायश्चित्त विण्ड ॥ गुरुकर्ने मनसुद्धे आलोयण लीधीनही ।
 गुरुदत्तप्रायश्चित्ततप लेखासुद्ध पुहचाडुं नही । देव गुरु संघ
 साहस्रीप्रते विनयसाचव्योनही । वाचना प्रवृत्ता परा
 वर्त्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा लक्षण पंचविध सिद्धायकी
 धोनही । धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायोनही । कर्मचय
 निमित्त लोगस दस वीसनुं काउसगनकीधो ॥ ॐ ॥
 अभ्यंतरतपविषड्ड ॥ वीर्याचारना तीन अतीचार ॥ ॐ ॥
 अणगुहियबलविरिड । परकमइजोनजंतठाणेसु । जुंजइ
 अजहायामं । नायओवीरियाचारो ॥ १ ॥ पढवै गुणवै
 विनय वेयावच्च देवपूजा सामायक दान सील तप भावना
 प्रमुख धर्मद्वयतैणे विषै । मनवचन कायातणो ठहुं बल
 वीर्यगोपव्युं । रुद्रापंचाङ्गखमारुमण नदीधा बैठांपन्निकम
 गुंकीधुं ॥ ॐ ॥ वीर्याचारविष ॥ ॐ ॥ नाणाइ अइअइ
 वय । समसंलेहणपण पनरकम्मेसु । बारस्तवविरिअ तिगं ।
 चउवीसंसयअईयारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाणंकरणे ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ जिनप्रतिषिद्ध । वावौसअमच्च । बत्तोसअनंत
 काय । बद्धबीजभक्षण । महाआरंभ महापरिगृहादिक
 कोधा । नित्यद्वय देवपूजासामायकादिक । तथा तीर्थ
 यात्रादिक नकीधा । जीवाजीवादिविचार सहहियानही ।
 आपणौ । कुमतिलगै उत्सवप्ररूपणाकीधी । प्राणातिपा
 त १ । मृषावाद २ । अदत्तादान ३ । मैथुन ४ । परिग्रह ५ ।

क्रोध ६ । मान ७ । माया ८ । लोभ ९ । राग १० ।
द्वेष ११ । कलह १२ । अभ्याख्यान १३ । परपरिवाद १४ ।
यशुन्य १५ । अरतिरति १६ । मायास्वावाद १७ । मिथ्या
त्वसून्य १८ । अश्वारहपापस्थानकसांज्ञि । जेकांइ कीधो
कगव्यो अनुमोदो ॥ एवंप्रकारै थावकधर्मै । थीसम्यत्क
मन्वचारहवत । शोवीभामोदतीचारसांज्ञि । जिकां अंती
चार । पक्षदिवससांज्ञि । सूक्ष्म वाटर जाणतां अजाणतां
ऊशो होय ते सह्य मनवचन कायायेंकरी मिठ्ठामिरकडं ।
इति थीथावकं वैचारहवतना अतीचार संपूर्णम् ॥ ३॥

॥ अथ जयतिङ्गुश्रगवत्तीसीति ॥

॥३॥ जयतिष्ठाय वरकण्ठकय जयजिगधन्तरि ।
जयतिष्ठाय कदागकोम दरिद्रकुरिकेसरि । तिष्ठाय
जगद्विर्लभियाग भुवणक्षयमामि । कुणसुमुहाद् जिगे
मपामयंभगयपुरश्चि ॥१॥ तदममरंतलहंतिऊत्तिवर पुत्त
कल्लतति । धमा सुवन्द विरग पुग जगभुंजहिरज्जति ।
पिकवहिसुक्क यमंमसुकु तुहपामपसाइग । इयतिष्ठाय
वरकण्ठकय सकवत्रिगुणमयजिग ॥ २ ॥ जवज्जग
परिज्ज कल्लत, कुमरंइग चवात्तयोणारण्यगभुगुनरुत्ति
गभुत्ति । तुहजिगमरगरमायगोण लह उंतिपुत्तगव ।
जव धन्तरिपाममकवि तुहंगोमकरोभव ॥ ३ ॥ विज्जाजो
इयमंतंतं विदिव अययणिग । भुवणभय अट्टविचमिदि
विज्जातुहनामि । तुहनामिग अयत्तिववि जगणेद

वित्तउ । तंतिऊअण कल्लाणकोसतुङ्गं पासनिरुत्तउ ॥४॥ खुह
 पत्तइ मंतंतंतजंताइं विसुत्तइ । चरधिरगरलगड्ढगखग
 रिउवग्गविगंजइ । दुत्थियसत्थ अणत्थ घत्थ नित्थारइदय
 करि । दुरिअइं हरउसुपासदेव दुरिअकरिकेसरि ॥ ५ ॥
 तुहआणाथंभेइभीमदप्पुइर सुरवर । रक्खसजक्खफणिं
 विंदचोरानलजलहर । जलथलचारिउहखुहपसुजोइणि
 जोइअ । इयतिऊअणअविलंघिआण जयपास सुसाभिअ ।
 ॥ ६ ॥ पत्थिअअत्थअत्थत्थहित्थ भत्तिम्भरनिभर । रोमं
 चंचिअचासकाय किण्णरनरसुरवर । जसुसेवहिं कमक
 मलजअल पक्खालिअकलिमलु । सोभवणत्तयसामिपास
 महमहउरिउवलु ॥ ७ ॥ जय जोइअमणकमलभसलभय
 पंजरकुंजर । तिऊअणजणआणंदचंद भवणत्तयदिणयर ।
 जयमइमेयणिवारिवाह जयजंतुपिआमह । थंभणयडिअ
 पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥ ८ ॥ वड्डविहवस्सुअवस्सु सुस्सु
 वस्सिउठप्पस्सहि । मुक्खधम्मकामत्थकाम नरनियनियसत्थ
 हि । जंज्जायइवड्डदरसणत्थ वड्डनामपसिद्धउ । सोजोइअमण
 कमलभसलसुहपासपवद्धउ ॥ ९ ॥ भयविभभलरणज्जणिरदस
 णथरहरिअसरोरय । तरलिअनयणविसस्सुस्सुखग्गरगिरक
 णय । तइंसहसत्तिसरंतिऊं तिनरनासिअं गुरुदर । मह
 विज्जुविसज्जुसइपासभयपंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइं पासविविअ
 संतनित्तपत्तंतपवित्थिय । वाहपवाहपवूढूढ दुहदाहसुपु
 लइय । मस्सहिंसणुसउणपुणअप्पाणंसुरनर । इयतिऊअण
 आणंदचंद जयपासजिणेसर ॥ ११ ॥ तुहकल्लाणमहेसुघंट
 टंकारवपिल्लिअ । वल्लिरमल्लमहल्लभत्तिसुरवरगंजुल्लिअ ।

हल्लुपफलिअ पवत्तयंतिभवणेहिमहस्रव । इयतिष्ठअणआ
 गंदचंद जयपाससुजुम्भव ॥ १२॥ निचल केवल किरणनिय
 रविज्जरिअ तमपहयर । दंसिअसयलपयत्थसत्यवित्थरिअ
 पहाभर । कलिकलुसिअ जणधूअलोयलोयणहअगोवर ।
 तिभिरइं निरुहरपासनाहभुवणत्तवदिणयर ॥ १३॥ तुहसमर
 णजलंवरिससित्त माणवमइमेइणि । अवरारवरसुज्जमत्थवोह
 कंदलदलरेइणि । जायइफलभरभरियहरिय दुहदाह अणो
 वम । इयमइमेइणिवारिवाहदिसपासमइंमम ॥ १४॥ जय अ
 विकल कल्लाणवल्लिउल्लूरिअदुहवणुं । दाविअसग्नपवग्गसग्न
 दुग्गइगमवारणुं । जयजंतुहजणणतुल्लजंणियहिवावज्ज ।
 रम्मधम्मसोजयउपासं जयजंतुपिआमज्ज ॥ १५॥ भुवणार
 णनिवासदरिअपरदरसणदेवय । जोइणिपृअणखित्तवाल
 खुदासुरपत्तवय । तुहउत्तडुसुनडुसुडु अविंसंतुलचिइहिं ।
 इयतिष्ठअण वणसौहपास पावाइ पणासहिं ॥ १६॥
 फणिफणफारफुरंतरयण कररंजिअनहवल । फलिणो कंद
 लदलतमाल निल्लप्पलसामल । कमठासुरउवसग्गवग्ग संस
 ग्गअगंजिअ । जयपच्चक्खजिणेसपासथंअणयपुरट्ठिअ ॥ १७॥
 महमणुतरुपमाणुनेय वायाविविसंतु । निवतणुरवि
 अविण्यसहाव आलसविहिलंघलु । तुहमाहप्पपमांणदेव
 कारुण्यपवत्तउ । इयमइमाअवहौरपासपालहिबिलवंतउ ॥
 १८॥ किंकिंपिउण्येयकलुणुकिंकिंवनजंपिउ । किंवनचिइ
 उकिइदेवदो णयमविलंबिउ । कासनकियनिप्पल्लल्लअल्लहिं
 दुहत्तइ । तहविनपत्तउताणकिंपिइ पज्जपरिचत्ताइ ॥ १९॥
 तुजंसाभिज्जतुजं माचवणतुजं भित्तमियंक्ख । तुजं गइतुजं

मद्रुतं हिजताण तुङ्गं गुरुखेमंकर । हउं दुम्भरभारिअवराउ
 राउखलिभ्याउ । लीखउतुहकमकमल सरणजिणपालहि
 चंगउ ॥ २० ॥ पइंदि।वेकयनीरोयलोयकिविपावियसुह
 रुच । किविमइंमंतमहंतकेविकिविसाहियसिवप्रय । किवि
 गंजिअरिउवग्नकोदिजसधवलिअभूअल । मइंअवहोरहि
 णपाससरणागयवतुल ॥ २१ ॥ पञ्चवयारनिरौहनाहनिप्यस्य
 पठअण । तुङ्गंजिणपासपरोवयारकरणिक्कपरायण । सत्तु
 मित्तसमचित्तवित्तिनयनिंदअसमण । माअवहौरिअजुग्ग
 उंविमइंपासनिरंजण ॥ २२ ॥ हउंवरुविहदुहतत्तगतु
 उं दुहनासणपर । हउं सुयणहकरणिक्कटाणतुङ्गंनिरुक्क
 णाकर । हउंजिणपासअसामिसालतुङ्गंतिङ्गअणसामिअ ।
 जंअवहौरंदिमइंऊपंतइयपासनसोहिय ॥ २३ ॥ जुग्गाजुग्ग
 विभागनाहनज्जोअणतुहसम । भवसुवयारसहावभाव क
 रणारससत्तम । समविसमइं किंवरुणिएइ भुविदाहसमंत
 उ । इयदुहवंधवपासनाहमइंपालयुगंतउ ॥ २४ ॥ नयदीणह
 दीणयसुएविअखविकिविजुग्गय । जंजोइयउवयारकरइउव
 यारससुज्जय । दीणहदीणनिहीणजेणतइंनाहिणचित्तउ ।
 तोजुग्गउअहमेवपासपालहिमइं चंगउ ॥ २५ ॥ अहअण
 विजुग्गयविसेसक्तिविमणहिदीणह । जंपासविउवयारकर
 इतुङ्गंनाह समग्गह । सुद्धिअकिलकल्लाणजेण जिणतुभहप
 सौयह । किंअणुण तंचेव देव मामइंअवहोरह ॥ २६ ॥
 तुहपत्थण नज्ज होइ विहल जिणजाणउ किंपुण । हउं दु
 क्खिउ निरु सत्तचत्तदुक्खउ उखुयमण । तंमणउ निमिसेण
 एण एउविज्जइ लम्भइ । सच्चंभुक्खियवसेण किं उंवरुप

चइ । १७॥ तिङ्गअणसामिअपासनाह मइं अप्पयासि
 उ । किज्जउजंनियहवसरिमुनमुणुं वज्जं पिउ । अस्सणजिण
 जगतुहसमोविदस्सिहसद्यासउ । जइअवगिस्ससितुं हिजअह
 हकिहहोसुहयासउ ॥ १८॥ जइतुहहविणक्किणविपेअ पा
 इणवेलविउ तउजाणुं जिणपासतुम्हहउं अंगीकरिअउ ।
 इयमहइत्तिअजंनहोइसातुहउं हावण । रक्खं तहनियकि
 त्तिण्येयज्जइअवहौरण ॥ १९॥ एवमहारिहजत्तदेवइअ
 क्कवणमहसउ । जंअणलिय गुणगहण तुम्हसुखिणअ
 णिसिउउ । इयमइं प्रसियसुपासनाहयंभणयपुरहिअ । इय
 सुणिवरसिरि अभयदेवविस्सवइआणिंदिअ ॥ २०॥ इति
 श्रीस्वभनक तीर्थराज श्रीपार्श्वनाथस्तवनम् ॥

॥ अथ सातेस्वरणलि ॥

॥ १॥ अजियंजिअसव्वभयं । संतिं चपसंतसव्वगय
 पावं । जयगुरुसंतिगुणकरे । दोविजिणवरपणिवयालि ॥ १॥
 गाहा ॥ ववगयमंगुलभावे । तेहंविउलतवनिअलसहावे ।
 निरुवममहप्पभावे । थोसाभिसुदिट्ठसम्भावे ॥ २॥ गाहा ॥
 सव्वदुक्खप्पसंतीणं । सव्वपावप्पसंतिणं । सयाअजिय संती
 णं नमोअजियसंतिणं ॥ ३॥ सिलोगो ॥ अजियजिणसुहप्प
 वत्तणं । तवपुरिसुत्तमनामकित्तणं । तहयधिइमइप्रवत्तणं ।
 तवयजिणुत्तमसंतिकित्तणं ॥ ४॥ मागहिजा ॥ किरिआ
 विहिसंचिय कम्मकिलेसविमुखवरं । अजियंनिचियं चगु
 णोहिमहासुणिसिद्धिसंयआ जयध्व । तिग महासुणियोवि

असंतिअरं । सययं मसणिवुइकारणयंचनमंसणिअं ॥५॥
 आलिंगणिअं ॥ पुरिसाजइ दुक्खवारणं । जइयविमग्गह
 सुक्खकारणं । अजियं संतिं च भावउ । अभयकरे सरणं
 पवेज्जहा ॥६॥ मागहिआ ॥ अरइरइतिमिरविरहिअ ।
 सुवरयजरसरणं । सुर असुर गरुल भुयगवइ । पयवपणिव
 इयं । अजियमहमविय सुनयनयनिउण भयकरं । सरण
 सुवसारअ भुविदिविज्जमहिअं सययसुवणमे ॥ ७ ॥ संगय
 यं ॥ तंचजिणुत्तम सुत्तमणित्तमसत्तधरं । अज्जवेमहवखं
 तिविसुत्तिसमाहिनिहिं । संतिअरं पणमामिदसुत्तमतित्थय
 रं । संतिसुणौममसंतिसमाहिवरंदिसउ ॥८॥ सोवाणयं ॥
 सावत्थि पुव्वपत्थिवंचवरहत्थिमत्थयपसत्तवित्थिअसंथियं थि
 रसरिद्ववन्नं । मयगललीलाय माणवरगंधहत्थिपत्थाणपत्थि
 अं । संथवारिहं हत्थिहत्थवाज्जं । धंतकाणगरुअगनिक्खहय
 पिंजरं । पवरलक्खणोवचिअ सोमचारुखं । सुइसुहमणा
 भिराम परमरमणिज्जवरदेवदुं दुहि । निनायमज्जरयय
 सुहगिरं ॥९॥ वेढउ ॥ अजिअजिआरिणं । जिअसव्वभयं
 भवोहरिउं । पणमामिअहंपयउ । पावंपसमेउमेभयवं ॥१०॥
 रासालुहुउं ॥ कुरुणवयहत्थिणाउर । नरोसरोपढमं । तउ
 महाचक्खवट्ठिभोए । महप्पभावो । जोवावत्तरिपुरवरसहस्स ।
 वरणगरणिगंसजणवयवई । वत्तीसारायवरसहस्साणजाय
 मग्गो । चउदसवरयण नवमहानिहि । चउसद्विसहस्स
 पवरजुवईण सुन्दरवई । चुलसीहयगरहसयसहस्ससामी
 ठखवइगामकोटिसामी । आसी जो भारहम्मिमयवं ॥ ११॥
 वेढउ । तंसंतिसंतिअरं । संतिअं सव्वभया । संतिंधुणामिजिणं

संतिविहेउमे ॥१२॥ रासाणंदियअं ॥ इक्खागुविदेहनरौसर
 र नरवसहासुणिवसहा । नवसारयससिसकलाणण । विगय
 तमाविह्वअरथा । अजिउत्तमतेअगुणेहि महासुणि । अमि
 अवला विउलकुला । पणमामितेभवभयमूरण । जगसरणा
 मंसरणं ॥१३॥ चित्तलेहा ॥ देवदाणविंदचंदसूर वंदहइतु
 जिदुपरम । लदुरुवधंतरुप्पपट्टसेय सुइनिइधवल । दंतपंति
 संतिसत्ति कित्तिसु त्तित्तुत्ति गुत्तिपवर । दित्ततेयविंदधेय
 सबलोयभाविअप्पभावणेअ । पदसमेसमाहिं ॥१४॥ नारायड
 ॥ विमलससिकलाइरेअसोमं । वितिमिरसूरकलाइरेअतेयं ।
 तिअसवइगणाइरेअरुवं । धरणीधरपवराइरेअसारं ॥१५॥
 कुसुमलखा ॥ सत्तेय सयाअजिअं । सारौरेयवले अजिअं ।
 तवसंजमेय अजिअं । एसयुणामि जिणं मजिअं ॥ १६ ॥
 भुअंगपरिरिंगिअं ॥ सोमगुणेहिं पावइनतं नवसरयससौ
 तेयगुणेहिं पावइनतं नवसरयरवी । रुवगुणेहिं पावइ
 नतं तियसगणवई । सारगुणेहिं पावइनतं धरणिधरवई
 ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥ तित्थवरपवत्तअं तमरयरहिअं ।
 धीरजणयुअच्चिअं । नुअकलिकलुसं । संतिसुहपवत्तअं ।
 तिगरूपयड । संतिमहंमहासुणिं । सरणमुवणमे ॥ १८ ॥
 ललियअं ॥ विणडणयसिररदयंजलि । रिसिगुणसंयुअं
 थिमिअं । विवुहाहिव धणवइनरवइ । युअमहिअच्चिअं
 वऊसो । अइरुग्गव सरयदिवायर । समहिअ सप्पमंत
 वसा । गयणंगणविअरअ । समुइअ चारण वंदिअंसिरसा
 ॥ १९ ॥ किसलयमाला ॥ असुरगरुलपरिवंदिअं । किन्नरो
 रगनमंसिअं । देवकोटिसयसंयुअं । समणसंधपरिवंदिअं ॥

॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अभयं अणहं अरयं । अरुचं अजियं अजियं
 प्रयउपणमे ॥ २१ ॥ विज्जुविलसियं ॥ आगयावरविमाण
 दिव्वक्कणगरहत्तरय पक्कसरइहिंज्जलिअं । ससंभमोरयण
 खुभिअल्लिअचलकुंठलं । गयतिरीप्पसोहंतमउलिमाला ॥
 २२ ॥ वेढउ । जंसुरसंघा सासुरसंघा । वेरविउत्ताभत्ति सुजु
 त्ता आयरभूसिअसंभमपिप्पिअ । सुट्टुसुविग्गिअससव्वलोधा ।
 उत्तमकंचणरयणपक्कविअ । भासुरभस्सणभासुरिअंगा ।
 गायसमोणयभत्तिवसागव । पंजलिपेसिअसौसपणामा ॥ २३ ॥
 रयणमाला । वंदिक्कणयोज्जणतोजिणं । तिगुण मेवयपुणो
 पयाहिणं । पणमिज्जणयजिणंसुरासुरा । पमुट्टा समव
 णाइतोगया ॥ २४ ॥ खित्तयं । तं महासुणिमहंपिपंजली ।
 रागदोसभयमोहवज्जिअं । देवदाणववरिंदवदिअं । संति
 सुत्तममहातवंनमे ॥ २५ ॥ खित्तयं । अंबररंतरवियारणि
 आहिं । ललियहंसवज्जगामिणिआहिं । पौणसोणित्थणसाल
 णिआहिं । सकलकमलदललोयणिआहिं ॥ २६ ॥ दौवयं । पौण
 निरंतर यणभर बिणमिअगायलयाहिं । मणिकंचणपसि
 ढिलमेहलसोहिय सोणित्ताहिं । वरखिंखिणि नेउरसति
 लयवल्लय विभूसणिआहिं । रयकर चउर मनोहर सुंदरदं
 सणिआहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा । देवसुंदरीहिं । पायवंदि
 आहिं । वंदिआयजस्सतेसुविक्रमाकमा । अप्पणोनिलाप्पएहिं ।
 मंप्पणोड्डुणप्पगारएहिं । केहिंकेहिंवी । अवंगतिलयपत्तलेह ।
 नामएहिं । चिल्लएहिं संगयं गयाहिं । भत्तिसन्निविट्ठवंदणा
 गयाहिं । ऊंतितेवंदिआ पुणोपुणो ॥ २८ ॥ नारायउ । तमहं
 जिणचंदं । अजिअंजिअमोहं । धुअसव्वकिलेसं । पयउपण

मामि ॥ २६ ॥ नंदिअयं । युअवंदिअस्सा । रिसिगण देवग
 णेहिं । तोदेववज्जहिं पयउपणमिअस्सा । जस्सजगुत्तमसासण
 यस्सा । भत्तिवसागयपिंनियआहिं । देववररुअसावज्जआहिं ।
 सुरवररदुगुणपंनियआहिं ॥ ३० ॥ भासुरिअ । वंससहत्तित्ता
 लमेलेण तिउक्खराभिरामसहमीसएकएअ । सुइसमाणणेअ
 सुइसज्जगीयपायजालवंटिआहिं । वलयमेहलाकलावनेउ
 राभिराम सहमीसएकएअ । देवनट्टिआहिं । हावभावविभभ
 मप्पगारएहिं । नच्चिऊणअंगहारएहिं । वंदिआय जस्सतेसु
 विक्कमाक्कमा । तयंतिलोयसव्वसत्त संतिकारयं । पसंतसव्वपा
 दोसमेसहं । नमामिसंतिमुत्तमंजिणं ॥ ३१ ॥ नारायउ । ठत्त
 चामर पद्मागजुअजव मंदिआ । ऊयवर मगर तुरग सिरि
 वल्लसुलंठणा । दीव समुह मंदिर दिसागय सोहिआ ।
 सत्थिअ वसह सीह सिरिवल्ल सुलंठणा ॥ ३२ ॥ ललिययं ।
 सहावलडा समपइडा । अदोसदुद्धागुणेहिजिद्धापसायसिद्धा
 तवेणपुद्धासिरौइइडा रिसीहिंजुडा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥
 तेतवेणधुअसव्वपावया । सब्बलोगहिअ मूलपावया । संयु
 आअजिअसंति पायया । ऊंतुमे सिवसुहाण दायया ॥ ३४ ॥
 अपरंतिका एवंतववलउलं युअमएअजियसंतिजिणजुअलं ।
 ववगयकम्मरयमलं । गइंगयं सासयं विसलं ॥ ३५ ॥ गाहा
 तंवज्जगुणप्पसायं । मुखसुहेणपरमेण अविसायं । नासेउ
 मे विसायं । कुणउअपरिसाविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं
 मोएउअनंदिं । पावेउअनंदिसेणमभिनंदिं । परसाइवि सुह
 नंदिं समय दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा । पक्खिअ
 चाउम्मासे । संबुअर राइएय दिअहेअ ॥ सोअव्वोसव्वेहिं

उवसग्ननिवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो निसुणइ ।
 उभउकालंपि अजिअसंति थुअं । नज्ज ऊं तितस्सरोगा । पुव्व
 प्पसावि नासंति ॥ ३९ ॥ जइइल्लह परमपयं । अहवाकित्ती
 सुवित्थप्पा भवणे । तातिल्लकुद्वरणे । जिणवयणे आयरं
 कुणह ॥ ४० ॥ इति श्रीअजितशातिस्तवनं १ प्रथम स्वरणं ॥
 १ ॥ ॥ उल्लासिकमनक्खनिग्गयपहादंनल्लेणंगिणं ॥
 वंदा रुण दिसंत इव्व पयप्पं निव्वाणमग्गावलं । कुंदिंदुज्ज
 लदंतकंतिमिसउ नौहंत नाणंकुह । केरेदोविदुज्जसोलस
 जिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरमजलहिनीरं जोमि
 निज्जं जलीहिं । खयसमयसमीरं जोजणिज्जा गईए ॥ सय
 लनहयलंवा लंघए जोपएहिं ॥ अजिअ महवसंतिं सोसम
 त्योथुणेउं ॥ २ ॥ तहविज्ज वज्जमाणु ल्लासिमत्तिग्गरेण
 गुणकणमिवकित्ते हामिचिंतामणिव्व । अलमहव अचिंता
 णंतसामत्यउसिं । फलहइलज्ज सव्वं वंठिअं णित्ठिअंमे
 ॥ ३ ॥ सयलजयहिआणं नामिमित्ते णजाणं । विहइइलज्ज
 दुड्डानिड्ढदोघइयड्डं । नमिरसुरकिरीट्टुग्गिड्डपायारविदे । स
 ययमजिअसंतो ते जिणिं देमिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती
 वड्डएदहदित्ती । विलसइ भुविमित्ती जायएसुप्पवित्ती । फ
 रइ परमंतित्ती होइसंसारठित्ती । जिणनुअपयभत्ती हीअ
 चिंतोसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं भूरिदिव्वं महारं ।
 फट्ठणरसभावोदारहिं गारसारं । अणिमिसरमणिज्जदंस
 णल्लेअभोया । इव पणमणं मंदा कासि नट्टोवहारं ॥ ६ ॥
 थुणहअजिअसंतो तेकयासेसंतो । कणयरयपिसंगा ठज्जए
 जाणसुत्तो । सरभसपरिरंभारंभिनिव्वाणल्लो । वणयणवुसि

रांकु प्यंकपिंगोकयव्व ॥ ७ ॥ वज्रविहनयभंगं वत्युणिच्चं
 अणिच्चं । सदसदणभिलप्पा लप्पमेगंअण्णेगं । इयकुनयविरुद्धं
 सुप्पसिद्धं चजेसिं । वयणमवयणिज्जं ते जिणे संभरामि ॥ ८ ॥
 पसरइतिअलोए ताव मोहंधवारं । भमइजय मसस्यं ताव
 भिवृत्तठण्णं । फुरइफुत्तफलंता खंतणाणंमुपूरो । पयंममजि
 असंतो जाणसूरोनजाव ॥ ९ ॥ अरिकरि हरि तिण्हु गहंवु
 चोरा हिवाही । समरममर मारी रुहखुहोवसग्गा । पलय
 मजिअसंतो कित्तणेत्तज्जित्तंतो । निविडतरतमोहा भक्ख
 रालंखिअव्व ॥ १० ॥ निच्चिअदुरिअदाह दित्तजाणग्गिजा
 ला । परिगय मिव गोरं चित्तिअं जाण खवं । कणयनिहस
 रेहा कंतिचोरं करिज्जा । चिरथिर मिह लल्लुं गाढसं
 यंभिअव्व ॥ ११ ॥ अत्तविनिवत्तिआणं पत्थिवत्तासिआणं ।
 जलहिलहरिहोरं ताणमुत्तिट्ठियाणं । जलिअजलणजालां
 लिंगिआणं च जाणं । जणयइ लज्ज संतिं संतिनाहाजि
 आणं ॥ १२ ॥ हरिकरिपरिकियं पक्कपाइक्कपुखं । सयलपुह
 विरज्जं ठड्डुअं आणसज्जं । तण मिवपडिलमं जेजिणासुत्ति
 मगं । चरण सणुपवसा ऊतुतेमे पससा ॥ १३ ॥ ठणससि
 वयणाहिं फुल्लनित्तुप्पलाहिं । थणभरनमिरोहिं सुट्ठिगि
 वजोदरोहिं । ललिअभअलयाहिं पीणसोणित्तलीहिं । रुय
 सुर रमणोहिं बंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिस किडि
 भकुह गंठि कासाइसार । खयजर वण लूआ साससोसोद
 राणि । नहमुह दसण्णो कल्लिकखाइरोगे । मह जिणजुअ
 पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इयगुरुदुहतासे पक्खिणचा
 उमासे । जिणधरदुगयुत्तं वल्लरेवा पवित्तं । पढह सुणह

सिञ्ज्या एहजाएह चित्ते । कुसह मुणह विग्गं जेण घाएह
सिग्गं ॥ १६ ॥ इय विजया जियसत्तुपुत्त सिरिअजिअजिणे
सर । तहअइराविससेण तणय पंचमच्च कौसर । तित्थंकर
सोलसमसंति जिणवत्तहसंतह । कुसमंगल ममहरसुदुरिअ
मदिलंपि युणंतह ॥ १७ ॥ इतिअीलवुअजितशांतिस्त्वनं
द्वितीयं खरणं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ नमिजणपणयसुरगण । चूनामणिकिरणरंजि
अंनणिणो । चलयजुअलं महाभय । पणासणंसंयववत्तं ॥ १ ॥
सन्निअकरचरणहमुह । निवुडुनासाविवसलावसर । कुड
महारोगानल । फुलिंगनिड्डसवंगा ॥ २ ॥ तेवुहचलणार
हण । सलिलंजलिसेअवडियझावा । वणदवदङ्गागिरिपाववुव
पत्तापुणोलत्तिं ॥ ३ ॥ दुव्वायणुभिअजलनिहि । उभमज्जलो
लंभीसणारावे । संभंतभयविसंतुल । निज्जामयमुक्कवावारे
॥ ४ ॥ अवदलिअंणवत्ता । खणेणपावंतिइत्थियंकूलं । पास
जिणचलणजुअलं । निच्चंचिअजेनमंतिमरा ॥ ५ ॥ खरपवणु
अवणदव । जालावलिमिलिअसयलं दुसगहणे । मज्जं तमुव
अयवज्ज । भीसणरवभीसणंमिवणे ॥ ६ ॥ जगगुणोक्कमजु
अलं । निव्वावियसयलतिड्डअणाभोयं । जेसंभरंतिमणुआ
नकुणइजलणोभयंतंसिं ॥ ७ ॥ विलसंतभोगभीषण । फुरि
आरणनयणतरलजीहालं । उग्गामुअंगंनवजलय । सत्थहं
भीसणायारं ॥ ८ ॥ मखंतिक्कीडसरिसं । दूरपरिल्लुटविसम
विसवेगा । सुहनामक्खरफुडसिद्ध । मंतगुअनरालोए ॥ ९ ॥
अडवीपुभिल्लतंकार । पुलिंदसहूलसहभीमासु । भयविहल
वखकायर । उल्लुरिअपहिअपत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्त विहव

सारा । तुहनाहपणाममित्तवावारा । ववगयविग्धासिग्धं ।
 पत्ताहियइद्वियंठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआनलनयणं । दूरविया
 रिअमुहंमहाकायं । नहकुलिसवायविअलिय । गयंदकुंभत्य
 लाभोयं ॥ १२ ॥ पणयससंभमपत्थिव । नहमणिमाणिक्यपडि
 अपडिमस । तुहवयणपहरणधरा । सौहं कुइं पि नगिणंति
 ॥ १३ ॥ ससिधवलदंतमुसलं । दीहकसल्लालवडि उव्वाहं ।
 मज्झपिगनयणलुअलं । ससलिलनवजलहरायारं ॥ १४ ॥
 भौसं महागइंदं । अच्चासन्नं पितेनविगिणंति । जेतुहचल
 णकुअलं सुणिवइतुंगंसमल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मतिकवखगा
 भिषायपविद्ध उहुअकवंदे । कुंतविणिभिन्न करिकलह । सुक्क
 सिक्कारपउरम्मि ॥ १६ ॥ निज्जिअदण्डुवररिउनरिंद । निवहा
 भजासंधवलं । पावंतिपावपसमण । पासजिणतुहप्पभावेण
 ॥ १७ ॥ रोगजलजलणविसहर । चोरारिमयंदगयरणभ
 जाइ । पासजिणनामसंकित्तणेण । पसमंतिसवाइ ॥ १८ ॥
 एवंमहाभयहरं । पासजिणिंदस्ससंधवमुआरं । भविय
 जणाणंदयरं । कल्लणपरंपरनिहाणं ॥ १९ ॥ रायभयजकव
 रक्खस । कुसुमिणदुस्सउणरिक्खपीडास । संजासुदोसुपंथे
 उवसग्गेतहयरयणीसु ॥ २० ॥ जोपढइजोअनिसुणइ । ताणं
 कइणोवमाणतुंगस । पासोपावंपसमेउ । सयलभुवणच्चिअच्च
 लणो ॥ २१ ॥ ॥ इतिथीपार्श्वं निनस्तवनं तृतीयं खरणं ॥ ॥
 ॥ ॥ तंजयउजएतित्यं । जमित्थतित्याहिवेणवोरेण ।
 सधंपवत्तिधंमअसत्त । संताणसुहजणयं ॥ १ ॥ नासिअसय
 लकिलेसानिहयकुलेसापसत्थ सुहलेसा । सिरिवइमाणतित्य
 स्स । मंगलंदित्तुतेअरिहा ॥ २ ॥ निहडुकम्मवीआ । वीआपर

मेद्विणो गुणसमिद्धा । सिद्धातिजयपसिद्धा । ह्यंतुदुत्याणिति
 त्यस्स ॥ ३ ॥ आचारमायरंता । पंचपयारं सयापयासंता ।
 आयरिआतहतित्यं । निहयकुतित्यंपयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअ
 वायगावायगाय । सिअवायवायगावाए । पवयणपडिणीयकए
 वणंतुसव्वस्ससंवस्स ॥ ५ ॥ निष्वाणसाहुणुज्जुअ । साहुणंजणि
 असव्वसाहज्जा । तित्यप्पभावगाते । हवंतुपरमेद्विणो जइणो
 ॥ ६ ॥ जेणाणुगयंनणं । निष्वाणफलं चचरणमविहवइ । ति
 त्यस्सदंसणंतं । मंगुलमवणेउसिद्धियरं ॥ ७ ॥ निव्वउमोसुअध
 च्चो । समग्गभव्वंगिवग्गकयसम्मो । गुणसुद्धिअस्ससंवस्स ।
 मंगलंसम्ममिहंसिउ ॥ ८ ॥ रम्मोच्चरित्तधम्मो संपाविअमव
 सत्तसिवसम्मो । नोसिसकिलेसहरो । हवउसयासयलसंवस्स
 ॥ ९ ॥ गुणगणगुरुणो गुरुणो । सिवसुहमइणो कुणंतु तित्य
 स्स । सिरिवइमाणपड्डपयट्ठिअस्स । कुसलंसमग्गस्स ॥ १० ॥
 जियपट्ठिवक्खाजक्खा । गोसुहमायंगगयसुहपसुक्खा । सि
 रिबंभसंतिसहिआ । कयंनयरक्खासिवंदित्तु ॥ ११ ॥ अंबापट्ठि
 हयट्ठंवा । सिद्धा सिद्धादआ पवयणस्स । चक्केसरिवइइट्ठा ।
 संतिसुरादिसउसुक्खाणि ॥ १२ ॥ सोलसविज्जादेवोउ ।
 दित्तुसंवस्समंगलंविउल्लं । अलुत्तासहिआउ । विस्सुअसुयदे
 वयाइसमं ॥ १३ ॥ जिणसासणकयरक्खा । उक्खाचउवीस
 सासणसुरावि । सुहमावासंतावं । तित्यस्ससयापणासंतु ॥
 १४ ॥ जिणपवयणंमिनिरया । विरहाकुपहाउसव्वहासव्वे ।
 वेयावच्चंकराविअ । तित्यस्सहवंतुसंतिकरा ॥ १५ ॥ जिणस
 मयसुद्धसमग्ग । वहिअभव्वाणजणिअसाहज्जो । गोवरई
 गीयजसो । सपरिवारोसुहंसिउ ॥ १६ ॥ गिहगुत्तखिस्त

जलथल । वणपव्यवासिदेवदेवी । जिणसासणट्टिआणं ।
 दुहाणिसव्वाणिनिहणंतु ॥ १७ ॥ दसदिसिपालासक्खित्तपा
 लया । नवग्गहासनक्खत्ता । जोइणिराज्जग्गहकालपास ।
 कुलिअण्णपहरेहिं ॥ १८ ॥ सहकालकंठएहिं । सुविट्ठिवत्थेहिं
 कालवेलाहिं । सब्बेसवत्थसुहं । दिसंतुसवस्ससंघस्स ॥ १९ ॥
 भवणवद्वाणमंतर । जोइसवेमाणिआयजेदेवा । धरणिंदस
 कसहिआ । दलंतुदुरिआइतित्थस्स ॥ २० ॥ चक्कंजस्सजलंतं ।
 गल्लइ पुरडंपणासिअतमोहं । तंतित्थस्सभगवडं । नमोनमो
 वइमाणस्स ॥ २१ ॥ सोजयउज्जिणोवौरो । जस्सज्जविसासणं
 एजयइ । सिद्धिपहसाहणंकुपह । नासणंसव्वभयमहणं ॥ २२ ॥
 सिरिउसभसेणपमुहा । हयभय निवहा दिसंतुतित्थस्स ।
 सव्वजिआणंगणिहारिणो । णहंवंठिअंसव्वं ॥ २३ ॥ सिरि
 वइमाणतित्थाहिवेण । तित्थंसमप्पिअंजस्स । सव्वं सुहम
 सामी । दिसउसुहंसयलसंघस्स ॥ २४ ॥ पयइएभट्टिआजे ।
 भट्टाणदिसंतुसयलसंघस्स । इयरसुराविज्जसम्मं । जिणगण
 हरकहियकारिस्स ॥ २५ ॥ इयजोपट्ठइतिसंजं । दुस्सज्जं
 तस्सलत्थिक्किंपिअए । जिणदत्ताणाएठिउ । सुनिट्ठिअडोसुहो
 हाइ ॥ २६ ॥ इतिगणधरदेवस्तुतिः । चतुर्थं खरणं ४ ॥ ॥
 ॥ मयरहिअंगुणगणरयण सायरं सायरंपणमिअणं ।
 सुगुअणपारतंतं । उवहिअयुणामितंवेव ॥ १ ॥ निअहिअमो
 कजोहा । निअवविरोहापण्डुसंदेहा । पणयंगिवग्गहाविअ ।
 सुअसंदोहासुगुणगेहा ॥ २ ॥ पत्तसुअइत्तसोहा । समत्तपर
 तित्थअणिवसंसोहा । पत्तिभग्गमोहजोहा । दंसिअसुमह
 त्यसत्थोहा ॥ ३ ॥ परिअरिअसत्थवाहा । हयदुहदाहासिवं

बतससाहा । संपावित्रमुहलाहा । खीरोदहिणुव्रत्रगाहा
 ॥ ४ ॥ सुगुणजगज्जिअपुज्जा । सज्जोनिरवज्जगहिअ
 पवज्जा । सिवसुहसाहणसज्जा । भवगिरिगुरुचूरखेवज्जा ॥
 ५ ॥ अज्जसुहस्यप्पसुहा । गुणगणनिवहासुरिंदविहियमहा ।
 ताणतिसंज्जनांमं । नामनेपणासद्दजियाणं ॥ ६ ॥ पट्ठिज्जि
 अजिणदेवो । देवायरिउदुरंतभवहारो । सिरिनेमचंदसूरो ।
 उज्जोयणसूरिणोसुगुरु ॥ ७ ॥ सिरिक्खमाणसूरो । पयंती
 कयसूरिमंतमाहप्पो । पट्ठिहयकसायपसरो । सरयससं
 कुव्वसुहजणउ ॥ ८ ॥ सुहसौलचोरचप्परण । पञ्चलो
 निञ्चलोजिणमयंमि । जगपवरसुद्धसिद्धंत । जाणउपणयसुगु
 णजणो ॥ ९ ॥ पुरउदुल्लहमहिवल्लहस । अणहिक्खवाट्ठप
 यडं । मुक्काविआरिज्जणं । सौहेणवदवलिंगिगया ॥ १० ॥
 दसमत्तेरयनिसिविप्फुरंत । सल्लंदसूरिमयतिमिरं । सूरेण
 वसूरिजिणेसरेण । हयमहिअदोसेण ॥ ११ ॥ सुकइत्तपत्त
 किस्सी । पयट्ठिअगुत्तौपसंतसुहसुत्ती । पंहयपरवाइदिस्ती ।
 जिणचंदजईसरोमंती ॥ १२ ॥ पयट्ठिअनवंगसुत्तय । रयणु
 कोसोपणासिअपउसो । भवभीअभविअजणमण । कयसंतो
 सोविगयदोसो ॥ १३ ॥ जगपवरागमसारप्रख्खणा । करण
 बंधुरोधणिअं । सिरिअभयदेवसूरो । मुणिपवरोपरमपसमध
 रो ॥ १४ ॥ कयसावयसंतासो । हरिक्खसारंगभगसंदेहो ।
 गयसमयदप्पदंलणो आसाइअपवरकव्वरसो ॥ १५ ॥ भीम
 भवकाणणम्भिअ । दंसिअगुरुवयणरयणसंदेहो । नौसेसस
 सगुरुउ । सूरौजिणवल्लहोजयइ ॥ १६ ॥ उवरट्ठिअसच्चर
 णो । चउरणुउगप्पहाणसच्चरणो । असममयरावमहणो ।

उडुमुहोसहइसकरो ॥ १७ ॥ दंसिअनिमलनिच्चल । दंत
गणोगणिअसावज्जंभउ । गुरुगिरिगसउसरज्जव । सूरि
जिणवल्लहोहोत्या ॥ १८ ॥ जुगपवराममपौजसपाण । पौणि
यमणाकयाभवा । जेणजिणवल्लहेणं । गुरुणांतसव्वहावंदे ॥
१९ ॥ विपफुरिअपवरपवयण । सिरोमणीवूढदुव्वहसमोय ।
ओसेसाणंसमुव्व । सहइसत्ताणताणकरो ॥ २० ॥ सच्चरि
आणमहीणं । सुमुखणंपारतंतमुव्वहइ । अयइजिणदत्तसूरी
सिरिनिलउपणयमुणितिलउ ॥ २१ ॥ ॥ इति श्रीगुरुपा
रतंचं पंचमस्वरणं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ सिग्घमवहरउविग्घं । निखवीराणाणु गामिसं
वस । सिरिपासजिणोयंभण । पुरट्ठिउनिट्ठिआनिट्ठो ॥ १ ॥
गोयमसुहसपसुहा । गणवइणोविहिअभवससुहा ।
सिरिवइमाणजिणतित्थ । सुत्थयंतेकुणंतुसया ॥ २ ॥ सक्काइ
णोसुराजे । जिणवेयावच्चकारिणोसंति । अवहरिअविग्घ
संघा । हवंतुसंघसंतिकरा ॥ ३ ॥ सिरियंभणयट्ठिअपास
सामि । पयपउमपणयपाणीणं । निह्लिअदुरिअविंदो । धर
सिंदोहरउदुरिआइ ॥ ४ ॥ गोसुहपमुक्खजक्खा । पट्ठिहयप
ट्ठिबक्खपक्खलक्खाति । कयसगुणसंवरक्खा । हवंतुसंपत्तसि
वमुक्खा ॥ ५ ॥ अप्पट्ठिचक्कापसुहा । जिणसासणदेव याउ
जिणपणिआ । सिद्धाइआसमेया । हवंतुसंघस्सविग्घहरा ॥
६ ॥ सक्काएससज्जउरपुरट्ठिउ । वइमाणजिणभत्तो । सिरि
वंभसंतिजक्खो । रक्खउसंबंपवत्तेण ॥ ७ ॥ खित्तिगिहगुत्त
संताण । देसदेवाहिदेवयाताउ । निब्बुइपुरपहियाणं ।
भवाणकुणंतुसक्खाणि ॥ ८ ॥ चक्केसरिचक्कधरा । विट्ठिप

हरिउठिखकंधराधणिअं । सिवसरणलगसंवस्स । सब्बहाह
 रउविग्घाणि ॥८॥ तित्थवइवइमाणो । जिणेसरोसंगउसुसं
 वेण । जिणचंदोभयदेवो । रक्खउजिणवल्लहपह्मं ॥९॥ सो
 जयउवइमाणो । जिणेसरोणेसरुब्बहयतिमिरो । जिणचंदा
 भयदेवा । पड्डणोजिणवल्लहाजेव ॥११॥ गुंरुजिणवल्लहपाए
 भयदेवपड्डत्तदायगेवंदे । जिणचंदजिणेसरवइमाण । तित्थस्स
 बुद्धिकए ॥१२॥ जिणदत्ताणंसंस्स । मन्नांतिकुणंतिजेयकारंति
 मणसावयसावउसा । जयंतुसाहम्मिआतेवि ॥१३॥ जिण
 दत्तगुणेनाणाइणो । संयाजेधरंतिधारंति ! हंसिअसिय
 वायपए । नमामिसाहेम्मिआतेवि ॥१४॥ इति षष्ठं स्मरणं ।
 ॥ ॐ ॥ उवसग्गहरंपासं । पासवंदामिकम्मषणसुक्कं ।
 विसहरविसनिस्सासं । मंगलकल्लाणआवासं ॥१॥ इत्यादि ॥
 भवेभवेपासजिणचंद ॥ ५ ॥ ॐ ॥ इतिओपाखं जिनस्सवनं
 इति सप्तस्मरणानि ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ अथ लघुशान्तिणि ॥

॥ ॐ ॥ शान्तिंशान्तिनिशांतं । शान्तिंशांताशिवंनमस्कृत्य ।
 स्तोतुःशान्तिनिमित्तं । संवपदैःशांतयेस्तौमि ॥ १ ॥ उमिति
 निश्चितवचसे । नमोनमोभगवतेर्हतेपूजां । शान्तिजिनायजय
 वते । यशस्विनेस्वामिनेदमिनां ॥ २ ॥ सकलातिसेयकमहा
 संपत्तिसमन्वितायशस्वाय । त्रैलोक्यपूजितायच । नमोनमः
 शान्तिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह । स्वामिकसंपूजितायन
 जिताय भुवनजनपालनोदात । तमायसततंनमस्कृते ॥ ४ ॥

सर्वदुरितौष नाशन कराय । सर्वाशिव प्रशमनाय । दुष्टग्रह
भूत पिशाच । शाकनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाम
मंत्र । प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा । विजया कुरुतेजनहित ।
मिति चनुता नमततं शान्तिं ॥ ६ ॥ भवतु नमस्ते भगवति
विजये सुजये परापरैरजिते । अपराजिते जगत्यां । जयतीति
जयावहे भवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापिच संघस्य । भद्रकल्याण
मंगलप्रददे । साधूनां च सदाशिव । तुष्टिपुष्टिप्रदेजीयाः ॥ ८ ॥
भव्यानां कृतसिद्धे । निर्द्विनिर्वाण जननि सत्वानां । अभ
प्रदाननिरते । नमोस्तु स्वस्तिप्रदेतुभ्यं ॥ ९ ॥ भक्तानां जंतूनां
शुभावहे नित्यमुद्यतेदेवि । सम्यग्दृष्टीनां । धृति रति मति
बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां । शान्तिनतानां
च जगति जंतूनां । श्रीसंपत्कौर्त्तियशो । वर्द्धनिजय देवि
विजयस्य ॥ ११ ॥ सलिलानल विषविषधर । दुष्टग्रहराजरो
गरणभयतः । राक्षसरिपुगणमारो । चौरैतिश्वापदादिभ्यः ॥
१२ ॥ अय रक्ष रक्ष सुशिवं । कुरु शान्तिं च कुरु कुरु
सदेति । तुष्टिं कुरु पुष्टिं । कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरुत्वं
॥ १३ ॥ भगवति गुणवति शिवशान्ति । तुष्टिपुष्टिस्वस्तीह
कुरु जनानां । उमिति नमो नमो ह्रीं ह्रीं हूं ह्रः । यः
ह्रः ह्रीं फट्फट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्नामाक्षर । पुरस्सरं
संस्तुता जवादेवी । कुरुते शान्ति निमित्तं । नमो नमः
शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरिदर्शित । मंत्रपदविदर्भि
तः स्तवः शान्तेः । सलिलादिभयविनाशी । शान्त्यादिकरस्य
भक्तिमतां ॥ १६ ॥ यच्चैनं पठति सदा । अयणोति भावय
तिवा यथायोगं । सहि शान्तिपदं यादात् । सूरिः

श्रीमानदेवञ्च ॥ १७ ॥ ॐ ॥ इति लघुशान्तिस्तोत्रं ॥ ॐ ॥

॥ अथ दृढशान्तिलि ॥

॥ ॐ ॥ भो भो भव्याः शृणुतवचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत् ।
 ये यात्रायां विमुवनगुरोराहता भक्तिभाजः । तेषां शा-
 न्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा । दारोग्य श्रीधृतिमति
 करो लेशविधुं सहेतुः ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोका इह हि
 भरतैरावतविदेहसंभवानां । समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासन
 प्रकंपानन्तरं । अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः । सुवो-
 पावण्डाचालनानन्तरं । सकलसुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य
 सविनयमर्हद्गद्गदार्कं गृहीत्वा । गत्वा कनकाद्रिशृङ्गे । वि-
 हितजन्माभिषेकः । शान्तिमुद्घोषयति । ततोहं कृतानु-
 कारमिति कृत्वा । महाजनो येन गतस्य पंथाः । इति भव्य
 जनैः सहसमागत्य । स्नातपीठे स्नात्वा विधाय । शान्तिमुद्घोष
 यामि । तत्पूजायां स्नात्वादिमहोत्सवानन्तरं । इति कृत्वा
 कर्णं दत्वा निश्च्युतां स्वाहा । ॐ पुण्याहं । २ । प्रीयतां २
 भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनः । त्रैलोक्यनाथा
 त्रैलोक्यमहिता । त्रैलोक्यपूज्या । त्रैलोक्येश्वरा । त्रैलो-
 क्योद्योतकराः ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानी । १ । निर्वाणी । २ ।
 सागर । महायशः । ४ । विमल । ५ । सर्वानुभूति । ६ ।
 श्रीधर । ७ । दत्त । ८ । दामोदर । ९ । सुतेजा । १० ।
 स्वामी । ११ । सुनिसुवतः । १२ । सुमति । १३ । शिवगति
 । १४ । अस्तांग । १५ । नमोश्चर । १६ । अनिल । १७ ।

यशोधर । १८ । कृतार्थ । १९ । जिनेश्वर । २० । शुद्धमति
 । २१ । शिवकर । २२ । स्यन्दन । २३ । संप्रति । २४ ॥ ॐ ॥
 एते अतीतचतुर्विंशतितीर्थंकराः ॥ ॐ ॥ ॐ श्रीचन्द्रप्रभ ।
 १ । अजित । २ । संभव । ३ । अभिनन्दन । ४ । सुमति
 । ५ । पद्मप्रभ । ६ । सुपार्श्व । ७ । चन्द्रप्रभ । ८ ।
 सुविधि । ९ । शीतल । १० । अयांस । ११ । वासुपूज्य
 । १२ । विमल । १३ । अनन्त । १४ । धर्म । १५ ।
 शान्ति । १६ । कुंभ । १७ । अर । १८ । मल्लि । १९ । सु
 निमुव्रत । २० । नमि । २१ । नेमि । २२ । पार्श्व । २३ । वर्द्ध
 मान । २४ । प्रमुखावर्त्तमानजिनाः ॥ ॐ ॥ ॐ श्रीपद्मनाभ ।
 १ । सूरदेव । २ । सुपार्श्व । ३ । स्वयंप्रभ । ४ । सर्वानुमति
 । ५ । देवश्रुत । ६ । उदय । ७ । पेढाल । ८ । मोडिल ।
 ९ । शतकीर्त्ति । १० । सुव्रत । ११ । अमम । १२ । निष्क
 षाय । १३ । निष्पलाक । १४ । निर्मम । १५ । चित्रगुप्ति ।
 १६ । समाधि । १७ । संवर । १८ । यशोधर । १९ । विज
 य । २० । मल्लि । २१ । देव । २२ । अनन्तवीर्य । २३ । भद्र
 कर । २४ ॥ ॐ ॥ एते भावितोर्थंकराः जिनाः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ शान्ताः शान्तिकराः भवन्तु सुनयो सुनिप्रवरा ।
 रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यं ॥
 ॐ श्रीनाभि । १ । जितशत्रु । २ । जितारि । ३ । संवर । ४ ।
 मेघ । ५ । धर । ६ । प्रतिष्ठ । ७ । महसेन नरेश्वर । ८ ।
 सुग्रीव । ९ । दृढरथ । १० । विष्णु । ११ । वसुपूज्य । १२ ।
 कृतवर्म । १३ । सिंहसेन । १४ । भासु । १५ । विश्वसेन । १६ ।
 सूर । १७ । सुदर्शन । १८ । कुंभ । १९ । सुमित्र । २० ।

विजय । २१ । समुद्रविजय । २२ । अश्वसेन । २३ । सि
 द्वार्थ । २४ ॥ ॐ ॥ वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥ ॐ ॥
 ॥ ॐ ॥ ॐ श्रीमरुदेवा । १ । विजया । २ । सेना । ३ । सि
 द्वार्थ । ४ । सुमंगला । ५ । सुसीमा । ६ । धृतिवीमाता । ७ ।
 लज्जणा । ८ । रामा । ९ । नंदा । १० । विष्णा । ११ ।
 जया । १२ । श्यामा । १३ । सुयशा । १४ । सुप्रता । १५ ।
 अचिरा । १६ । श्री । १७ । देवी । १८ । प्रभावती । १९ ।
 पद्मा । २० । वप्रा । २१ । शिवा । २२ । वामा । २३ । विस
 ला । २४ ॥ ॐ ॥ वर्त्तमानजिनजनन्यः ॥ ॐ ॥ ॐ गोमुख । १ ।
 महायक्ष । २ । विमुख । ३ । यक्षनायक । ४ । तंबुर । ५ ।
 कुसुम । ६ । मातंग । ७ । विजय । ८ । अजित । ९ । वज्रा
 । १० । यक्षराज । ११ । कुमार । १२ । प्रणमुख । १३ । पा
 ताल । १४ । किन्नर । १५ । गरुड । १६ । गंधर्व । १७ ।
 यक्षराज । १८ । कुबेर । १९ । वरुण । २० । भृकुटि । २१ ।
 गोमेष । २२ । पार्श्व । २३ । वज्रशान्ति । २४ ॥ ॐ ॥ वर्त्त
 मानजिनयक्षाः ॥ ॐ ॥ ॐ चक्रेश्वरी । १ । अजितवला । २ ।
 दुरितारि । ३ । काली । ४ । महाकाली । ५ । श्यामा । ६ ।
 शान्ता । ७ । भृगुटि । ८ । सुतारका । ९ । अशोका । १० ।
 मानवी । ११ । चंद्रा । १२ । विदिता । १३ । अकुशा । १४ ।
 कंदर्पी । १५ । निर्वाणी । १६ । बला । १७ । धारिणी । १८ ।
 वरुणप्रिया । १९ । नरदत्ता । २० । गांधारी । २१ । अंबिका
 । २२ । पद्मावती । २३ । सिद्धायिका । २४ ॥ ॐ ॥ वर्त्तमान
 चतुर्विंशति तीर्थंकरशाशनदेव्यः ॥ ॐ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं
 धृति । कीर्ति । कांति । बुद्धि । लज्जी । मेधा । विद्या । साधन

प्रवेशनिवेशनेषु । सुगृह्योतनामानो । जयन्ति ते जिनेन्द्राः
 ॐ रोहिणी । १ । प्रज्ञप्ती । २ । वज्रशृङ्खला । ३ । वज्रां
 कुशा । ४ । चक्रेश्वरी । ५ । पुरुषदत्ता । ६ । काली
 । ७ । महाकाली । ८ । गौरी । ९ । गंधारी । १० । सर्वा
 खमहाज्वाला । ११ । मानवी । १२ । वैरोद्या । १३ । अ
 क्षुप्ता । १४ । मानसी । १५ । महामानसी । १६ । एताः षो
 ढशविद्यादेव्यो रक्षन्तु मे सुहा । ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृ
 त्तिचार्यवर्णस्य औश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु । ॐ तुष्टिर्भव
 तु । पुष्टिर्भवतु । ॐ ग्रहाश्चंद्रसूर्यांगारक बुध बृहस्पति
 शुक्र शनैश्च राहु केतुसहिताः सलोकपालाः सोम यम
 वरुण कुबेर वासवादित्य स्कन्द विनायक ये चान्येपि ग्राम
 नगर क्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां २ ॥ अक्षीणकोस
 कोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु सुहा । ॐ पुत्र मित्र स्वात्
 कलत्रसुहृत् स्वजनसंबन्धिवंधुवर्गसहिताः । नित्यं चामोदय
 मोदकारिणो भवन्तु । अस्मिंश्च भूमं प्रले आयतननिवासिनां ।
 साधु साध्वो स्वावक स्वाविकाणां । रोगापसर्गव्याधिदुःख
 दौर्मनस्योपशमनाय शान्तिं भवतु । ॐ तुष्टि पुष्टि ऋद्धि
 वृद्धिमाङ्गल्योत्सवाः भवन्तु । सदा प्रादुर्भूतानि दुरितानि
 पापानि शान्त्यन्तु । शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु सुहा । श्री
 मते शान्तिनाथाय । नमः शान्तिविधायिने । त्रैलोक्यस्या
 मराधीश । सुकुटामर्चितां हव्ये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्ति
 करः श्रीमान् । शान्तिं दिशतु मे गुरुः । शान्तिरेव सदा
 तेषां । येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ ॐ उन्मृष्टरिष्टदुष्टगृह
 गति दुःस्वप्नदर्निमित्तादि संपादितहितसंपत् नामगृहणं

जयति शान्तिः ॥ ३ ॥ श्रीसंवपौरजनपद राजाधिपराजसं
 निवेशानां । गोष्टोपुरमुख्यानां व्याहरणैर्व्याहरेष्ट्यांति ॥ ४ ॥
 श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु । श्रीपौरलोकस्य शान्तिर्भवतु ।
 श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु । श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु ।
 श्रीराजसंनिवेशानां शान्तिर्भवतु । श्रीगोष्ठिकानां शान्ति
 र्भवतु । ॐ स्वाहा २ ॥ ॐ ह्रीं श्री पार्ष्वनाथाय सूहा ।
 एषा शान्तिः प्रतिष्ठायावासावावसानेषु । शान्तिकलशं
 गृहीत्वा । कुंकुमचंदनकर्पूरागुरुधूपवासकुसुमांजलि
 समेतः । स्नात्वा पीठे श्रीसंघसमेतः । शुचिः शुचिवस्त्रचंदना
 भरणालंकृतः । पुष्पमालां कंठे दत्त्वा । शान्तिसुहोषयित्वा
 शान्तिपानौयं मस्तके दानव्यमिति । नृत्यंति नृत्यं मणिपुष्प
 वर्षं सृजन्ति गायन्ति च मंगलानि । स्तोत्राणि शोभाणि पठन्ति
 मंत्रान् । कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥ १ ॥ अहं तित्थवर
 माया सिवादेवी । तुम्ह नयरनिवासिनौ । अम्ह शिवं तुम्ह
 शिवं । असुहोवसमं शिवं भवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्व
 जगतः । परहितनिरता भवतु भूतगणाः । दोषाः प्रयांतु ना
 शं । सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥ २ ॥ उपसर्गाः क्षयं यांति
 विद्यन्ति विप्रवल्गवः । मनः प्रसन्नतामेति । पूज्यमाने जि
 नेश्वरे ॥ ३ ॥ इति श्रीवृहद्वांतिः समाप्ता ॥ ॥

॥ अथ वज्रो नवकारलि ॥

॥ ॥ किंकपत्तरं रे अयांण चिंतउ-मणभीतरि ।
 किंचिंतामणि कामधेनु आराहोवडपरि । चित्तावेली काज

किसै देखंतर लंघउ । रयणरासि कारण किसैसायरउल्लं
 थउ । चवदह पूरवसार युगे लहौ ए नवकार । सयलकाञ्च
 म्निहियलसरै दत्तरतरै संसार । केवलिभासिय रौतिजि
 के नवकार आराहै । भोगविसुक्ल अनंत अंत परमम्यय
 साहै । इण्ठाणें सुररिद्धि पुत्त सुहविलसैबज्जपरि । इण
 ण्ठाणेंसुरलोक इंदपदपामेंसुन्दरि । एहमंल सासतो जगे
 अचिंत चिंतामणिएह । समरणपापसवे टलै रिद्धिसिद्धि
 नियगेह ॥ २ ॥ नियसिर ऊपर ण्ठाण मज्जचींतवै कमलन
 र । कंचणमय अठदल सहित तिहांमाहिं कनकवर । तिहां
 बैठा अरिहंतदेव पडमासण फिटकमणि । सेय वल्य पहरे
 वि प्रहमपय चिंतइ नियमणि । निवारिय चउगइगमण
 पामिय सासयसुक्ल । अरिहंतण्ठाणइं तुमलहौ जिमअज
 रामर सुक्ल ॥ ३ ॥ प नरभेय तिहां सिद्ध वीयपद जे आ
 राहै । रातै विद्रुमतरणें । वखनियसोहग साहइ । रातौधो
 वत पहिर जपइ सिद्धहिं पुव्वइं दिसि । सयल लोय तिहां
 नरहहोइ ततषणसइं वसि । मूलमंल वसीकरण अवरसज्ज
 जगधंध । मणिमूली उषध करइ बुद्धिहीण जाचंध ॥ ४ ॥
 दक्षिणदिसपंखत्ती जपैनमो आयरियाणं । सोवनवखह
 सौस सहित उवएसहनारणं । रिद्धि सिद्धि कारणें लाभ ऊपर
 जे आवाइ । पहिरवि पौलावत्यतेह मनवंठियपावइ ।
 इण ण्ठाणेंनविधिज्जवै रोगकदेनविहोइ । गजरथ
 हयवरपालखी । चामर ठल सिरजोइ ॥ ५ ॥ नीलवख
 उवण्ठाव सौस पादंता पट्टिम । आराहिज्जै अंग पुव्व
 धारंत मणोरम । पट्टिमदिश पंखत्तीय कमल ऊपर सुह

जाणं। जोवो परमाणंद देवगयतासु विमाणं। गुरु लघु जे
 लखै विदुर तिहां नरवज्रफल होइ। भावविह्वला जे जपै
 तिहां फलसिद्ध न कोइ ॥ ६ ॥ सर्वसाधुत्तरविभाग सांम
 ला बड्डा। जिण धर्मलोय पयासयंत चारितगुणजिह्वा। मण
 वयण काएहिं जपै जे एकै जाणै। पंचवख तिहां नाणजाण
 गुण एहप्रमाणै। अनंतचोवीसी जगज्जईए। होसीअवर
 अनंत। आदिकोई जाणै नही इण नवकारह मंत ॥ ७ ॥ ए
 सो पंच नमोक्कारो। पद दिसअग्नेहिं। सब पावप्पणासणो
 पदजपनेरेहिं। वायवदिस जाएह मंगलाणंचसबे सिं। पढ
 मंहवइमंगलं ईसाणपए सिंचिज्जं दिसचिज्जं विदिसै मिलिब
 अठदल कमल ठवेइ। जो गुरु लघु जाणी जपै सो वण
 पापखवेइ ॥ ८ ॥ इणप्रभावधरणिंदज्जं पायालहसामी।
 समलो कुमर उप्पण भिल्ल सुरलोयहगामी। संवलकंवल
 वेवलदपज्जता देवांकप्पे। सुलोदीधो चोर देव थयोनवका
 रह जप्पे। सिवकुमारमनवंचिकरि जोगौ लीयो मसाण।
 सोनापुरसो सीधलो। इण नवकारप्रमाण ॥ ९ ॥ ठोकै बैठो
 चोर एक आकासैगामी। अहिफिटी ऊइ फूलमाल नव
 कारह नामी। वाठहआ चारंत बाल जलनदीप्रवाहै।
 वोंध्यो कंठहियर मंत जपियो मनमाहै। चिंत्था काज सवे
 सरै ईरति परति विमास। पालितसूरितणी परै विद्या
 सिद्धआकास ॥ १० ॥ चोरघात संकट टलै राजा वसिहोवै
 तित्यंकर सो होइ लाखगुणविधिसोवै। साइण ढाइण
 भूत प्रेत वेताल न पुज्जवइ। आधि व्याधि ग्रहतथी पीत
 ते किमहि न होवइ। कुड्ड जलोदर रोग सबे नासइ

एणहमंत । मयणासुंदरितणीपरै नवपय जाण करंत
॥११॥ एकजीह इणमंततणा गुण किता वखाणुं । नाणहौ
णठिलमत्यएह गुण पारनजाणुं । निमसेवुं जै तित्यराउ
महिमा उदयवंतौ । तिममंतह घुरि एह संवराजा जै वंतौ
तित्यंकरगणहरपणिय चउदै पूरवसार । इणगुण अंत न
कोलहइ गुणगुरुठ नवकार ॥ १२ ॥ अणसंपय नवपय
सहित इगसठ लघु अक्षर । गुरुअक्षर सत्तेव एहजाणो
परमाक्षर । गुरुजिणवसुहसूरिभणै सिवसुक्खहकारण । नर
वतिरियगइ रोग सोग बड्डदुक्ख निवारण । जल थल
पव्वय वन गहन समरण ऊवे इकचित्त । पंचपरमेष्टि
मंतवइतणी सेवा देज्यो नित्त ॥ १३ ॥ इति पंच परमेष्टि
नमस्कारमहात्म्यसंपूर्णम् ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ तिजय पञ्च पयासं । अइ महापाणि हेर
जुत्ताणं । समय कित्त द्विआणं । सरेमि चक्कं जिणंदाणं ॥
१॥ पणवीसा य असौया । पनरस पखास जिणवर समूहो ।
नासेउ सयलदुरिअं । भविआणं भत्तिजुत्ताणं ॥ २ ॥ वी
सा पणयाला विअ । तीसा पणहत्तरी जिणवरिंदा । गह
भूअ रक्ख साइणि । वोरुवसगं पणासेउ ॥ ३ ॥ सत्तरि
पणतोसाविअ । सट्ठो पंचेव जिणगणोएसो । बाहि जलजल
ण हरि करि । चोरारि महाभयं हरउ ॥ ४ ॥ पणपखाय
दसेवअ । पणट्ठो तहयचेव चालीसा । रक्खं तु मे सरीरं
देवा सुरपणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥ ॐ हरउं हः सरसुं
सः । हरउं हः तहयचेव सरसुं सः । आलिहिअ नाम
गम्भं । चक्कं किर रुवउं भइं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणि पणत्ति

वज्रसंखला । तहय वज्रअकुसिआ । चक्के सरिनरदत्ता
 कालि महाकालितहयगोरी ॥ ७ ॥ गंधारि महाजाला
 माणविवइरुदृतहय अलुत्ता । माणसि महमाणसिआ ।
 विज्जादेवीउ रक्खंतु ॥ ८ ॥ पंचदस कम्मभूमिउ । उप्पसं
 सरारिं जिणाणसयं । विविहरयणाण वसो । वसोहिअं
 हरउ दुरिआइ ॥ ९ ॥ चउतीस अइसय जुआ । अइम
 हापाणिहेरकयसोहा । तित्थयरा गयमोहा । जाए अवा
 पयत्तेण ॥ १० ॥ उ वरकणय संखविहु म । मरगय वण
 संनिहं विगय मोडं । सत्तरिसयं जिणाणं । स्वामरपूइअं
 वंदे खाहा ॥ ११ ॥ उ भवणवइवाणमंतर । जोइसवासी
 विमाणवासीअ । जे केवि दुइदेवा । ते सव्वे उवसमंतु मे
 खाहा ॥ १२ ॥ चंदणकप्पूरेणं । कलहे लिहिजणखा
 लिअं पौअं । एगंतर गहसुग्गय साइणि मूअं पणासेइ ॥
 १३ ॥ इय सत्तरि सयजंतं सम्ममंतं दुवार पणिलिहिअं ।
 दुरिआरि विजयतंतं । निभंतं निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥ इति
 समत्तुत्तरशतजिनचक्र स्तोत्रं संपूर्णम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ दोसावहारदक्खो नालीया यरवियासिगोप
 सरो । रयणत्तयस्सजणउ । पासजिणो जयउ जयचक्खू ॥ १ ॥
 अयकुवलय पडिबोहो । हरिणं कियविग्गहो कलानिलउ ।
 विहियार विंद महणो । दियराओ जयउ पासजिणो ॥ २ ॥
 कांतोइनिज्जिणंतो । सिंदूरं पुहविनंदणो कूरो । जयजंतुअ
 मयवक्को । सुमंगलो जयउ पडुपासो ॥ ३ ॥ उप्पलदलनौल
 रुई । हरिमंजलसंघुओ इलाणंदो । रयणियरदारउ मह ।
 बुहोपसौयज्ज पासजिणो ॥ ४ ॥ नाहियवाअ वियहो ।

नायन्योणायरायकयपूज । सिरिपासनाहदेवो । देवार्थरु
सुहृदिसु ॥५॥ रायावट्ट समुज्जल । तणुपह मंजलोमहा
भुई । असुरेहिनमिज्जंतो । पासजिणिंदो कवीजयउ ॥ ६ ॥
तिमिरासि समारुढो । संतो दुक्खावहोजयंमिथिरो । बज्जल
तमासरिसासरी । जयचक्खुसुउ जयउपासो ॥ ७ ॥ कवलौ
कयदोसायर । मायंजरहं अहो तणुविमुक्कं । लोयाभरणौ
भूयं । पासजिणं सत्तमंसरह ॥ ८ ॥ दुरिआइ पासनाहो । सि
हावमालीनहो भवणकेऊ । दूरंतमरासीउ । सत्तमठाणाइउ
हरउ ॥ ९ ॥ इय नवगहयुद्गम्भं । जिणपसूरीहिगुंफिअं
अवणं । तुहपासं पटइ जोतं । असुहाविगहा नपौंति ॥ १० ॥
इति नवग्रहस्तुतिगर्भित श्रीपाश्वर्जिनस्तोत्रम् ॥

॥ ॐ ॥ जगद्गुरु नमस्कृत्य । श्रुत्वा सदगुरुभाषितं ।
ग्रहशान्तिं प्रवक्ष्यामि । लोकानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ जिनेन्द्राः
खेचरास्ते या । पूजनीयाविधिक्रमात् । पुष्पैर्विलेपनैर्धूपैः ।
नैवेद्यैस्तृप्तिहेतवे ॥ २ ॥ पद्मप्रभस्यमार्त्तानः चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च
वासुपुज्यो भूमिपुत्रो । बुधोऽप्यष्टजिनेश्वराः ॥ ३ ॥ विमलानं
तथस्मोरा । शान्तिकुण्डुर्नमिस्तथा । वर्द्धमानोजिनेन्द्राणां
पादपद्मे बुधं न्यसेत् ॥ ४ ॥ ऋषभाजितसुपाश्वी । श्यामिनेन्दुन
शीतलौ । सुमतिः संभवः स्वामी । श्रेयांसश्च हस्यतिः ॥ ५ ॥
सुविधेः कथितः शुक्रः । सुव्रतश्च शनैश्चरः । नेमिनाथो भवेद्वा
ऊः । केतुः शीमल्लिपाश्वर्योः ॥ ६ ॥ जन्मलग्ने चराशौचं यदा
पौर्णति खेचराः । तदा संपूजयेद्ब्रह्मान् । खेचरैः सहितान्
जिनान् ॥ ७ ॥ पुष्पैर्गन्धादिभिर्धूपैः । नैवेद्यैः फलसंयुतैः ।
वर्णसदृसदानैश्च वासोभिर्दक्षिणान्वितैः ॥ ८ ॥ ॐ आदित्य

सोममङ्गल । वधगुरुशुक्रशनैश्चरोराङ्गः । केतुः प्रमुखाखेटा
जिह्मपतिपुरतोवतिष्ठत् ॥ ८ ॥ जिननामद्वयोच्चार । देशनक्ष
त्रवर्णके । स्तुताश्च पूजिताभक्त्या । ग्रहाः संतुमुखावहा ॥ १० ॥
जिनानामग्रतः स्थित्वा । ग्रहाणां तुष्टिहेतवे । नमस्कारशतं
भक्त्या । जपेदष्टोत्तरं नरं ॥ ११ ॥ भद्रबाहुस्वाचेदं । पंचमः
श्रुतकेवली । विद्याप्रवादतः पूर्वोद ग्रहशान्तिर्विनिर्मितः ॥
१२ ॥ इति श्रीनवग्रहशान्तिकारकजिनस्तोत्रं ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ धम्मो मंगलमुक्किइं अहिंसासंजमोतवो । देवा
वितंजमंसंति । जस्स धम्मो सयामणो ॥ १ ॥ जहा दुमस्स पुप्फे
सु । भमरो आविअइरसं । नय पुप्फं किलामेइ । सोअपीणेइ
अप्पयं ॥ २ ॥ एमे एसमणावुत्ता । जेलोएसंति साङ्गणो
विंङ्गमाव पुप्फेसु । दाणभत्ते सणेरया ॥ ३ ॥ वयंच वित्तिं
लभामो । नयकोइ उवहम्मई । अहागण्ठेसुरीर्याति । पुप्फेसु
भमरो जहा ॥ ४ ॥ मङ्गकारसमावुद्धा । जे भवंति अणिसि
आ । णाणापिंरयादंता । तेण वुच्चंति साङ्गणोत्तिवेमि
॥ ५ ॥ दुमपुप्फियानामज्जयणंसम्मत्तं ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ जिनपञ्जरस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्योनमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं
सिद्धेभ्योनमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्योनमोनमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री
गौतमस्वामि प्रमुख सर्वसाधुभ्योनमोनमः ॥ १ ॥ एषः पंच
नमस्कारः । सर्वपापक्षयंकरः । मंगलानां च सर्वेषां । प्रथमं

भवतिमंगलं॥२॥ शुद्धीं श्रीं जणविण । अहं परमात्मनेनमः ।
 कमलप्रभसूरीन्द्रो । भापतेजिनपञ्जरं ॥ ३ ॥ एकभक्तोपवा
 सेन । त्रिकालं य पठेदिदं । मनोभिलषितं सर्वं । फलंसलभ
 तेभुवं ॥ ४ ॥ भूशज्या ब्रह्म चर्येण । क्रोधलोभविवर्जितः । देव
 ताग्रोपविवात्मा । षण्मासैर्लभते फलं ॥ ५ ॥ अहं तं स्थापये
 न्मुद्दि । सिद्धं चक्षुर्ललाटके । आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये । उपा
 ध्यायं हुयाणके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे । मनःशुद्धं विधा
 वच । सूर्यचन्द्रनिरोधेन । सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षि
 णे मदनद्वेषौ । वामपार्श्वे स्थितौ जिनः । अंगसंधिषु सर्वज्ञ ।
 परमेष्ठि शिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वांशं श्रोत्रिनोरक्षे । दाग्नेयं वि
 जितेन्द्रियः । दक्षिणांशं परंब्रह्म । नैऋतिं च त्रिकालवित्
 ९ ॥ पश्चिमांशं जगणायो । वाचवं परमेश्वरः । उत्तरांतीये
 कृतस्वर्वा । मोक्षानां च निरंजनः ॥ १० ॥ पातालं भगवानर्ह ।
 न्वाकाशं पुरुषोत्तमः । रोहिणीं प्रमुखादेव्यो । रक्षतु सकलं
 कुलं ॥ ११ ॥ ऋषभो मस्तकं रक्षे । दजितापि विलां चने ।
 संभवः कर्णयुगलं । नाशिकां चाभिनंदनः ॥ १२ ॥ उष्ट्रौ श्री
 सुमत्तोरक्षेत् । दंतान्पद्मप्रभो विभुः । जिह्वां सुपार्श्वदेवोयं ।
 तालुचंद्रप्रभो विभुः ॥ १३ ॥ कंठं श्रोत्रविधीरक्षेत् । हृदयं
 श्रोत्रयोत्तलं । येयांसो वाङ्मयुगलं । वासुपुज्यः करद्वयं ॥ १४ ॥
 अंगुलोर्विमलोरक्षे । दन्तांसौस्तनावपि । सुधर्मोऽप्यदरा
 स्थीनि । योगातिर्नाभिमंजलं ॥ १५ ॥ श्रीकुंभं गुह्यं रक्षे
 दंगोरो मकटोत्तमं । मल्लिकार्जुनं पृथिवं । अश्वे च मुनिस्तुतः ॥
 १६ ॥ पादांगुलीर्नमोरक्षेत् । यीने मिश्ररण्डयं । श्रोतार्श्व
 नाभः सर्वांगं । बर्हमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवी जलतेज

स्तु । वायुकाशमयं जगत् । रत्ने देशेषु पापेभ्यो । वीतरागो
 निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारेऽशुशानेवा । संग्रामेश्वरसंकटे ।
 व्याघ्रचौराग्नि सर्पादि । भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकाल
 मरुत्प्राप्ते । दारिद्र्यप्राप्तसमाश्रिते । अपुत्रत्वे महादोषे । मूर्ख
 त्वे रोगपौष्टिते ॥ २० ॥ प्राक्किनौशाकिनौग्रस्ते । महाग्रह
 गणाद्विते । नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये । व्यसनेचापदिस्मरेत् ॥ २१ ॥
 प्रातरेव समुत्थाय । यः स्मरेज्जिनपंजरं । तस्य किञ्चिद्भयं ना
 स्ति । लभ्यते सुखसंपदं ॥ २२ ॥ जिनपंजरनामेदं । यः स्मर
 त्यनुवासनं । कमलप्रभराजेंद्रः । स्थियंसलभते नरः ॥ २३ ॥
 प्रातः समुत्थाय पठेत्तद्भक्त्यो । यस्तोऽत्र मेतज्जिनपंकराख्यं ।
 आसादयेत्सः कमलप्रभाख्यं । लक्ष्मीमनोवांछितपूरणाय ॥
 २४ ॥ श्रीरुद्रप्रह्वीयवरेण्यगच्छे । देवप्रभाचार्यपदाब्जहंसः ।
 वादीन्द्रचन्द्रानामणिरप्यजैनो । जीयाङ्गुतः श्रीकमलप्रभाख्यः
 ॥ २५ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रसंपूर्णम् ॥ ॥ ॥

॥ अथ लघु जिनसहस्रनाम लिख्यते ॥

॥ ॥ नमः स्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने ।
 वच्चे तस्यैव नामानि । मोक्षसौख्याभिलाषया ॥ १ ॥ निर्म
 लः सास्वतो शुद्धः । निर्विकल्पो निरामयः । निःशरीरो नि
 रातंकः । सिद्धः शुद्धो निरंजनः ॥ २ ॥ निष्कलंको निरा
 लंबो । निर्मोहो निर्मलोत्तमः । निर्भयो निरहंकारो । नि
 र्विकारोऽपि निष्क्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषो निरुजः शांतः । निभदो
 निर्ममः शिवः । निस्तरंगो निराकारो । निष्कर्षो निष्क

लप्रभुः ॥ १४ ॥ निर्वीदो निरुपज्ञानः । निरागो निरघोजिनः ।
 निःशब्दः प्रतिमहोष्टः । उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥ १५ ॥ निःशः
 गात् प्राप्तकैवल्यो नैष्ठिकः शब्दवर्जितः । अनिन्द्यो महापूता
 त्मा । जगत्शिखरशेषरः ॥ १६ ॥ निःशब्दो गुण संपन्नः ।
 प्रापतापप्रणाशनः । सोपयोगात् शुभंप्राप्तः कर्मदोतिवला
 वहः ॥ १७ ॥ अजरो अमरः सिद्धः । अर्चितः अक्षयो विभुः ।
 अमूर्तः अच्युतो ब्रह्म । विष्णु रीश प्रजापति ॥ १८ ॥ अनि
 द्यो विश्वनाथश्च । अजो अनुपमो भवः । अप्रमेयो जगन्नाथ ।
 बोधरूपो जिनात्मकः ॥ १९ ॥ अव्यय सकलाराध्यो । निष्पन्नो
 ज्ञानलोचनः । अद्वेद्यो निमलो नित्यः । सर्वसत्यविवर्जितः
 ॥ २० ॥ अजेयः सर्वतोभद्रः । निष्कषाद्यो भवन्तकः । विश्व
 नाथः स्वयंबुद्धः । वीतरागोजिनेश्वरः ॥ २१ ॥ अंतको सहजा
 नंदः । अवाह्यानसगोचरः । असाध्यशुद्धैतन्यः । कर्मानोक
 र्णवर्जितः ॥ २२ ॥ अनंतविमलज्ञानी । स्पृहोश्च निष्प्रका
 शकः । कर्माजितो महात्मानः । लोकलयशिरोमणिः ॥ २३ ॥
 अव्याबाधो वरः शंभुः । विश्ववेदी पितामहः । सर्वभूतहि
 तो देवः । सर्वलोकसरण्यकः ॥ २४ ॥ आनंदरूपचैतन्यो ।
 भगवान्निजगङ्गसुः । अनंतानंतधीशक्तिः । स्वव्यक्तव्य
 यात्मकः ॥ २५ ॥ अष्टकर्मविनिर्मुक्तः । सप्तधातुविवर्जितः
 गौरवादिवबाहूरः । सर्वज्ञानादिसंदुतः ॥ २६ ॥ अभयः
 प्राप्तकैवल्यः । निर्माणो निरपेक्षकः । निष्कलंकेवलज्ञानी ।
 मुक्तिसौख्यप्रदायकः ॥ २७ ॥ अनामयो महाराध्यो । वरदो
 ज्ञानपावकः । सर्वेशः सतपुत्रावासः । विनेन्द्रो मुनिसंस्कृतः
 ॥ २८ ॥ अन्यूनपरमज्ञानी । विश्वतत्त्वप्रकाशकः । प्रबुद्धो भ

गवान्नाथः । प्रस्तुतः पुन्यकारकः ॥ १६ ॥ शंकरः सुगतो
 रौद्रः सर्वज्ञो मदनांतकः । ईश्वरो भुवनाधौशः । सचिन्तः
 पुरुषोत्तमः ॥ १७ ॥ सदोजातमहात्मानं । विमुक्तो मुक्तिवल्लभः
 योगीन्द्रो नादिसंसिद्धः । निरीहो ज्ञानगोचरः ॥ १८ ॥ सदा
 शिवांचतुर्वक्रः । सत्सौख्यस्त्रिपुरांतकः । विनेत्रः विजग
 त्युज्यः । कल्याणकोटमूर्त्तिकः ॥ १९ ॥ सर्वसाधुजनैर्वन्द्यः ।
 सर्वपापविवर्जितः । सर्वदेवाधिको देवः । सर्वभूतहितंकरः ॥
 २० ॥ स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धः पापनाशनः । तनुमा
 त्वचिदानंदः । चैतन्यस्यैवैभवः ॥ २१ ॥ सकलातिशयो देव ।
 मुक्तिस्थो महतामहः । मुक्तिकार्याय संतुष्टो । निरागः परमे
 श्वरः ॥ २२ ॥ महादेवो महावीरो । महामोहविनाशकः ।
 महाभावो महादर्शः । महामुक्तिप्रदायकः ॥ २३ ॥ महा
 ज्ञानो महायोगो । महातपो महात्मकः । महर्षिको महा
 वीर्यो । महातिकपदस्थितः ॥ २४ ॥ महापूज्यो महाबन्धो ।
 महाविघ्नविनाशकः । महासौख्यो महापुंसो । महामहिम
 अच्युतः ॥ २५ ॥ मुक्तामुक्तिजनसंबोधः । एकानेकविनिश्चलः
 सर्वबंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानकः ॥ २६ ॥ महासुरो
 महाधीरो । महादुःखविनाशकः । महामुक्तिप्रदो धीरो ।
 महाहृद्यो महागुरुः ॥ २७ ॥ निर्मारो मारविघ्नसो । निष्का
 मो विषयाच्युतः । भगवंता महाभ्रांतो । शान्तिकल्याणका
 रकः ॥ २८ ॥ परमात्मा परं ज्योतिः । परमेष्टी परमेश्वरः । पर
 मात्मा परानंदः । परंपरम आत्मकः ॥ २९ ॥ प्रस्तुतानंतवि
 ज्ञानो । सख्यानिर्वाणसंयुतः । नांशतिः नाक्षरो बर्णी ।
 व्यंजकः पो जितात्मकः ॥ ३० ॥ व्यक्ताव्यक्तजनसंबोधः । संसा

रत्नेटकारणः । निरवद्योमहाराध्यः । कर्मजितधर्मनाय
कः ॥ ३४ ॥ बोधसत्सुजगद्गदो । विश्वात्मानरकांतकः ।
स्वयंभूपापहृत्युज्यः । पुनीतोविभवस्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णतीतो
महातीत । रूपातोतो निरंजनः । अनंतज्ञानसंपूर्णो ।
देवदेवेशनायकः ॥ ३६ ॥ वरेण्योभवविध्वंसो । योगिनांज्ञान
गोचरः । जन्ममृत्युजरातीतः । सर्वविघ्नहरोहरः ॥ ३७ ॥
विश्ववृक्षभक्ष्यसंधंदाः । पवितोगुणसागरः । प्रसन्नः परमा
राध्यः । लोकालोकप्रकाशकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्भोजगत्स्वामी ।
इंद्रवंदाः सुरार्चितः । निष्पपंचो निरातङ्को । निःशेषक्लेश
नाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोकसंसेव्यो । लोकालोकविलो
कनः । लोकोत्तमो विलोकेशो । लोकाग्रशिखरस्थितः ॥
४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि । ये पठन्ति पुनः पुनः । ते निर्वा
णपटं यांति । सुच्यते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥ इति श्रीभद्रबाहु
स्वामिना विरचितं लघुसहस्रनाम संपूर्णम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ सकलमङ्गलकलिनिवेशनं । सहृदयं हृदयं गमदेशनं ।
अभिनतोत्तमभक्तसुरेश्वरं । नमस्तशीतलनाथजिनेश्वरं ॥ १ ॥
सहजमन्दिरसद्गुणमन्दिरं । विमलकेवलबोधविकस्वरं । अ
निमुषर्णमुषर्णममद्युतं । प्रवरबंधुरलक्षणसंयुतं ॥ २ ॥ (युग्मं
बद्धोक्तभक्तिभविनां भवे भवे । भवेत्तभीष्टार्थनिदानमद्युतं ।
म एव नन्दात्मसमुद्भवो जिनः । समर्चनीयः खलुशीतलः
प्रभः ॥ ३ ॥ कर्माभितप्तान् भविनः सुशीतलान् । कुर्वन्मुदा
याकृत्पत्रा द्वापरः । सदेव देवो भवतात्सदैव मे । सदिष्ट
मिहैव जिनगणशीतलः ॥ ४ ॥ अधिगतशिवशर्मा दीतमोहा
दिशर्मा । इतरथ तमुजग्रा सर्वतः साधधर्मा । विदशमहि

तमूर्तिः स्फूर्तिमत्पुण्यकीर्तिः । जयतु गतभवार्तिः शीत
लः सौम्यमूर्तिः ॥५॥ इति श्रीशीतलजिनः स्तोत्रम् ॥*

॥*॥ विशदगुणविचित्रं सच्चरित्रं दधानो । दलितदुरित
राशिर्विश्वविश्वावदातः । प्रकटमहिमरम्यो दुर्मतीनामगम्यो
जयतु जिनपतिः श्रीपार्श्वचिन्तामणीशः ॥१॥ कमठकुमंति
बल्ली मूलमुन्मूलयन्ती । पदमद्वतपदान्ते यस्य मृद्वीपद्मा
अविकृतमतिकार्योत्सर्गमुद्रान्वितोसौ । जगतिबद्धमतो
स्नानपातुवामांगजन्मा ॥२॥ अविचलमणिबिम्बत् सत्प्रणा
नां सहस्रं । बल्लविमलभास्वङ्गपूषणोद्भासिगालः । गुरुतर
वरभक्त्यासक्तचित्ताङ्गभाजा । भवतु शिवसमृद्धौ चाश्वसेनि
जिनेन्द्रः ॥३॥ कुपितकरिभृगेश व्यालदावानलाब्धि । प्रह
रणगदगुत्यातङ्कशङ्कापहर्त्ता । विकसितमुखपद्मः सत्पुरेसूर
ताम्यै । जयतु भुजगलक्ष्माम्बाजमानोजिनेन्द्रः ॥४॥ इति
पार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥ * ॥

॥*॥ यस्य ज्ञानदयासिन्धो । दर्शनं श्रेयसे ध्रुवं । सश्रीमान्
पार्श्वतीर्थेशो । निषेव्यः सततं सतां ॥१॥ वामासूनोर्यशः पुंजै
रगाधस्थानघागुणाः । स्मर्यन्ते येन स सार्थो । भवेत्प्राचीन
वर्हिषां ॥२॥ विहाय विषयासक्तान् । संसारिकसुरासुरान् ।
सेव्यतामक्षयो श्रीराः पार्श्वदेवोपरः प्रभुः ॥३॥ जिनाः सर्वा
र्थदानेन । येन कल्पद्रुमाश्चपि भवेदभ्यर्चितो लोके । सशिये
चामृताय च ॥४॥ संस्तुतो मधुरश्लोकै । जैनलामप्रदायकः ।
कल्याणकारको भूयात् । श्रीमान् शङ्खेश्वरः प्रभुः ॥५॥ इति
श्रीसमस्यामयोशंखेश्वरपार्श्वजिनस्तुतिः ॥
॥*॥ लक्ष्मीनिदानं गुरुकर्मदानं । सर्वमदानं जगतेददानं

बलेशपाश्वर्षाहितपादपाश्वर्ष । सुवामिपाश्वर्षेभवभेदपाश्वर्ष ॥१॥
 केरातपीसुनमममभावा । समप्रभावा भवदीयमूर्तिः ।
 विभाति वामोप्रभव विलोके । भवविलोकेन समर्चनीय
 ॥२॥ तवैगपयकजमादरेण । तद्वाटधाना जनतादरेण ।
 सुज्ञाभवेदेकपदे पगाया । निर्वेशवन्सौख्यपरंपगायाः ॥ ३ ॥
 निःशेषभूवर्षितटानवारि र्वैकानसे त्वं ध्रियसे सदैव । सएव
 गच्छत्तमटानवारि । प्रोक्षारितोद्दामयथाः सदैवः ॥ ४ ॥
 देवाधिदेवाधिहरस्त्वमेव । सुज्ञान सुज्ञानभिनुहकपः ।
 सारांगमारांगवितीर्णभूयः । कल्याण कल्याणदृढगभाजां
 ॥५॥ वैरर्थात् त्वं वरवैदाराज । मनोभिरामैः समनोभि
 रामैः । कर्माभिधैरिक्तभूषणास्ते । विसारिलोकिश वि
 पारि लोके ॥ ६ ॥ इत्थं तेजिनपुंगवस्य भगवन् प्रोद्दाम
 वामान्वितं । पादाब्जं परभागभृत्विभुवनस्तुत्यंस्तु वन्तो
 निगं । दत्तं कर्मविपक्षपक्षदलने भव्या भवंतु क्षमाः । क
 म्वाकाशवमुक्लिमात्रुमणित्वं तीर्त्वा भवांभोनिधिं ॥७॥
 इति विविधवमकयुक्तीयोपार्श्वजिनस्तुतिः ॥*

॥ ५ ॥ शान्तिनीदृन्दः ॥ ५ ॥ गौणोग्रामेक्षभने
 पादतोषे । जोरावत्यां पत्तने लोडवाय्ये । वागारस्यां
 पार्श्विबन्धतकोर्षिं योपागंशं नोमिशंलेश्वरस्यं ॥ १ ॥
 इराणां स्थाने पारिजातं । वामादेव्यानन्दनं देव
 वंशं । जनेभूमौ वागलोके प्रसिद्धं । योपा० ॥२॥ भित्वा
 भयं कर्माणां विगणं । प्राप्ताकलं ज्ञानरत्नचिह्नं ।
 मन्त्राभंदादविद्यावधौष्यं ॥ ३ ॥ योपा० ॥ विद्याधीगं
 विद्यालोके प्रसिद्धं । पापगण्यं मोक्षनक्षत्रीकल्पं च भो

जातं सर्वदा सुप्रसन्नं । श्रीपा० ॥ ४ ॥ वपैरस्य स्वर्गदो
र्नागचन्द्र । संख्येभासे माधवे कृष्णपक्षे । प्राप्तं पुण्यै
दर्शनं वस्य तंच । श्रीपा० ॥ इति शंखेश्वरजिनस्तवः ॥॥

॥॥ विशदसङ्गुणराजि विराजितं । वनवनावननादविभा
जितं । भजतभक्तिभरेण रमेश्वरं । जगति पार्श्वजिनेशमन
श्वरं ॥१॥ विविधवर्णविभूषितविग्रहाः । विहितदुर्हमदर्पक
निग्रहाः । वसुयुगार्कमिताः सुकृताकराः । जिनवराः प्रभ
वंतु शिवकरा ॥ २ ॥ रुचिरवर्ण निवहमनिन्दितं । सुमन
सांभकरैरभिवंदितं । निखिलसाधुजनाः खलु निर्मदं । जिन
मतं नमतां चित्तशर्मदं ॥ ३ ॥ सकलभयसरो जविकाशिका ।
कुसुमतसंतमसोच्चयनाशिका । जिनवरानन पद्मगतोन्मुदा ।
भवतु वारिजनलामधुमार्थदा ॥४॥ इति पार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥

॥॥ श्रीमत्पार्श्वजिनेश्वरस्य विलसद् ज्ञानाढ्यतांभोनिधेः ।
सङ्गावेन परस्वरूपविरते सुं क्तास्यदे तस्य पः । सङ्गतप्रति
विबतस्तु सुतरां गौडिपुरोद्भासिनः । सोल्लासं प्रणिपत्य सत्य
मनसा तत्रैव नित्यं स्मरे ॥ १ ॥ यत्पादांबुजदर्शनोत्सुकधि
योभय्या व्रजतो धुनि । स्पृश्यन्ते नहि दुष्टजंतुनिवहैर्न्यै न
वा तस्करैः नैवोज्ज्वलदवानलैर्जलचराकीर्यैर्जलैर्जातुनो
स श्रीपार्श्वविभूर्यचिन्त्यमहिमादृश्यानकेषां भवेत् ॥ २ ॥
हित्वांतः करणाद्भूतं कुटिलतां मोहादिनोद्भावितां ।
धृत्वा निर्मलभावनांच विधिनायङ्गकिमातन्विता । लभ्य
न्ते नरराजनिर्जरवर श्रेयोसुखानि क्रमा । न्मुक्तिश्रौरपिसै
वस्तुदमतवांसंसेयतां विश्रुपाः ॥३॥ इति श्रीगौडीपार्श्वजिन
स्तोत्रं ॥॥

॥ ॐ ॥ आद्यः श्रीऋषभस्तोजितजिनः श्रीसंभव
स्तीर्यकृत् । सुश्रीमानभिनन्दनश्चसुमतिः श्रीसद्गपद्गप्रभः ।
पृथ्वीकुलभिवः सुपार्श्वजिनपस्तोर्ध्वेशचन्द्रप्रभः । सर्वज्ञः सु
विधिर्जिनोसुनिमतः श्रीशीतलः सौम्यदृक् ॥ १ ॥ अथास
प्रभुवासुपुज्यविमलान् तेशधर्मेश्वराः । शांतिः कुंथुररस्ततो
जितरिपुर्मल्लिर्जिनः सुप्रतः । अर्हंतौ नमिनेमिशुद्धसुनिपौ
विश्वव्ययेविश्रुतौ । श्रीमत्पार्श्वजिनः प्रसिद्धमहिमा श्रीवर्द्ध
मानः प्रभुः ॥ २ ॥ एते श्रीजिनपुङ्गवाः परमचिद्रूपाश्चतु
र्विंशतिर्निश्शेषोत्तमभव्यजंतुहृदया भौजप्रबोधोद्यताः ।
वंदान्ते सुरदृन्द्वंद्वविशदल्लोकव्रजानिर्भय । श्रीसंपत्तिनि
वास विक्रमपुरेसङ्गतिः प्रत्यहं ॥ ३ ॥ इति चतुर्विंशति
जिनस्तवनम् ॥ ॐ ॥

अथ मङ्गलाष्टकं लिख्यते ।

॥ ॐ ॥ श्रीमन्मम सुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतिरत्नप्रभा ।
भास्वत्पादनेखेन्दव प्रवचनांभोधौ व्यवस्थायिनः । ये सर्वे
जिनसिद्धसूरिसुगता स्ते पाठकासाधवः । स्तुत्यायोगिजनैश्च
पञ्चगुरवः कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ १ ॥ सम्यग्दर्शनबोधदत्तममलं
रत्नखयं पावनं । मुक्तिश्रीनगरायनं जिनपतेः स्वर्गापवर्ग
प्रदः । धर्मः सत्तिसुधाश्च चैत्यमखिलं जैनालयं अगलयं प्रोक्तं
तत्तत्त्रिविधं चतुर्विधं समीकुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ २ ॥ नाभेया
दिजिनाधिपालिभुवनेख्याताश्चतुर्विंशतिः । श्रीमन्तो भरते
श्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश । ये विष्णुप्रतिविष्णुलाङ्गल
धराः सप्ताधिकाविंशति । श्रीलोको भयदालिपष्टिपुरुषाः ।

कुर्वं तु मे मङ्गलं ॥ ३ ॥ कैलाशे वृषभस्य निर्द्विजिह्वो वीर
 स्य पावापुरी । चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः । सम्भोदशैलेर्ह
 तां । शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरेनेमीश्वरस्यार्हतो । निर्वा
 णाविनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वं तु मे मङ्गलं ॥ ४ ॥ ज्योति
 र्यन्तरभावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौस्थिता । अंबूशात्मलि
 चैत्यशशिषु तथावक्षाररूप्यादिषु । इक्ष्वाकारगिरौ च कुण्ड
 लनगेद्वीपे च नंदीश्वरे । शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वं
 तु मे मङ्गलं ॥ ५ ॥ यो गर्भावतरोपि जयत्यर्हतां जन्माभि
 प्रेकोत्सवे । यो जातः परिनिक्रमेव च भवोद्यः केवलज्ञानभा
 क् । यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमासंभावितः स्वर्गिभिः । कल्या
 णानि च तानि पंचसत तं कुर्वं तु मे मङ्गलं ॥ ६ ॥ ये पंचौ
 षधिवृद्धयः श्रुततपोवृद्धिगताः पंचये । ये चाष्टांगमहा
 निमित्तकुशला ये छौविधाचारणा । पंचज्ञानधराश्च ये पि
 बलिनो ये बुद्धिवृद्धौश्वरा । सप्तै ते सकलाश्च ते गणभृताः
 कुर्वं तु मे मङ्गलं ॥ ७ ॥ देव्याष्टजयादिका द्विगुणिता ।
 विद्यादिका देवता । श्रीतीर्थंकर मातृकाश्च जनकावचा
 श्च यक्षीश्वराः । द्वाविंशत्विंशत्यग्रहानिषि सुरादिकन्यका
 आष्टधा । दिक्पाला दश इत्यमी सुरगणाः । कुर्वं तु मे मङ्ग
 लं ॥ ८ ॥ इत्थं श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदं कल्याण कालेर्हतां ।
 पूर्वाह्णेपि मद्योत्सवेपि सततं श्रीसौख्यसंपत्कारं । ये शृण्वं
 ति पठन्ति तैश्च मनुजैर्हर्म्यकामान्विता । लक्ष्मीराश्रयते
 विप्रायरहिताः कुर्वं तु मे मङ्गलं ॥ ९ ॥ इति श्रीमङ्गलाष्ट
 कं संपूर्णम् ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ शिवं शुद्धं बुद्धं परं विश्वनाथं । न देवं न धर्मं न कर्म

नकर्त्ता नअंगं नसंगं नदृष्ट्वा नकामं । चिदानन्दरूपं नमोवौत
 रागं ॥ १ ॥ नबन्धो नमोक्षो नरागादिलोकं । नजोगं नभोगं
 नव्याधिर्नशोकं । नक्रोधं नमानं नमाया नलोभं । चि० ॥ २ ॥
 नहस्तौ नपादौ नघ्राणं नजिह्वा । नचक्षुर्नकर्णं नवक्त्रं न
 निद्रा । नखादं नखेदं नवर्षं नमुद्रा । चि० ॥ ३ ॥ नजन्मं
 नमृत्युं नमोदं नचिन्ता । नक्षलूट् नभीतं नकष्यं नतुंदा
 नखामी नमृत्यं नदेवो नमर्त्ता । चि० ॥ ४ ॥ विदं डे विखंडे
 हरेविश्वव्यापं । ऋषीकेश विदं शकर्म्मरिजालं । नपुण्यं न
 पापं नअद्ययानिप्राणं । चि० ॥ ५ ॥ नवाल्सं नवृद्धं नविद्विन्न
 मूढा । नवेद्यं नभेद्यं नमूर्त्तिर्नमौहा । नकषणं नशुक्लं न
 मोहं नतंद्रा । चि० ॥ ६ ॥ नआद्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या ।
 नद्रव्यं नक्षेत्रं नदृष्टौ नमय्या । नगुर्वो नशिष्यो नआद्यो
 नदीनं चि० ॥ ८ ॥ इदं ज्ञानरूपं स्वयंतत्त्ववेदी । नपूर्णं न
 शून्यं सचैतन्यरूपं । अन्योभिभिष्यं नपरमार्थमेकं । चि० ॥ ८ ॥
 आत्मारामगुणाकरं गुणनिधिसैतन्यरत्नाकरं । सर्वभूतगता
 गते सुखदुःखज्जातात्वयासर्वगं । त्रैलोक्याधिपतिस्वयं स्वम
 नसाध्यायंति योगेश्वराः । वंदे तं हरिवंश हर्षहृदयं श्री
 मान भूदच्युतः ॥ ९ ॥ इति श्रीपरमात्मास्तोत्रं ॥ ॥ ॥

॥ ॥ दर्शनं देवदेवस्य । दर्शनं पापनाशनं । दर्शनं स्वर्ग
 सोपानं । दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेन्द्राणां । सा
 धूनां वंदनेन च । नतिष्ठतिचिरं पापं । छिद्रहस्तं यथोदकं ॥ २ ॥
 दर्शनं जिनसूर्यस्य । संसारघातनाशनं । बोधनं चित्तपद्मस्य
 समस्तार्थप्रकाशकं ॥ ३ ॥ दर्शनं जिनचंद्रस्य । सद्ब्रह्मावृतवर्षणं
 जन्मदाघविनासाय । वृंहणं सुखवारिधेः ॥ ४ ॥ जिनेभक्ति

जिनेभक्ति । जिनेभक्ति दिनेदिने । सदा मेस्तु, सदा मेस्तु । सदा
मेस्तु, भवेभवे ॥ ५ ॥ नहिवाता नहिवाता । नहिवाता जग
त्वये । वीतरागसमो देवो । न भूतो न भविष्यति ॥ ६ ॥ अन्य
थाशरणं नास्ति । त्वमेव शरणं मम । तस्मात् सर्वं प्रयत्नेन
रत्नरत्नजिनेश्वर ॥ ७ ॥ वीतरागं मुखं हृद्वा । पद्मरागसमप्रभं
नैकजन्मदुःखपापं । दर्शनेन विनश्यति ॥ ८ ॥ अर्हंतो मंगलं
नित्यं । सिद्धार्जगतिमंगलं । मंगलं साधवो मुखं । धर्मः सर्वत्र
मंगलं ॥ ९ ॥ लोकोत्तमाद्दार्ढ्यतः । सिद्धालोगोत्तमाः
सदा । लोकोत्तमो यतौ शानां । धर्मो लोकोत्तमो र्हतां ॥ १० ॥
शरणं सर्वदार्ढ्यतः । सिद्धाशरणमंगिलां । साधवः शरणं
लोके । धर्मशरणमर्हतां ॥ ११ ॥ इति श्रीनमस्कारस्तोत्रं
संपूर्णम् ॥ ॥ ॥

॥ अथ ऋषिमंत्रस्तोत्रं लि ॥

॥ ॥ ॥ आद्यं ताक्षरसंलक्ष्यं । मन्त्रं व्याप्य यत्स्थितं ।
अग्निज्वालासमं नाद । बिंदुरेखा समन्वितं ॥ १ ॥ अग्निज्वा
लासमाक्रांतं । मनोमलं विशोधकं । देदीप्यमानं हृत्पद्मे ।
तत्पदं नौमि निर्मलं ॥ २ ॥ अर्हं मित्यक्षरं वचनम् । वाचकं परमे
ष्ठिनः । सिद्धचक्रस्य सहोजं । सर्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ उ
नमो र्हद्भ्य ईशेभ्य । उ सिद्धेभ्यो नमोनमः । उ नमः सर्वस
रिभ्य । उपाध्यायेभ्य उ नमः ॥ ४ ॥ उ नमः सर्वसाधुभ्य ।
उ ज्ञानेभ्यो नमोनमः । उ नमस्तत्त्वज्ञेभ्य । आरिबेभ्यस्तु,
उ नमः ॥ ५ ॥ अथेतेस्तु श्रियेस्त्वतः । दर्शदाद्यादिकं शुभं ।
स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं । एवमर्च्यो जसमन्वितं ॥ ६ ॥ आद्यं

पदंशिखारक्षे । त्वरंरक्षतुमस्तकं । ततोयं रक्षेन्नेवेद्वे ।
 तुर्यंरक्षेन्ननासिकां ॥ ७ ॥ पंचमंतुमुखंरक्षेत् । षष्ठंरक्षे
 च्चष्टिकां । नाभ्यंतं सप्तमंरक्षे । द्रक्षेत्पादांतमष्टमं ॥ ८ ॥
 पूर्वप्रणवतः सांतः । सरेफोद्ग्रथिपंचवान् । सप्ताष्टदशसर्वां
 कान् । स्थितोविंदुस्वरान् दृष्टक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षरा
 आद्याः । पंचातोद्धानदर्शन । चारित्र्येभ्यो नमो मध्ये ।
 त्रींसांतहसमलंछतः ॥ १० ॥ ॐ ॥ हुं । ह्रीं । हुं । ह्रूं । ह्रूं ।
 ह्रूं । ह्रूं । ह्रूं । ह्रूं । असिआउसाज्ञानदर्शनचारित्र्येभ्यो
 नमः ॥ ॐ ॥ *जंबूदक्षधरोद्दीपः । क्षारोदधिसमावृतः ।
 अर्हदाद्यष्टकैरष्ट । काष्ठाधिष्टैरलंछतः ॥ ११ ॥ तन्मध्य
 संगतोमेरुः । कूटलक्षैरलंछतः । उच्चैरुच्चैस्तरस्सार । स्तारा
 मंदलमंश्रितः ॥ १२ ॥ तस्योपरिसकारांतं वीजमध्यास्यसर्वगं ।
 नमामिबिंबमाहं त्वं । ललाटस्थं निरंजनं ॥ १३ ॥ अक्षयं
 निर्मलंशांतं । बहलं जाड्यतोऽज्झितं । निरौहं निरहंकारं ।
 सारं सारतरंगं ॥ १४ ॥ अनुद्धतं शुभं स्मृतिं । सात्त्विकं
 राजसंमतं । तामसं चिरसंबुद्धं । तैजसं शर्वरीसमं ॥ १५ ॥
 साकारं च निराकारं । सरसं विरसंपरं । परापरं परातीतं ।
 परंपर परापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णं च । त्रिवर्णं तुर्यवर्णं
 कं । पंचवर्णं महावर्णं । सपरं च परापरं ॥ १७ ॥ सकलं नि
 ष्कलंतुष्टं । निर्दुष्टं भातिवर्जितं । निरंजनं निराकारं । निर्ले
 पं वीतसंशयं ॥ १८ ॥ ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं । बुद्धसिद्धं मतंगुर ।
 ज्योतीरूपं महादेवं । लोकालोक प्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्हदा

* इति अधिमण्डलसुखमन्त्रः । आराधकस्य शुभः । नवबीजाक्षरः ।
 षोडशशुद्धाक्षरः ।

ख्यस्तु वर्णांतः । सरेफोविंदुमंद्रितः । तुर्यस्वरसमायुक्तो
 वज्रध्वनादमालितः ॥ २० ॥ अस्मिन्वीजे स्थिताः सर्वे ।
 वृषभाद्याजिनोत्तमाः । वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता । ध्यातव्यास्तत्र
 संगताः ॥ २१ ॥ नादश्चंद्रसमाकारो । विंदुनीलसमप्रभः ।
 कालारुणसमासांतः । स्वर्णभः सर्वतोमुखः ॥ २२ ॥ शिरः
 संलीन ईकारो । विनीलोवर्णतः स्मृतः । वर्णानुसारसंलीनं
 तीर्थकृन्मंजलंस्तुमः ॥ २३ ॥ चंद्रप्रभपुष्पदंतौ । नादस्थिति
 समाश्रितौ । विंदुमध्यगतौनेमि । सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥
 पद्मप्रभवासुपूज्यौ । कलापदमधिष्ठितौ । शिरईस्थितिसंली
 नौ । पार्श्वमल्लीजिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थकृतः सर्व । हर
 स्थाने नियोजिताः । मायावीजाक्षरंप्राप्ता । अतुर्विश्रितिर
 हंतां ॥ २६ ॥ गतरागद्वेषमोहाः । सर्वप्रापविवर्जिताः । स
 र्वदाः सर्वकालेष । ते भवंतु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेव
 स्यचक्रं तस्य चक्रस्य वा विभा । तथाष्टादित सर्वाङ्ग
 मामांहीनस्तु जाकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य० । मामांहीनस्तु
 राकिनी ॥ २९ ॥ देवदे० । मामांहीनस्तु लाकिनी ॥ ३० ॥
 देव० । मामांहीनस्तु काकिनी ॥ ३१ ॥ देवदे० । मामांहीनस्तु
 शाकिनी ॥ ३२ ॥ देव० । मामांहीनस्तु हाकिनी ॥ ३३ ॥
 देव० । मामांहीनस्तु याकिनी ॥ ३४ ॥ देव० । मामांहींसंतु
 पक्षराः ॥ ३५ ॥ देव० । मामांहींसंतु हस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदे० ।
 मामांहींसंतुराक्षसाः ॥ ३७ ॥ देव० । मामांहींसंतुवह्मयः
 ॥ ३८ ॥ देव० । मामांहींसंतु सिंहकाः ॥ ३९ ॥ देव० । मामां
 हींसंतु दुर्जनाः ॥ ४० ॥ देव० । मामांहींसंतु भूमिपाः ॥ ४१ ॥
 श्रीगौतमस्ययासुद्रा । तस्ययासुविलम्बयः । तामिरभ्य

द्युतज्योति । रश्मिर्वर्णनिघोषः ॥४२॥ पातालवासिनो देवा ।
 देवामूपौटिवासिनः । स्वर्वासिनोपि ये देवाः । सर्वे रक्षन्तु
 मामितः ॥४३॥ येऽवधिलब्धयो येतु । परमावधिलब्धयः । ते
 सर्वे मुनयो देवाः । मांसं रक्षन्तु सर्वदा ॥४४॥ दुर्जनाभूतवे
 तालाः । पिशाचा मुद्गलास्तथा । ते सर्वेऽप्युपशम्यन्तु । देवदेव
 प्रभावतः ॥४५॥ शुद्धीं श्रीं च धृतिं लक्ष्मीं । गौरी ।
 चण्डो सरस्वती । जयां वा विजयानित्या । किन्नाजितामद
 द्रवा ॥४६॥ कामांगा कामबाणाच । सानंदानंदमालिनी ।
 माया मायाविनी रौद्री । कला काली कलिप्रिया ॥४७॥
 एताः सर्वामहादेव्यो । वर्त्तन्ते यावज्जगत्त्रये । मङ्गलं सर्वाः
 प्रयच्छन्तु । कान्तिकीर्त्तिं धृतिं मतिं ॥४८॥ दिव्यो गोप्यः
 सुदुः प्राप्यः श्रीवृष्णिमंजुलस्तवः । भाषितस्तीर्थनाथेन
 जगत्त्रयाण्युतेनवः ॥४९॥ रणे राजकुले वङ्गौ । जले दुर्गे
 गजे हरौ । श्मशाने विपिने घोरे । कृतो रक्षति मानवं ॥५०॥
 राज्यमष्टा निजं राज्यं । प्रदमष्टा निजं प्रदं । लक्ष्मीं भूषा
 निजां लक्ष्मीं । प्राप्नुवन्ति न संशयः ॥५१॥ भार्यार्थी लभते
 भार्या । पुत्रार्थी लभते सुतं । वित्तार्थी लभते वित्तं । नरः
 कारणं लभतः ॥५२॥ स्वर्णरूपे पटे कांश्ये । लिखित्वा
 यस्तु पूजयेत् । तस्यैवाष्टमहासिद्धिः । गृहे वसति शाश्वती
 ॥५३॥ भूयःपत्रे लिखित्वेदं । गलके मूर्द्ध्नि वा भुजं । धारितं
 सर्वदा दिव्यं । सर्वभौति विनाशकं ॥५४॥ भूतैः प्रेतैः चै
 र्यक्षैः । पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः । वातपित्तकफोद्रेकैर्मुच्यते
 नात्र संशयः ॥५५॥ भूर्भुवः स्वलयीपीठः । वर्त्तिनः शाश्वता
 जिनाः । तैस्तु तैर्वदितैर्दृष्टै र्यत्फलं तत्फलं श्रुतौ ॥५६॥

एतद्गोप्यं महास्तोत्रं । न देवं यस्य कस्यचित् । मिथ्यात्ववा
 सिने दत्ते । बालहत्यापदेपदे ॥ ५७ ॥ आवास्तादितपः
 कृत्वा । पूजयित्वा जिनावलीं । अष्टसाहस्रिको जापः । कार्य
 स्तस्त्रिद्विहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमंष्टोत्तरं प्रातः । यैपठन्ति दिने
 दिने । तेषां नञ्याघयो देहे । प्रभवन्ति नचापदः ॥ ५९ ॥
 अष्टमासावधिं यावत् । प्रातःप्रातस्तु यः पठेत् । स्तोत्रमेतन्म
 हातेजो । जिनविंशं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यर्हतो विंशे
 भवे सप्तमको भुवं । पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा । परमानन्दनन्दितः
 ॥ ६१ ॥ विश्ववंदो भवे ध्याता । कल्याणानि च सोऽनुते । गत्वा
 स्थानं परं सोऽपि । भूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं
 महास्तोत्रं । स्तुतीनामुत्तमं परं । पठनात्स्मरणाज्जापा लभ्यते
 पदमुत्तमं ॥ ६३ ॥ इति श्रीकृष्णमन्दलस्तोत्रं ॥ ॥ ॥ क्षेपक
 श्लोकान्तिराकृत्य मूलयन्त्रकल्पानुसारेण । लिखितं । गणिः
 श्रीक्षमाकल्याणो पाध्यायैः तस्योपरि मयापि लिखितं
 इदं स्तोत्रं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ भक्तामरस्तोत्रलि ॥

॥ ॥ ॥ भक्तामरप्रणत मौलिमणिप्रभाणा । सुदृढोति
 कन्दलितपापतमोवितानं । सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं यु
 गादा । बालं वनं भवजले पततां जनानां ॥ १ ॥ यः संस्तुतः
 सकल बाध्यतत्त्वबोधादुद्धतबुद्धिप्रटुभिः सुरलोकनाथैः
 स्तोत्रैर्जगत्त्रितय चित्तहरैरुदारैः । स्तोत्रे किलाहमपि
 तं प्रथमं जिनेन्द्रं ॥ २ ॥ युग्मं । बुद्ध्या विनापि विबुधाश्चित्तपाद
 पीठ । स्तोत्रं संसृज्यतमति विगतबोधं । बालं विहाय जल

संस्थितमिदुर्विवं । मन्यः क इहति जनः सहसाग्रहीतुं ॥३॥
 वक्तुं गुणान्गुणसमुद्र शशांक कांतान् । कस्ते क्षमः सुरगुरु
 प्रतिमोपि बुद्ध्या । कल्पांतकाल पवनोद्धतनक्रचक्रं । कोवात
 रीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्यां ॥४॥ सोहं तथापि तवभक्तिवशा
 न्मुनीश । कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः । प्रीत्यात्मवीर्य
 मविचार्य मृगोमृगेन्द्र । नाभ्येति किं निजशिशोः परिपाल
 नार्थं ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतं परिहासधाम । त्वद्वक्तिरेव
 मुखरौकुरुते बलाग्मां । यत्कोकिलः क्लिप्तमधौमधुरं विरौ
 ति । तच्चारुचामकलिकानिकारैकहेतु ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन
 भवसंततिसन्निवद्धं । पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजां ।
 आक्रांतलोकमलिनीलमशेषमाशु । सूर्यांशुभिन्न मिव शा
 र्वरमंधकारं ॥ ७ ॥ मत्वेतिनाथतवसंस्तवनं मयेद । मार
 भ्यते तनुधियापि तवप्रभावात् । चेतोहरिष्प्रतिसतां नलिनी
 दलेषु । सुक्ताफलद्युतिमुपैतिननूदविंदुः ॥ ८ ॥ आस्तांतव
 स्तवनमस्तसमस्तदोषं । त्वत्संकथापि जगतां दुरितानिहन्ति ।
 दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव । पद्माकरेषु जलजानिविका
 शभाजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवनभूषण भूतनाथ । भूतै गुणैर्भु
 वि भवंतमभिष्टुवंतः । तुल्या भवंति भवतो ननु तेन किंवा ।
 भूषाश्रितं य इहनात्मसमं करोति ॥ १० ॥ दृष्ट्वाभवंतं मनि
 सेपविलोकनीयं । नान्यवतोषमुपयाति जगत्क्षेत्रः पीत्वा
 पयः शशिकरद्वतिदुग्धसिंधोः । क्षारं जलं जलनिधेरसि
 रुं क इह्येत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं ।
 निर्मापितस्त्रिभुनैक ललामभत । तावंतएवखलुते प्यणवः
 पृथिव्यां । यत्तेसमानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्तुं क

तेसुरनरोरगनेहृदि । निःशेषनिर्जित जगत्त्रितयोप
 मानं । विंबं कलंकमलिनां कनिशाकरस्य । यद्वासरे भवति
 प्रांनुपलाशकल्यं ॥ १३ ॥ संपूर्णमंजलशशांककलाकलापे । शुभा
 गुणास्त्रिभुवनं तवलंघयति । ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथ
 मेकं । कस्तान्निवारयति संचरतोयथेष्टं ॥ १४ ॥ चित्तं किं
 मलयदिते विदशांगनाभि । न्यौतं मनागपिमनो नविकार
 मार्गं । कल्पान्तकालमस्तु चलिताचलेन । किं मंदराद्रि
 शिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥ निद्रुमवर्त्तिरपवर्जित
 तैलपरः । कृत्स्नजगत्त्रयमिदं प्रकटी करोषि । गम्यो न
 जातु मरुतां चलिताचलानां । दीपोपरस्वमसिनाथ जग
 त्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासिनराजगम्यं ।
 स्पृष्टो करोषि सहसायुगपज्जगंति । नांभोघरोदरनिखलम
 हाप्रभावः । सूर्यातिशायिमहिमासि सुनींद्रलोके ॥ १७ ॥
 नित्योदयं दलितमोहमहाघकारं । गम्यं न राजवदनस्य न
 वारिदानां । विभाजते तव सुखाब्ज मनल्पकांति । विद्यो
 तयज्जगद पूर्वं शशांकविंबं ॥ १८ ॥ किं शर्वरौषु शशिनाडि
 विवस्वता वा । युष्मान्मुखेदुदलितेषु तमस्सनाथ । निष्पस्य
 शालिवनशालिनिजीवलोके । कार्यं कियज्जलधरैर्जलभार
 नमैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथात्वयि विभाति कृतावकाशं । नैवं
 तथा हरिहरादिषु नायकेषु । तेजःस्फुरन्मनिषु याति य
 था महत्वं । नैवंतु काचसकले किरणाकुलेषु ॥ २० ॥ मन्ये
 वरं हरिहरादय एव द्रष्टा । दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमे
 ति । किं वीक्षितेन भवताभुवियेन नान्यः । कश्चिन्मनोहरति
 नाथ भवान्तरेषु ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशोजनयन्तिपुत्रान्

नान्यासुतं त्वदुपमं जननोप्रसूता । सर्वादिशोदधति भानि
सहस्ररक्षिं । प्राथ्येव दिग्बनयति स्फुरदंशुजालं ॥ २२ ॥
त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस । मादित्यवर्णममलं तम
सः पुरस्तात् । त्वामेव सम्यगुपलभ्यजयन्ति मृत्युः । नान्यः
शिवः शिवपदस्य सुनींद्रपन्याः ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं विभ्रमचिं
त्वमसंख्यमाद्यं । ब्रह्माण्मौखरमनन्तमनङ्गकेतु । योगी-
श्वरं विदितयोगमनेकमेकं । ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति
सन्तः ॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधाञ्चित्तबुद्धिबोधा । च्वंशं
करोसि भुवनत्रय शङ्करत्वात् । धातासि धीरशिवमार्गविधे
विधाना । द्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं
नमः क्षिभुवनार्तिहराय नाथ । तुभ्यं नमः क्षितितलामलभू
षणाय । तुभ्यं नमस्ति जगतः परमेश्वराय । तुभ्यं नमोजिन
मबो दधिषोषणाय ॥ २६ ॥ कोविश्रयोव यदि नामगुणैर-
श्वै । स्वं संश्रितो निरवकाशतया सुनीश । दोषैरुपात्त
विबुधाश्चयजातगर्वैः स्वप्नांतरेपि न कदाचिदपौक्षितोसि ॥
२७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मययुखा । माभाति रूपममलं
भवतो नितान्तं । स्पष्टोऽसत्किरणमस्ततमोवितानं । विम्बं
रवेरिवपद्मोधरपार्श्ववर्ति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमयूख
शिखाविशिष्टे । विम्बाजते तव वपुः कनकावदातं । विम्बं
विषद्विषदंशुलतावितामं । तुङ्गो द्वाद्विशिरसीव सहस्र
रश्मिः ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचामरचाक्षोभं । विम्बाजते
तव वपुः कल्पव्रीहकांतं । चक्षुःशृङ्गशुचिनिर्भरवारिधार ।
सुखैकतं सुरगिरेरिव शातकौभं ॥ ३० ॥ ठ्वलत्रयं तवविभाति
शृङ्गककांतं । सुखैः स्मितं स्वगितभाषुकरप्रतापं । सुक्ताकल

प्रकरजालविवृद्धिशोभं । प्रस्थापयत्विजगतः परमेश्वरत्वं ॥
 ३१ ॥ उन्निद्रहेमनवपङ्कज-पुञ्जकान्ति । पर्यल्लसन्नखमयूख
 शिखाभिरामौ । पादौ पदानि तव यत्न जिनेन्द्रधत्तः । पद्मा
 नि तव विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥३२॥ इत्थं यथा तव विभू
 तिरभूज्जिनेन्द्र । धर्मोपदेश न विधौ न तथा परस्य । यादृक्
 प्रभादिनकृतः प्रहृतान्वकारा । तादृक्कृतो ग्रहगणस्य विका
 शिनोपि ॥३३॥ अगोतन्मदा विलविलोल कपोलमूल । मत्त
 न्वमङ्गमरनादविवृद्धकोपं । ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं ।
 दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदायितानां ॥३४॥ भिस्मेभकुं भगल
 दुच्चलशोणितान्तं । मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः । बद्ध
 क्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोपि । नाक्रामति क्रमद्युगाचल
 संश्रितंते ॥३५॥ कल्पान्तकालपवनोद्धतयत्किंकल्पं । दावान
 लं उवलितमुज्ज्वलमुत्स्फुल्लिङ्गं । विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुख
 मापतन्तं । त्वं नामकौर्त्तनजलं समयत्यशेषं ॥३६॥ रक्तेक्षणं
 समदकोकिलकण्ठनीलं । क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापत
 न्तं । आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्कः । त्वन्नामनागद
 मनो हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥ वल्गुत्तरङ्गगजगर्जितभौम
 नाद । माजौ बलम्बलवतामपि भूपतीनां । उद्यद्दिवाकरमयू
 खशिखापविडं । त्वत्कौर्त्तनात्तमद्रवाशुभिदामपैति ॥ ३८
 कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह । वेगावतारतरणातुर
 यप्रेषभोमे । युद्धे जयं विजितदुर्जयवेषध्याः । त्वत्पादपंक
 जवनास्यविणो लभन्ते ॥३९॥ अम्भोनिधौ क्षुभितभौषण
 नक्रचक्र । पाठीनपीठभयदोलखणवाग्वाग्नौ । रङ्गस्तरंगशि
 खरस्थितयानपात्वा । स्नासं विहायभदतः क्षरणादव्रजन्ति

॥४०॥ उद्धतभीषणजलोदरभार भुग्नाः । शौच्यां दशामुप
गताश्चुतजैविताशाः । त्वत्पादपङ्कजरजो मृतदिग्भदेहा ।
मत्तग्रीभवन्तिमकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठसुर
ष्टं खलवेष्टिताङ्गा । गाढं दृहन्निगडकोटिनिष्टृष्टजंघाः
त्वन्नाम संवमनिशं मनुजाः स्मरन्तः । सद्यः स्वयं विगत
बंधमया भवन्ति ॥ ४२ ॥ मत्त द्विपेंद्रस्वगराजदवानलाहि
संग्रामवारिधि मद्योदरधन्वनोत्थं । तस्याशु नाशमुपयाति
भयं भियेव । यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥
स्तोत्रस्त्रजं तव जिनेन्द्रगुणैर्निबद्धां । भक्त्या मया रुचिरवर्ण
विचित्रपुष्पां । धत्ते जनो य इह कष्टगतामजस्रं । तं मान
तुं गमवशासमुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥ ❀ ॥ इति श्रीभक्ताभर
स्तोत्रम् ॥ ❀ ॥ २ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ अथ कल्याणमंदरस्तोत्रलि ॥

॥❀॥ कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि । भौता भयप्रद
मनिन्दितमंहपद्मं । संसारसागरनिमज्जदशे षजंतु । पोता
यमानमभिनय्य जिनेश्वरस्य ॥१॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमां
राशेः । स्तोत्रं सुविल्लूतमतिर्नविभुर्विधातुं । तीर्थेश्वरस्य
कमठस्यधूमकेतो । तस्याहमेष किलसंस्तवनं करिष्ये ॥२॥
युग्मं ॥ सामान्यतोपि तव वर्णयितुं स्वरूप । मस्माद्वशाः
कषमधौश भवत्यधौशाः । धृष्टोपि कोशिकशिश्युर्यदिवादि
वांधो । रूपं प्ररूपयति किं कलषर्म रश्मेः ॥३॥ मोहक्षयाद्
नुभवन्नपि नायमर्हो । नूनं गुणान्गुणयितुं न तव क्षमेत ।
कल्पान्तर्वातपयसः प्रकटोपि यस्या । स्मीयेत केन जलधे

ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोऽस्मि तवनाथजगदाशयो
 पि । कर्तुं स्ववंलसदसंख्यगुणाकरस्य । बालोऽपि किं न नि
 क्वाङ्गयुगं वितत्त्व । विस्तीर्णतां कथयति स्वधियांबुराशेः
 ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवेष्ट । वक्तुं कथं
 भवति तेषु सम्भावकाशः । ज्ञातातदेव मसमीक्षितकारिते
 यं । जलपतिं वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्ता
 मचिंत्यमहिमा जिनसंस्तवस्ते । नामापिपाति भवतो भव
 तो जगंति ॥ तौजातपोपहतपांथजनान्निदावे । प्रीणातिपद्म
 सरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्दन्ति नित्यं विभोऽशिश्वलौ
 भवंति । जंतोऽक्षणेन निवृत्ता अपिकर्षवंधाः । सदाऽभुजङ्गम
 मया इव मध्यभाग । मध्यागते वनशिखं प्रति निचंदनस्य ॥ ८ ॥
 सुच्यंत एव मनुजाः सहस्रजिनेन्द्र । रोद्रेरुपद्रवशतैस्त्वयि
 वीक्षितेऽपि । गोस्त्रामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे । चोरैरि
 वाशुपशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥ त्वंतारकोजिन कथं भवि
 नांत एव । त्वासुदहंति हृद्दयेन यदुत्तरंतः । अहादतिस्तरति
 यं जलमेषून । मंतर्गतस्य मरुतः सकलानुभावः ॥ १० ॥
 यस्मिन्हर प्रमृत्तयोऽपि हतप्रभावाः । सोऽपित्वया रति
 प्रतिः क्षपितः क्षणेन । विध्यापिताङ्गतभुजः प्रयसाय येन ।
 प्रीतं वा किं तदपि दुर्हरमादवेन ॥ ११ ॥ स्त्रामिनि तुल्य
 गरिमाणस्य प्रपन्ना । स्वांजंतवः कथमहो हृद्दये
 दधानाः । अमोदधिं संयुतरत्यंति लावणेन । चिंत्यो न
 हंतमहतां यदिवा प्रभव ॥ १२ ॥ ओषस्त्वया यदि विभो
 प्रथमं निरस्तो । ज्वास्तास्तदावतकथं किल कर्मचोराः ।
 पोषत्यसुखं यदिवा शिशिरापिलोके । नीलद्रुमानि विपिना

नि न किं हिमानो ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जिन सदा परमा
 त्मरूप । मन्त्रे पयंति हृदयां वृजकोशदेशे । पृतस्य निर्मल
 हृदये दिवा किमन्य । दक्षस्य संभविपदं ननु कर्त्तव्याया
 ॥ १४ ॥ ध्याना जिनेश भवतो भविनः क्षणेन । देहं विहाय
 परमात्मदशां व्रजति । तौवानलादपलभाय सुपास्यलोके ।
 चामोकरत्वमचिरा दिवधातुभेदाः ॥ १५ ॥ अन्त सदैव
 जिन वस्य विभाव्यसेत्वं ॥ भव्यै कथं तदपि नाशयसे शरीं
 रं । एतत्स्वरूपमय मध्यविवर्त्तिनो हि । यद्दिग्रहं प्रसमयं
 ति मङ्गानुभावाः ॥ १६ ॥ आत्मा मनोपि भिरयं त्वदभेदमुद्रा ।
 ध्यातो जिनं द्रुमवतीह भवत्यभावः । पानीयमप्यमृतमित्य
 मुचिं त्यमानं । किं नामनो विषविकारमपाकरोति ॥ १७ ॥
 स्वामेव बीततमसंपरवादिनोपि । नूनं विभो हरिहरादिवि
 वाप्रपन्नाः । किं काचकामलिभिरौ शसितोपि शंखो
 नो गृह्यते विविधवर्त्स विपर्ययेण ॥ १८ ॥ वष्पोपदेशसम
 ये सविषानुभावा । दास्तांजनो भवति ते तरुण्यशोक । अ
 षुद्धते दिनपतो समहोरुहोपि । किं वा विबोधमुपवाति
 न जीवलोकाः ॥ १९ ॥ चित्तं विभो कवमशास्त्रमुखं तमेव ।
 विष्यकपतत्त्वविरलासुरपुण्यदृष्टिः । त्वद्भोचरे सुमनसां यदि
 वासुनेग । गच्छंति नून मधएव हि वंशानि ॥ २० ॥ स्थाने
 गभीरतद्बोद्धिसंभवायाः । पीतूषतां तत्र गिरः समुद्री
 रयंति । पोत्वा यतः परमसंमदसंगभाषो । भव्याव्रजंति तर
 शाकजगामरत्वं ॥ २१ ॥ आमिन् मुदूरमवनय्य समुत्पतन्तो ।
 मन्त्रे वदंति सुखः सुरचामरीषाः । वक्तुं नतिं विदधते
 मुनिपुंगवाव । ते नूनमूर्धगतवः खलु युद्धभावाः ॥ २२ ॥

श्यामं गभीरगिरि सुज्जलहेमरत्न । सिंहासनसमिहभय
 शिखरिण्डनजां । आणोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै । शामी
 कराद्रिगिरिसीवनवांनुवाहं ॥ २३ ॥ उद्धृता तत्र गिति
 द्युतिमंखेन । नृपहृदयिगोकतर्कभूष । सानिध्यतो
 पि अदिता तत्र वीतराग । निरागतां व्रजति कोन सचेत
 नोपि ॥ २४ ॥ भोभो प्रसादमवधूय भजधुमेन । सागत्य
 निर्वृतिपुरी प्रति सार्धवाहं । एतन्निवेदयति देव जगत्
 तत्राय । सन्धे नदन्मभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्यो
 ति तेषु भवता भुवनेषु नाथ । तागान्वितोविधुरत्वं विरता
 धिक्कारः । सुक्ताकलापकलितोद्युक्षितातपत्र । व्याजातुविधा
 एततनुर्भूयमभ्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरित जगत्त्वयिपिनि
 तिन । कांतिप्रताप यशसामिव संचनेन । सागिहृमरज
 तप्रविनिर्मितिन । शालवयेण भगवन्प्रभितो विभासि ॥ २७ ॥
 दिव्यधजो जिन नमत्त्वित्वाधिपाना । सुस्तज्यरत्नरचिता
 नपि संश्लिषंधान् । पादोन्नयंति भक्तो यदिवा परत्र ।
 स्वत्सक्तमेव मनसो नमस्तपत्र ॥ २८ ॥ त्वं नाथ जगत्
 जगद्धेविपरात्सुखोपि । उत्तारयस्व सुमतो निजहृदयगना
 न् । यत्कं हि पायिष्यनिपस्य स्तम्भयैव । त्रिवं शिभोददमि
 कर्मविप्राकगन्धः ॥ २९ ॥ विमोक्षरोपि जमपातकदम्बो
 न्न । सिंगचारप्रकृतिरप्यनिपिः त्वमीश । अज्ञानरत्नपि
 सदैव त्वयंचरेव । ज्ञानेनैव हि स्तुति दिव्यविकाशहेतुः ॥
 ३० ॥ प्रणम्यारम्भेननर्मानि रजोगिरीषा । दन्तापितानि
 जहमेन एतेनगति । तानापि ते कथननाथ जता जतामी ।
 सुस्तज्यसाधिवत्संग परं दगात्मा ॥ ३१ ॥ उद्धृष्टं हृदयं तवो

धमदभूमीम । भृश्यत्तडिन्मुशलमांसलघोरधारं । दैत्येन सुक्त
मथदुस्तरवारिदधौ । तेनैव तस्य जिनदुस्तरवारिद्वयं ॥ ३२ ॥
ध्वस्तोर्द्विकेशविद्धताकातिमर्त्तप्रसृज्ज । प्रालंबभृद्भयदवक्तुविनि
र्यदग्निः । प्रेतव्रजः प्रतिभवंतमपौरितोयः । सोस्याभवत्प्र
तिभवं भवदुःखहेतु ॥ ३३ ॥ धन्यास्त एव भुवनाधिप ये वि
संध्य । माराधयन्ति विधिवद्विधितान्यकृत्या । भक्तुप्रलसत्यु
लकपक्ष्मलदेहदेशाः । प्रादद्वयंतव विभोभुवि जन्मभाजः ॥
३४ ॥ अस्मिन्पार भववारिनिधौ मुनीश । मन्येन मे अत्र
णगोचरतां गतोसि । आकर्णितेतु तव गोत्रप्रविवर्तने ।
किंवा विप्रद्विषधरी सविधंसमेति ॥ ३५ ॥ दन्तांतरेपि तव
प्रादयुगं न देव । मन्ये मया महितमौहितदानदक्षं । ते
नेह जन्मनि मुनीशपराभवानां । जातो निकेतन महं मयि
ताशयानां ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन । पूर्व
विभो सदादपि प्रविलोकितोसि । मर्माविधौ विधुरयन्तिहि
मामनर्थाः । प्रोदात्प्रबंधगतयः कथमन्यथै ते ॥ ३७ ॥
आकर्णितोपि महितोपि निरीक्षतोपि । नूनं नचेतसि म
या विष्टतोसिभक्ता । जातोस्मि तेन जनवांधवदुःखपालं ।
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंतिन भावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ
दुःखिजनवत्सल हे शरण्य । कारुण्यपुण्यवसते वशिनांवरे
ण्य । भक्त्यानेतेमयि महेश दयाविधाय । दुःखांकुरोद्भूतनत
त्यरतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणंशरणंशरण्य । मा
साद्यसादितरिपुप्रथितावदातं । त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधान
बंधो । बध्योस्मिचेद्भुवनपावनहाहतोस्मि ॥ ४० ॥ देवेन्द्रवंद
विदिताखिलवस्तुसार । संसारतारकविभोभुवनाधिनाथ ।

ब्राह्मण देव कृष्णाद्वद मांपुनौहि । सौदंतमद्यभयद व्यसनां
 वुराशे ॥ ४१ ॥ यद्यस्तिनाथ भवदं द्विसरोरुहाणां । भक्तोः
 फलं किमपि संतत संचितायाः । तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्यभू-
 याः । स्वामीत्वं मेव भवनेव भवांतरेपि ॥ ४१ ॥ इत्यं समा-
 हितधियो विधिवज्जिनेंद्र । सांद्रोल्लसत्युलक कंचुकितांग
 भागाः त्वद्विंब निर्मलमुखान्जवद्वलचया । ये संस्तवंतव विभो
 रचयंति भव्याः ॥ ४३ ॥ जननयनकुसुदचंद्र । प्रभासुराः स्वर्ग-
 संपदो भुक्ता । ते विगलितमलनिचया । अचिरान्मोक्षं प्रपद्यं-
 ते ॥ ४४ ॥ इति कल्याणमंदिरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ ॥

॥ अथ सेलुंजरासलि ॥ ४ ॥

॥ ॥ श्रीरिसहेसरपायनमी । आणीमनआणंद । रा-
 समणुं रलियामणो । सेलुंजै नो सुखकंद ॥ १ ॥ संवत्थारस-
 तोतरै । ऊवाधनेसरसूर । तिणसेलुंजमाहातमकियो ।
 शिलादित्यहजूर ॥ २ ॥ वीरजिणंदसमोसद्धा । सेलुंजै जपर-
 जेम । इन्द्रादिक आगलिकह्यो । सेलुंजै माहातमएम ॥ ३ ॥
 सेलुंजतोरथसारिणो । नहौठै तौरथकोय । स्वर्गसुखापाता-
 लमै । तौरथसगलाजोय ॥ ४ ॥ नामैनवनिधिसंपजै । दीठांडुरि-
 तपुलाय । भेटंतां भवभयटलै । सेवंतां सुखयाय ॥ ५ ॥ जंबूना-
 मैदीपए । दक्षिणभरतमजार । सोरठदेससुहामणो । ति-
 हौठै तौरथसार ॥ ६ ॥ ढालपहिलीः रामगिरी ॥ ७ ॥
 ॥ सेलुंजोनें श्रीपुंजरीक । सिद्धचेलकज्जंतहतौक । विमलाच-
 लनैकरूपरणाम । एसेलुंजै नाइक वीसनांम ॥ १ ॥ सुरगिर-
 नें महागिरपुन्यरास । श्रीपदपर्वतइंद्रप्रकास । महातीर

यपुरवैसुखकांम ॥ ए० २ ॥ सासतोपर्वतनें दृढशक्ति । सुक्ति
 निलोतिणकोजैभक्ति । पुष्पदंत महापदमसुठाम ए०
 ॥ ३ ॥ दृष्टोपीठसुभद्रकैलाश । पातालमूल अकर्मकता
 स । सर्वकामकीजै गुणग्राम ए० ॥ ४ ॥ औसेलुं जैनाइक
 बीसनाम । जपैजवैठाअपणैठांम । सेलुं जजावानोफललहै ।
 महावीरभगवंतइमकहै ॥ ५ ॥ ॥ दुहा ॥ ॥ सेलुं जोपहिलैअ
 रै । असीजोयणपरमाण । पिङ्गलो मूलजं चपण । ठडोसजोय
 णजाण ॥ १ ॥ सित्तरजोयणजाणवो । बीजै अरैविशाल । बौ
 सजोयणजं चोकह्यो । सुऊवंदणाबिकाल ॥ २ ॥ साठजोयण
 तीजैअरै । पिङ्गलो तीरथराय । सोलजोयण जं चोसही
 ध्यानधरुं चितलाय ॥ ३ ॥ पचांसजोयणपिङ्गलपण । चोथै
 अरै मजार । जं चो दसजोयण अचल । नितप्रणमेनरनार ॥
 ४ ॥ बारजोयणपंचम अरै । मूलतणै विशतार । दोजोयण
 जं चोअठै । सेलुं जतीरयसार ॥ ५ ॥ सातहायठडै अरै । पि
 ङ्गलो परबतएहा । जं चोहोस्वै सउधनुष । सासतोतीरथएहा
 ॥ ६ ॥ ॥ ढाल ॥ जिन वरसुं मेरोमनलीणो ॥ १ ॥ केवलन्या
 नौ प्रमुखतीर्षकर । अनंतसौधाइणठामरे । अनंतबली
 सौऊसै इणठामै । तिणकहं नितपरणामरे । सेलुं जैसाधुअनं
 तासीधा । सौऊसीबलोय अनंतरे । जिणसेलुं जतोरयनहौ भे
 ख्यो । तेगरभावासकहंतरे । सेलुं ० ॥ २ ॥ फागुणसुदि आठ
 मनै दिवसै । रिषभदेव सुखकाररे । रायणरूपसमोसखा
 खामो । पूरवनिनाणूं बाररे । से० ॥ ३ ॥ भरतपुलचैलोपूनम
 दिन । इणसेलुं जै गिरआबरै । पांचकोटिसूं पुं ढरौकसौधा
 तिष पुं ढरौक कहावरे से० ॥ ४ ॥ नमिदिनमिराजाविद्या ।

धर । वेवेकोद्गिसंघातरे । फागुणसुदिदशमीदिनसीधा । तिण
 प्रणसुं परभातरे । से० ॥ ५ ॥ चैवमासवदि चउदसनेंदिन
 नमिपुलौचोसठिरे । अणसणकरिसेलुं जै गिरजपर । एसज
 सीधाएकठुरे । से० ॥ ६ ॥ पोतरा प्रथमतीर्थं करकेरा । द्वावद
 नै वारिखिल्लरे । कातीसुदि पूनमदिनसीधा । दशकोडिसुं सु
 निशिल्लरे से० ॥ ७ ॥ पांचे पांजवदणगिरसीधा । नवनारद
 रिपराथरे । संवप्रजूनगया इहां सुगतै । आठेकरमखपायरे
 से० ॥ ८ ॥ नेमिविना तेवोसतीर्थं कर । समोसखा गिरइंग
 रे । अजितशांति तीर्थं करवेजं । रक्षाचोमासोरंगरे । से० ॥
 ९ ॥ सहससाधुपरिवार संघातै । थावच्चासुकशाधरे । पांचसै
 साधुसुं सेलगसुनिवर । सेलुं जै सिवसुखलाधरे से० ॥ १० ॥ असं
 ख्यातासुनिसेलुं जैसीधा । भरतेसरनै पाठरे । राम अनै भर
 तादिक सीधा । सुकिततणोएवाठरे । से० ॥ ११ ॥ जालिमयाली
 नै उवयाली । प्रमुख साधुनीकोटिरे । साधु अनंतासेलुं जै
 सीधा । प्रणसुं बे करजोडिरे से० १२ ॥ ॥ ॥ ढालचौपईनौ ॥
 ॥ ॥ सेलुं जैनाकडं सोलउद्धार । तेसुणिय्योसज्जको सुविचार
 सुणतां आणंदअंगनमाय । जनमजनमनापातिकजाय ॥ १ ॥
 ऋषभदेव अयोध्यापुरी । समवसुखाखामी हितकरी । भ
 रतगयो वंदणनैकाज । ए उददेसदियौ जिनराज ॥ २ ॥ जग
 मांहैमोटा अरिहंतदेव । चौसठ इंद्रकरैजसुसेव । तेहथीमो
 टोसंघकहाय । जेहनें प्रणमै जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेहथीमो
 टोसंघवीकह्यो । भरतसुणीनै मनगहगह्यो । भरतकहै ते
 किमपामियै । प्रभु कहै सैलुं जै जालाकियै ॥ ४ ॥ भरतकहै
 संघवीपद मुगज । ये आपोडं अंगजतुगज । इंद्रै आण्याअ

क्षतवास । प्रभु आपै संववीपदतास ॥ ५ ॥ इंद्रै तिणवेला
 ततकाल । भरत सुभद्राभिज्ज नैमाल । पहिरावीधरसंम
 प्रिया । सखरसो नानारथ आपिया ॥ ६ ॥ रिषभदेवनीप्र
 तिमावली । रत्नतणोदीधीमनरली । भरतै गणधर धरतेप्रि
 या । सांतिक पुष्टिक सड तिहांकिया ॥ ७ ॥ कंकोलीसुं की
 सडदेस । भरततेप्रायोसंघआसेस । आयोसंघ अयोध्यापुरौ
 प्रथमथकी रथजावांकरौ ॥ ८ ॥ संघ भगतकीधी अतिधरौ ।
 संघचलायो सेलुं जाभणी । गणधरवाह बलकेवली । सुनि
 वरकोप्रि साधेलीयावली ॥ ९ ॥ चक्रवर्त्तिनी सगलीरिद्ध ।
 भरतें साधेलीधीसिद्ध । हयगयरथपायक परवार । तेतो क
 हतानावैपार ॥ १० ॥ भरतसर संघवीकहवाय । मारगचै
 त्यउधरतोजाय । संघ आयो सेलुं जैपास । सड्डीनीपूगीमननी
 आस ॥ ११ ॥ नयणे निरख्योसेलुं जराय । मणिमाणकमो
 त्यांसुं बघाय । तिण ठामें रहौ महोद्धवकीयो । भरतें आ
 रणंद पुरवासियो ॥ १२ ॥ संघसेलुं जा ऊपर चढ्यो । फरसं
 तापातिक ऊरुपड्यो । केवल न्यानी पगला तिहां । प्रण
 आरायण रुंषठै जिहां ॥ १३ ॥ केवलन्यानीसनालनिमित्त ।
 ईशानेंद्र आणीसुपवित्त । मदीसेलुं जैसोहामणी । भरतेंदी
 ठीकौतुकभणी ॥ १४ ॥ गणधर देवतणें उपदेस । इंद्रै बलि
 दीधो आदेस । श्रीआदिनाथ तणोदेहरो । भरत करायो
 गिरिसेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग । रतन तणी
 प्रतिमा मनरंग । भरतै श्रीआदोसरतणी । प्रतिमाथापी
 सोहामणी ॥ १६ ॥ मरुदेवानी प्रतिमावली । माहीपूनिमथा
 पीरली । बाह्मीसुंदरीप्रमुखप्रासाद । भरतैथाप्पानवलैनाद

॥१८॥ इमञ्चनेक प्रतिमाप्रासाद । भरतकराया गुरुसुप्रसाद
भरतलणोपहिलो उद्धार । सगलोही जाणै संसार ॥ १८ ॥

॥ ॥ ॥ ढाल सिंधूजो आसाउरी ॥ ॥ ॥ भरत तणैपाटै
आठमै । दंढ वीरज थयो रायोजी । भरत तणीपर संघ

कीयो । सेलुंजसंघवी कहायो जी । सेलुंजेउद्धारसंभलो ।
सोलमोटा श्रीकारोजी । असंख्यात वीजावलि । तेहनकाङ्ग

अधिकारोजी । से० ॥१॥ चैत्यकरायो रूपातणो । सोनानो
विंवसारोजी । मूलगो विंवभंजारोयो । पश्चिमदिश तिणवा

रोजी । से० ॥३॥ सेलुंजैनी जावाकरी । सफलकियो अव
तारोजी । दंढवीरज राजातणो । एवीजो उद्धारो जी । से०

॥४॥ सोसागरोपमवितिक्रम्या । दंढवीरजथी जिवारोजी ।
ईशानेन्द्रकरावीयो । एलीजो उद्धारोजी । से० ॥५॥ चोषा

देवलोकनो धणी । माहेन्द्रनामउदारोजी । तिणसेलुंजैनी
करावीयो । एचोषो उद्धारोजी । से० ॥६॥ पांचमा देवलो

कनोधणी ब्रह्मेन्द्र समकित धारोजी । तिणसेलुंजैनी करा
वीयो । एपांचमो उद्धारोजी । से० ॥ ७ ॥ भुवनपती इन्द्र

नोकीयो । एठडो उद्धारोजी । चक्रवर्त्तिसगरतणोकीयो ।
एसातमो उद्धारोजी । से० ॥ ८ ॥ अभिनंदनपासै सुण्यो ।

सेलुंजनों अधिकारो जी । व्यंतर इन्द्र करावीयो । ए
आठमो उद्धारो जी । से० ॥ ९ ॥ चंद्र प्रभु खामिनोपो

तरो । चंद्रशेखरनाममलहारोजी । चंद्रजसराय करा
वीयो । ए नवमो उद्धारोजी । से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी

मुणीदेशना । शांतिनाथ सुत सुविचारोजी । चक्रधर राय
करावीयो । ए दशमो उद्धारोजी । से० ॥ ११ ॥ दशरथसुत

जगदीप्रतो । सुनि सुवत स्वामी वारो जी । श्रीरामचंद्र
करावीयो । ए इग्यारमो उद्धारोजी । से० ॥ १२ ॥ पांढव
कहै अम्हे पापीया । किम ठूटां मोरी मायोजी । कहै
कुंतो सेवुं जतणी । याव कीयां पाप जायोजी । से० ॥
१३ ॥ पांचे पांढव संघ करी । सेवुं ज भेद्यो अपारोजी ।
काष्ठचैत्य विंबलेपना । ए वारमो उद्धारोजी । से० ॥ १४ ॥
मन्मानी पाषाणनी । प्रतिमा सुंदरसरूपोजी । श्रीसेवुं
जैनो संघकरी । थापी सकल सरूपोजी । से० ॥ १५ ॥ अद्यो
त्तर सोवरसांगयां । विक्रमनृपथी निवारो जी । पोर वांढ
जावढ करावीयो । एतेरमो उद्धारोजी । से० ॥ १६ ॥ संवत
वारतिप्रोत्तरै । श्रीमालो सुविचारो जी । बाह्यदे सुहृत्
करावीयो । ए चवदमो उद्धारोजी । से० ॥ १७ ॥ संवततेरै
इकोत्तरै । देसलहर अधिकारोजी । समरै साहकरा
वीयो । ए पनरमो उद्धारो जी । से० ॥ १८ ॥ संवत पनर
सत्यासीयै । वैसाख वदि सुभ वारोजी । करमैप्रोसी करा
वीयो । एसोलमो उद्धारो जी । से० ॥ १९ ॥ संप्रतिकालैखोल
मो । ए वरतै उद्धारोजी । नितनितकीजै बंदना । पासीजै
भवपारोजी । से० ॥ २० ॥ दुहा । वलिसेवुं ज महातमकज्ज
सांभलो जिमठै तेम । सूरिधनेसरइमकहै । महावीरकह्यो ।
एम ॥ १ ॥ जेहवोतेहवोदरसणी । सेवुं जै पुजनीक । भग
वंतनो वेसवांदातां । लामज्जवैतहतीक ॥ २ ॥ श्रीसेवुं जा
ऊपरै । चैत्यकरावै जेह । दलपरमाण समोलहै । पलवोपम
सुखदेह ॥ ३ ॥ सेवुं ज ऊपर देहरो । नवोनीपावै कोय
जीणो द्वार करावतां । आठगुणो फलहोइ ॥ ४ ॥ चिर

ऊपरि गागरधरी । स्नात करावै नारि । चक्रवर्त्तिनी
 स्त्रीधई । सिवसुख पामेंसार ॥ ५ ॥ काती पूनिमसेलुंजे
 चटिनै करै उपवास । नारकीसौ सागर समो । करै करम
 नो नास ॥ ६ ॥ कातीपरबमोटो कह्यो । जिहां सीषा दश
 कोटि । ब्रह्म स्त्री बालकहत्या । पापघी नाषैढो ॥ ७ ॥ सह
 सलाख आवक भणी । भोजन पुन्यविशेष । सेलुंज साधु
 पट्टिलाभतां । अधिको तेहथीदेष ॥ ८ ॥ दाल ५ ॥
 धन २ अयवंती सुकुमालने एहनी ॥ सेलुंजगवां पाप ठूटी
 ये । लीजै आलोचणएमोजी । तपजपकीजै तिहां रही । तीर्थ
 कर कह्यो तेमोजी ॥ १ ॥ से० । जिणसोनानी चोरीकरी ।
 ए आलोचणतासोजी । बैलीदिन सेलुंजचटी । एककरै उम
 वासोजी ॥ २ ॥ से० । वस्तुतणी चोरीकरी । सात आविल
 सुधयायो जी । काती सातदिन तपकीयां । रतनहरण पाप
 जायोजी ॥ ३ ॥ से० । कांसी पीतल तांवा रजतनी । चोरी
 कीधी जेणो जी । सातदिवस पुरमदकरै । तो ठूटै गिरि
 एणोजी ॥ ४ ॥ से० । मोती प्रवाला मंगीया । जिण
 चोखा नरनारोजी । आविलकरि पूजाकरै । बिणटं
 क सुद आचारोजी ॥ ५ ॥ से० । धान प्राणी रसचोरीया । जे
 भेटै सिद्धबेलोजी । सेलुंजतलहटीसाधुनै । पडिलाभै सुध
 बित्तोजी ॥ ६ ॥ से० । वस्त्राभरणजिणैहखा । तेठूटैद्रुणमेलो
 जी । आदिनाथनौ पूजाकरै । ग्रंजठौबज्जवेलोजी ॥ ७ ॥ से०
 ॥ देवगुरुनो धनजहरै । तेसुद्धयायैएमोजी । अधिकोद्रव्य
 खरचै तिहां । पावपोषै बज्जमेमोजी ॥ ८ ॥ से० ॥ गायमेंसबो
 डामही । गजनोचोरखहारोजी । दौतेवस्तुतीरचै । अरिहं

तथ्यांनप्रकारौजी ॥ ८ से० ॥ पुस्तक देहरापारका । तिहां
 लिखै अणो नामोजौ । ठूटैठभासीतपकीयां । सामायक
 तिणठामोजौ ॥ १० से० ॥ कुंवारीपरिवाजका । सधव अ
 धव गुरु नारोजौ । व्रतभाजै तिणनेकह्यो । ठभासीतपसा
 रोजौ ॥ ११ से० ॥ गौ विप्रस्त्री बालकरिषी । एहनोघातक
 जेहोजौ । प्रतिमा आगे आलोवतां । ठूटैतपकरितेहोजौ ॥
 १२ से० ॥ * ॥ ढालइ कुंमरभलै आवीयोए ॥ एहनौ ॥ * ॥
 संप्रतिकालै सोलमोए । एवरतैठै उद्धार । सेवुंजयात्रा
 करुंए । सफलकरुं अवतार ॥ १ से० ॥ ठहरौ पालतांचा
 लीयैए । सेवुंजकरोवाट । से० । पालोताणै पङ्गचीयैए । संव
 मित्या बङ्गघाट ॥ २ से० ॥ ललितसरोवरपेघीयैए । बलिस
 तानीवाव । से० । तिहां विसरामोलौजीयैए । वदुनैचौतर
 आवि ॥ ३ से० ॥ पालोताणैपाजनीए । चढीयैउठिपरभात
 से० । सेवुंजनदीयसोहामणीए । दूरयकीदेखंत ॥ ४ से० ॥
 चढियै हिंगुलाजनें हट्टैए । कलिकुंठनमोयै पास । से० ।
 वारीमांहेपैसीयैए । आंखी अंगउल्लास ॥ ५ ॥ से० । मरुदे
 वीटूंकमनोहरुए । गजचढी मरुदेवी माय । से० । शांति
 नाथ जिनसोलमोए । प्रणमीजैतसुपाय । से० ॥ ६ ॥ वंसपोर
 वादौपरगदोए । सोमजीसाहमलहार । से० रूपजी संघवी ।
 करावीयोए । चौमुखमूलउद्धार । से० ॥ ७ ॥ चौमुखप्रतिमा
 रचौयैए । भमतीमांहिमलात्रिंब । पांचेपांठवपजियै ए ।
 अदभुतआदिप्रलंब । से० ॥ ८ ॥ खरतरवसहीषांतिसंए । विंब
 जुहारुंअनेक । से० । नेमनाबचवरीनसुंए । ढालुंअलगउदे
 ग । से० ॥ ९ ॥ घरमदुवारमांहेनौसरुंए । कुगतिकरुं अ

॥३॥ अथ श्रीसम्भेतशिखरजीको रासलिख्यते ॥३॥ वांदी
 वीसजिनेसरु रचस्युं रासरसाल । तौरथ शिषरसमेतनी
 महिमा बढौ विसाल ॥१॥ मोटो तौरथ महियलै । प्रगद्यो
 शिखर समेत । कोटाकोटौ मुनिवरु सिद्धि गए इहखेत ॥२॥
 तौरथ शिखरसमेतए । फरस्यां पापपुलाय । भविजनभेटो
 भावसुं । ज्युं सुखसंपद याव ॥ ३ ॥ महिमा शिखरसमेत
 नी । कहिनसकौ कविकोय । गुण अनंत भगवंतना । तिमए
 तौरथ होय ॥४॥ ढाल १॥ चौपईनी ॥३॥ गिरवर शिखर
 समोनहीकोय । एहनीमहिमासबजगहोय । वीसजिनेसर
 सुगतैगया । मुनिजन ध्यानधरीनै रछ्या ॥१॥ प्रथम अयो
 ध्यानगरी भली । तिहां जितशत्रु नरेसर बली । विजया
 राणौनै सुतजाण । अजित कुमार सङ्गगुणनौषाण ॥ २ ॥
 जसुइं द्वादिक सेवा करै । इंद्राणी अतिउल्लवधरै । तीर्थ
 करनी पदवौ लही । अंतर अरिजिण साध्या सही ॥ ३ ॥
 अनुक्रम इमभोगवतां भोग । पुन्यप्रसाद मिलयो सङ्गजोग
 अवसरदैसंबत्सर दान । संजमलीनो आपसुजान ॥ ४ ॥
 कर्मपपावौ पाष्यो ग्यान । केवलदर्शनलह्योप्रधान । विचरै
 पुहवौ मंजल मांहि । भव्यजौव प्रतिबोधन ताहि ॥ ५ ॥
 सिंह सेनादिक गणधरभवा । पंचाणवै संख्या सङ्ग थया ।
 एकलाख मुनिवर परिवर्या । आवक आवकणी वङ्गकस्या
 ॥ ६ ॥ तीन लाख बलि तीस हजार । साधविगं जाणो
 सुविचार । आवक सहस अट्टाणुं सही । दोय लाखसंख्या
 गइ गही ॥ ७ ॥ पांच लाख पेंतालीस हजार । आव
 कणी संख्या सुविचार । वङ्गतर लाखपूरवनो आव । कंच

नवरण सरौरसुहाय ॥ ८ ॥ साढी चारसै धनुष सरौर ।
मानलह्यो प्रभुगुणगंभीर । गजलांठन प्रभुजीनो जाण । अ
मृतसमजसुमीठी वाण ॥ ९ ॥ अनुक्रम प्रभुजी सिखरसमेत ।
गिरवर पर आव्या निजहेत । सहस सुनिखरनें परिवार ।
मासखमण अणसण कर सार ॥ १० ॥ चैली सुदि पूनिमने
दिने । सुक्तिगण प्रभु तौरथद्वये । भूचर खेचर किंनरसुरौ
इंद्रादिक सज्ज उद्वव करी ॥ ११ ॥ थायो तीरथ मोटो
महो । अट्टाई महोद्ववकियोसहो । एतीरथनो जावाकरै ।
ते भवियणअल्लयसुखलहै ॥ १२ ॥ दुहा ॥ ॥ ॥ औसंभव जिन
राजंजी । गण्डहानिर्वाण । सिखरसमेतसुहामणो । प्रगखौ
तीरथ जाण ॥ १३ ॥ ॥ सुगुणसनेही साजनश्रीसीमंधरखाम
एहनो ॥ ॥ सावथी नगरी भरी धनसंपदसज्जयोक्त । जैता
रीनप्रराजकरै सुखियासबलोका सेनाराणो मीठी वाणोगुण
नोखांख । जेहनें सुत श्रीसंभवजनव्या सकल सुजाण ॥ १४ ॥
कंचनवरणसरौरमनोहर प्रभुनोजाण । लंठन अश्वतणो
सोहै प्रभुनो परधान । साठलाख पूरबनो प्रभुनो आयुप्रमा
ण । धनुख चारसैउच्चपणै प्रभुदेहवखाण ॥ १५ ॥ एकसो दोय
संख्याये प्रभुने गणधर होय । दोयलाखसुनिजेहनेगुणवर ।
ताजगजोय । तीन लाख अमणोवलौ ऊपर सहसठतीस ।
भूमंज्रल विचरै प्रभु श्रीसंभवजगदीस ॥ १६ ॥ तीन लाखवलि
सहसवयाणुं आवक लोक । पटलख सहस ठतीमथावकणी
संख्यायोक्त । विमुख यक्ष अरु दुरितादेवी सानिधकार ।
विचरंतां प्रभु सकलसंघमे जयकार ॥ १७ ॥ सहस अमण
परिवारै प्रभुजी सिखर समेत । एकमास संलेखकीनी

निज पटहेत । इण गिर ऊपर पायो प्रभुजी पदनिरवाण ।
 तोरथमहिमां महियल मोटी पदय सुजाण ॥ ५ ॥ ॥
 दुहा ॥ अभिनंदन जिनवंदियै । पायोपद निरवाण ।
 शिखरसमेत सुहामणो । भेटो तीर्थसुजाण ॥ १ ॥ सहस
 अमणमुं सुकसंजमधरो एहनी ॥ ॥ नगरी अजोध्या
 सुरपुरि समभली । संवरराजा सोहैमनरली । सिद्धार्थी
 राणी तसुनंदए । अभिनंदन जिन प्रगश्चाचंदए (उल्लाखो)
 चंदए सोवन वरणसोहै धनुष साढीतोनसै । सुंदर शरीर
 प्रमाण द्युतिकर कपिलंठन तेनित बसै । पूर्वलाख पचास
 आयु गणधरइकसो सोलए । तोनलाख मुनि ठलाष आर्यी
 सहसबिसत्सोलए ॥ १ ॥ [चाल] सहसअठ्ठासौं दोलख
 आइनी । संख्याचौलपसत्तावीसनी । आवकण्यारी संख्याजा
 खए । नायकवक्षकालिकाठाणए (उल्लाखो) ठाणए शिखरस
 मेत ऊपरमारुएकसंलेखणा । इकसहससाधू परवछा प्रभु
 मुक्ति पडबे पेयणा । इमहोअयोध्या मेघनरवर देवी मात
 सुमंगला । श्रीसुमति जिनवर भएनंदन सदाहो तसुमंगला
 (चाल) सोवनवर्णधनुषतसुतोनसै । लंठनकौचसोहैसुभगेहसै
 पूरवलाखपचासो आऊए । इकसौ गणधरगुणगणभाऊए
 (उल्लाखो) भाउण मुनि बिणलाख सोहैसहसवीस प्रमाणए
 पकलवत्तोस हजारसाछी आवक दोव लक्षजाणए । संख्या
 इकसौ सहस ऊपर आवकाइम आनीयै । प्रणलाखसोले
 सत्सत्तुं वरमजाकालौमोनीबे । श्रीशिखर ऊपर सातसंख्या
 सहससाधुपुरंगण करमासकौसंलेखणाप्रभुमुक्तिपुहता वंगए
 (चाल) इमकोसबौ बगरीतातए । वरनूतात सुरौमासातए

पदमप्रभुतसु अंगजनाथए । लंठनकमलतणो सुभहाथए ।
 (उल्लालो) हाथएधनुखप्रमाणपूराअढाईसैतनुकहौ । तीन
 लाख पूरबथितकहावैएकसोगणभरलहौ । लखतीनतीसह
 जारसाधू वीससहसलखचारए । साधवीदोयलख सहसठि
 हंतर आवकसंख्यासारए । (चाल) पांचलाख बलि पांच
 हजारए । आवकाण्यांरौ संख्यासारए । कुसुमदेवस्यामादे
 वीकहौ । लालवरण तनुसोहैप्रभुसहौ । (उल्लालो) सोहए
 सिखरसमेतऊपर आठसैबिणमुनिवरा । करमाससलेखन
 प्रभुनौ सेवकरहैसुरवरा । श्रीपदमप्रभुजो मुक्तिपहुता ।
 गिरशिखर सहिमाभई । तमुचरणपंकज बालबंदै हृदय
 आणंद गहगहौ ॥ दुहा ॥ श्रीसुपासजिणंदना । पदपंकज
 आराम । भविजन भ्रमरमुसेवतां । पामे बंठितकाम ॥१॥
 ॥ श्रीसीमंधर साहिवा ए चाल ॥ ॥ नगर वणारसौ
 सोभता । राजातात प्रतिष्ठलालरे । देवीयधवीमातजौ । ख
 स्तिकलंठनसिष्ठलालरे ॥१॥ श्रीसुपार्श्वजिणंदजी । वीसपूर
 बलख आयुलालरे । धनुषदोयसैदेहनो । कंचनवरणसुहाय
 लालरे ॥२॥ श्री० ॥ पंचाणवैगणघर कछा । साधूबिणलाख
 होयलालरे । चारलाखतीस ऊपरै । सहससाधवियां जो
 यलालरे ॥ ३ ॥ श्री० ॥ सहससतावनलक्षनी । आवकसंख्या
 यायलालरे । चारलाखवलीवणवै । सहसआवकणीभा
 यलालरे ॥ ४ ॥ श्री० ॥ मातंगयक्षसांतासुरी । पांचसै मुनि
 पदवारलालरे । करिअणसणसुगतैगया । नामलियांनिस्तार
 लालरे ॥ ५ ॥ श्रीसु० ॥ नगर चंद्रपुरइणपरै । राजातात
 सहसलालरे । देवो मातालक्षणा । सुतचंद्रा प्रभुवेयला

लरे ॥ ६ ॥ श्रीचंद्राप्रभु वंदिये । चंद्रवरणतनुजेहलाल
 रे । लंछनचंद्रतणोभलो । धनुषदोढसै देहलालरे ॥ ७ ॥
 श्रीचं० ॥ भविककमल प्रतिगोधता । सेवैसुरनरयक्षलालरे ।
 दसलाखपूरव आऊषो । तेणवैगणधर दक्षलालरे ॥ ८ ॥
 श्रीचं० ॥ दोयलखसंहसपचाणवै । सुनिअमणी तोनलक्षला
 लरे । असीसहस संख्याकहौ आवकवलि दोयलक्षलालरे ॥
 ९ ॥ श्रीचं० ॥ लाखपचासंऊपरवली । आविकाचउलक्षधार
 लालरे । सहसइकाणवैऊपरै । प्रभुजीनोपरिवारलालरे ॥
 १० ॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव भृकुटीसुरी । सहससाधुपरवार
 लालरे । संलेखनइकमांसनी । पुहतामुक्तिमजारलालरे ॥
 ११ ॥ श्रीचं० ॥ दुहा ॥ जय श्रीसुविधजिनेसह । जगपति
 दीनदयाल । संसेतसिखरमंगतेगया । भविजनकेप्रतिपाल ॥
 दाल ॥ ॥ श्रीविमलाचलसिरतिलोएहनी ॥ ॥ नयरकाकं
 दीनरंपति । एमपितासुग्रीव । देवीरामामातासुत । भएसुवि
 धभुभजौव ॥ १॥ रंजंतवरणसमतनुंसत । धनुष एकपरिमाण
 दोय लाख पूरबंकछो । प्रभुनो आयुसुजाण ॥ ३॥ अठ्ठासौ
 संख्याभए । गणधरपरम प्रधान । लेखदो सुनि विंशतिसह
 स । इकलखअमणीजाण ॥ ४॥ दोयलक्ष आवककछा । अरु
 गुणतीसहजार । एकत्तरचौलखसहस । आवकणीसुविचार
 ॥ ५॥ सुरीसुतारासुरअजित । श्रीसंधसानिधंकार । सहससा
 धुपरवारसु । आपसिखरसुचार ॥ ६ ॥ माससंलेखणकर
 प्रभु । सुक्तिगणदहठोर । तीरयमहिमामहियलै । प्रगटीच्या
 बंडर ॥ ७ ॥ इमेहीजशीतलनायनो । हिवसुगणज्यो अधि
 कार । भहिलपुरहंदरयपिता । मातनंदासुखकार ॥ ८ ॥

लंठनसुभश्रीवधूनी । अशौतलजिनचंद । कंचनवरणनेऊध
 नुष । मानसरीरअमंद ॥ १ ॥ एकलाख पूरवकह्यो । प्रभुनो
 आयुप्रमाण । इक्यासी गणधरकह्या । सुनिद्रकलाखसुजाण
 ॥ १० ॥ एकलाख चालीससहस । अमणीसंख्याऊर । सहस
 तथासीदोयलख । आवकसंख्याजोर ॥ ११ ॥ सहसअठावन
 लक्षचौ । आवकणीसुविचार । देवी असोकाबह्मयक्ष । सऊ
 संघसानिधकार ॥ १२ ॥ सिखरसमेतसहस्रएक । साधूनेपरि
 वार । सुक्तिगण प्रभुमासकी । संलेखनकरसार ॥ १३ ॥ ॥
 ढाल ॥ अंग२ संप्रतिसाचौ राजा एहनी ॥ ॥ ॥ सिंहपुरी
 नगरी तिहाराजा । विष्णुनरेसरतातजी । कंचनवरण अथां
 सपभूजी । उपज्याविष्णुसुमातजी ॥ १ ॥ नमोरे२ अवि
 भुवनराजा । खड्गलंठन प्रभुपायजी । धनुष असीदेहमान
 जौशसि । लाख वरसनो आयुजौ ॥ २ न० ॥ ॥ गणधर
 वज्रतर सऊस नौरासी । मुनीअमणी तीनलक्षजी । तीनसह
 सवलिसहसगुण्यासी । आवकपुणदोयलकवजी ॥ ३ नमो० ॥
 अक्षतालोस सहस वलिचौलख । आविका जाणो सारजी ।
 जक्ष असरसुरी मानवीजांलौ । श्रीसंघसानिधकारजी ॥ ४ ॥
 सहसमुनीसरनै परिवारै । प्रभुजी सिखरसमेतजी । मास
 संलेखनकर मनुपुहता । सुक्तिमहिल सुखहेतजी ॥ ५ न० ॥
 हिवकंपिलपुर तातभूपति । श्रीछतवर्म सुमातजी । स्यामा
 देवी अंगवउपना । विमलनाथजगतातजी ॥ ६ न० ॥ सूक
 रलंठनसोदनकाथा । साठधनुष देहीमानजौ । साठलाखव
 ठ्ठरनौ आयु । शिष्य रुतावनजानजी ॥ ७ न० ॥ साठसहस
 मनिअक्षसदइकलख । अमणीआवकजांणजी । आठसहस

दोयलक्षत्राविका । चौलक्षसंख्या आंणजो ॥ ८ न० ॥ ष
 रमुखसुरवरविदितादेवौ । प्रभुजीशिवरसमेतजौ । षटहजा
 रसाधुपरिवारै । सुक्तिगरमुखहेतजौ ॥ ९ न० ॥ नगरीनाम
 अजोध्यानरवर । सिंहसेन जगसारजौ । सुजसामाततिणै सु
 तजायो । प्रभुजीअनंतकुमारजौ ॥ १० न० ॥ लंठनश्येनसो
 वनसमकाया । धनुषपचासप्रमाणजौ । तीसलाखवठ्ठरनो
 आयु । गणधर पचवीस आंणजौ ॥ ११ न० ॥ ठासडसहससु
 नौसरसोहै । वासडअमणीहजारजौ । ठहजारलाख दोय
 आंक । आवकणीइमधारजौ ॥ १२ न० ॥ चारलाखवलि
 चवदहजारए । अंकुसादेवीहोदजी । पातालचक्र ओरंधकै
 सानिध । कारौनितप्रतिजोयजौ ॥ १३ न० ॥ आठसैसुनिव
 रनैपरिवारै । शिवरसमेतप्रधानजौ । माससंलेखनकरगिर
 ऊपर । पुहतापदनिर्वाणजौ ॥ १४ न० ॥ ॥ दहा ॥ ॥ अ
 संधर्मजिणेसर । पुहतापदनिर्वाण । शिवरसमेत गिरंदपर
 नमो २ जगभाण १ ॥ ॥ जगतगुरुविश्लानंदनजौ एहनी
 ॥ ॥ रत्नपुरीनगरोधणीजौ । भानुरायसुजाण । राणीसुव्रत
 मातनेजौ । धर्मनाथगुणपाण ॥ १ ॥ जगतपतिधर्मजिनेसरसा
 र । धनुषपेतालौसतनुकह्यो जौ । वज्रलंठनसुखकार ॥ २ ज० ॥
 चोतीरुगणधरसुनिकह्यो जौ । चौसडसहसप्रमाण । अमणी
 वासतसहससुंजौ । आवकदोयलक्षमान ॥ ३ ज० ॥ च्या
 रसहसवाल ऊपरां जौ । चौलख एकहजार । आवकणीसं
 ख्याकहौजौ । दसलक्ष आयुविचार ॥ ४ ज० ॥ किंनरसुर
 यत्नासुरीजौ । एकसहसप्रिवार । समेत शिवरमुगतैगया
 जौ । वांदूवारहजार ॥ ५ ज० ॥ हथणापुरविश्वसेननाजौ ।

अचिरामातउदार । शांतिजिनेसरजनमियाजी । विभवन
 जय २ कार ॥ ६ ॥ [जगतपतिशांति जिनेसरसार] ॥
 मृगलान्ठन सोवनसमोजी । देहौघनुषचालीस । आयुवर
 षड्कलाखनोजी । ठत्तीसगणधरसीस ॥ ७ ज० ॥ वासंढ
 सहसमुनिठसैजी । इगसठअमणी हजार । दोयलाखअव
 ककह्या जी । ऊपरनेऊहजार ॥ ८ ज० ॥ सहसबयाणु आ
 विका जी । तीनलाख परिवार । गरुडयक्षदेवीसुरी जी ।
 श्रीसंघसानिधकार ॥ ९ ज० ॥ नवसैमुनिपरवारसु जी ।
 आया शिखर समेत । मासषमणकर मुक्तिमै जी । मुहता
 निजपदहेत ॥ १० ज० ॥ असेहथिणा पुरमलोनी । राजा
 सूरसुतात । कुंथुनाथ जिनजनमीयाजी । कंचनतंतुश्रीमा
 त ॥ ११ (जगतपति कुंथुजिनेसरसार) ॥ ठागलंठन पेंताली
 सनोजी । घनुषदेहनो मान । सहस पंचाणव वरपनो
 जी । आयुप्रभुनोजान ॥ १२ ज० ॥ पेंतौसगणधरदौपंताजी ।
 साठसहसमुनि जान । ठसै साठसहसबलीजी । अमणी
 संख्यामान ॥ १३ ज० ॥ सहसगुणियासीलक्षनो जी । आवक
 संख्याहोय । सहस दूब्यासौ तीन लाखनी जी । आविका
 संख्याजोय ॥ १४ ज० ॥ सातसै साधूपरवद्याजी । देवी
 बलागंधर्व । कुंथुनाथसुगतैगया जी । माससंलेखणसर्व ॥
 १५ ज० ॥ ॥ दुहा ॥ ॥ श्रीअरिनाथ जिण्दिनो ।
 कहसुं अब अधिकार । श्रीतामुणज्योप्रेमधर । धास्य
 लाभअपार ॥ १ ॥ देसीविठियानो अरेलाला । श्रीजिन
 कुशल सूरौ सरु ॥ इसदेशीमें ॥ अरेलाला । श्रीअरिनाथ
 जिनेसरु । जिहां नगरी अयोध्याचंदरेलाला । तातड

दर्शनमातजी । नंदादेवीना नंदरेलाला ॥ २ ॥ श्री अ० ॥
लंठननंदावर्त्तनो । वीसवनुषदेहीनो मानरेलाला । कंचन
वरणसुहामणो । आयुसहस चौससी प्रमाणरेलाला ॥ ३ ॥
श्री० ॥ इकलाख आवकऊपरै । वली संख्या अधिकीजाण
रेलाला । सहसवड्छतरतीननी । लक्षआविका संख्या आण
रेलाला ॥ ४ ॥ श्री० ॥ देवदेवी सानिधकरै । इकसहस मुनिपर
वाररेलाला । मुक्तिगणद्वारगिरप्रभु । करमाससंलेखन
साररेलाला ॥ ५ ॥ श्री० ॥ मिथिलानगरी प्रभावती । मात
पिताशोकभरायरेलाला । लंठनकलस पचीसनो । वपुधनु
षसरे वनसमकायरेलाला ॥ ६ ॥ (श्रीमल्लिनाथ जिनेसरू) ॥ सह
सपचावन वर्षनी । धित गणधरअट्ठावीसररेलाला । भविकक
मलप्रतिषोधता । जगनायकश्रीजगदीसररेलाला ॥ ७ ॥ श्रीम०
चालीस सहसमुनिसरू । अमणीपचावनसहसररेलाला ।
सहसवयासौलक्षनो । आवकनी संख्यासाररेलाला ॥ ८ ॥
श्रीम० ॥ आविकासित्तरसहसनो । लक्षतीनसंख्या सुविचार
रेलाला । सहस मुनौपरिवारस्य । गणमुक्तिसंलेखणधार
रेलाला । श्रीम० ॥ राजग्रहीराजा पिता । सुग्रीवपद्मावती
मातररेलाला । श्यामवरण तनुशोभतो । जे कपिल लंठनवि
ख्यातररेलाला ॥ ९ ॥ (श्रीमुनिसुव्रतखामिजौ) ॥ धनुषवीसदेहो
तणो । आयुवह्वरत्तीसहजाररेलाला । अष्टादशगणधरथ
या । तीससहसमूनौसरसाररेलाला ॥ १० ॥ श्रीम० ॥ अमणी
सहस पचीसनो । संख्यावड्छतर हजाररे लाला । इकलक्ष
ऊपरि आविका । तीन लक्ष पचास हजाररे लाला ॥ ११ ॥
श्रीमुनि० ॥ नरयसखदेवी मली । नर दत्ता सानिधकाररे

लाला । संहस सुनिपरिवारसे । गर सुक्ति महल सुख
 सार रे लाला ॥ १२ ॥ श्री० ॥ विजयंदिता विप्रामात जौ ।
 सोवन सम श्रीनमिनाथ रे लाला । नीलकमल लंठन
 कह्यो । वपुधनुख पनर आयुसाथरे लाला ॥ १३ ॥ [श्रीन
 मिनाथ, जिने सह] ॥ दसहज्जार वरस तणो । गणधर
 सित्तर परमाण रे लाला । बीस इकतालोस संहस
 क्रम । साधु साधवै संख्या जाणरे लाला ॥ १४ ॥ श्रीनमि॥
 इकलख सित्तर सहसनी । तीनलख संहस बलि होयरे
 लाला । आवक संख्या आविका । अनुक्रमकरि संख्या जोय
 रे लाला ॥ १५ ॥ श्री० ॥ विचरंता भूमंलै । आया सिखर
 समेत मज्जार रे लाला । अकुटो यत्न गंधारी सुरौ । इक
 संहससुनि परिवाररे लाला ॥ १६ ॥ श्री० दुहा ॥ ॥ परमे
 सर ओ पासनौ । महिमा जगति विख्यात । सिखर सिरो
 मणि सहसफण । जगजीवनजगतातं ॥ १७ ॥ ॥ ढाल ॥ आद
 रजोव ज्ञामागुण आदर एकनौ ॥ ॥ जय जय परमपुरुष
 पुरषोत्तम । पारस पारस नाथ जौ । सांवरियासाहिव जग
 नायक । नाम अनेक विख्यात जौ ॥ १८ ॥ जय२ सिखर समेत
 सिरोमणि । ओसांवरियापास जौ । ध्यावै सेवै जे नर
 तेहनी । पूरै वंछित आसजो ॥ १९ ॥ जय०२ ॥ कासीदेस वणा
 रसिनगरो । श्रीअखसेन नरिंद जौ । वामा माता जगवि
 ख्याता । तेहना सुत सुख कंदजी ॥ २० ॥ जय०२ । पन्नगलंठ
 नीलवरणठवि । देही शुभ नवहाय जौ । आय् इक सो
 वरस प्रमाणे । गणधर दस प्रभु साधवौ ॥ २१ ॥ जय०२ ॥ सोल
 संहससुनिधर अरुअमणी । कही आंतीस हज्जार जौ ।

॥ अथ गौतम रास लिख्यते ॥

॥ ॐ ॥ वीरजिणेसर चरण कमल कमलाकथ वासो ।

पणमविप्रभणिसु सामि खाल गोचम गुरुरासो । मणतणु

वयले एकंतकरवि निसुणु भो भविता । जिमनिवसै तुम

देह गेह गुण गण गह गहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरभरह

खित्त खोणी तल मंण । मगहदेस सेणियनरेस रिउदह

बलखंण । धणवर गुब्बरगामनाम जिहां गुणगलसज्जा ।

विप्पदसै वसु भूइ तत्थ तत्थ पुहवी भज्जा ॥ २ ॥ ताणपुत्त

सिरिइंद भूय भूवल्लयपसिद्धो । चवदह विज्जा विबहूव

नारी रसलुद्धो । विनय विवेक विचार सारगुण गणह

मनोहर । सात हाय सुप्रमाणदेह खूवहि रंभावर ॥ ३ ॥

नयणवयण करचरण जणवि पंकजलपादिय । तेजहितारा

चंद सूरि आकास भमादिय । खूवहि मयल अनंग करवि

मेत्थो निरघादिय । धीरम मेरु गंभीर सिंधु खंगम न्य

चादिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम खूव जास जणअपै किंचिय

एकाकी किल भौत्त इत्थ गुण मेत्थया संघिय । अहवानिज

यपुव जल जिणवर इण अंचिय । रंभर पलमा गवरि

गंगरतिहा विधि कंचिय ॥ ५ ॥ नय वुध नय गुर कविण

कोय जसु आगल रहियो । पंचरुयां गुण पालठावहीं द्विपर

वरियो । करय निरंतर यत्त करम मिथ्या मति मोहिय ।

अणचल होस्ये चरमनाणदंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ (वस्तु)

॥ ॐ ॥ जंबूदीव जंबूदीव भरह वासंभि । खोणीतल मंण ।

मगह देस सेणिय नरेसर । वरगुब्बरगाम तिहां । विप्प

वसै वसभूइ । सुंदर तत्थ पुहवि भज्जा । सयलगुणगणख

निहाण । ताम्बपुस्तविज्जानिलो । गोयमअतिहसुअस ॥७॥
 (भास) ॥ चरम जियोसर केवलगांणी । चोविहसंघ पइहा
 जाणी । पावा पुरसामी संपत्तो । चउविह देव निकायहिं
 जत्तो ॥८॥ देवहिसमवसरणतिहांकीजै । जिणदीठै मिथ्या
 संत ठैजै । बिभुवनगुरु सिंहासन बैठा । ततपिणमोहदि
 गंतपइहा ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मदपूरा । जायै नाठा
 जिम दिनचोरा । देवदुंदुभीआगासे वाजी । धरमनरेसर
 आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसम वृष्टि विरचै तिहां देवा ।
 चउसठइंद्रजमंगिसेवा । चामरठवसिरो करिसोहै । रुव
 हिजिणवर जगसज्ज मोहै ॥ ११ ॥ उपसम रसभर वरवर
 संता । जोजनवाणि वखाण करंता । जाणविबुद्धमान जिण
 पाया । सुरनरकिन्नर आवइराया ॥ १२ ॥ कंत समोहिय
 जलहल कंता । गयणविमाणहिरण्यराजंता । पेखवि इंद
 भूइ मनचिंते । सुरआवे अम जज्ज ज्वंते ॥ १३ ॥ तीरतरं
 णक जिमते वज्जिता । समव सरण पुहता गहगहिता । तो
 अभिमाने गोयमजंपै । इण अवसर कोपैतयुकंपै ॥ १४ ॥
 मूढा लोक अजाणुं बोलै । सुर जाणंता इम कांड मोलै ।
 मो आगल कोइ जाण भली जै । मेरु अवर किम ओपम
 दीजै ॥ १५ ॥ (वस्तु) वीर जिणवर वीरजिणवर नांण संपन्न
 पावापुरसुरमहिय । पत्तनाहसंसारतारण । तिहिं देवइनि
 अहिय । समवसरण वज्ज सुक्क कारण । जिणवरजगउज्जो
 यकरे । तेजहिकर दिनकार सिंहासणसामी ठव्यो । ऊठ
 तो जयजय कार ॥ १६ ॥ (भास) तोचढियो घणमाण गजै ।
 इंद भूखभूय देवतो ॥ ऊंकारोकरसंचरिय । कवससु जिण

वरदेवतो ॥ ओजन भूमि समो सरण । पेशवि प्रथमारं
 भतो ॥ दहदिस देखै विबुधवधू । आवंती सुररंभतो ॥ १७ ॥
 मणिमय तोरण दंष्ट्र ध्वज । कोसीसै नवघाटतो ॥ वयरविव
 र्जित जंतुगण प्रातीहारिज आठतो ॥ सुर नर किन्नर अ
 सुरवर । इंद्र इंद्राणी रायतो ॥ चित्तचमकिय चिंतवए ।
 सेवंतां प्रमुपायतो ॥ १८ ॥ सहस किरण सांमौवौरजिण ।
 पेशविरूप विसालतो ॥ एहअचंभव संभवए । साचो एइन्द्र
 जालतो ॥ तोबोलावइ विजगगुरु । इंद्रभूयनामेणतो ॥
 औसुख संसा सामि सवे । फेडै वेदपणतो ॥ १९ ॥ मान
 मेल मदठेल करे । भगतहिं नाथ्यो सीसतो ॥ पंचसयांसुं
 ब्रतलियोए । गोयम पहिलो सीसतो ॥ बंधवसंजम सुणवि
 करे । अगन भूइ आवेयतो ॥ नामलेई आभास करे । तेपि
 णप्रतिबोधेयतो ॥ २० ॥ इण अनुक्रमगणहररयण । थाप्पा
 वीर इग्यारतो ॥ तोउपदेसे भुवन गुरु । संयमसुं ब्रतवार
 तो ॥ विद्धंउपवासं पारणोए । आपणपै विहरंततो ॥ गोयम
 संयम जगसयल । जय जय कार करंत तो ॥ २१ ॥ [वस्तु]
 ॥ ॥ इंद्रभूइ चढियोबहुमान । हुंकारोकरिकंपतो । सम
 वसरण पडतो तुरंततो ॥ जेहसंसा सामिसवे । चरमनाह
 फेडै फुरंततो ॥ बोधबौजसंजायमने । गोयमभवहि विरत्त ॥
 दिक्खलेईसिंख्यासही । गणहरपयसंपत्त ॥ २२ ॥ [भास] ॥ ॥
 आजहुओ सुविहाण । आजपचेलम पुण्यभरो । दीठा गोय
 मसामि । जोनियनयणेअमियऊरो ॥ समवसरणमच्छार ।
 जेजे संसा ऊपजै ए । तेते पर उपगार । कारण पूछै सुनिप
 वरो ॥ २३ ॥ जीहां दीजै दीख । तीहां केवल उपजै ए ।

आपकने अण्डत । गोयम दोजै दान इस । गुरु उपर गुरु
भक्ति । सामी गोयम उपनिय । अणचल केवल नाण । राग
ज राखै रंगभरे ॥ २४ ॥ जो अष्टापद सैल । वंदै चढ चउ
वीस जिण । आतम लवधि वसेण । चरम सरौरी सोज
मुनि । दूय देसणानिसुणेह । गोयम गणहर संचरिय । ताप
सपनरसण । जो मुनि दौठो आवतोए ॥ २५ ॥ तपसोसिय
निय अंग । अहं सगतिन ऊपजैए । किमचढस्यै दृढकाय
गज जिम दीसै गाजतोए । गिरुओ ए अभिमान । तापस जो
मन चिंतवै ए । तो मुनि चढियो वेग । आलंबवि दिनकर
किरण ॥ २६ ॥ कंचण मण निप्यन्न । दंष्ट्र कलस ध्वज वट
सहिय । पेववि परमाणंद । जिणहर भरथेसर महिय । नि
यर काय प्रमाण । चिडं दिसि संठिय जिणह विंब । पण
मवि मनउल्लास । गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥
वयर सामिनो जीव । तिर्यक जृंभक देवतिहां । प्रतिबोध्या
पुंढरीक । कंढरीक अध्ययनभणी । बलता गोयमसाम
सवितापस प्रतिबोध करे । लेई आपण साय । चालै जिम
जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीरखांढ वृत आण । अमीय वूठ
अंगूठ ठवे । गोयम एकण पाव । करावै पारणो सवे ।
पंचसयां सुभभाव । उज्जल भरियो खीर मिसे । साचा
गुरुसंयोग । कवलत केवल रूपहुय ॥ २९ ॥ पंचसयां जि
णनाह । समवसरण प्राकारवय । पेववि केवल नाण । उप्प
नोउज्जोयकरे । जाणें जणविप्रोयूष । गाजंति घनमेघजिम ।
जिणवांणी निसुणेवि । नाणौहुया पंचसयां ॥ ३० ॥ [वस्तु]
इण अनुक्रमे नाणसंपन्न । पनरैसै परिवरिय । हरिय दु

रिय जिणनाह वंदइ । जाणोवि जगगुरुवयण । तिहिंनान
 अप्पाण निंदइ । चरमजिनेसर इमभणो । गोयम मकरि
 सषेव । ठेहजाय आपणसही । होस्यां तुल्लावेव ॥३१॥ (भास)
 ॥३॥ सामियो ए वीरजिणंद । पूनमचंद जिम उल्लसिय ।
 विहरियो ए भरह वासंमि । वरसवज्जत्तर संवसिय । ठवतो
 एकणय पउमेण । पायकमले संघै सहिय । आवियो ए नय
 णाणंद । नयर पावापुर सुरमहिय ॥३१॥ पेषियो ए गोयम
 सामि । देवसमा प्रतिबोधकरे । आपणो ए तिसलादेवि । नंदन
 पुहतो परमपण । वलतो ए देव आकास । पेषवि जाणो जिण
 समै ए । तो मुनि ए मनविषवाद् । नादभेद जिमऊपनो ए
 ॥ ३३ ॥ इणसमै ए सामियदेष । आपकनासूं टालियो ए ।
 जाणतो ए तिज्जअणनाह । लोक विवहारन पालियो ए । अ
 तिभलो ए कौधलो सामि । जाणो केवल मांगस्यै ए । चिंत
 व्यो ए बालक जेम । अहवा कीटो लागस्यै ॥३४॥ हं किम ए
 वीरजिणंद । भगतहिं भोलैभोलव्यो ए । आपणो ए उंचलो
 नेह । नाह नसपै साचव्यो ए । साचो ए एवीतराग । नेह नहे
 जै लालियो ए । तिणसमै गोयमचिन्त । राग वैरागे वा
 लियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जोउलइ । रहितो रागें साहि
 यो ए । केवल ए नाण उपन्न । गोयम सहज उमाहियो ए ।
 तिज्जअण ए जयजयकार । केवल महिमा सुरकरै ए । गण
 धरुण करय वखाण । भविया भवजिम निस्सरै ए ॥ ३६ ॥
 (वस्तु) ॥३॥ पढम गणहर वरषपच्चास । गिहवासै संवसिय
 तौसवरस संजम विभूसिय । सिरिकेवल नाणपुण । बारवरस
 तिज्जअण नमंसिय । राजग्रही नयरौ ठव्यो । वाणवइ

वरसाउ । सामीगोयमगुणन्त्रि । होखै सिवपुर ठाउ
 ॥३६॥ (भास) ॥३॥ जिमसहकारै कोयलटडकै । जिमकुस
 मावन परमल महकै । जिमचंदन सोगंधनिधि । जिम
 गंगाजल लहिछां लहकै । जिमकणया, चल तेजें ऊलकै ।
 तिमगोयम सोभागनिधि ॥ ३८ ॥ जिममानसरोवरनिव
 सै हंसा । जिम सुरतस्वर कणय वतंसा । जिममऊयर
 राजीव वने ॥ जिमरयणायरयणे विलसै । जिमअंबर
 तरा गल विकसै । तिम गोयम गुरकेलवने ॥ ३९ ॥ पून
 मनिसि जिम ससिवर सोहै ॥ सुरतस्व महिमा जिम
 जगमोहै । पूरव दिसि जिम सहस करो । पंचानन जिम
 जिरवर राजै । नरवध्वरजिम भेंगलगाजै ॥ तिम जिन
 सासन सुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम सुरतस्वरसोहै साखा
 जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा । जिमवन कोतकि मह
 महैए । जिम भूमीपति भुयबल चमकै । जिम जिनमंदिर
 घंटाखकै । गोयमलवधै गहगह्योए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि
 करचढीयोआज । सुरतस्व सारै बंठिय काज । कामकुंभ
 सकुवसिद्धआए । कामगजो पूरै मनकामी । अष्टमहसिधि
 आवै धामो । सामी गायम अणुसरोए ॥ ४२ ॥ पणवच्चर
 पहिलो पभणो जै । मायावीजो अवणसुणी जै । आमिति
 सोभासंभवो ए । देवांधुर अरिहंत नमीजै । विनय पड
 उबजायबुली जै । इण मंलै गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परधर
 वसतां कांव करीजै । देस देसांतरकायभमीजै । कवणकाज
 आयास करो । प्रहजठो गोयम समरीजै । काजसमग
 ल ततषिणसीजै । नवनिधविलसै तिहां घरे ॥ ४४ ॥

चवदयसय वारोत्तर वरसै । गोयम गणहर केवल दिवसै
 कौयो कवत आपगारपरो । आदहिमंगल ए पभणौजै ।
 परवमहोष्ठव पहिलो दीजै । रिद्धि वृद्धि कल्याणकरो
 ॥ ४५ ॥ धनमाता जिण उयरै धरियो । धन्य पिता जिण
 कुलअवतरियो । धन्यसुगुरुजिणदौषियोए । विनयवंत
 विद्याभंजार । तसुगुणपुहविनलभभद्रपार । वज्रजिम साखा
 विस्तरो ए । गोयम स्वामिनो रासभणौजै । चउविहसंघ
 रलियायत कौजै । रिद्धिवृद्धि कल्याणकरो ॥ ४६ ॥ कुंकुम
 चंदनठोदिरावो । माणकमोतोयां चोकपूरावो । रयण
 सिंघासण बैसणो ए । तिहावैठोगुरु देसनादेसौ । भविक
 जीवनाकाज सरेसौ । नितनितमंगलउदयकरो ॥ ४७ ॥ इति
 गोतमरास संपूर्णम् ॥ इति षट् रासः ॥ ॥ ॥

॥ ॥ रागप्रमाती जेकरै । प्रहजगमते सूर । भूखांभोजन
 संपजै । कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत बसै । लब्धित
 णाभंजार । जेगुरुगोतम समरियै । मनवंडितदातार ॥ २ ॥
 पुंनरीक गायमसुहा । गणधरगुणसंपन्न । प्रहजठौनें प्रण
 मतां । चवदैसै वावन्न ॥ ३ ॥ खंतिखमंगुणकलियं । सुविणियं
 सव्वलंघिसंपणं । बोरसपढससौसं । गोयमसामौनमंसामो
 ॥ ४ ॥ सर्वारिष्ट प्रणासाय । सर्वाभौष्टार्थदायने । सर्वलब्धि
 निधानाय । गोतमस्वामिने नमः ॥ ५ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ देववांद्णामे (वा) प्रातकाल । सिंध्याकाल
 प्रतिक्रमण मे कहणेंकुं पनरै तिथांकी स्तुतिलि ॥ ॥

॥ ॥ महौमंजणं पुन्नसोवन्नदेहं । जणाणंदणं केवल
 न्नाण गेहं । महानंद लब्धोबज्ज बुद्धिरायं । सुसेवामि सीमं

धरं तित्थरायं ॥१॥ पुरा तारगा जेहजौवाणजाया । भव
स्संति ते सब्बमवाणताया । तद्वा संपयं जेजिणा वट्ठमाणा ।
सुहं दिंतु तेमे तिलोयप्पहाणा ॥ २ ॥ दुरुत्तार संसारकुवा
रपोयं । कलंकावली पंकपक्खालतोयं । मणोवंडियत्थे सुमं
दार कप्पं । जिणंदागमं वंदिमो सुमहप्पं ॥ ३ ॥ विकोसे
जिणंदाणणंभोजलीणा । कलारुवलावस्य सोहग्गपौणा ।
वहंतस्स चित्तंमि णिच्चं पिज्जाणं । सिरीभारही ! देहिमेसुद्ध
नाणं ॥४॥ ॥ इति श्रीसोमंधर जौरीस्तुतिः ॥१॥ ॥

॥ ॥ पञ्चविदेह विषैविहरंता । वीसजिणोसर जगजय
वंता । चरणकमलतसु नासुंसीस । अहनिसिसमहंतेजग
दौस ॥१॥ पंचमेरुपासै ऊलकंता । सोहै वीस महागज
दंता । तिण्णजपरि ठै जिणवरवीस । तेजिणवर प्रणमुंनिसि
दौस ॥२॥ गणहर कहियदुवालसअंग । धानकवीसभगया
तिहां चंग । तिण्णजपरि जेअण्णै रंग । तेनर पामै सुख
अभंग ॥३॥ जिणसासण देवौ चउवीस । पूरै सुऊमनतणी
जगौस । संघतणा जेविघन निवारै । तिड्ड अण्णजम नवं
ठितसारै ॥४॥ ॥ इति वीसविहरमाणस्तुतिः ॥२॥ ॥

॥ ॥ समदमोत्तम वस्तु महापणं । सकलकेवलनिर्खल
सदगुणं । नगरजेसलमेर विभूषणं । भजतिपार्श्वजिनंगत
दूषणं ॥१॥ सुरनरेश्वर नम्रपदांबुजाः । स्मरमहीरुहभंगमत्तं
गजाः । सकलतीर्थकराः सुखकारका । इह जयंतु जगज्जल
तारकाः ॥२॥ अयतियः सुद्धती जिनशासनं । विपुलमंगल
केलिविभासनं । प्रबलपुण्यरमोदय धारिका । फलति तस्मै
मनोरथमालिका ॥३॥ विकटसंकटकोटिविनाशिनी । जिनम

ताश्चित्तसोऽथ विकसिनी । नरनरेश्वर किशोरसेविता । जय
तु सा जिनशासन देवता ॥ ४ ॥ ॐ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन
स्तुतिः ॥ ३ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ वरमुत्तिहारमुतारगणं । परचित्तकलत्तसप्त
धरणं । प्रथपंकयठप्रथदेवगणं । श्रीशब्दं वंदूं आदिजिनं ॥ १
तियलोयनमंसियपायजुआ । वणमोहमहीरुहमुत्तिगया ।
परिपालिअनिच्चलजीवदया । ममङ्गंतुजिणागमसुखस
या ॥ २ ॥ पणयंगि महातमरोरहरं । कल्लाणप्योरुहवुड्ड
करं । सुहमग्गकुमग्गपयासकरं । पणमामि जिणागम
मङ्गिकरं ॥ ३ ॥ सिरिइंदससुज्जलगायलया । सुहज्जाण
विणम्मिय एगलया । असुरिंदसुरेंदसुरप्पणया । ममवाणि
सुहाणि कुणेषु रुथा ॥ ४ ॥ ॐ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तुतिः ॥ ४

॥ ॐ ॥ पंचानंतकसु प्रपंचपरमानंदप्रदानक्षमं । पंचानु
त्तरसीमदिव्य पदवी वक्ष्यामि मन्त्रोपमं । येन प्रोखलपंचमौ
वरतमो व्याहारितत्कारिणां । श्रीपंचाननलांठनः स्तुततां
श्रीवर्द्धमानं स्विष्टं ॥ १ ॥ ये पंचाश्ववरोदसाधनपराः पंच
प्रमादीह्वराः । पंचाणुव्रतपंचसुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः ।
छत्वा पंचऋषीकनिर्जयमथो प्राप्तागतिं पंचमीं । तमीसं
तुसुपंचमौव्रतभृतां तीर्थंकराः शङ्कराः ॥ २ ॥ पंचाचार
धुरोणपंचमणधौशेन संसूदितं । पंचज्ञानविचारसारक
लितं पंचेषु पंचत्वदं । दौषाभंगुरु पंचमारतिमिरेष्वेका
दशी रोहिणी । पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुं ध्यायामि जैना
गमं ॥ ३ ॥ पंचानां परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरुस्थिवां
महानां भविनां गृहेषु वज्रशो वा पंचदिव्यव्यधात् । म

ह्वे पंचजनेमनोस्तुतस्तौ खारत्नपञ्चालिका । पंचम्यादि
तपोवतां भवतु सा सिद्धायिकात्रायिका ॥४॥ इति श्रीज्ञान
पंचमोस्तुतिः ॥५॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ वीरं । देवं । नित्यं । वंदे ॥१॥ जैनाः । पादा ।
यग्नान् । पातु ॥२॥ जैनं । वाक्यं । भूया । ह्रूय ॥३॥ सिद्धा ।
देवो । दद्यात् । सौख्यं ॥४॥ इति लघ्वीलौठंडसि श्रीवीर
स्तुतिः ॥५॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ चंदं हिनमनादेव । देहिनिः संतिमुत्थिताः । तस्मै
नमोस्तु वीराय । सर्वविघ्नविघातिने ॥१॥ सुरपतिमतचरण
यग्नान् । नाभेयजिनादिजिनप्रतौ नमोमि । यद्वचनपालनपरा
ज्जलांजलिं ददतु दुःखेभ्यः ॥२॥ वदंति वृंदासुगणाग्रतो
जिनाः सदर्थतो यद्वचयंति सूवतः । गणाधिप्राप्तौ र्यसमर्थ
नक्षणे । तदंगिना मस्तु मत्तं तु मुक्तये ॥३॥ शक्रः सुरासुर
वरैस्सहदेवताभिः । सर्वज्ञशासनसुखाय समुद्यताभिः ।
श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान् । भव्यान् जनान् नयतु नित्य
ममङ्गलेभ्यः ॥४॥ इति श्रीमहावीरस्तुतिः अणोजारौ ॥५॥

॥ ॥ विश्वनायकलायक जितशत्रु विजयानंद । पयजुग
नितप्रणमै देव अत्रैदेविंद । भावलहिरौगहिरौसवमनधरौ
यै अमंद । श्रीसूरतसहिरै वंदो अजितजिणंद ॥ १ ॥ आठ
प्रातीहारज अतसयवलिचोतौस । दिलरंजणदेस न तेह
नागुणपेतौस । अगणितरिषधारीआचारीमाईस । एहगुण
नाधारक वांदुं जिनचौवीस ॥२॥ सुध अरथ अनेपमजिन
भाषितसिद्धांत । साहादनयादिकहेतु युक्त नविभांत । पाप
करदमपाणीसदगतिनी सहिनाणी । सुणियै नितभविक्का

आगमकेरीवाणी ॥३॥ सासणनीसाचीदेवी सानिधकारी ।
 दुःखकष्टनिवारणसेवो जै सुखकारी । साचैमनसमरै तेसुख
 लाभ अपारौ । जिनलाभपयं पै हो ज्योजय जयकारी ॥३॥
 इति अजितनाथ स्तुतिः ॥ ७ ॥ ॥ ॥

॥३॥ चउवीसे जिनवर प्रणमं ऊं नितमेव आठमदिनकरि
 यै चंद्राप्रभुनौसेव । मुरति मनमोहै जाणेंपनिमचंद । दीठां
 दुख जायै पामेपरमानंद ॥१॥ मिलचोसइंद्र पूजै प्रभुजी
 नापाय । इंद्राणौ अपन्नुर करजोप्रीगुणगाय । नंदोश्वर
 द्वौपै मिलसुरवरनौ कोट । अट्टाही महोन्नव करतां हो
 जा होट ॥२॥ सेवुं जासिषरै जाणो लाभ अपार । चो
 मासे रहिया गणघर सुनि परिवार । भवियणनेंतारै
 देइ घरम उपदेश । दूध साकरथी पिण वाणौ अधिक वि
 शेष ॥३॥ पोसो पदिकमणो करियै ब्रतपचखाण । आठ
 मतप करतां आठकरमनौहाण । आठमंगल धार्ये दिन
 कोटि कल्याण । जिन सुखसूरि कहै इम जीवत जनमप्र
 माण ॥ ॥ इति अष्टमी स्तुतिः ॥ ८ ॥ ॥

॥३॥ मुरति मनमोहन कंचन कोमलकाय । सिद्धारथ
 नंदनविसला देवि सुमाय । मृगनायक लंठनसात हायतनु
 मान । दिन दिन सुखदायकखामीश्रीवधमान ॥ १ ॥ सुर
 नरवर किन्नर वंदित पद अरिविंद । कामितभर पूरण
 अभिनवसुरतहृकंद । भवियणनेंतारै प्रवहण समनिसि दौ
 स । चोवीसे जिनवर प्रणमं विसवावीस ॥२॥ अरथैकरि
 आगम भाष्या श्रीभगवंत । गणघरतेगूंथ्यागुणनिधिग्यान
 अनन्त । मुरगुरु पिण महिमाकाहिनसके एकन्त । समर

सुखदायक ममसुख सूत्रसिद्धन्त ॥३॥ सिद्धायिका देवी वारे
विधनविशेष । सङ्गसंकट चूरै पूरै आस असेष । अहनिस्सि
करजोप्ती सेवै सुरनरइंद । जंपइगुणगण इमअजीजिनलाभ
सुरिंद ॥ ४ ॥ ॐ ॥ इति श्रीमहवीर जिनस्तुतिः ॥ ८ ॥

॥ ॐ ॥ अश्वसेननरेशरवामा देवीनंद । नवकारतनु
निरुपमनौलवरण सुखकंद । अहिलंठणसेवितपडमावइ
धरणिंद । प्रहजठीप्रणसु नितप्रतिभासजिणंद ॥ १ ॥ कुल
गिरिवेयइइकणयाचलअभिराम । मानुषोत्तरनंदी रुचिक
कुंठल सुखठाम । भवणेशरव्यंतरजोइस वेमाणियधाम ।
वरतै जेजिनवरपूरो सुऊमनकाम ॥२॥ जिहां अंगइग्यारै
भारैउपांगठवृंद । इसपइन्नादाण्यामूलसूत्रचउमेद । जिन
आगस षटद्रव्य सत्तपदारांय जुत्त । सांभलिसरदहतां ठूटै
करमतुरत्त ॥३॥ पडमावइदेवी पार्श्वयज्ञ परतच्च । सङ्गसं
घना संकटदूरकरेवा दच्च । तेसंमरोजिनभक्ति सूरिकहैइक
चित्त । सुखसुजससमापो पुलकलल वड्डवित्त ॥ ४ ॥ ॐ ॥
इति श्रीपार्श्वजिनस्तुतिः ॥ ॐ ॥ १० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अरस्य प्रव्रज्या नमिजिणपते ज्ञानमतुलं । तथा
मल्लेर्जन्मप्रतमपमलंकेवलमलं । बल्लैकादश्यां सहसिलस
दुहाममहसि ॥ क्षितौकल्याणानां क्षपतुविपदः पंचक मदः
॥ १ ॥ सुपर्वेद्रश्येख्यागमन गमनैर्भूमिवलयं । सदास्वर्गत्ये
वाहमहमकया यत्र सलयं । जिनानामप्यापुच्छण मतिसुखं
नारकसदः ॥ (क्षितौ०) ॥२॥ जिनाएवं यानि प्रणिजगदुरा
त्मोय समये । फलं यत्कर्तृणामिति च विदितं सुद्वयसमये ।
अनिष्टारिष्ठानां क्षितिर्नुभवेयुर्बहुसुदः ॥ (क्षितौ०) ॥३॥

सुरासोद्गा सखे सकलजिनचंद्रप्रमुदिताः । तथाच ज्योति
ष्काखिलभवननाथा समुदिताः । तयोयत्कर्तृणां विदधति
सुखं विस्मितहृदः ॥ (चित्तौ०) ॥ ४ ॥ ॐ ॥ इति मोनैका
दशोस्तुतिः ॥ ११ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सुखसमकितदायककामितसुरतस्कंद । दृढ
रथ नृपराणौ नंदा केरोनंद । महलपुरसामी फेद्रे भव
नाफंद । चितचोपैनमियै श्रीशैतलजिनचंद्र ॥ १ ॥ अतौत
अनागत ज्ञा होस्यै अनंत । संप्र त कालै जेजेव विदेह
विचरंत । बिडं भवणेठवणासासय असासयसंत । ते सग
लाविकरणप्रणसुं श्री अरिहंत ॥ २ ॥ कालिक उत्का
लिक अंग अनंगपविड । नयभंग निखेपास्यादवादमित
सिद्ध । भविजन उपगारी भारौ जिन उपदेश । श्रुतश्रवणे
सगतांनासै कोटिकलेस ॥ ३ ॥ ब्रह्मजल असोकासासन
सुरि सुविचार । संघ सानिधकारी निरमल समकितधार ।
चिंता दुखचरै पूरय मनहजगीस । ध्यानतेहनो घरियै
कहै जिनलाम सूरौस ॥ ४ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ इति श्रीशैतलजिन
स्तुतिः ॥ १२ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ मिलेचोविहसुरवरविरचैविगजोसार । अटौ
गाऊ उंचो पिड्डलोओयणपार । विचकनकसिंहासणपद
मासन सुखकार । श्रीतोरयनायक वैसे चोसुखधार ॥ १ ॥
तीनठवशिरोवरि चामर ठालै इंद । देवदुंदुभि वाजैभाज
कुमतीफंद । भामंजलपूठैऊलकेजाणदिणंद । तिहुअणजन
मन मोहै सबलजिणंद ॥ २ ॥ द्रव्यभावसुठवणानामनिषेपा
धार । जिणगणहरभाष्यासूलसिद्धांतमजार । जिनवरनौ

पद्मिमाजिनसारिणी सुखकार । सूभभावैवंदोषजोगजय
कार ॥ ३ ॥ दुखहरणीमंगलकरणौजिनवरवाणी । भवद्वेद
द्वपाणीमौठी अमीयसमाणी । मनमुद्धे आणी प्रतिबुद्धो
भविप्राणी । सुयदेविपसाये पामे जयति सुनांणी ॥४॥ ॐ ॥
इति श्योसमवसरणभावगर्विर्भतस्तुतिः ॥ १३ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ द्वेद्वेकि घपमप धुधुमि धोंधो धसकिधरंधपधो
रवं । दोंदोकि दोंदो दाग्निदि दाग्निदिकि द्रमकिद्रणरण
द्रेणवं । भक्तिभूकि भूभू भूणरणरण निजकिनिज
जनरंजन । सुरशेलसिखरे भवति सखदं पार्श्वजिनपतिम
जन ॥ १ ॥ कटरेगिनियोगिनि किटति गिग्गदां धुधुकि
धुटनटपाटवं । गुणगुणण गुणगण रणकिण्येण गुणगुण
गणगौरवं । भक्तिभूकि भूभू भूणरण रणरणनिजकि निज
जन सज्जना । कलयति कमला कलितकलमल सुकलमीस
महेजिनाः ॥ २ ॥ ठकि ठेकि ठेठेठद्विठद्विक ठद्विपट्टा
ताद्यते । तललोकिलोलो लेषिलेपिनिदेषिदेषिनि वाद्यते ।
उभुकिउभु युंगियुंगिनि धोंगिधो गिनि कलरवे । जिन
मतमनंतं महिमतनुतानमतिसुरनर सुखवे ॥३॥ पुंदांकि
पुपुदां पुपुददि पुंदां पुपुददिदोंदो अं वरे । चाचपटचच
पट रणकिण्येणदणणदं दं वरे । तिहंरुगमपधुनि नि
धपमगरस सस ससस सुरसेवता । जिननाद्यरगे कुशलमुनि
सं दिषुत शासन देवता ॥ ४ ॥ इति श्योजिन कुशलसूरिभो
इत पार्श्वजिन स्तुतिः ॥ १४ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ हेवुंजगिरि नमियै कृपम देव पुंनरोक । शु
भतपनोमहिमा सुणि गुरुमुख निरभीक । शुभमन उपवाधै

विधिसुं चैत्यवंदनीक । करियै जिन आगलटाली वचन अ
लोक ॥ १ ॥ शक्रस्तवनादिक प्रथमतिलक दशवीस । अक्ष
तगिणतीसेचटतातिमचालीस । पंचासनी पूजाभाषइ
इमजगदीस । तेहीजनितप्रणमंस्वामौजिन चउवीस ॥ २ ॥
सदिपक्षनी पूनमचैलमास शुभवार । विधिसेतोलहीवै
आगमंसाखविचार । इमसोलवरसलग धरियैन्यान उ
दार । करतां नरनारौ पामे भवनोपार ॥ ३ ॥ सोवनंतनचरणे
नयणेतिमअरिबिंद । चक्केसरी देविय सेविय नरसुरहंद ।
कामितसुखदायक पूरयमन आणंद । जंपै गणनायक श्री
जिनलाम सूरिंद ॥ ४ ॥ इति ओचैवीपूनिमस्तुतिः ॥ १५ ॥

॥ ५ ॥ निरुपमसुखदायक जगनायक लायक शिवगति
गामी जी । कल्याणसागर निजगुण आगर सुभसमतारस
धामी जी । श्रीसिद्ध चक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावै जेम
नरंगे जी । ते मानव ओपालतणोपरि पामे सुखदुरसंगे
जी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्धआचारजपाठक साधु महागुण
वंता जी । दरसण नाण चरण तप उत्तम नवपद जगजय
वंता जी । एहनो ध्यानधरंता लहीये अविचल पदअवि
नासी जी । तेसगला जिननायक नमीयै जिनए नीतिप्र
कासी जी ॥ २ ॥ आसुमासमनो हरतिमत्रलि चैवकमास
जगौसै जी । उजवालीसातमधी करिये नव आंवलिनव
दिवसे जी । तेरसहस्रवलिगुणिये गुणणुं नवपदकेरो सारो
ओ । इण परि निरमल तप आदरिये । आगमंसाख उदा
रो जी ॥ ३ ॥ विमलकमलदल लोयण सुंदरश्रीचक
सरि देवो जी । नवपद सेवक भविजनकौरा विषनहरो सुर

सेवीजी । श्रीखरतरगठनायकसदगुरु श्रीजिनभक्तिसुणि
दाजी । तामुपसायें दूणपरिपभणै श्रीजिनलाभसुरिंदा
जो ॥ ४ ॥ ॥ इति श्रीनवपदस्तुतिः ॥ ॥ १६ ॥ ॥

॥ ॥ वलि वलिङ्गं ध्यावुं गाऊं जिणवरवीर । जिण
परवपजूसण दाखाधरमनी सीर । आसाढचोमासै ऊंती
दिनपंचास । पद्मिक्कमणोसंवठ्ठरी करियैविणउपवास ॥ १ ॥
चोवोसे जिनवर पूजा सतरप्रकार । करियै भलभावे भवि
ये पुण्यभंगार । वलिचैत्थप्रवाट्ठे फिरतां लाभअनंत । इम
परवपजूसण सज्जमे महिमावंत ॥ २ ॥ पुस्तकपूजावी नववा
चनाये वचाय । श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय ।
प्रतिदिन परभावन धूपअगर उखेवो । इम भवियण प्राणी
परवपजूसणसेवो ॥ ३ ॥ वलिसाहमी बठ्ठलकरियै वारंवार ।
केइ भावनाभावे केइ तपसी सीलधार । अट्ठदौहपजूसण
इमसेवत आणंद । सुयदेवी सानिध कहै जिनलाभ सुरिंद
॥ ४ ॥ ॥ इति श्रीपूज्यापर्व स्तुतिः ॥ ॥ १७ ॥

॥ ॥ सुर असुरबंदिय पायपंकजमयणमल्लअज्जोभितं ।
वनसुषणखामसरीरसुंदर शंखलंठन सोभितं । सिवादेवी
नंदन विजगवंदन भविक कमल हिनेश्वरं । गिरनारगिरि
वरमिखरवंदुं नेमिनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ अष्टापदे श्रीआदि
जिनवर योरजिनपावापुरे । वामपूज्यचंपापुरियसीषा ने
म रेवयगिरिबरे । सभेत सिसरे वीसजिणवरमुगतिपड्ढता
मुनिवर । अउवीस जिणवरतेहवंदुं सयलसंघे सुखकर ॥ २ ॥
इत्थार अंग उपगम्यै दसपन्न्या साणिदे । ठट्ठेदयंघप्र
सट्ठपन्ना प्यार मूलदसाणिये । अनुयोगहार चदारवंदी

सूत्रं जिनमतं गादयै । इह वृत्तिचूरणि भाष्यं घेतालीसं
गमधगादयै ॥ ३ ॥ दुर्जंदिसें मालकदोय जेहनें सदाभवि
यण सुखकरु । दुखहरै अंबा लुं वसुंदर दुरियदोहग अप
हक । गिरनारमंण नेमिजिनवर अरणपंकज सेविये ।
असिंघसज्जनें सदाभंगलकरो अंबादेविये ॥ ४ ॥ ॥ इति
गिरनारमंणअनेमि जिनस्तुतिः ॥ ॥ १८ ॥

॥ ॥ श्रीदेवाय । विश्वेवर्यं । पूर्णानंदं । भक्त्याबंदे ॥ १ ॥
तीर्थाधीशः । शुद्धादेशः । सर्वेभौष्टं । शंकुर्वंतु ॥ २ ॥ अ
र्हद्वाचो । वाचो युक्ता । कृष्णाः सद्भिः । पापं व्रंतु ॥ ३ ॥
शान्ता कान्ता । सिद्धा देवो । शान्त्यै दांत्यै । शश्वद्भूयात् ॥ ४ ॥
॥ ॥ इति श्रीवीरप्रभुस्तुतिः ॥ ॥ १९ ॥

॥ ॥ ॥ त्रिभुवनजननायक दायक वंछितदहन । भविकम
लविकासन सासनसूरसमान । प्रणसुं बद्धभावे नंदाराणी
नंद । श्रीसूरसचरै शीतलनाथप्रियंद ॥ १ ॥ उज्जलगुण
धारी अविकारी अरिहंत । भविजन हितकारीमहिमावंत
महंत । उपगदरी अविचल जयकारी जगदौस । नितनिर
मलचित्तै बंदो जिन ओवीस ॥ २ ॥ जिहानै गमसंग्रहआ
दिकनयसुविचार । स्यादस्ति प्रसुखवलि सप्तभंगिविस्तार ।
पेतीस गुणैकरि सोभै अतिमुबिसाल । लेकठैठवियै जिनवा
ली वरमाल ॥ ३ ॥ कमलसन सोहै नौलवरखतनुकाल ।
निज चार भुजै करि रज्जै अतिप्रयवंत । ओदेवी अशोका
सोकहरखसुखकंद । इमभक्तैपमणै श्रीजिनलाभसुरिंद ॥ ४ ॥
॥ ॥ इति श्रीशीतल जिनस्तुतिः ॥ ॥ २० ॥

॥ ॥ श्रीसर्वज्ञं ज्योतीरूपं विश्वाधीशं देवेन्द्रं । का

आकारं लीलागारं माध्वाचारं श्रीतारं । ज्ञानोदारं
 विद्यामारं कोर्त्तिस्कारं श्रीकारं । गोवीणैर्वन्धं सानन्दं
 भक्त्या बन्दे श्रीपार्ष्वं ॥१॥ जागृद्वीपे जगद्वीपे खर्णं शशे
 योगीने । चञ्चक्रो ज्योतिश्चक्रो तु गत्वाग्यो वैताग्यो । श्री
 चम्पकारे वल्लभकारे देवावासे सोल्लासे । येवर्त्तन्ते सर्वाधो
 गा स्ते सोम्यं वो देवायुः ॥२॥ सम्यग्ज्ञानं शुद्धध्यानं
 श्रुत्वा ध्यानं मग्नानं । तैलोक्यं शोरामारम्यं विदुष्यं मा
 कायं । अर्चयित्वा भोजोदभूतं शश्वत्पूतं संगीतं । लक्ष्मीकांतं
 वरुणोपेतं वन्देयं सदांतं ॥३॥ अभ्यासां भक्तगानां कल्या
 नं कुर्वन्तो विभ्राणा । शीर्षे सौन्दर्यं कोटीरंतारं हारं
 वल्लोत्रे । विख्याता भोगेन्द्रोपेतामालंकारा मङ्गादं । वल्लं
 तीपद्मादेवो सदृशिं दृशिं वैदुष्यं ॥४॥ इति श्री पार्ष्व
 त्तिवस्तुतिः ॥ ॐ ॥ २२ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ५ ॥ पापायां पुरिष्णां पटतपसा पर्यं कपर्यास्तनः ।
 आपात्प्रभु हन्मयानविपुल श्रीगुक्तशालामनु । गोसेका
 र्त्तिकर्त्ता नागकरणे तृतीयकांते शुभे । स्वातौयः शिवभाप
 पापरहितं संस्तौमि वीरप्रभु ॥१॥ यद्भोगमनोद्वयं ततवर
 ज्ञानाक्षराप्रिलले । संभूयाश्च सुपर्वसंततिरहोचक्रो मङ्गलत्
 त्तमान् । श्रीमत्याभिभवादिबोरचरमा स्ते श्रीजिनाधो
 मराः । मङ्गायानवचेतमे विदधतां ये यांश्चनेनांसि च । २॥
 अर्चयित्वा भिदं जगादग्निपः श्रीवर्द्धमानाभिधः । तत्पद्माङ्क
 मनायका विदधतां चक्रं मरांसुवनः । श्रीमतीर्यसमर्थनेक
 ममदमयगुणं भूषणां । भूयाद्वाक्कारकं प्रवचनं चेत
 समतकारिवत् ॥३॥ श्रीगीर्वाणपतिर्वाभवनपराः सि

द्वायिकादेवता । चंचच्चक्रधरा सुरासुर नता प्रायादप्राया
दसौ । अर्हन् श्रोजिनचंद्रगीसु मतिनो भव्यात्मनः प्राणि
नो । याचक्रोवमकष्टहस्ति निधनेसार्द्धलविक्रीडितं ॥ ४ ॥
इति दीपमालिकास्तुतिः ॥ २२ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ पुनः ॥

॥ ॐ ॥ सिद्धारथताताजगत विख्याता विसलादेवीमा-
य । तिहां जगदुरुजनस्या सब दुखविरम्या महावीरजिन-
राय । प्रभुलेई दिक्षा कर हितशिष्या देईसंवन्नरीदान ।
बहुकरमखपेवा शिवसुखलेवा कीधो तपशुभध्यान ॥ १ ॥
वर केवलपामौ अंतरजामी वदिकातौशुभदौस । अमावस
जाते पिठलीराते सुगतिगयाजगदौस । बलि गोतम ग
णधर मोटामुनिवर पास्यापंचमज्ञान । यवातत्वप्रका
सी शीलविलासौ पुहुतासुगतिनदान ॥ २ ॥ सुरपतिसंचरि
यारतनउधरिया रातथई तिहां काली । जनदौवाकीधा
कारजसौधा निसाथईउजवाली । सज्जलोकैहरखी नि
जरेनिरखी परबकियोदौवाली । बलि भोजन भगते ।
निज निज सगतेजौमेसेवसुहाली ॥ ३ ॥ सिद्धायिकादे
वौ विषनहरेवौ वंछित दै निरधारी । करै संघनैसाता ।
जिमजगमाता एहवी शक्ति अपारी । जिनगुणइमगावै
शिवसुखपावै सुगणधो भविजनप्राणी । जिनचंदनतौसर
महामुनिसर जपै एहवी वाणी ॥ ४ ॥ इति श्रीदीपमालि
कास्तुति ॥ २३ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ अथ पनरैतियोकासवनलिख्यते ॥

॥ ॐ ॥ सुगुणसनेहीसाजण श्रीसौमंधरस्वामि । अरज

सुणो इक जगगुरुसुज आसाविसरास । पूरवविदेहें विजय
भली पुष्कलावई नाम । जिहां विचरै जिनवरजी धनते
नयरीगाम ॥ १ ॥ धनते लोकसुणै जे जोजनगामनीवाणि
धनतेमहीयल चरणधरै जिहां जिनवर भाण । धनतेभविज
न जेरहै प्रभुताहरपरसंग । वदनकमल निरखी नितमा
णै उत्तवअंग ॥ २ ॥ सुगुरुमुखै प्रभुसुजस तुम्हीणोसांभल
कान । मिलवानै उलसैमनमाहरोधरुं इक ध्यान । भगति
जुगति करवानी ठै सुजसगली जोर । पिणप्रभुलगपुहचौ
जे तेहनहीपगदोर ॥ ३ ॥ आग्रागूंगर अतिवणाविचवहै
नदियांपूरि । किम सुजथौ अवरायै प्रभुजी एतलीदूर । आं
खदलीउलजों करै जोयवामुखजिनराज । पांखदलीपाई
नही ते विन किमसरै काज ॥ ४ ॥ वाटदलीवहतोकोई
न मिलै सेगूसाथ । कागलियोलिख आपूजं जिम तेहनें
हाथ । जाणूं ससिहरसाथे कडं संदेशजेह । पिणअलगो
यई ऊपरि वाटै निकलै तेह ॥ ५ ॥ जो कोई रीते प्रभुजी
तुमथौएथअवाय । तो इण भरतनावासी भविजन पावन
याय । साहिवनौतोमुनि जरसगलै सरिषी होय । पिणपो
तानी प्रापति सारु फलप्रतिजोय ॥ ६ ॥ अलगोठुपिणमा
हरै तुमसुंसाचीप्रीति । गुणगुणवंतना आवैहौयदो खिणर
चीत । ऊठुंसेवकतुंठेमाहरोआतमराम । नहिंयविसारुं
जीवुंजालगिताहरो नाम ॥ ७ ॥ साचैदिलथौ सुजसुं
धरज्योधरमखेह । करुणाकर प्रभु कर जो मोपरिमहिर
अठेह । दूसमकालतणो दुखटालोदीनदयाल । पालो विरदसं
भालो निज सेवकसुं ठापाल ॥ ८ ॥ आसविलूभा अलग

यकी पिण करै अरदास । पिण मोटानी महिरठां न
विधाय निरास । केईवसै प्रभुपासे केईवसैठै दूरि । राज
महिरनी रोते सकलनें जाखें हजूर ॥६॥ सिवसुखदायक
नायक लायक खामिसुरंग । ध्यायक ध्येय स्वरूपलहे ।
निज आत्मउमंग । सहिजे एकपलक जोथायै प्रभु तुज
संग । लाभउदय जिनचंद्र लहै नितप्रोम अभंग ॥ १० ॥
॥॥ इति श्रीसीमंधरखामी स्तवनं ॥ ॥ १ ॥ ॥

॥॥ श्रीसंखेसर पासजिणेसर भेटायै । भवनासंचत
पापपरासव भेटायै । मनधर-भाव अनंतचरणयुगसेवता ।
अण्डांतें इककोटि चतुरविधदेवता ॥१॥ ध्यानधरुं प्रभू
रयकी ऊंताहरो । जलजिमलौनो मीनसदा मनमाहरो ।
भव२ तुमहीजदेव चरणद्वं सिरधरुं । भवसायरघीतार
अरजआहौजकरुं ॥२॥ भूखलिषातपसीत आतमएनविसहै
तपजप संजम भारतणो नविनिरवहै । पिणजिणवरना ना
मतणी आसतवणी । एहिज ठै आधार जगतगुरु अग्रहभ
णी ॥३॥ तुमदरसणविनसाम भवोदधि ऊंफिछ्यो । सहिया
दुखवअनेक नकारज कोसछ्यो । मिलिया हिवप्रभु सुकृतस
दासुखदीजीयै । चलगय संकट चूर जगतजस लीजीये ॥४॥
जादवपति श्रीकृष्णतणी आरतिहरी । सेनाकीधसचेतजरा
दूरैकरी । परचा पूरण पासरयण जिमदीपतो । जयवंतोजि
णचंदसयल रिपुजीपतो ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं १ ॥
॥ ॥ सुफल संसार अवतार एङंगिणुं । सामिथी
मंधरा तुम्ह भगतै भणुं । भेटवापायकमल भावहीयतै
धणो । करौससुपसायजे वीनवुंते सुणो ॥ १ ॥ तुम्हसुकुं

अरिहंतसुराखियै । जिसो अठैतिसो करजोति करि भा
 पियै । अति सबल मुज्जहियै मोहमाया धणी । एकमन
 भगति किमकरुं बिभवन धणी ॥ २ ॥ जोव आरति करै
 नव नवीपरिगट्टै । रौसचटकोचटै लोभवयरीनट्टै । नयण
 रस वयणरस कामरस रसीयो । तेम अरिहंततूंहियट्टै नवि
 वसीउ ॥ ३ ॥ दिवसने रातिहियट्टै अनरोधरुं । मूढम
 न रौजवा वलिय मायाकरुं । तूंहिज अरिहंत जांणै जि
 सो आचरुं । तेम कर जेम संसार सागर तरुं ॥ ४ ॥ क
 आवसि सुखने दुखजेऊं सज्जं । मनतणीवात अरिहंत कि
 णवे कज्जं । करिदयकरिमयादेवकरुणपरा । दुखहरि
 सुखकरि सामझीमंधरा ॥ ५ ॥ जाणसंयोग आगम वयण
 पियसुणु । धर्मनकरायप्रभुपापपोते धणुं । एक अरिहंततूं
 देवबीजो नही । एह आधार जग जाणज्यो अम्ह सही ॥
 ६ ॥ धण कणय मायपिय पुत्तपरियण सह । हस्यो बोत्थो
 रस्यो रंगरातो बह । जय जयो जगतगुरु जौवजीवन धरा ।
 तुम्ह समवदनही अवर वालहे सरा ॥ ७ ॥ अमियसम वां
 णि जाणुं सदा सांभलुं । वारवर परषदामांहिआवौमिलुं ।
 चित्तजाणुं सदा सानि पायउल्लगुं । किम करुं ठामपुंनर
 गिरिवेगलू ॥ ८ ॥ भोलना भगतितूं चित्तहारै किखै ।
 पुण्यसंयोग प्रभुदृष्टिगोचर छुखै । जेहनेनांसमन वय
 णतनउलस्यै । दूरधीदूकानाजेम हियट्टै वसै ॥ ९ ॥ भल
 भलोएणि संसारसज्ज ए अठै । सामिसीमंधरा ते सज्ज तुम
 पठै । ध्यान करतां सुपनमांहि आवौमिलै । देखियै नयण
 तो चित्तआरति टलै ॥ १० ॥ सामसोहामणा नाममनगरु

॥ आठेलाल ॥ नगर ब्रह्मानपुर राजोयाजी ॥ १ ॥
 पासजिणंद प्रधान । निरमल सुगुणनिधान ॥ आठेलाल ॥
 वामासुतवद्रि भागीयाजी ॥ २ ॥ सेवकनौसंभाल । करीयप
 रीततकाल ॥ आठेलाल ॥ संकटसङ्ग प्रभुपरिहृष्ट्याजी ॥ ३ ॥
 चिंताकरी चकचूर । प्रगष्टो आनंदपूर ॥ आठेलाल ॥ वाट
 विषमतापिण्टलौजी ॥ ४ ॥ प्रभुजीनें परसाद । वौतासङ्ग
 विखबाद ॥ आठेलाल ॥ मनवंछित सुऊ सङ्ग फलयाजी ॥ ५ ॥
 ध्यानसमाधिनीथाप । मिलीयाठो प्रभुआप ॥ आठेलाल ॥
 देज्यो दरसण बलिसदाजी ॥ ६ ॥ अन्धत धर्मसुजाण । सी
 सक्षमा कल्याण । आठेलाल । वाचंक इम बीनतीकरै जो
 ॥ ७ ॥ ॥ इति श्रीमनमोहन संपूर्णम् ॥ ॥ ३ ॥

॥ ॥ जय२ श्रीजिनराज जगजन अन्तरजामौ । ता
 रण तरणजिहाज । परमातम परिणामी ॥ १ ॥ परमपुरुष
 परमेस । परमानंद प्रधान । परमप्रकास विसिस । निरमल
 ज्ञाननिधान ॥ २ ॥ जगपतिपासजिणंद । प्रभु तुम्ह हो उप
 गारी । सुनियै सेवक जान । असौ अरज हमारौ ॥ ३ ॥
 मोहमहामद भूलि । मे वड्ढकाल गमायो । निजपरभाववि
 वेक । सुद्धसुभाव नपायो ॥ ४ ॥ निरमल चेतनभाव । कर्म क
 लंकित कोनो । ताकारणगुण ठोद्रि । परओगुणचितदीनो
 ॥ ५ ॥ निज अवगुण सुणिकान । दिलमें रोसभराउं । अठ
 ता निजगुणगान । सुनिवैकुंजमाह्वं ॥ ६ ॥ आश्रवपांचे
 असुद्ध । दिलसे दूरनजावै । कुमति कदाग्रहजोग । समता
 सुद्ध न आवै ॥ ७ ॥ अवकटपुण्यसंयोग । प्रभु तुऊ सुद्धा
 पेषी । सुद्ध अध्यातमलीन । भाव असुद्धउवेषी ॥ ८ ॥ निर

खि२ प्रभुबिंब । मनमें आनंद पाऊं । गाऊं तुझ गुणग्राम
 देवअवर नविचाहूँ ॥ ८ ॥ करुणाकरि प्रभुमुकूट । आतम
 निरमल कीजै । सुद्वंदसा प्रगटाय । मोहविकलता ठीजै
 ॥ १० ॥ भव२ निजपद सेव । प्रभु सेवक कुं दोजै । अजि
 न भक्तिप्रसाय । सुमति विलाशवरी जै ॥ ११ ॥ इति श्रीपा
 र्श्वजिन स्तवनं ॥ ४ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ प्रणम्य श्रीगुरुपाय । निरमल न्यानउपाय ।
 पांत्वमितप भणुं ए । जन्म सफल गिणुं ए ॥ १ ॥ चउवैसमो
 जिनचंद । केवल न्यानदिणंद । विगत गहगह्योए । भवि
 यणने कह्यो ए ॥ २ ॥ न्यान वढो संसार । न्यानसुगति दा
 तार । न्यानदौवो कह्यो ए । साचोसरदह्यो ए ॥ ३ ॥ न्यान
 लोचन सुविलास । लोकालोक प्रकास । न्यान विनापसुए ।
 नर जाणैकि सुं ए ॥ ४ ॥ अधिक आराधक जाण । भगवती
 सूत्रप्रमाण । न्यानो सर्वतुए । किरीया देखतुए ॥ ५ ॥ न्या
 नौसासोसास । करम करै जेनास । नारकिने सहीए । को
 ढवरस कह्यो ॥ ६ ॥ न्यानतणो अधिकार । बोल्या सूत्र
 मऊार । किरिया ठै सहीए । पिणपाठै कह्यो ॥ ७ ॥ कि
 रिया सच्चित जो न्यान । ऊवैतो अतिप्रधान । सोनोनें सु
 रोए । संखदूधै भख्योए ॥ ८ ॥ महा निशीथ मऊार । पांच
 मि अक्षरसार । भगवंत भाषोयोए । गणधर साखियोए ॥
 ९ ॥ ढाल१ पहिली कालहरानो ॥ ॐ ॥ पांचमि तपविधि
 सांभलो । जिमपामो भवपारोरे । श्रीअरिहंत इन्द्रप्रदिसै ।
 भवियणने हितकारोरे ॥ पां० १० ॥ भिगसर माह फागुण
 भला । जेठ आसाढ वैसाखोरे । इण षटमासै लीजीये । शु

भदिन सदगुरुसाधोरे ॥ पां० ११ ॥ देव जहारीदेहरे । गौ
तारथ गुरुवंदोरे । पोथी पूजो न्याननी । सगति कुवै तो नंदी
रे ॥ पां० १२ ॥ बेकरजोती भावसु । गुरुमुखकरो उपवा
सोरे । पांचमिपन्निकमणो करै । पढो पंढित गुरुपासोरे ॥
पां० १३ ॥ जिण दिन पांचमितप करो । तिण दिन आरंभ
टालोरे । पांचमितवनथुई कहो । ब्रह्मचारिज पिणपालोरे
॥ पां० १४ ॥ पांचमास लघुपञ्चमी । जावजीव उत्कष्टीरे ।
पांचवरस पांचमासनी । पांचमिकरो शुभदष्टीरे ॥ पां० १५
(ढाल ५ उल्लालानी) ॥ ॥ ॥ हिवभविंयणरे पांचमिउजमणो
सुणो । घरसाहरे वारुधनखरचोषणो । ए अवसररे आवं
तांवल्लि दोहिलो । पुण्यजोगैरे धनपामंत सोहिलो । (उ
ल्लालो) सोहिलो वलीयधन पामता पिण भर्मकाजकिहां
वलो । पांचमी दिन गुरुपासुआवी कौजोयै कावसगर
लो । बिणन्यान दरसण चरणटोकी देइपुस्तकपूजीयै । था
पना पहिलो पूजकेसर सुगुरु सेवाकौजोयै ॥ १६ ॥ सिद्धां
तनीरे पांचपरति वौटांगणा । पांचपूठारे सुखमलसूत्रप्रसु
खतणा । पांचप्रोरारे लेखण पांच मजोसणा । बासकुंपारे
कांवीवारुवरतणा । (उल्लालो) वरतणावारु वलियकमली ।
पांचजिलमिल अतिमली । थापनाचारिज पांचठवणी ।
सुहपतो पणपाटली । पटसूत्रपाटी पंचकोथल पंचनवकर
बालियां । इण परैआवक करैपांचमि उजमणो उजवा
लियां ॥ १७ ॥ बलिदेहरैरे खाव महोत्तव कौजियै । घर
साहरे दानवली तिहां दीजियै । प्रतिमानेरे अगलिहो
वणोटोइयै । पूजानारे जे जे उपगरण जोइयै । (उल्लालो)

जोइयै उपगरण देवपूजा काज कलशभंगार ए । आर
 ती मङ्गलथालदीवो धूपधाणोहार ए । वनसार केसर अ
 गरसूकट अंगलुहणो दौस ए । पंच पंचसगलौ वस्तु दोवो
 सगति सु पचवीस ए ॥ १८ ॥ पांचमीतारे साहमी सर्व
 जीमाद्रियै । राखी जोगेरे गौतरसाल गंवाद्रियै । इण
 करणीरे करतां न्यान आराधियै । न्यान दरसणरे उत्तम
 मारगसाधियै । (उल्लालो) साधियै मारग एह करणी
 न्यानलहोये निरमलो । सुरलोकनें नरलोकमाहें न्यान
 वंति ते आगलो । अनुक्रमे' केवल न्यान पामो सासता सुख
 जेलहै । जे करै पांचमि तपअखंडित वीरजिणवर इम
 कहै ॥ १९ कलश ॥ इम पंचमी तपफलप्ररूपक वर्द्धमान
 जिणेशरो । मेधुण्यो श्रीअरिहंत भगवंत अतुलवल अल
 वेसरो । जयवंत ओजिनचंद सूरज सकलचंदनसुं सौयो ।
 वाचनाचारिज समयसुंदर भगति भावप्रसंसियो ॥ २० ॥
 इति श्रीपंचमीष्टक स्तवन संपूर्ण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पांचमितप तुमे करोरे प्राणो । निरमल पामो
 न्यानरे । पहिली न्याननें पठे किरिया । नही कोई न्यान स
 मानरे ॥ पां० १ ॥ नंदीसूत्रमें न्यानवखाण्यो । न्याननापंच
 प्रकाररे । मति श्रुत अवधि अनें मनपर्यव । केवल न्यान श्री
 काररे ॥ पां० २ ॥ मति अट्ठावीस श्रुतिचवदैवीस । अवधिठ
 असंघ प्रकाररे । दोयभेद मनपर्यवदाख्यो । केवल एकप्रका
 ररे ॥ पां० ३ ॥ चंद्र सूरज ग्रह नक्षत्रतारा । तेषुं तेज
 आकासरे । केवल न्यानसमो नही कोई । लोकालोक प्रकास
 रे ॥ पां० ४ ॥ पारसनाथ प्रसादकरीनें । माहरीपूरो उमेदरे

समय सुंदर कहै ऊं पिणपासुं । न्याननो पंचमो भेदरे ॥

पां० ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ भविका श्रीजिनबिंबजुहारो ॥ आतम परमआधा

रोरे ॥ (भविकाश्रीजि०) ॥ जिनप्रतिमा जिनसारधौजाणे । नक

रो संकाकाई । आगमवाणीने अनुसारै । राखोप्रीतसवाई

रे ॥ भ० श्री० १ ॥ जे जिनबिंब खरूप न जाणें । ते कहिये किम

जाणें । भूलातेह अज्ञानें भरियां । नही तिहां तत्वपिठाणो

रे ॥ भ० श्री० २ ॥ अंबदस्रावक ऐणिक राजा । रावण प्रसु

ख अनेक । विविधपरै जिन भगति करंता । पास्याधरमविवे

करे ॥ भ० श्री० ३ ॥ जिनप्रतिमा बड्ढभगते जोतां । होय निश्चय

उपगार । परमारथगुण प्रगटपूरण । जोज्यो आद्रकुमार

रे ॥ भ० श्री० ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारेजलचर । ठै बड्ढ जलधिम

ऊार । तेदेखीबड्ढलामड्ढादिक । पास्या विरतप्रकाररे ॥ भ०

श्री० ॥ ४ ॥ पांचमा अंगै जिन प्रतिमानो । प्रगटपणें अ

धिकार । सूरीयाभसुर जिनवर पूज्या । रायपसेणीमऊार

रे । भ० श्री० ॥ ५ ॥ दशमें अंगै अहिंसादाखी । जिनपूज्यां

जिनराज । एहवा आगम अरथमरोप्री । करियै किम

अकाजरे भ० श्री० ॥ ७ ॥ समकित धारी सतीयद्रूपदी ।

जिनपूज्या मनरंगै । जोज्यो एहनो अरथ विचारो । ठडे

ग्याता अंगैरे भ० श्री० ॥ ८ ॥ विजय सुरै निम जिनवर

पूजा । कौघौचित धिर राखी । द्रव्य भावविड्ढं भेदे कौनी ।

जीवाभिगमतेसाखीरे ॥ भ० श्री० ॥ ९ ॥ इत्यादिक बड्ढ आ

गम साखै । कोइसंका मति कर ज्यो । जिनप्रतिमा देखी

नितनवलो । प्रेमधणो चित धरज्यो रे ॥ भ० श्री० ॥ १० ॥

चिंतामणि प्रभुपासपसायै । सरधा होज्यो सवाई । औ
जिनलाभ सुगुरु उपदेसै । औजिन चंद्रसवाई रे ॥ ११ ॥
भ० औ० ॥ इति औचिन्तामणिपार्श्वजिनस्तवनं ॥ ६ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अंतरजामीसुण अलवेसर । महिमा विजगु
मारो । सांभलनें आयो तुमतोरे । जन्ममरणदुखवारो ॥ १ ॥
(सेवक अरज करै ठैहोराज । अरुहने सिवसुखआलो) ॥
(आंकणो) सङ्गकोनां मनवंछितपूरो । चिंतासङ्गनौ च्रो
एह विरुदठै राज तुम्हारो । किम राखो ठो दूरो । सेव० ॥
२ ॥ सेवक ने विलविलतो देखी । मनमें सहिरन धरस्यो ।
करुणासागर किम कहवासो । ज्यो उपगार नकर स्यो ॥
सेव० ॥ ३ ॥ लटपटनो हिव कामनही ठै । परतिखदरसण
दीजै । धुंवांमैधीजुं नहीसाहिव । पेट पझां पतीजै ॥ से०
४ ॥ ओसंखेसर मंझणसाहिव । वीनतनी अवधारो । कहे
जिनहर्षमयाकरमुऊपर । भवसायरथी तारो ॥ सेवक० ५ ॥
इति औपार्श्वजिनस्तवनं ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ जयकारौजिनराज । पुरसादाणी रे । वामासुत
वरदाय । निरमलनाणी रे ॥ १ ॥ पांचकमल प्रभुअंग । निर
प्रमनिरख्यारे । विणकमल सुऊसंग । आतमहरख्यारे ॥ २ ॥
वदन महोदय देख । चंदलजाणू रे । गगनभमे निसदीस ।
इम मन आणूरे ॥ ३ ॥ सुरमणि ज्युं सुखकार । नयणविरा
जै रे । हृदयकमल सुविलास । बाल ज्युं ठाजै रे ॥ ४ ॥
प्रभुकरचरणविलोक । पंकजहास्यो रे । ततखिण निजसं
वास । जलमें धास्यो रे ॥ ५ ॥ इम सरवंग उदार । औजिन
राया रे । साचै पुण्य संयोग । साहिव पायारे ॥ ६ ॥ प्रभु

गुण अनुभवनीर । सांगसुरगैरे । टाढ्योपातिकपंक । आत
मसंगैरे ॥७॥ वरस अढारचोतीस । वदिवैशाखै रे । मनु
हर पांचमदीस । सज्जसंधसाखें रे ॥८॥ नगरमहेवामाहि ।
पासजुहाररा रे । श्रीजिनचंदमुष्टिंद । वंछितसास्यारे ॥९॥
इति पार्श्वजिनस्तवनं ॥ ॐ ॥ ७ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ॐ॥ अमलकमलजिम धवलविराजै । गाजै गोप्त्रीपास ।
सेवा सारै जेहनी । सुरनरमनधरिय उलास ॥१॥ सोभागौ
साहिव मेरावे । अरिहांसुग्यानौ पासजिणंदावे । (आंकणी)
सुंदरसूरति मूरति सोहै । मोमन अधिक सुहाय । पलक
मेंपेखतां मानु । नवनवी ठवीय देखाय ॥२॥ सोभागो०अ०॥
भवदुखभंजण जनमनिरंजन । खंजन नयनसुंरंग । अवरणसु
णी गुणताहरा । माहरा बिकस्या अंगोअंग ॥ ३ ॥ सो०
अ०॥ दूरथकौज्जंआयो वहनेदेवहलोदीदार । प्रारथियां प
हिमेनेही । साहिवा एहउत्तम आचार ॥४॥ सोभागी०अ०
प्रभुसुखचंद विलोकित हरषित । नाचत नयनचकोर । कम
लहसै रविदेखने । जिमजलधर आगममोर ॥सो०॥५॥ किस
कैहरिहर किसकै ब्रह्मा । किसकै दिलमेरांम । मेरैमनमेतूं
दसै । साहिव सिवसुखनोठाम ॥ सो० अ० ॥६॥ मातावा
मा धन्य पिताजसु । श्रीअश्वसेन नरेश । जनमपुरी वणारसौ
धनधनकासीनो देस ॥सो०अ० ॥७॥ संवतसतरैसै वावीसै
वदि जैसाख वखाण । आठम दिन भलै भावसुं । मोरौ
जाव चढौ परिमाण ॥सो० अ० ८॥ सानिधकारी विघन
निवारौ । परउपगारीपास । श्रीजिनचंद जुहारतां । मोरौ
सफलफली सज्जआस ॥ सो०अ०९॥ इति श्रीपा०स्तवनं ॥८॥

॥ ॐ ॥ ढाल पाठो धरजौ पाटीयै पधारो एहनी ।
 सुणि२ सेबुं जगिरखामी । जगजीवन अंतरजामी । ऊं तो
 अरजकरुं सिरनामी । कृपानिध वीनती अवधारो ॥ १ ॥
 भवसायर पार उतारो । निज सेवकवानवधारो । क० । प्रभु
 मूरति मोहन गारौ । निरध्यां हरषे नरनारौ । जाउं वारी
 ऊं वार हजारौ । क० ॥ २ ॥ हिव किसिय विमासण कीजै ।
 सुऊ ऊपरमहिर धरीजै । दिलरंजण दरसणदीजै । क० ॥ ३ ॥
 आज सयलमनोरथ फलिया । भवभवनातिकटलिया । प्रभु
 जोसुऊ सैमुखमिलिया । क० ॥ ४ ॥ समष्टां संकटटलिजायै ।
 नवनवनितमंगल थायै । सुऊ आतम पुण्यभरायै । क० ॥ ५ ॥
 करजोप्ती वीनति कीजै । केसर चंदन चरचीजै । दिन धन
 धन तेह गिणीजै । क० ॥ ६ ॥ प्रभु दरस सरस लहितोरो ।
 अति हरषित ऊवो चितमोरो । जिम दीठांचंदचकोरो
 क० ॥ ७ ॥ परतिख प्रभु पंचमै आरै । विसमा भयसंकट
 वारै । सङ्गसेवक काज सुधारै । क० ॥ ८ ॥ सेवोखामि सदा
 सुखदाई । कमणानरहै घर काई । बाधै संपतिसोभ सवाई
 क० ॥ ९ ॥ नाभिराय कुलंबर चंदा । भवजन मन नयण
 आणंदा । ओलगै सुर असुर सुरिंदा क० ॥ १० ॥ जयकारी
 रिषभजिणंदा । प्रहसमधर परम आणंदा । वंदै श्रीजिन
 भक्तिसूरिंदा । क० ॥ ११ ॥ इति श्री ऋषभदेवजौ स्तवन
 संपूर्णम् ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ घर अंगण सुरतरु फल्योजौ । कवण कनक फल
 खाय । गयवर बांध्यो बारणेंजौ । खरकिस आवैदाय ॥ १
 विमलजिन माहरे तुम्हसुं प्रीति । सुरसकलंकित सुमित्यां

जी । होयतो हींसे केम । वि०२ ॥२॥ मनगमता मेवालही
जी । कुणखल खांवाजाय । आदरसाहिवनो लहीजो । कुण
त्ये रांकमनाय ॥ वि०३॥ पाच ठते कुणकाचनें जी । अलव
पसारै हाय । कुणसुरतरुथी ऊठिनें जी । वांवलघाले वाय
वि०॥४॥ देव अवरजोड्डं करूंजी । तोप्रभु तुमचीआण ।
श्रीजिनराज भवो भवैजी । तुं हीज देवप्रमाण ॥ वि० ५॥
इति श्रीविमलजिन स्तवनं ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ पासजिनेसर जगति लोए । गवढी पुरमंण
गुणनिलोए । तवन करिस प्रभुताहरोए । मनवंडित पुरो
माहरोए ॥१॥ नयरोनामवणारसिए । सुरनयरी जिनरिद्वै
बसीए । तेण पूरीठै दीपतोए । अखसेनराजा रिपुजीपतो
ए ॥२॥ वामातसुवरिनारए । तसुगुणहि नलभैपारए । ता
मुडयर अवतारए । तसुअतिसय रूपउदारए ॥३॥ चवदसु
पन तिण निसिलछ्याए । अनुक्रमकरि तेसज्जमन ग्रह्याए ।
पूठै भूपतिनें कछ्याए । करजोदि कछ्या जे जिमलछ्याए ॥ ४
(टालर) । प्रथममुपनगज निरख्यो । मायतणोमन हरख्यो ।
नीजै दृपभउदार । धरणी जिण धख्यो भार ॥५॥ तोज सिंह
प्रधान । जमुवल कोयनमान । चउवै देखी श्रीदेवी । कमल
वसै सुरसेवो ॥६॥ पांचमै पुष्पनीमाला । पंचवरणसुविशा
ला । ठकै दौठोएचंद । ग्रहगणकेरोएदं ॥७॥ सातमे सुरज
सार । दूरकियोअंधकार । आठमैधजलहवती । वरणविचि
तसोहंतो ॥८॥ नवमै पूरणकुंभ भरियो निरमलअंभा देखि
सरोवर दुरुमै । मनहययो अतिविशमै ॥ ९॥ ससुद्र इग्या
रमै ठामै । खोरजलधि जमुनामै । वारम देवविमान ।

वाजिबध्वनिगीत गान ॥ १० ॥ तेरस रतननी राशि ।
 दह दिसि ज्योति प्रकाशि । सुपन चवदमे ए दीठो । पात्र
 क धूमयी मौठो ॥ ११ ॥ सुपन कल्या सुविचार । हरष्यो
 भूपउदार । पुबरतन होसै ताहरै । थासै उदय हमारै ॥
 १२ ॥ (हुहा) चवदसुपन अरणे सुणौ । हरषकियो सुविचार ।
 सुंदर सुतहुमे जनमस्यो । कुलदीपक आधार ॥ १३ ॥ वामापी
 तम वचन सुणि । आवौ मंदर ऊत्ति । देव सुगुरुकौरत
 करी । जनम कियो सुकयत्य ॥ १४ ॥ इण अनुक्रमि जग्यो
 दिवस । कौभासुपन विचार । ते धरिपहुता आपणै । दी
 धा दान अपार ॥ १५ ॥ (ढाल) ३ ॥ ॥ हिवजनम्या जंगरु
 जगलहुत जवकार । खिण इक नारकिये पायो सुख अ
 पार । दिशिकुमरी मिलकर सुखकरस निशकीध । करि या
 नक पुहती वंछित तेहनो सिध ॥ १६ ॥ तिणहीन निशि
 चोसट इंद्रमिली तिहां आवै । लेई निज भगतै सुरगिर
 स्राव करावै । करि जनम महोखुव जननी घासे ठावै ।
 तिहांथी सुरसवमिली दीप नंदीसर जावै ॥ १७ ॥ इमर
 यणविहाणी जगो दिवस उदार । बर २ गाई जै कौजे
 मङ्गलचार । इग्यारम दिवसै मिली सह परिवार । तसु
 नामदीयोअी उत्तमपास कुमार ॥ १८ ॥ प्रभु वाधै दिन २
 कलाकरी जिसचंद । बिड न्यान विराजित रूप जिसोदे
 बिंद । गुणकला विचक्षण विद्यातणोय निधान । यो वनवय
 आयो परणायो राजान ॥ १९ ॥ (ढाल ४) ॥ ॥ कुमर
 प्रदै प्रभु रहि तां काल सुखै गर्मे ए । आयोमन वैरा
 या संयम लेवासमे ए । तव लोगंतिय देव जणावै अवसर

४ । त्रैलोक्यं दानं याचकजनं सुखं कुरु ॥ १० ॥ आ
मी भयमर्ह इन्द्रादिकं भयं भिन्ना ॥ देश विदेश वि
हार करी क्रमं निरुदय्या ॥ प्रामोय केवलं न्यामं सुरै
महिमा करी ॥ आपियं च उविह संघं मुगतिं रमणीं व
री ॥ ११ ॥ (दानं) ५ ॥ ॥ इमं योगीन्द्रापासं तणां गुण
जे मर गावै । ते नरनागी इह परमो गणं वंदितं पावै ।
भयं करो भयं पति जि के गवर्दीपुर जावै । चोरधाद्र संकट
हर्त्रे विष्णुवर्गाइ नश्यावै ॥ १२ ॥ धरणराव पञ्चमावह
आमयके मिर आण । आंवल वरणं मुशोभित नवकर काव
प्रभास । कल्पवृक्ष चिन्तामणि कामगवी समतोलै । श्रीगु
ल्लोचन पीसं मरुत रंग दण परिबोले ॥ १३ ॥ इति श्री
पार्ष्णिजिन मन्त्रं ॥ ३ ॥ १० ॥ ॥ ॥

॥ ॥ राग मिधू ॥ पूजानो तं वेपरवाची । तेममता
गादो करिमाहो । रागी जिमनुभ आण आराजी । पूरेतो
पूरी पतिमाहो ॥ १ ॥ तेमाचीमेवाविधि आणी । भूलाभमे
आरासनि प्राणी । मममध आराधे मुजवाणो । तो संतोपीले
पाकाणो ॥ २ ॥ इमे इकवचनसुधामै । तेतोपिंडभरोजे पावै
नाम जय परमेसर जावै । तुंकिम केहनो पातक जावै ॥ ३ ॥
भगति भगतिवो परिना पाव । महांनाथउ जिनवर निर
वार । जिमनुजकाइन नापोकार । तिगतो भगति करी सो
वार ॥ ४ ॥ नाथचरित्तनी विमगाज । आधो मान मचीमे
आण । आनमने वचने विमगाज । आने मोटे मिहपुररा
ज ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्ष्णिजिनमन्त्रं ॥ १० ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ कर्मवचनं वेदा भगवन्तः ; धरम प्रकाशं श्रीप

रिहंत । बारै परषदावैठी जुझी । मिगसरसुदि इग्यारस
 वझी ॥ १ ॥ मल्लिनाथना तीन कल्याण । जनमदिज्ञाने के
 वल न्यान । अरिदौचा लीधीरुवझी ॥ मि० २ ॥ नमिनें ऊ
 पनो केवल न्यान । पांच कल्याणक अति परधान । ए ति
 थिनी महिमा ए वझी ॥ मि० ३ ॥ पांचभरत ऐरवत इ
 महीज । पांच कल्याणिक ऊवैतिमहीज । पंचासनी संचा
 परगझी ॥ मि० ४ ॥ अतीत अनागति गिणतां एम । दो
 ढसै कल्याणकथायै तेम । कुणतिथ ठै एतिथ जे वझी
 ॥ मि० ५ ॥ अनंत चोवीसी इण परिगिणो । लाभ अनंत
 उपवासांतणो । ए तिथि सज्ज तिथि सिरराखझी ॥ मि० ६ ॥
 मोनपणें रच्छा श्रीमल्लिनाथ । एक दिवस संयमव्रत साथ ।
 मोनतणी परिग्रत इम पझी ॥ मि० ७ ॥ अठपुहरी पोसो
 लीजीयै । चोविहारविधसुं कीजीयै । पिण परमादन कीजै
 वझी ॥ मि० ८ ॥ वरस इग्यार कीजै उपवास । जावजीव
 पिण अधिक उलहास । ए तिथ मोक्षतणी पावझी ॥ मि० ९ ॥
 उजमणो कीजै श्रीकार । न्यानना उपगरण इग्यार २ ॥
 करोकाउसगंग गुरुपाये पझी ॥ मि० १० ॥ देहरै तालकरौ
 जै वलो । पोथी पूजौजै मनरली । सुगतिपुरी कीजैदू कझी ॥
 मि० ११ ॥ मोन इग्यारसमोटोपर्व । आराध्यां सुखलहीयै
 सर्व । व्रत पञ्चक्वाण करो आखझी ॥ मि० १२ ॥ जेसलसोलइ
 क्वासी समें । कीधो तवन सह मनगमै । समय सुंदर कहे
 करोद्याहझी ॥ मि० १३ ॥ ॥ ॥ इति श्रीएकादसी द्वाद
 स्तवनं संपूर्ण ॥ ॥ ११ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ तुं मेरे मनमें प्रभु तुं मेरे दिलमें । ध्यानधरं पल २

में । पासजिणेसर अन्तरजामी । सेवकं ठिनमे ॥ [तुं०]

१ ॥ काह्म कोमन तरणीसुं राच्यो । काह्म को चितधनमें ।

मेरो मन प्रभु तुमही सुं राच्यो । ज्युंचातक चितधनमें ॥

[तुं०२] ॥ जोगीसरतेरी गति जाणें । अलखनिरंजण ठिन

में । कनक कीरति सुखसागर तुमही । साहिब तौन भवन

में ॥ [तुं०३] ॥ इति पार्श्वजिन स्तवनं ॥ ११ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मोरा साहिब हो ओसीतलनाथकि । वीनती

सुणो दूकमोरदो । दुख भाजै हो जग दीन दयाल कि ।

वात सुणी में तोरदो ॥ १ ॥ (मो०) तिणतोरै हो ऊं आयो

पासकि । मुऊमन आस्था ठै धणी । कर जोदोहो कऊं

मननौ वातकि । तुंसुणि जे लिभुवन धणो ॥ २ ॥ (मो०) ऊं

भमियोहो भवसमुद्र मऊार कि । दुख अनंतामें सद्या ।

ते जाणें हो तुंहिज जिनराजकि । में किमजायै ते कह्या

॥ ३ ॥ (मो०) भागजोगैहो तोरो श्रीभगवंत कि । दरसण

नयणे निरखियो । मन मान्यो हो मोरै तुं अरिहंतकि ।

हियदो हेजै हरखियो ॥ ४ ॥ (मो०) एक निश्चैहो में कीधो

आजकि । तुऊविणदेव बीजो नही । चिंतामणिहो जो पा

यो रतन कि । काचग्रहै कहो कुण सही ॥ ५ ॥ (मो०) पंचा

मृतहो जिण भोजनकीध कि । खलखायवा मनकिम थीयै ।

कंठतंदूहो जो अमृत पीधतो । खारो जलकहो कुण पीयै

॥ ६ ॥ (मो०) मोतीकोहो जोपहखो हारकि । चिरमठकुण

पहिरै हीयै । जमुगांठै हो लाखकोमिगरत्यकि । व्याज

काढी दामकुण लीयै ॥ ७ ॥ (मो०) घरमांहेंहो जो प्रगओ

निधानतो । देस देसांतर कुण भमें । सोनानोहो जोपोर

सोसोधतो । घातुरवादी कुणधमे ॥८॥ (मो०) जिण कौधो
 हो जवहर व्यापारकि । मणिहारौ मन किम गमे । जिणकौ
 धो हो सदा हाल ऊकम्पकि । तेतूंकारो किम खमं ॥९॥
 (मो०) तं साहिब हो मोरो जीवन प्राण कि । ऊं सेवकप्रभ
 ताहरो । सुऊ जीवत हो आज जनम प्रमाण कि । भव
 दुखभागो माहरो ॥ १० ॥ (मो०) तुऊ मूरतिहो देखंता
 प्रायकि । समवसरण सुऊ संभरै । जिन प्रतिमा हो जिन
 संरिषो जाणकि । सूरख जे सांसो करै ॥११॥ (मो०) तुम्ह
 दरसणहो सुभा आणंद पूरकि । जिम जग चंद चकोरफां ।
 तुम्ह नामे हो मोरा पाप पुलाय कि । जिमदिन जगै चो
 रफा ॥ १२ ॥ (मो०) तुम्ह दरसणि हो सुऊ मन उठारंग कि ।
 मेह अगम जिम मोरफा । तुम्हनामे हो सुख संपति धाय
 कि । मन वंठितफल मोरफा ॥१३॥ (मो०) ऊं मांगुं हो हिव
 अविहज प्रेमकि । नितनित करुं निहोरफा । सुऊ देज्यो
 हो खामौ भव भव सेवकि । चरण न ठोडुं तोरफा ॥१४॥
 (मो०) कलश ॥ इम अमर सरपुर संघ सुख करमातनं दानन्दनो
 सकलापशीतलनाथ स्वामी सकल जन आनदनो । श्रीवत्स
 लंठन वरणकंचन रूप सुंदर सोहए । एतवन कौधो समय
 सुंदर सुणित जनमनमोहए ॥१५॥ इति श्रीशीतलनाथजिन
 स्तवनम् ॥ १२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (टाल) विलसै ऋद्धिनी ॥ जय२ जिण पास जगव
 धणी । सोभा ताहरी संसार सुणी । आयो ऊं पिणधर
 आसधणी । करिवा सेवा तुम चरणतणौ ॥१॥ धन२ जेन
 पट्टे जंजालै । उपयोग सुबैसै जिनआलै । आसातनाचउरा

सीटालै । साखतासुखतेहिज संभालै ॥ २ ॥ जेनाखै स्नेहम
जिनहरमें । कलह करै गाली जूयरमें । धनुषादि कला
सीखणदूकै । कुरलो तंबोल भखै थूकै ॥ ३ ॥ सुरै वायवनी
लघुनोत तणो । संचा कंगुलिया दोष सुणो । नखकेससमा
रण रुधिर क्रिया । चांदौनी नाखे चांबनिया ॥ ४ ॥ दांतख
नेवमन पीयै कावो । खावे घांणी फूलोषावो । सूवैवेसामण
विसरावै । अज गज पसुनेदामण दावै ॥ ५ ॥ सिरं नासा
कान दसन आखै । नख गाल वपुषनामलनाखै । भिंलणो
लेखो करे संखणो । विहचण अपणो करिधन धरणो ॥ ६ ॥
वैसै पग ऊपरि पग चढियां । घापैठांणा ठांने दूंदणोयां ।
सूकवैकम्पडप्पडवनियां । नासीय छिपैनृपभय पनियां ॥ ७ ॥
शोकै रोवै विकथान कहै । इहां संख्या बे तालीसलहै । ह
यियारषांने नें पशु बांधे । तापै नांणो परखेरांधै ॥ ८ ॥ भां
जीनिसही जिनगृह पेसै । धरे ठवनें मंजुपमें बैसै । पहिरै
बल अनं पनही । चामरवीजै सनठाम नही ॥ ९ ॥ तनु
तिलसचित फल फूल लीये । भूषण तजि आप कुरुपथोये ।
दरसनथी सिर अंजलि नघरे । इगसांनै उतरासंग न करे
॥ १० ॥ ठांगोसिरपेचमोमजोमै । ददिये रमनें वैसे होमै ।
सयणांसुं जुहारकरै मुजरो । करै भंजचेष्टा कहै वचनबुरो
॥ ११ ॥ घरै घरणोऊगम उल्लांठी । सिरगुंघै बांधेपालंठी ।
पसारै पग पहरे चावनीयां । पगभटकदिरावे दुरवनीयां
॥ १२ ॥ करदसलूहै मैथुनमंजु । जूआ वलिअंठ तिहांठमै
उषांनै गुन्म करै वयदां । काढे व्यापारतणी कयदां ॥ १३ ॥
जिनहरपरनालनो नीरधरे । अंघोलेपौवाठासभरै । दूषण

जिन भवनसे एदाष्ट्या । देववंदण भाष्यमें जेभाष्या ॥१४॥ सु
 ज्ञानो आवकसगतिठतां । आसातन टाले वारसतां । पर
 मादवसै कोईथायै । आलोयां पापसहजायै ॥१५॥ तंवोलेने
 भोजन पान जूआ । मलमूव सयन स्त्रोभोगहूआ । भूषणप
 नहौ ए जघन्य दसे । वरज्या जिनमंदिर मांहिवसे ॥ १६ ॥
 द्रव्यतमे भावतदोय पूजा । एहनाहिज भेदकह्या दूजा ।
 सेवा प्रभुनौ मनसुद्ध करै । वंठित सुखलौला तेह वरै ॥
 १७ (कलश) ॥ ॐ ॥ इम भव्यप्राणी भावआणी विवेकी
 शुभवातना । जिनबिंब अरचै परीवरजै चोरासी आसा
 तना । ते गीबतीर्यकरअरजै नमें जेहनें केवली । उव
 वजाय औधमसीह वंदै जैन सासन ते वली ॥ १८ ॥ इति
 श्रीचौरासी आसातना स्तवनं ॥ ॐ ॥ १३ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ प्रणसुं ऋषभ जिनेसर पाय । धनुष पांचसै
 उंचौकाय । बीजो अजितजिन सुऊ मनवसै । मान धनुष
 साढाचारसे ॥ १ ॥ तौजो संभव सुखदातार । उंचौकाय
 धनुषसोचार । अभिनंदन जिनसुं मनलीन । देहधनुषसौ
 साढातीन ॥ २ ॥ पंचम सुमतिनाथ भगवान । धनुष तोन
 सो देहीमान । पदमप्रभू पूरै मनआस । देहधनुष दोयसै
 पंचास ॥ ३ ॥ सामि सुपारस सत्तमहोय । देहप्रमाण ध
 नुषसौ दोय । चंद्राप्रभुजिन सुऊ मनवसै । देह प्रमाण
 धनुष दोढसै ॥ ४ ॥ सुविधनाथ नमियै सुविवेक । जंच
 प्रमाण धनुषसौ एक । शौतलनाथ नमें जगसवे । देहप्रमा
 ण धनुष जसुनिवै ॥ ५ ॥ श्रीश्रेयांस नसुं जलसी । उंच
 प्रमाण धनुष तनुअसी । वासपूज्य वारमजिनचंद । मान

धनुषसित्तर सुखकंद ॥ ६ ॥ विमल विमल गुणकारि गंभीर ।
साठि धनुषजसुमान सरीर । अनन्त ज्ञान अनन्त
प्रकास । देहप्रमाण धनुष पंचास ॥ ७ ॥ पनरम धरमनाथ
जगदीश । मान धनुषजसु पेंतालीस । शांतिकरण सोलम
जिनशांति । देहधनुष चालीस सोभंति ॥ ८ ॥ सतरम कुं
धुजिन जगदाधार । मान धनुष पेंवीसउदार । अर अट्टार
मदीनदयाल । वीसधनुष तनु अति सुविशाल ॥ ९ ॥ भक्ति
नाथ जिन उगुणोसमो । मान पचीस धनुष पय नमो । वी
सम मुनिसुवत अरिहंत । वीसधनुष तनुमान कहंत ॥ १० ॥
इकवीसम नमि जिनराजान । धनुष पनरै तनु रूपनिधान ।
बावीसम ओनेमिजिणंद । दसधनुदीपै जाणदिणंद ॥ ११ ॥
तेवोसम श्रीपारसनाथ । नीलवरण सोहै नवहाथ । चो
वीसमाजिनवर श्रीवीर । सातहाथ जगनाथ सरीर ॥ १२ ॥
इणपरि ए जिणवर चोवीस । प्रणमें प्रहसमधरीयजगी
स । तांवर रिबि सिद्धिउठरंग । रंगविनें प्रणमें मुनिरं
ग ॥ १३ ॥ इति श्रीचोवीसजिन देहप्रमाण स्तवनं ॥ ॥

॥ ॥ ऋषभदेव प्रणमुं जिनराय । लाखचोराशी
पूरव आय । बीजो अजित जसु सूखैसाख । आउवज्जत्तर
पूरवलाख ॥ १ ॥ तीर्थंकर संभवतीसरो । आउलाख पूरव
साठिरो । अभिनंदन पूरै मनआस । आउलाख पूरव पं
चास ॥ २ ॥ सुमतिनाथ पंचम जगदीश । आजलाख पूर
व चालीस । श्रीपदम प्रभूनी ए यितिजाख । लाखतीस
पूरव परिमाण ॥ ३ ॥ श्रीसुपाई लखपूरववीस । दसलख
पूरव चंद प्रभुईस । सुविधनाख लखपूरव दोय । इकलख

पूरव शैतलधिति होय ॥ ४ ॥ आयु वरस चोरासौलाख ।
 श्रीश्रेयांसतणो श्रुतसाख । लाखवहुत्तर वरसांतणो ।
 वासुपुज्य परमायुषगिणो ॥ ५ ॥ विमलआउ लख साठि
 वरीस । वरस अनंत तणो लखतोस । लाखवरसदस धर
 मदिणंद । लाखवरसं श्रीशांति जिणंद ॥ ६ ॥ वरस सह
 सधिति पंचाणवै । श्रीकुंथुनाथतणो संभवै । सहस चोरा
 सी अरजिनतणो । मल्लिसहस पंचावन भणी ॥ ७ ॥ वर
 स संपूरण वीसहजार । सुनिसुव्रत परमाउदार । वीस
 सहस नमिजिन धितिभणी । वरस सहस नेमीसरतणी ॥
 ८ ॥ पास वरस एकसो सुखकंद । वरस बहुत्तर वोर
 जिनंद । ऋषभतणा तेरै अवतार । सातचंद्र संलीसरबा
 र ॥ ९ ॥ सुव्रतभव नव नवनेमीस । पार्श्ववोर दश सत्तावी
 स । विहं विहं भव सतरै जगदीस । सगलाभव एकसो
 अमृतीस ॥ १० ॥ भिडलही सज्जने धनधन । गणधर चव
 देसैवावन । सज्जने सुनि लखअड्ढावीस । सहस ऊपरै
 अमृतालीस ॥ ११ ॥ लाखचमाल ठयांल हजार । पद्मधि
 क सज्ज साधवीसोच्चार । आवक लाख पचावनधुरै । अ
 मृतालीस सहस ऊपरै ॥ १२ ॥ एक कोटि आविकासुजगी
 स । लाख पांचसहस अमृतीस । ए सिंधचतुर्विध सज्ज जिन
 तणो । रंगविने प्रणमै हितवणो ॥ १३ ॥ इति श्रीश्रीवीस
 जिन आयुप्रमाण स्तवन ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (ढाल) धरम महारथ सारथ सारं एहनी ॥ ॥
 सदगुरुचरणकमलमनधारं । लेसठ उत्तम नरअधिकारं ।
 प्रभणसुश्रुत अनुसारं जेहने नाम लियै निसतारं । आपण

सफलकृद्वै अवतारं । पामो लै भवपारं ॥१॥ ऋषभअजित
संभय अभिनंदन । सुमतिपदम प्रभुनयनानंदन । सत्तमतेम
सुपास । चंद्र प्रभुनें सुविध सीतलजिन । अयांस वासपूज्य
जिगमूरमणि । विमलगुणें करवास ॥२॥ अनंतधर्म श्रीशां
तिजिनेसर । कुंडुनाथ अरमल्लिसुहंकर । सुनिसुव्रतमभिनेम
पार्श्वयोगे जिनचोवीस । जगवठूल जगगुरुजगदीस । प्रण
मीजै धर प्रेम ॥३॥ (दाल) प्रथमरूपनगल निरख्यो एहनो ॥
॥४॥ प्रथम भरतनर इंद्र बोओ सगरसुगिंदो मधवातीजो
सुदार । चौथो सनत्कुमार ॥ ४ ॥ पांचम सांतिचक्रीस ।
ठगो कुंडुगलीस । सातमो अरनरनाथ । आठम संभमिस
नाथ ॥५॥ नवमो पटमनरेस । हरपेण दसम कहैस । इग्या
रमजय ताम । बारम ब्रह्मदत्त नाम ॥ ६ ॥ एहचकीसर
बार । खेवभरत सिंगार । मधवा सनतकुमार । पुहता
खरग मऊार ॥ ७ ॥ सभुम अनें ब्रह्मदत्त । सत्तमनिरयनि
रत । आठ यया मिथगामी । तेप्रणमुं सिरनामी ॥ ८ ॥
(दाल) ॥९॥ सुनिवर आर्य मुहम्मि एहनो ॥१०॥ पहिलो
विप्रष्टि जाण । द्विप्रष्ट दूमरो । तीजो स्वयं प्रभु जणीयै ए ।
पुरुषोत्तमए बोबा । पंचम परगदो । पुरुष सिंह प्रमाणीयै
ए ॥११॥ ठग पुरुष पुंढरोक । दत्ततिस सातमो । लच्छण
नाम सातमो । नवमां लज्जनरेम । एनवकेमवा । प्रहज्जो
ए पिण नमं ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव । नारकी
सातमो । आगला पंच ठगो गथाण । सातमो पंचमनैर ।
चौथो सातमो । नवमां बोओ नारीबार ॥ ११ ॥ सचलधि
मधमं भद्र । सुप्रभुसुदर्शन । सामंद नंदनसुभमतीए । राम

चंद्रबलभद्र । बलदेव ए नव । आठ थया तिहां सिवगुती
 ए ॥ १२ ॥ बलभद्र ब्रम्ह देवलोक । काल उसप्पणी । जा
 स्यै सिवकृष्णसासणे । अथवा निपुलाक नाम । तीर्थ-
 कर होस्यै । चवदमो इम बल्लभुत भणै ॥ १३ ॥ (ढाल ४)
 कुमर पणै प्रभु रहतां काल सुखे गमेण एहनौ ॥ ॥
 अख ग्रीवने तारक मेरु कवलि मधुतिसाए । निशुं भवलय
 प्रह्लाद रावण जरासिंधु जिसाए । एनव प्रति वासुदेव नरक
 गतिगामियाए । तेपिण भावजिणोस कीई प्रणसुं सुदाए
 ॥ १४ ॥ (ढाल ५) सफलसंसारनौ ॥ ॥ सांतिनें कुंघ
 अरि एहभव एकही । चक्रधर तीर्थकर दोय पदवीलही ।
 बीर वासुदेव अरिहंत भवजू जूआ । देह तिण साठ पिण
 जीव गुणसठ थया ॥ १५ ॥ वासुदेव वलीय बलदेव कीरा
 पिता । एकहिजयाय नवएण लेखै ठता । तीनचक्रधरतणा
 मिलिय बारै टल्या । एम बेसठना तातइकवनमिल्या ॥ १६ ॥
 तीन चक्रव्रततणी ढाल दीनै जिसै । मायसज्जनौ थई साठ
 लेखै इसै । एह नररयणनो ध्यान जित जेधरै । तेहसुरपद
 लही मोक्षपदवी वरै ॥ १७ ॥ (कलश) इमयुग्यातीर्थ कर
 चक्रौसर वासुदेव बलदेव ए । प्रतिवासुदेवसु सेवजेहनौ करै
 सुरनर सेवए । बेसठ सिलाका पुरुष उत्तम जगेंजयवंता
 सदा । प्रहसमें तेहना चरणपंकज नमें सुनिवसतो सुदा ॥
 १८ ॥ इति बेसठि सिलाका पुरसस्तवनम् ॥ ॥

॥ ॥ (ढाल कपूर हुवे अतिजल्लोरे एहनौ) ॥ ॥
 वरधमान जिनवरतणीजी चरणनसुं नितलाय ग्यानक्रिया
 जिण उपदिसै जी । शिवसुखतणो उपाय ॥ १९ ॥ (भविकवन

घर श्रीजिन उपदेस । ठटे कर्म कलेस भ० ॥ पडिलेहण
सुहृत्पति तणीजी । भाषीठै पचवीस । तिहां एभाव वि
चारोयै जी । इम भाषै जगदीस ॥ २ ॥ (भ०) प्रथम बेपास
विलोकीयै जी । सूत्र अरथनौ दृष्टि । एपडि लेहणदृष्टिनी
जो । करै धर्मनी पुष्टि ॥ ३ ॥ (भ०) समकित मिथ्या मिथ्य
नीजी । मोहनी तौननो त्याग । काम राग स्नेहरागनें जी
तजवलि तिम. दृष्टि राग ॥ ४ ॥ (भ०) सौषवधूटक गुरु
थकी जी । वामहाथ करनाउ । नव अखोफा आदगे जी ।
नवपषोफा गमाउ ॥ ५ ॥ (भ०) देव तत्व गुरुतत्वसुं जी
धर्मतत्वगृहसार । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो जी । तौनतणो
परिहार ॥ ६ ॥ (भ०) ग्यानदरसण चारिखना जी । संग्रह
तीन आचार । तजो विराधनतौन एजी । एह अरथ अव
धार ॥ ७ ॥ (भ०) मन वच कायानी सदा जी । गुपतिगृहो
जे सुद्ध । परिहरियै वलि जाणनें जी । तोने दंढ विसुद्ध ॥ ८ ॥
(भ०) पडिलेहण पचवीसए जी । सुहृत्पतीनो सार । द्वि
पडिलेहण अंगनी जी । ते पिणचतुर विचार ॥ ९ ॥ (भ०)
हास्य अरति रति धोयनें जी । सुद्धकरो वाम वांह । तजि
भय शोक दुगंठना जी । दक्षिण पिण करै साद्ध ॥ १० ॥
(भ०) धुरली लेखा तौन एजी । ते सिर थो करि दूर ।
रिद्धिरस साता गारवो जी । करिसुख थो चकचूर ॥ ११ ॥
(भ०) काढसलपतीन उरथकी जी । मायानियाण मिथ्यात
चार कषाय वे वगलथीजी । क्रोधादिक करिघात ॥ १२ ॥
(भ०) तजखटकाय विराधना जी । चरण बिगहे सुद्धहोय
ए पडिलेहण अंगनी जी । पचवीसतुं जोय ॥ १३ ॥ [भ०]

इम प्रतिलेहण जेकरै जौ । धरमन ग्यान विवेक । सकल
 कर्म दूरै करै जौ । पामें सुख अनेक ॥१४॥ [भ० कलश]
 इम वीरजिणवर तणसुख धी अरथ गणधरसांभली ।
 कहै सूत्रवाणी मनसुहाणी सुणो भविषण ममरलो । उव
 ज्जायवर सिरि लल्लुकी रति मुख यकी ए संग्रही । सुं ह
 प्रतो प्रतिलेहण तणी विधि लल्लिवल्लभगणि कही ॥ १५ ॥
 इति श्रीसुं हपती प्रतिलेहण स्तवनं ॥ १४ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ श्रीविमलाचल सिरतिलो । आदीसर अरिहं
 त । जुगला धरम निवारणो । भयभंजण भगवंत ॥१॥ श्री०॥
 सुऊ मनजलट अतिषणो [रि] । सोदिन सफलगिणेश । खा
 भी औरिसहेसह । जव नयणे निरखेस ॥ २ श्री० ॥ जंगम
 तीरथ विहरता । साधुतणै परिवार । आदिजिणंद समो
 सखा । पूरव निनाणूं वार ॥ ३ श्री०॥ अचराविजयानंदने ।
 जगबंधव जगतात । इण गिरिचउमासै रक्षा । यिवर
 कहै ए बात ॥ ४ श्री० ॥ पामें शिवसुख सासता । गणधर
 ओपुंद्रोक्त । पुंद्रगिरि तिणकारणें । भगतिकरो निर
 भीक्त ॥ ५ श्री० ॥ नमिने विनमि सहोदह । विद्याधर बल
 वंत । सेवुंजसिखर समोसखा । जेगरया गुणवंत ॥ ६
 श्री० ॥ थावच्चा सुनिवरसुक । सहस्र परिवार । पंथगव
 यणे जागीयो । सोसेलगअणगार ॥ ७ श्री० ॥ पांद्रवपांच
 महाबली । सुणि जादवनिरवाण । ते सीधा सिद्धाचले ।

॥ सोसैवालोंके देववंदनादिकमें बोलणेंकुं इहां केई तवन वेशी
 रंख्या है (अर चतुर्दशीकुं प्रतिक्रमणमें दृष्ट. स्तवन अजीसंतो) वा ।
 उल्लासिकम० कहै इति समादायः ।

सुर नर करै वखांल ॥ ८ श्री० ॥ इम सीधा इण्णंगरै ।
 सुनिधर कोडाकोडि ॥ । पाजचढं तासांभरै । ते प्रणसुं कर
 जोडि ॥ ९ श्री० ॥ जे वाषणिप्रति बूज्जवी । ते दरवाजे जो
 य । गोमुखयत्त कवणमिली । सानिधकारी होय ॥ १०
 श्री० ॥ जे विधसुं यावा करै । सुर नर सेवकतास । राज
 समुद्रगुण गावतां । अविचल लीलविलास ॥ ११ श्री ॥
 इति सेचुं जय स्तवनं ॥ ॐ ॥ १५ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ऋषभ जिनेसर दिनकर साहिव । वीनतनौ अ
 वधरोरे ॥ (जगनातार । मुऊतारोनी कृपानिधिस्वामी) ॥
 जगजसवाद् प्रगट्ठैताहरो । अविचल सुखदातारोरे ॥
 ज० १ मु ॥ निजगुणभोक्ता परगुणलोप्ता । आतम सगति
 जगायारे ॥ ज० ॥ अविनासी अविचल अविकारी । शिववा
 सी जिनरायारे ॥ ज० २ मु० ॥ इत्यादिक गुणअवणे निसु
 गौ । ऊं तुमचरणे आयोरे ॥ ज० ॥ तुमरींजावण हेतै
 ततखण । नाटक खेलमचायोरे ॥ ज० २ मु० ॥ काल अ
 नंत रह्यो ए केंद्री । तरसाधारण पामीरे ॥ ज० ॥ वरस
 संख्यातावलि विकलेंद्री । वेपथ्या दुखधामीरे ॥ ज० ४
 मु० ॥ सुर नरतिग्विलि नरकतणोगति । पंचेंद्रौपणोधा
 योरे ॥ ज० ॥ चौबीसे टंकमांहि भमियो । अवतोड्डं पि
 यथायोरे ॥ ज० ५ मु० ॥ भवनाटक नितकरतो नवनव ।
 ऊं तुऊ जागलि नाचोरे ॥ ज० ॥ समरथ साहिव सुरतक
 रगियो । मिरखी तुऊने जाचोरे ॥ ज० ६ मु० ॥ जोसुऊ ना
 टकदेशीरीजा । तो सुऊ बंठितरीजैरे ॥ ज० ॥ जो नवि
 रे जा । तोसुऊ भापो । वलिनाटक नविकीजैरे ॥ ज० ७ मु० ॥

लालचघरि ऊं सेवासारं । तं दुष्प्रज्ञानविकापैरे ॥ ज० ॥
 दातासेतीसूं बभलेरो । बहिलो उत्तर आपैरे ॥ ज० ८ सु० ॥
 तुझ सरिषा साहिव पिणमाहरो । जो नवि कारज सारो
 रे ॥ ज० ॥ तो सुझ करमतणी गति अवली । दोसनकोई तु
 मारोरे ॥ ज० ९ सु० ॥ दौनदयाल दयाकरि दीजै । सुध
 समकित सहिनाणीरे ॥ ज० ॥ सुगुण सेवकना वंछित
 पूरो । तेहिजगुण मणिषाणीरे ॥ ज० १० सु० ॥ वर्ष अठारै
 गुणतालीसै । ज्येष्ठसुदौ सोमवारोरे ॥ ज० ॥ जालचंद
 प्रतिपददिन भेद्या । वीकानेर मज्जारोरे ॥ ज० ११ सु० ॥
 इति श्री ऋषभदेवजी स्तवनं ॥ ॥ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ वीरसुणो मोरी वीनती । करजोहीहो कज्जंम
 ननी वात । बालकनी परिवीनवुं । मोरा सामीहो तूं बिभु
 धनतात ॥ १ वी० ॥ तुम दरसणविण ऊं भयो । भवमांहे
 हो सामी समुद्रमभार । दुख अनंतामें सह्या । तेकहि तां
 हो किमआवै पार ॥ २ वी० ॥ परउपगारौ तुं प्रभु । दुखमां
 जैहो जगदीनदयाल । तिणतोरै चरणें ऊं आवीयो । सामी
 मुझनेहो निज नखण निहाल ॥ ३ वी० ॥ अपराधौ पिणऊ
 धर्या । ते कौधोहो करुणा मोरासाम । ऊं तो परमभगत
 ताहरो । तिणतारोहो नहीं दीलनो काम ॥ ४ वी० ॥ सुल
 प्राणप्रति बुझव्या । जिण कौषाहो तुझने उपसर्ग । मं क
 दोयो चंद्रकोसीये । ते दीधोहो तसु आठमोरुग ॥ ५ वी० ॥
 गोसालो गुनहीषण । जिण बोलयाहो तोरा अवरणवाद ।
 ते बलतो ते राखीयो । सीतलेस्याहो मूंकी सुप्रसाद ॥
 ६ वी० ॥ ए कुण्डै इंद्रजालीयो । इम कहितां हो आबो

तुम तोर । ते गोतमनें तैं कीयो । पोतानोहो प्रभुतानोव
 जीर ॥ ७ वी० ॥ वचनउयाप्पा ताहरा । जेऊगढोहो तु
 ऊसाथजमाल । तेहनें पिणपनरै भवे । सिवगामीहोतैं कौ
 घो कृपाल ॥ ८ वी० ॥ अमत्तोरिषजेरयो । जलमांहे हो
 बांधी माटीनीपाल । तिरतीमूंकीकाचली । तें ताखो हो
 तेहनें ततकाल ॥ ९ वी० ॥ मेघकुमर रिषदूहयो । चितचू
 कोहो चारितथी अपार । एकावतारो तेहनें तें कीघो हो
 करुणा भंजार ॥ १० वी० ॥ वारवरस वेखावरे । रघ्यो मूंकी
 हो संयमनोभार । नंदखेणपिणजवख्यो । सुरपदवीहो दी
 घी अतिसार ॥ ११ वी० ॥ पंच महाव्रत परिहरी । ग्रह
 वासैहोवसिया वरस चोवीस । तेपिण आद्र कुमारनें । तें
 ताखोहोतोरी एह जंगीस ॥ १२ वी० ॥ राख्यशेणक रा
 गीत्रेलणा । रूपदेखी हो चितचूका जेह । समवसरण
 साधु साधवी । तें कीधाहो आराधिक तेह ॥ १३ वी० ॥
 विरत नहीं नहीं आखती । नहीं पोसोहो नहीं आदर दी
 ख । ते पिण अणिकरायनें । तें कीघोहो सामी आपसरीख ॥
 १४ वी० ॥ इम अनेक तें जवखा । कहुं तोराहो किता
 अवदात । सारकरो हिवमाहरी । मनमांहेहो आणो मो
 रनो वात ॥ १५ वी० ॥ सूघो संजम नविपलै । नहीं ते ह
 वोहो सु ऊदरसण नाण । पिण आधारठै एतलो । इक
 तोरोहो घर निखल ध्यान ॥ १६ वी० ॥ मेह महीतल व
 रसतो । नविजोवैहो समविखमौ ठाम । गरुआ सहिजे गु
 ण करै । खामी सारो हो मोरा बंठित काम ॥ १७ वी० ॥
 तुम नामें सुख संपदा । तुम नामें हो दुख जायै दूर । तुम

नामें बंझित फलै । तुम नामें हो सुज आणंदपूर ॥ १८
 वी० ॥ (कलश) ॥ ॐ ॥ इमं नगर जेसलमेर मंजण तीर्थ
 कर चोवीसमो । सासनाधीसर सिंहलंडन सेवतां सुरतर
 समो । जिणचंद बिसलामातनंदन सकल चंदकला नि
 लो । वाचनाचारन समय सुंदर संयुखो बिभुवनतिलो ॥
 १९ ॥ इति श्रीमहावीर जिनस्त्वनं ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ अथ चोवीस दंढक स्तवनलि ॥

॥ ॐ ॥ (ढाल आदर जीव क्षमागुण आदर) एहनौ
 ॥ ॐ ॥ पूर मनोरथ पासजिनेसर । एहकहं अरदासजी ।
 तारणतरण विरद तुज सांभलि । आवो ऊं धरिआस जी
 ॥ १ ॥ (पू०) इण संसार समुद्र अयागै । भमियो भवजल
 मांहि जी । गिलगिचिया जिम आयो गिमतो । साहिब
 हाथे साहिजी ॥ २ ॥ (पू०) तुं ग्यानीतो पिण तुज आगै
 वीरककहीयै वात जी । चोवीसे दंढक ऊं भमियो । वर
 गुं तेह विख्यात जी ॥ ३ ॥ (पू०) साते नरक तणो इकदंढ
 क । असुरादिक दस जाणजी । पांच थावर नें तीन विकले
 द्रौ । उगलीसगिणती आणजी ॥ ४ ॥ (पू०) पंचेद्रौ तिर्यं च
 नें मानव । एहयथा इकवीस जी । व्यंतर ज्योतिषीने वेमा
 शिक । इमदंढक चोवीसजी ॥ ५ ॥ (पू०) पंचेद्रौ तिर्यं च
 अनेनर । परयाप्ता जे होय जी । एचोविहदेवां मे उपजै ।
 इमदेवां गति दोय जी ॥ ६ ॥ (पू०) असंख्यात आजपै नर
 तिरि । निहचै देवजयायजी । निम आउखे सम के उठै ।
 पिण अधिकैनविजाय जी ॥ ७ ॥ (पू०) भवनपतो के व्यंतर

ताई । समूर्तिम तिरयंच जी । सरग आठमा ताई पुहच
 गरभज सुकत संचजी ॥८॥ (पू०) आज संख्या तै जे गरभ
 ज । नरतिरयंच विवेक जी । वादरपृथवीने वलिपाणी । वन
 स्पती प्रत्येक जी ॥ ९ ॥ (पू०) परियाप्ता इण पांचे ठामे
 आवी उपजै देवजी । इण पांचामाहे पिण आगे । अधिकाई
 कड हेव जी ॥ १० ॥ (पू०) तोजा सरग थकी मांजोसुर ।
 एकेंद्रो नवि थाय जी । अट्टम थो उपरिला सगला । मांन
 वमाहे जायजी ॥११॥ (पू०) [ठाल २ आजनिहेज्योरे दोसै
 नाहलो एहनी ।] ॥११॥ नरकतणी गति आगति इण परै ।
 जोवभमे संसार । दोयगतिने दोय आगति जाणीयै । वलीय
 विशेष विचार ॥१२॥ (न०) संख्या तै आजपरयापता । पं
 चेद्री तिरयंच । तिमहीज मनुष्य एहिज बे नरकमे । जायै
 प्राप प्रपंच ॥ १३ ॥ (न०) प्रथम नरकलगि जाय असन्नियो
 गोहनकुल तिम बौय । गृध्रप्रमुख पंखी लीजी लगे । सींह
 प्रमुख चोथीय ॥ १४ ॥ (न०) पंचमी नरकै सीमासापणो ।
 ठगोलगि लीजाय । सातमीये मांणस कै माठलो । उपजै
 गरभज आय ॥१५॥ (न०) नरक थकी आवै बिड्डं दंडकै ।
 तिरयंच कै नरथाय । तेपिणगरभज ने परयापता । संख्या
 तो जसुआय ॥ १६ ॥ (न०) नारकियांने नरकथी नीसख्यां ।
 जे कल प्राप्त होय । उत्कृष्टे भांगे करि ते कड । पिण
 निजै नही कोय ॥१७॥ (न०) प्रथम नरकथी चवि चक्रव
 र्तिज्जवै । बीजी हरिबलदेव । तीजीलगि तौर्यंकर पदलहै ।
 चोथी केवल एव ॥ १८॥ (न०) पंचमीनरकनो सरबविरति
 लहै । ठगो देस विरस । सातमी नरक नो समकित हीज

लहै । न ऊँ वै अधिक निमित्त ॥ १६ ॥ (न०) [ढाल ३ ॥ ॥
 (करम परीक्षा करणकुमर चलयो रे) एहनी ॥ ॥ मानव
 गति विण सुगति ऊँ वै नहीरे । एहनो इम अधिकार । आ
 ऊसंख्यातै नरसङ्गदंजकैरे । आवीलहै अवतार ॥ २० ॥ (मा०)
 तेऊ बाऊ दंजक बेतजीरे । बीजाजेबावीस । तिहांथी ।
 आया थायै मानवीरे । सुखदुख कर्मसरीस ॥ २१ ॥ (मा०)
 नर तिरयंच असंखी आउषेरे । सातमौ नरकना तेम ।
 तिहांथी मरनें ममुष्य ऊँ वै नही रे अरिहंत भाष्योएम
 ॥ २२ ॥ (मा०) वासुदेव बलदेव तथा बलीरे । चक्रवर्तिनें
 अरिहंतां सरग नरगना आया ए ऊँ वैरे । नरतिरथी न ऊँ
 वंत ॥ २३ ॥ (मा०) चोविहदेव थकी चवि ऊपजैरे चक्रवर्ति
 बलदेव । वासुदेव तीर्थंकर एऊँ वै रे । वेमानकघोवै ॥ २४
 (मा०) [ढाल ४ नाभि अनेमरुदेवा] एहनी ॥ ॥ हिवतिर
 यंच तणी गति आगति कहौयै अशेष । जीवभमें इण
 परभव मांहे करम विशेष । आऊ संख्यातो जे नर
 तिर्यंच विचार । तेसगला तिरयंचामांहे लहै अवतार ॥
 २५ ॥ जिणतिरयंचां मांहे आवै नारकदेव । ते कछा
 पहिली तिणकारण नकऊं हेव । पंचेंद्रौ तिरयंच संख्यातै
 आऊखै जेह । ते मरी चिड़ंगतिमांजावै इहां नहौ
 संदेह ॥ २६ ॥ थावर पांच तीने विकलेंद्रौ आठे कहावै ।
 तिहांथी आऊसंख्याता नरतिरयंचमें आवे । विकल
 चवीलहै सरब विरति पिणसु गति न पावै । तेऊबाऊ
 थो आयो तेहने समकितनावै ॥ २७ ॥ नारक वरजौनें
 सगलाहो जीव संसार । प्रथमौ आऊवनस्यतो मांहिलहै

अवतार । एतीने इहां चौचविआवै दसे ठामे । थावर
विकल तिरो नर मांहे उतपत पामै ॥ २८ ॥ पृथवोकाय
आदि देई दस दंढकै एह । तेऊवाऊमांहे आवी उपजै
तेह । मनुष्य विना नवमांहे तेऊवाऊ बे जावै विकलेंद्री
तेदसमांहि जावै पूठाहीआवै ॥ २९ ॥ एम अनादितणो
मिथ्यातो जीवएकंत । वनस्पतोमांहे तिहां रहौयो काल
अनंत । पुठवौ पाणो अगनि अने चोयो वलिवाय । काल
चक्र असंख्याता तांइ जीव रहाय ॥ ३० ॥ बेइंद्रीतेइंद्री
अने चौरिंद्री मभारौ संख्याता वरसांलगै भमियो करम
प्रकारै । सात आठभव लगितां नर तिरयंचमे रहियो ।
हिव मानवभवलहिने साधुनो वेषमे रहियो ॥ ३१ ॥
रागद्वेष ठूटे नहौ किम ह्वे ठूठकवार । पिण्डे माहरै
मनसुध ताहरो एक आधार । तारणतरण में बिकरण
सुहै अरिहंत लाधो । हिव संसार वणो भमियो तो पुद
गल आधो ॥ ३२ ॥ तुंमन वंठित पूरण आपद चूरणसामी
ताहरी सेवलही तो मेंनवनिध सिधपामी । अवरनकांइ इछं
इण भव तुंही ज देव । सूधै मन एक हो ज्यो भव भव ता
हरी सेव ॥ ३३ ॥ [कलश] ॥ इस सकलसुखकर नगर जेसल
मेर महिमा दिन दिने । संवतसतरै उगणतीसैदिवसदीवा
लीतणें । गुणविमलचंद समान वाचक विजैहरष सुसी सए
ओपासना गुणएमगावै धरमसौ सुजगीसए ॥ ३४ ॥ इति
यौ चोवीस दंढक स्तवनम् ॥ ॥ ॥

॥ इरियावहीमिन्नामिदुक्कसंख्या स्तवनलि० ॥

॥॥ प्रभु प्रणसुरे पासजिणेसर थंभणो एह्णो ॥॥

पदपंकज रे प्रणमी वीरजिनंदना । विकरण सुधरे करि सु
निवरपय वंदना । अमत्तैरे पणिकमी जिम इरिवावहौ ।
श्रीवीरनौरे वाणो तहतकरि सरदहौ । (उ०) सरदहीवाणी
मनसुहाणी चित्तआणी तेवली । मिन्नामिदुक्कतणी संख्या
कहिसुं जिम कहौ केवली । भू दग जलण तिम वाउ वण
सइविंगल पण इंद्रोतणी । करतां विराहण करमबंध्या दूर
ते करिवाभणी ॥ १ ॥ (चाल) पुढवीदगरे वाऊतेऊ वण
सई । पण थावररे वादरसुहम दसेथई । प्रत्येकजरे क
ण सइ इग्यारहयया । बावौसेरे पज्जत्तग अपज्जत्तया ।
(उल्लाहो) पज्जत्त अपज्जत्तगवषाण्या विंगलतिव ठहभा
लए । जल थल खचर भुयंगदुइपण इंद्रिय तिरि अण
आलए । वस्मादि साते नरक पुढवी नारकी तिहां सात
जे । ते चवद भेदै करी जाणो पजत्तय अपजत्तजे ॥ २ ॥
(चाल) पनरह विधरे सुरगण परमाहम्मिया । किल वि
खियारे त्रिविध करम ते निम्मिया । जंभिय दसरे नव
लोगंतिक जाणियै । सोलहविधरे व्यंतर देव वखाणियै ।
(उल्लाहो) वखाणियै दसविध भुवनपतिना ताररवि स
शिरिसिगहा । चरथिर दसेविध जोइसीसुर वखाण्या जिण
वरजिहां । बारह विमानक पणअणुत्तर नवग्रीवे के नव
भण्या । पजत्त अपजत्तग अठाणुं अवक सतसंख्यागि
ण्या ॥ ढाल २ मेव आगमसही एह्णो ॥॥ पंचभरत व
लि ऐरवत पंच पंच विदेहवर भूमिका ए । खेल एनरह

करम भूमि जाणीये असि कसि मसिहि आजीविकाए ।
 हेमवत खेव वलि तिम हरिवर्ष रम्यक एरण्यवत सहोए ।
 मेरुपिण पाखती चारिखेव दस कुरु अकरम भूमौकहोए ॥
 ४ ॥ हिमगिर सिहरीय दाढिचीयारि लवण समुद्रमां
 हि विस्तरीए । सातः अंतर दोय पासै दीप उपन
 अन्तर धरोए । दोइसै भेद दुइ आगला जाणि मणय
 पञ्जस अपञ्जसयाए । एकसौ एक समुद्धिम भेद तीनसै
 तीनमणुआययाए ॥ ५ ॥ (हिव जनम्या जगगुरु०)
 एहनी ॥ पणसय बेसठिविध जीवसह ठे एह । अभिहय
 आदिक दसगुणित करीजै तेह । पणसहस ठसै वलि बीस
 अधिकते जाणि । ते रागैदोसै दुगणा करी वखाण ॥
 ६ ॥ ऊइसहस इग्यारह दुइसय साठि प्रमाण । ए प्रवच
 नवाणी जाणी हितउर आण । मनवचकाया करि
 विगुणाकरि तिअंक । तेत्तोस सहस सत सातअसी निः
 संक ॥ ७ ॥ वलि करण करावण अनुमति विगुणा किअ ।
 इकलकल सहसदृग तिसयचालीस प्रसिद्ध । अतीत अना
 गत वर्त्तमान वलिकाल । जेयइयविराधना तिणि विगुण
 संभाल ॥ ८ ॥ तोनलाखसहसचार बेसै अधिक तेथाय ।
 अरिहंत प्रमुखठह साखैठगुणा भाय । दस लाख अटारह
 वलि सप्तस चउवीस । इकसो बीसोत्तर ऊइ संख्यानि
 सटोस ॥ ९ ॥ ढाल४ चांपरनी ॥ ॥ इण परिमिद्धामि दु
 बलंदेई । भविक तथा भवजलनिधिजेई । तरै अठै वलि
 आगलि तरिखी । निरमल केवल लखमीवरिसौ ॥ १० ॥
 इरियावही धरम गङ्गाजल । न्हाल करै आतमकरि निर

मल । सें मुखभाषै वीरजिणसर । सूखकरी गूधै ते श्रुत
 धर ॥ ११ ॥ इम पत्तिकमौ मुनिवर अइमत्तो । वीरसीस
 केवल पदपत्तो । तिकरणसुधतसु पयप्रणमौ जै । मानव ज
 नम सफल इम कौजै ॥ १२ (कलश) ॥ ॥ इम वीरजिण
 वर ग्यान दिणयर सयललोय सुहं करो । तियलोय सामौ
 सिद्धिगामी सुद्धधरम धुरंधरो । उवज्जय लच्छौकीर्त्ति ।
 सीसै जैनवाणी मनधरी । गणिलल्लिखल्लभ तवन करि इम
 संयुण्यो भावै करी ॥ १३ ॥ इति इरियावहीमिष्ठामिदुक्क
 संख्या स्तवनं ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ पंचसमवाय स्तवनलि ॥

॥ ॥ सिद्धारथ सुतवंदियै । जगदीपकजिनराज । व
 स्तुभाव सब जाणियै । जय आगम थी आज ॥ १ ॥ स्यादवा
 द्यौ संपजै । सकल वस्तु विख्यात । सप्तभंगि रचना विना
 बंधन बैसै वात ॥ २ ॥ वादवदै नय जूजुआ । आप आपणै
 ठाम । पूरणवस्तु विचारतां । कोइ न आवै काम ॥ ३ ॥
 अंध प्रहूपै एहगज । ग्रही अवयव एकेक । दृष्टिवंत लहै
 पूर्णगज । अवयव मिली अनेक ॥ ४ ॥ संयुत सकलनयै
 करी । जुगत २ सुध बोध । धनजिनसासन जगजयो । तिहां
 नही कोइ विरोध ॥ ५ ॥ (ढाल १ आसाउरौ राग ॥) औ
 जिन सासन जगजयकारौ । स्यादवाद शुद्धसरूपरे । नय
 एकांत मिथ्यात्वनिवारण । अकल अभंग अनूपरे ॥ ६ ॥
 औ० कोई कहै एकाल तणें वस । सकलजगतगत होयर ।
 कालै उपजै विणसे कालै । अवरनकारण कोइ रे ॥ ७ ॥

श्री० ॥ कालै गर्भ धरै जगवनिता । कालै जनमे पूत रे ।
 कालै बोलै कालै चालै । कालै जालै घर सूतरे ॥ ८ श्री० ॥
 कालै दूध थकी दही आयै । कालै फल परपाक रे । विविध
 पदारथ काल उपायै । अंतकरै बेवाकरै ॥ ९ श्री० ॥ जिन
 चउवौसे बारचक्कवै । बासुदेव बलवंतरे । कालै कविलन
 कोई नदीसै । जसुकरता सुर सेवरे ॥ १० श्री० ॥ उत्सर्गणि
 अवसर्पणि आरा । ठैठै जूजयें भांतैरे । घटरिह काल वि
 शेष विचारो । भिन्नभिन्न दिन रातरे ॥ ११ श्री० ॥ कालै
 बालविलास मनोहर । योवन कालाकेशरे । बुडुपणेंऊय
 वलि दुर्बल । सकत नहीलवलेसरे ॥ १२ श्री० ॥ ठालरे गिर
 आगुण ओवीरजी एहनो ॥ तब समाव वादो वदैजो ।
 कालकिहुं करै रंक । वस्तु सुभावै नौपजे जो । विणस ति
 भज निस्संक ॥ १३ ॥ (सुविवेक विचारीजूओरवस्तु सुभाव) ॥
 ठैठै योग जावनवतो जो । वांजणि न जणै बाल । मूठनही
 महिला सुखे जो । करतल ऊगै न बाल ॥ १४ सु० ॥ विणस
 भाव नविसंपजै जो । किमह पदारथकोय । अवनलागै नौ
 बढेजो । वागवसंते जोय ॥ १५ सु० ॥ मोर पौठ कुणचोत
 रै जो । कुण करै संध्या रंग । अंगविविधसविजीवनाजो ।
 सुंदर नयनकरंग ॥ १६ सु० ॥ कांटा बोरबलनाजी । कुण
 अणियाला कौध । रूपरग गुणजूजूआजी । तस फल फल
 प्रसिद्ध ॥ १७ सु० ॥ विसहरमस्तके नितवसैजो । मणिहरै
 विसततकाल । परबतथिर चल वायरोजो । उरध अगननो
 जाल ॥ १८ सु० ॥ मल्ल तुंब जलमांतरे जो । बूझै कागपाहाण ।
 पंख जाति गयणे फिरै जो । इणपरै सहिज विनाण ॥ १९ ॥

सु०॥ वयसुं ठ थी उपसमें जी। हरडै करै विरेच। सौं
 नहि कणकांगदो जी। सकल सुभाव अनेक ॥ २० ॥ सु० ॥
 देश विशेषै काठनो जी। भुयसांथायै पाषाण। संख अ
 स्थिनो नीपजै जी। चेतसभाव प्रमाण ॥ २१ सु० ॥ रवि
 तालो शशि सीयलो जी। भव्यादिक बज्रभाव। ठए द्रव्य
 आपाण जी। न तजै कोइ सुभाव ॥ २२ सु० ॥ (ढालइ)
 कपूरजुवै अति ऊजलो रे एहनी ॥ काल किसुं करै बाप
 मोरे। वस्तु सुभाव अकज्ज। जो नहोइ भवतव्यताजी।
 तो किस सौं कै कज्ज रे ॥ २३ ॥ (प्राणो मकरोमनजंजाल)।
 एतो भावो भाव निहाल रे ॥ प्रा० ॥ जलधितरै जंगलफिरै
 जी। कोटि यतन करै कोय। अणभावो होवै नहीं जी।
 भावी होय ते होय रे ॥ २४ प्रा० ॥ आवै भौर वसंतमांजी।
 फालै कोईलाख। खस्यो कई घांघटी जी। केइ आंवा कई
 साख रे ॥ २५ प्रा० ॥ वाउल जिस भवतव्यता जी। जिणइ
 दिशे उजाय। परवसमनमाणस तणो जी। टणजिमपूठै
 घाय रे ॥ २६ प्रा० ॥ नियत बसै विण चिंतव्युं जी। आवी
 मिलै ततकाल। वरसांसोनुं चिंतव्यो जी। नियत करै वि
 सराल रे ॥ २७ प्रा० ॥ आठमो चक्रि सुभूमितेजी। समुद्र
 पड़ो विकराल। ब्रम्हदक्ष चक्रौतण जी। नयन हरै गो
 बाल रे ॥ २८ प्रा० ॥ कोकूहा कोयल करै जी। किम राखी
 सरै प्राण। आहेती सरताकोयो जी। ऊपर भमेंसीं चाणरे
 ॥ २९ प्रा० ॥ आहेती नागेंद्रसो जी। बाणलग्यो सींजाण।
 कोकूहो छली गयो जी। जोड़ नियत परमाणरे ॥ ३० ॥
 प्रा० ॥ सखइण्यो संग्राममांजी। रानपड़ाजीवंत। मंदिर

मांहे मानवीजौ । राख्याही नरहंतरे ॥३१॥ प्रा०॥ (ढाले ४
 रागमारुणो मनोहरणी) ॥३२॥ काल स्वभाव नियतमति
 कूटनी । करम करै ते थाय । करमे नरय तिरिय नरसुर
 गति । जीव भवंतरै जाय ॥ ३३ ॥ (चेतन चेतज्योरे करम
 न छूटे कोय) । करमे राम वस्त्रा वनवासे । सीता पाम्मी
 आल । कमे लंका पतिरावणनु । राज्य थयो विसराल ॥
 ॥ ३३ चे० ॥ कमे कौटनी कमे कुंजर । कमे नरगुणवंत ।
 कमे रोग सोग दुखपीडित । जनम जायै विलसंत ॥३४॥
 चे०) करमे वरसलगेरिसहेसर । उदक न पामे अन्न । कमे
 जिनने जोड गिमारे । खीलारोष्या कन्न ॥ ३५ चे० ॥ कमे
 एक सुख पालै बैसै । सेवक सेवै पाय । एक ह्य गयंचक्या
 चतुर नर । एक आगलजजाय ॥ ३६ चे० ॥ उदममानी
 अंधतणी परि । जगहीट्टे हाहंतो । कर्मवली तेलहै सकल
 फल । सुख भर सैजै सूतो ॥ ३७ चे० ॥ उंदर एकै कौधो
 उदम । करंजियो करकोले । मांहे षण्णादिवसनो भूखो
 नागरह्यो ममकोले ॥ ३८ चे० ॥ विवरकरी मूषकतसुसु
 खमां । दौये आपणु देह । मार्गलही वननागपधाखा । कर्म
 मर्मजोवो एह ॥ ३९ चे० ॥ (ढाल ५ मौ) ॥ तो चोढियो
 षण मानगजै (एहनौ) ॥ ॥ ॥ हिव उदम वादी भणै ए ।
 ए चारे असमत्यतो । सकल पदारथ साधवाए । उदम
 एक समरत्यतो ॥ ४० ॥ उदम करतां मानवीए । स्युं
 नविसीऊँ काजतो । रामे रयणायर तणीए । लोधो
 लंकाराजतो ॥ ४१ ॥ करम नियतते अनुसरै ए । जेहमां
 सत्वन होयतो । देवल बाध मुखपंखियाए । पिउपै संताजो

यतो ॥ २॥ विण उद्यम किमनीकलैए । तिलमाहें धी ते
 लतो । उद्यमथोजंची चढै ए । जोवो एकेंद्रियवेलतो ॥ ४३ ॥
 उद्यम करतां इकसमे ए । जेह नसीऊं काजतो । ते फिर
 उद्यमथी ऊवैए । जो नवि आवे वाजतो ॥ ४४ ॥ उद्यमकरि
 ऊंछ्यां विनाए । नविरंधाये अन्नतो । आवीनपडि कोलीयो
 ए । सुखमां खेपैजतन्नतो ॥ ४५ ॥ कर्मपूत उद्यमपिताए । उद्य
 मकीधा कर्मातो । उद्यम थौ दूरैठलैए । जोड कर्मनो मर्म
 तो ॥ ४६ ॥ दृढप्रहार हत्या करीए । कौधा पापअनंततो ।
 उद्यमथी खट मासमांए । आप यथा अरिहंत तो ॥ ४७ ॥
 ठोपै२ सरवर भरै ए । काकरै२ पालतो । गिरजेहवागढनौ
 पजैए । उद्यम सकत निहालतो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जलविंदु
 ओए । करे प्राहाणमां ठामतो । उद्यम थौ विद्या भणें ए
 उद्यम जोडि दामतो ॥ ४९ ॥ (ढालह) एठिंनौ किहां राखी
 एदेशो ॥ ५० ॥ एपांचेही वादकरंतां । श्रीजिनचरणे आवै ।
 अमीयरसै जिणवयणसुणीने । आणंद अंगनमावैरे ॥ ५० ॥
 (प्राणी समकित मतिमन आणोरे । नयएकांत मताणोरे
 ते मिथ्यामति जाणोरे । अंकणी) ॥ एपांचे समदाय मिल्यां
 विण । कोईकाज न सीऊं । आंगुल जोगे कवल तणीपर ।
 जेबूऊं तेरीऊं रे ॥ ५१ ॥ प्रा० ॥ आग्रह आणी कोईएकने । एह
 मांदिये वढाई । पिण सेनामिल सकल रणं गण । जीतैसुभ
 टलजाईरे ॥ ५२ ॥ प्राणी० । तंतुसभावै पट उपजावै । काल
 क्रमे वणाई । भवतव्यता होयेंते नीपजे । नही तो विघन
 घणाईरे ॥ ५३ ॥ प्राणो० । तंतुवाय उद्यम भोक्तादिक ।
 भाग्यसंबल सहकारी । एपांचे मिलसकलपदारथ । उतपत

जोवोविचारी रे ॥ ५४ ॥ प्राणौ० । नियतवसेहलकर्मथइने
निगोद थकौ नोकलियो । पुण्ये मनुज भवादिक पामौ ।
सदगुरुने जई मिलियो रे ॥ ५५ ॥ प्रा० ॥ भवथितनो पर
पाक थयो तब । पंद्रित वीर्य उलसियो । भव्यस्वभावै सिव
गतिगामी । सिवपुरजइने वसियो रे ॥ ५६ ॥ प्रा० ॥ वर्द्धमान
जिन इणपरिवोनवै । सासन नायक गावो । संघसकलसुख
दाई जे हथी । स्यादवादरसपावो रे ॥ ५७ ॥ प्रा० ॥ (कलस) इम
धर्मनायक सुगति दायक वीरजिनवरसंयुथो । सयसतरसं
बतवङ्गलोचन वर्षर्हर्षधरो वणो । ओविजयदेव सुरिंदप
ट्टधर विजयप्रभ सुणिंदए । कीर्त्ति विजयवाचकसीस इणप
रिविनय कहै आणंदए ॥ ५८ ॥ इति ओपञ्चसमवायस्तवनं
समाप्तम् ॥ ॥ ॥ - ॥ ॥ ॥ ॥

॥ १४ गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ ॥ थंभणपुर औपासजिणंदो ॥ एहनी ॥ ॥ सुम
तिजिणंद सुमतिदातार । वंदुं मनसुध वारंवार । आणीभा
व अपार । चवदै गुणथानक सुविचार । कहिस्यं सूत्र
अरथ मनधार । पामे जिम भवपार ॥ १ ॥ प्रथम मिथ्या
त कह्यो गुणठाणो । बीजो सासादन मन आणो ।
तीजो मिश्रवखाणुं । चोथो अविरत नाम कहाणो ।
देशविरति पंचम परमाणो । ठडोप्रमत्त पिठाणुं ॥ २ ॥
अप्रमत्त सत्तमसलहीजै । अट्टम अपूरव करण कहौ
जै । अनित्यनाम नवम् । सुखमलोभ दसम सुविचा
र । उपशांतमोहनाम इग्यार । खीणमोहवारम् ॥ ३ ॥

तेरम सयोगी गुणधाम । चउदमधयो अयोगी नाम । व
 रणुं प्रथम विचार । कुगुरु कुदेव कुधर्म बखारें । तेह
 लक्षण मिथ्या गुणठाण । तेहना पंचप्रकार ॥ ४ ॥ ढालइ
 सफल संसारनी ॥ ५ ॥ जेह एकान्त नयपक्ष थापी रहै ।
 प्रथम एकान्त मिथ्यामती ते कहै । ग्रंथ उत्थापि थापै
 कुमति आपणी । कहै विपरीति मिथ्यामती ते भणी ॥ ५ ॥
 जैन शिव देवगुरु सज्ज नमैं सारिखा । तृतीय ते विनय मि
 थ्यामती पारिखा । सूत्र नविसरद है रहै विकल्प वणें ।
 संसयीनाम मिथ्यात चौथो भणें ॥ ६ ॥ समझ नही काय
 निज धंधरातो रहै । एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै ।
 एह अनादि अनंत अभव्यने । करिय अनादिधिति अंत
 सुभव्यने ॥ ७ ॥ जेम नर खीर दूत खंड जिमने वसे ।
 सरस रसपाय बलि खाद केहवोगमे । चौथ पंचम ठडैठा
 णचढिने पद । कि णहि कषाय वस्त्रिआय पहिलै अद ॥
 ८ ॥ रहै विच एक समयादि षटआबलो । सहीय सासाद
 ने धिति इसौ सांभली । हिव इहां मिश्रगुणठाण बीजो
 कहै । जेह उत्कृष्ट अंतर महरतल है ॥ ९ ॥ ढालइ वे
 करजोप्रीताम ॥ एहनी ॥ १० ॥ पहिला चार कषाय । श
 मकरि समकितौ । कैतोसादि मिथ्यामती ए । एवेहिजलहै
 मिश्र । सत्य असत्य जिहां । सरदहणवे उठतीए ॥ १० ॥
 मिश्रगुणालयमांहि । मरणलहै नही । आउबंध नपद
 नवो ए । कैतो लहै मिथ्यात । कै समकित लहै । मतिसर
 खी गतिपरभवैए ॥ ११ ॥ चार अप्रत्याख्यान । उदय करी
 लहै । मतिविण किहां समकि तपणो ए । ते अविरत गु

गुणठाण । तेलीससागर । साधिक धिति एहनी भणो ए ॥१२॥
 दया उपशम संवेग । निरवेद आसता । समकितगुण पांचे
 धरै ए । सङ्ग जिन वचनप्रमाण । जिन सासनतणी । अधि
 कर उन्नत करै ए ॥१३॥ कीर्दक समकितपाय । पुदगल
 अरधतां । उत्कृष्टाभवमें रहै ए । कीर्दक भेदीगंठि । अंतर
 मङ्गरते । चढतै गुण सिवपद लहै ए ॥१४॥ चारकपाय
 प्रथम । बिणवलि मोहनी । मिथ्यामिश्र सम्यक्तनी ए । सा
 ते प्रकृतिजास । परहो उपसमें । ते उपसम सम कितधणी
 ए ॥१५॥ जिणसाते ज्ञय कौध । तेनरचायकी । तिणहीज
 भवसिब अनुसरै ए । आगलि वांध्यो आउ । ताते तिहां
 थकी । तीजै चोथै भवतरै ए ॥१६॥ ढाल४ इणपुर कंबलको
 इन लेसी ॥ एहनी ॥ ॥ पंचम देसविरत गुणठाण । प्रग
 टै चउकाटी प्रत्याख्यान । जेण तजै वावौस अभक्ष । पाभ्यो
 आवकप्रणो प्रतक्ष ॥१७॥ गुणइकवीस तिकेपिणधारै ।
 साचावारै व्रत संभारै । पूजादिक षटकारज साधै । इग्यारै
 प्रतिमा आराधै ॥१८॥ आरत रोद्रध्यान ह्वैसंद । आयो
 मध्य धरम आनंद । आठ वरसजणी पुक्कोट । पंचम गुण
 ठाणें धिति जोट ॥१९॥ हिव आगै साते गुणथान । इकर
 अंतर मङ्गरतमान । पंच प्रमाद वसै जिण ठास । तेण
 प्रमत्त ठडोगुणधाम ॥२०॥ यिवर कलप जिन कलप आ
 चार । साधै षट आवस्यक सार । उद्यत चोथा चार
 कपाय । तेण प्रमत्त गुणठाण कहाय ॥२१॥ सुधोराखै
 चित्तसमाधै । धरमध्यान एकांत आराधै । जिहां प्रमाद
 क्रियाविधनासै । अपरमत्त सत्तमगुण भासै ॥२२॥ (ढाल५

नदी यमुनाकै तोर उद्गै दोय पंखीया ॥ एहनी ॥ ॥
 पहिलै असै अडम गुणठाणा तणें । आरंभै दोयअणें सं
 खेपै ते गणें उपशमअणि चढै जेनरहै उपसमी । अपक
 अणि जायक प्रकृति दशक्षय गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढता
 परिणाम अपूरब गुण लहै । अडम नाम अपूरब कारण
 तिणें कहै । सुकल ध्याननो पहिलो पायो आदरै । निरम
 ल मन परिणाम अद्भिगध्यानें धरै ॥ २४ ॥ हिव अनिष्ट
 कारण नवमो गुण जाणियै । जिहां भाव थिररूपनिष्ठति
 न जाणियै । क्रोध माननें मायासंजलणाहणें । उदै नहीं
 जिहां वेद अवेद प्रणोतिणें ॥ २५ ॥ जिहां रहै सुखम लोभ
 कां इक शिव अभिलषै । ते सुखम संपराय दशम पंक्ति
 दपै । संतमोह इण नाम इग्यारम गुण कहै । मोह प्रकृति
 जिणें ठाम सज्ज उपसम लहै ॥ २६ ॥ अणि चब्यो जो काल
 करै किणही परै । तोघायै अहमिंद्र अवर गतिनादरै ।
 चारवार समअणि लहै संसारमे । एकभवै दोयअणि अ
 धिक न ज्ञवै किमे ॥ २७ ॥ चढि इग्यारम सोमसमी प
 हिलै पातै । मोह उदै उत्कृष्ट अरध पुदंगल रतै । खिपक
 अणि इग्यारम गुणठाणो नहीं । दशम थकी बारम्भ चढै
 ध्यानें रहै ॥ २८ ॥ (ढाल ई एकदिन कोई मागध आयो
 पुरंदर पास) ॥ एहनी ॥ ॥ खोणमोहनामं गुणठाणो
 वारम जाण । मोहखपायो नैमोआयो केवल नाण । प्र
 गटपणें जिहां चारित अमल यथाआख्यात । हिव आगे
 तेरम गुणधान तणी कहै वात ॥ २९ ॥ घातोय चोकनी
 क्षयगई रहोय अघातोय एम । प्रकृति पच्यासी जेहनें वू

ना कापद्म जेम । दरसन ज्ञान वीरज सुखचारित पंच अ
नंत । केवल ज्ञान प्रगटययो विचरै श्रीभगवंत ॥ ३० ॥
देखै लोक अलोकनी ठानी परगटवात । महिमावंत अढावे
दूषणरहित विख्यात । आठेवरसे जणी कही दूक पूरव
कोटि । उत्कृष्टी तेरमगुणठारै ए धिति जोटि ॥ ३१ ॥
कर सेलेसीकरण निरुद्धा मनवचकाय । तेण अयोगी अं
तसमइ सज्ज प्रकृतिखपाय । पांचे लघु अक्षर ऊचरतां जे
हनो मान । पंचम गतिपामे सिवपद चउदम गुणथान ॥
३२ ॥ बीजै वारमें तेरमें मांहे नमरै कोइ । पहिलो बीजो
चोथो परभवसाये होइ । नारक देवनो गतिमांहे लाभै
पहिलाचार । धुरला पांच तिरौ मांहि मणु ए सर्वविचार ॥
३३ ॥ (कलश) ॥ इम नगर बाह्यमेरुमंजुल सुमति जिण
सुपसाजलै । गुणठाण चवद विचार वरण्यो भेद आगमने
भलै । संवत्तसतरैसै ठत्तीसै आवणवदि एकादसी । वाचक
विजय श्रीहरष सानिध कहै मुनि इम धर्मसी ॥ ३४ ॥ इति
श्रीचतुर्दशगुण स्थानविचार स्तवनं ॥ ॥ ॥

॥ अथ नवतत्व भाषागर्भित स्तवनलि ॥

॥ ॥ दुहा ॥ नमस्कार अरिहंतने । सिद्धसरि उव
जाय । साधु सकल प्रणमौ करी । प्रणमौ श्रीगुरु पाव ॥ १ ॥
करसुं हं नवतत्वनौ । गाथा भासा रूप । मंदबुद्धिगुरुसा
निधै । कहिसुं सुगमसरूप ॥ २ ॥ सूरतीमहीनानैदिशी ॥
ओव अत्रौ पुरख पाप तिम आसवसोय । संवर निज्जर
बंध मोख एनवतत होय । चवद चवद बायाल वयासी बलि

बायाल । सत्तावन वारै चौ नव क्रमभेद निमाल ॥१॥ इग
 दु ति चौविह प्रणविह ठव्विह जोव कहाय । चेतन वसथा
 वर वेदै गई करणें काय । एगिंदौ सखम वादर ए दोजिव
 ठाण । सन्नि असन्नि पणिंदौ बिति चौरिंदौ आण ॥२॥ एस
 गपज्जत्ता अपज्जत्ता चवदै होय । अनुक्रम जीवठाण ए
 सूत्रप्ररुप्पा सोय । नाण दंसण चारित बौरज तप तिमउव
 योग । एषल्लक्षण लल्लत जीवद्रव्य इह लोग ॥ ३ ॥ इग
 आहार सरीर इंदिय पज्जत्ती तीन । सासोसास भाषा
 मन पणए अनुक्रम लौन । चार एगिंदौ पंचपज्जत्ती विगलें
 जोय । पंच असन्नि सन्निने षट्पज्जत्ती होय ॥४॥ इंदिय
 पांच उसास आज बल एदसप्राण । चार ठ सात आठ ए
 गिंदौ विगलें जाण । असन्नि सन्निपंचिंदौने नव दस क्रम
 धाय । प्राणां यी जे विप्रयोग जियसरण कहाय ॥ ५ ॥
 धम्मा धम्मा आगास तौनूना विण विणभेद । काल दशमइग
 आगल पुगल चार विठेद । खंधा देश पएस परमाणूचव
 दअजीव । धम्मा धम्मा पुगल नभ काल मं पांचन जीव ॥६॥
 चलणसहाई धम्मो धिरसंठाण अधम्मा । अवगाहें पूरणगल
 यौ नभपुगलधम्मा । समयावलिय मज्झत्त दीह पप्रमासनेसा
 ल । पत्तयोपम सागर उल्लप्पणि सप्पणी काल ॥ ७ ॥ षट्
 इग दो सगसंग सगखट्ठ इग अंक गिणाय । एगमज्झत्ते आ
 वलिसंख्या सूत्र कहाय । तीन सात बलि सात तीन जसा
 सेमाण । केवलनाणी भणिवी एह मज्झत्त प्रमाण ॥८॥ सा
 ता उच्चगोव मणुसुरदुग पंचिंदियाव । पांचशरीर आदिम
 तिसरीर उवंगकहाय । आदिसंवेण संठाण चौबई अरुव

लज्ज होय । परवत्तसास तेम वलि आतपने उज्जोय ॥ ८ ॥
 सुभखगई निम्माण तसादिदधुं नीमाल । सुरनरतिरिआ
 ऊ तित्थंकर पुण्य बयाल । तस वादर पज्जत्त पत्तेय धिरं
 सुभसोय । सुभग सुसर आइज्ज जसैं वसदसको होय ॥
 १० ॥ नाणंतरायदसक नववीजा नीच असाय । मित्थ
 थावरदश नारगलिक पचवीस कसाय । तिरियं च दुग
 एकिंद्री विति चौरिंद्रीतेय । कूखगई उपवा अपसत्थं
 वण्णचौभेय ॥ ११ ॥ मठम संघयणविना संघेण तेमसंठाण ।
 एमवयासी पकृत पापततनो ए जाण । थावर सुहम अपज्ज
 साहारण अथिरैगेय । असुभ दुभग दूसर णाइज्ज अजस
 दसलेय ॥ १२ ॥ पण चौ पण तिय इंदि कसाय अव्वय
 तिम जोग । बायलीस सेषपच्चीस कयासंयोग । काइय
 अहिगरणीया पावसिया परिताप । माणातिपात आरंभ
 की परिगहियानो लाप ॥ १३ ॥ माया प्रत्यय मिट्ठादंसण
 वत्ती तेम । अपचक्खण की दिट्ठ पुट्ट पाप्पच्चियजेम ।
 सामंतोपनवणिय नेसत्थि सहत्थै जेह । आच्चापनकी
 वेयारण अणभोगा तेह ॥ १४ ॥ अणवकांखपच्चय ना उ
 वज्जगी समुदाय । प्रेम हेष इरियावहो किरिया एकहि
 वाय । सुमति गुपति परिसह जइधम्म भावण चारित्त ।
 पण तिग बावीस दस वारै पण संवरतत्त ॥ १५ ॥ इरिया
 भाषा एषणा सुमतो ना भेद होय । आदान भंन उच्चार
 निक्खेवण पांचे जोय । मनगुत्तो वयगुत्ती कायगुत्ती
 दिण जाण । हिव आगै वावीस परीसह कज्जं हित
 आण ॥ १६ ॥ भुच्च पिपासा सीत उसन मांसा निरवत्थ ।

अरति जोषा चरित्रा नैषिद्या सिञ्जासत् । अकोस वक्ष
जायण अलाभ रोग विष्णुपास । मल सङ्कार पन्ना अ
न्नाण समत्त समास ॥ १७ ॥ खंति महव अज्जव सुत्ती
तव संजम सख । सत्यं सौच अकिंचन वंभवेर जईधम्म ।
पढम अनित्य असरण संसार एग अनन्त । असुचि आश्वं
संवर निज्जर भवि भावो नित्त ॥ १८ ॥ लोक सुभाव
बोधदुरलभ दुग्यारम गाव । धरम साधकअरिहंत ए
वारै भावन भाव । सामायक ठेदोपस्थापन बोजो सोय ।
परिहार विसुद्ध सुखमसंपराय चउत्थो जोय ॥ १९ ॥ तिम
अहखाय चरित्त सरबजियलोग प्रसिद्ध । जेह सुविधि आ
चरणे के जिय पाप्मा सिद्ध । बारैविध निज्जर तत्व वंधना
च्यार प्रकार । प्रकृति ठिई अनुभाग प्रदेशभेदे निरधार ॥
२० ॥ अणसण जणोदर दृत्तिसंखेपरसोनोत्याग । कांथकले
स सल्लौनता बाहिरतप-षट्ठभाग । पायडित्त विनय वेथाव
अ तेमसिञ्जाय । ध्यान काउसगं अर्थतर तपषट्ठविध
थायं ॥ २१ ॥ प्रकृति सुभाव काल अवधारण थितनिरवंच ।
अनुशागे रसतिम प्रदेशे दलनो संच । पठ प्रतिहार धार
तरवार मद्यवलि तेम निगट्ट चिबंकर कुंभकार मंगारो
जेम ॥ २२ ॥ अनुक्रम आठनामना भाष्या जेजे भाव । तिम
ज्ञानावरणादिक अट्टना एह सभाव । इम संखेपे विवरण
कौना आठेतत्त । प्रस्तावै पाप्मो वरणवस्थुं हिव मोखतत्त
॥ २३ ॥ संतपदै परवण द्रव्य न खेवप्रमाण । फरसनकाल
पांचमो ठट्ठो अंतर जाण । भाग सातमो भाव आठ तिम
अलपवज्जत्त । एनव भेदे भावन करस्थुं नवमोत्त ॥ २४ ॥

मोक्ष एक पदथी छै जे पदै अविनाभाव । व्योमकुसमतिम
सप्तिकस्त्रिंशजिम नहीय अभाव । एहवो जेपदमोक्षतेहनों
मगगणद्वार । विवरण कर वरणवस्युं सुखज्यो सुहम वि
चार ॥२५॥ गति नर इंदिय पंचेदी कार्ये तसकाय। नाणै
जेहने केवल संयमथो अहखाय । दंसणमें दूक केवलदंश
ण अवरनहोय । भव्य अभव्ये भव्यप्रणो परिपाकैजोय ॥२५॥
संमत्तै ज्ञायक सन्धौ असन्धौये सन्धि । अणहारी आहारी
अणहारी उपन्ध । द्रव्यप्रमाणे सिद्धजोव द्रव्यहोय अनंत ।
लोग असंखमभाग एगसिद्ध होय अणंत ॥ २६ ॥ फरसन
खेलथी अधिककाल इगसिद्ध प्रतीत । सादि अनंतौ धित
जिन आगम थौ सुविदोत । प्रतिपाता भावे नहिं सिद्धां
अंतर जोय । सरब जीवथी भाग अनंतम सज्ज सिद्ध होय
॥२७॥ दंशण नाण जेहने बे ते ज्ञायक भाव । जीवत जेहने
वलिपरणामक भाव समाव । सज्जथीथोना वेद नपुंसकथो
जे सिद्ध । तेहथी थौ नर अनुक्रम संखगुणासुपसिद्ध ॥२८॥
जे जाणें जीवादिक नवतत्त तस सम्भत्त । अणजाणंताने
हुय जेसरधानेरत्त । सरबजिणेसर सुखथीभाष्या वयण
जहत्थी एबुद्धी जेहने मनसंमत निच्चलतत्थ ॥२९॥ अंतरम
ऊरत एगमात्र फरस्यो संभत्त । अर्द्धपुगलपरियट्टनियम
संसार निभत्त । उस्सप्पणिय अणंत इग पुगल परियट्ट ।
अनन्त अतोत अनागत तद्गुणवयणप्रगट्ट ॥ ३० ॥ इमनव
तत्त भेदपद्मिभेदै विवरणकौध । आवकआग्रहकोन सहाय
परण रसपौध । कोटिकगण सुमसदन प्रकासं नदीउपमान ।
ओजिनलाभ चंदकुल पूनमचंदसमान ॥ ३१ ॥ अग्याना

दिक करि वरसिहैं वयरीसाष । रत्नराजमुनि ते वदसाषा
 नौ पदिसाष । ग्यानसार ते पदिसाषानौ सूषमजाल । एव
 पद नवरयण विनायै गूंधी माल ॥ ३३ ॥ संवत्तर निश्चय
 नय विगई प्रवचनमाय । परमसिद्धपद वामगते ए अंकमि
 णाय । माप्रकिसन ससिवार मेरुतिथ पूरनकौध । चार
 कथा तजि तत्वकथा भज नरकललौध ॥ ३३ ॥ इति नवतत्व
 भाषागर्भितस्तवनम् ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ अथ दंष्ट्रकनो भाषागर्भितस्तवन लि० ॥

॥ ॐ ॥ ऋषभादिक चोवीस नमि । तेहनो सूत्र विचार ।
 दंष्ट्रकरचनाये तवुं । संखेपै निरधार ॥ १ ॥ नरकसातदंष्ट्र
 कपटम । असुरा नाम सुवन्न । विज्जु अगन दीवो दही ।
 दिसि पवणें थणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आज तेउवलि । वाउवणस
 इकाय । वि ति चौरिंदी गम्भवर । तिरि नर तिहांमिलाय
 ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस वेसाणिया । एदंष्ट्रक चोवीस । एहना
 द्वारकज्जहिबै । गणनाये तेवौस ॥ ४ ॥ वीरजिणेंसरनीदेशी ॥

॥ ॐ ॥ सरौर जंगाहण संघयणें सखा संग्राण । कोहाई
 लेसिंदिय दोसमुघायप्रमाण । दिट्ठो दंसण नाण जोग तिम
 वलिउवयोग । उपपात वलि चवण ठिई पज्जन्ति प्रयोग ॥ १
 केदिसिनोआहार सन्नि गइ आगइ वेय । दारगाहादुगनो
 ए अरथ कट्ठो संघेव । हिव तेवौसदारनो रहिससमय अ
 नुसार । अलपसुची ज्ज तेहथी कहिसुं अलपविचार ॥ २ ॥
 सूरतो महीनानौदेशी ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ चौ गम्भयतिरि वाज्ज काये चारसरौर । मनुपमें

पांच दंडग इकवीसरह्या तिसरीर । थावर चारनें जह्न्य
उक्कोसें देहप्रमाण । भाग असंख्यातम इग अंगुलनों परि
माण ॥ १ ॥ सरबनो जघन्यखभावक अंगुलभागसंज्ञात ।
उक्कोसें प्रणसे धणु नारगनें विज्ञात । सुरनों प्रातहाथगम्भय
तिरिवणसयकाय । जोयणसहस साधक इक सहस अनु
क्रमथाय ॥ २ ॥ नर तेइं दि तिगाऊ बेइं दी जोयणवार ।
एगजोयण चौरिंदी देह ऊंचे आकार । आरंभकाले वे
क्रियदेहनो ए परिमाण । भागएक इक अंगुलनो संख्यातम
जाण ॥ ३ ॥ सुर नरनें साधकइकलाष जोयण इगलाष ।
नवसे जोयण तिरजंचनें एसूलेसाष । साभावकथौ दुगणो
नारकवेक्रिय काय । एकमह्वरत नारय नरतिर चार कहा
य ॥ ४ ॥ सुरनें पक्षएग उक्कोस विडवणकाल । विगलसंघ
यणी थावरसुरनारक नीमाल । गम्भयनरतिरनें षट् विग
लनें ठेवइएक । सरवजीवनें चार दसे ससाये लेष ॥ ५ ॥
नरतिरनें षट् सुरनें समचौरंसंठाण । ऊं दगइग नारग
विगलें द्वौ सूत्रप्रमाण । नाणांविह धय सूद मसूरनो चंद्र
आकार । वणसइ वाउ तेऊ भू बुदबुद अप्पाकार ॥ ६ ॥ स
ऊनें चार कसाय गम्भय षट् नरतिरि दोय । वेमाणिय
नारग तेऊ वाउ विगलविकहोय । जोयसि तेऊलेसा सेसरं
ह्यानें चार । दार इंद्रियनो सुंगम तेहनोस्यं विसतार ॥
७ ॥ ससुंदवातसग नरनें प्रण गम्भयतिरि देव । नरग वायुनें
चार सेसनें तोमुं भेव । दिहोदोय विगलमें थावरनें मिथ्या
त । सेसनें तौनदिह्नि जिम प्रवचनमें विज्ञात ॥ ८ ॥ थाव
रवितिवे एक अचकल दंडग होय । चौरिंदी तेचकल अच

कखू दंसण होय । मनुजने चार सेस दंद्गमे दंसणतीन ।
 नाण अनाण तीन सुर तिर नारगने लीन ॥ ९ ॥ थावरदोय
 अनाण विगल दो नाण अनाण । गम्भय मणुने तीन अना
 णने पांच नाण । सुरनारग एकादश तिरने तेरै जोग । मनु
 जने प्रनरै चारविगलने जोग प्रयोग ॥ १० ॥ वाजकायने
 पांच तीन थावरसंयोग । मनुजने वार नरग तिर देवने नव
 उपयोग । विगलदुगै प्रण षट्चौरिंदौ थावरतीन । उववाय
 इग चवण दारदोनु समकीन ॥ ११ ॥ एग समे संख्यात असं
 ख्याचवणपपात । गम्भयतिरि विगलेदौ नारय सुरनीख्यात
 मणुआ थावर वणसई संख असंख अणंत । मणुजअसन्नि
 असंखचवंत तेम उपजंत ॥ १२ ॥ बावौस सात तीन दस
 बरस सहस उक्कि । वणसई चारने तीन दिवस तेजने
 जिद्ध । नर तिर तीनपत्य सुर नारग अथरतेतीस । व्यंतर
 पत्य अधिक लख वरष पत्य जोईस ॥ १३ ॥ असुरादिक दशने
 इक सागर अधिको आय । देसे ऊणादोयपत्यनो नवेच ।
 निकाय । विगलने वारबरस गुणचास दिवस ठम्मास । अ
 तमज्जत्त जहन्ने पुटवाई दसरास ॥ १४ ॥ भुवनपती नारग
 व्यंतर दस बरस हजार । पत्य तेना अणंस वेमाणिय जो
 इसधार । सुर नर तिरि नारगने षट्थावरने चार । विग
 लने पांचपज्जत्तो ए अडारमदार ॥ १५ ॥ सरव जीवने होय
 ठए दिसनो आहार । होय न होय पांचादिकदिस ए सब
 मज्जार । दीहकाल की चौविहसुरनारगतिरजंच । विगल
 ने हेउपपणा सबि रहित थिरपंच ॥ १६ ॥ गम्भयमणुजने
 दीहकालको सन्ना होय । केइक आचारज कहै दिडिवाय

यौहोय । निञ्चय पञ्जत्तापंचिंदीतिर नर जेह । चौविह
 देवांमांहे आवौ उपजै तेह ॥ १७ ॥ संखाउ पजत्त पंचिंदी
 तिरि नर तेम । पञ्जत्ता भूदग पत्तियवणस्सेईजेम । एसरवे
 में निञ्चै सुरनी आगति ऊंति । पञ्जत्त संख गम्भयतिरि
 नर सगनरके जंत ॥ १८ ॥ नरक उदंवरत्या नर तिर उपजै
 नहुवै सेस । भूअप वणस्सेईमें नरगविण उवजै असेस ।
 पुढवाई दसपयमें भू आऊ वण जंति । पुढवाई दसपयमें
 तेऊ वाऊ उवजंत ॥ १९ ॥ तेऊ वाऊ नोगमण पुढवौपद
 नवमै ऊंति । पुढवाई दसपदमें विगलजावंत आवंत । सऊमें
 तिर गति आगति मणुआ सऊमें जाय । तेऊ वाऊ थो
 मरीनै जीव मनुज नविधाय ॥ २० ॥ थो पुरसे चौविहसुर
 तिरि नर तीनूवेद । यावरविगल नारकने एक नपुंसक
 भेद । पञ्जत्तामणु वादरअगन वेसाणिक तेम । भवण
 नरग व्यंतर जोइस चौ पण तिरएम ॥ २१ ॥ बेइंद्री
 तेइंद्री पृथवीने अपकाय । वायुवणस्सइ अधिक अनुक्रम
 करि कहिवाय । हे जिन ए सऊ भावमें पास्या वार
 अनंत । तेहनो अनुक्रमगणितां किमहौन आवै अंत ॥
 २३ ॥ नर सुर विण सऊ दंशगमें तेगति संयोग । लाघो
 नहौ तुह दंसण कोनो कसप्रयाग । सुरमै पिण दंसण
 लहि विरतनपामी मूल । ते सुरजात सहावै देसविरत
 प्रतिकूल ॥ २३ ॥ आरज देस आरज कुल सुद्धसगुरु उप
 देश । तेह थो तुहदंसणनो किंचित पास्यो लेस । धारक
 तारक कारक वारक दंशण देव । आतमगुणसंसार समत्त
 कससयमेव ॥ २४ ॥ खरतरगन्धु भट्टारक (ओजिनलाभ

सुरिंद । रत्नराजमुनि सीस तेहना पद अरविंद । रत्नप्रक
 रंदे लीणो ग्यानसार तपुसोस । तेहतया तेविसदार
 दंजग चौबोस ॥ २५ ॥ संवत सप्तिरस वारण तेमचंद
 निरधार । प्रोष मास पषऊजल सातमने सोमवार । आव
 क आग्रहथी एकीनो अलप विचार । अम चौमासोकर
 जैपुरनगर मऊार ॥ २६ ॥ ॥ इति चतुर्विंशति दंजक
 स्तवनम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ जोवचार भाषागर्भित स्तवनलि ॥

॥ ॥ (दुहा) ॥ भुवनप्रदोषक वीरनमि । किंचित
 जीवसरूप । कहिसु पूर्वाचार्य जिम । बालबोध गुरुरूप ॥ १ ॥
 (देशो सूरतो महीनानो) ॥ एगमुगति बीजा संसारो जोव
 दुभेद । सत्ताभिन्नै सिद्ध अनंत रूप अभेद । संसारो याव
 रदग तिम वस दोष प्रकार । भू अथ वाऊ तेऊ वणसरई
 थावरधार ॥ १ ॥ फिटकरयण मणि विद्रुम हिंगुल बलिहरि
 याल । मणसिल पारो सुवरण आदिघात नीमाल । सेढो
 वन्को अरणेटो पालेवोपाषाण । भोमल तूरी ओस भूमि
 पाहण जेखाण ॥ २ ॥ सुरमो लूणजात ए पुढवीकाव
 विठेद । भूमि आकास उंस हिम करग आजना भेद ।
 हरितघास ऊपर जे जलकण धूँहर तेम । होय धणो दधि
 अप्पकायपिण पाहण जेम ॥ ३ ॥ अंगारा जाला भोभर
 तिम उलकापात । असणि कण्ठ विद्युतादिक अगनजीव
 विज्ञात । उभामग उक्लिका मंजल बलि सुहवात ।
 सुह गुंज तिम धण तण वाऊ भेदे छात ॥ ४ ॥ साधा

रण प्रत्तेय वणस्सइ जौवदुमेय । एग सरौर अनंत जीव
साधारण नेय । कंदा अंकुर कूपल फूलण वलि जंबाल ।
भुंकोत्ता अहत्तिय सरवे जे फलवाल ॥ ५ ॥ माजर
मोय वायलो थेगपालंको साग । गुपतसिरा सांधा
गांठां भाजै समभाग । काटी फाल भुंमिमेरोष्यां पल्लव
थाव । जाल पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग
सरैरे एगजीव जे ते प्रत्येक । कल ठाल कल मूल काठ बी
जै जिय एक । वणप्रत्तेय विना जे पांचि पुटवौ काय । रुथल
लोगमें व्यापक अंत मुहत्तै आय ॥ ७ ॥ सूखमयी ते नियमा
दिष्टी निजर नहोय । लोकालोक प्रकासथकी बलि अलपन
कोय । कवटी संख गतोला लहिगा लटनौ जात । चंदन
का अलसी मेहर जोका बिचात ॥ ८ ॥ माय बाहा कृष्ण
पौरादिक वेइंद्री होय । गोमी माकण जूआ कीटा कीटौ
दोय । दीपक ईलो धौवेली गोंगौटा जात । चरमजूका गा
दहिया गोबर कृम उत्तगत ॥ ९ ॥ धान कीटा जिमचोर
कीटा गोवालो तेह । ईलो कंथुक इंद्रगोप तेइंद्री एह ।
बीठूढकण भमरा भमरी इंद्री चार । तौटा माखी फांस
मल्लर कंसारी धार ॥ १० ॥ कवट फोला मांकप्रिय पतंग
इत्यादिक भेद । नारकतिरि मणु देव पंचेद्री चार विठेह
घम्या वंसा सेला अंजण रिट्टा छात । मघा माघवई नारग
एनामें सात ॥ ११ ॥ जलचारी थलचारी नभचारी तिर
जंच । मल्ल कल्ल सुसुमार मगर गाछा जलअंच । चौपेय
उरपरि भुजपरिसाप भुचारीतेय । तिविहा गाय साप तिम
नकुल अनुक्रमलेय ॥ १२ ॥ खेचर चरम रोमपंघी चमचेन

कपोत । मनुजलोक थी बाहिर समुग विगय पंखहोत ।
 सरबे जल थल खचर समुल्लम गम्भय दोय । कम्प अकम्प
 भूमि अंतरदीवा मणुजोय ॥ १३ ॥ असुरादिक दस होय
 बाण व्यंतरिया अड । जोइस पंच वेमाणिय दुविहा सुते
 दिह । पनरै भेदै सिद्धकह्या एजीव प्रकार । तनुमानादिक
 हिव एहनो कहसुं अधिकार ॥ १४ ॥ देह आजषो एक
 सरीरें थितनो मांण । प्राण जेहने जेता तिम बलि योन
 प्रमाण । अंगुल भाग असंख सह एगिंदी काय । जोयण
 सहस साधिक पत्तेय वणसइकाय ॥ १५ ॥ वि ति चौरिंदी
 अनुक्रम उक्किह देह जंचास । बारैजोयण तीनगाऊ इग
 जोयण भास । सत्तमना नेरइया धनु सयपंचप्रमाण । तेह
 थी अरध अरध जणा अनुक्रम रयणाण ॥ १६ ॥ जोयण
 सहस गम्भधर मल्लउरगनो देह । गाऊ घणुहपडत भूचा
 री पंखो जेह । खेचर नवधणु उरग भुयंग जोयण नव हो
 य । नव गाऊ परिमाण समुल्लम चौपय सोय ॥ १७ ॥ खल
 गाऊ जंचास चउप्पय गम्भयमांण । तीनकोस उक्कोस
 मनुजनो काय प्रमाण । भवण व्यंतर जोइस वेमाणिय ईसा
 रणंत । सात हाथ उक्कोसै जंचपणै तणु ऊंत ॥ १८ ॥ सनत
 कुमार माहेद्रैषल ब्रह्म लांतक पांच । शुक्र सहस्रारै
 उक्कोस चार करवांच । आणत प्राणत आरण अच्युत
 हाथें तीन । नव ग्रैवेयक दोय पंचानुत्तर इगलीन
 ॥ १९ ॥ बाजोस सात तीन दश वरस सहस्रै आय । भू
 आज वाऊ वण ती दिन तेजकाय । बार वरस गुणचाम
 दिवस तिम बलि ठम्मास । अनुक्रम वेइं ड्री ते इं ड्री चौरिं

द्वी रास ॥ २० ॥ सुर नारग तैतोस अयर उक्कोसें आय ।
 चौपय तिरिय मनुजनों तीन पल्यौपम थाय । जलचर
 उरपर भजपर उक्कोसें पुव कोट । पंखीनें इंगभाग अ
 संख पल्यनो जोट ॥ २१ ॥ सरब सूखम साधारण समूहम
 मणुजेह । जहन उक्कोसें अंतमुहुत्त नियम थित तेह ।
 इम उगाहण भाष्यो संखेपै अधिकार । जेवलि इत्यविसेस
 विसेस सूखमूधार ॥ २२ ॥ असंख उसम्पणि सज्ज एगिंदी
 आपणी काय । उपजैचवै अनंत साधारण वणसई काय ।
 संख्याता संवत्सर विगल आपणौ देह । सात आठभव पंचिं
 द्वौ तिरिमणुआ जेह ॥ २३ ॥ नारकथी उद्वरती जीव नर
 ग नविजाय । देव चवीनें ते वलि देवपणें नविथाय ।
 इंद्रीय सासोसास आऊ बल ए दसप्राण । चार ठ सात
 आठ इग दु ति चौरिंद्रिय जाण ॥ २४ ॥ सन्नि असन्नि पंचिं
 दौ दस नव अनुक्रम जोय । प्राण थकी जे विप्रयोग जिय
 मरणें होय । भीमसायर संसार अगार अनंतीवार ।
 भमियो जीव धरमविण जोण असौनेंचार ॥ २५ ॥ सग स
 ग सग सग दश चवटै दो दो दो लाख । चार चार तिम
 चार चवदलख सूत्रे साख । भू अर तेऊ वाऊ वणपत्तेय
 साधार । वि ति चौ पण तिर नारग सुर नर अनुक्रम
 धार ॥ २६ ॥ काय न आय न प्राण न जोणी कुल नहीं
 जात । साहिं अनंत भंग जिन आगम थित विज्ञात ।
 रोग न सोग न भोग जोग नहीं नारौ लिंग । नहींय नपुं
 सक पुरसतणा नहीं अंगउपंग ॥ २७ ॥ नाण दरस चारित
 नोरज ए चार अनंत । सिद्ध थया तेह थौ सिद्धंते सिद्ध

कहंत इम ए जीव विचार गाथाथी भाषा रूप । आवक
 आग्रहथी में कीनो सुगम सरूप ॥ २८ ॥ खरतर गठ
 भट्टारक श्रीधिनलाभ सूरिस । रत्नराजगणि ग्यानसार
 सुनिसीसजगीस । संवत ससि रस वारण ससिहर धर
 निरधार । भाषचौथ दिनकीनो जैपुर नगर मज्जार ॥ २९ ॥
 इति जीवविचार भाषागर्भित स्तवन संपूर्णम् ॥ ॐ ॥

॥ समवसरण विचारगर्भित स्तवननि ॥

॥ ॐ ॥ (दुहा) योजिन सासन सेहरो । जगगुरु पास
 जिणंद । प्रणमी जेहना पायकमल । आवौ चौसठ इंद ॥
 १ ॥ तीर्थकर आवै तिहां । बिगडो करै तयार । सम
 कित करणी साचवै । एह कड अधिकार ॥ २ ॥ करै
 प्रसंसा समकितो । मिथ्यात्वी होवै मूक । सूर्य देख हरखे
 सह । वणें अंधारै वूक ॥ ३ ॥ ॐ ॥ टाल बीर बखाणी
 एहनो ॥ ॐ ॥ आप अरिहंत भले आविया जी । गावे
 अपठरह गंधर्व । समवसरण रचै सुरवराजो । संखेपे
 ते कहं सर्व ॥ ४ आ० ॥ भुवनपति वीसइंद्रे मिलयां
 जी । सोलह व्यंतरमार । जोइस दु दस वेमाणिय
 जुझा जी । चौसठ इंद सुविचार ॥ ५ आ० ॥ पवन
 सुरपुंज परमारजै जी । भूमि योजन समभाउं । मेघकुमार
 रचै मेघनेजी । करीय सुगंध ठिन्काउ ॥ ६ आ० ॥
 अगर कपूर सुभ धूपणाजी । करय श्रीअंगन कुंमार ।
 वाणव्यंतर हिव वेगसुं जी । रचय मणिपोठकासार ॥
 ७ आ० ॥ पुहपंच वरण जरघ मुखेजी । वरष ए जाय

परिसाण । भवणवद् देव विगणो भलो जौ । करय ते
सुणउ सुजाण ॥ ८ आ० ॥ रचय गढ प्रथम रूपतणोजो ।
सोवनकांगरै सार । रविससि रयण कोसीसको जौ । कनक
नोबीय प्रकार ॥ ९ आ० ॥ रतन गढ रतनने कांगरै जौ ।
रचयवेमाणि सुरराज । भलो लीजोगढ भीतरैजौ । जीहां
विराजै जिनराज ॥ १० आ० ॥ भीतऊंची धनुं पांचसैजौ ।
सवा तेबोस विस्तार । प्रमुषसै तेरगढ आंतरोजो । मौल
पांचास धनु आर ॥ ११ आ० ॥ दस पंचर तिऊं गढतणोजो ।
पावणो वीसहजार । शाक अम नहीय चढतां यकां जौ ।
एक कर उच्चविस्तार ॥ १२ आ० ॥ पंचधनु सहस प्रथवी
यको जौ । उच्च रहै चिगढ आकास । तेहतल सङ्ग यथा
स्थित वसे जौ । नगर आराम आवास ॥ १३ आ० ॥ तोरण
चिऊं २ दिस तिहां जौ । नीलमणि मोरनिरमाण । दुसय
धनु मध्यमणि पौठकाजौ । उच्चजिण देहपरिमाण ॥ १४ ॥
आ० ॥ आर आसण तिहां चिऊं दिसैजौ । मोतीयें फाकऊ
माल । समविचकूण ईसाणमें जौ । देव ठंदो सुविसाल ॥ १५
आ० ॥ देवदुं दुभि नाद उपदिसैजौ । जिनगुण गावसीतेह ।
अरुहजिम आइंसिर उपरै जौ । गाजसी तेह गुणगेह ॥ १६
आ० ॥ (टाल) १ फल संसारनी ॥ ॥ पुव्वदिसि आसणे
आइ बैसै प्ह । सुर ठात चौमुखरूप देखै सङ्ग । दीपै असोक
तह वारगुण देहयो । देखि हरपै सङ्ग मोर जिमसेहयो ॥
१७ ॥ मोतियां जालि बिण ठव सुविसालए । रूप चिऊं
चिऊं दिसै चामर टालए । योजन गामनी बाण श्रीजिन
तणौ । भगवंत उपदिसै बारपरषद भणौ ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणा

रूपथी अगनिकुणें करी । गणधर साधवो तिम वैमाणीय
 सुरो । ज्योतषौ भुवणनी विंतरौ स्त्री पणें । नैरत कूण
 जिन वाणि उभौ सुणें । लिङ्ग तणा पति वाय कूणमें जाण
 ए । सुर वैमाणीय नर नारि ईसाण ए । वारह परष दाम
 दमखर ठाढ़ ए । भूष लिष वीसरै सुणें करजोढ़ ए ॥१८॥
 पूठ भासंद्रल तेज प्रकास ए । ज्योतष सहस धन ऊंच
 आकास ए । ऊलहलै तेज धूम चक्र गगनें सही । महुक
 सङ्ग बारणें धूप धाणा संहो ॥२०॥ वाहण वहिल सङ्गधरीय
 पहिलै गढै । होइ पग चारि नरनारि ऊंचा चढै । जिन
 तणी वाणि सुणि जोव तिरजंच ए । वैर तजि वीदगढ
 रहै सुख संच ए ॥ २१ ॥ पुन्यवंत पुरपति प्ररषद बारमे ।
 सुणें जिन वाणि धनगणय अवतार में । चौविह देव जिण
 देव सेवा रचै । मणिमयी मांहिलौ मोलमांहे बसै ॥ २२ ॥
 चिङ्ग दिसि बाटलौ बावि चौ जाणीयै । विंदसि चौकूण
 दोइ २ बख्ताणौयै । आठे जिहां बाविजल अस्त जेम
 ए । स्नान पानें वपु निरमल जेम ए ॥ २३ ॥ जय विजय
 जयंत अपराजिया । मध्य कंचण गढै मोलवसंतिया ।
 तुंबर पुरुष खड्ग अर्चिमाल ए । रजत गढ मोलनां ए ह
 रषवाल ए ॥ २४ ॥ पहिल दिगडो नङ्गअ जिण पुरग्राम ए ।
 देवमहर्षिक रचै तिण्टाम ए । करण बारवार नही कार
 ण कोइ ए । आठे मातीहारज ते सही होइ ए ॥ २५ ॥
 जिण समवसरणनौ ऋद्धि दोठीजीवै । तेह धन धन्य अव
 तार पायो तियै । पास अरदास सुणौ वढित पूरजो ।
 हिव मुंज ताहरो सह दरसन ऊज्यो ॥ २६ (बलश) ॥ इम

समवसरणै ऋद्धिवरणे सह जिनवर सारखी । सरद है
ते लहै सुद्ध समकित परम जिन धम्मपारखी । प्रकरण
सिद्धांत गुरु परंपर सुणी सज्ज अधिकार ए । संस्तव्यो
पासजिणंद पाठक धर्म वर्द्धन धार ए ॥ २७ ॥ इति समव
सरणविचार भाषागर्भित स्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ अथ सिञ्जायमाला लिख्यते ॥

॥ ❀ ॥ ढंढण रिषजीने बंदणा ॥ ज्जं वारी ॥ उत
कण्ठो अणगाररे ॥ ज्जं वारी लाल ॥ अभिग्रहलीधो एहवो
॥ ज्जं ० ॥ लेखुं सुद्ध आहार रे ॥ ज्जं ० ॥ १ ॥ ढं ० ॥ नितप्रति
जठै गोचरी ॥ ज्जं ० ॥ नमिलै सुद्ध आहार रे ॥ ज्जं वा ॥ मूल
नलै अणसज्जतो ॥ ज्जं ० ॥ पंजर कीधो गातर ॥ ज्जं ० २ ॥ ढं ० ॥
हरिपूठ खीनेमिने ॥ ज्जं ० ॥ सुनिवर सहस अठाररे ॥ ज्जं वा ॥
उतकण्ठो कुण एहमै ॥ ज्जं ० ॥ सुज्जने कहो विचाररे ॥ ज्जं
वा ॥ ढंढण ० ३ ॥ ढंढण अधिको दाणियो ॥ ज्जं ॥ खीसुखनेमि
जिणंदरे ॥ ज्जं ० ॥ कृष्ण ज्जमाच्चो बांदवा ॥ ज्जं ॥ धनजादवकुल
चंदरे ॥ ज्जं ॥ १ ॥ ढंढण ० ॥ गलियारे सुनिवर मित्या ॥ ज्जं वा ० ॥
बांदा कृष्णनरसरे ॥ ज्जं ० ॥ कीणही मिध्यात्वी देखने ॥
ज्जं ० ॥ आण्यो भाव विसरे ॥ ज्जं ॥ ५ ॥ ढंढण ॥ सुज्जवर आवो सां
धजो ॥ ज्जं ॥ ल्यो मोदक ठै सुद्धरे ॥ ज्जं ० ॥ सुनिवर विहरीने
पांगुछा ॥ ज्जं ० ॥ आया प्रभु जीने पासरे ॥ ज्जं ॥ ६ ॥ ढं ॥
सुज्जलवधै मोदक मित्या ॥ ज्जं ॥ कहोने तुम्हे किरपालरे
॥ ज्जं ॥ लबधनही बड्ड ताहरी ॥ ज्जं ॥ खीपतिलवधि निधा
नरे ॥ ज्जं ॥ ७ ॥ ढंढण ० ॥ एलेवा जुगतोनहीं ॥ ज्जं ॥ चात्यापरठ

वाकाजरे ॥ ऊं ॥ ईं टनिवाहै जाइनें ॥ ऊं ॥ चूरैं करम
समाजरे ॥ ऊं ॥ टाढं ॥ आणी चढती भावना ॥ ऊं ॥ पाख्यो
केवलनाथरे ॥ ऊं ॥ ढंढणरिष सुगतें गया ॥ ऊं ॥ कहै
जिन हरष सुचाणरे ॥ ऊं ॥ टाढं ॥ इति ढंढण सुनी सि
ष्माय संपूर्णम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ धनारिषो सिष्मायलि ॥

॥ ॥ श्रीजिन बाणैरे धन्ना । अमोय समाणी मोरा
नंदन । मनमैतो मांणीरे नंदन ताहरै ॥ १ ॥ तुं अतिही वै
रागीरे धन्ना । धरमनो रागी मोरा नंदन । माहरो तो
मन मोरे किस परचावसुं ॥ २ ॥ दस दिसि दीसै रे धन्ना ।
तो विनसूनी (मो०) । अनुमति देतारे जीभ बहै नही ॥ ३ ॥
बत्तीसे नारी हो धन्ना । अतिही पियारी । (मो०) । बाणो
तो बोलै रे मधुर सुहामणी ॥ ४ ॥ चालकतो कामणी रे धन्ना ।
वय पिण तरुणी । (मो०) । गज गति चालै रे चाल सुहा
वणी ॥ ५ ॥ ए घरमंदिर धन्ना । ए सुख सज्या । (मो०) । को
द्विबत्तोसे धननों तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांणोरे धन्ना ।
वय पिण जाणो । (मो०) । भोगवि लेज्जोरे भोग सुहा
मणी ॥ ७ ॥ ब्रत अतिदोहिलो रे धन्ना । नहीय सुहेलो ।
(मो०) । सुगमनही ठैरे साधु कहावणी ॥ ८ ॥ घर घर भि
जा हो धन्ना । गुरुतणी सिष्या । (मो०) । कहनौ तो रहणीरे
नही ठै सारणी ॥ ९ ॥ इक वारे सुणीयै हो धन्ना । आगम
भणीयै । (मो०) । जिनवर जाणो हो दुकर जोगठै ॥ १० ॥
बनवासै रहणा हो धन्ना । परीसह सहनो । (मो०) । कोमल

केसारे लोच करावणो ॥११॥ साचो तें भाष्यो हो अम्मा ।
ऊठन आष्यो (मोरी अम्मा) ॥ दुकर मारग जननी दाषीयो
॥ १२ ॥ सुख अभिलाषो हे अम्मा । ऊठन आषी । (मोरी
अम्मा) ॥ कायरमारग जननी दाषीयो ॥१३॥ एजगखारयो
हे अम्मा । नही परमारथि । (मोरी अम्मा) ॥ बीर बखाण्यो
रे परपदा सज्ज सुण्यो ॥१४॥ मंदेम जाण्यो हे अम्मा । बीर
बखाण्यो । (मोरी अम्मा) ॥ एधन जोवन आज थिर नही ॥
१५ ॥ अनुमति दीजै हे अम्मा । ठीलन कीजै । (मोरी) ।
जोषिण जाईसु फिर आवै नही ॥१६॥ अनुमति आपी हो
अम्मा । जीव सुखपायो ॥ (मो०) ॥ संजम स्त्रीधोरे मनमां
गह गह्यो ॥१७॥ ठाई पारणें हे अम्मा । विगय निवारण ॥
(मो०) ॥ बीरबखाण्यो सुरजर आगलें ॥१८॥ सुख संजम
पालें हे अम्मा । दूषण टालें ॥ (मो०) ॥ अंग दुग्यारह अ
रय रुद्रा भणें ॥१९॥ संजम पाल्यो हे अम्मा । नवपख
वाप्त ॥ मो० ॥ माससंधारै हो सरबारथ सिद्धि लह्यो ॥
२० ॥ ॥ इति श्रीघनान्नाष्टपञ्चिकाय संपूर्णम् ॥ ॥

॥ अथ कर्मसिन्धुनाय लिख्यते ॥

॥ ॥ देव दानव तीर्थंकर गणधर । हरिहर नरवर
सबला । कर्म प्रमाणें सुख दुख पाव्यां । सबल ऊवा महा
निबलारे प्राणौ । कर्म समो नही कोई ॥ १ ॥ आदी सर
जोने कर्म अटाव्या । वरस दिवस रक्षा भूखा । वीरने वारै
वरस दुख दीघा । उपना ब्राह्मणी कूखैरे ॥ प्रा० । क० ॥
साठ सहस सुत माव्या एकणदिन । जोध जुवान नर जं

सा । सगर ऊवो महापुत्रनो दुखियो । कर्म तणा फल श्री
 सारे ॥ प्रा० । ३क० ॥ वलीस सहस देसारे साहिब । चक्री
 सनत कुमार । सोलें रोग शरीरमे उपना । कर्म कीयो
 तनु ठाररे ॥ प्रा० । ४क० ॥ कर्म हवाल कीया हरीचंदने
 बेची सुतारा राणी । बार बरस लगमायै आख्यो । नीच
 तणें घरपाखीरे ॥ प्रा० । ५क० ॥ दधिबाहन राजानी बटी ।
 चावी चंदनवाला । चौपदज्युं चोहटामें बेची । कर्म तणा
 ए चालारे ॥ प्रा० । ६ क० ॥ संभूम नामें आठमो चक्री ।
 कर्म सायर नाख्यो । सोलें सहस जल ऊभा देखै । पिण
 किणही नविराख्योरे ॥ प्रा० । ७ क० ॥ ब्रह्मदत्त नामें बा
 रमो चक्री । कर्म कीधोआधो । दूमजाणी प्राणी येकाइ ।
 कर्म कोई मति बांधोरे ॥ प्रा० । ८ क० ॥ छप्पन कोट या
 दवनो साहिब । छप्पन महाबल जाणी । अटवी मांहि मूं
 वो एक लट्ठो । बिलस करतो पाखीरे ॥ प्रा० । ९ क० ॥
 पांजव पांच माहा ऊजारा । हारोद्रोपदा नारी । बारै ब
 रस लग वन रत्नवाटिया । भमिया जेम भीख्यारौ रे ॥ प्रा० ।
 १० क० ॥ बीस भुजा देस मस्तक ऊंता । लषमण रावण
 माख्यो । एक लट्ठ जग सज्ज नर जीत्यो । ते पिण कर्म सु
 हाख्यो रे ॥ प्रा० । ११ क० ॥ लषमण राम महाबलवंता ।
 अरु सतवंती सीता । कर्म प्रमाणें सुख दुख पाय्या । बी
 तक बज्ज तसवीता रे ॥ प्रा० । १२ क० ॥ समकितधारी अ
 णिक राजा । बैटै बांध्योसुकै । धरमी नरनें करम धका
 यो । करमसुं जोरन किस कारे ॥ प्रा० । १३ क० ॥ सतीब
 सिरोमणी द्रोपदा कह्यौ । जिन सम अवरन कोई । पांच

पुरुषनी जड़ ते नारी । पूर्व कर्म कमाई रे ॥ प्रा० १४
क० ॥ आभानगरी नो जे स्वामी । शाचो राजा चंद । माई
कोधो पंखी कूकतो । कर्म नाख्यो ते फंदरे ॥ प्रा० १५
क० ॥ दूसरदेवने पारवतो नारी । करता पुरुष कहावै ।
अहिनिस महिल मसाणमे बासो । भिख्या भोजन खावै
रे ॥ प्रा० १६ क० ॥ सहस किरण सूरज परितापी । रात
दिवसरहै अठतो । सोलकला असोघर जगचावो । दिनरे
जाये घटतो रे ॥ प्रा० १७ क० ॥ इम अनेक खंडा नर
करमे । भाज्या ते पिण साजा । ऋद्धि हरष करजोतीने
बोनवै । नमोरे करम महाराजा रे ॥ प्रा० १८ क० ॥ इति
श्रीकर्मसिन्धु संपूर्णम् ॥ ॥ ॥ ॥

अथ शीता सिन्धु लि० (

॥ ॥ जल जलती मिलती वणीरे । जालो जाल अपार
रे । सुजाण सीता । जाणे केसूफूलियारे लाल । राता खैर
अङ्गाररे ॥ सु० १ ॥ धीज करै सीतासती रे लाल । सील
तथे परिमाण रे ॥ सु० ॥ लखमण राम प्रसीधया रे लाल ।
निरखे राणो राणरे ॥ सु० २ ॥ स्नान करी निरमल जले
रे लाल । पावक पासै आयरे ॥ सु० ॥ ऊभी जाणे सुरङ्गना
रे लाल । अनुपम रूपदिखायरे ॥ सु० ३ ॥ नर नारी मिलौय
षणा रे लाल । ऊभा करै हाय हाय रे ॥ सु० ॥ भस्म जसो
इण आगमे रे लाल । राम करै अन्याय रे ॥ सु० ४ ॥ राघव
बिन बांछ्यो जवै रे लाल । सुपनेही नहीं कोयरे ॥ सु० ॥ तो
सुऊ अगन प्रजालज्यो रे लाल । नहीं तो पाणी होय रे ॥

सु० ५॥ इम कछ पैठी आगमें रे लाल । तुरत अगनथयो
 नीररे ॥ सु० ॥ जाणेंद्रह जलसुं भखीरे लाल । जीलै धरम
 सुधोररे ॥ सु० ६॥ देवकुसम वरषा करै रे लाल । एह सतो
 सिरदार रे ॥ सु० ॥ सीता धीजै जतरै रे लाल । साधमरैसं
 सार रे ॥ सु० ७॥ रलियायत सङ्गको थयारे लाल । सगलै
 यथा उठरंगरे ॥ सु० ॥ लखमण राम खुसौययारे लाल ।
 शीतां सौल सुरंगरे ॥ सु० ८॥ जगमांहे जस जेहनो रे लाल ।
 अविचलसौल कछाय रे ॥ सु० ॥ कहै जिन हरष सतीतणा
 रे लाल । नितप्रणमौ जै पाव रे ॥ सु० ९॥ इति सौतास
 ती सिञ्जाय समाप्तम् ॥ ॥ ॥ ॥

अथ अनाथी कृष सिञ्जाय लि० ।

॥ ॥ ॥ येणिकरय वाप्तीचख्यो । पेखियो सुनौ एकंत ।
 बर रूपकाति मोहियो । राय पूठै रे कहो बिरतंत ॥ १॥ ये
 णिकराय ऊं रे अनाथीनि ग्रंथ । तिणमें लीधोरे साधजीनो
 पंथ ॥ (ये) ॥ इण कोसंबो नगरी वसे । मुक्तपितर परवल धन ।
 परवार परै परवख्यो । ऊं हुं तेहनो रे पुवरतन ॥ ये० २॥
 इक दिवस मुक्त वेदना । ऊपनी ते न खमाय । मात पितर
 सङ्ग भरी रह्या । तोही पिणरे समाधि न्याय ॥ ये० ३॥
 गोरप्पी गुणमनउरप्पी । उरप्पी अबला नार । करप्पी
 पौत्रामें सही । नही कीधोरे मोरप्पी सार ॥ ये० ४॥ बड
 राजवैद्य बुला इया । कौबला कोटि उपाय । बावना चदन
 ले इया । पिण तोही रे दाह नविजाय ॥ ये० ५॥ बदना
 जो मुक्त उपसमें । तो लेवुं संजम मार । इम चिंतवतां वे

। अनाथीसिञ्जाय । प्रतिक्रमणसि । सात विसनसि । ३। २१५

दुन गई । व्रत लीधोरे हरष अपार ॥ अ० ६ ॥ जगमांहि
को कहनो नही । तेभखी ऊं रे अनाथ । वीतरागनो धरम
वाहरो । कोइ नहोरे मुगतिनो साथ ॥ अ० ७ ॥ करजो
दि राजा गुणस्तवै । धन धनतूं अनगार । अणिक समकि
तं तिहां लहै । बांटीपुं हचैरे नगरमभार ॥ अ० ८ ॥ मुनि
वर अनाथी गावतां । कर्मानी तूटै कोदि । गणि समव सुं
दर तेहना । पायबांदै रे वे करजोदि ॥ अ० ९ ॥ ॥ ॥
इति अनाथी सुनो सिञ्जाय समाप्तम् ॥ ॥ ॥

॥ अथ प्रतिक्रमण सिञ्जायलि ॥

॥ ॥ करि प्रतिक्रमणो भावसुं । दोषघटी सुभ भा
ण ॥ लालरे ॥ परभवजातां जीवनें । संवल साचो जाण ॥
लालरे ॥ १ ॥ (करिप्रतिक्रमणो भाव सुं०) ॥ ओमुख बौरससु
चरे । अणिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाखखंजी सोना
तणी । दीयै दिन प्रतिदान ॥ ला० ॥ २ (करि०) ॥ लाखवरस
लग तेहनें । इम दीयै द्रव्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामायक
नौ तुला । नावै तेह लगार ॥ ला० ॥ ३ (करि०) ॥ सामाय
क परसाद थौ । लहौयै अमरविमान ॥ ला० ॥ धरमसींह
मुनिवर कहे । मुगति तणो ए निदान ॥ ला० ॥ ४ (करि) ॥
इति प्रतिक्रमण सिञ्जाय संपूर्ण ॥ ॥ ॥

॥ अथ सप्तव्यसन सिञ्जायलि ॥

॥ ॥ सात विसननारे संग मतां करो । सुण तेहनो
सुविचार ॥ विवेकी ॥ सात नरक नारे भाई सातेई । अपै

दुख अपार ॥ विवेकी । १ सा० ॥ प्रथम जूवानेरे विसनपडां
 थकां । पांजव पांच प्रसिद्ध ॥ विवेकी ॥ नलराजा पिण इण
 विसनें पड्यो । षोड सद्ध राज रिद्ध ॥ वि० २ सा ॥ दूसरे
 मांस भक्षण अवगुण घणां । करै परजौव संहार ॥ वि० ३
 सा० ॥ तौजै मदरा पान विसनतनौ । चितधरी बलौ चाह ॥
 वि० ४ सा ॥ चौथे विसनें वेस्वावर बसै । लोकमे न
 रहै लाज ॥ वि० ५ सा ॥ पाप आहेतै कुविसन साचवै ।
 प्राणौ हणोये प्रहार ॥ वि० ६ सा ॥ ठाँ चोरीनें
 विसनें करी । जीव लहै दुखजोर ॥ वि० ७ सा ॥ परलीय सं
 गत कुविसनसातमे । हाणि कुजस बड्ड होय ॥ वि० ८ सा ॥
 रावण सौता अपहरी । नास लंकानोरे जोय ॥ वि० ९ सा ॥
 इम जाणौ भव्य तुमे आदरो ॥ सीख सुगुरनीरे सार ॥ वि० १०
 सा ॥ इण भव परभव आणंद अति घणा । कहै धमसौ मुख
 कार ॥ वि० ११ सा ॥ इति सात विसननी सिञ्जाय संपूर्णम ॥

॥ अथ उपदेस सिञ्जायलि ॥

॥ ॥ दमका नाहि भरोसा शाहै । करले चलनें का
 सामान ॥ १० ॥ तन पिंजरसै निकश जाइगा । तिनमें पंछी
 प्राण ॥ ११ ॥ लख चोरासौ जोजन भट्को । उपनौ ग

रभा धान । सवानव मास बश्यो अंधकूपमें । मनुष्य
रूप सनमान ॥ ८०५ ॥ उत्तम कुलमें जनम लियो है । सुख
में खाण अरुपाण । भीरपद्मां तेरे कोइयन साथी । साथी
दान अरुध्यान ॥ ८०६ ॥ आसा विशनां विकथा निद्रा । कु
मता रूपनिधान । दिन २ बधै पापकी संगत । व्यापै क्रोध
अरुमान ॥ ८०७ ॥ चलते फिरते सोवत जागत । करतखाण
अरुपाण । ठिन २ आयु घटत है तेरो । होत देहकीहाण ॥
८०८ ॥ माल सुलक अरु सुखसंपत में । होय रक्षा गलतान ।
देखत २ विनस जायगा । मतकर मान गुमान ॥ ८०९ ॥ ऊठा
सब यह जगतपसारा । नारी विषकी खान । माया ममता
आदिके बैरी । इनसे कहा पहचान ॥ ८१० ॥ पांचूं चोर सुं
सें घर तेरा । इन की खोटी बाणि । अठबैरी तेरे संगफिर
तु है । मोह बढा सुलतान ॥ ८११ ॥ कोइ रहणें पावे नही
जगमें । यह तु बिहचै जानि । अजडं ठांनि समजि कुट
लाई । मूरख नर अज्ञान ॥ ८१२ ॥ भाई बंध अरु सजन
संबंधी । राखै तेरा मान । अंतसमें कोईकामन आवै ।
किसपै मान गुमान ॥ ८१३ ॥ जप तप सील पालो सुभ
संगत । देह सुपावे दान । संहित साध चरण चितल्या
वो । प्रभु भज तज अभिमान ॥ ८१४ ॥ इति उपदेस
सिञ्जाय संपूर्णम् ॥ ॥ ॥

॥ अथ बाह्वलजीनौ सिञ्जायलि ॥

॥ ॥ ईप्तर आंबा आंवली रे । एदेशी ॥ ॥ बाह्वल
चारित लीयोरे । साचो घरिबैराम । भरतेसर इस बौनवै

रे । बार२ पाय लाग । हरष भर मुऊसुं बोलज्योरे (घानै
 वावाजीरी आण । घाने ऋषभदेव जीरी आण । घेतो
 मकरो खेंचा ताण । घेतो माहरै जीवन प्राण) । हरष० ।
 मुऊ सुं वो । (आंकली) ॥१॥ ऊंतो भाई ताहरो रे । जेनें
 कीधो दोस । तो पिण षमज्यो भाई द्वारे । गरुवा नकरै
 रोस ॥ ८० २ ॥ आवो बांह देई मिलारे । जोवो आंख
 उवाप्त । बोलो मौठा बोलदारे । पुरो मननो लाप्त ॥ ८० ३
 खिलो नाखुं तोदनरे । जिण कुलजाई वेढा नायो आयुध
 सालमें रे । ज्युं वांजण घर ढेढ ॥ ८० ४ ॥ भाभीनाउ
 लंभदारे । किमसंभलायैकान । जातां पांव वहैनहीरे । तुफ
 नें सुं कीरान ॥ ८० ५ ॥ तूं जीव्यो हूं हारौयोरे । देव भरै
 ठैसाण । तुऊ सरिखो जग को नहीं रे । मुऊ सरिपाठै
 लाख ॥ ८० ६ ॥ माथै सूरज आवीयो रे । पसीनो सारो
 गात । बसो भोजन जीमियैरे । खारक दाख निवात ॥ ८० ७
 तूं माहरै जीवन आतमारे । तुं हीज माहरै बांह । दिस
 सूनी भाई बीनारे । आवोनें घरयांह ॥ ८० ८ ॥ तिन्नांगू
 एकण मतरै । मुऊनें लोभी जाण । ते सऊ मुऊनें परिहयो
 रे । ज्युं वरसालै ठाण ॥ ८० ९ ॥ तूं माहरै जीवन आतमारे ।
 तुं हीज माहरै बांह । दिस सूनी भाई बीनारे । आवो
 नें घर जांह ॥ ८० १० ॥ बोलं धणाई बोलिया रे ।
 भरतेसर महाराज । हाथोना दांत जे नीकल्यारे । तेपा
 ठानवीजाय ॥ ८० ११ ॥ अभिमानो सिर सेहरोरे । बाह
 बल रिपराय । सौधा करमखपायनेरे । विमलकीरन गुण
 गाय ॥ ८० १२ ॥ इति बाह्वलभिक्काय संपूरणम् ॥

॥ अथ चेलणा महासती सिञ्जायलि ॥

॥ ॐ ॥ वीरवांदी वलतां यकांजी । चेलणा दोठारे
निग्रंथ । राति वनमांहि काउसग रछ्यो जी । साधतो सुग
तिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी । सतीय
सौरोमणि जाण । चेत्ता राजानी साते सुतानी । अणिक
सीयल परमाण ॥ २ वी० ॥ सीत ठंठार सबलो पट्टी जी । चेल
णा प्रीतम साथ । चारितीयो चौतमें वस्यो जी । सोवट्टि
बाहिर रछ्यो हाय ॥ ३ वी० ॥ ऊजक जागो कहै चेलणा
जी । किम करतो जस्यै तेह । कुसतो मनमाहिं ए कुणवस्यो
जी । अलिक पंडोरे संदेह ॥ ४ वी० ॥ अंतउर परो जाल
ज्यो जी । अणिक दीयोरे आदेस । भगवंत सांसोभांजि
योजी । चमकियो चित्तनरेस ॥ ५ वी० ॥ वीरवांदो वलतां
यकां जी । पैसतां नगर मज्जार । धुंवानो धोर देखी करी
जी । जा जाहरे अजय कुमार ॥ ६ वी० ॥ तातनो वचन
पालौ करौ जी । वतलियो अभय कुमार । समय सुंदर
कहै चेलणा जी । पामियो भवतणोपार ॥ ७ वी० ॥ इति
चेलणा महासती सिञ्जाय संपूर्णम् ॥ ॐ ॥

॥ अथ वैराग्य सिञ्जायलि ॥

॥ ॐ ॥ भूलोमन भमराकांइभमै । भमीयो दिवसनें
रात । मायारो वांध्यो प्राणीयो । भमीयो परमल जात ॥ १
भू० ॥ कुंभ काचो काया कारनी । जेहना करोरे जतन्न ।
विणसतां वार लागै नही । निरमल राखोरे मन्न ॥ २ भू० ॥
जेहना ठोरु जेहनां वाठरु । जेहनां मायनै वाप । प्राणी
जास्य एकलो । साथे पुण्यनें पाप ॥ ३ भू० ॥ आस्थातोहं रा

र जेवन्ती । मरवोपगलारै हेठ । धन संचौ संचकारिक
 करो । करवो देवनी वेठ ॥ ४ भू० ॥ लखपति ठवपति सब
 गए । गएलाखोंके लाख । गरम करीरे गोषै बैसता । भए
 जलबल राख ॥ ५ भू० ॥ भवसायर जलदुख भख्यो । तिर
 वोठैरे जेह । विचमें बीह सबलो अठै । करमें बायने
 मेह ॥ ६ भू० ॥ उलट नहो मारग चालवो । जायवो पहि
 लै रे पार । आगलि नहो हटवाणीयो । सबल लेज्योरे सा
 थ ॥ ७ भू० ॥ मूरख कहै घन माहरो । घन कहनो नथाय ।
 वल्लविना जाय पोठवो । लखपति लाकन मांय ॥ ८ भू० ॥
 महमंद कहै वस्तु वोरियै । जे कुठ आवैरे साथ । अपणो
 लाभउवारीयै । लेखो साहिब हाथ ॥ ९ भू० ॥ इति ॥

अथ बाह्वलजी सिंजायलि ।

॥ ॐ ॥ राजतणा अति लोभीया । भरत बाह्वल भू
 भैरे । मूठि उपात्ती मारिवा । बाह्वल प्रतिबुझैरे ॥ १
 वीराम्भारागजयकी ऊतरो । ब्राह्मी सुंदरी भासैरे । क
 षम जिणैसर मोकली । बाह्वलनें पासैरे ॥ २ वी० ॥ (गं
 च्यां केवल नहोईरे ॥ २ वी० ॥ लाचकरी चारितलीयो ।
 वलि आयो अभिमानोरे । लघु वंधव वांदुं नहौ । काउसग
 रह्यो सुभ ध्यानो रे ॥ ३ वी० ॥ वरस दिवस काउसग र
 ह्यो । विलगियां वीटाणोरे । पंखीमाला मांजीया । सौतता
 प सूकाणारे ॥ ४ वी० ॥ साधवो वचन सुण्या दसा । च
 मक्यो चित्तभारोरे । हय गय रथ में परिहखा । पिख
 नविमुंको अहंकारोरे ॥ ५ वी० ॥ बेरागै मन वालीयो ।
 मुंको निज अभिमानोरे । पांव उपात्ती वांदिवा । ऊपनी

केवल नाणोरे ॥ ६वी० ॥ पड़तो केवलि परषदा । बाह्वल
ल ऋष रायारे । अजर अमर पदवी लहै । समय सुंदर
वंदै पाया रे ॥ ७ वो० ॥ इति बाह्वल सिन्धायसंपूर्णम् ॥

॥ अथ अरणकसुनी सिन्धायलि ॥

॥ ३॥ अरणक सुनिवर चाल्यागोचरी । तप्तकैदाभै
सौसो जी । पाय उवराणारे बेलूपर जलै । तन सुकमाल
सुनौसो जी ॥ १ अ० ॥ सुखकमलाणोरे मालतीफूलज्युं ।
जभो गोखनें हेठोजी । खरै दुपड़रैरे दौठो एकलो । मो
ही माननी मौठोजी ॥ २ अ० ॥ वयण रंगीलैरे नयणे बे
धियो । ऋषयंभो तिणवारो जी । दासीनें कहै जाय
जंतावली । उरिष तेही आणो जी ॥ ३ अ० ॥ पावन कौजै
रिषवर आणो । बहिरो मोदकसारो जी । नव जोवन
रस काया काइदहे । सफल करो अवतारो जी ॥ ४ अ० ॥
चंद्रावदनीरे चारित चूकव्यो । सुखविलसै दिन रातो जी ।
इकदिन गोखरे रमतो सो गटै । तव दौठी निज मातो
जी ॥ ५ अ० ॥ अरणक अरणक करतीमायफिरै । गलियै
गलियै मभारो जी । कहि किय दौठोरे माहरो अरण
लो । पूठै लोक हजारो जी ॥ ६ अ० ॥ उतर तिहां थीरे
जननीपाय नम्यो । मनमें लाज्यो तिवारो जी । धिग् धिग्
पापीरे माहरा जीवनें । ए हमें अकारज कीधो जी ॥ ७
अ० ॥ अगन धुपंतोरे सीला उपरै । अरणक अणसण की
धोजो । समय सुंदर कहै धनते सुनवरुं । मनवंडितफल
सौधोजी ॥ ८ अ० ॥ इति अरणक सुनिसिन्धाय संपूर्णम् ॥

गर्भाधान उत्पतविचार वैराग्यसि लि० ।

॥ ३३ ॥ उत्पत जोय जीव आपणी । मनमांह विमास ।
 गरभावासे जीवजो । वसीयो नवमास ॥ १७० ॥ नार तणी
 नाभीतलै । जिन वचनें जोय । फूलतणी जिम नालिका ।
 तिम नाजोठै दोय ॥ १७० ॥ तमुतल जोनि कहीजियै । वरफू
 ल समान । आवं तणी मांजर जिसे । तिहां मांस प्रधान ॥
 १७० ॥ रुधिरश्च वै तिहां मांसधी । रितुकाल सदौव । रुधि
 र शुक्रजोगै करी । तिहां उपजै जीव ॥ १७० ॥ जे अपाव
 न पवनें करी । वासित दुरगंध । तिणथानक तूं ऊपनो ।
 हिव कूड अंधमंध ॥ १७० ॥ नाजो वांसतणी घणु । भरोयै
 रुषाल । तातोलोह सिलाकतै । जालै ततकाल ॥
 १७० ॥ तिम महिलानी जोन में । ठै नवलख जीव ।
 पुरुष प्रसंगे तेसह । मरि जायसदौव ॥ १७० ॥ उपजै
 नरनारी मिल्यां । पांचेइंद्री जेह । तेह तणी संख्या
 नहौ । तजो कारज एह ॥ १७० ॥ नवलख जीव
 टिकै तिहां । उत्कृष्टौवार । जीव जघन्य पणें टिकै ।
 एक दोय बिण चारि ॥ १७० ॥ जीव जघन्य तिहां रहै ।
 मझरत परिमाण । बार वरसनौ थिति तिहां । उत्कृष्टी
 जाण ॥ १७० ॥ तिहां गरभै कोइ जीवजो । जंपै जग
 दीस । फिर नर आवंतो रहै । संबत्सर चोवीस ॥ ११
 महिला वरस पिचावनें । कहीयै नीरबोज । पिचहत्तर वर
 सां पठै । थायै पुरुष अजो ॥ १२ ७० ॥ जीमणी कूपै न
 र वसे । तिम बामे नारि । बीच नपुंसक जाणीयै । जिन
 वचन विचार ॥ १३ ७० ॥ हिव सामान्य पणें इहां । आ

यो गरभावास । सातदिना ऊपरि रहै नरगत नवमास ॥
 १४ उ० ॥ आठवरस तिरयंच रहै । उत्कृष्टै काल । गरभा
 वासै भोगव्यं । इम ब्रह्म जंजाल ॥ १५ उ० ॥ कारमण का
 ये करलीयो । पहिलो आहार । शुक्र अने स्त्रोणितत
 णो । नही भूतलिगार ॥ १६ उ० ॥ परजापत पूरो नही ।
 तिहां विसवा वीस । तिण आहारै तूथयो । ऊदारक मी
 स ॥ १७ उ० ॥ पवन अठै उदरै तिको । ऊपजायै अंग । अ
 गनिकरै धिर तेहने । जल सरस सुरङ्ग ॥ १८ उ० ॥ कठ
 न पणै प्रथवी रहै । अवगाह आकास । पांचभूत शरीर
 में । इम करै प्रकास ॥ १९ उ० ॥ वारै मज्जरत तां पठै । वि
 लसै नरनारि । गरभतणौ उतपति तिहां । नही अव्वर ।
 प्रकार ॥ २० उ० ॥ कलिल ऊवै दिन सातमै । अव्वद
 दिन सात । अव्वदयौ पेसी वधै । वनमांस कहात ॥ २१
 उ० ॥ मांसतणी बोटी ऊवै । अद्रतालीस टांक । प्रथम
 मास जिनवर कहै । मनघरो निसंक ॥ २२ उ० ॥ सुधिर
 मांसवोजै ऊवै । हिवै तीजै मांस । करम तणै वसि ऊपजै ।
 माता मन आस ॥ २३ उ० ॥ चौथै मासै मातना । प्रणमै
 सङ्ग अंग । हाथ अने पग पांचमे । तिम सुतकोसंग ॥
 २४ उ० ॥ पित्त रुधिर ठठ्ठे पणै । सातमें इण संच । नव
 धमणी नस सातसै । पेसीसय पंच ॥ २५ उ० ॥ रोमराय पि
 ण सातमें । साढी तीन कोटि । उपजे जणै केतलै । इम
 आगम जोट ॥ २६ उ० ॥ आठमै मासै नौपनो । इम सक
 ल शरीर । जंघै सिर वेदन सहै । जंपै जिनवीर ॥ २७ उ० ॥
 सोणित शुक्र संलेपमा । लघुनें वदनीत । वात पित्त कफ

गरभयो । थायै नरनीत ॥ ३८ उ० ॥ मात तणा सुहटो
 लगै । बालकनो नाल । रस आहार करै तिहां । आवै तत
 काल ॥ ३९ उ० ॥ जननो ल्यै आहार ते । वायं नाद्रो
 नाद्र । रोम इंद्री नख चख बधै । तिमसींजीने हाद्र ॥ ४०
 उ० ॥ सबह्र अंगै जलसै । सरबंग आहार । कवल आहार
 कर नहो । गरमै सुविचार ॥ ४१ उ० ॥ मास बीजै किय
 जीवने । थायै ज्ञानविभंग । अथवा अवधि कहौ जीयै । ति
 ण ज्ञान प्रसंस ॥ ४२ उ० ॥ कटक करै वैक्रीयपणें । ऊज्जी
 नरकौ जाय । को जिन वचन सुणी करो । मरो सुर पिय
 थाय ॥ ४३ उ० ॥ जंघैसुख गोप्ता होयै । सहि तो बड पौ
 ढ । इष्टि आगलि विज्जं हायसु । रहै सुझौभौच ॥ ४४
 उ० ॥ नरविण बल जलादिकौ । उपजै आधान । अथवा
 विज्जं नारी मिलयां । कह्यो गरभ विधान ॥ ४५ उ० ॥ कोई
 उत्तम चिंतवै । देखी दुख वास । पुन्यकरी तिम नीकलुं । ना
 जं गरभावास ॥ ४६ उ० ॥ जंठकोद्रि चांपै सुई । कोई
 समकाल । तिणथौ गरमै अठगुणौ । सहै वेदन बाल ॥ ४७
 उ० ॥ माता भूखी भूखीयो । सुखणो सुखयाय । माता
 सूती ते सुवै । परवस दिन जाय ॥ ४८ उ० ॥ गरभ यकी
 दुख लखगुणो । जामें जिनवार । बन्धययां दुख बीसरी ।
 धिग् मोह विकार ॥ ४९ उ० ॥ उपज्यो अशुचि पणै
 जिहां । मल मूत्र कलेस । पिंज अशुचि करि पूरीयो ।
 किहां सुचि लवलेस ॥ ५० उ० ॥ तुरत सदन करतो बक्रो ।
 जामै जिणवार । मात पयोधर सुख ठवै । पीयै दूध तिवा
 र ॥ ५१ उ० ॥ दिन दिन दीसै दीपतो । करै रंग अपार ।

लाग्नकोट मातापिता । पूरै सुविचार ॥ ४१ उ० ॥ ओ
 त इग्यारै नारिनें । नव नरनें जाण । रात दिवस वहिता
 रहै । चेतो चतुर सुजाण ॥ ४३ उ० ॥ सांत घातु साते त्व
 चा । ठै सातसै नाट । नवसै नाडी पिंडमैं । तिम तीनसै
 हाड ॥ ४४ उ० ॥ संधि एकसो साठठै । सतोत्तरसो भर
 म । तीन दोष पेसो पांचसै । ठांकीठै चरम ॥ ४५ उ० ॥
 रुधिर सेरदस देह में । पेसाव सरीष । सेर पांच चरवी
 तिहां । दोय सेर पुरीष ॥ ४६ उ० ॥ पित्त टांक चोसठ
 अठै । वीरज बत्तीस । टांक बत्तीस सलेखमां । जाणैं
 जगदीस ॥ ४७ उ० ॥ इण परमाण थकी यदा । उठो
 अधिको याय । व्यापै रोग शरीर में । नवि चालै
 काय ॥ ४८ उ० ॥ पोख्यो पहिलै दाहकैं । इम वधियो ।
 अंग । खान पान भूषण भला । करै नवनवा अंग ॥ ४९
 उ० ॥ हिव बीजै दसकै भग्यो । विद्या विवध प्रकार । ती
 जै दसकै तेहनें । जाग्यो काम विकार ॥ ५० उ० ॥ जिण
 वानक तुंजपनो । तिणमें मन जाय । चोथै दसकै धन
 तणो । करै कोटि उपाय ॥ ५१ उ० ॥ पड्डतो दसकै पां
 चमें । मनमें ससनेह । बेटाबेटोपोतरा । परणावै तेह ॥
 ५२ उ० ॥ ठहै दसके प्राणीयो । बले परवसथाय । जरा
 आवी जोवन गयो । तृष्णा तोही नजाय ॥ ५३ उ० ॥ आवै
 दसकै सातमें । हिव प्राणी तेह । बलभागो बूढोषयो ।
 नारी नधरै सनेह ॥ ५४ उ० ॥ आठमें दसकै मोसलो । पु
 लिया सड दांत । कर कंपावै सिरधुणें । करै फोकट वात ॥
 ५५ उ० ॥ नवमें दसकै प्राणीयो । तन सूकत जाय । सा

लै वचन बद्धवां तणां । दिन ऊरतां जाय ॥ ५६ उ० ॥
 खाट पड्यो खूखूं करै । सज्ज गाली देह । हालहुकमहा
 लै नही । दीयो परजन ठेह ॥ ५७ उ० ॥ आख गलै त्रेपु
 न मिलै । पत्ते सुंहतै लाल । बेठा बेठीनें बहू । नकरै
 सार संभाल ॥ ५८ उ० ॥ दसमे दसकै आवौयो । तब पूरी
 आय । पुण्य पाप फल भोगवो । प्राणी परभव जाय ॥
 ५९ उ० ॥ दस दृष्टांते दोहिलो । लह्यो नर भवसार । औ
 जिन धरम समाचरो । पामो जिम भवपार ॥ ६० उ० ॥
 चरण पणें जे तपतपै । पालै निरमल सील । ते संसार तरी
 करी । लहै अविचल लील ॥ ६१ उ० ॥ कोटि रतन कवटी
 सटै । काईगमें रे गिंवार । धरम पखै पिण जीवनें ।
 नहीं कोई आधार ॥ ६२ उ० ॥ काया माया कारमी ।
 कारमो परिवार । तन धन जोवन कारिमो । साचो
 धरम संभार ॥ ६३ उ० ॥ चवदै राज प्रमाण । ठै लोक
 महंत । जनम मरण करि फरसियो । ते वार अग्रंत ॥
 ६४ उ० ॥ आप सवारथिया सह । नहीं केहनो कोय ।
 विण स्वारथ अण पूजतां । सुत पिण बेरी होय ॥ ६५
 उ० ॥ जरां न आवै जालगै । जालग सबल शरीर । धरम
 करो जीवतां लगै । होइ साहस घोर ॥ ६६ उ० ॥ आर
 जदेस लह्यो हिवै । लाघो गुरु संयोग । अंग थकी आलस
 तजो । करो सुकृत संयोग ॥ ६७ उ० ॥ अनीमिराय
 तणी परै । चेतो चित मांहि । स्वारथमा सज्ज को सगा ।
 कोई किणरो नांहि ॥ ६८ उ० ॥ भोग संजोग तजी सह ।
 थया जे अणगार । धन धन तसु मातापिता । धन जन

अवतार ॥ ६६ उ० ॥ सुरतरु सुरमणि सारिखो । सेवो
जिन धरम । जिणयी मुखसंपति कषै । कीजे तेहीज कर्म ॥
७० उ० ॥ तंदुल वेयाली अठै । एहनो अधिकार । तिण
थी जधरनें कछो । नहीं ऊठलिगार ॥ ७१ उ० ॥ (कलस)
इह जेनधर्म विचार सांभलि लीयै संयम भार ए । परि
सींहेकरा सदा पालै नेमनिरतीचार ए । संसारना सुख
सकल भोगवि ते लहै भवपार ए । ओजिन हरष सुसीस
रंगै इम कहै आसार ए ॥ ७२ उ० ॥ इति उपदेस इकत
री संपूर्णम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥अथ विजयसेठ विजयासेठाणीको चोढालियो लि०॥

॥ ॥ ग्रह ऊठीरे पंच परमेष्ठि सदा नमुं । मनसूधे
रे तेहनें चरणे नित नमुं । धुरि तेहनें रे अरिहंत सिद्धव
खाणियै । आचारजरे उपाध्याय मन आणियै । (उल्लाले)
आणीयै निज मन भाव सुद्धे उपाध्यायनमूं वली । जे पन
रह करम भूमि मांहे साधु ग्रणसुं ते वली । जिन दृष्ट
पक्षने सुक्तपक्षवलि सील पाल्यो ते सुणो । भरतारने
स्त्रीविद्धे तेहनो चरित भाविसुं भणो ॥ १ ॥ भरत छेबै रे
ससुद्र तोर दक्षण दिसै । कल्लदेसै रे विजय सेठ आवक
वसै । शील जतरे अंधारा पक्षनो लियो । वाला पणैरे
एहवो निश्चो मन कियो । (उल्लाले) मन कोयो एहवो तेण
नियै पख्य अंधारै पाल सुं । ऊंसोल निश्चै एह विरुड
विषय सेवा टाल सुं । इक अठै सुंदर रूप विजया
नाम कन्या तिवली । तिण सुक्त पक्षनो सील लीघो सुगुरु

जोगै मन रली ॥३॥ कर्मजोगैरे मांहो मांहिं तेबिज्जंतणो
 शुभ दिवसै रे ऊओ विवाह सुहामणो । तव विजया रे
 सोलै शृंगार भला करौ । पिउ मंदिर रे पोहतौ मन
 उल्लट धरी । (उल्लालो) मन धरी उल्लट अधिक पड़तो
 प्रिया पासै सुन्दरी । ते देखि हरपै सेठ बोलै सील निओ
 संभरी । मुऊसोल निओ पख अंधारै तेहना दिन तीन
 ठै । ते नेम पाली सुकलपख्य ऊं भोग भोगवख्युं पठै ॥
 ॥३॥ (चाल) इम सांभल रे विजया तव विलखी बई ।
 पीऊ पूठै रे किम चिंता तुऊनें भई । तव विजया रे कहै
 सुकल पक्ष व्रत में लीयो । व्रत चोथो रे बाला पण नि
 ओ कौयो । (उल्लालो) बाला पणें में कौयो निओ सुकलपक्ष
 व्रत पालख्युं । तो उभै पक्ष हिव सील पाली नियम
 दूषण टालख्युं । तुम्हें अवरनारीपरणनें हिव सुकल पक्ष
 सुख भोगवो । कृष्ण पक्ष निज नियम पाली अभिग्रह
 इम जोगवो ॥ ४ ॥ तव बलतोरे तसु भरतार कहै इसो ।
 विषया रसरे कालकूट विषह्वै तिसो । ते ठंठौ रे
 सीलव्रत दोनुं पालखां । एह्वार्त्तारे मात पिता न ज
 णावखां ॥ ७ ॥ मात पिता जब जाणख्यै तव दिख्य लेसां
 धरदया । इम अभिग्रह लेइनें ते भाव चारिलौया बया ।
 एकल सज्या सयन करतां खलंगधारा व्रतधरै । मन वचन
 काया करी सुधो । सील बेऊं आचरै ॥ ५ ॥ (ढाल) ॥ विमल
 केवली एक । चंपा नयरीयै । ततखिण आवि समो सखाए
 आणी अधिक विवेक । आवक जिण दास । कहै विनव
 गुण परिवख्यो ए ॥ ६ ॥ सहस चोरासी साधु । मुऊ बर

पारणो । करै मनोरथ तो फलै ए । केवल ज्ञान अगाध ।
 कहै आवक सुणो । एह वाततो नवि मिलैए ॥७॥ किहां
 एतला अणगार । किहां वलि सूऊतो । भातपाणी नही एत
 लोए । तो हिव तेहविचार । करो तुम्हे जिम तिम । फल
 अन्ह जूवै तेतलोए ॥८॥ अठै हिवै कलुदेस सेठ । विजय व
 ली । विजया भार्या तसु धरैए । भावयतो ग्रह वास । तेहने
 भोजन । दीघां फल जूवै तेतलोए ॥८॥ जिणदास कहै भग
 वंत । तेमांहि एतला । कुण गुण कुणवतठै षणाए । केवलौ
 कहै अनंत । गुण तसु सौलना । कृष्ण शुक्लपक्ष व्रत तथा ए
 ॥१०॥ (ढाल)३॥ दानकहै जगज्जं वज्रो एहनौ ॥ केवलौने सु
 ख सांभली । आवक तेजिनदासरे । कलुदेस हिव आवीयो ।
 पूरै निजमन आसरे ॥११॥ (धन२ सौल सुहामणो) ॥ सौल
 समो नही कोई रे । सौलै देव सानिध करै । सौल थौ सिव
 सुख होई रे ॥ ध० ॥ १२ ॥ सेठ विजय विजया भणी । भग
 तसु भोजन देई रे । सहस चोरासी साधुना । पारणा
 नो फललेई रे ॥ ध० ॥ १३ ॥ मात पिता पूठै तेहने । एहनो
 सौल वखाणरे । केवलौने सुख जिम सुण्यो । तिम कहै ते
 गुणजाणरे ॥ ध० ॥ १४ ॥ सहस चोरासी साधुने । पारणो
 दीये कोई भायरे । कृष्ण शुक्लपक्ष दंपती । भोजननो फल
 बायरे । ध० ॥ १५ ॥ मात पिता जबजाणीयो । प्रगट जूओ
 संबंधरे । सेठविजय विजया लीयो । चारित अतिबंधरे
 ध० ॥ १६ (ढाल)४॥ केवलौने पासै । चारित लेई उदार । मन
 ममता मूँकी । पालै निरतीचार ॥ १७ ॥ आठ करमखपावी ।
 पाय्यो केवल नाण । ते सुगतै पुहता । दंपती सुगण सुजा

य ॥१८॥ तेहना गुणगावै । भावै जे नरनार । तेवंछित सु
 खलहै । पङ्कचै भवनें पार ॥ १९ ॥ (कलस) इम कृष्णपक्ष
 नें शुक्ल पख्यै सील पालयो निरमलो । ते दंपतीनां भाव
 सुहै सदा सुभ गुण सांभलो । जिम दुरिय दोहग दूर
 जाय सुख थायै बहूपरै । वलिसकल संगल मनह वंछित ।
 कुसल नित घर अवतरै । इति कृष्ण शुक्ल पक्ष चौढालियो
 संपूर्णम् ॥ ॥ ॥ ॥

अथ इक्षुकार राजा भृगुप्रोहित चौ० ।

॥ ॥ महिला में वैठी राणी कमलावती । जोणीतो उ
 मै मारगषेह । जोवै तमांसो इक्षुकार नगरमें । कोतिक उ
 पनो मनमें एह ॥१॥ [सांभल हे दासी आज नगरमें बह
 दो किम वणो] । कातो परधान सखीमंझीया । काकोई लूं
 द्या राजा गांव । काकोई गांधो धन नीसखो । गांधा
 रछा ठै ठामो ठाम ॥२॥ सां० आ० ॥ नातो परधान
 वाइजी मंझीया । ना कोई राजा लूं द्या गांव । भगूपरो
 हित धनतजनीसखो । राजारै धन लेवा चाव ॥३॥ (सांभल
 हे राणी ऊकमंकरो तो कोइ गांधो इहां धरं) ॥ वेटांतो
 तिणरा संजम लीयो । वरज्योवणूं हो पिता मात ।
 ते पिणचारित लेवा ऊमछा । भगूजसा तिणें मोहलल
 चात ॥ ४ (सांभल हे० ऊक०) ॥ इम सुख कमलावती
 राणी इम कहै । इहां तो कमी नहीं काय । सांभलने
 राणी माथोघुणीयो । राजारी ममता नही ठाव ॥ ५ सां०
 (दासी राजाने एवातां जुगतो नही) । महिलां सु राणी

कमलावती । आईठै राजा रै हजूर । वचन कहै राजाने
 आकरा । जाणें पोरस चढियो बोलै सूर ॥ ६ ॥ (सांभल
 हो राजा ब्राह्मण ठोनी रिधक्य आदरो) । कर जोनी
 कमला कहै । सांभलकंतसुजाण ब्राह्मण जेरिध परहरौ ।
 ते तो घर सांछै मत आण । (सां० राजा विरा०) ॥ ७ ॥
 एरिधसुं अपणें काई वणो छसी । राजारा मोटा ठै भाग ।
 कमियै आहाररीवांठा कुणकरै । कै कुतरा कै काग ॥
 ८ सां० ॥ राजा० । ब्रा० । वमियो आहार पौढो नर भषे ।
 नही परसंसाव जोग । भगू प्रोहित रिध तननीसखो ।
 ये जाण्यो ठै आसीम्हारे भोग ॥ ९ (सां० राजा वि०) ॥
 संकलप्रियोढो पाठो किमलीयै । सांभलहो महाराज ।
 दान दियो ये पहिलां हाथ सुं । ते पूठो लेतानावै थाने
 लाज ॥ १० (सां० राजा वि०) ॥ निहचैतो सरणो राजा
 इक दिनें । ठोनीने काम विसेष । बीजो तो जगमें सरणो
 को नही । तारै जिनजीरो धम एक ॥ (११ सां० राजा०) ॥ सग
 लै जगतरो धन भेलो करी । ये बालो मंदारां रै मांहि ।
 तो पिण बिस्नार राजा पापणी । लिपतन मनढो थाय ॥ १२
 (सां० वि०) । सांभलनें इपुकार राजा बोलियो । तं भाषैनी
 वचन संभाल । का तनें राणी जोलो बाजीयो । का
 कोई कौषी मतवाल ॥ १३ ॥ (सां० । राणी राजानें कर
 दावचनबोलियो) । नति राजा जी जोलोबाजीयो । ना
 कोई कौषी मत वाल । ब्राह्मणरो वमियो धन ये
 आदरो । वरजण आईहो भूपाल ॥ (सां० राजा वि०) ॥
 १४ ॥ बलतो राजा राणीनें इम कहै । इस नी बैरागण

थाय । अजू तो निजरां आवै नहीं । तुं बेठी ठै घर मांहि
 ॥ (सां० । राणी राजाने कर० ॥ १५ ॥ उत्तरबालीतो दोसै
 नहीं । इसफो आई ठै मतवाल । ऊं तो घर ठोफो ने
 नौसरी । ये पिण ठोफो हो भूपाल । (सां० । राजा आग्या
 देवो तो संयम आदर) ॥ १६ ॥ रतन जफतरो राजा
 पीजरो । तिणमें सूवटो पदियो फंद । इण रीतै ऊं यांरै
 राजमें । रहिने पासुं आणंद । (सां० राजा) ॥ आग्या ॥ १७ ॥
 सनेह रूपिया तांतण तोफने । आरंभ बनसुं रहस्यां
 दूर । विरकत यई मोन पणें रह्या । ये पिण होयज्यो
 सूर ॥ (सां० राजा ६०) ॥ १८ ॥ दवतीलागी हो राजा बन
 मऊ । हिरण सिसा बलै मांय । गिरघपंखो ज्युं आमि
 प देखने । मन मांहि हरिषित थाय । (सां० राजा
 राग द्वेषराभांगा लग रह्या) ॥ १९ ॥ मांहो मांहि खेघो ई
 सको । दस प्राण रहित कौघो काल । दुसमणतो मनमें
 हरष पाय्यो घणो । जाणें ते माहरो मिटियो साल ॥
 [सां० । हो राजारागद्वेष] ॥ २० ॥ इण दिष्टतै लोभो
 मूरष थका । सुरऊरह्या भोगमांहि । पेलानै दुखियो
 देखो चेतै नहीं । लागी राग द्वेषरी लाय ॥ (सां० रा
 जा राग०) २१ ॥ मांसरी बोटी पंखीरो चांचमां । नरपा
 सैपंषी पदियो आय । आमिष सम भोग ठोफनै । चारिब
 लेस्यां चित लाय ॥ (सां० प्राणी) ॥ संयमयी सुखपांसीवै ॥
 २२ ॥ महलपिलंगादिक अधिरठै । ते पांस्या ठै आपणें
 हाथ । कामभोगमें रकत होय रह्या । ते तज होयस्यां नाथ
 ॥ (सां० राजा सं०) २३ ॥ पांचे ईंद्रांरा भोगठोफनै ।

व्यभावै हलकाथाय । सहज वाउ पंखीनौ परै । विचरस्यां
 अपणी दाय ॥ (सां० प्राणीसं०) २४ ॥ गिरध पंखी ज्युं
 भोग जाणज्यो । एह काम वधारै संसार । सापज्युं
 मोर यकी मरतो रहै । ज्युं पापसुं संकस्यां दूण वार ॥
 (सां० प्राणी सं०) २५ ॥ सोक तजी संतोषसुं । लेस्यां सं
 यमभार । समता तजी समता ग्रहो । करस्यां उग्रविहार
 [सां० प्राणी सं०] २६ ॥ तन धन जोवन कारमा । चंचल
 बीजसमान । खिण्खूटै आउखो । मूरख करैरे गुमान ॥
 [सां० प्राणी सं०] २७ ॥ हस्तीज्युं वंधण तोमने । आपे
 वनसुखे जाय । करम वंधण तूटै संयम लियां । सुणो कज्जु
 महाराय (सां० राजा सं०) ॥ २८ ॥ इम सुणनें इषुकारराजा
 चेतियो । ठोमनें मोठको राज । कायरनें तो ए तजतां
 दोहिलो । विप्र सहित सास्या काज (सां० प्राणी सं०) ॥
 २९ ॥ मोहन राख्यो परिग्रह ठोमकै । पायो जिन धरम
 सुजाण । तपस्या सगलांही आदरी । उत्कृष्टो पराक्रम
 आण । (सां० प्राणी सं०) ॥ ३० ॥ सुधसंयम पालै सदा ।
 सुमति गुपति दयाल । भमरानी परै करै गोचरी ।
 रिष ठालै दोष वयाल (सां० प्राणी सं०) ॥ ३१ ॥ तारण
 तरण जिहाज ठै । भव्यजोवनें उतारै पार । केवल
 ज्ञान उपायनें । सुख पास्यां श्रीकार ॥ ३२ ॥ (सां० प्राणी
 सं०) । मोहनिवारी प्राणी समऊने । निरमल भावना
 भाव । ठए जणा थोम्रा कालमें । सुगत विराज्या जाय (सां
 प्राणी सं०) ॥ ३३ ॥ राजा सहित प्राणी कमलावती । भृगु
 पुरोहित जमानार । प्रोहित भृगुना दोय दीकरा । सिव

सुख पायो सार ॥ ३५ ॥ (सां० प्राणी सं०) इतिथो इषु
कार राजा भृगु मोहितरो अधिकार संपूर्णम् ॥

॥ अथ उपदेसमाला पोसहसिन्भायलि ॥

॥*॥ जगचूनामणि भूत । उसभो वीरो तिलोय सिरि
तिलड । एगो लोगा इच्चो । एगो चक्खूतिऊअणस्स ॥ १ ॥
संवत्तर सुसभजिणो । ठम्मासे बद्धमाण जिणचंदो । इइं वि
हरिया निरसणा । अएज्जएउव माणेणं ॥ २ ॥ जइता ति
लोयनाहो । विसहइ बड्डयाइं असरिस्सजणस्स । इयजीयं
तंकराइं । एस खमा सब्बसाह्मणं ॥ ३ ॥ न चइज्जइं चाले
उ । महइ महावड्डमाण जिणचंदो । उवसणं सहस्सेहि
वि । मेरुजहा वायगुंजाहिं ॥ ४ ॥ भइो विणीय विणड ।
पढमगणहरो समत्त सुयनाणी । जाणंतोवितमत्थं । विम्वि
यहियड सुणइ सब्बं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया । पयईउत्तं
सिरेण इउंति । इय गुरुजण सुह भणियं । कयंजलिउत्तिहिं
सोयब्बं ॥ ६ ॥ जहसुर गणाण इंदो । गहं गणतारागणो
ण जहचंदो । जहय पयाण नरिंदो । गणस्सवि गुरु तहं
णंदो ॥ ७ ॥ बालुत्तिमहीपालो । न पया परिहवइ एस
गुरु उवमा । जंवा पुरडं कउं । विहरंति सुणी तहां सो
वि ॥ ८ ॥ पत्तिरुवो तेयस्सी । जुगप्पहायागंमो मज्जरवको
गंभीरो धिइमंतो । उवएसपरो य आयरिडं ॥ ९ ॥ अप
रिस्सावो सोमो । संगह सीलो अभिमाहमईय । अविस्स
णो अचवलो । पसंतहियडं गुरु हीरं ॥ १० ॥ कइयावि जिण
वरिंदा । पत्ता अयरामरं पइं दाउं । आयरिएहिं पववव

धारिण्यद्वयं संपद्यं सवर्णं ॥११॥ अणुगम्य भगवद् । रावसु
 वज्रामहस्य वंदेहिं । तद्वि न करेद् मासं । परिव्रज्य तं
 तथा नृपं ॥१२॥ दिक् द्विक्स्त्रयस्त्रय दमगस्य । अभिमुखा
 अज्जचंदना अज्जा । नेत्तुद् आसन्नगहणं । सो विण्णं सव
 अज्जा ॥१३॥ वरममय द्विक्स्त्रयाए । अज्जाए अज्जदि
 कियत्तं साह । अभिगमनं वंदनं नमंसजेत् । विष्णुणा सो
 पुब्बो ॥१४॥ धम्मो पुरिमप्यभवो । पुरसवरदेसितं पुरस
 सिद्धो । लोणवि पट्ट पुरसो । किंपुण लोणुत्तमेवप्ये ॥१५॥
 संवाहकज्जग्गो । तद्वया वाणारकीद् नयरीए । कम्म सहस्र
 मज्जितं । आसी किरकयवंतोणं ॥१६॥ तद्विव सा राय
 विरो । उल्लङ्घंती न ताद्वया ताहिं । उयरद्विएण इव्वेण । ताद्
 वा अंगवोरेण ॥१७॥ मरुत्तानसु वड्डवाणवि । मज्जात्तं
 इत्थं ममज्ज वरमारो । गयपुरिसेहिं निज्जद् । जम्बेविपुरि
 को जहिं नत्थि ॥१८॥ किं परज्जनं वड्डजानावकाहिं । वर
 मज्ज वक्खित्तं मज्जयं । इत्थं भरहवड्डवड्डो । पसन्नचंदोय दि
 इत्ता ॥१९॥ वेसो वि अप्पमानो । असंजम पणसु वट्टमा
 ज्जत्त । किं पणिसियवेमं । विसं नमारोद् मज्जंतं ॥२०॥ धम्मं
 रक्खद् वेसो । संकटवेमेण द्विक्स्त्रयमि अहं । उप्पग्गेण पट्ठं
 तं । रक्खद् गवा जलवत्तं ॥२१॥ अप्पा जामद् अप्पा । जह
 दित्तं जज्जपत्तिवत्तं धम्मो । अप्पा करेद् तं तह । जह अप्पम
 पावत्तं चोद् ॥२२॥ जं जं पमसं जीयो । आदिस्सद् जेण जेण
 भावेण । सो तंविमंमि ममए । सत्तासुत्तं वंछणं कम्म ॥२३॥
 धम्मो मज्जज्जंतो । सोमवि जीवद्वा वायविक्कादित्तं । संवत्त
 रमज्जवत्तं । वाज्जवत्ति तह विम्वित्तं ॥२४॥ निवगमद् वि

गम्यय चित्तिण । सञ्च दब्धचरिण । कत्तोपारत्तहियं ।
 कौरइ गुरु अणुवणसेणं ॥२५॥ यद्धो निरोवधारी । अविणी
 उ गब्बिउ निरवणामो । साज्जणस्स गरहिउ । जणेविय
 णिज्जयं लहइ ॥ २६ ॥ थोवेणवि सम्पुरिसा । सणकुमारब्ब
 केइवुज्झंति । देहे खणपरिहाणी । जकिर देवेहिं सेकाहियं ॥
 २७॥ जइता लवसत्तमसुर । विमाण वासीविपरिवर्तति सु
 रा । चित्तिज्जंतसेसं । संसारे सासयं कयरं ॥ २८ ॥ कहंतं भन्ना
 इ सुक्खं । सुचिरेणवि जस्स दुक्खमल्लिहिये । जंचमरणाव
 साणे । भव संसाराणु बंधिंच ॥ २९ ॥ उवएससहस्सेहिवि
 बोहिज्जं तो न बुज्झईकोई । जहबंभट्ठसाराया । उदाइनिव
 मारउ चेव ॥ ३० ॥ गेयकन्न चंचलाए । अपरिचत्ताइ रायल
 छीए । जीवासंक्कम कलिमल । भरिय भरातो पडति अहे ॥
 ३१ ॥ वोत्तूणवि जीवाणं । सुदुक्कराइति पावचरियाइ । भ
 यवंजा सा सासा । पच्चाएसो ह्म इणमो ते ॥ ३२ ॥ पट्ठिवज्ज
 ऊणहोसे । नियण सम्मं च पायवट्ठियाणं । तो किरमिगावई
 ए । उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥ इति पोसह सिज्जायं समा
 मा उपदेश माला ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ राईसंधारा पोसह सिज्जाय ॥ ॥

॥ ॥ निस्सिही नमो खमा समणाणं । गोयमाईणं
 महांसुणीणं । (नवकारइ करेमिभंतै कहोयै) । अणुजाणह
 चिट्ठिज्जा । अणुजाणह परमगुरु । गुणगणखणे हिं भंति
 असरीरा । बड्डपट्ठिपुन्ना पोरिसौ । राई संधारएठामि ॥ १ ॥
 अणुजाणह संधारं । बाड्डवहाणेण वामपासेणं । कुकुल पाव

पसारण । अंतरंतु प्रमज्जए भूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संज्ञासं
उवट्टंतेय काय पट्टिलेहा । द्वाइ उवडंगं । जसासनिरुंभ
णालोयं ॥ ३ ॥ जइमेड्डज्ज पमाउ । इमस्सदेहस्स माइरय
णोए । आहार सुवहि देहं । सव्वं तिविहेण वोसरिअं ॥ ४ ॥
आसव कसाय बंधणं । कलहा भक्खाण परपरीवाउ । अरइ
रइ पेसुणं । माया मोसंच मिद्धत्तं ॥ ५ ॥ वोसरिसु इमाइं
सुक्खमग्गं । संसग्ग विग्घ भूआइं । दुग्गइनिबंधणाइं । अट्ठा
रसपावट्टाणाइं ॥ ६ ॥ एगोहं नत्थिमेकोवि । नाहमन्नस्स कस्स
वि । एवं अदीणमणुसो । अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगोमेसा
सउ अप्पा । नाणदंसणसंजुउ । सेसासेवाहिराभावा । सज्जे
संजोगलक्खणा ॥ ८ ॥ संजोग मूला जीवेणं । पत्ता दुक्खपरं
परा । तम्हा संजोग संबंधं । सव्वं तिविहेण वोसरे ॥ ९ ॥ अ
रिहंतो मज्जदेवो । जावज्जोवंसुसाह्मणो गुरुणो । जिणपन्नत्तं
तत्तं । इयसम्भत्तं मएगहियं ॥ १० ॥ चत्तारिमंगलं । अरिहंता
मंगलं । सिद्धामंगलं । साह्ममंगलं । केवलपन्नत्तो धम्मो मंगलं ।
चत्तारिलोगुत्तमा । अरिहंता लोगुत्तमा । सिद्धा लोगुत्तमा ।
साह्मलोगुत्तमा । केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ चत्तारि
सरणंपवज्जामि । अरिहंते सरणं पवज्जामि । सिद्धेसरणं पव
ज्जामि । साह्मसरणं पवज्जामि । केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं
पवज्जामि ॥ अरिहंता मंगलं मज्ज । अरिहंता मज्जदेवया
अरिहंता कित्ति अत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ ११ ॥ सिद्धा
यमंगलं मज्ज । सिद्धाव मज्ज देवया । सिद्धाय कित्ति अत्ताणं
वोसिरामित्ति पावगं ॥ १२ ॥ आयरिया मंगलं मज्ज । आय
रिया मज्जदेवया । आयरिया कित्ति अत्ताणं । वोसिरामि

त्तिपावगं ॥३॥ उवञ्जाया मंगलं मञ्ज । उवञ्जाया मञ्ज
 देवया । उवञ्जाया कित्ति अत्ताणं । वोसिरामित्तिपावगं ॥४॥
 साह्मणो मंगलं मञ्ज । साह्मणो मञ्जदेवया । साह्मणो कित्ति
 अत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥५॥ पुढवि दग अगणि मार
 य । इक्किसेत्त जोणिलक्खाउ । वणपत्तेय अत्तले । दस चउ
 दस जोणि लक्खाउ ॥१॥ विगलिंदिएस दोदो । चउरोचउ
 रोय नारय सुरेसु । तिरिएसु ऊंति चउरो । चउदस ल
 क्खाय मणुएसु ॥२॥ खामेमि सब्बजीवे । सब्ब जोवाखमंतु
 मे । मित्तीमे सब्बभूएसु । वैरं मञ्ज न केणियि ॥३॥ एवमहं
 आलोदुअ निदिअ । गरहिअ दुगुंठिअं अमं । तिविहेण
 पट्ठिअंतो । वंदामि त्रिणे चउवीसं ॥४॥ खमिअ खमाविअ
 मइखमिअ । सब्बहजीव निकाय । सिद्धहसांख आलोयणह
 मञ्जहवैरनभाय ॥५॥ सब्ब जीवा कम्मवसु । चउदहराज
 भमंतु । तेमइं सब्बखमाविआ । मञ्जवि तेहखमंतु ॥ ६ ॥
 इति राई संधारा गाथा समाप्ता ॥ ॥ ॥

॥॥॥ अथ सदाकालका अथख कर्त्तव्य (सामायक । पट्टिकमथा)
 (अठपुहरी तथा ओ पुहरी पोसा । दिव्यादशा) (पञ्चक्याण प्रादशा)
 (कम्पासीतपचिंतन) सबका अनुक्रमे साक्षादसारे विधि लि० ॥॥॥

॥॥॥ प्रणम्य श्रीजिनाधीसं । सदगुरुं च विशेषतः ।
 आहोरात्र कृत्यानि । लिखन्ते लोकभाषया ॥१॥॥॥

॥॥॥ अथ प्रथम प्रभातसामायकविधिलि ॥॥॥

॥॥॥ आवक दोय घन्ती रात्र रक्षां पोशहशाला
 ये । अथ गुरुकने । अथ धरने एक प्रदेशे (आवौ) प्रथम
 दिवस संध्याये पट्टिलेह्या वल्ल पहिरी । गुरुरो योग न

ऊँ वै [तो] आप प्रमार्जितं यानकै । खमासमण पूर्वकं
 तीन नवकार गुणी थापनाजी आपै (पठै) खमासमण देई
 कहै । इच्छाकारेण संदिस्सहं भगवन । सामायिक मुहपत्ती
 पाँडिलेऊं (गुरु कहै पाँडिलेह) पठै इच्छं कहौ । दूसी खमासम
 णदेई । मुहपत्ती पाँडिलेहै । उभो होय खंभा० कहै । इच्छा०
 सं० भ० । सामायिक संदिस्सावूं (गुरु कहै संदिस्सावेह) पठै
 इच्छं कहौ । बलेख० देने कहै । इच्छाका० सं० भ० । सामायिक
 ठाउं (गुरु कहै ठाएह) पठै इच्छं कहौ । खमासमण देई ।
 अर्धावनतकाय जभो थको । तीन नवकार गुणी कहै । इच्छ
 कार भगवन पसाउकारी सामायिकदंष्ट्र उच्चरावोजी (गुरु
 कहै उच्चरावेमो) पठै । करेमिभंते सामादयं (इत्यादि) सामा
 यिकसूत । गुरुवचन अनुभाषणकरतो थको । तीनवार उच
 री । खमासमण देई । इच्छाका० सं० भ० । इरियावहियं पाँडि
 क्कमामि (गुरु कहै पाँडिक्कमह) पठै इच्छं कहौ । इच्छामि पाँडिक्क
 मिउं इरियावहियाए (इत्यादि पाँठकहै) इरियावही पाँडि
 क्कमी । एकलोगस्सनोकाउसगगकरी । शमो अरिहंताणं कहौ
 काउसगगपारी मुखें प्रगट लोगस्स कहौ । खमासमण देई
 इच्छा० सं० भ० । बैसणो संदिस्सावूं (गुरु कहै संदिस्सावेह)
 पठै इच्छं कहौ । बले खमासमण देई । इच्छाका० सं० भ० ।
 बैसणो ठाउं (गुरु कहै ठाएह) पठै इच्छं कहौ । खमासमण
 देई । इच्छाका० सं० भ० । सिज्जाय संदिस्साउं (गुरु कहै
 संदिस्सावेह) पठै इच्छं कहौ । बले खमासमण देई । इच्छाका
 सं० भ० । सिज्जाय करं (गुरु कहै करेह) इच्छं कहौ । बले खमा
 समण देई । जभो थको आठ नवकारसिज्जाय करें । तथा

श्रोतकालादि ज्ञवै (तो) खमासमण देई । इच्छाका० सं० भ० ।
पांगरणो संदिस्सावू (गुरु कहै संदिस्सावेह) पठै इच्छां कही
खमासमण देई । इच्छा० सं० भ० । पांगरणो पन्निग्घाउं (गुरु
कह पन्निग्घाएह) पठै इच्छां कही । वस्त्रग्रहण करै । तथा
सामायिकवंत (अथवा) पोसहीता आवकप्रते (कोई) सामा
यिकवंत (अथवा) पोसहीतो आवक वादै (तो) वंदा मो
एहवू कही । जो कोई बोजो वादै (तो) सिग्जायं करेह
एहवो कही । इति प्रभात सामायिक ग्रहणविधि ॥ १॥ ॥

॥ ॥ अथ राई प्रतिक्रमणविधि लिख्यते ॥ ॥

॥ ॥ [हिवै] एक खमा समण देई । इच्छाका० सं० भ० ।
चैत्यवंदनकरं (गुरु कहै करेह) पठै इच्छां कही । जयउसामौं
(इत्यादि) जयवीय रायसूधी चैत्यवंदन करै । पठै खमासम
ण देई । इच्छाका० सं० भ० । कुसुमिण दुस्समिण राई प्राय
स्त्रित्त विसोहणत्थं काउसंग करं (गुरु कहै करेह) पठै
इच्छां कही । कुसुमिण दुस्समिण राई प्रायस्त्रित्त विसोहण
त्थं करेमि काउसंगं ॥ अन्नत्यूसमिणं (इत्यादिकही) (४)
लोगस्सनो काउसंग । चंदेसु निम्नलयरां । सूधी चिंतवौ ।
णमो अरिहंताणं कही । काउसंगपारी मुखे लोगस्स कहै
जो राखे मोटको गुणसंबंधी दूषणलागो ज्ञवै (तो) काउसंग
मांहे । सागरवर गंभीरा । सूधी चिंतवौयै (इतिसंप्रदायः) ।

॥ ॥ किहां इक पहिलां कुसुमिण दुस्समिण काउसंग
करी । पठै चैत्यवंदन करवो कह्योठै । पिण परमार्थ एक
हीजठै । पठै पन्तिकमण वेलासीम सिग्जाय ध्यानकरै ।

॥ ॥ हिवै पन्तिकमण ठायवानो अवसर ज्ञवां । १ खमासमण

देई (श्रीआचार्यजीमिश्र) कहौवांदीयै । २ खमासमणदेई
 (श्रीउपाध्यायजीमिश्र) कहौ वांदीयै । ३ खमासमणें ।
 जंगम युगप्रधान वर्त्तमान भट्टारक श्रीपुज्य जी का नाम
 कहौ वांदीयै । ४ खमासमणें । सर्वसाधूजीकुं वांदीयै ॥
 इम चार खमासमणें पद्मिकमणो ठावौ । इच्छकार
 समस्त आवको वांढूँ (कहौ) गोप्ता लीयै वैसी । मस्तक
 नमावौ । दोय हाथे । मुहपत्ती मुहमें देई । सवस्सवि रा
 इय (इत्यादि कहै) पिण इच्छाकारेण संदिस्सह इत्थं (इसो
 नकहै) पढै शक्त स्तवकहौ । जमो थई । करेमि भंते सामा
 इयं । सावज्जं जोगं पच्चक्खामि (इत्यादि कहौ) इच्छामि
 ठाइउं काउसगं । जोमे राइउं (इत्यादि पाठ भणौ) तस्सु
 त्तरी । अन्नत्थूससिएणं कहौ । चारिअ शुद्धिनिमित्तं ॥१॥ लो
 गस्सनो काउसगगकरो (पारी) दर्शन शुद्धिनिमित्तं । लोग
 स कहौ । सबलोए अरिहंत चेइयाणं करेमि काउसगं ।
 वंदणवत्तिआए (इत्यादि भणौ) १लोगस्सनो काउसगग करौ
 (पारी) ज्ञानातीचार शुद्धिनिमित्तं । पुक्खर वरदौ वड्डे ।
 (कहौ) सुयस्स भगवउं करेमि काउसगं । वंदणवत्ति आए
 (इत्यादि कहौ) काउसगग करै । काउसगगमांहे । आजूणा
 चौपुहरो राति मांहे । जोकाई जीव विराध्या होय ।
 सात लाख पृथ्वीकाय । सातलाख अप्पकाय । सात लाख
 तेजकाय । सातलाख वाजकाय । दसलाख प्रत्थेकवनस्यतो
 काय । चौदे लाख साधारण वनस्यतो काय । दोय लाख
 वेइंद्री । दोयलाख तेइंद्री । दोयलाख चौरिंद्री । चार
 लाख देवता । चार लाख नारकी । चार लाख पंचेइ्री

तिर्यच । चौदैलाख मनुष्य । एवं चारगति चौरासौ लाख
 जीवायोनि मांहे । जिके में जीवहृत्था जूवै । हृत्थायाजूवै
 हृत्तां प्रते भला जाख्या जूवै । तेसरवे मनवचन कायाये
 करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ ॐ ॥ प्राणातिपात । मृषावाद । अदत्ता
 दान मैथुन । परिग्रह । क्रोध । मान । माया । लोभ । राग
 द्वेष । कलह । अभ्याख्यान । परिपरीवाद । अरति । रति ।
 पैशुन्य । माया मोस । मिथ्यात्व सत्य । एअद्वारै पापस्थान
 सेव्या जूवै । सेवराव्या जूवै । सेवतां प्रते भलाजाख्याजूवै ।
 तेरुह मनवचन कायाये । करी । मिच्छामि दुक्कडं ॥ ॐ ॥
 ज्ञान दर्शन चारित्र पाटी पोथी ठवणी कवली नवकर
 वाली देवगुरु प्रते आसतना कीधी होय । पनरै करमा
 दाननी आसेवना करी होय । राजकथा । देशकथा । स्त्री
 कथा । भोजनकथा । करी होय । अय्यधुई परिनिंदा करी
 होय । अनेरो जेकोइ पाप कीधी करायो अनुमोदो । ते
 संभरै नसंभरै । तेसर्व अतोचार आलोचनामांहि आलोच
 स्य ॥ ॐ ॥ एहवो मनमें चिंतें । (अने एनावैतो) आठ नव
 कार चिंतवौवै । पठै काउसगा प्रारी । सिद्धाणं बुद्धाणं
 (कही) संतासा प्रमार्जन पूर्वक वैसी (मुहपत्ती पढिलेहै)
 पठै वांदणा दै (ते इम) अविग्रह बाहिर जभो थको ।
 आधो नमी । इच्छामि खमासमणो । वंदिणानि० अणुजा
 णह । मेमिउच्छहं (इतरो कही) भूमि प्रमार्जतो थको ।
 निखही कही । कांइक अवग्रह मांहि पैसी । संतासा प्रमा
 जी । जकडूवैसो । प्रावैहाथ मुहपत्ती लेई । प्रावै कान थो
 जिसणा कान लगें निलाहू धूंजी । मुहपत्ती आगे मेरही ।

तेहनें मध्यभागै । गुरुचरण कल्पना करी । अहो कायं
 (इत्यादि आवर्त्त करी) क्युं हि क जंचो नमौ । मस्तकै अंज
 ली करी । गुरुसाम्हँ दृष्टिराखौ । खमणिज्जो भेकिलामो
 (इत्यादि पाठ कहै) पठै । फेर जत्तामे । (इत्यादि आवर्त्तन
 करी) जभो धई । पाछै पगे भूमि पूंजतो । अवग्रह बाहिर
 खखाने आवो । आवस्सियाए (इत्यादिपाठ) सर्व कहै
 बीजो वार वले इम हीज करै । (पिण) अवग्रह बाहिर न
 नीकलै । तिहां जभोजसर्वपाठ कहै । अने आवस्सियाए पद
 न कहै । (इम सर्वव जाणिवूँ) पठै अवग्रहमां हि रक्षां कहै
 इत्थाका० । सं० । भ० । राइयं आलोवूँ (गुरु कहै आलो
 एह) पठै इत्थं आलोएमि जोमेराईउ (इत्यादि पाठ ऊच
 रतो) काउसग मांहे चिंतव्या । राखिसंबंधी अतीचार ।
 गुरु समक्षे आलोवै । पठै । तबस्सवि राइय (इत्यादि
 पाठ कहै) तिहां इत्थाका० । सं० । भ० । एपद कहिवै करी ।
 आलोया अतीचार नों प्रायश्चित्त मांगै (गुरु कहै पट्ठिक्क
 सह) पठै । इत्थंतस्समित्थामि दुक्कडं (कही) संतासा प्रमार्जी
 आसणें बैसी । जीमणो गोप्पो जंचोरणी । पावो गोप्पो
 नीचो करो (एहवूँ कहै) भगवन् सूखभणुं (गुरु कहै
 भणह) पठै इत्थं कहौ । ३ नवकार । ३ करेमि भंते (अथवा)
 १ नवकार । १ करेमि भंते (भणी) इत्थामि पट्ठिक्कमि उं ।
 जोमेराईउ (इत्यादि कहौ) वंदि तू सूख । तंनिंदे तंचगरि
 हामि (सूधौ कहै) पठै जभो धई । अब्भुद्धिउमि आराह
 णाए (इत्यादि संपूर्ण कहौ) वे वांदणा देई । अवग्रहमां हि
 यको हीज कहै । इत्थाका० । सं० । भ० । अब्भुद्धिउमि

अभिन्तर। राइयं खामेमि (गुरु कहै खामेह) पठै। इहं
 खामेमि राइयं (कहीं) संप्राप्ता प्रमार्जन पूर्वक गोमालीयै
 बैसी। बेबांह पढिलेही। सुहपत्ती वाम हाथ सुमुखें देई।
 दक्षिण हाथ गुरु सांम्हो करौ। नौचो नम्यो थको।
 जंकिंचि अथत्तियं (इत्यादि संपूर्ण कहै) तिवारै गुरुपिण
 मिश्रामि दुक्कडं कहै) पठै। बे बांदणादेई भूमि प्रमार्जतो।
 पाठै पगे अत्रग्रह बाहिर आवी॥ आयरियउवग्राए
 इत्यादि गाथा३ कहै) पठै। करेमि भंते०। इह्यामि ठामि
 काउसगं। तस्सुत्तरौ (इत्यादि कही) काउसगं करै काउ
 सगं मांहे। ओवौरद्धत ठम्मासीतप चिंतवै (१) पठै जे
 पञ्चक्खाण करवो जुवै (तो) हियामांहि धारी। काउसगं
 पारी। लोगस्र कही। जकमूबैसी। सुहपत्ती पढिलेही।
 बे बांदणा देई। सकल तीरथ नामलेई। नमस्कार करौ
 (कहै) इह्वा कार भगवन पसाउ करौ पञ्चक्खाण करावो
 जी (पठ) गुरु सुखें पञ्चक्खाण करै। गुरु अभावै थापना
 समजें (अथवा) साधमीं सुखें पञ्चक्खाण करै (पठै)
 इह्यामो अणुसद्धिं कही बैसै (तिवार पछै) गुरु १ थुई
 कछ्यां पछै। मस्सकै अंजलीकरौ। नमो खमासमणायं
 नमो ह्वत्तिस्वा कही। संसारदावानल इत्यादि (अथवा)
 नमोस्तु वर्द्धमानाय। इत्यादि (अथवा) पर समय तिमर
 (इत्यादि तीन गाथा भणौ) शक्रस्तव कहै। पठै जमो थई।
 अरिहंत चेईयाणं करेमि काउसगं। वंदणवत्ति आए

(१) छम्मासी तप न जाणो (तो) ६ लोगस्र (वा) २४ नवकार नो
 काउसगं करै ऐसी प्रवर्त्ती है।

(इत्यादि कही) काउसग्न मांहे १ नवकार चिंतवौ । एक
 आवक प्रथम काउसग्न पारौ । नमोर्द्धत्सिद्धा कही । एक
 गाथा स्तुति कही । बीजा सर्व काउसग्न मांहे रक्षा सुखे
 पठै । गमो अरिहंताणं कही काउसग्नपारै । इमआगै पिण
 जाणवो । पठै लोगस कही । सबलोए अरिहंत चेइआणं
 बंदणवत्ति० । अन्नत्थू० । (इत्यादि कही) १ नवकारनों काउ
 सग्न करी (पारौ) बीजौ स्तुति कही । पुक्खवरदोवडे कही ।
 पठै सुयस्स भगवड० । वंदण० । अन्नत्थू कही १ नवकार कही
 (पारौ) तोजौ स्तुति कही । सिद्धाणं बुद्धाणं कही । पठै
 वेयावच्च गराणं० । अन्नत्थू० । कही १ नवकारका० । करी
 (पारौ) नमोर्द्धत्सिद्धा कही । चौथी स्तुति कही । (बैसी) ।
 नमोत्पुणं कही । पछै तोन खमासमणें । पूर्वोक्त रीते ।
 आचार्य । उपाध्याय । सर्वसाधू वांदै । इति प्रभातो पडि
 कसण विधिः ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः इतना विशेष है ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ इतनौ विधि कियां पाठै स्थिरता ऊवै (तो)
 उत्तर दिशे । सोमंधर खामी सांझमाबैसी । कम्म भूमी २
 (इत्यादि) संपूणं चैत्यवंदन करै (प्रांते) अरिहंत चेइआणं
 करेमि काउसग्नं । वंदणवत्ति० अन्नत्थू० कही । १ नवकार
 चिंतवौ (पारौ) सोमंधरखामोनौ स्तुति कही । इम हीज
 धिरता ऊवै (तो) ओसिद्धाचलजौ नो चैत्यवंदन करै । पठै
 पणिलेहण करै (ते इम) खमासमणदेई । इद्धाका० सं० ।
 भ० । पणिलेहण संदिस्साउं (गुरु कही संदिस्सा एह) बीजे
 खमासमणें । इद्धा० । सं० । भ० । पणिलेहण करं (गुरु कही

करेह) पठै । इहं कहौ । सुहपत्ती पढिलेहै । (इमहीज दोइखमासमणें । अंगपढिलेहण संदिस्साउं । अंगपढिले हण करं (कही) धोतियो कणदोरो पढिलेहौ । खमासम णदेई । इहकार भगवन पसाउ करौ पढिलेहण पढिलेहा वोजौ (इम कहौ) थापनाचार्य पढिलेहौ राखै (अने) जो गुर्वा दिक थापनाचार्य पढिलेहै । तोपिण । खमासमण देई आग्यामांगै । पठै खमासमण देई । इह्वा० । सं० । भ० । सुहपत्ती पढि लेऊं (गुरु कहै पढिलेहैह) पठै इहं कहौ । सुहपत्ती पढिलेहौ । दोय खमासमणें । इच्छाका० । सं० । भ० । उहीपढिलेहण संदिस्साउं । उही पढिलेहण करं (कही) कंवल वस्त्रादि पढिलेहै । पठै । पोसहशाला प्रमाजी । काजो विधसुं परठवौ । खमा समण देई । इरि यावही पढिकमे (एमूलविध जाणवौ) ॥३॥ इतरो स्थिर तानऊव । तो पिण दृष्टि पढिलेहण करवौ । हिवणां पिण प्रार्ये इमहीज करतादीसैठै ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥ हिवै सामायक पारणेकी विधि कहैठै ॥

॥३॥ पछै सामायिक पारै । १ खमासमण देई । सुह पत्ती पढिलेहै । फिर खमासमण देई । इच्छा० सं० भ० । सामायिक पारुं (गुरु कहै पुणोवि कायव्यो) पछै यथा शक्ति कहौ । वले खमासमण देई (कहै) इच्छाका० सं० भ० । सामायक पारेमि (गुरु कहै आचारो नमोत्तव्यो) पछै तहत्तिकही । अर्द्ध नम्र उभो थको । तीन नवकारगुणी नौचो गोमालीयै बैसी । मस्तक नमावौ । भयवंदसन्नभहो

(इत्यादि गाथा कहै) (अथवा) पहिलां सामायिक पारी ।
 पछै पन्तिलेहण करै । इहां यथायोग्य अवसरै गुरु नें
 सुहराई पूछै (ते इम) एक खमा समण देई कहै । इछ
 कार भगवन सुहराई सुखतपशरीर निरावाध संयम
 यावा सुखे निरवहेकै जौ कैं पुज्यजीसाता (इत्यादि पूछी)
 बीजौ खमासमण देवै । श्रीजिन पति सूरिजीनौ समाचा
 रीमे इम कह्यो कैं ॥ ॐ इति सामायिक पारणविधिः ॥

॥ अथ सिंजराकाल सामायिक विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ॥ हिवै पाछले पड्डर धर्मशाला प्रमार्जी । वल्ल
 दिपन्तिलेहै । जो अवेलो आयो ज्वै (तो) दृष्टि पन्तिलेहण
 करै । पछै गुरु आगै (अथवा) थापनाचार्यजी आगै आवी
 भूमि प्रमार्जी । आसण बांम पास मूकी । खमासमण देई
 (कहै) इच्छाका० । सं० । भ० । सामायिक सुहपत्ती पन्ति
 लेज्जं (गुरु कहै पन्तिलेहै) पछै इछं कहौ । वले खमासम
 णदेई । सुहपत्ती पन्तिलेहै । पछै खमा समण देई । इच्छाका०
 सं० । भ० । सामायिक संदिस्साउं (गुरु० संदिस्सावेह)
 फेर खमासमणदेई इच्छाका० । सं० । भ० । सामायिक
 ठाउं (गुरु० ठापह) पछै इछं कहौ । फेर खमासमण
 देई । अर्द्धावनत थर्द । तीन नवकारगुणौ (कहै) इछकार
 भगवन पसाउ करी सामायिकदंज उच्चरावो जौ (गुरु०
 उच्चरावेमो) पछै । करेमि भंते सामादयं (इत्यादि) सा
 मायिकसूत्र गुरुवचन अनुभाषण करतो थको तीनवार
 उचरी । खमासमण देई । इच्छाका० । सं० । भ० । इरिया

वहियं पत्रिकमामि (गुरु कहै पत्रिकमह) पठै इष्टं कहौ ।
 इष्टामि पत्रिकमिउं । इरियावहियाए (इत्यादि पाठें इरि
 यावही पत्रिकमी । १ लोगस नो काउसगग करौ । एमो
 अरिहंताणं कहौ । काउसगग पारी । मुखें प्रगट लोगस
 कहौ । नौचावैसी । मुहपत्ती पत्रिलेही । वांदणा देई (कहै)
 इष्टकार भगवनपसाउ करौ पञ्चक्खाण करावोजी पठै (गुरु)
 दिवस चरम पञ्चक्खाण करावै । गुरु अभावै धापनाचार्य
 समक्षें (अथवा) स्वमुखें (तथा) वज्रैरासाधमीं मुखें पचखै
 (अनें) जो तिविहार उपवास कौधो जूवै (तो) मुहपत्ती प
 त्रिलेही । पञ्चक्खाण करै । वांदणा नदौ (अनें) जो चउवि
 हार उपवास जूवै (तो) पञ्चक्खाण करवोहै नही । ते माटे
 मुहपत्ती नही पत्रिलेहै । एविस्तार विधितै । पठै १ खमास
 मण देई । इष्टाका० । सं० । भ० । सिवजाय संदिस्साउं
 (गुरु कहै संदिस्सावेह) पठै इष्टं कहौ । बले खमासमण
 देई । इष्टा० । सं० । भ० । सिवजाय करुं (गुरु० करेह)
 पठै इष्टं कहौ । खमासमण देई । उमो घको (मधुरस्वरें)
 ८ नव कारनी सिवजाय करै । पठै खमासमण देई ।
 इष्टा० । सं० । भ० । वैसणो संदिस्साउं (गुरु० संदिस्सावेह)
 फेर खमासमण देई । इष्टा० । सं० । भ० । वैसणो ठाउं ।
 (गुरु० ठाएह) पठै इष्टं कहौ । जो शीतकालादि जूवै (तां)
 खमासमण देई । इष्टा० । सं० । भ० । पांगरणो संदिस्साउं
 (गुरु० संदिस्सावेह) फेर खमासमण देई । इष्टा० । सं० । भ०
 पांगरणो पत्रिगवाउं (गुरु कहै पत्रिगवाएह) पठै इष्टं कहौ
 शुभध्यान करै ॥ इति संध्यासामाधिक विधिः ॥

॥ अथ देवसी प्रतिक्रमण विधिलि० ॥

॥ ॐ ॥ ३ खमासमण देई । इच्छा० सं० भ० । चैत्य वंदन करुं (गुरु कहै करेह) पठै इच्छं कही । जयतिष्ठयण । जय महायस (प्रमुख) नमस्कार कही । नमोत्पुणं कही । अरिहंत चेइ याण० (इत्यादि पूर्वोक्त रीतें) चारै थुई ए देव वांदै । चार खमासमणें आचार्यादिक वांदै । पठै इच्छाकार समस्त आवाकोवांदुं । इम कही गोमालीयै बैसी । मस्तक नमावी । सबस्सवि देवसिय (इत्यादि) तस्स मिच्छामि दुक्कं कहै (पिण) इच्छाकारेण संदिस्सह इच्छं (एपद न कहै) पठै ऊभा थई । करेमि भंते सामाइयं० । इच्छामि ठाउ काउ सगं । ओमे देव सिउ० । तस्सत्तरी० । अन्नत्थू ससिएणं० । (इत्यादि कही) काउसगग करै । काउसगग माहें । आजूणा चौपहरादिवसमें० (इत्यादि पाठ मनमें चिंतवी) णमो अरिहंताणं कही । काउसगग पारो । लोगस्स कहै । संज्ञाशा प्रमार्जनपूर्वक बैसी । सुहपत्ती पढिलेही । वांदणा देवै । पठै अबग्रह माहि ऊभो थको कहै । इच्छा० सं० भ० देव सियं आलोऊं (गुरु कहै आलोएह) । पठै । इच्छं आलोए मि० (पाठकहै) अतीचार आलोवै । पठै सबस्सवि देवसिय (इत्यादि) इच्छाकारेण संदिस्सह । सूधोकहै । तिवारै (गुरु कहै प्रतिक्रमण) पठै । इच्छंतस्स मिच्छामि दुक्कं (कही) संज्ञाशा प्रमार्जी । प्रमार्जितभूमें आसणें बैसी कहै । भगवन सूवभण (गुरु कहै भणह) पठै इच्छं कही । तीन नवकार ३ करेमि भंते (अववा) १ नवकार १ करेमि भंते (भणी) इच्छामि पडिक्कमिउं । ओमेदेवसीउ (इत्यादि कही) एक आवाक वंदे

(तू कहै) बीजा सर्व सुखै । पछै ऊभो यई । अम्बुद्विउमि
 आराहणाए (इत्यादि संपूर्ण पाठ कही) वे वांदणा देवै ।
 अवग्रह मांहिज ऊभो यको । इच्छाका० सं० भ० । अम्बुद्विउ
 मि अभिंतर । देवसियं खामेउं (गुरु कहै खामेह) पछै
 इच्छं खामेमि देवसियं (कही) गोमालीबै बैसी । वामहाथे
 मुहपत्ती मुखें धरी । दक्षिणहाथ गुरुसनमुख करी । मस्तक
 नमावी (सर्व पाठ कहै) पठै विधिसुं वे वांदणादेई । आयरि
 य उवञ्जाए (इत्यादि गंधाकही) करेमिभंते सामादयं ॥
 इच्छामि ठाउं काउसगं (इत्यादि कही) चारित्रशुद्धिनि
 मिच्छे दोयलोगसनों काउसग करै (पारी) दर्शनशुद्धिनि
 मिच्छे प्रगठ लोगस कही । सबलोए अरिहंतचे । वंदण०
 अन्नत्यू० कही । १ लोगसनों काउसग करै (पारी) ज्ञान
 शुद्धिनिमिच्छे । पुक्खरवरदी वड्डे (कही) सुयस भगवडं०
 वंदणव० । अन्नत्यू कही । १ लोगसनों काउसग करै (पा
 री) सिद्धाणं बुद्धाणं (कही) वेयावच्च गराणं न कहै । पठै ।
 सुयदेवयाए करेमि काउसगं । अन्नत्यू कही । एक नव
 कारनों काउसग करी । गुरु संयोग नहो ऊवै । (तो) एक
 आवक काउसग पारी । नमोर्हत्तिस्झा० कही । श्रुतदेव
 तानी स्तुति कहै । (गुरु ऊवै तो गुरु कहै) । बीजासर्व
 स्तुतिसुणकै काउसग पारै । पठै । खित्तदेवयाए करेमि का
 उसगं । अन्नत्यू कही । एक नवकार चितवी । पूर्वली परे
 (क्षेत्रदेवतानी स्तुति कहै) पठैऊभो यको । १ नवकार कही ।
 संप्राशा प्रमाजी । ऊंकदू बैसी । मुहपत्ती पहिलेही । विध
 सुं वे वांदणादेई । इच्छामो अणुसद्धि कही । बैसै पठै (गुरु एक

स्तुति कक्षां पूठै) आवकसमस्तमस्तकै अंजली करै। णमो
 खमासमणाय । णमोर्द्धत्तिद्धा कहौ। णमोस्तु, वर्द्धमानाय
 (इत्यादि तीन स्तुति कहै) आविका। नमो खमासमणाय।
 कहौ। संसारदावानी तीनस्तुति कहै। पठै णमोत्थुणं कहौ।
 एक आवक खमासमण देई कहै। इत्थाका० सं० भ०। स्तवन
 भणुं। वीजासर्वखमासमणदेई कहै। इत्था० सं० भ०। स्तवन
 सांभलुं (गुरुकहै भणह सांभलह) पठै आसणे बेसी। नमोर्द्ध
 त्तिद्धा० पूर्वक। वणोस्तवनकहै। पठै तीन खमासमणें। आ
 चार्य उपाध्याय सर्वसाधू वादी। चौथै खमासमणें। इत्था०
 सं० भ०। देवसी प्रायश्चित्त विमुद्धिनिमित्तं काउसग्न करुं
 (गुरुकहै करेह) पठै, इच्छं कहौ। देवसी प्रायश्चित्त विमु
 द्धिनिमित्तं। अन्नत्थू कहौ। चार लोगससुनो काउसग्न
 करै (पारै) लोगस कहै। पठै खमासमण देई।
 इत्थाका० सं० भ०। खुद्दोवद्दव उह्णवणत्थं करेमि काउस
 ग्नं। अन्नत्थू० (इत्यादि कहौ) चार लोगससुनो काउसग्न
 करै (पारै) लोगस कहै। वैसी। खमासमण देई। थंभ
 णापार्खनाथजीनों चैत्यवंदनकरै। जय वीयराय कक्षां पठै
 खमासमण पूर्वक मस्तकनमावी ॥ सिरि थंभणइद्विय पाससा
 मिणो (इत्यादि दोय गाथ कहै) जभा यहं। वंदणव० अन्न०
 कहौ ४ लोगससुनो काउसग्न करै (पारै) प्रगटलोगस
 कहै। (इमहीज) दादाजौ श्रीजिन दत्त सूरजौनो काउस
 ग्नकरै (पारै) मुखें लोगस कहै। पछै। दादाजौ श्रीजिन
 कुशलसूरजौनो काउसग्न करै। पठै पूर्वा क्तरैते सामायि
 क पारै। इति देवसी पडिकमणविधिः संपूर्ण ॥ ॥ ॥

॥ अथ अटपुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ॥ रात्रीने पाठलै विप्रदियै निद्रा दूर करीने ।
 पंचपरमेष्टि स्मरण करी । गृहचिंता परिहरी । पर्वदिवसथकी
 प्रथमदिवसे पढिलेही राख्या । जे पोसहना उपगरण लेई ।
 पोसहशालायें थापनाचार्य समीपें । अथवा गुरुना संगोग
 ऊवै (तो) गुरुने पासें आवी । भूमिप्रमार्जी । एकखमासम
 ण देई । इरियावही पढिकसे । पठै खमासमण देई ।
 इत्याका सं० भ० । पोसह मुहपत्ती पढिलेऊं । (गुरु कहै
 पढिलेहेह) इत्थं कहौ । खमासमण देई । मुहपत्ती पढि
 लेहै । पढै ऊभो थई । खमासमण देई । इत्याका सं० भ० ।
 पोसहसंदिस्साउं (गुरु कहै संदिस्सावेह) । पठै इत्थं क
 हौ । खमासमण देई । इत्याका सं० भ० । पोसहठाउं (गुरु
 कहै ठाएह) पठै इत्थं कहौ । खमासमण देई । ऊभो
 थई । आधो सरीर नमावी । मुखें मुहपत्ती देई । मधुर
 खरे । तीन नवकार गुणी कहै । इत्युकार भगवन्पसाउ
 करौ । पोसहदंठकउचरावौ (गुरु उच्चरावेमो) । पठै करे
 मिमंते पोसहं । आहा० जाव अहोरत्तं वा० अप्पाणं वो० ।
 एपाठ तीनवार गुरुवचन अनुभाषणकरतो ऊचरै ॥ ॐ ॥
 पठै एकखमासमणें । इत्याका सं० भ० । सामायिक मुहपत्ती
 पढिलेऊं (गुरु कहै पढिलेहेह) योजी खमासमण देई ।
 मुहपत्ती पढिलेहै । पठै दोय खमासमणें सामायिकसंदि
 स्साउं । सामायिकठाउं (कहौ) खमासमण देई । अर्धाव
 नतगावऊभो थको । तीन नवकार । तीन करेमि मंते ऊच
 री । दोय खमासमणें । वैसेणो संदिस्साउं । वैसेणो ठाउं ।

कहौ । पठै दोय खमासमणें । सिञ्जाय संदिस्साउं । सि
 ज्जायकरं (कहौ) खमासमण देई । ऊमो थको । आठ
 नवकारनो सिञ्जाय करै । सीतादि परी सहै दोवखमास
 मणें । पांगरणुं संदिस्साउं । पांगरणुं पन्निग्वाउं (कहै)
 ए सर्वसामायिकविधि पूर्वे कहौतै । तिमहीज करवौ ।
 (पिणइतनो विशेषतै) पहिलां इरियावही पन्निक्मीतै । ते
 माटै । इहां सामायिक दंनकऊचखां पठै । इरियावही
 नही पन्निक्मीजै ॥ ३ ॥ पौठै चैत्यवंदन । जयवीयरायसूधौ करौ
 कुसुमिण दुसमिण काउसगकरै । पठै पन्निक्मणवेलासौ
 मसिञ्जाय ध्यान करै । पछै पूर्वोक्तरीते पन्निक्मण करै
 (पिण इतरो विशेष) चारै थुई ए देव वांढ्यां पौकै । खमा
 समण देई (कहै) इत्थाका० सं० भ० । बज्जवेलं संदिस्साउं
 (गुरु कहै) संदिस्सावेह (पछै इत्थं कहौ) खमासमणदेई
 (कहै) इत्थाका० सं० भ० । बज्ज वेलं करं (गुरु कहै करेह)
 पठ इत्थं कहौ । तीन खमासमणें । औआचार्यजीमिय १ ।
 ओउपाध्यायजीमिय २ । तीजैसर्वसाधूवांढी । कअभूमिहि ३ ।
 (इत्यादि नमस्कारभणें) जो पन्निलेहण वेला नही ऊवै(तो)
 सीमंधरखामीनो चैत्यवंदनादि करौ । सिञ्जायकरै । हिवै
 पन्निलेहण वेला पन्निलेहण करै । ते विधिपूर्वै लिखीतै ।
 (तो पिण) संचेषे फेर लिखीतै ॥ ३ ॥ दोय खमासमणें ।
 इच्छा० सं० भ० । पन्निलेहण करं (कहौ) मुहपत्ती पन्नि
 लेहै । पठै दोव खमासमणें । अंगपन्निलेहण संदिस्साउं ।
 अंगपन्निलेहण करं (कहै) पठै (गुरुवचनें) । इत्थं कहौ ।
 धोतियो कणदोरो पन्निलेहौ । वरुपहिरी । खमासमण

देई। इच्छाकार भगवन पसाउकरी पन्डिलेहण करावो जी।
 (इम कहौ। थापनाचार्य पन्डिलेही थापै। अने जो (गुर्वा
 दिक) थापनाचार्य पन्डिलेहै। (तो) पिण (खमासमण देई।
 उक्त रीते आग्यामांगै। पठै खमासमण देई। इच्छाका०
 सं०भ०। उपधि मुहपत्ती पन्डिलेहै (गुरु कहै पन्डिलेहेह)
 पठै इच्छा कहौ। मुहपत्ती पन्डिलेही। दोय खमासमणै।
 इच्छाका० सं०भ०। उही पन्डिलेहण संदिस्साउं (गुरु० संदि
 स्सावेह) उही पन्डिलेहण कर (गुरु० करेह) पठै इच्छा कहौ।
 कंबल वस्त्रादि पन्डिलेही। पोसहसाला प्रमाजौ। काजो
 विधिसुं परिठवौ। एक खमासमण देई। इरियावही पडि
 क्रमे (इहां आचार दिन क्रमे कछोठै) ॥३॥ दोय खमा
 समणै। इच्छाका० सं०भ०। वसतो संदिस्साउं। वसतो पन्डि
 लेहै (कहौ)। वसती मालो प्रमुख प्रमाजै (इत्यादि) पिण
 विधि प्रपा प्रमुखमे न कछो ॥३॥ हिवै एक खमासमणै।
 इच्छाका० सं०भ०। सिञ्जाय संदिस्साउं। (गुरु कहै संदिस्सा
 वेह) बीजै खमासमणै। इच्छाका० सं०भ०। सिञ्जाय कर।
 (गुरु कहै करेह) पठै इच्छा कहौ। नवकार १ कथन पूर्वक
 (उपदेशमाला) प्रमुख सिञ्जाय करी। नवकार एक कहौ।
 धर्मध्यान करै। भणै गुणै वखाण सुणै ॥३॥ इम करतां पूंग
 पुज्जर दिन चक्षां। उग्याना पोरिसौ शाग्या। बज्जपन्डि
 न्ना पोरिसौ। कहौ। खमासमण देई। (इरियावही) पन्डि
 क्रमी। दोय खमासमणै। इच्छाका० सं०भ०। पन्डिलेहण
 कर। (गुरुवचने)। इच्छा कहौ। मुहपत्ती पन्डिलेही। पां
 भोजन पाव पन्डिलेही रावै। पछै सिञ्जाय ध्यान करै।

॥३॥ हिवै कालवेलाये । आवसही पूर्वक देहरै जई ।
पांचेशकस्तवे देववांदै हिवै पांचेशकस्तवे देववांदण विधिदो
प्रकारसें लिखिये है ॥३॥

॥३॥ तीन प्रदक्षिणा देई । तीनवार नम स्कार करी ।
भूमि प्रमार्जी । पुरुष ऊवै (ते) प्रभूजो सुंदक्षिणापासे बैसै ।
स्त्री ऊवै ते वांस पासे बैसै । पठै । इह्वाका० सं० भ० । चैत्य
वंदन करुं । इह्वां कही । पछै नमोत्युणं कहै । स्वमासमण
देई । इरियावही पट्टिकमें । एकलोगसन्नो काउसग्न
करै । सुखें लोगस कहै । संडाशाप्रमार्जी बैसै । तीन
तथा चार तथा पांच आदि देई । नमस्कार कहै । जं
किंचनामतित्यं । (इत्यादि कही) पठै । नमोत्युणं कहै
(ऊभो यः) अरिहंत चेईयाणं करेमि काउसग्नं । वंदण
वत्ती० । अनत्थू० । कही । १ नवकारनो काउसग्न करै
(पारी) एक युईको गाथा कहै ॥ पछै लोगस० । सब
लोअरि० । वंदणव० । अनत्थू० । कही । १ नव० । (पारी)
२ युई कौ गाथा कहै । पछै । पुक्खर वरदी० । सुअस
भग० । वंदण० । अणत्थू० । कही । १ नव० का० (पारी)
३ युई कोगा० । पछै सिद्धानं बुद्धानं । वेयावच्चगराणं ।
अनत्थू० । (इत्यादि कथन पूर्वक) चौथी युईसे देववांदी
नमोत्युणं कहै । फेरअरिहंतचे० कहो । इसीतरै । चार युई
एदववांदी बैसै । नमोत्युणं कहै । नमोर्त्तिसिद्धाचार्योपा०
(इत्यादि कही) पछै स्तवन कहै । पठै कयवीच राव कही ।
(नमोत्युणं) सबे तिविसेण वंदामि पर्यंत कहै ॥३॥ इस
पांचे शकस्तवे देववंदनविधिः ॥३॥ प्रवचनसारोद्धार प्रमुख

प्रथमे' कहोठै) ॥ ॐ ॥ तथा चैत्यवन्दन दृष्ट्वाप्यमे' इम
कह्योठै ॥ १ ॥ ॐ ॥ नमस्कार कथन पूर्वक । शक्रस्तव क
ही । इरियावही प्रतिक्रमणादि करै । वलौ नमस्कार क
थनपूर्वक शक्रस्तव कही । दोयवार चार युद्ध'से' देववांदै ।
फेर शक्रस्तव कही । जावंति चेइयाइ' गाथा भणी । खमा
समण पूर्वक । जावंतिके० बीजी गाथा कही । स्तवन कहै
वली नमोत्युण' कहौ । जयवीरराय कहै ॥ ॐ ॥ इति देव
वन्दणविधिः ॥ ॐ ॥ पठै निस्सहो पूर्वक पोसहशाला माहि
आवी । इरियावही पडिकमें । पछै सिञ्जाय ध्यान करै ।
॥ ॐ ॥ जो तिविहार उपवास कियो ऊवै । (तो) पञ्चक्खाण
वेत्तापूर्ण ऊवां । जलपीणें कुं पञ्चक्खाण पारै ॥ ॐ ॥ हिवै
पञ्चक्खाणपारणेंकी विधिलिखियेहै ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ खमासण देई । इरियावही पडिकमें । फेर एक
खमा० । इड्ठा० सं० भ० पञ्चक्खाण पारवा सुहपत्ती पडिलेऊं
(गुरु कहै पडि०) पठै इड्ठां' कहौ । खमा० देई । सुहपत्ती
पडिलेहै । फेर एकखमा० देई । इड्ठा० सं० भ० पाणहार अ
मुकपञ्चक्खाण पारुं (गुरु कहै पुणोवि कायवो) पठै यथाश
क्तिकही । खमासमण देई । इड्ठाका० सं० भ० पाणहारपारुं
(गुरु कहै आथारो नमोत्तवो) पठै तहत्ति कही । अमुक
पञ्चक्खाण चौबिहार कखुं (इम कही) १ नवकारगुणी
पञ्चक्खाण फासियं । पालियं । सोहियं । तीरियं । किट्टियं ।
आराहियं । जंचनआराहियं । तख मिड्ठामि दुक्कमं (कही)
चैत्यवन्दन करै । क्षणमात्र सिञ्जायकरो यथासंभवै । अति
धिसंविभाग करो पाणी पीवै ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ तथा उपधान वाही ऊवै । (तो) पोरसी प्रमुख
पंचक्लाण पारी । आहारकरै । पठै आसणवैठो थकोहीज ।
दिवस चरम पचसै । पठै । इरियावही पडिक्की । चैत्य
वंदन करै । (ए चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्त ठै) ।

॥ ॐ ॥ इति पंचक्लाण पारणैकाविधि ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पठै जो बहिभूमि जावणो ऊवै (तो) आवसही कहौ ।
उपयोगीयको । निर्जीवस्थंडिलै जई । अणुजाणह जसुग्ग
हो कहौ । पूर्व । उत्तर । सूर्य ग्रामादिकने पूठि अणदेई । मल
मुख परि ठवै । प्राशुक जलै शुद्धयई । बार तीन बोसरामि ।
एहवूं कहिवै करौ । मल मुख बोसरावी । पोसहशालायें ।
निस्सहो । पूर्वक (पैसौ) इरियावही पडिक्की । खमासमण देई ।
कहै । इत्ताका० सं० भ० । गमणागमण आलोयहं (गुरु कहै
आलोएह) पठै इत्तं कहौ । गमणागमण आलोवै ॥ ॐ ॥ (ते
इम) आवसही करौ । प्राशुक देशे जई । संडाशा पूजी । थंडि
लो पडिलेही । उच्चार प्रअवण बोसरावी । निस्सहो करौ ।
पोसहशालायें आव्यो ॥ आवंति जंतेहिं । जंखंडियं । जंविरा
हियं । तस्मिन्नामि दुक्कडं ॥ ॐ ॥ इम कहौ बेसै । पठै पडि
लेहण वेला सीम सिग्गाय ध्यान करै ॥ ॐ ॥ हिवै । पाठलै
पुद्धर । इरियावही पडिक्की । खमासमण देई कहै । इ
त्ताका० सं० भ० । पडिलेहण करं । (गुरु कहै करेह) पठै
इत्तं कहौ । दूजै खमासमणें । इत्ताका० सं० भ० । पोसहशा
ला प्रमार्ज्ज (गुरु कहै प्रमार्जह) पठै इत्तं कहौ । सुहपत्ती
पडिलेही । दोयखमासमणें । अंगपडिलेहण संदिस्साउं ।
अंग पडिलेहण करं । (कहै) पठै (गुरुवचनें) इत्तं कहौ ।

सुहृपत्ती पट्टिलेही । दंदासणो पूजणी प्रमुख सोंप्रमार्जी
 प्रोसहशाला प्रमार्जे (पठै) काजो शुद्धकारी । जघरी । एकां
 ते विखरतो परठवौ । (इरियावही पट्टिलेही) । खमासमण
 पूर्वक कहै । इच्छाकार भगवन पसाउ करै पट्टिलेहणा
 पट्टिलेहा वोजी । पठै थापनाचार्य पट्टिलेही । थापै । रुह
 समीपै (अथवा) थापनाचार्य समीपै । एकखमासमण देई ।
 इच्छाका० सं० भ० । सुहृपत्ती पट्टिलेऊं (गुरु कहै पट्टिलेहेह)
 पठै । इच्छांकही) खमासमण देई । सुहृपत्ती पट्टिलेहै । पठै
 दोय खमासमणें । इच्छा० सं० भ० । सिग्जाय संदिस्साउं ।
 सिग्जाय करं (कही) उक्तरीते जलमाल सिक्कायकारी ।
 तिविहार उपवास कौधो ऊवै । (तो) गुरुशाखें । पाणिहार
 पक्खै ॥ ३ ॥ उपधानवाही प्रमुख । आहार कौधो ऊवै (तो)
 वांदणा दोय देई । पक्खलांण करै ॥ ३ ॥ (पठै) एक खमास
 मण देई । इच्छाका० सं० भ० । उपधि थंमिला पट्टिलेहण सं
 दिस्साउं । बीजै खमासमणें । इच्छाका० सं० भ० । उपधि
 थंमिला पट्टिलेऊं (गुरुवचने) इच्छं कही । दोय खमास
 मणें । इच्छाका० सं० भ० । बैसणो संदिस्साउं । बैसणोठाउं ।
 कही (बैसै) वल्ल कंबलादि पट्टिलेहै । पुंजणी ऊवै (तो)
 ते पिण । सुहृपत्ती सुं पट्टिलेहै । उपवासी तोठै । तेमटें ।
 सर्वपाठो कट्टिपट्टो धोतीयो कणदोरो पडिलेहै ॥ ३ ॥ उप
 धानवाही प्रमुख भोजन कौधो ऊवै (तो) कट्टिपट्टादि पट्टि
 लेह्यां पठै । वल्लकंबलादि पट्टिलेहै । (एविशेप ठै) । पठै
 कालवेलासीम सिग्जाय ध्यान करै ॥ (पीठै) उबार प्रथ
 वण २४ थंमिला पट्टिलेहै (जो) चउदस ऊवै । (तो) पाखी

चउमासी पन्तिकमणो करै । संवत्सरियें संवत्सरौ पन्तिकम
णोकरै ॥३॥ तिहां देवसौ पन्तिकमणो पूर्वे लिख्योठै । तिम
हीज करै । (पिण इतरो विशेष ठै) । इच्छा० । देवसियं
आलोएमि इत्यादि । देवसौ आलोयां पठै । ठाणै कमणै ।
चंकमणै । (इत्यादि पाठ कहै) (तथा) खुद्दो वड्डव काउसग
कियां । पठै । दोय खमासमणें । इच्छाका० सं० भ० ।
सिञ्जाय संदिस्साउं । सिञ्जाय करं (कही) । बैठो थको ।
तीन नवकार प्रमुख सिञ्जाय करै । इति ॥३॥ पाक्षिकादि
तीन पडि क्कमणाकीविधि आगै लिखोहै ॥३॥ ॥३॥

॥ ३ ॥ हिवै पन्तिकमणो ज्जवां पठै । साधुनौ वेयावच्च
करी । पोरसौ सीमसिञ्जाय ध्यानकरै । जोलधुनौति प्रमु
खकरवी ज्जवै तो आसज्ज कहितो थको । भूमि प्रमाजै । थं
मिलस्यानकें जई । देहसंका निवारै । प्रखवण वोसरावी ।
खस्यानकें आवै । (भगवन) बड्डपन्तिपुन्ना पोरसौ । (इम
कही) खमासमण देई । इरियावही पन्तिकमे । पीछै राई
संधारा विधि करै ॥३॥ ॥ ३॥ ॥३॥

॥३॥ हिवै राई संधारा विधि लि० ॥३॥

॥३॥ खमासमण देई । इच्छा० सं० भ० । राई संधारा
मुहपत्ती पडिलेज्ज । (गुरु कहै पडिलेह) पठै इच्छं कहै ।
खमासमण देई । मुहपत्ती पडिलेहै । एक खमासमणें ।
इच्छा० सं० भ० । राई संधारो संदिस्साउं । बीजै खमास
मणें । इच्छा० सं० भ० । राई संधारो ठावूं (पछै) गुरु
बनने । इच्छं कहै । चउक्कसाय पडिम लु लु रण । (इत्यादि
नमस्कार कथनपूर्वक) । जयवीय राय सूधी चैत्यवन्दन

करै । भूमि प्रमार्जी । संथारो उत्तर पड़ो पाथरै । पकै
 शरीर प्रमार्जी । निस्सही २ इम कहौ । संथारै बैसी ।
 तीन नवकार । तीन करेमि भंते । ऊचरी । एमो खसा
 समणाय । गोयमार्दणं महासुणीणं । अणुजाणह चिड्डिजा
 अणुजाणह परमगुरु । (इत्यादि राई संथारामाथा भबी ।
 वामहाथ सिराणें देई । सोवै । निद्रानावै । जांसीम । मुनि
 वरचरित चिंतवै । पसवाडो फेरै (तो) शरीर संथारो
 प्रमार्जी फेरवै । जोदेह शंकाये ऊठै (तो) पूर्वोक्त विधे
 देहशंका निवारौ । इरियावहौ पडिक्कमे । (पकै जपन्ये
 पिण । तीन गाथानी सिञ्जाय करौ सोवै ॥ ॥

॥ ॥ इति राई संथारा विधि कहौ ॥ ॥

॥ ॥ हिवै राबिने पाछिलै पुहर ऊठौ । नवका
 रादि गुणी । इरियावहौ पडिक्कमे । खमासमण देई कुसु
 मिण दुस्सुमिण काउसग करौ । पूर्वोक्त विधे सामाविक
 लेवै । इहां इरियावहौ न पडिक्कमे । पकै दोयखमासमणें ।
 सिञ्जाय संदिस्सावौ । आठ नवकारगुणी । पडिक्कमण
 वेलासीम सिञ्जाय करै । पडिक्कमण वेला ऊवां । पडि
 क्कमणो पूर्वोली परे करै । (पिण इतरो विशेषकै) । राई
 आलोयां पठौ । संथारा उवड्डणकी (इत्यादि पाठ कहै)
 इम संपूर्ण पडिक्कमणो करौ । पडिलेहणवेलायें । पूर्वोक्त
 विधे पडिलेहण करौ । वर्षाशालो पूंजी । काओ ऊचरी ।
 इरियावहौ पडिक्कमे । दोय खमासमणें । सिञ्जाय संदि
 स्सावौ । उपदेशमाला प्रमुख सिञ्जाय करै । पकै पोष
 पारै ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ॐ॥ हिवै पोसहपारण्येकी विधिलिखियै है ॥ॐ॥

॥ॐ॥ खमासमण देई । मुहपत्ती पडिलेहै । फेर । खमा
समण देई कहै । इच्छा० सं० भ० । पोसहपाखूं (गुरु कहै
पुणोवि कायवो) पठै यथाशक्ति कहौ । खमासमण देई
(कहै) । इच्छा० सं० भ० । पोसह पाखूं । (गुरु कहै आ
यारो न मोत्तवो) । पछै तहत्ति कहै । खमासमण देई ।
तीन नवकार अर्द्धावनत गावजभो थको गुणो । खमासम
णदेई । मुहपत्ती पडिलेहै । पौठै खमासमण देई कहै ।
इच्छाका० सं० भ० । सामायिक पाखूं (गुरु कहै पुणोवि का
यवो) । पठै यथाशक्ति कहौ । खमासमण देई । इच्छाका०
सं० भ० । सामायिकपाखूं (गुरु कहै आयारो न मोत्तवो)
(पठै तहत्ति कहौ) खमासमण देई । अर्द्धावनत गाव
जभो थको । हाथ जोड़ां । मुहपत्ती मुखें दियां थकां । तीन
नवकार गुणी । संतासा पडिले है । गोतालीयै बैसी । स
स्तक नमावी । भयवं दसन्नभदो (इत्यादि भावनारूप गाथा
कहै) । पठै पोसहना उपगरण संबरो । देहरै जई । देव
जुहारै । घरे आवी । आहार निष्यन्न ऊवो देखी । साधु
समीपे आवै । अतिथि संविभाग व्रत साचवण निमि
त्त । साधु भणो निमंतवा करौ । घरे लेबावै । साधूपिण
गुरु आहार लेई । खस्यानके आवै । तिवार पछै साधूने
जे आहार दीधो । तेहनोहीन । शेष आहार आप करै ॥
इति अठपुहरो पोसह ग्रहण पारण्य विधिः ॥

॥ हिवै दिन जगां पठै पोसहलै तेहनीं विधिलि० ॥

॥ ॐ ॥ घर वकी निधित जई । घर्मस्यानके आवी ।

सर्व उपगण पट्टिलेही । कचरो विधिसुं परिठवी । इरिया वही पडिक्केमे । खमासमण पूर्वक आग्या मांगी । पोसह मुंहपत्ती पट्टिलेही । आगे पोसह ग्रहणनी विधि पूर्वे लिखी है । तिमहीज आणवी (पिण) दिवस पोसह हीज करणो ऊवै (तो) पोसह दंष्टक ऊचरतां । जावदिवसंपज्जु वासामि । (एहवो पाठ कहे) अने जो । अठपुहरी करवो ऊवै (तो) जाव अहोरत्ति पज्जुवासामि । (एहवो कहे) पठै सामायिक विधि सर्व करी । चैत्यवंदण कुसुमिण दुस मण काउसंग करी । पट्टिकमणो करी । दोय खमासमणे वज्ज वेलां संदिस्सावै २ (अने जो) । पूर्वे पट्टिकमणो गुरु साथे कस्यो ऊवै (तो) पट्टिकमणाने अंते । पट्टिलेही राख्या । जे वत्त । तेपहरी । पोसहसामायिक सर्वविधि करी । दोय खमासमणे वज्जवेलां संदिस्सावै । २ (तथा) जो गुरु से जूदो पट्टिकमणो कस्यो ऊवै (तो) गुरुपासे आवी पोसहसामायिक सर्वविधि करी । आलोयण खामणादि निमित्ते । मुहपत्ती पट्टिलेही । ने बांदणा देई । इट्ठाका० सं०भ० । राईयं आलोऊं । (गुरु कहे आलोएह) पठै राई आलोवै । फेर १ खमासमण देई । इट्ठाका० सं०भ० । अभुट्ठिमि अभिंतर । राईयं खामेमि (गुरु कहे खामेह) पीठै सब पाठ कहे । राई खामे । पहिलां पट्टिकमणामे नवकारसी पचख्योयो । तेमाटे । पठै । गुरुशाखे पञ्चक्खाण उपवासनो करै । पठै । दोय खमासमणे । वज्जवेलां संदिस्सावै ३ । (ए तीन प्रकार का विकल्प जाणवा) । दिवे पट्टिलेहणतो पूर्वे करी ठै । (तो पिण) । आदेश मांगवो ।

(तेइम) खमासमण देई । इत्था० सं० भ० । पन्डिलेहण संदि
 साउ । वौजै खमासमणें । पन्डिलेहण करुं (कहौ) सुह
 पत्ती पन्डिले है । पठै । इमहीज दोय खमासमणें । अंग
 पन्डिलेहण संदिखावी । सुहपत्ती पन्डिलेहै । पठै । वले खमा
 समण देई । इत्थकार भगवन पसाउ करी पन्डिलेहण
 पन्डिलेहावो जी । (इम कहै) पठै । एकखमासमण देई ।
 इत्थाका० सं० भ० । उपधि सुहपत्ती पन्डिलेहुं (कहौ) कोई
 वल अणपडिलेहो राख्यो ऊवै (तो) पन्डिलेहै । (नहीतो)
 वली आसण पडिलेहै । पठै । दोय खमासमणें । सिञ्जाय
 संदिखावी । उपदेशमाला प्रमुखसिञ्जाय करै । आगै सर्व
 क्रिया पूर्वे अठपुहरी पोसहमें लिखीठै । तिमहीज जाण
 वी । पिण इहां । अठपुहरी पोसहीतो पाठली रातें
 वली सामायिक न लेवै । जिणें दिवस संबंधी चौपुहरी पो
 सहलौधो ऊवै । (ते) पाठलै पुहर । पचक्खाण कियां
 पठै । दोयखमासमणें । उहीपन्डिलेहण संदिखाउ । उही
 पन्डिलेहण करुं । (कहै) पिण थंमला पद न कहै । अने
 थंडिला नही पडिलेहै । यह निकेवल दिनसंबंधी पोसह
 ग्रहण करणें में विसेष विधिहो सो बताई ॥ ॥ इति
 दिन संबंधी पोसहग्रहण विधि संपूर्णम् ॥ ॥

॥अथ रात्रि संबंधी चौपहरी । पोसहनो विधि लि० ॥

॥ ॥ तिहां जिणें प्रथम चौ पुहरी दिवस पोसो
 ऊचख्यो है । पठैसंध्यानी पन्डिलेहण करतां । रात्रि पोस
 हनो भावथयो । (तो) पचक्खाणकियां पठै । दोय खमास

मणें । पोसह सुहपत्ती पढिलेही ।^१ तौन नवकार गुणी ।
 तीनवार पोसह दंढक ऊचरै । (तिहां) जावरत्ति पज्जुवा
 सामि (इम) पाठ ऊचरै ।^२ पौठै । सामायकविधि पूर्व लिखी
 है । तिमकरै (पिण) सामायक ऊचखां प्रह्वी । दोय खमा
 समणें । सिगजाय संदिखावी । आठ नवकार कहौ बैसणो
 संदिखावी । पांगरणो संदिखावै । पौछै । दोयखमासमणें ।
 इत्थाका० सं० भ० । उहोयंमिला पढिलेहण संदिखाउ ।
 उहोयंमिला पढिलेहण करं (गुरु कहै करेह) इत्थं कहौ ।
 (उपधि पढिलेहै) आगै सर्वक्रिया पूर्वे लिखी तिमसांणवी ।
 (तथा)जे आवक उपवासी तो । अग्रपणें । दिवसें पोसहन
 करी सक्यो । ते राखि पोसहनों भावयथां । पाठलै सुहर
 धमस्थानकौ आवै । जो वसती प्रमार्जी ऊवै । (तो) सख्यो
 नही तो वसती प्रमार्जी । काजो परठवी । सर्व उपगरण
 पढिलेही । इरियावही पढिकमे । पौठै चौबिहार प्रचक्खा
 ण करी । दोयखमासमणें । पोसह सुहपत्ती पढिलेही ।
 दोय खमा समणदेई । पोसह संदिखावै । फेर । खमासमण
 देई । तौन नवकार गुणी । तीनवेर पोसह दंढक ऊचरै ।
 (तिहां) दिवससेसं रत्ति पज्जुवासामि (कहै) संध्या ऊवै ।
 (तो) रत्ति पज्जुवासामि कहै । पौठै । बिडं खमासमणें
 सामायक सुहपत्ती पढिलेहै । दोय खमासमण देई ।
 सामायक संदिखावै । फेर खमासमण देई । तौन नवकार
 गुणी । तीन करेमिभंते ऊचरै । दोय खमासमण देई ।
 सिगजाय संदिखावी । आठ नवकार कहै । फेर दो खमा
 समण देई । बैसणो संदिखावी । सीतादिकै । बे खमासमण

देई । पांगरण संदिस्सावै । पीऊँ । वेखमासमण देई । अंग
पडिलेहण संदिस्सावी । मुहपसी पडिलेहै । फेर । वेखमा
समण देई । उहौ थंडिला पडिलेहण संदिस्सावी । (जो)
अण पडिलेह्यो उपगरण ऊवै । (ती) पडिलेहै (जो) सर्व
उपगरण पडिलेह्या ऊवै । (तोपिण) थानकं शून्यता टालवा
भणी । वले आसणपडिलेहै । पडिकमण वेलासौम सिज्जाव
ध्यान करै । पीऊँ । उच्चारप्रश्नवणना(२४) थंडला पडिलेहो
पडिकमणों करै । (तथा) पाळलीराते । वली सामायक
नलेवै । (इतना निकेवल रातिसंबंधी पोसहलेवाना विकल्प
जाणवा) ॥ ॐ ॥ इति रात्रि पोसह विधि संपूर्णम् ॥

॥ अथ २४ थंडला पडिलेहण पाठ, लि० ॥

॥ ॐ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहिया
से ॥१॥ आगाढे मज्जे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥२॥
आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥३॥ आगाढे
आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥४॥ आगाढे मज्जे पा
सवणे अणहिया से ॥५॥ आगाढे दूरे पासवणे अणहि
यासे ॥६॥ ॐ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहि
यासे ॥७॥ आगाढे मज्जे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥८॥
आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥९॥ आगाढे
आसन्ने पासवणे अहियासे ॥१०॥ आगाढे मज्जे पासवणे
अहियासे ॥११॥ आगाढे दूरेपासवणे अहियासे ॥१२॥ ॐ ॥
अणगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥१३॥
अणगाढे मज्जे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥१४॥ अण

गाढे दूरे उच्चारं पासवणे अणहियासे ॥१५॥ अणागाढे
 आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥१६॥ अणागाढे मउक्ते पास
 वणे अणहियासे ॥१७॥ अणागाढे दूरे पासवणे अणहिया
 से ॥१८॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारं पासवणे अणहियासे
 ॥१९॥ अणागाढे मउक्ते उच्चारं पासवणे अणहियासे ॥२०॥
 अणागाढे दूरे उच्चारं पासवणे अणहियासे ॥२१॥ अणा
 गाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥२२॥ अणागाढे मउक्ते
 पासवणे अणहियासे ॥२३॥ अणागाढे दूरे पासवणे अणहिया
 से ॥२४॥ एथंडिला पडिलेहण पाठकहा ॥ ॥ ॥

॥ ॥ हिंवे थंडिला कहां करणा सोकडेहै ॥ ॥

॥ ॥ ६ थंडिला सव्याकै दोनुं तरफ दहणें पासे (३)
 वामपासे (३) पडिलेहै ॥ ६ थंडिला दरवज्जेकै भीतर पासे
 दहणें ३ वामें ३ पडिलेहै ॥ ६ थंडिला दरवज्जेकै बाहर
 दोनुं पासे पडिलेहै ॥ ६ थंडिला (कहां) उच्चारं प्रअवण
 को जगा दोनुं तरफ पडिलेहै ॥ इति २४ थंडिला पडिले
 हणविधि संपूर्णम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ पात्तिकादि पट्टिकमण विधि लि० ॥ ॥

॥ ॥ (तिहा) प्रथम बंदिनू सूत्र पर्यंत । देवसिक
 पट्टिकमी । १ खमासमण देई । देवसो आलोदयं पट्टि
 कंता । इत्थां सं० म० । पत्तिय सुहपत्ती पट्टिलेऊं । (चौमा
 से) चौमासीयं सुहपत्ती । (संवत्तरोयें) संवत्तरी सुहपत्ती
 पट्टिलेऊं (कहै) पठै (गुरुकहै पट्टिलेहै) पठै इत्थं कहै ।

दूजी खमासमण देई । मुहपत्ती पडिलेही । वांण्णाद्यै ।
 तिहां (पक्खीमें) पक्खो वइत्तंतो । (चौमासी पडिं०) चौ
 मासी वइत्तंतो । संवत्थरीमें संवत्थरो वइत्तंतो । इम यथा
 योगे कहै । (पठै गुरु कहै) पुण्यवंतो देवसोनें स्थानिके
 पाक्खिक (चउआसिक) संवत्थरिक भणज्यो । ठीकजयणा
 करज्यो । मधुर खरै पडिक्कमज्यो । खासै सो विवरा सुइ
 खासज्यो । मांझलमें सावचेतरहज्यो । पठै सगलाही कहै ।
 तहत्ति । पळै जठो । इह्वाका० सं० भ० । संवुद्धा खामणे
 णं । अम्भुद्धिउमि अविभंतर । पक्खियं (३) खामेजं (गुरु
 कहै खामेह) पठै मस्तकै अंजली करतो यको । इह्वां खा
 मेमि पक्खियं (३) (कहै) गोडालीये वैसी । मस्तकनमावो ।
 दक्षिणहाथ गुरुसाहमू करी । मुहपत्ती सुखे देई । (पक्ख
 यें) पनरसङ्गं दिवसाणं । पनरसङ्गं राईणं । जंकिंचि अप्प
 त्तियं । (इत्यादि सर्वपाठ कहै) चउमासे । चउल्लं आसा
 णं । अट्ठरुहं पक्खाणं । वीसोत्तरसो राइ दियाणं । जंकिं
 चि अप्पत्तियं । (इत्यादि कहै) संवत्थरीये) दुवाल सल्लं मा
 साणं । चौवीसल्लं पक्खाणं । तिन्नि सयसडि राइ दियाणं ।
 जंकिंचि अप्पत्तियं (इत्यादि कहै) तिवारे (गुरुपिण मिह्वा
 मि दुक्कमं कहै) । तिहां दोय साधु उचरता ऊवै (तो) पा
 खिये (३) चौमासीये (५) संवत्थरीये (७) साधुनें खमावै ।
 पठै जठो । अवग्रह मांहि रद्धो कहै । इह्वाका० सं० भ० ।
 पक्खियं आलोवू (गुरु कहै आलोएह) पठै इह्वां आलोएमि ।
 जोमेपक्खिउ (३) अइयारोकउ (इत्यादि सूत्रभणो) संक्षेपे
 (अथवा) विस्तारे । पाखी चौमासो । संवत्थरो । अतीचार

(एहनें ठिकाणे) पडिकमे पक्खियं । चौमासीयं । संवत्तरियं (सव्वं कहै) पठै जठो । अब्भुट्ठिमि आराहणाए (इत्यादि परिपूर्ण भणौ) खमासमणदेई । इत्था० सं० भ० । मूलगुण उत्तरगुण अतीचार विशुद्धि निमित्तं । काउसग्ग करू (गुरु कहै करेह) पठै इत्थं कहौ । करेमि भंते सामा० इत्थामि ठाउं काउसग्गं । तस्स० अन्नत्थू । (इत्यादि कहौ) पाखोये (१२) लोगस्स । चौमासै (२०) लोगस्स । संवत्तरौये (४०) लोगस्सनो काउसग्ग करै । एक नवकार ऊपर । काउसग्ग करौ । (पारी) लोगस्स कहै । वैसी । मुहपत्तो पडि लेही । वेवांद्दणा देई । इत्था० सं० भ० । समाप्ति खामणेणं । अब्भुट्ठिमि अभिंतरे । पक्खियं (३) खामेजं (गुरु कहै खामेह) पठै । इत्थं खामेमि पक्खियं । (इत्यादि पाठ) पूर्वं कह्यो । तिम कहै । (पठे) इत्थाका० सं० भ० । पाखी (३) खामणा खामूं (गुरु कहै) । पुण्यवंतो । चारवेरं खमासमण देई । तीन२ नवकार कहौ । पाखी (३) समाप्त खामणाखा मह । पठै । आवक एक खमासमण देई । मस्तक नोचो न मावी । तीननवकार गुणं । इम चार वार कहे । पठै । (गुरु कहै नित्यारग पारगाहोह) पठै आवक कहै । इत्थं इच्छामो अणुसट्ठिं (कहौ) (गुरु कहै) पुण्यवंतो । पाखी नें लेखै । एक उपवास । (अथवा) दोय आबिल (अथवा) तीन नौवी । (अथवा) चार एकासणां । (अथवा) वेहज्जा रसिम्भाय करी । एक उपवासनी पैठ पूरज्यो । पाखीनें स्थानकै देवसिक भणिज्यो । इम चौमास एसर्व दुगणो कहणो । संवत्तरौये विगुणो कहणो । पठै जिले तपकीधो

ऊवै । ते पइद्वियं कहै । न कौधौ ऊवै । ते कहै । तहसि ।
 पछै वे वांढणां देई । अम्बुद्विजमि अम्बिंतर । देवसियं खा
 मेमि । (इत्यादि कहै) पछै वे वांढणा देई । आयरिय
 उवग्भाए० तीन गाथा कहै । इम आगै सर्व विधि । देव
 सिक पडिक्कमणानी करै । पिण इतरो विशेष है । श्रुत
 देवतानो काउसग्गं करौ स्तुति कहै । पौछे भवणदेव
 याए करेमि काउसग्गं (इत्यादिविधे) भवणदेवतानो काउ
 सग्ग करौ । स्तुति कहौ । चेलदेवतानो काउसग्ग करै ।
 (तथा) तोने पवें । वनो स्तवन अजित शांति कहणो । लघु
 स्तवन । उपसर्गहं स्तोत्र कहणो । तथा पडिक्कमणो पुरो
 ऊवां । पछै । एक भावक गुर्वाञ्जायें । नमोर्हत्तिसद्दा कहौ ।
 शांतिस्तोत्र १७ गाथा प्रमाण कहै । बीजा सर्वसुणे । नि
 णांनं रात्री पोसह न ऊवै (ते) पोसह सामायिक पारी
 सांभले । इति पाच्छिकादि (३) पडिक्कमणविधि ॥३॥

॥३॥ हिवै रात्रि प्रतिक्रमण मांहे ठम्मासो तपचिंत
 वीयै तेविधिलिख्यै है ॥३॥ श्रीमहावीर स्वामौना तौर्यमे
 उत्कृष्टो ठम्मासी तपहै । रे जीव ते करि सकै नकरि सकुं
 इम एक दिन उठो । करि सकै (नकरि सकुं) । इम एकेक
 दिन उठो करतां । उगुण तीस दिन जणा ठम्मास ऊवै ।
 तिहां सधी पूठियै । पठै । (पंचमासी) करि सकै । नकरि
 सकुं । एक दिन जणी पंचमासी करि सकै (नकरि सकुं) ।
 इम एकेक दिन उठो करतां । उगुण तीस दिन जणी ।
 पंचमासी खगे पूठियै । पठै । (चउमासी) एक दिन जणी ।

दोय दिन जणी । इमहीज विमासी । दुमासी । यावत,
(एक मासकरि सकै) । नकरि सकुं । पठै । एक दिन जणो
कियां । सोलह दिननो चौ लीसम तप याइ । ते करि सकै
(नकरि सकुं) । पठै । वे वे भात षटावतां पूछियै । (ते इम)
वलीसम करि सकै (नकरि सकुं) । (इम) लीसम । अठ्ठवी
सम । छावीसम । चौवीसम । बावीसम । वीसम । अठा
रसम । चौदसम । बारसम । दशम । अठ्ठम । ठठ्ठ । चउत्थ ।
तप करि सकै । (नकरि सकुं) । (इम) आबिल । निवौ ।
एकासणो । पुरिमड्ड । पोरसी । नवकारसी । (ताई) जो पञ्च
क्खाण करवो ज्वै । (सो) मनमे' धारी । काउसग्न पारै ।
इति छन्मासी तप चिंतवन विधिः ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

—*—

॥ॐ॥ दुहा ॥ श्रीजिन चंदसुरिंद । नितुराजत गहरा
जान । वाचक अमृत धर्मगणि । सोस जमा कल्याण ॥ १॥
सय अठार अमतीस मज्जि । जेशलमेरु सुधान । आवक
विधि संग्रह कियो । मूल ग्रंथ अनुमान ॥ २॥ श्री जिनप्रभ
सूरि कृत विधि प्रपा ॥ १॥ खरतर मंजलाचार्य । तरुणप्रभ
सूरि कृत खटावश्यक वालाबोधं ॥ २॥ सामाचारीशतकं ॥ ३॥
वंदारुहृत्तिं ॥ ४॥ प्रवचनसारोच्चारहृत्तिं ॥ ५॥ आचारदिन
करं ॥ ६॥ योजिन पतिसूरि सामाचारी पंचं ॥ ७॥ शिवनि
धानोपाध्याय कृत लघु विधि प्रपादि ॥ ८॥ ग्रंथांश्च विलोक्य
अयं विधि प्रकाशो निर्मित ॥ इति आवकविधि प्रकाशः
परिपूर्णतामगात् ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ अथ साधू (अने) आधिक। दोनु टंक पत्रिकमणो करै। तेहनो हेतू (नांव) सुतलव लिखतैहै ॥ ॥ तिहां पापसेतो निवर्त्तन होणो (ते) पत्रिकमणोकाहियै। ते ग्याना चार १ दर्शनाचार २ चारित्राचार ३ तपाचार ४ वीर्या चार ५ (एपंच आचारसुद्धि निमित्त) औगुरु साखें। अने गुरु अभावे थापनाचार्यशाखे पत्रिकमणो करवो (तेहना ठ अध्ययनछै) सामाद्वयं १। चउवीसत्यं २। वांदण्यं ३। पत्रिक मणं ४। काउसगोपू। पञ्चक्वाणमिति (तिहां) सामायिके करौ चारित्राचारनौ सुद्धियायै। चउवीसत्यं करौ दर्शना चारनौ सुद्धता थायै। वांदण्यं करौ ग्यानादिक आचारसुद्ध थायै। पत्रिकमणं करौ ग्यानादिकना अतीचारानौ सुद्ध थायै। अने पत्रिकमणायी जे अतीचार शुद्धनथाइ (ते) काउसगं सुद्धथाइ। पञ्चक्वाणं करौ तपाचार सुद्धथाइ। अने वीर्याचार इणें ठएकरौ सुद्धथाइ ॥ ॥ हिवै देववांदनादि अनुक्रमे पत्रिकमणो थायै। तेहना हेतुकहै ॥ ॥ सुद्धपत्रिक मणो मोक्षनो कारणछै। ते मंगलविना निर्विघ्न पणें प्रमाण नचटै। तिसंवास्तै धुरै अवश्य मंगल करवो। तिहां मंगल तो अनेक प्रकारनो है। प्रिण ओदेवगुरु वांदन सरीखो बीजो मंगल कोई मही (तेमाटे) प्रथम नमस्कार शक्रस्तव पूर्वक च्यारे युद्ध देववांदी। च्यारे खमासमणें गुरुवांदे। लो कमे प्रिण पहिलां राजाने नमस्कार करौ (पठै) प्रधान प्रसु खने नमे। इहां राजा समान तीर्थ कर (अने) प्रधानादिक समान आचार्यादिकछै (इम मंगल करौ) पत्रिकमणाने धुरे समस्त अतीचारनो बीजक (सब्सवि देवसिय) इत्या

दि कही) मित्रामि दुक्कं देवै । पठै ज्ञानादिक मांहे ।
 चारित्ता अधिक पणा ऊंती । प्रथम चारित्ताचार शुद्धि
 निमित्तो । करेमि भंते सामादय (मित्रादि तीन सूत्र
 भणै) तिहां समता परिणामे सर्वधर्म कार्यकरवा (ते
 माटे) प्रथम सामायिक आवश्यक कह्यो ॥३॥ पछै प्रभा
 तनी पणिलेहण थी मांजो । दिवसना कीधा अतीचार
 गुरु आगै आलोइवाळै । ते धाखां विना भलो रौते' आ
 लोवाइ नही (ते माटे) काउसग करै । अतीचार मनमे
 धारै । पठै लोगस कहै (जे माटे) एसामायिकादिक सुद्ध
 मार्ग इहां कठमादि त्रुवौस तीर्थ करे आपसेव्यो (अने)
 भव्यजीवाने उपदिश्यो । ते कारणे । बीजै आवश्यक चउ
 वीस भगवंतनी स्तवनाकरवी कही ॥४॥ पठै धर्ममांहे
 विनयना प्रधान पणा ऊंती । गुरुने वांदणादेई । अती
 चार आलोइवा । अने वांदणाळै । तेशरीर सुद्ध विना न
 देखौ (तेमाटे) प्रथम सुहपत्ती पणिलेही । सुद्धकरी । तिण
 बी कावा पणिलेहै । तीजै आवश्यक वांदणा देवी कही
 ॥५॥ पछै गुरु आगै । अतीचार आलोइ प्रायश्चित्त मार्ग
 (गुरु कहै पणिकमह) (जे माटे) कितना इक अतीचार
 तो आलोयां थी सुद्ध यथा । अने कितना इक न यथा (ते
 सुद्ध करवानो) सोथो आवश्यक पणिकमणो कह्यो ॥ ६ ॥
 तिहां उत्तमकार्य सर्व नवकार पूर्वक करवा (तेमाटे) प्रथम
 नवकार कहै । अने समभाव धारी पणिकमवुं (ते माटे)
 पठै सामायिक सूत्र कहै । तिवार पछै साधु यावक आप
 आपणा अतीचार पणिकमवा निमित्तो सूत्र भणै । पछै

समस्त अतीचार रूप भार निवर्त्तवे करी । हलको ऊवो
 थको । ऊभो थई सूत्र पूर्ण करै । इस अतीचार पत्रिक
 मी । श्रीगुरुने विषै पोतानो कीधो कोई अपराध खमाई
 वानिमित्त । वांदणा देवै । पठै गुरु प्रमुखने खमावै । काउ
 सग्न निमित्त । फेर वांदणा देवै । ए वांदणा गुरुने अप
 णो आधी न पणो जणाइवा निमित्त पिण जाणवौ । पठै
 (आवक) आयरिय उवज्जाए (इत्यादी तीन गाथा भणै)
 हिवै आलोयण पडिक्कमणा थौ शुद्ध न यया (जे) चारिखा
 दिक नामोटा अतीचार (ते) शुद्ध करवाने अर्थे पांचभो
 आवश्यक काउसग्न करै ॥३॥ तिहां । प्रथम सामायिका
 दि तीन सूत्र भणी चारिखाचार शुद्धि निमित्त दोइ
 लोगस चिंतवै । इहां तीजी वार वले सामायिक उच्चा
 रण कीधो (ते) सर्व धर्म क्रिया समता परिणामे कीधो
 सफल थाइ । ए अर्थे । पछै ज्ञान थौ समकित अधिको है
 (तेमाटे) दर्शनाचार शुद्धि निमित्त लोगस कहौ । सब
 लोए (इत्यादि सूत्र भणै) एक लोगससो काउसग्न करै ।
 पठै श्रुतज्ञानाचार शुद्धि निमित्त । पुंस्वरवर दोवड्डे (क
 ही) सुवस भगवड (इत्यादि भणी) बीबो एक लोगससो
 काउसग्न करै । इहां प्रथम काउसग्न दोस लोगससो
 कह्यो । ते ज्ञानादिक थौ चारिखनो अधिकपणो ठे (ते
 माटे) वली । ग्यानादिकनो अपेक्षाये चारिखने अतीचार
 घणा लागै । तेमिण कारण जाणवो । पठै ज्ञान । दर्शन ।
 चारिखाचार । निरतोचार पणै आचरवानो फलभूत
 श्रीसिद्ध भगवान तिनारी सुवना सिद्धाण बुडाब (इत्यादि

भणें) पठै हिवणां उपगारी श्रीमहावीर खामी ठै (ते
माटे) जो देवाण्विदेवो (इत्यादि तेज्जनी स्तवना करै)
पठै महातीर्थप्रणा जंती। उज्जितसेल सिंहरे (इत्यादि
तीर्थ स्तवना करै) इम चारिल दर्शन ज्ञानाचार सुद्ध
करी। समस्त धर्मक्रियानो श्रुतज्ञान कारण ठै (तेमाटे)
श्रुत समृद्धि निमित्तें। श्रुतदेवतानो काउसग्न करी स्तुति
कहै। पठै जेहना चोखमें रहियै। तेचोख देवतानो काउ
सग्न करी स्तुति कहै। (सिद्धांत माहे)। तीजै व्रते निरं
तर अवग्रह याचना, रूप भावना कहैकै। तेसांचवण नि
मित्तें एकाउसग्न संभवै है। 'ए दोण्ड' काउसग्न पूर्वधा
रीये आचर्या है। (आवश्यकवृत्ति चूर्णि भाष्यादिक मांहे)
श्रीहरिभद्र, सूरि प्रमुख मोटे आचार्ये कछाठै (तेमाटे)
प्रमाण है। पठै काउसग्न थी। केई अतीचार सुद्धनयया
ते सुद्धकरवाने। ठडो आवश्यक पंचक्वाण कछो। तेपूर्व
कीयो होय (ते) इहां तेहने ठामें मंगलीक निमित्तें। नव
कार एक कहै। मुहपत्ती (अने) कायापडिलेही। श्रीगुरुने
वांदणादेई। इहामो अणुसिद्धि कहै। तुम्हारी आचार्येम्हें
पद्रिकमणो कौधो। एहवुं गुरुने जणाविवा निमित्तें। ए
वांदणा कछा। इतरै पद्रिकमणो परिपूर्णययो ॥३॥ हिवै
निर्विघ्न पणें पंडिकमणो पूर्ण होवा थकी घणो हर्ष ऊपनो
तिणें करी। गुरु एक स्तुति कछां थका। सर्वसाधु आवक
वर्द्धमान खरे तीन स्तुति कहै (इहां गुरुना वचनने अंते)
शिष्यादिक। नमो खमासमणाय (एहवो गुरुने नमस्कार
कहै) ते गुरुवचननो बडमान रूपठै। पठै शक्रस्तव कहै।

आचार्यादिकनें वादै । सर्व धर्मक्रिया श्रीदेवगुरुभक्ति
पूर्वक सफल थायै (ते माटें) प्रतिक्रमणनिं प्रारंभे (तथा)
अंतें देवगुरुवंदन कछ्यो ॥३॥ हिनै प्रतिक्रमणां मांहे । वा
रित्वादिसुद्धि निमित्तें । पूर्वे काउसग्न कीधा छे । तोपिण
वली विशेष शुद्धि निमित्तें । च्यार लोगससो काउसग्न
करो । मंगलनिमित्तें लोगस कहे । जे साधु यावक आ
त्मायीं ऊवै । ते एहेतु समजौ । विधि पूर्वक उपबोग सुं
प्रतिक्रमणो करै । ते लीलाये भवसमुद्र तरै । सिद्धि संप
दा वरै ॥३॥ आवश्यक वृत्तादेः । प्रतिक्रमणहेतवः ।
निबद्धाभाषयोद्धत्य । साधुआद्यादि हेतवे ॥१॥ वाचकाच्च
तधर्माणां । शिष्येणात्महितेन । ज्ञमाकल्याणगणिना ।
वीकानेर पुरे सुदा ॥३॥ इति प्रतिक्रमणहेतवः संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीदेवचंदजौहृत स्नातपूजा लि० ॥

॥३॥ चौतौसे अतिशयजुड । बचनातिशयें जुस ॥ सो
परमेसर देषमवि । सिंहासणसंपत्त ॥१॥ (ढाल) सिंहासण
बैठा जगभाण । देखी भविजनगुणमणिखाण ॥ जेदीठैतुज
निम्नलजाण । लहीयै परम महोदय ठाण ॥१॥३॥ कुस
मांजलिमेलो आदि जिणन्दा । तोरा चरणकमल चोवीस
पूजोरे ॥ चोवीस सोभागी । चोवीस बैरागी ॥ चोवीस
जिनन्दा । कुसमांजलिमेलो आदिजिणन्दा ॥१॥(१) (गाथा)
जोनिअ गुण पज्जवरम्यो । तसु अनुभवएगत्त ॥ सुहृदुगल
आरोपतां । ज्योति सुरंगनिरत्त ॥१॥ (ढाल) जो निज

(१) इतना कही कुसमांजली चढाईजै, चरणो टीकीसीजै कुसमांजली ।

आतमगुण आणन्दि । पुमालिसंगे जेह अफन्दौ ॥ जे परमे
सर निज पदलीन । पूजो प्रथमो भव्य अदौन ॥३॥ कुसुमां
जलि मेलो शांति जिणन्दा । तोरा चरण कमल चो० ॥
कुसुमांजलि०॥२॥ २ ॥३॥ (गाथा) निम्बलनाण पयासकर ।
निम्बलगुणसम्पन्न ॥ निम्बल धम्पुवएसकर । सो परमप्याध
न ॥१॥ (ढाल) लोकालोक प्रकासकनाणी । भविजनतारण
जेहनीवाख्यो ॥ प्रमानन्दतणी नौसाणी । तसुभगते सुज
मति ठहराणी ॥ २ ॥३॥ कुसुमांजलि मेलोनेम जिनन्दा
तौरा च० ॥३॥ ॥ ३ ॥ (३) (गाथा) जे सिञ्जा सिञ्जन्ति
जे । सिञ्जिखन्ति अणन्त ॥ जसु आलम्बन ठवियमण ।
सो सेवो अरिहन्त ॥ १ ॥ (ढाल) शिव सुखकारण जेह वि
कालै । समपरिणामे जगतिनिहालै ॥ उत्तम साधन मार्ग
देखालै । इन्द्रादिक जसु चरण पखालै ॥ कुसुमांजलि मेलो
पास जिणन्दा ॥ ४ ॥ (४) ॥३॥ (गाथा) सम्पदिह्यो देशजय ।
साजसाजणीसार ॥ आचारज उवज्जायसुणि । जो निम्बल
आधार ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ चौबीह संघे जेमनधाख्यो । मोक्ष
तणो कारण निरवाख्यो ॥ विविह कुसुमवर जातगहेवो ।
तसु चरणे प्रणमंति ठवेवो ॥ २ ॥ कुसुमांजलि मेलो बीर

(२) कुसुमांजली चढाईजै । गोडां टीकी दीजै । हाथमे कुसुमां
जली लेई । नमोर्क सिद्धा० कही पढ़ै ।

(३) कुसु० । दोहू हाथे टीकी दीजै । मुखे पढ़ै । नमोर्क सि० ।

(४) कुसु० । मखके टीकी दीजै । पीछे चमर हाथमे लेकर
मुखसे ऐसा करै ।

(५) कुसु० चढ़ाईजै । दोनु० खाधि टीकी दीजै । सु० नमोऽर्पि०

माताजी अनोपम ॥ हरखी रायनें भासै । राजा अरथ
प्रकासै ॥ ५ ॥ जगपति जिनवर सुखकर । होखै पुत्र
मनोहर ॥ इंद्रादिकजसु नमसै । सकल मनोरथ फलसै
॥ ६ ॥ ॥ ॥ (वस्तु) ॥ ॥ पुन्य उदय २ ॥ जपना जिन
नाह । माता तब रयणी समे । देखि सुपन हरखंत
जागीअ । सुपन कहौ निज कंतनें ॥ सुपन अरथ सां
भलै सो भागीय । विभुवन तिलक महागुणी ॥ हो
खै पुत्र निधान । इंद्रादिक जसु पायनमी ॥ करसै सिद्धि
विधान ॥ ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ चंद्रा उल्लालनी ॥ ॥ सो
हमपति आसन कंपीयो । देखै अवधे मन आणंदी यो ॥
सुऊ आतम निरमल करण काज । भवजल तारण प्रगद्यो
जिहाज ॥ १ ॥ भव अद्रवी पारगसत्यवाह । केवलनाणा
ईअ गुण अगाह ॥ शिव साधन गुण अंकूर जेह । कारण
उलझो आसाहि मेह ॥ २ ॥ हरखै विकसे तब रोमराय ।
वलयादिकमां निज तनु नमाय ॥ सिंहासणी जद्यो
सुरिंद । प्रणमंतो जिन आनन्द कन्द ॥ ३ ॥ सगअद्रपय
समुहा आवितत्य । करौ अंजली प्रणमिअ मत्य सत्य ॥
सुख भाषे एक्षण आजसार । तियजोयपह दौठो उदार ॥ ४
२२ निरुणो सुरलोचदेव । विषयानल तापित तनु समेव ॥
तसु शान्तिकरण जलधरसमान । मिथ्याविष चूरण गर
जवान ॥ ५ ॥ ते देव जगत्तारण समत्य । प्रगद्यो तसु प्रणमी
ऊवोसनत्य ॥ इमजंपी सक्रसव करेवि । तब देवदेवी हरषे
सुखेवि ॥ ६ ॥ गावै तवरंभा गीतगान । सुरलोक ऊवोमज्जल
निधान ॥ नरखेवें आरजवंसठाम । जिनराज बधे सुर हर्ष

ધામ ॥ ૭ ॥ પિતા માતા ઘરે ઉત્તુવ અલેષ । જિન શાસન
મજ્જલ અતિવિશેષ ॥ સુરપતિ દેવાદિક હરખસક્ક । સંયમ
અરણો જનનેં ઉમગ્ગ ॥ ૮ ॥ સુમવેલા લગનેં તોર્યનાથ ।
જનમ્યા દંદ્રાદિક હર્ષ સાથ ॥ સુખપામ્યાં ત્રિભુવન સર્વજી
વ ॥ બવાઈ બવાઈ થઈ અતોવ ॥ ૯ ॥ (દાલ) શાન્તિને
કારણે દંદ્ર કલસામરે ॥ એદેશી ॥ ॥ ઐતીરચપતિનો
કલસમજ્જન । ગાદ્યે સુખકાર ॥ નરખેલ મંદ્રણ દુહ વિહં
દ્રણ । મવિક મન આધાર ॥ તિહાં રાવરાણા હરણ ઉત્તુવ ।
થયો જગજયકાર ॥ દિશિકુમરિ અવધિ વિશેષ જાણી ।
લછો હરણ અપાર ॥ ૧ ॥ નિશ્ચ અમર અમરો સક્કુમ
રી । ગાવતી ગુણઠન્દ ॥ જિન જનનો પાસે અથ પજ્જતો ।
ગહકતો આણન્દ ॥ હેમાયતે જિનરાજ જાયો । સન્નિવધા
યોરમ્મ ॥ અમજમ્મ નિમ્મલ કરણકારણ । કરિસ સૂર્ય અ
કમ્મ ॥ ૨ ॥ તિહાં ભૂમિ સોધન દોષ દરપણ । વાયવી ઝળ
ધાર ॥ તિહાં કરિયકદલો ગેહ જિનવર । જનનો મજ્જન
કાર ॥ વરરાસની જિનપાણિ બાંધો । દૈયે દમ આસીસ ॥
યુગકોદ્ગોદ્ગોત્રી ચિ રંજોધો । ધર્મદાયક દૈસ ॥ ૩ ॥

॥ ॥ (દાલ) ઉલ્લાલાની ॥ ॥ જિનરયણીજી દશદિશ
ઉજ્જલતાઘરે ॥ સુમલગનેં જી જ્યોતિસ ચક્કતે સંચરે । જિ
નજનમ્માજી જિણ અવસર માતા ઘરે ॥ તિણ અવસરજી દં

(૬) એસાં કહકે । સર્વસાતિયા તોન પ્રદક્ષણા દેકર । ચૈત્યવંદ
ણ । સભે તિવિહેણ વંદામિ । પર્યન્ત કરે । પીકે રોલી (તથા) કેસર
કાંઝીમણે હાથમે સાયિયા કરે । ધૂપ દેવે । મગવંતકુ તોન વેર
નમસ્કાર કર । કલેસ હાથમે લે । મુલ્યે એસાં મહે । ઐતીરચ

द्रासण पणथरहरे ॥ (बूटक) थरहरै आसन इंद्रचित्तैकौन
अवसर एबन्यो । जिन जन्म उच्छव काल जाणी अतिहि
आणंद ऊपनो ॥ निज सिद्धसंपति हेतु जिनवर जाणि
भगतें ऊमह्यो । विकसंत वदन प्रमोद वधतै देवनाथक
गहगह्यो ॥ १ ॥ (ढाल) तब सुरपति जो घंटानाद करावए ॥
सुरलोके जो घोषणा एहदिरावए । नरक्षेत्रे जो जिन
वरजनम ऊवो अठै । तसुभगतें जो सुरपति मंदिरगिर
गठै ॥ (बूटक) गठै मंदिर शिषर ऊपर भवन जीवन
जिनतणो । जिनजनम उच्छव करण कारण आवज्यो सवि
सुरगणो । तुम सुद्ध समकितथासै निरमल देव देवी नि
हालतां । आपणा पातिक सर्वजासै नाथ चरणप्रपालतां
॥ ३ ॥ (ढाल) दूम सांभल जो सुरवर कोटि बह्मिली ।
जिनवंदण जो मंदिर गिरिसाहमी चली । सोहमपतिजो
जिनजननी घरि आविया । जिनमाताजो वांदी खामिबधा
विया । (बूटक) वधाविया जिनवर हर्ष बडलै धन्यऊं दूत
पुन्यए । चैलोक्य नायक देवदौठो सुऊ समो कुण अन्यए ।
हे जगत जननी पुव तुम्हचो मेरु मज्जन वरकरी । उच्छं
गुम्हचै बलिय थापिस आतमा पुन्ये भरै ॥ ४ ॥ (ढाल)
सुरनायकजो जिन निज करकमलें ठया ॥ पांच रूपै जो
अतिसय सहिमायेस्तया । नाटक विधिजो तबवत्तीस आ
गल वहै । सुरकोटो जो जिनदरसणनें ऊमहै (बूटक) सुर
कोटि कोटो नाचतो बलिनाथ सचिगुणगावतो । अपठरा
कोटो हायजोटी हाव भाव दिखावतो । जय जयो तू जिन
राजजगगुरु एम दै आसीसए । अम्हवाण सरण आधार

जीवन एक तू जगदीसण ॥ ४ ॥ (ढाल) सुरगिरवर जी ।
 पांशुक वनमें चिह्न दिसै । गिरसिल परजी सिंहासन
 सासय वसै । तिहां आणीजौ शक्र जिनखोले ग्रह्या । चौस
 डै जी तिहां सुरपति आवी रह्या ॥ (चूटक) आविया सुर
 पति सर्वभगतै कलश खेणिवणावण । सिद्धार्थ प्रमुहा तीर्थ
 उषधि सर्ववस्तु अणावण । अच्युत पति तिहां ऊकमकौनो
 देवकोप्ताकोप्तिने । जिनमळनारय नीरखवावो सवे सुरक
 रजोप्तिने ॥ ५ ॥ (ढाल) शांतिने कारणे इन्द्रकलशभरै । ए
 देशो ॥ ॥ आत्म साधन रसौ देवकोप्तीहसो । उन्नसो
 ने धसी खोरसागर दिसौ ॥ प्रौढदह आदि दह गंगप्रस
 हानई । तीर्थजल अमल लेवा भणी ते गई ॥ १ ॥ जातिअस
 कलश करि सहस्र अष्टोत्तरा । ठेल चामरय सिंहासणे सुभ
 तरा । उपगरण पुष्पचंगेरि प्रमुहासवे । आगमें भासिया
 तेम आणौठवे ॥ २ ॥ तीर्थजल भरियकर कलस करि देवता
 गावता भावता धर्म उन्नतिरता । तिरिय नर अमरने
 हर्ष उपजावता । धन्य अह सगति सुखि भगति इम भा
 वता ॥ ३ ॥ समकित बीज निष आत्म आरोपिता । कलश
 पाणीमसे भक्तिजल सौचता । मेरुसिंहरो वरै सर्वआव्या
 वही । शक्रउद्यंग जिनदेखि मनगहगहौ ॥ ४ ॥ ॥ (गाथा)
 ॥ ॥ हंहो देवा अणाई । कालो अदिष्टपुत्रो । तिलोय ता
 रणो । तिलोयबंधु । मिश्रतमोह विहंसणो । आणादतिना
 विणासणो । देवाहि देवोदिष्टो । दिष्टो हि अयकामेहिं ॥ १
 ॥ ॥ (ढाल तेहिज) ॥ ॥ एमप्रभणति वणभुवण जोई सरा ।
 देव वेमाणिया भक्तिधन्यायरा ॥ केविकप्यद्विया केवि भिन्ना

गुणा । केद्वर रमण वयणेण अइ उल्लागा ॥ ५ ॥ (वस्तु) ॥ तस्य
अच्चय इन्द्र आदेश । करजोति सवदेवगण । लेयकलस
आदेसपामीय । अदभुतरूप सहपजुय । कवण एह पुष्टंतसा
मीय ॥ इन्द्र कहै जगतारणो । पारग अमहपरमेस । नाय
कदायक धम्मनिहि । करीयै तसु अभिसेस ॥ १ ॥ (ढाल
हमी) ॥ ॥ ॥ तोर्थकमलवर उदक मरीने । पुष्कर सागर
आवै (एहनी) ॥ ॥ पूर्णकलस सुचि उदकनी धारा ।
जिनवर अंगै न्हावै । आतम निरमल भाव करतै वधते
शुभपरिणामे । अच्युतादिक सुरपति मज्जन लोकपाल
लोकांत । सामानिक इन्द्राणी पसुहा दूम अभिषेक
करंत ॥ १ ॥ पु० (गाहा) ॥ ॥ तव ईसान सुरिंदो । सक
पभणइ करिज सुपसावो । तुम्ह अंके मह नाहो । खिण
मित्त अमह अण्णेह ॥ १ ॥ तासकिंदो पभणइ । साहमीय
वज्जलंमि वज्जलाहो । आणाइवतणं गिएहह होउकय
त्याभो ॥ २ ॥ । (१) (ढाल) ॥ ॥ सोहमसुरपति दृषभ
रूप करि । झवण करै प्रभु अंगै । करिय विलेपण पुष्प
मालठवि । वर आभरण अभंग । सो० ॥ १ ॥ तव सुरवरवज्ज
जय रव करै । निश्वै धरि आणंद । मोक्ष मारग सारथ
पति पाभ्यो । भाजिसु हिव भवफंद ॥ सो० ॥ २ ॥ कोटि
बत्तौस सोवन उवारौ । वाजंतै वरनाद । सुरपति सिंध
अमर ओप्रभने । जननीने सुप्रसाद ॥ ३ सो० ॥ आणीथापै
एस पयंपै । अमहनिसतरिया आज । पुव तुम्हारो धणीय

(१) इतला कधि सब स्नातिया प्रभूजी उपरि कलय दालै खुबसे
ऐसा कहै । सोहमसुरपति० ।

अम्हारो । तारण तरण जिहाज ॥४ सो॥ मात जतनकरि
 राखि ज्यो एहने । तुम्ह सुत अम्ह आधार । सुरपति भग
 ति सहितनंदीसर । करै जिन भगति उदार ॥५ सो॥ निय
 निय कप्प गया सवि निज्जर । कहितां प्रभुगुणसार । दिक्षा
 केवल ज्ञान कल्याणक । इच्छा चित्तमज्जार ॥६ सो॥ खर
 तर गठ जिन आणारंगी । राज सागर उवगजाय । ज्ञान
 धरम दीप चंद सुपाठक । सुगुरुतणै सुपसाय ॥७ सो॥ ७॥
 देवचंद निज भगते गायो । जनम महोत्सव ठंद । बोधवीज
 अंकूरो उलटस्यो । संघ सकल आणंद ॥८ सो॥ ८॥ (ढाल)
 ॥९॥ इम पूजा भगतै करो । आतमहितकाज । तजिय वि
 भाव निजभावना । रमतां सिवराज ॥१० सो॥ १०॥ काल अनंत
 जे ज्वा । होस्यै जेह जिणंद । संपैसैमंधर प्रभु । केवलनाण
 दिणंद ॥१० १॥ १॥ जनम महोत्सव इणि परै । आवक रुचि
 वंत । विरचै जिन प्रतिमातणो । अनुमोदनखंत ॥१० २॥
 देवचंद जिनपूजना । करतां भवपार । जिनप्रतिमा जिनसा
 रिखो । कही सूख मज्जार ॥१० ३॥ इति स्नातपूजा
 विधि संपूर्णम् ॥९॥ ॥९॥ ॥९॥

॥ अथ अष्टप्रकारो पूजा लिख्यते (१) ॥

॥९॥ (दुहा) गंगामागध क्षीरनिधि । उषधमिश्रितसार ।
 कुंसुमे वासित शुचिजले । करो जिन स्नात उदार
 ॥१॥ (ढाल) मणिकनकादिक अष्टविध करि भरी कलस
 रुफार । शुभ रुचि जे जिनवर नमे तसुनही दुरित

(१) जल हाथमे लेके खड़ा रहै ।

प्रचार ॥ मेरुशिखर जिम सुरवर जिनवर न्हवणअमान ।
करता वरता निज गुण समकित वृद्धि निधान ॥१॥ (ठंढ)
हर्ष भरी अमराष्टंदावै । सुख करि एम आसीस
भावै । जिहां लगै सुरगिरि जंबुदीवो । अमतरा नाथ
जीवातु जीवो ॥ ३ ॥ ॥ (श्लोकः) ॥ ॥ विमल केवल
भासन भास्करं । जगति जंतुमहोदय कारणं । जिनवरं
बहुमान जलोषतः । शुचिमनाः सुप्रयामि विशुद्धये
॥ १ ॥ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनंतानंत ज्ञान श
क्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय । श्रीमज्जिनेन्द्राय
जलंयजामहे स्वाहा ॥१॥ इति जलपूजा ॥ ॥

॥ ॥ अथ चंदनपूजा(२) ॥ ॥

॥ (दुहा) बावना चंदन कुमकुमा । मृगमदने वन
सार ॥ जिनतनु लेपै तसुटलै । मोहसंतापविकार ॥१॥
(ढाल) सकलसंताप निवारण तारण सज्ज भविचित्त ।
परम अनोहा अरिहा तनु चरचो भवि नित्त ॥ निज
रूपै उपयोगी धारी जिनगुणगेह । भावचंदन सुह भाव
थी टालै दुरित अठेह ॥ २ ॥ (चालि) जिन तनु चरच
तां सकल नाकी । कहै कुग्रह उष्णता आज थाकी ॥
सफल अनिषेधता आज ह्माकी । भव्यता अह्न तणी
आज पाकी ॥ ३ ॥ (श्लोकः) सकलमोह तिमश्र विनासनं ।
परमशीतल भावयुतं जिनं ॥ विनय कुंकुम चंदनदर्शनैः ।
सहजतत्त्वविकाशकतेर्चये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने । अन
न्तानन्तज्ञानशक्तये ॥ जन्मजरा मृत्यु निवारणाय । श्रीम

(२) चंदन हाथमे लेके खडा रहै ।

ज्जिनेन्द्राय चंदनं । यजामहे स्वाहा ॥३॥ इति चंदनपूजा ।

॥३॥ अथ तृतीय पुष्पपूजा (३) ॥३॥

॥३॥ (डुहा) शतपत्नी वरमोगरा । चंपक जाइ गुला
ब ॥ केतकी दमणो बौलसिरि । पूजो जिन भरि ठाब ॥१॥
(ढाल) अमल अखंडित विकसित सुभसुमनी धनजाति ।
लाखीणो टोदरठवो अंगौरचो बडभांति ॥ गुणकुसुमें नि
ज आतम मंडित करवाभव्य ॥ गुणरागी जगत्यागी पुष्प
चढावो नव्य ॥ २ ॥ (चालि) जगधणी पूजतां विविधफूल ।
सुरवरा ते गिणें जण अमूलै ॥ खंतिधरमानवा जिनपद
पूजै । तसुतणा पाप संताप धूजे ॥ ३ ॥ (श्लोकः) विकचनि
र्मल शुद्धमनोरमै । विशदचेतन भाव समुद्भवैः ॥ सुपरि
णाम प्रसूनधनैर्नवैः । परमतत्वमयं हि यजाम्यहं ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं परमात्मने० । पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ ॥
इति पुष्पपूजा ॥ ३ ॥

॥३॥ अथ धूपपूजा (४) ॥३॥

॥३॥ (डुहा) कृष्णागर रुद्रगदतगर । अंबर तुरक
लोबान । मेल सुगंध धनसार धन । करो जिननें धूपदान ॥
१ ॥ (ढाल) धूपवटी जिम महमहै तिम दहै पातिकट
न्द् ॥ अरति अनादिनी जावै पावै मन आणंद ॥ जे जिन
पूजै धूपें भव कूपें फिर तेह ॥ नावै पावै ध्रुवधर आवै
सुख अठेह ॥ २ ॥ (चालि) जिनधरे वासतां धूपपूरै । नि

(३) पुष्प हाथमें लेकै खडा रहै ।

(४) धूप हाथमें लेकै खडा रहै ।

द्वत्तदुर्गन्धला जाइ दूरै ॥ धूप जिम सहज ऊर्ध्वगत स्वभा
वै । कारिका उच्चगति भावपावै ॥ ३ ॥ (श्लोकः) सकलक-
र्ममहें धनदाहनं । विमल संवर भाव सुधूपनं ॥ असुभपु
द्गल संगविवर्जितं । जिनपतेः पुरतोस्तु सुहर्षितः ॥ १ ॥
हु ह्रीं परमात्मने० । धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ ॥
इति धूप पूजा ॥ ॥

॥ ॥ अथ दीपपूजा (५) ॥ ॥

॥ ॥ (दुहा) मणिमय रजत ताम्रना । पावकरी दृढ
पूर । वसौ सूख कसुं वनी । करो प्रदीप सनूर ॥ १ ॥ (ढाल)
मंगलदीप वधावो गावो जिन गुणगीत ॥ दीपतणी जिम
आलिका मालिका मंगलनौत ॥ दीपतणी सुभ ज्योती द्यो
तो जिनसुखचंद ॥ निरखी हरखो भविजन जिम लहो
पूर्णानंद ॥ २ ॥ (चालि) जिनगृहे दीपमाला प्रकासै । ते
हथो तिमर अज्ञान नासै ॥ निजघटै ज्ञानज्योति विकासै ।
तेहथी जगतणा भावभासै ॥ ३ ॥ (श्लोकः) भविकनिर्मल
बोधविकासकं । जिनगृहे सुभदीपक दीपनं ॥ सुगुण राग
विसृद्धसमन्वितं । दधनुभावविकासकतेर्जना ॥ १ ॥ हु ह्रीं
परमात्मने० । दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥ ॥ इति दीप
पूजा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथाक्षत पूजा (६) ॥ ॥

॥ ॥ (दुहा) अक्षतर पूरसुं । ने जिन आगे सार ।

(५) दीप हाथमें लेके खड़ा रहै ।

(६) अक्षत हाथमें लेके खड़ा रहै ।

स्वस्तिकरचतां विस्तारै । निजगुण भरविस्तार ॥१॥ (ढाल)
 उज्जल अमल अलङ्घित मंजित अक्षतचंग ॥ पुञ्जवय क
 रो स्वस्तिक आस्तिक भावै रंग ॥ निज सत्ताने सन्मुख ।
 उनमुख भावे जेह ॥ ज्ञानादिक गुणठावै भावे स्वस्ति
 कह ॥ २ ॥ (चालि) स्वस्तिक पूरतां जिनप्र आगै । स्व
 स्ति श्रीभद्र कल्याण जागै ॥ जन्मजरा मरणादि असुभ
 भागै । नियत सिव सर्म रहै तासु आगै ॥ ३ ॥ (श्लोकः)
 सकल मंगलकलिल निकेतनं । परम मंगल भावमयं जिनं ॥
 अयति भव्यजना इति दर्शयन् । दधतु नाथ पुरोक्षत स्व
 स्तिकं ॥ १ ॥ उद्धौ परमात्मने० । अक्षतं यनामहे स्वाहा
 ॥३॥ इति अक्षतपूजा ॥३॥

॥३॥ अथ नैवेद्यपूजा (७) ॥३॥

॥३॥ (ढुहा) सरस सुची पकवान वड्ड । शालिदालिवृत
 पूर ॥ धरो नैवेद्य जिन आगलै । क्षुधादोष तसु दूर ॥१॥
 (ढाल) लपनश्री वरधेवर मधुतर मोतीचूर ॥ सींहकेस
 रियां सेविया दालिया मोदक पूर ॥ साकर द्राख सिंघो
 दा भक्तिय्यंजन धतसदा ॥ करो नैवेद्य जिन आगलै ।
 जिस मिलै सुख अनवदा ॥ २ ॥ (चालि) ढोवतां भोज्य
 पर भाव त्यागे । भविजना निजगुण भोज्यमांगे ॥ अन्न
 भणी अरुहतणो सरूप भोज्य । आपज्यो तातजौ जगत
 पूज्य ॥ ३ ॥ (श्लोकः) सकल पुङ्गलसंग विवर्जनं । सहजचे
 तनभाव विलासकं ॥ सरसभोजन नव्य निवेदनात् । परम

(७) नैवेद्य मिठाई पकवान हाथे लेके खड़ा रहै ।

निर्वृतिभावमहं स्पृहे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० । नैवेद्यं
यं नामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ इति नैवेद्यपूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ फलपूजा (८) ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (दुहा) पक्व बीजोत्प्लवजिन करै । ठवतां सिवपद
देह । सरस मधुर रस फलगिणै । इह जिन भेट करेइ ॥
१ ॥ (ढाल) श्रीफल कदली सुरंग नारंगी आंवा सार ॥
अंजीर वंजीर दाहिम करणा पटवौज सफार ॥ मधुर
सुखादिक उत्तम लोक आणंदित जेह । वरण गंधादिक
रमणीक वज्रफल होवै तेह ॥ २ ॥ (चालि) फलभर पूजतां
जगतस्वामी । मनुजगति बेलहै सफल प्रामी । सकलमनु
ध्येय गतिभेद रंगै । ध्यावतां फलसमाप्ति प्रसंगै ॥ ३ ॥
(श्लोक) कटुक कर्मविपाक विनासनं । सरस पक्वफल व्रज
ढोकनं । वहति मोक्षफलस्य प्रभोपुरः । कुरुत सिद्धफलाय
महाजना ॥ १ ॥ ॐ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० फलं यजामहे
स्वाहा ॥ ॐ ॥ इति फलपूजा ॥ ८ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ अर्घ्यपूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (दुहा) इम अर्घ्यविधि जिनपूजना । विरचै जेधिर
चित्त । मानवभव सफल करै । वाघै समकित वित्त ॥ १ ॥
(ढाल) अगणित गुणमणि आगर नागर वंदित पाय ।
श्रुतधारी उपगारी यीज्ञान भागर उवज्भाय । ताम्र
चरणकज सेवक मधुकर प्रय लयलीन । श्रीजिन पूजा गार्ह
॥ श्रीफल होमारी प्रसुप्त राय लेकै खाहा रहे ।

जिनवाणी रसपौन ॥ २ ॥ (चालि) संवत गुणयुग अचल
इंदु । हर्षभरिगादयो श्रीजिनेंदु । तामुफल मुकृतपी सकल
प्राणी । लहै ज्ञान उद्योत धन शिवनिसानी ॥ ३ ॥ (श्लोक)
इति जिनवरदं भक्तितः पूजयन्ति । सकलगुणनिधानं
देवचंद्र स्तुवंति । प्रतिदिवसमनंतं तत्त्वमुद्गासयन्ति । परम
सहज रूपं मोक्ष सौख्यं अयन्ति ॥१॥ ॐ ह्रीं परमांश्वर्यं
ययामहे स्वाहा । च्यारे खूंखे धारदीजै ॥३॥ इति अर्घ्यपूजा ।

॥ ॐ ॥ अथ वस्त्रपूजा ॥ ॐ ॥

॥३॥ वस्त्रलेखै स्वप्ना रहै ॥३॥ शक्रो यथा जिनपतेः
सुरशैलचूला । सिंहासनो परिमितसुपनावसाने । दध्यक्षतैः
कुसुमचंदनगंधधूपैः । कृतार्चनं विदधाति सुवस्त्रपूजां
॥१॥ तद्वत् श्रावकवर्ग एष विधिना लंकारवस्त्रादिकं । पूजा
तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्यातिभक्त्यादृतः । नीरागस्य
निरंजनस्य विजिता राते स्त्रिलोकीपतेः स्वस्यान्यस्य जनस्य
निर्वृतिं कृते क्लेशक्षयाकांक्षया ॥ ॐ ॥ ॐ ह्रीं वस्त्रं ॥
॥३॥ इति वस्त्रपूजाः ॥३॥ इति अष्टप्रकारपूजा ॥३॥

॥३॥ अथ निमक उतारणपूजा ॥३॥

॥३॥ अहपद्मि भग्नापसरं । पयाहिणं सुणियवयं करि
ऊणं । पडइसलूणत्तणलज्जियंच । लूणं अवहरंतौ ॥१॥ पिकखे
विणुं सुहजिणवरह । दोहर नयणसलूणं । न्हावइगुत्तमसु
हभरिय । जलणपडइसइ लूणं ॥२॥ लूण उतारिह जिणवरह ।
तिन्निपयाहिणि देव । तडतल शब्द करंतिये । विज्जाविज्जण

लेण ॥ ३ ॥ जंजेण विज्जवथुई । जलेण तं तहइ अत्थसइस्स
जिण्णवा मत्तरेणवि । फुट्ठइ लूणं तडतप्पस्स ॥ ४ ॥ ॥ ए
गाथा कही लूण अग्निशरण करै ॥ ५ ॥ पौठै फेर लूण
पाणौ लेई । सुखे ए गाथा कहै ॥ ६ ॥ सव्वविमुणवई जलवि
जल । तंतह भमप्पइ पास । अहविकयंतस्स निम्मलत्तं । नि
ग्गुणवुद्धिपयास ॥ ७ ॥ जलण अणे विणुजलण हि पास । भरवि
कयज्जल भाव हि पास । तिन्निपयाहिणि दिन्निवयास । जिम
जियत्तुई भव दुहपास ॥ ८ ॥ जलनिम्मल कर कमलेहि
लेविणुं । सुरवइ भावहि सुणिवई सेवणुं । पभणइ जिण
वर तुहपइसरणं । भयतुइ लब्धइ सिद्धिगमणं ॥ ९ ॥ ॥
ए कही लूण उतारी जलसरण कीजै ॥ १० ॥ इति निमक
उतारण पूजा ॥ ॥

॥ ॥ अथ पुष्पमाला पहरावण पूजा ॥ ॥

॥ ॥ उन्नय पयय भत्तस्स । नियठाणे संठियं कुलंतस्स
जिण पासै भमिय जणस्स । पित्तुत्तह ऊय वहे पप्पणं ॥ १ ॥
सव्वो जिणप्पभावो । सरिसा सरिसेसु जेण रत्तंती । सव्वन्
ण अपासे । जप्पस्स भमणं नसंकमणं ॥ २ ॥ अच्चंत दुःकरं पिह
ऊयवह निवडेण जप्पेण कयं । आणासव्वन्नणं । न कयासुक
वत्थमूलमिणं ॥ ३ ॥ ॥ एकही माला चढाईजै ॥ ॥

॥ ॥ अथ कूटा फूल पुजा ॥ ॥

॥ ॥ उवणेव मंगलेवो । जिणाय सुह लालि संव
लिया । तित्थपवत्तण समई । तियसे विसुक्का कुसुम बुद्धी
॥ १ ॥ एकही फूल उठालौजै प्रभु आगै ॥ ॥

॥ अथ सतर भेद पूजानो विधिलि० ॥

॥ॐ॥ प्रथम स्नात करै पीछै । अष्ट प्रकारी पूजा करै । उज्ज्वल रूपे प्रसुखनी रके बीमे । कुंकुमं (तथा) केसर प्रसुखनो साधियो करै । पीछै सुंदर कलश केसर प्रसुख मिश्रित शुद्धजल भरी । रूपियो थापनारो कलशमे रखी । कलश रकेबीमे धरै । पीछै स्नातिया सुख कोसउत्तरासण करी । तीन नवकार गुणें । तीन नमस्कार करी । हाथें धूपदेई । रकेवी हाथे धरै । मनथिर राखै । छींक वज्रें । स्नातिया प्रभुजी सन्मुख खडा रहै । कलश अडिग राखै । सुख दूम पडै । भावभलै भगवंतनी (इत्यादि) ।

॥ॐ॥ अथ सतर भेद पूजा लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (द्रुहा) भावभलै भगवंतनी । पूजा सतर प्रकार परसिध कौधौ द्रोपदी । अंग छहै अधिकार ॥ १ ॥ ॥ (राग सरपदी) ॥ॐ॥ (द्रुहा) ज्योतिस कलजगजागती ॥ (हारे अइ०) ॥ सरसति समरिसुभिंद । सतर सुविधि पूजा तणी । प्रभणिसुपरमानन्द ॥ १ ॥ (गाहा) न्हवण (१) विलेवण (२) वल्ययुगं (३) । गंधारुहणं च (४) पुष्परोहणं (५) । माला रोहण (६) वन्यं (७) । चन्द्र (८) पद्मागाय (९) आभरण (१०) ॥ २ ॥ मालकलासुयवसुवरं (११) । पुष्पपंगरं च (१२) अङ्गमंगलयं (१३) । धूव उखेवो (१४) गीयं (१५) । नङ्ग (१६) वज्जं (१७) तहामणियं ॥ ३ ॥ सतर सुविधि पूजा पवरं । ज्ञाता अंगमजार । द्रुपदसुता द्रोपदि परै । करियै विधि विस्तार ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा (राग देसाख) ॥

॥ॐ॥ पूर्वमुख सावनं करि दसन पावनं । अहत भोती

धरी उचितमानी । (अ० १०) ॥ विहृत सुखकोसकी खीर
गंधोदकै । सुभृत मणिकलस करि विवध वांनी ॥ (अ० ११) ॥
नमवि जिनपुंगवं लोमहस्तेनवं । मार्जनं करिअ वावारि
वारी ॥ (अ० १२) ॥ भणिय कुशमंजली कलस विधि मनरली । न
वति जिनद्रुं जिम तिम अगारी । (अ० १३) ॥ (दूहा)
॥ ॥ परमानंद प्रीयूपरस । न्हवण सुगति सोपान । धरम
रूप तस सौचवा । जलधर धारसमान ॥ १ ॥ पहली पूजा
साचवै । आवकशुभ परिणाम । शुचि पखाल तनुजिन
तणै । करइ सुखत हित काम ॥ २ ॥ ॥ (राग सारंग)
॥ ॥ पूजा सतर प्रकारौ । सुख जैनकी । (पू०) । परमा
नन्द तिण ठल्योरी सुधारस । तपतवज्रौय मेरै तनकी ॥
(पू०) ॥ १॥ प्रभु कुं विलोकिनमि जतन प्रमारजित । करत
पखाल सुचि धार विनकी । (पू०) न्हवणप्रथम निज टुजान
पुलावत । पंक कुंवरपजिम धन की । (पू०) ॥ २ ॥ तरणि
तरणि भवसिंधू तिरणकी । संजरी संपद फल बरधन की ।
शिवपुर पंथ दिखावण दोपो । धूमरी आपदवेल भरदन
की (पू०) ॥ ३॥ सकल कुशल रंग मिल्योरी सुमति वंग ।
जागोसुदिसा सुम मेरे दिनकी । कहै साधु कीरति सारंग
भरकरता । आसफली मेरे मनको (पू०) ४ ॥ ॥ इति
प्रथम न्हवणपूजा ॥ १ ॥ एक ही पंचासत सुन्हवण
कीजै (तथा) मावै पांवकै अंगूठै जलधार दीजै ॥ ॥

॥ ॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥ ॥

॥ ॥ सुन्दर अङ्ग लूहणें करी । विन प्रमानी । कि

सर चंदन ऋगमद अगरोदिकसे । कचोली भरी । लेकर
 खटार है । सुखे ॥ ॥ (रागरामगिरी) ॥ ॥ गाव लू है
 जिन मनरङ्गसुं रे । (देवा) सखरसुधूपित वाससुं ॥ वाससुं
 (हारे देवा) वां० गंध कसायसु भेलियै ॥ १॥ नन्दन चंदन
 चंदमेलियै । रे (देवा) ॥ नं० ॥ मांहे ऋगमद कुं कुम भेलियै ॥
 करलीयै (हारे देवा) क० । रयण पिंगाणि कचोलीयै ॥ २॥
 पग जानु कर खंघै सिरै । रे (देवा) भालकंठ उर उदर
 न्तरै । दुखहरै (हारे देवा) सुख करै । तिलक नवेअंग कौजी
 यै ॥ ३॥ दूजोपूजा अनुसरै ॥ आवक दू० ॥ हरि विरचै जिम
 सुरगिरै । तिमकरै (हारे देवा) ति० । जिणपर जनमन रं
 जीवै ॥ गा० ४ । विधि ॥ ॥ राग ललितमें । दुहा ॥ ॥

॥ ॥ करऊ विलेपन सुखसदन । औजिनचन्द शरीर ।
 तिलक नवे अङ्गपूजतां । लहै भवोदधि तीर ॥ १॥ मिटै ताप
 तसु देहको । परम शशिरता संग । चित्तखेद सब उप
 समे । सुखमें समरसौरंग ॥ २॥ ॥ राग बेलाउल ॥ ॥

॥ ॥ विलेपन कौजै जिनवर अंगै । जिनवर अंग सुगंधै
 ॥ वि० ॥ कुंकुम चन्दन ऋगमद यत्तकर्हम । अगर मि
 थित मनरंगै ॥ वि० ॥ क्रम जानु कर खंघै शिर भाल कंठ ।
 उर उदरन्तर संगै । विलुपति अधमेरो करत विलेपन ।
 तपत बुझति जिम अंगै ॥ वि० २ ॥ नव अंग नव२ तिलक
 करतहौ । मिलत नवेनिध चंगइ । कहै साधु तन सुचि
 करसु ललित पूजा । जै सें गंगतरंगै ॥ वि० ३ ॥ ॥ इति
 द्वितीय विलेपन पूजा ॥ २ ॥ ॥ एकही विलेपन कौजै । नव
 अंग पूजियै ॥ ॥

॥॥ अथ तृतीय वस्त्रयुगल पूजा ॥॥

॥ ॥ अत्यन्त कोमल सुगंध, अमोलक वस्त्रयुगल पर । केसरनो साधियो करी । प्रभुजी आगै खाना रहै । सुखें इम पटै ॥ ॥ (दुहा) ॥॥ वसनयुगल उज्जल विमल । आरोपै जिन अंग । लाभ ज्ञान दर्शन लहै । पूजा तृतीय प्रसंग ॥ १ ॥ ॥ (रागगौड़ी) ॥॥ कमल कोमल घन चन्दनचरचित । सुगंध गंधें अधिवासिया ए ॥ (हारै) अ० ॥ कनक मंथित हिय लालपल्लवशुचि । वसनयुग कंति अधिवासिया ए ॥ (हारै) अ० ॥ जिनपदतम अंगै सुविधि शक्यो यथा । करिय पहिरावणी ढोइयै ए ॥ (हारै) अ० ॥ पापलूहण अंगलूहणो देवने । वस्त्रयुग पुंज मल धोइयै ए ॥ अ० २ इति ॥ ॥

॥॥ अथ विधि: (राग वैराड़ी) ॥॥

॥॥ देव दुष्ययुग पूजा वन्योहै जगतगुरु । (हे हांए) आठो वन्योहै जगतगुरु । देव दुष्यहर अब इतनो मांगुं । तं होज सबहि हितु तं हीहै सुगतदाता । तिण नमि२ प्रभु जीके चरणें लाभ ॥ दे० १ ॥ कहै साधु तौजीपूजा केवल दंसण नाण । देवदुष्य मिसदेऊ उत्तम वागुं । अवरण अंजलि पुट सुगुण अमृतपौतां । सवराज दुख संसयधुरम भागुं ॥ दे० २ ॥ ॥ इति तृतीय वस्त्रयुगल पूजा ॥॥ एकही प्रभुजी आगल वस्त्र युगल चढावै ॥ ॥

॥॥ अथ चतुर्थी सुगंधचूर्ण पूजा ॥॥

॥ ॥ अगर चन्दन कपूर कुंकुम कस्तूरीका चूर्ण

करो । कचोली मरी आगै जभा रहै । मुखे इम पढे ॥ ॥
 (गोत्री रागमे । दूहो) ॥ ॥ पूज चतुर्थी इण परै । सु
 मति वधारै वास । कुमति कुगति दूरै हरै । दहैमोहदल
 पास ॥ १ ॥ ॥ राग सारंग ॥ ॥ (हांहोरे देवा) । वाक्नचं
 दन वस कुमकुमा । चूरण विधि विरचै वासूए । (हांहो रे
 देवा) कुसुम चूरण चंदन मृगमदा । कंकोल तणो अधिवा
 सूए ॥ (हां०) २ ॥ वास दसोदिस वासते । पूजै जिनअंग
 उवंगूए ॥ (हां०) ॥ लाठि भवन अधिवासीयो । अनुगामिक
 सरम अमंगूए ॥ २ ॥ ॥ इति ॥ ॥

॥ ॥ अथ विधिः (राग पूर्वी गौत्री) ॥ ॥

॥ ॥ मेरै प्रभुजीकी पूजा आनन्द भेलै ॥ पू० ॥
 वासभवन मोह्यो सबलोए । संपदा भेलै ॥ पू० १ ॥ सतर
 प्रकारी पूजा । विजयदेवा ततायेई ॥ वि० ॥ अप्रमत्त गुण
 तोरा । चरण सेवै ॥ पू० २ ॥ कुंकुम चंदन वासै । पूजियै
 जिनराजतायेई । चतुर गति दुख गोरी । चतुर्थी धनकि
 ॥ ३ पू० ॥ ॥ इति चतुर्थी वासचपे पूजा ॥ ४ ॥ ॥
 एकही वासचूर्ण प्रभुजीके विं उपर ठांटे । मंदिर में
 चूर्ण उठालै ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ पांचमी पुष्कारोहण पूजा ॥ ॥

॥ ॥ गुलाब केतकी पांचे तरै का फूलरकीवी में
 रक्खी मुखे इम पढै ॥ (दुहा) मनविकसै तिम विकसतां ।
 पुहप अनेक प्रकार । प्रभु पूजा ए पांचमी । पांचमि गति
 दातार ॥ १ ॥ (राग कामोद) चंपक केतकी मालतीए । ॥ ॥

कुंदकिरण भचकुंद । सोवन जाई जूझका । - वडलसिरी
अरविंद ॥१॥ जिनवर चरण उवरि धरै ए ॥ ७० ॥ सुकु
लित कुशम अनेक । सिब रमणीसें वर वरै । विधजि
न पूज विवेक । वि० । इति ॥ ॥ (राग कानटो) ॥ ॥
॥ ॥ सोहैरी माई वरणे । मनमोहैरी माइ वरणे ।
(अहोवरणे) । विविध कुशम जिन चरणे । (अ०) । विकसी
हसीय जपे साहिबकुं । राख प्रभू हम सरणे ॥ सो० १ ॥
पांचमी पूजा कुशम सुकुलितकी (कु०) पंच विषै (हां०
पं०) दुखहरणे ॥ सो० ॥ कहै साधु कौरति भगति भग
वंतकी । भविकनरा । (हरि भ०) । सुख करणे ॥ २ ॥ सो०
॥ ॥ इति पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ ॥ पांच जातना
पुष्प चढावै ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ ठड्डी पुष्प मालारोहण पूजा ॥ ॥

॥ ॥ (नाग पुन्नाग दमणो गुलाब पाटल मोगरा सेव
ती चंपेली मालती (इत्यादि प्रमुख) पंच वरण फुलानी
माला हाथ लेई खडा रहै । मुखे इस पटै (दुहा) ॥ ॥
॥ ॥ ठड्डी पूजा ए ठटी । महासुरभि पुष्पमाल । गुण गुंथी
थापैगलै । जेसटलै दुखजाल ॥ १ ॥ (राग रामगिरि गुजरी)
॥ ॥ नाग पुन्नाग मंदार नवमालिका । मल्लिकासोम
पारिधकलीए (भलां पा०) ॥ २ ॥ मरुत दमणक बकुल तिलक
वासं तिका । लाल गुलाल पाटल भिलौए । (भलां पा०) ॥
१ ॥ जासुमणि मोगरा वेउला मालती । पंचवरणै गुंथी
मालतीए । (भलां गुं०) हेमाल जिनकांठ पीठे ठवी लह

लहै । जाणि संतप सब पालतौए । भलां ॥ ३३ ॥ इति ॥ ३३ ॥

॥ ३३ ॥ अथ विधि । (राग आसावरी) ॥ ३३ ॥

॥ ३३ ॥ देखी दामा कंठ जिन अधिक एधतनंदै । चको
रकुं देखि देखि जिम चंदै । (दे०) ॥ १ ॥ पंचविधि वरण
रची कुशमांकी ॥ जैसी रयणाहे (जै०) बलिसुहमंदै
(देखी०) ॥ २ ॥ ठहीरे तोमर पूजा तब मार धूजै । सब
अरियण (हरि स०) होइ तिम ठंदै । (दे०) ॥ ३ ॥ कहै
साधु कीरत सकल आखा सुख । भविक भगत (हरि भ०) ।
जे जिन बंदै । (दे०) ॥ ४ ॥ इति ठही तोमर फूलमाला
पूजा ॥ ३३ ॥ ६ ॥ एकही प्रभुकीके कंठे फूलमाला च
ढावै ॥ ३३ ॥

॥ ३३ ॥ अथ सप्तमी अंगीरचन पूजा ॥ ३३ ॥

॥ ३३ ॥ पंचवरणा फूल केसरसे अंगीरचै । सो हावे
लेई । सुखै इम पढै ॥ ३३ ॥ (दुहा) ॥ ३३ ॥ कीतकी चंपक
केवडा । सोमै तेम सुगात । चाढो जिम चढता ऊवै ।
सातमी ये सुख सात ॥ १ ॥ (राग केदारो गौरी) ॥ ३३ ॥
॥ ३३ ॥ कुंकुम चरचित विविध पंच वरणक कुशमसुंए ।
(हरि अ०) कुंद गुलाबसुं चंपको दमणको जाससुंए ॥ १ ॥
सातमी पुजामे अंगी अलंकीयै । अंग आलंकमिसमाननी
सुगति आलिंगियेए ॥ २ ॥ ॥ ३३ ॥ इति ॥ ३३ ॥
॥ ३३ ॥ पंचवरणी अंगी रची कुशस जाती । (पं०)
कुंद मचकुंद गुलाब सिरोमणि । करकरणी सोवन जाती ।
(पं०) ॥ १ ॥ दमणक मरक पाटल अरविंदो । अस बुर

बेउलवाती । पारधि चरण कलार मंदारो । विण पट कूल
बनी भातो । (पं०) ॥ २ ॥ सुर नर किन्दर रमणगाती ।
भैरवी कगति व्रततिदाती । (पं०) ॥ ३ ॥ ॐ ॥ इति सातमी
अंगीरचन पूजा ॥ ७ ॥ ॐ ॥ सुगंध पुष्प करौ अत्यन्त
भक्तीसे भगवंतने शरीरै अंगी रचै ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ आठमी गंधवटी पूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ घनसार अगर सेल्हारस प्रमुखसे सुगंध बट्टी
करि । जिनेश्वरने आगै ले खप्ता रहै ॥ ॐ ॥ (दहा) ॥ ॐ ॥
अगर सेल्हारस सार । सुमती पूजा आठमी । गंधवटी
घनसार । लावै जिनतनु भावसु ॥ २ ॥ ॐ ॥ राग सोरठ ॥ ॐ ॥
॥ ॐ ॥ कुंदकिरण शशि जजलो जी (देवा) । पावनवस
घन सारो जी । सुरभि सिखर रुगनाभिनो जी (देवा) ।
सुन्दरोहण अधिकारो जी ॥ १ ॥ वस्तु सुगंध जब मोरीयो
जो (देवा) । अशुभ करम चूरो जै जी । अंगण सुरतरु
मोरियो जी (देवा) । तब कुमती जन खीजै जी । (तब
सुमती जनरीऊँ जी) ॥ २ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ विधि (राग सामेरी) ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पूजोरी माई जिनवर अंगसुगंधै (जिन० पू०) । गंध
वटी घनसार उदारै । गोल तीर्थ कर बांधै । (भलां०२) (पू०)
॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर सेल्हारस । लावै जिन तनु
रागै । धारकपूर भाव घन वर घत । सामेरी मति जागै ॥
(भलां०२) (पू०) ॥ २ ॥ ॐ ॥ इति आठमी वरासचूर्ण पूजा ॥ ८ ॥

॥ॐ॥ अथ नवमीध्वज पूजा ॥ॐ॥ । (१)

॥ ॐ ॥ (दूहा) मोहनध्वज घर मस्तकै । सहस्र गीतसु
मूल । दीनै तीन प्रदक्षिणा । परसिद्ध नवमीपूज ॥ १ ॥ ॐ ॥
राग भेषगौरी ॥ ॐ ॥ (वस्तु) सहस्र जोयण २ हेममव दंष्ट्र
युतपताक पंचवेरण । धुमधुमंत धुमधरीय वाजै । मृदुसुमीर
लहि कौ गयण (ल०) । जाण कुमतिदल सयल भाजै ॥ ॐ ॥
सुरपति जिम बिरचै धजाए (हांएवि०) नवमीपूज सुरंग ।
(न०) तिणपर आवक धजबहन । (ति०) आपै दान अमंग ।
(आ०) १ ॥ ॐ ॥ (विधि) ॥ ॐ ॥ राग नटनारायण ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ जिनराज को ध्वजमोहन ॥ ध्वजमोहनरे ध्वजमो
हना । (जि०) । मोहन सुगुन अधिवासौयो । कर पंचसवद
विप्रदक्षिणा । (क०) सधव वधू सिर सोहना ॥ २ ॥ (जि०)
भातिवसन पंच वरणवन्योरी । विधकरि ध्वजको रोहण ॥
साधु भणति नवमीपूजा नव । पापनीयांणाषोहणा । सिव
मंदिरकुं अधिरोहण । जनमोहो नटनारायण (जि०) ॥ ३ ॥ ॐ ॥
॥ इति नवमी पूजा ॥ ॐ ॥ एकही धजाचढ़ाई जै ॥

(१) हिवै सधव स्त्री भेली होके अज्जल बाल मे । कुंकुम
नो साथियो करै । बचत बाल मे धरै । औफल रुपानांषो
धरै । धजा बाल मे धरि । सधव स्त्री भावै रक्खी गीतगान गावता ।
सब बाजिल बजता । तीन प्रदक्षिणा देवै । पीके धजापरि धरै
पासे वासुधै करवै । प्रभु सन्मुख गुहनी करै । अपरि अज्ञतां
साथियो करै । सुपारी जडावै । सुखे ऐसा कहै । (दूहा) । मोहनरे
ध्वजमोहना ॥

॥ॐ॥ अथ दशमी आभरण पूजा ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (पिरोजा नीलमलसणिया मोतीमाणकसें जडा ।
आभरण लेई सुखे इम पढे) ॥ ॐ ॥ (राग केदारैमे) ॥ॐ॥
(दुहा) ॥ॐ॥ दशमी पूजा आभरण । रचना यथा अनेक ।
सुरपति जिम अंगै रचै । तिम आवक सुविवेक ॥ १ ॥
सिरसो है जिनवर तणें । रयण सुगठ ऊलकंति । तिलक
भाल अंगदभुजा । अवरणकुंठल अति भंति ॥ २ ॥ॐ॥ (राग
अधभास गुंठमलहार । आसावरी) ॥ ॐ ॥ पाच पीरोजा
नील लसणिया । मोती माणिक लाल रसणीया । (हीर
सोहैरे) धूनी चूनी पुलकर केतना । जातिरूप सुभग अंक
अंजना (मनमोहैरे) ॥ १ ॥ मौलिमुगट रयणे जडो । काने
कुंठल (हारे) । अति जुगतै जुडो । (उरहाहरे) । (मन
बाहरे) । भालतिलक बांहे अंगदा । आभरण दशमी पूजा
सुदा । (सुखकाहरे) । (दुखहाहरे) ॥ २ ॥

॥ॐ॥ (अथ विधिः) ॥ॐ॥ राग केदारो ॥ॐ॥

॥ॐ॥ प्रभु सिरसोहै । सुगठमलि रयण जडो । (रयण) ।
अंगद बाहु तिलक भालखल ॥ अङ्गनीको कौन वडो ॥
(प्र०) १ ॥ अवरण कुंठल शशि तरण मंडल जीपै । सुरतस
से अलंकृतो । दुखकेदार चमर सिंहासन । त्व सिरउवर
धर्यो । अलंकृत उचितवश्यो ॥ २-प्र० ॥ॐ॥ इति दशमी
आभरणपूजा ॥ १० ॥ एकही आभरण (तथा) रोकनांखो
जुल्ल बटावै ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ अथ इयारमौ फूलवर पुजा ॥

॥ॐ॥ सुगंध पुष्पकरी संयुक्त फूलवर हाथे लेई सुखैइम

पढै ॥३॥ (दुहा) ॥३॥ फूलगरो अतिसोभतो । फूदै लहकै
फूल । मझकै परिमल फलमहा । इग्यारमौ पूजे अमूल ॥१
(राग रामगिरी) ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ कोज अंकोल रायवेलिनवमालिका । कुंद मच
कुंद भरविचकलूए (अईयो) तिलक दमणक दलं भोगरा प
रमल । कोमला पोरिष पादलूए ॥ (हां० अ०) प्रमुख कुशमै
रचै विभुवन कुंरचै । कुशमगेह विचि तोरण ॥ (अ०)
गुच्छ चंद्रोदयं ऊं बक उन्नयं । जालिका गोख चित्तोरण
ए । (अ०) ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ (अथ विधि) ॥ (राग रामगिरी) ॥ ३ ॥
॥ ३ ॥ मेरो मन मोछ्यो माईरी । फूलवर आनंद
जीलै (फू०) असत उसत दाम विवरी मनोहर । देखत तब
हो सब दुरितखीलै (फू०) ॥ १ ॥ कुशम मंडप यम गुच्छ
चंद्रोदय । कोरणी चार विनाण सजै । इग्यारमौ पूज
वणीहै रामगिरी । विवध विमान जैसे तिपुरिभजै (फू०)
॥ २ ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति इग्यारमौ फूलवरपूजा ॥ ११ ॥

एकही फूलवर चढाईजै ॥

॥ ३ ॥ अथ बारमौ पुष्पवर्षा पूजा ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ पंचवर्णफूल गुलाबजललेई मुखै दम पढै ॥ ३ ॥

राग महार ॥ ३ ॥ (दुहा) वरपै बारमौ पुजमे । कुशम

वादलिया फूल । हरण ताप दुख लोकको । जानुसमा

बहुमूल ॥ १ ॥ ॥ ३ ॥ राग भीममहार कदखानी जाति ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ मेघ वरसै भारी पुष्पवादल करो । जानुपर

माण कर कुशमपगरं । पंचवरणं वण्यो विकचि अनुक्रम
चिह्नो । अधोदंतै नही पीडपसरं ॥ मे० १ ॥ वासमहके
मिलै । भमर भमरीभिलै । सरस रसरंग तिण दुख निवा
री । जिनप आगै करै सुरप निम सुखवरै । बारमौ पूज
तिणपर अगारी ॥ मे० २ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ अथ विधिः (राग भीममल्लार) ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ पुष्प वादलीया वरसै । सुसमां (अहो०) । वो
जन अनुचिहर वरस गंधोदक । मनुहर जानु समां (पु०)
गमन आगमन की पीरनही तसु । इह जिनको अतिसय
गुणै । गुंजत २ मधुकर इस पभणै ॥ गुं० ॥ मधुर वचनजिन
गुण युगद ॥ २ ॥ कुसुम सुपरि सेवा जो करै । तसुपीन नही
सुझणै । (पु०) । समवसरण पंचवरण अधोदंत । विवुध
रचै सुमना सुसमा ॥ पु० ३ ॥ बारमौ पूज भविक तिम करै ।
कुसुम विकसइस ऊचरै । तसु भीमबंधन अधरा ऊवै । जेकर
हिं जे जिन नमे ॥ (पु०) ४ ॥ ॥ इति बारमौ पुष्पट्टि
पूजा ॥ ॥ ॥ एकही फूलछाँलै ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ अथ तेरमौ पूजा ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ अष्टमंगलीक लेकर सुखे इस पढै ॥ ॥ ॥ राग
वसंत ॥ ॥ ॥ (दूहा) तेरमौ पूजा अवसरै । मंगल अष्टविधा
न । दुगति रचै सुमते सही । परमानंद निधान ॥ ॥ ॥
॥ १ ॥ राग वसंत ॥ ॥ ॥ अतुल विमल मिल्या । अखं नगुणे
भिल्या । साल रघत तथा तंदुला ए । सुषण समाजक
विध पंचवरणक । चंद्रकिरण जैसा ऊजलाए ॥ १ (अ०) ॥ मे

ल मंगल लिखै सयल मंगल आखै । जिनप आगलि सुधा
नक धरै ए । तेरमीपूजा विध तेरमी मन भरे । अष्टमंगल
अष्टसिध करैए ॥ (अ०) २ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ विधि: (राग कल्याण) ॥ ॥

॥ ॥ हां हो पुजावली ते रसमें (हां हो रसमें ३) ॥ ते
अष्टमंगल लिख कुशल निधान । तेज तरुणकी रसमें ॥ प० १ ॥
दृष्ट्य भद्रासन नंदावर्त पूर्णकुंभ । मधुयुग औबद्ध तस
में । बर्द्धमान स्वस्तिक पूज मंगलकी । आनंद कल्याण
सुखरसमें ॥ २ (प०) ॥ ॥ इति तेरमीपूजा ॥ १३ ॥ ॥

॥ ॥ अथ चौदमी धूपपूजा ॥ ॥

॥ ॥ धूप रकेवीमें धर सुखै इम पटै । (दूहा) गंधवटी
संगमद अगर । सेतहारस वनसार । धरि प्रभु आगलि धूप
या चवदमी पूजाचार ॥ १ ॥ (राग बेलाउल) कृष्णांगर
कपूरचूर । सोगंध पंचे पूर । कुंदरुख सेतहारस सार ।
गंधवटी वनसार ॥ १ ॥ गंधवटी वनसार चंदन संगमंदा
रस भेलियै । औवास धूप दशांग अंबर सुरभि बज्रद्रव्य
भेलियै । बेरुलिय दंड कनक मंदित धूप धारो करघरै ।
भवट्टति धूपकरंति भोगं रोग सोग अशुभ हरै ॥ २ ॥

॥ ॥ (अथ विधि:) ॥ ॥ राग मालवी गोप्त्री ॥ ॥

॥ ॥ सब अरति मयन सुदार धूप । करति गंधरसाल
लरे । (देवाक०) घाम घूमा बलिव घूसर । कलुष पातक गा
लरे (देवा) ॥ १ ॥ उर्द्धगत सूचंति भविष्यं । मधमधै करंति
लरे (देवा) चवदमी वामंगपूजा । दीयै रथय विशस्तरै ।

आरती मंगल मालरे । मालवी गौड़ी तालरे (देवा० स०)
॥ ॐ ॥ इति चवदमी धूप पूजा ॥ १४ ॥ ॐ ॥ एकही धूप
धारणो प्रभूकै बाये अंग धरो खेईजे ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ १५ गीत गान पूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (प्रभुजीके मुख आगे मधुरखरे गुण ग्राम गावै)
॥ ॐ ॥ (दूहा) कंठ भलै आलाप कर । गावो जिनगुण गीत ।
भावो अधिकौ भावना । पनरमी पूजा प्रीत ॥ १ ॥ (औरागे
आर्या) यद्दन्तं केवलमनंतं फलमस्ति जैनगुणगानं । गुण
वर्णतानं वादौ । माता भाषा लये युक्तं ॥ १ ॥ सप्तखर संगो
तैः । स्थानैर्नयतादि ताल करणैश्च । चंचुरचारौ चारौ ।
गीतं गानं सुपीयूषं ॥ २ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (अथ विधिः) ॥ ॐ ॥ औराग ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ जिनगुणगानं श्रुत अमृतं । तारमंद्रादि अना
हत तानं । केवल जिम तिम फलअमृतं (जि०) ॥ १ ॥ विवध
कुमार कुमरौ आलापै । सुरज उपंग नादजनितं (जि०) ।
पाठ प्रबंधधूयो प्रतिमानं । आयति ठंड सुरति सुमतं (जि०)
॥ १ ॥ सबद समान रुच्यो तिमव्रन कुं । सुरनर गावै जिन च
रितं । सप्तखरमान शिव योगीतं । पनरमी पूज हरै दुरि
तं रे । (जि०) ॥ ३ ॥ ॐ ॥ इति पनरमी गीत पूजा ॥ १५ ॥

॥ ॐ ॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥ ॐ ॥

ॐ समान अवस्थावाली सबव स्त्रीयां (वा) कुमरां भली
होके प्रभूके सम्मुख संका कंखा रहत नाटक करै । स्त्रीयां का
जोग नवणें (तो) समान अवस्थावाला पुरुष नाटक करै (वा) कुमार

कुमक्षीं मिलकै नाटक करै ॥ नाटक करणें सैं, केई जीव तीर्थ कर
गोतबाधा ॥ नाटक करतां सुखै इस पदै ॥

॥ ॐ ॥ (दूहा) ॥ ॐ ॥ कर जोष्टी नाटक करै ॥ सक्ति
सुंदर सिणगार ॥ भव नाटक ते नविभमें ॥ सोलमी पूजा
सार ॥ १ ॥ '(राग सुद्ध नट्ट) (काव्य)', भावादिपिमणास
चाक चरणा संपुल्ल चंदानना ॥ सपिम्भा समरुव वेसवयसो
मत्तमे कुंभत्यणा ॥ लावणा सगुणापि कस्सरवई रागाइ आ
लावणा ॥ कुम्भारी कुमरा विजैनपुरउ नञ्चंति सिंगारणा
॥ १ ॥ '(गद्य)' तण्णते अइसयं कुम्भारि कुमरीउ ॥ 'सूरिया
मेणं देवेणं संदिद्धा ॥ रंगमंढवे पविद्धा ॥ जियनमंता गात्रंता
वायंता नञ्चंतेति ॥ २ ॥ ॥ (राग नट्ट त्रिगुण) ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ नाचंती कुम्भार कुमरी ॥ द्रागददि तत्ता घेई
(अ०) ॥ द्रागददि २ क औगि २ न ॥ सुखै तत्तायेईय (अ०
ना०) वेण वीण मुरजवाजै ॥ सोलही सिणगार सजै ॥
तनन्नन्ननेईय (अइयो) ॥ अणण अण अण घुगव वमक ॥
रणखखणेईय ॥ (अ० २ ना०) कसंती कंचुकि तरणी ॥
मंजरी झेकार करणी ॥ सोमंती कुमरीय (अइयो) हस्त
कहा वादि भावै ॥ ददन्ती भमरौय (अ० ना०) ॥ ३ ॥ सोल
मी नाटक तणी ॥ सूरियामे रावन्न कीनी ॥ सुगंधतत्तायेईय
(अ०) ॥ जिमप भगवें भविकलौणा ॥ आणंद तत्तायेईय (अ०
ना०) ॥ ४ ॥ ॥ इति सोलमी नाटिक पूजा ॥ १६ ॥ ॥

॥ ॐ ॥ अथ सतरमी वाजिव पूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सतरमी पूजामे सबजातिना वाजिव नजावै

सुखै इम पढै ॥३॥ तत धन सुखिरै आनधै । वाजित चौविध
वाय । भंगत भली भगवंतनी । सतरमौ ए सुखदाय ॥ १॥
॥३॥ (गाहा) सुरमहल कंसाखो । मऊयर महल सुवज्जए
पणवो । सुरनारि नंदितरो । पभणइ तूं नंद जिणनाह ॥ १॥
॥३॥ (राग मधुमाधवी) ॥३॥ तूं नन्दि आनन्दि बोलत
नन्दी । चरण कमल जंतु जगवयवन्दी ॥ (तूं०) ॥ ज्ञाननि
र्मल वावन सुखवेदी । तिवलबोलै रंग अतिहि आनन्दी ।
(तूं० १) भेरी गयणवाजंती कुमति ताजंती । सेवै जैन जै
णावंती । जैन शाशन जइवंत नंदंती ॥ उदयसिंघ परिपरि
यवदंती (तूं० २) सेवभविक मधुमाधन फेरी । भवनी फेरीनप्प
भणंती । कहै साधु सतरमौ पूज वाजितस्रव । मंगल मधुर
धुनिकर कहंती (तूं० ३) इति सतरमौ पूजा ॥ १७ ॥

॥३॥ अथ कलश पूजा (राग धन्यासरी) ॥३॥

॥३॥ भवितुं भण गुण जिनके सव दिन । तेजतरण
सुखराजै । (ति०) । कवितशतक आठ युणत सकस्तव । युच
रंगै हमठाजै । (भवि० १) अणहल पुर शांति सिव सुख
दाई । नवनिधि सिध आवाजै । सतरसुपूज सुविध यावक
की । भणोमे भगति हितकाजै (भ० २) श्रीजिनचंद्रसूरि
खरतरपति । धरम वचन तसु राजै । संवत सोल अठार
आवणधुरि । पंचमि दिवस समाजै (भ० ३) दयाकलशगुरु
अमरमाणिक्यवर । तामुपसायै सुविध ऊढ़ गाजै ॥ कहै
साधु कीरत करत जिन संस्तव । सव लौला सुखसाजै
(भवि० ४) इति सतरभेदीपूजा समाप्ता ॥३॥

॥ ❀ ॥ अथ आरती करण विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूजाकियां पीठै । सब कपड़ा । पाष प्रमुख
पहरकै ॥ उत्तरासण करै ॥ पीठै प्रभू सन्मुख । अन्तर
पट करी । आपकै निलाप्त कुंकूरो तिलक करै । पीठे पट
दूरि करि । रके बीमे साधियो करी । मांझ रूपानाथो ।
चावल सुपारी धरे । पीठे आरतो दीपकसुं संजोवने ।
प्रभूके सन्मुख दक्षण आवर्त्तसुं । वाजिल सब वाजतां ।
आरतो करै मुखै पढै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आरतीलि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जैजै आरती शांति तुम्हारी । तोरा चरण
कमलकी में जाऊं बलिहारी ॥ (जै०) १ ॥ विश्वसेन अ
चिराजोके नंदा । शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ (जै०) २ ॥
चालीस धनुष सोवनमें काया । मंगलठण प्रभुचरण मुहा
या ॥ (जै०) ३ ॥ चक्रवर्त्ति प्रभु पंचम सोहै । सोलम जि
नवर सुर नर मोहै ॥ (जै०) ४ ॥ मंगल आरती भोरहि की
जै । जन्म जन्म को लाहो लीजै ॥ (जै०) ॥ करनोनी सेवक
गुण गावै । सो नर नारी अमरपद पावै ॥ (जै०) ५ ॥ ❀ ॥
इति श्री आरती संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

॥ ❀ ॥ अथ श्रीसिद्धचक्रजीको वनी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवपद जीकी महिमा संयुक्त पूजा लिखियै है ॥
॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ परम मन्त्र प्रणमीकरी । तासघरी उर
ध्यान । अरिहंतपद पूजा करो । निजर सकति प्रमाण ॥ १ ॥

॥३॥ (काव्य) उपपन्न सन्नाय महोमथाणं । सप्पाटिहेरा
सणसंठियाणं । सहेसणा णंदिय सज्जणाणं । नमो नमो
होउ सयाजिणाणं ॥१॥ नमोनंत संत प्रमोद प्रदानं । प्रधा
नाय भव्यात्मने भास्वताय । यथा जेहना ध्यानथी सौख्य
भाजा । सदा सिद्धचक्राय श्रीपाल राजा ॥२॥ कछा कर्मद्रुम
मर्म चकचूर जेणें । भलाभव्य नवपद् ध्यानेन तेणें । करी
पूजनाभव्यभावे विकालें । सदा वासियो आतमा तेण कालें
॥३॥ जिके तीर्थकर कर्म उदर्ये करीनै । दिवै देशना भव्यने
हितधरीनें । सदा आठ महा-पाटिहारे समेता । सुरेसै
नरेसै स्तव्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ कछा वातिया कर्म च्यारे अ
लगा । भवोपग्रहौ च्यारठे जे विलग्ना । जगत्यं चकल्याण
के सौख्य पामें । नमो तेह तीर्थंकरा मोक्ष गामें ॥५॥ ॥
(ढाल०) ॥ ॥ ॥ तीर्थपति अरिहा नमुं । धरम धुरंधर
धीरो जी । देशना अमृत वरसता । निज वीरज बन्धुवीरो
जो । (उल्लाखो) । वर अखंय निरमल ज्ञानभासन सर्वभाव
प्रकासता । निजगुह्य अद्वा आत्मभावै चरण थिरता वास
ता । जिन नामकर्म प्रभाव अतिशय प्रातिहारज सोभता ।
जगजंतु कसणावंत भगवंत भविक जननें थोभता ॥ ६ ॥
(ढाल०) ॥ ॥ श्री सीमंघर साहिव आगे ए देशो ॥ ॥
खोजे भव वर धानक तपकरि । जिनवांध्युं जिन नाम ।
चउसठ्ठ दूंद्रै पूजित जेजिन । कीजै तास प्रणामरे ।
॥३॥ (भविका) सिद्धचक्र पद वंदो । जिम चिरकालें नंदो
रे (भ०) उपशम रसनो कंदो रे (भ०) रत्नखीनो दूंदो रे
(भ०) सबै सुर नर दूंदो रे (भ० सिद्ध० ७) (आंकणी)

जो हनें होइ कल्याणक दिवसै । नरकै प्रिय अग्र आलं । स
 कल अधिकगुण अतिशय धारो । जेजिन नमो अग्र टोलुरे ।
 (भ०) ८ ॥ जे तिहुं नाण समगग उष्यन्ना । भोग करम
 चीण जाणौ । लेइ दिक्षा शिखा दिइ जगनें । ते नमोइ
 जिननांणीरे (भ० सि०) ८ ॥ महागोप महामाहण कह्यै ।
 निरजामक सत्यवाह । उपमां एहवो जेहनें ठाकै । तेजिन
 नमोइ उद्याहरे (भ० सि०) १० ॥ आठ प्रातीहारव जसुठावै
 पेलौस गुणयत वाणी । जेप्रतिबोध करै जगजननें । तेजिन
 नमिइ प्राणौरे (भ० सि०) ११ ॥ ॥ (ढाल) ॥ ॥
 अरिहंत पद ध्यातो यको । दबह गुण पर्यायै रे । भेद
 ठेदकरि आतमा । अरिहंत रूपी थायै रे ॥ १२ ॥ वीर बिखे
 सर उपदिसे । सांभल ज्यो वितलाई रे । आतम ध्याने
 आतमा । ऋद्धि मिलै सबआई रे । (वी०) १३ ॥ ॥ उ हौं
 परमात्मने । अनंतानंत ज्ञानशक्तये । जन्मजरामृत निवा
 रणाय । शोमत्सिद्धचक्राय पंचामृत ॥ १ ॥ चंदन २ ।
 पुष्प ३ । धूप ४ । दीप ५ । अक्षत ६ । नैवेद्य ७ । कलं
 ८ । वस्त्रं । वासं । ययामहे स्वाहा । इति प्रथमपद श्री अ
 रिहंतस्य कलशप जा । १ ॥ ॥

॥ ॥ अथ २ श्रीसिद्धपदनी पूजा लि० ॥ ॥

॥ ॥ (दूहा) (दूजी पूजा सिद्ध की । कीजै दिलखुसि
 याल । असुभ करम दूरै ठलै । फलै मनोरथ माल ॥ १ ॥
 (काव्य) सिद्धाण माणंद रमालयाण । नमो नमो शंत चच
 कयाण । समग कर्मकल्य कार गाण । जगं जरा दुक्त

निवारणां ॥ १४ ॥ करो आठ कर्मक्षये पार प्रांम्या ।
जरा जन्म मरणादि भय जेणवाम्या । निरावरणजे आत्म
रूपे प्रसिद्धा । यथा पार पामी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १४ ॥ त्रिभा
गोनदेहा वगाहात्मदेशा । रक्षा ज्ञानमय जाति वर्णादि
लेशा । सदानंद सौख्याश्रित जोतिरूपा । अनाबाध अपु
नर्भवादि स्वरूपा ॥ १५ ॥ ॐ ॥ (चाल) ॥ ॐ ॥ सकल कर्म
मलक्षय करी । पूरण शुद्ध स्वरूपो जो । अव्याबाध प्रभुता
मयी । आतम संपति भूषो जो । (उल्लासो) जे भूप आतम
सहज संपति शक्ति व्यक्तिपणे करी । स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल
भाव गुण अनंता आदरी । स्वस्वभाव गुण पर्याय परणति
सिद्धसाधन परमणौ । मुनिराज मानसर हंस सम वत् । नमो
सिद्ध महागुणी ॥ १६ ॥ ॐ ॥ (ढाल) ॥ ॐ ॥ समय प्रसंतर
अणफरसी चरम तिभाग विसेस । अवगाहन लहीजे सिव
पुहता । सिद्ध नमो ते असेसरे ॥ १७ ॥ (भ०सि०) पूरव प्र
योगने गतिपरिणामै । बंधन क्लेश असंग । समय एक ऊर
प्रगति जेहनी । ते सिद्धप्रणमे रंगरे ॥ १८ ॥ (भ०सि०) निर
मल सिद्धसिलाने जपरि । जोयण एकलोकंत । सादि अनंत
तिहां यिति जेहनी । ते सिद्धप्रणमो संतरे ॥ १९ ॥ (भ०सि०)
जगणे पिण न सकै कहौ पुरगुण । प्राकृत तिम गुणजास ।
उपमा विणनाणौ भवमाहिं । ते सिद्ध दीड उल्लास रे ॥ २० ॥
(भ०सि०) ज्योतिषु ज्योति मिली जसु अनुपम । विरमौ
सकल उपाधि । आतम राम रमापति समरो । ते सिद्ध
सहज समाधिरे ॥ २१ ॥ (भ०सि०) ॐ ॥ ढाल ॥ ॐ ॥ रूपातीत
स्वभाव जो । केवल दंसणनाणीरे । तिध्याता निज आतमा ।

होइं सिद्धगुणखाणीरे (वी०) ॥२२॥ ॥ॐ॥ इति द्वितीया ओ
सिद्धपदस्य कलश पूजा ॥ ॐ ह्रीं ॥२॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ तृतीय आचारजपद पूजा लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (दूहा) हिव आचारज पदतणी । पूजा करो
विशेष । मोह तिमर दूरै हरै । सूरजै भाव असेस ॥१॥ॐ॥
सूरीण दूरौ कथ कुगहाणं । नमो नमो सूरि समप्यहाणं ।
सहस्रणादाण समायराणं । अखंड ठत्तीस गुणायराणं ॥१॥
नमं सूरिराजा सदा तत्वताजा । जिनै द्रागमें प्रौढसाम्राज्य
भाजा । षट् वर्गवर्गित गुणे शोभमाना । पंचाचारनें पाल
वै सावधाना ॥२॥ भविप्राणिनें देशना देशकालै । सदा अम
मत्ता यथा सूख अलै । जिके सासनाधार दिग्दंतकलपा
जगत्ते चिरंजीव ज्यो शुद्ध जल्यो ॥३॥ॐ॥ (ढाल) ॥ॐ॥
आचारज मुनिपति गणी । गुण ठत्तीसे धामो जी । चि
दानंद रस स्वादता । पर भावै निक्कामो जी । (उल्लालो)
निक्काम निरमल शुद्ध चिद्वन साध्य निज निरभार श्री ।
वरज्ञानं दरसण चरण वीरज साधना व्यापार श्री । भवि
जीव बोधक तत्वसोधक सयल गुणसंपतिधरा । संवर
समाधी गत उपाधी दुविघ तप गुण आदरा ॥२५॥ॐ॥
(ढाल) ॥ॐ॥ पांच आचार जे सूचा पालै । मारग भावै
साचो । ते आचारज नमियै तेहसुं । प्रेम करीनें जाचो
रे ॥ (भ०सि० २६) वरठत्तीस गुणें करि सोमै । गुणप्रधा
न जगबोहै । जगमोहै नरहै खिण कोहै । सूरि नमं तेजो
हैरे ॥ (भ०सि० २७) नित अप्रमत्त घरम उवएसै । नही

विकथा न कषाय । जेहनें ते आचारज नमीइ । अकलुस
अमल अमायरे ॥ (म०सि० १८) जेदिइं सारण वारण
चोयण । पट्टिचोयण वलि जननें । पटधारी गठयंभ आ
चारज । तेमान्या सुनि मननें रे ॥ (म०सि० १९) अत्यमिइं
जिन सूरज केवल । वंदौनै जगदीवो । भुवन पदारथ प्रगट
नपटुते । आचारज चिरंजीवो रे (म०सि०) ३० ॥ (ढाल)
॥ ३१ ॥ ध्याता आचारज भला । महामंल सुभ ध्यानीरे ।
पंच प्रस्थाने आत्मा । आचारजहोइ प्राणी रे (वी०) ३१ ॥
ब्रह्म० ॥ इति तृतीय श्रीआचार्यपद कलश पूजा ॥ ३॥

॥ ३१ ॥ अथ चौथो पाठक पद पूजा लि० ॥ ३१ ॥

॥ ३१ ॥ (दूहा) गुण अनेक जगजेहना । सुंदर सोमित
गाव । उवजाया पद अरचियै । अनुभव रसनो पाव ॥ १
सुतत्य वित्यारण तप्पराणं । नमो२ वायग कुंजराणं । ग
णसं संधारण सायराणं । सत्तप्पणावज्जिय मत्तुराणं ॥ १ ॥
नही सूरि प्रिय सूरिगुणनें सुहांया । नमुं वाचका त्यक्त
मद मोह माया । वलो हादशांगादि सूत्रार्थदाने । निकेसा
वधाने निरुद्धाभिधाने ॥ २ ॥ धरै पंचनै वर्ग वर्गितगुणौषा
प्रवादि द्विपोत्तेदेने तुल्य सिंघा । गुणी गन्धसंधारणे स्थंभ
पूता । उपाध्याय ते वंदिइं चित्प्रभूता ॥ ३ ॥ (ढाल) ॥
संतिजुआ सुत्तीजुआ । अज्जव महव जुत्ताजी । सच्चं सोय
अकिंचणा । तव संयम गुणरत्ताजी । (उल्लालो) जेरस्या ब्रह्म
सुगुप्त गुप्ता । सुमति सुमता शुभधरा । स्याद्वाद्वादइं
तत्वसाधक आत्मपर विभंजनकरा । भव भौर साधन धीर

शासन बहन धोरी मुनिवरा । सिद्धांत वायन दानसमरथ
 नमो पाठक पदधरा ॥३३॥ (ढाल) ॥॥॥ द्वादश अंग
 सिञ्जायकरै जे । पारग धारग तास । सूत्र अरथ विस्तार
 रसिकते । नमो उवञ्जाय उज्जासरे ॥ (भ० सि०) ३४॥ अर्थ
 सूत्रने दान विभाग । आचारक उवञ्जाय । भवतिरहे जैल
 है शिवसंपद । नमीयै ते सुपसायरे (भ०) ३५॥ मूरखशिष्य
 नियजायै जेप्रभु । पाहण पल्लव आयै । ते उवजाय सकल
 जन पूजित । सूत्र अरथ सविजायै रे ॥ (भ० सि०) ३६॥
 राजकुमार सरिखा गणचिंतक । आचारक पदयोग । जे
 उवजाय सदा ते नमतां । नावै भवभय सोगरे ॥ (भ० सि०)
 ३७॥ नावना चंदन रस समवयणै । अहितताप सविटालै ।
 ते उवजाय नमी जै जेवलि । जिनशासन अजुवाले रे ॥
 (भ० सि०) ३८॥ (ढाल) ॥॥॥ तपसिञ्जायै रत सदा ।
 द्वादश अंगनो ध्याता रे । उपाध्याय ते आतमा । जगदंभव
 जगन्माता रे ॥ (वी० तु०) ३९॥ उर्वी० ॥ इति चोषे पदै श्री
 पाठकजीकी कलशपूजा सं० ॥ ४ ॥ ॥॥॥

॥ अथ पांचमी साधूपदपूजा लि० ॥

॥ ॥ (दुहा) मोक्षमारग साधन भणौ । सावधान
 थया जेह । ते मुनिवर पद वंदतां । निरमल पायै देह ॥१
 (काव्य) साङ्गण संसाहिय संयमाण । नमो२ गुह दूव
 दमाण । तिगुप्त गुप्ताण समाहियाण । सुणीण माणंद पव
 द्रियाण ॥ करै सेवना सूरि वाचग गलीनौ । करं वर्णना
 तेहनी सो सुणीनौ । समेता सदा पंचसमते विगुप्ता । वि

शुभ्र नही कामभोगेषु लिप्ता ॥४१॥ वलौ वाह्य अभ्यंतरै
 ग्रंथटाली । छद् मुक्तिनें जोग चारित पाली । शुभष्टांग
 योगै रमै चित्तवालौ । नमुं साधुनें तेह निजपाप टालौ
 ॥ ४२ ॥ ॐ ॥ (ढाल) ॥ ॐ ॥ सकल विषय विष वारिनें ।
 निक्कामी निस्संगो जी । भव दव ताप समावता । आत्म
 साधन रंगो जी । (उल्लाखो) । जेरम्या शुद्ध स्वरूप रमणें
 देह निर्मम निर्मदा । काउसगग मुद्राधार आसन ध्यानं
 अभ्यासी सदा । तप तेज दीपै कर्म जीपै नैव ठीपै पर
 भणी । सुनिराज करुणा सिंधु विभुवन बंधु प्रणमो हित
 भणी ॥ ४३ ॥ ॐ ॥ (ढाल) ॥ ॐ ॥ निम तर फूलै भमरो वैसै ।
 पौफ्रा तमुन उपाय । लेई रस आतम संतोषै तिम् सुनि
 गोचरी जायरे ॥ (भ० सि०) ४४ ॥ पांच इंद्रीनें जे नित
 औपै । षट्काया प्रतिपाल । संयम सतर प्रकार आराधै ।
 बंदूं दीन दयालरे (भ० सि०) ४५ ॥ अद्वार सहस सीलंगना
 घोरी । अवल आचार चरित । सुनिमहंत जयणायुत
 बंदी । कौजै जनम पवितरे (भ० सि०) ४६ ॥ नवविघ्न मंहगु
 प्रति जे पालै । वारहविह तपसूरा । एहवा सुनि नमीयै जो
 प्रगटे । पूरब पुन्य अंकूरारे (भ० सि०) ४७ ॥ सोनातणी परै
 परिछा दीसै । दिन२ चढतै वाने । संयम खपकरता सुनि
 नमिह । देसकाल अनुमान रे ॥ (भ० सि०) ४८ ॥ (ढाल) ॐ ॥
 अप्रमत्त जे नित रहै । नवि हरपै नवि सोचैरे । साधु
 मूधाते आतमा । सुं मूंदै सुं लोचैरे ॥ (वी०) ४९ ॥ उ
 हीं । इति पांचसें पदै योसाधुजीकी कलश पूजा ॥ ५॥

॥ ❀ ॥ अथ ठडो दर्शनपदमूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥❀॥ (ढुहा) जिनवर भाषित सुद्धनय । तत्वतबी पर
तीत । ते सम्यग्दर्शन सदा । आदरियै सुभ रौत ॥१॥❀॥
(काव्य) जिणुत्त तत्ते रुद्र लक्षणस । नमो२ निमल दंसयस
मिद्धत्त नासाइ समुग्गमस । मूलस सुद्धम महा दुमस ॥
विपर्या सहो वासना रूप मिथ्या । टलै जे अनादी अठै जे
कुपय्या । जिनोत्तै ऊइं सहज थी शुद्धध्यान । कहीइं दर्श
न तेह परमं निधानं ॥ ५० ॥ विना जे ह्यौ ज्ञान मज्ञान
रूपं । चरितं विचित्रं भवारण्य कूपं । प्रकृति सातनें उप
समइ जय तेह होवै । तिहां आप रूपें सदा आप जोवै ॥
॥ ५१ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ❀ ॥ सम्यग् दर्शन गुण नमो । तत्त्व
प्रतीत सरूपो जी । जसु निरधार स्वभाव ठै । चेतन गुण
जे अरूपी जी (चालि) जे अनूप अझा धरम प्रगटै सयल
पर ईहा टलै । निज शुद्धसत्ता भाव प्रगटै अनुभव क
णा ऊठलै । बज्जमान परिणिति वस्तुतत्वे अहव सुरका
रण प्रणै । निज साध्यदृष्टै सरव करणी तत्वता संपति
गिणै ॥ ५२ ॥❀॥(ढाल)❀॥ शुद्ध देव गुरु धर्मा परिक्षा ।
सहृहणा परिणाम । जेह प्रामी जै तेह नमो जै । सम्यग्
दर्शन नामरे (भ०सि०) ५३॥ मल उपशम जय उपसम जेह
थो । जे होइं विविध अभंग । सम्यग्दर्शन तेह नमीजै ।
जिन धरमे दृढ रंग रे ॥ (भ०सि०) ५४॥ पांचवार उपशम
लही जै । जयउपशमीय असंख । एकवार चायक ते सम्य
क् । दर्शन नमोइं असंख रे (भ०सि०) ५५ ॥ जेबिब नाम
प्रमाण न होवै । चारिततरु नवि फलिउ । सम्य निराव

न जे विण लहिइ । समकित दर्शन बलीउरे ॥ (भ० सि०) ५६ ॥
 सप्तसष्ट बोलै जे अलंकारिउ । ज्ञान चारितनु मूल । सम
 कित दर्शन ते नितप्रणसुं । सिवपंथनु अनुकूल रे ॥ (भ०
 सि०) ५७ ॥ ॥ (ढाल) ॥ ॥ समसंवेगादिक गुणा । खय उ
 प्रशम जे आवैरे । दर्शन तेहिज आतमा । स्यं होयनाम
 घरावै रे ॥ (वी० तुमे०) ५८ ॥ (उ० वी०) ॥ इति ठहै दर्शन
 पद कलश पूजा ॥ ६ ॥ ॥

॥ अथ ७ में ओज्जानपद पूजा ॥ ॥

॥ (दूहा) ॥ सप्तम पद श्रीज्ञाननो । सिद्धचक्र
 तप मां हि । आराधी जे सुभमने । दिन २ अधिक उद्याह
 ॥ १ ॥ (काव्य) अन्नाण सभोह तमो हरस । नमो २ नाण दि
 वायरस । पंचप्यारसु वगारगस । सत्ताण सवत्थ प्रयास
 गस ॥ होइ जेह थौ ज्ञानशुद्ध प्रबोधै । यथा वर्खनासै
 विचिला विबोधै । तिणें जाणीइ वस्तु पटद्रव्य भावा । न
 होवै विकल्पा निजोत्था स्वभावा ॥ ५९ ॥ होइ पंचमत्यादि
 सुग्यान भेदै । गुरुपास यो योग्यता तेह वेदइ । बली जे
 य हेया उपदेय रूपै । लहै चित्तमां जे मध्यानें प्रदोषै ॥
 ६० ॥ (ढाल) ॥ ॥ भव्य नमो गुणज्ञानने । ख पर
 प्रकाशक भावै जौ । परचाय घरम अनंतता । भेदाभेद स्व
 भावै जौ ॥ (चाल) ॥ जे मोक्ष परणति सकल ज्ञायक
 बोध वास विलासता । मति आदि पंचप्रकारनिरमल सिद्ध
 साधन लंडना । स्वादाद शंगौ तत्वरंगी प्रथम भेद अभेद
 ता । सविकल्पने अविकल्प वस्तु सकल संसयछेदता ॥ ६१ ॥

॥ॐ॥ (ढाल) ॥ॐ॥ भक्ष अभक्षन जे विण लहीयै । पेय
 अपेय विचार । कृत्य अकृत्य न जे विण लहीयै । ज्ञान ते
 सकल आधाररे ॥ (भ०) ६२ ॥ प्रथम ज्ञाने पौठे अहिंसा ।
 औसिद्धातै भाष्य । ज्ञाने बंदो ज्ञान मनिंदो । ज्ञानीयै
 शिवसुख चाखुं रे ॥ (भ० सि०) ६३ ॥ सकल क्रियाहुं मूलतै अ
 जा । तेहनुं मूल जे कहौइ । तेह ज्ञान नित नित बंदो
 जै । ते विण कहो किम रहौइ रे ॥ (भ०) ६४ ॥ पांच ज्ञान
 मांहे जेह सदागम । स्वपर प्रकाशक तेह । दौपकपरै विमु
 वन उपगारी । वलिजिम रवि शशि मेंहरे ॥ (भ० सि०) ६५ ॥
 लोक ऊरध अंध तिर्यग ज्योतिष । वैमानिकने सिद्धि । लो
 क अलोक प्रगट सवि जेह छी । ते ज्ञान सुख सुखी रे
 ॥ (भ० सि०) ६६ ॥ (ढाल) ॥ॐ॥ ज्ञानावर्ण जे कर्मठै । जयउं
 पशम तमुथायै रे । तो होइ ए हीज आतमा । ज्ञान अगो
 घता जाइ रे ॥ (वी० तु०) ६७ ॥ (अ० ह्रीं पर०) ॥ॐ॥ इति सात
 मो श्रीज्ञानपद कलशपूजा सं० ॥ ७ ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ आठमे श्रीचारित्रपद पूजालि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (दूहा) अष्टमपद चारित्रनो । पूजा धरी समे
 द । पूजत अनुभवरस मिलै । पातिक होय उल्लेद ॥१॥ ॥ॐ॥
 आराधिया खंदिअ सक्रियस । नमो नमो संयम वीर
 यसा । सज्जावणासंग विवद्वियस । निष्वाण दाणाइ स
 मुज्जियस ॥ वली ज्ञानफल ते धरीयै सुरंगै । निरासंसाता
 द्वारोष प्रसंगै । भवां बोध संतारणे दानमुल्यं । धरुं तेह
 चारित्र अपाप्त मूल्यं ॥ ६८ ॥ होइ जास महिमा धकी रं

क राजा । वलौ द्वादशांगौ भणौ होइताजा । वलौ पाप
रूपोपि निःपाप आयै । यदि सिद्धते कर्मनें पार जायै ॥६८॥
॥०॥ (ढाल) ॥०॥ चारित्र्यगुण वलि वलि नमो । तत्व रम
ण जस मूलो जी । पर रमणीय पणो टलै । सकल सिद्धि
अनुकूलो जी । (चालि) । प्रतिमूल आश्रवत्याग संयम
तत्वधिरता दममयी । सुचि परमखंती मुनि दसेपद पंच
संवर उपचयी । सामायिकादिक भेद धरमे यथा ख्यातै
पूरणता । अकषाय अकुलस अमल उज्ज्वल कामकमल चू
रणता ॥७०॥ ॥०॥ (ढाल) ॥०॥ देसविरतनें सक विर
तिजे । ग्रहीयतिनें अभिराम । ते चारित्र्य जगत जयवंतु ।
कीजै तास प्रणाम रे (भ०सि०) ७१ ॥ दणपरै जेष्टदंष्ट
सुखठंठी । चक्रवर्त्त पिण वरिड । ते चारित्र्य अखय सुख
कारण । ते मे मन मांहि धरिउरे (भ०सि०) ७२ ॥ ह्वा
रांक प्रणै जे आदरि । पूजित इंद नरिंद । असरण सरण च
रण ते बंदु । वरिड ज्ञान आनंदरे (भ०सि०) ७३ ॥ वारमास
परजाइ जेहने । अनुत्तर सुख अतिक्रमिइ । शुक्ल सुकल
अभिजात्यते जपरि । ते चारित्र्यनें नमौइ रे (भ०सि०)
७४ ॥ चयते आठ करमनो संचय । रिक्त करै जे तेह ।
चारित्र्य नाम निरुक्त भाष्यु । ते बंदु गुण गेहरे (भ०सि०)
७५ ॥०॥ (ढाल) ॥०॥ जाणि चारित्र्य ते आतमा । निज
स्वभाव मांहि रमतो रे । लेखाशुद्ध अलंकृत्यो । मोहवनें
नवि भमतो रे । (बी० तुमे०) ७६ ॥ उ ह्रीं प० ॥ ॥ इति
आठमी श्रीचारित्र्यपद कलशपूजा ॥ ॥

॥ ॐ ॥ हिवै ६मौ तप पद पूजालि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (दुहा) करमकाष्ठ प्रतिजालवा । परतिष्ठ अग्नि
समान । ते तप पद पूजो सदा । निरमल धरियै ध्याना॥१॥
कम्पहू मोन्मूलन कुंजरस्स । नमोऽतिष्ठ तपोयरस्स । अ
खेग लङ्घीण निबंघणस्स । दुस्सवन्त अत्याणय साहणस्स
॥ ७७ ॥ इय नवपय सिद्धिं लद्धि विज्जासमिद्धं । प्रयन्ति
सरवणं ह्रीति रेहासमग्गं । दिसिवय सुरसारं खोणि
पौढावयारं । तिजय विजयचक्कं सिद्ध चक्कं नमामि ॥ ७८ ॥
त्रिकालक पणं कर्मकपाय टाले । निकाचित पणं बांधिया
तेहवाले । कच्चो तेह तप वाच्च अभ्यंतर दुभेदै । जमा
युक्तिं निहेत दुध्दानी छेदै ॥ ७९ ॥ होइं जास महिमायकी
लब्धसिद्धि । अवांठक पणं कर्म आवरण शुद्धिः । तपो तेह
तपजे महानंद देते । होइं सिद्धि सीमंतनौ निज संके
ते ॥ ८० ॥ इम नव पद ध्यावै । परम आनंद पावै । नव भव
सिब जावै । देव नर भवज पावै । ज्ञानविमल गुण गावै
सिद्धचक्रप्रभावै । सबदुरति समावे विश्व जयकार पावै
॥ ८१ ॥ (ढाल) ॥ ॐ ॥ इह्यारोघन तप नमो । वाच्च अभ्यं
तर भेदै जौ । आतम सत्ता एकता । पर परणित उल्लेदै
जौ ॥ १॥ (उल्लाखो) उल्लेदै कर्म अनादि संतति जेह सिद्ध
पणो वरइ । सुभयोग संग आहार टाली भाव अक्रियता
करो । अंतर सुद्धरत तत्व साधै सर्वसंवरता करौ । निज
आत्मसत्ता प्रगट भावै करो तप गुण आदरौ ॥ ८२ ॥ ॥ ॐ ॥
(ढाल) इम नव पद गुणमंढलं । चउनिछोप प्रमाणे
जौ । सात नये जे आदरै । सम्यग् ज्ञाने जाणै जौ ।

(चालि) निरधार सेतौ गुणें गुणगो करइ जे बडमान ए
जसु करणईहा तत्व रमणें थायै निरमल ध्यान ए । इम
शुद्ध सत्ता भलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरै । अक्षय अनंत
महंत चिदधन परम आनंदता वरै ॥८३॥ कलश ॥ इम
सबल सुख कर गुणपुरंदर सिद्ध चक्रपदावली । सविल
द्धि विज्ञा सिद्धि मंदिर भविक पूजो मनरली । उववभा
य वर श्रीराज सारह ज्ञान धर्म सुराजता । गुरु दीपचंद
सुचरण सेवक देवचंद्र सुशोभता ॥८४॥ ॥ (ढाल) ॥ ॥
जाणंता बिडं ज्ञाने संयुत । ते भव सुगति जिणंद । जेह
आदरै करम खपेवा । ते तप सुरतरु कंदरे ॥ (भ० सि०) ८५ ॥
करम निकाचित प्रणि क्षय जाइ । क्षमा सहित जे करतां
ते तप नमीइ तेह दीपावै । जिनशासन जजमंतारै ॥ (भ०
सि०) ८६ ॥ आमो सहौ पसुहा बडलद्धी । होवै जास प्र
भावे । अष्ट महासिद्धि नव निधि प्रगटै । नमीयै ते तपभा
वैरे ॥ (भ० सि०) ८७ ॥ फल शिवसुख मोटुं सुर नरवर । संप
ति जेहनुं फूल । ते तप सुरतरु सरिषो वंडुं । शममकरं
द अमूलरै ॥ (भ० सि०) ८८ ॥ सर्व मंगल माहि पहिलो मंग
ल वरणवियो जे ग्रंथै । ते तप पद त्विकरण नित नमिइं ।
वरसहाय सिवपंथरै ॥ (भ० सि०) ८९ ॥ इम नव पद युगुतो
तिहां लीणो । ऊठ तनमय श्री पाल । सुजसविलास ठै
चोथै खंडे । एह इग्यारमौ ढाल रे ॥ (भ० सि०) ९० ॥ ॥
(ढाल) ॥ ॥ इह्वा रोधन संवरी । परणित समता योगै
रे । तप ते एहिज आतमा । वरतै निजगुण भोगैरे ॥ (वी०)
९१ ॥ आगमनो आगमतणो । भाव ते जाणो साचो रे ।

आत्म भावै थिरहुउ । परभावे मतराचोरे ॥ (वी०) ६२ ॥
 अष्ट सकल सृष्टिमे । षंठ मांहि ऋद्धि दाखोरे । तिम
 नव पद ऋद्धि जाणज्यो । आत्मराम ठै साखीरे ॥ (वी०)
 ६३ ॥ योग असंख्य ठै जिन कछ्या । नवपद मुख्यतेजाणो रे
 एह तणें अविलंबने । आत्म ध्यान प्रमाणो रे ॥ (वी०) ६४ ॥
 ढाल बारमी एहवी ॥ चोथै खंठै पूरीरे । वाणीवाचक
 जस तणी । कोइय नर होय अधूरो रे ॥ (वी०) ६५ ॥ ॥
 उं ह्रीं अर्ह परमात्मने । अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये । जग
 जरा मृत्यु निवारणाय । श्रीमत् सिद्धचक्राय । वसं । पंच
 मृतं । चंदनं । पुष्पं । धूपं । दीपं । अक्षतं । नैवेद्यं । कलं ।
 वल्गं । ययामहे ॥ ॥ इति श्री सिद्धचक्र माहात्म्यौ
 नवपदजीकी पूजा संपूर्णम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ नवपद पूजादिक । सब पूजायोमे । (जो)
 सामग्री अवस्थ चहिये (सो) सबके याददास्ती खातर ।
 केई चीजों के नाम लिखते हैं ॥ ॥ (पंचाशत) दूध ।
 दही । घृत । मिथी । शुद्धजल ॥ केसर । सुगंध चंदन ।
 कपूर । कस्तूरी । अंबर । रोलौ । मोलौ । ठूठा फूल ।
 फूलोंकी माला । फूलोंका चंद्रवा । धूप चावल प्रमुख नव
 जातके घान । (नव) प्रकारके नैवेद्य । (नव) प्रकारके फल ।
 (६) प्रकारके प्रक्षवस्तु । मिथी । पतासा । उला । प्रमुख । अंग
 लहणा खातर सपेद वस्त्र । पहरावणी खातर उत्तम रेसमी
 प्रमुख वस्त्र । नासच्चेप । गुलाबजल । अत्तर इत्यादिक जोर
 (नव) नालीके कलस (६) रकेवी । परात । तपला । अर

तौ । भंगलदीप । भगवानकै अंगौ । समो सरण । इत्या
दिक सब चीज पहली ठीक करके । रखे इससे पूजामे
विघ्न न होय इहां संचेपविधि कह्यौ । विसेपविधि गुरुके
मुखसे जाण लेखी ।

॥३॥ (अथ सबकै जाणने को नवपदकी पूजा करण
को कलस ढालणकी विधि कहते है) ॥३॥

॥३॥ चैव सुदि १५ (तथा) आसोज सुदि १५ के दिन
आबिया (६) कीजै । पंचामृत मोटे घट प्रमुखमे करे ।
थापना में औफल रोक नाणो धरै । पीठे गुरुके पास
मंत्राय कै केसरसे तिलक करै । कांकणनोरा हाथ में बांधै
दहणें हाथमें साधियो करिके । विधिसंयुक्त स्नात पढावे ।
पीठे श्री अरिहंत पदमें (चावल) (तथा) घूप दीप नैवेद्या
(प्रमुख) अष्टद्रव्य बासचप नागरबेल प्रमुख पात रक्कीबीमें
धरके । हाथमें रखे । नव कलशके मोली बांधै । कुंकुमरा
साधिया करे । पंचामृतसे भरिके । कलश हाथमें लेके
पूजा प्रहै । संपूर्ण होणें से कलश ढाले । बग्नौ परातमें
प्रतिमा जी पधरावै ॥ ३ ॥ छीं लामो अरिहंताण । इस
भाफक कहतो थको । अरिहंत पदकी पूजा करे । अष्ट
द्रव्य अनुक्रमे चढावै । इति प्रथम पूजाविधि ॥१॥ (दूसरै)
सिद्धपद रक्तवर्ण । गह्वं रक्कीबीमें धरै । औफल (तथा) अ
ष्टद्रव्य लेकर । (६ कलश) पंचामृतसे भरिके पूजा प्रहै ।
(पूर्ण होणेंसे) ३ छीं लामो सिद्धस कह्यौ । (कलश ढालै) ।
अष्ट द्रव्य चढावै ॥३॥ इति द्वितीय पूजा विधि २ ॥३॥

(तीसरै) श्रीआचार्यपद । पीलेवर्ण । चिण्णैकी दालि । अष्ट
द्रव्य । श्रीफलप्रमुख लेके । कलश (६) पंचामृतसें भरिके
पूजापट्टे । पूर्ण होणैसें । भुङ्गीं एमो आचरियाणं (कही) ।
कलश ढाले । द्रव्य चढावै ॥ इति द्वितीय पूजा ॥३॥
(चौथेपदे) श्रीउपाध्याय जी । नीले वर्ण । मूंगप्रमुख अष्ट
द्रव्यलेके पूर्वोक्तविधिसें पूजा करै संपूर्ण होणैसें । एमो
उपाध्यायेभ्य (कही) कलश ढाले । अष्टद्रव्य चढावै । इति
चौथी पूजाविधि ॥४॥ (पांचमे) श्रीसाधुपद । स्वामवर्ण
उद्गद प्रमुख लेवै । उर पूर्वोक्तविधिः । (पूर्ण होणैसें) एमो
सर्वसाधुभ्यः । इति पंचमी पू ॥५॥ (छठे) दर्शनपद खेत
वर्ण । चावल प्रमुख पूर्वोक्तविधिसें । एमो दंडशख ॥ इति
छठी पूजाविधि ॥६॥ (सातमे) औचान पद । खेत वर्ण
चावल प्रमुख पूर्वोक्तविधिसें । एमो नाणस ॥ इति सातमी
॥७॥ (आठमे) चारित्रपद । खेतवर्ण । चावलप्रमुख
पूर्वोक्तविधिः । एमो चारित्तस ॥ इति आठमी पूजा
विधि ॥८॥ (नवमे) तपपद । खेत वर्ण । चावलप्रमुख
पूर्वोक्तविधिसें । एमो तवस (कही) कलश ढाले । अष्टद्रव्य
चढावै । पीठै अष्ट प्रकारी पूजा करे । आरती करै ।
इति नव पदजौकी पूजाविधि संपूर्णम् ॥९॥

॥ अथ वासन्तेप पूजा लिख्यते ॥

॥ तीरथपति अरिहानम् । धरमधुरंधर धीरोजी ।

देसना अमृत वरसता । निज वीरज वर वीरोजी ॥१॥

(चालि) वर अखय निर्मल ज्ञान भासन सर्व भाव प्रकास
ता । निज शुद्ध अज्ञा आत्मभावै चरण धिरता वासता । जि
न नाम कर्म प्रभाव अतिसय प्रातिहारज सोभता । जगजंतु
पवंत भगवंत भविक जननें थोमता ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं

॥ वासं ययामहे स्वाहा ॥ ॥ इति अ० वासन्तेय
॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ (ढाल) ॥ सकल कर्म मलक्षय करी । पूरणशुद्ध
गोत्री । अव्या बाध प्रभुतामई । आतम संपति भूषो जी ।
१) जे भूप आतम सहज संपति शक्ति व्यक्तिपणें करी ।
य क्षेत् खकाल भावें गुण अनंता आदरी । खख
गुणपर्याय परणित सिद्ध साधन पर भणी । सुनिराज
सर हंस सम वद नमो सिद्ध महागुणी ॥ २ ॥ ॐ ॥

ह्रीं प० ॥ इति सिद्धपद पूजा ॥ ॥ ॥ ॥

॥ (ढाल) ॥ आचारज सुनिपति गणी । गुण
सिं धामो जी । चिदानन्द रसखादता । परभावै निक्का
जी ॥ ३ ॥ निक्काम निरमल शुद्ध चिदधन साध्य निज

आधारथी । वरज्ञान दरसन चरणवोरज साधना व्यापार
थी । भविजीव बोधक तत्वसोधक सयल गुणसंपतिधरा ।
संवरसमाधो गत उपाधो दुविध तप गुण आगरा ॥ ३ ॥

॥ इति आचार्य पूजाः ॥ ॥ ॥ ॥

॥ (ढाल) ॥ खंतिजुआ सुत्तीजुआ । अज्जव मह्व
जुत्तानी । सच्चं सोय अकिंचणा । तत्र संयम गुणरत्तानी ॥

१ ॥ (चालि) जे रश्मा ब्रह्म सुगुप्ति गुप्ता सुमति समता
श्रुतधरा । स्वादाद वादे तत्वसाधक आत्मपर विभजन

करा । भव भीरु साधन धीरसाधन वहन धीरौ मुनिवरा ।
सिद्धान्त वायण दान समरथ नमो पाठक पदधरा ॥४॥ ॥३॥
॥ उ० ॥ ॥ इति उपाध्यायपूजा ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (ढाल) ॥ ॥ सकल विषय विषवारिनें । निहामी
निस्संगी जी । भवद्व ताप समावता । आतम साधन रंगी
जी ॥१॥ (चालि) ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणे देह निर्मम
निर्मदा । काउसग सुद्राधारि आसण ध्यान अध्यासी
सदा । तप तेज दीपै कर्म औपै नैव ठौपै पर भणी । मुनि
राज करुणा सिंधु विभुवन बंधु प्रणमुं हितभली ॥५॥ ॥३॥
॥ उ० ॥ ॥ इति साधुपद पूजाः ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (ढाल) ॥ ॥ सव्य दर्शनगुण नमो । तत्व प्रतीत
सकूपीजी । जसु निरधार सुभाव ठे । चेतनगुण जे अरूपी
जी ॥१॥ (चालि) जे अनूप अद्वा धर्म प्रगटै सयलपर ईहा
ठले । निज शुद्धसत्ता भाव प्रगटै अनुभव करुणा ऊठले ।
वज्रमान परणित वस्तु तत्वे अहव तत्तु कारण प्रणे । निज
साध्यदृष्टे सरव करणौ तत्वता संप्रतिगिणे ॥ ६ ॥ ॥ ॥
॥ उ० ॥ ॥ इति ६ दर्शनपद पूजाः ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (ढाल) ॥ ॥ सव्य नमो गुण ज्ञानने । स्वपर
प्रकासकभावे जी । पर्यायधर्म अनन्तता । भेदाभेद स्वभावे
जी ॥१॥ (चालि) जे मोक्ष प्रणित सकल ग्यायक बोध
भाव सलक्षणा । सति आदि पंचप्रकार निरमल सिद्धसा
धन लंठना । स्याद्वादशंगी तत्वरंगी प्रथम भेद अभेदता ।
सविकल्पने अविकल्प वस्तु सकल शंसय ज्ञेयता ॥ ७
॥ ॥ इति ज्ञान पूजाः ॥ ॥ ॥

॥ ॐ ॥ (ढाल) ॥ ॐ ॥ चारित्र गुण वलि वलि नमी ।
तत्त्व रमण जसु भूलो जी । पर रमणीय पणो टलै । सकल
सिद्धि अनुकूलो जी ॥१॥ प्रतिकूल आश्रय त्यागसंवर तत्त्व
धिरता दममई । सुचि परमखंती मुनि दसे पद पंच सं
वर उपचई । सामायकादिक भेद धरमें यथास्थायी पूर्ण
ता । अकसाय अकुलस अमल उज्जल कामकमल चूर्णि
ता ॥ ॐ ह्रीं० ॥ ८ ॥ ॐ ॥ इति चारित्र पूजाः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (ढाल) ॥ ॐ ॥ इन्द्रारोघन तप नमु । बाह्य
अभ्यन्तर भेदे जी । आत्मसत्ता एकता । पर परणित
उद्भेदे जी ॥१॥ उद्भेद कर्म अनादि संतति जेह सिद्धपणो
वरै । सुभ जोगसंग आहार टाली भाव अक्रियता करै ।
अन्तर सुहृद तत्त्व साधै सर्व संवरता करी । निज आत्म
सत्ता प्रगट भावे करो तपगुण आदरौ ॥ ९ ॥ ॐ ॥ (ढाल)
॥ ॐ ॥ इम नवपद गुणमंजल । चौनिक्षेप प्रमाणें जी । सात
नयें जे आदरै । सम्यग्ज्ञाने जाणो जी ॥१॥ (चाल) निरधार
सेती गुणें गुणनो करै जे वज्रमान ए । जसु करण ईहा
तत्त्व रमणें थाय निरमल ध्यान ए । इम सुद्वसत्ता भलो जे
तन सकल सिद्धि अनुसरै । अक्षय अनन्त महन्त चिद
वन परम आनंदता वरै ॥ १० (कलश) ॥ इम सकल सुखक
र गुण सुरंदर सिद्धचक्र पदावली । सविलडि विज्जा सि
द्धि मंदिर भविक पूजो मनरली । उवजायवर श्रीरान
सारह ग्मान धरम सुराजता । मुरु दीप चंद्र सु चरण से
वक देवचंद्र सुसोमिता ॥१॥ ॐ ह्रीं० ॥ ॐ ॥ इति श्रीनवपद
वासुदेव पूजा संपूर्णम् ॥ ॐ ॥

॥ॐ॥ अथ ऋषिमंजल पूजा लिख्यते ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (दोषक) ॥ॐ॥ प्रणमी श्रीपारस विमल । चरण
कमल सुखदाय । ऋषिमंजल पूजन रत्न । वर विधियत
चितलाय ॥ १ ॥ नंदीश्वर मंदरगिरै । शाश्वतजिन महा
राज । अरचै अष्टविध पूजसे । जैसे सज्ज सुरराज ॥ २ ॥
तिम चित जिनपति गुणधरौ । आवक समकित धार ।
विरचै जिन चौबीसकी । अष्टविध पूजउदार ॥ ३ ॥ ॐ ॥
(गाथा) ॥ ॐ ॥ सलिल १ सुचंदन २ कुसुमभरं । दैवगकर
गंच ३ धूवदाणंच ४ । वर अकखत ५ नेविज्जयं ६ । सुभक्त
८ । पूजाय अष्टविहा ॥ १ ॥ ए अष्टविध पूजा करणं । सुणियै
सूतमज्जार । जे भवि विरचै प्रभूतणी । ते पामे भवपार ॥ २ ॥
॥ॐ॥ (दोषक) ॥ॐ॥ प्रथम जिनेश्वर तिम प्रथम ।
जोगीश्वर नरराय । प्रथम भए युग आदिमै । सकल जौव
सुखदाय ॥ १ ॥ ॐ ॥

॥ॐ॥ (राग देशाख) ॥ॐ॥ (पूर्वमुख सावनं कर दशन
पावनं । इम चालमे) ॥ ॐ ॥ विमलगिर उदयगिरिराज
सिखरो परै । तरुणतर तेज दीपत दिगिंदा । युगल भ्रम
वार करौ धरम उद्योत किय । विमल इच्छवाकुकुल जलधि
चन्दा ॥ (१) ॥ मात मरुदेवो वर उदरदरि हरिवरा ।
सकलनृप सुकुटमणि नाभिनन्दा । अखिल जगनायका सुग
ति सुखदायका । विमल वर नाण गुणमणि समन्दा ॥ (२)
दृषम लांठनधरा सकलभवमय हरा । अमर वरगीतगुण
कुसल कन्दा । गहिरसंसार सागर तरणिशम धरा । नमत

शिवचन्द्र प्रभचरण वंदो ॥ ३ ॥ ॐ ॥ (काव्यम्) ॥ ॐ ॥ स
लिल (१) चन्दन (२) पुष्प (३) फलव्रजैः (४) । सुविमलाक्षत
(५) दीप (६) सुधूपकैः (७) । विविध नव्य मधु प्रवरान्नकै
ट । जिज्ञासुमीभिरहं वसुभिर्य जे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपर
मात्मने जन्तानंत ज्ञान शक्तये । जन्म जरा मृत्यु निवार
णाय । औमद् कृष्णम जिने द्राय । जलं । चन्दनं । पुष्पं ।
धूपं । दीपं । अक्षतं । नैवेद्यं । फलं । वस्त्रं यजामहे स्वाहा
॥ ३ ॥ इति श्रीप्रथम जिने द्रास्याष्टविध पूजा ॥ १ ॥ ॐ ॥

॥ ३ ॥ अथ (२) श्रीअजितजिन पूजा लि० ॥ ३ ॥

॥ ॐ ॥ (दोषक) जय जिणंद दिणंद सम । लखि
भविकज विक सात । परमानंद सुकंदजल । विजया मात
सुजात ॥ १ ॥ ॐ ॥ (राग) आचरहो दिलवागमे प्यारेजिन
जो । (इस ख्यालके चालमे) ॥ ॐ ॥ एक अरज अवधारियै ।
(अजितजिन) एक अरज अवधारियै ॥ (आ०) ॥ अजित जि
नेसर जग अलवेसर । कूरम निजर निहारियै । (अजित
जिन एक०) । तारण तरण विरुद सुणितेरो । आयो सर
ण तिहारियै । (अजितजिन एक०) १ ॥ चरमसिंधु भव
भव जल निपतित । चरण पतित मोहितारियै । (अजित०
एक०) । परमानन्द धन शिववनितानन । कज मधुपान सु
कारियै । (अजित० एक०) ॥ २ ॥ चिरसंचित धन दुरित
तिमिर हर । तुम जिनभये तिमिरारियै । (अजित०) । क
है शिवचंद्र अजित प्रभुमेरे । एह अरज न विसारियै ।
(अजित०) ३ ॥ (काव्य) सलिल चं० ॥ ॐ ॥ ॐ ह्रीं श्री

मदजित जिनेन्द्राय । वसुद्रव्यं यजाम ॥३॥ इति त्रीणि
त जिनेन्द्राष्टाष्टविध पूजा ॥ ६ ॥॥॥

॥॥॥ अथ (३) श्रीसंभवजिन पूजालि ॥॥॥

॥॥॥ (दोधक) ॥॥॥ जय जितारि संभव सदा । श्रीसं
भवजिनराज । सकल लोक जिण जीतलीय । जीतो मोह
समराज ॥१॥॥॥ (राग) । गंधवटी घनसार केसर ऋगमदा
रस भेलौयै (ए चाल) ॥॥॥ अपरिमित वरशिखर सागर
धार संभवकार ए । जिनराय संभव पाय वंदो लहो भव
जल पार ए । वलि जलधिजात सुजात कुंजर कुंभ भंजन
जानिये । तसु जनक नाम समान नामा भवे जिनघर आ
निये ॥ १ ॥ जसु चरणपंकज मधुर मधुरस पान लव
लागौ रक्षा । मिलकरि सुरासुर खचर वितर भसर नित
चित जमझा ॥ जसु चरणकमलै पुवगलांठन कनक सुवर
ण कायए । सङ्ग भुवन नायक सुमति दायक जवनि सेना
जायए ॥ २ ॥ जसु मधुर वाणो जगवखाणो तौस सर ॥
(३५) गुणधारिणी ॥ संसार सागर भय भराकर पतित पा
रुतारिणी । स्याद्वाद पद्म कुठारधार कुमति मद तरुदा
रिणी । प्रभुवाणि नित शिवचंद्र गणिकै ऊवो मंगल का
रिणी ॥३॥ (काव्य) ॥॥॥ सलिल चंदन ॥ ३ ॥ श्रीप०
श्रीमत्संभवजिनेन्द्राय वसुद्रव्यं यजाम ॥३॥ इति तृतीय श्री
संभव जिनेन्द्राष्टाष्टविध पूजा ॥ ३ ॥॥॥

॥॥॥ अथ (४) श्रीअभिनंदन पूजालि ॥॥॥

॥॥॥ (दोधक) ॥॥॥ श्रीचतुर्थ जिनवर सदा । वज्रो

भवि चितलाय । भगति युगति संकटहरण । करणतीन
 सुध याय ॥ १ ॥ ॥ (राग सोरठी) । कुंद किरण शशि
 ज्जलो रे देवा० । (एचाल) ॥ ॥ संवरनंदन जिनवरु रे
 (वालहा) अभिनंदन हित कामीरे । जगदभिनंदन जय करु
 रे । (वा०) । दुरित निकंदन स्वामीरे ॥ १ ॥ लोका लोक प्रका
 सता रे (वा०) । करता अविचल धामीरे । अव्याबाधअरु
 पिता रे । (वा०) । विमल चिदानंदरामीरे ॥ २ ॥ वांछित
 पूरण सुरमणी रे । (वा०) । ए प्रभु अंतररामी रे । ए
 से जिन महाराजकुं रे । (वा०) चंद्र नमो सिरनामोरे ३ ।
 (काव्य) ४ ॥ ॥ सलिल चं० ॥ उ ह्रीं श्रीप० श्रीमदभिनं
 दनजिने० । वसु० ॥ ॥ इति श्रीचतुर्थाभिनन्दन जिनैंद्र
 साष्टविधपूजा ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ५ ॥ अथ (५) श्रीसुमति जिनपूजा लि० ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ (दोषका) ॥ ५ ॥ पंचम जिननायक नमुं । पंचमि
 गतिदातार । पंचनाण वर विमल कज । वन बिकसन दिन
 कार ॥ १ ॥ ॥ (राग कैरवो) वंसी तेरी दैरिणि वाले रे
 बैरिणिबाजे (एचाल) ॥ ॥ सुध भावचित धिर धरिकै रे ।
 (चित०) पूजो सुमति जिनिंद । (सुधभाव०) जिनभक्ति कर
 न रसीला । लहो परम आनंद ॥ १ ॥ (सुधभाव०) जिन
 राग सुमति समंद । बरै कुमति निकंद । (सुध०) प्रभुना
 चरण अरविदा । वदै असुर सुरिंद (सुध०) ॥ २ ॥ कनकाग
 तनु दुतिमोहै । प्रभु सुमंगला नंद (सुध) । कण्ठोपशम रस
 भरिया । बदै नित शिवचंद । (सुध) ॥ ३ ॥ (काव्य) सलिल० ।

॥ ॐ ह्रीं० श्रीमत्सुमतिजिनेन्द्राय वसु ह्रव्यं० ॥ ॐ ॥ इति
श्री सुमतिजिन पूजा ॥ ५ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ (६) श्रीपद्मप्रभ पूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (दोषक) ॥ ॐ ॥ हिवे षष्ठम जिनवर तणो । पूज
नकरज्ज उदार । भवि चित भक्ति धरो करौ । सुख संपत्ति
करतार ॥ १ ॥ ॐ ॥ (राग सारंग) हां हो० बावन चंदन
घसि कुमकुमा (एचाल) । (हां होरे वाला) पदमप्रभु सुख
चंद्रमा । नित सकल लोक सुखदाय ए (हां०) हरिसुर अ
सुर चकोरजा । नित निरष रक्षा ललचाय रे ॥ १ ॥ (हां०)
जिन सुख वचन अमृत तणो । जे अवण करै भविपांन ए
(हां०) । ते अजरामरता लहै । हरिगण करे जसु गुणगा
न ए (हां) ॥ २ ॥ घर नृप कुल नभ दिनमणि । प्रभु मात
सुसीमा नंद ए (हां०) । प्रभु दरसनेते प्रतिदिने । ऊह ज्यो
शिवचंद आणंद ए ॥ ३ ॥ (काव्य) सलिल० । ॐ० श्रीपद्म
प्रभ जिने० वसु० ॥ ॐ ॥ इति श्री पद्मप्रभ जिनपूजा ॥ ६ ॥

॥ ॐ ॥ अथ (७) श्री सुपार्श्वजिन पूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (दोषक) ॥ ॐ ॥ श्रीसुपार्श्व सुरतरु समो । कामि
त पूरण काज । भो भवियणपूजो सदा । वसु विध पूज
समाज ॥ १ ॥ (राग कल्याण) मेरा दिल लग्या जिणे सरसे
(एचाल) ॥ ॐ ॥ मेरी लगी लगन जिन वरसे (मेरी०) । जैसे
चंद चकोर भमरकी । केतकि कमल मंथुरसे (मेरी०) ।
एह सुपारसे प्रभु भए पारस । गुण गब समरख करखे

(मेरी०) चेतन लोहपणो परिहरकै । ऊयल्यै कांचन सरि
सै ॥१॥ (मेरी०) ए प्रभु कल्याणकर कुंधरि ल्यै । उरजिम
कमल भमरसै (मेरी०) । जे भवि जिनपद लगन धरै तसु
नही भय मरन असुरसै (मेरी०) ॥ २ ॥ मात पृथवि तनु
जात तनु द्युति । सम शुभ कांचन सरसै (मेरी०) । कहै
सिव चंद्र चित्त नित मेरो । रहो प्रभुपद लय भरसै ॥ ३ ॥
(मेरी०) (काव्य) सलिल० उ द्वी० श्रीमत्सुपाख्यजिनें
द्राय ॥ वसुद्रव्य० ॥ ॥ इति श्रीसुपाख्यजिनपूजा ॥ ७

॥ ॥ अथ (८) श्रीचन्द्रप्रभपूजा लि० ॥ ॥

॥ ॥ (दोषक) ॥ ॥ अष्टम जिनपद पूजियै । विविध
कष्टहरतार । अष्टसिद्धि नवनिधि लहै । जिन पूजन कर
तार ॥ १ ॥ (राग गुंठ मिश्रित मल्हार) ॥ मेष वरसै
भरी कुसुम बादल करी । (एचाल) ॥ ॥ परमपद पूर्व
गिरिराज परि उदयलहि । विजित परचंद्र दिनकर अन
न्ता । चंद्रप्रभु चंद्रिका विमल केवल कला । कलित सोमित
सदा जिन महन्ता ॥ १ ॥ (परमपद०) । कुमतिमत तिमिर
भर हरीय पुन भूरिभवि । कुसुद सुख करीय गुण रयण
हरिया । गहिर भविसिंधु तारण तरणि गुण । धारि भव
तारि जिनराज तरिया । (परमप०) ॥ २ ॥ राखियै आज
मोहिलाज जिनराज प्रभु । करण सुख चरण जिन सरण
परीया । परम शिवचंद्र पदपद्म मकरंद रस । पान नित
करण ततपर भरीया ॥ ३ ॥ (पर०) । (काव्य) सलिल० उ द्वी०
श्रीमच्चन्द्रप्रभ जिनें वसु० ॥ ॥ इति श्रीचन्द्रप्रभपूजा ॥ ८ ॥

॥३॥ अथ (६) श्रीसुविध जिनपूजा लि० ॥३॥

॥३॥ (दोधक) ॥३॥ सुविधि२ समरण यकौ । कामित
फल प्रकटाय । अतिह गहन संसार वनि । वडल अटन
मिट जाय ॥१॥ ॥ (राग) । चंपक केतक मालती (एचाल)
॥३॥ सुविध चरणकज वंदीयै ए । (अइयोवं०) नंदीयै अति
चिरकाल । सिव तरवारि निकंदीयै । विधन कंद ततकाल
॥ १ ॥ आज जनम सफलो भयो । (हांए सफ०) । दीठो
प्रभुदीदार । तनु मन दृग विकसित भये । जिम कज खलि
दिनकार ॥ २ ॥ अमृत जलधर वरसीयो । (हां० अइ०वं०)
भविउर क्षेममजार । दर्शन सुरतरु जगौयो । शिवफलनो
दातार ॥ ३ ॥ (काव्य) सलिल० । उ ह्रीं० । श्रीमत्सुविधि
जिने० वसु० ॥३॥ इति श्रीसुविध जिनपूजा ॥ ६ ॥३॥

॥३॥ अथ (१०) श्रीशीतल जिनपूजा लि० ॥३॥

॥३॥ (दोधक) मुऊ तनु मन शीतल करो । श्रीशीतल
जिनराय । तुम समरण जलधारसे । अंतर तपति पुलाव
॥१॥ (राग बाटो) । दादा कुसल सुरिंद० इस चालमें ॥३॥
॥३॥ मेरे दीनदयाल तुम भये सकल लोकप्रतिपाल । (आं०)
सुणि शीतल जिनवर महाराज । चरण शरण धर्यो प्रभु
नो आज । (मेरे दी०) न नसु सज्ज सविकारी देव । करि सुं
चरणकमलनी सेव । (मेरे०) ॥ १ ॥ जैसे सुरमणि करतल
प्राय । कुणल्यै काच शकल उलसाय । (मेरे०) तुम सम
सुरवर अव्वरन कोय । हेर२ जगनिरख्यो जोय (मेरे०) ॥ २
प्रभु दरसण जलधर धनधरे । लखिय निरतकरे भविजन

मोर (मेरे०) । पद शिव चंद्र विमल भरतार । अरज एह
उरधरियै सार (मेरे०) ॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिल० उ ह्रीं०
श्रीमन्नीतल जिनेंद्राय वसु० । इति श्रीशैतलजिनेद्रपूजा ।

॥ॐ॥ अथ (११) श्रीशेयांस जिनपूजा लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (दोषक) ॥ॐ॥ श्री शेयांस जिनेंद्र पद । नददुति
सलिलाधार । जे नेवै मज्जन करै । ते सुचिह्न विधुतार
॥१॥ (राग) सोहम सुरपति वृषभ रूप करि (इस चालमे)
॥ॐ॥ श्रीशेयांस जिणेंसर जगगुरु । इंद्रिय सदन समं दहे
असु वसु विष पूजनसें अरचो । उरधरि परमानंदहे । एस
मकित धर आवक करणी । हरिणो भव मनरंग हे । विज
यदेव जिनप्रतिमा पूजो । जोवाभिगम उवंग हे ॥ (श्री०)
॥१॥ सरीयाभ प्रभुपूजन करियो । राय पसेणो उवंगहे ।
ग्याता अंगै द्रुपदि आविका । पूज्या जिन चितवंगहे ।
जे निह्वकुमतो जिन पूजन । उथपै तेह अनन्त हे । काल
लगै भमसो भव वनमे । मन्दमतो भयभांत हे ॥ (श्री०)
॥२॥ विष्णमात तनुजात विष्णु नृप । विमल कुलांबर हंस
हे । सकल पुरंदर अमर असुर गण । शिखरि प्रभु अव
तंस हे । इण सुरवरनी परि आवक जे । पूजै जिन उठरंग
हे । ते शिव चंद्र परमपद लहिस्यै । निश्चय करौ भवभंग
हे (श्री) ॥ ३ ॥ॐ॥ (काव्य०) सलिल० ॥१॥ उ ह्रीं० श्री
शेयांस जिनेंद्राय । इति श्रीशेयांस जिनपूजा ॥ ११ ॥

॥ॐ॥ अथ (१२) नासुपूज्य जिनपूजा लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (दोषक) ॥ॐ॥ हिव वारम जिनवर तणी । पूजन

करियै सार । भाव भक्तियुत भवि सदा । द्रव्यभक्तिचित्तधार
 ॥ १ ॥ (राग) सब अरति मयनमुदार धूप (एचाल) ॥३॥
 सकल जगजन करत वंदन । जया नंदन सामिरे । (देवा)
 दुरित ताप निकंद चंदन । परम शिव पद गामिरे (देवा) ॥
 १ ॥ (सकल) नृपतिवर वसु पूज्य नृपकुल । विपिन नंदन
 जातरे । (देवा) सुहरि चन्दन नन्द नन्दन । नन्द मद्रकिय
 घातरे (देवा) ॥२॥ (स०) वासु पूज्य जिनेंद्र पूजो । सकल
 जन महाराज रे । (देवा) करत नुति शिव चंद्र प्रभुए ।
 निखिलसुर सिरताज रे । देवा । (सक०) ॥ ३ ॥ (काव्य)
 सलिल ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीमद्वासु पूज्यजिनेंद्राय वसु
 द्रव्य ॥३॥ इति श्रीवासुपूज्य जिन पूजा ॥१२॥

॥३॥ अथ (१३) विमल जिनेंद्रपूजा लि० ॥३॥

॥३॥ (दोषक) ॥३॥ विमल जिन करसुज । मलिन
 करम करि दूर । तेरम प्रभु रमियै सदा । सुऊउरमजि
 गुणपूर ॥ १ ॥ ॥३॥ (राग) सिद्धचक्र पद वंदोरे भविका ।
 (एचाल) ॥३॥ विमल चरणकज वंदोरे ॥ (सूरीजन विम०)
 वंदनसे आनन्दो रे । (सू० वि०) जसु गुणवर सुनिवरगण
 मधुकर । सेवत पद अरविंदो । श्यामा उदर सुगिति सुग
 ता फल । छत वरमा नृप वंदोरे (सूरी०) ॥१॥ सज्ज जग
 मंगल विमल करणकुं । निज शासन नभचंदो । उदय भवो
 भविकुमुद विकसिवा । वर गुणरयण समंदो रे (सूरी०)
 ॥२॥ यदि भव वंदि हरण भवि चाहो । प्रभुवंदी चिरन
 दो । विमल त्रिदांनंद धनमयरूपी नित वंदत शिवचंदो रे

(सूरी०) ॥३॥ (काव्य०) सलिल० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं० श्रीमत्
विमलजिने० ॥३॥ इति विमलजिनपूजा ॥१३॥ ॥ॐ॥

॥३॥ अथ (१४) श्रीअनन्त जिनपूजा लि० ॥३॥

॥३॥ (दोषक) ॥३॥ ह्रिव चवदम जिनपूजतां । हरियै विष
य विकार । भो भविष्य सुणियै सदा । ए प्रभु सरणाधार
॥ १ ॥ पंचवरणी अंगीरची० (एचाल) ॥ ॐ ॥ पूजकारणौ
प्रभुनौ दुरित निवारौ । (दुरि) । (आं०) अनन्त तरणी हिम
किरण तरुणतर । किरण निकर जीताहे भारी । अनन्त
नाणवर दर्शन तेजै । प्रभुसु यशोदर अवतारी (पूज)
॥१॥ लोका लोक अनंत द्रव्यगुण । पर्याय प्रगट करण
हारी । तातै अन्वययुत जिन धरियो । अनंत नाम अति
मनुहारी (पूज) ॥ २ ॥ सिंहसेन नृप नन्दन वंदन । करत
इन्द्र चंद्र सुखकारी । सादि अनंत मंग धिति धरियो ।
पद शिव चंद्र विजयधारी (पूज) ॥३॥ (काव्य०) सलिल० ।
ॐ ह्रीं० श्रीमच्चतुर्दश अनंत जिने० वसु० ॥ॐ॥ इति श्री
अनंत जिनपूजा ॥१४॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ अथ (१५) श्रीधर्मजिन पूजा लि० ॥३॥

॥३॥ (दोषक) ॥३॥ भानु भूप कुलभासु कर । पनर
मजिन सुरसार । सोभित सज्जग विपिन जन । हरष फल
दलधार ॥१॥ (राग) धारसमीरे यमुना तीरे । वसती वने
वनमाली (एचाल) ॥३॥ धर्मजिणेसर धरम धुरंधर । जग
बंधव जगबाला । मे बारी जाछ । जग० धरम० । सुवता

नंदन पाप निकंदन । प्रभुभये दौन दयाला (मैंवा० धर्म०) ॥१॥
 प्रभु धीरज गुण निरखि अमर गिरि । लजि लीनो अवला
 धारा । (मैंवा०) । जिन गंभीरता चरलसिंधु लखि । कियलो
 कांत विहारा । (मैं० धर्म) ॥२॥ एजिनचंद्र चरण अरचनते
 लहि जिनपति अवतारा । (मैंवा०) । करमवैरि दलकरि
 भवि लहिस्यो । पद शिव चंद उदारा । (मैंवा० धर्म) ॥३॥
 (काव्य) सलिल चं० ॥ ३ ॥ श्री० श्रीमत् धर्मजिने०
 वसुद्रव्यं० ॥ ३ ॥ इति धर्मजिन पूजा ॥१५॥ ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ अथ (१६) शान्तिजिनपूजा लि० ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ (दोषक) अचिराउयरे अवतरी । शान्ति करी
 सुखकार । मारि विकार मिटाव करि । नाम बख्यो शान्ति
 सार ॥ १ ॥ ॥ (राग विभास) भावधरि धन्य दिन आज
 सफलो गिणुं (ए चाल) ॥ ३ ॥ शान्ति जिनचंद्र निजचर
 णकज शरणगत । तरणि गुणधारि भववारि तारी । कुमत
 जन विपिन जनि कुमतिवन दृढनि तति । छितिनि शितधार
 तरवारि वारी ॥ (शान्ति०) ॥ एकभवि पद उभय चक्रधर
 तीर्थकर । धारिया वारिया विवन सारा । सकल मदमा
 रिया विमल गुणधारिया । सारिया भक्तवांछित अपारा ॥
 (शां०) हरिण लांछनधरा करण सुवरण करा । सुरवरा
 इहतधरा गतविकारा । मोहभट धरखिधर गणहरण व
 ज्रधर । कुसुद शिवचंद्र पद रत्ननिकारा ॥ (शां०) ३ ॥ ३
 श्री० श्रीमत् षोडश शान्तिजिने द्वाववसुद्रव्यं० ॥ ३ ॥
 इति शान्तिजिन पूजा ॥ १६ ॥ ॥ ३ ॥

॥ॐ॥ अथ (१७) श्रीकुंथुनिपूजा लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (दोषक) सतरमजिनवर दीवसम । मणि भवसा
गर जाण । भक्ति युक्ति नित पूजियै । लहौयै अमल विना
ण ॥१॥ॐ॥ (राग) अरिहंतपद नित ध्याइयै (एचाल) ॥ॐ॥
कुंथुनिणंद गुणगाइयै । (वारि) मनबंधित फल पाइयै रे ।
प्रभु समरण लय लाइयै । (वा०) भवि भवतजि शिवजाइयै
रे ॥ (कुंथु) ॥ १ ॥ भवजल मत निज आंतमा । (वा०) कर
णा चरघरिताइयै रे । चरण करण उपयोगिता । (वा०)
ग्रहण करणकुं धाइयै रे । (वा०कुं०) ॥२॥ ए प्रभु दरसन
जीवने । (वारि) अनुभव रसनोदाइयै रे । वर शिवचन्द्र
विमल वधै । दिन सोभ सवाइयै रे । (कुं०) ॥३॥ (काव्य)
सलिलचं० । उ हौं श्रीप० । श्रीकुंथुजिने० । वसु० ॥ॐ॥
इति कुंथुनिपूजा ॥ १४ ॥ ॐ ॥

॥ॐ॥ अथ (१८) श्रीअरनाथ पूजालि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (दोषक) ॥ जिनअटारमोध्याइयै । भवियण चि
समजार । करण तौन इक करसुदा । प्रतिदिन जय जय
कार । १ ॥ॐ॥ (राग वसंत) संग लागोहौ आवै । कुणखेलै
तोसुं होरी रे । संग० (ए चाल) ॥ॐ॥ निज विमल भक्ति
सैं । अरजिनसैं नितरमियै रे । (निजवि०) । जिनगुण नि
जगुण तुल्य करणकुं । चंचलचित हय दमियै रे । (नि०)
१ ॥ सुमति युवति संगन उर घरिल्लै । कुमति नारिसंग ग
मियै रे । (निज०) ॥ अनुभव अमृतपान करण तैं । विष
य विव्रत विषदमियै रे । (निज० अर०) ॥ २ ॥ जिनवर

संग रमण द्वयनलै । पंक सधन वनधमियै रे । कहै गि
वचंद्र जिनेंद्र रमणसै । भवरनमें नही भमियै रे ॥३॥ (नि
ज०) (काव्य) सलिल चं० ॥३॥ ॐ ह्रीं० । श्रीमदष्टादश
अरजिने० । वसु० ॥३॥ इति अरजिनपूजा ॥ १८ ॥ ॥३॥

॥३॥ अथ (१९) श्रीमल्लिजिनपूजा लि० ॥३॥

॥३॥ (दोषक) ॥३॥ उगुणीसस निज चरणकज । भमर हो
य लचलाय । सेवै तसु भवि भमरता । अगणित दुरित वि
लाय ॥ १ ॥३॥ (राग) मल्लिजिणंद उपगारी रे वाला ।
मल्लिजिणंद उपगारी (हरि होरे वाला) । वारी जाचं
वारहजारी रे (वा०) मल्लिजि० । कुंभनरेसर गगनांगण
सै । सहसकिरण अवतारीरे (वाला० म०) ॥१॥ पूरव भव
षटमिल नरिंद प्रति । बोधि सिंधु भवतारी । वेदलयी चिर
हीतनु धाखो । सकल संघ सुखकारी रे (वाला मल्लि०)
॥२॥ सकल कुशल हरिचंदन तरुवर । नंदनवन अनुकारी ।
संघ चतुरविध भूरिखचरगण । प्रणतचंद्रमनुहारैरे (वा०
मल्लि०) ॥३॥ (काव्य) सलिल० । ॐ ह्रीं० । श्रीमल्लिजिने०
जल० ॥३॥ इति मल्लिजिनपूजा ॥ १९ ॥

॥३॥ अथ (२०) श्रीसुनिसुव्रतजिनपूजा लि० ॥३॥

॥३॥ (दोषक) पद्मोदर वर पद्मनद । गतपर पद्मस
मान । विंशतितम प्रभु पूजिये । केवल लल्लिनिधान ॥१॥
॥३॥ (राग गरवो) सुखिचतुर सुजाण । परनारीसुं प्रीत
नी कवज्जन कीजियै (एचाल) ॥३॥ सुखि सुव्रतजिनेंद्र सुखि

जरघरि सुऊपर वर दरसण दीजियै । प्रभु दरस प्रीति
निरुपाधिकता । करियै लहियै शिवसाधकता । तब तुरत
मिटै सिव बाधकता ॥ १ ॥ (सुणि०) अमृतमें साध्यपणो
विलसै । प्रभु दरसणि साधनता उलसै । तदसुऊमें साध
कता मिलसै । (सुणि०) ॥ २ ॥ भिन्नादिकरणता यदि विघटै ।
एकाधिकरणता यदि सुघटै । तदसुऊ शिव साधकता प्रग
टै । (सुणि०) ॥ ३ ॥ एकाधिकरणता सुऊ करियै । भिन्ना
धिकरणता परिहरियै । शिवचंद्र विमलपद तदवरियै ।
(सुणि०) ॥ ४ ॥ (काव्य) सलिल० । उं ह्रीं० । विंशतितम
श्रीमंतुं सुनिसुव्रतजिने० । इति सुनिसुव्रत जिनपूजा ॥ २० ॥

॥ ❀ ॥ अथः (२१) श्रीनमि जिनपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोषक) अंतरवैरि नमाविया । तब लहियो
नमिनाम । भवियण ए प्रभु पजसै । सरीयै बंढितकाम ॥ १ ॥
(राग) हमआएहै सरण तिहारे । तुम प्रभु सरणागत तारे
वारी० (एचाल) ॥ ❀ ॥ श्रीनमि जिनवर चरण कमलमें । नय
नभमर युगधरियैरे । तिण किय गुणमकरंद पानसै । चेत
न मद मत करियैरे । (वारी) चेतन मद मत करियैरे (श्री
नमि०) ॥ १ ॥ एह चरण कज अहं निश विकसै । पर कज
निसि कुमलौवै रे (वारी पर) । एन बलै बलि तुहिन अनल
सै । अपर कमल बल जावै रे (वारी० अप०) ॥ २ ॥ ए पद
कज गुन मधुरस प्रीवत । जीव अमरता प्रावै रे (वारी०) ।
अवर कमल रस लोभी मधु कर । कजगत गज गिल जावै
रे (वारी०) ॥ ३ ॥ परकज निजगुण लक्ष्मिपालहै । पद

कज संपद देवै रे । तातै पद शिवचंद्र जिह्मिंदके । अरुनिस
सुर नर सेवै रे (वारौ०) । श्री०॥॥ (काव्य) सलिल० उ०
श्रीनमिजिने० । इति श्रीनमिजिनपूजा ॥१॥

॥३॥ अथ (२२) श्रीनेमि जिन पूजा लि० ॥३॥

॥३॥ (शेषक) श्रीनैसम जिन जगगुरु । प्रसूचारीवि
ख्यात । इस बंदन बंदन रसै । प्राप्त ताय मिष्ट जात ॥ १ ॥
(राग रामगिरी) गालबूहै बिनसन रंगसुरे । देवा एवा
त । नेमि जिह्मिंद उरवारीवै रे (वाला) विसव कलावनिवा
रीवै (वाला) । (वारौवै हारे वाला वारौवै) । एकिन नैन
विसारीवै रे ॥ १ ॥ बलघर जिन प्रभु गरजता रे (वाला)
देसना अखत वरसतारे (वाला) दिस० । वरसता हां रे
वाला वरसता । भविक मोर सुखि उलझिता रे ॥ २ ॥ समव
सरख गिरि परि रझा रे (वाला) । भामंजल चपला वझा
रे (वाला) । चपला वझा । (हां रे) । चपला वझा । सुर
नर चातक ऊमझा ॥ ३ ॥ बोध बौध उरवावीयो रे (वाला)
भवि उर जेव वझावीयो रे (वाला भवि०) । वझावीयो
हारे (वाला घा०) । भविक सुगति फल पावौयो रे ॥ ४ ॥
(काव्य) सलिल० । उ० श्री० श्रीमन्मोमि जिने० । इति नेमि
जिन पूजा (२२)

॥३॥ अथ (२३) श्रीमत्पार्श्वजिनपूजा लि० ॥३॥

॥३॥ (शेषक) ॥३॥ अश्वत्थेन नंदन सदा । बामोक्ष
खनि हीर । लोक सिखरि सोमै प्रभु । विजित करम प्र

बौर ॥ १ ॥ बाजै तेग विहुआ (इण कैरवाकी चालमै) ।
 पासजिणिंदा प्रभु मेरै मन वसीया । पासजिणिंदा प्रभु
 मेरै मन वसीया रे । मेरै दिल वसीया (पास जि०) । शिव
 कमलानन कमल विमल कल । तरमकरंद पान अतिरसी
 या (पासजि०) ॥ १ ॥ वामा नंदन मोहनि मूरत । सकललोक
 जनमन कियवसीया (पासजि०) । परमज्योति सुख चंदवि
 लोकिता । सुरनर निकर चकोर हरसीया (चकोरह०) (पा
 सजि०) ॥ २ ॥ अंजन गिरि तनु दुति जिन जलधर । देसन
 अस्त धार वरसीया (धारवर०) (पास जि०) । पौथ करि
 भवि चिरकाल तिरसीया । सुगति युवति तनु नुरत फर
 सीया (पास जि०) । कुसुद सुपद शिवचंद्र जिणिंदनी । वा
 रीजाउं मन मेरो अतिह उलसीया (पासजि०) ॥ ४ ॥
 (काव्य) सलिल० । डुही० । बयोविंशत्तम श्रीमत्पार्श्वजिने०
 इति श्री पार्श्वजिन पूजा ॥ २३ ॥

॥ ॐ ॥ अथ (२४) श्रीमद्वोरजिन पूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (दोषक) ॥ ॐ ॥ वर इक्खाकुकुल केतु सम । तिस
 लोदर अवतार । ए प्रभुनै नितकीजीयै । विविध भक्ति
 सुखकारे ॥ १ ॥ (राग तेजतरणि सुखराजै) । (हारे सुखराजै)
 प्रभु जीनो ते० (एचाल) ॥ ॐ ॥ चरम बौर जिन राया
 (हारे) जिनराया । मेरे प्रभु चरमबौर जिनराया (आ०) ।
 सिद्धारथकुल मंदिर धनसम । विशला जननी जाया ।
 निरुपम सुंदर प्रभु दरसण ते । सकल लोक सुखपाया ।
 (हारे सुखपाया) (मेरे प्रभुच०) ॥ १ ॥ वामचरण अंगुष्ठ फर

सतै । सुरगिरिवर कंपाया । इन्द्रभूति गणधर सुख सुनिजन
 सुरपति वंदित पाया । (हारे) (मेरे प्र०) ॥ ५ ॥ वरतमान
 सासन सुखदाया । चिदानंद धनकाया । चंद्रकिरणगुण
 विमल रुचिरधर । शिवचंद्र गणि गुण गाया । (हारे०
 मेरे प्र०) ॥ ३ ॥ वरसनंद सुनि नाग धरणि मित । द्वितीया
 श्विन मनभाया । धवलपद्म पंचमि तिथि शनियुत । पुरजय
 नगरसुहाया (मेरे०) ॥ ४ ॥ श्रीजिन हरष सूरौसर सांख्य
 वर खरतर गजराया । ज्योमकीर्तिशाखा भूषणमणि ।
 रूपचन्द्र उवजाया (मेरे०) ॥ ५ ॥ महापूर्व जसु भूरि नरे
 खर । बंदै पद उलसाया । तासु सौसवाचक मुखेशील
 गणि । तसु शिष नाम धराया (हारे० मेरे प्र०) ॥ ६ ॥ सम
 यसुंदर अनुग्रहि ऋषिमंजल । जिनकी शोभ सवाया । पूज
 रची पाठक शिवचंद्र । आनंद संवधाया (हारे० मेरे०) ॥
 ७ ॥ (काव्य) ॥ ॥ सलिल चंदन ॥ ३ ॥ श्रीप० चतु
 विंशतितम श्रीमद्बीरजिनेंद्राय वसुद्रव्यं य० ॥ इति
 श्रीमहाबीरजिन पूजाविधिः ॥ २४ ॥ ॥

॥ ॥ स्तम्भराट्टतद्वयं ॥ ॥ दुर्वार स्फार विमोक्त
 करटि घटोत्पाटनसृष्ट जाग्रद । वीर्यप्राग्भारोत्पाट चंचत्
 कुशल हरिदरी जित्वरी दुर्मतानां । संसारापार सिंधुस्तरण
 तरतरी भक्तिभाजामजस्रं । भव्यानां ब्रह्मपद प्रवणमधु
 करी संकरी शंकरी सा ॥ १ ॥ लोकालोक प्रलोका स्वर्लित
 विमल सदृशन ज्ञान भागुः । श्रीमज्जैनेश्वरीयं विभुवनवि
 भुतातिशयविंशतिश्च । श्रीसिद्धान्त नाथालयविशदलस्य

सर्वलोकाग्रभाग । प्रासादाग्र प्रदेशे जगति विजयते वैज
यन्ती जयन्ती ॥२॥ इति ऋषिमण्डलस्तुतिः ॥३॥

॥३॥ अथ नवपद आरती लि० ॥३॥

॥ ॐ ॥ जय जय जगजन वंछित पूरण । सुरतरु अभि
रामी । आत्मरूप विमल करतारक । अनुभव परिणामी ।
(जय२ जगसारा२ । आरती पार उतारा । सिद्धचक्र सुख
कारा) ॥१॥ जगनायक जगगुरु जिनचंदा । भज श्रीभग
वंता । आत्मराम रमा सुखभोगी । सिद्धा जयवंता । (ज
य०२) पंचाचारदीपै आचारिज । जुगवर गुणधारी । धारक
वाचक सुव अर्थना । पाठक भवतारी (जय०) ॥३॥ सम दम
रूप सकलगुण ज्ञायक । मोटा सुनिराया । दंशण नाण
सदा जय कारक । संजम तपभाया (जय०) ॥४॥ नव पदसार
परम गुरु भाषे । सिद्धचक्र सुखकारी । ए भव परभव रिद्ध
सिद्ध दायक । भव सायरवारी (जय०) ॥५॥ करजोद्री सेवक
गुण गावै । मनवंछित पावै । श्रीजिनचंद अखयपद पूजत ।
सिव कमला पावै (जय०) ॥६॥ इति नौनवपद आरती ।

॥३॥ अथ रिषिमण्डल आरती लि० ॥३॥

॥ ॐ ॥ जय जय जिन राजा । (वारी ज०) आरति
कर सिक्काजा । भव भय दुख भाजा । (जय०) ॥ १ ॥ ऋ
षभ अजित संभव जिन राया । अभिनंदन सुमति । पद्म
सुपारस चंदामभुतै । दूर ऊवै कुमति । (जय२) सुविध
सीतल येबांस सवाई । करि वारम जिनकी । विमल अनं

त धर्म प्रभु शान्ति । हर आरति तनकी । (जय०) ॥ ३ ॥
 कुंथुनाथ अर मल्लि मुनिसुव्रत । नमि नेमि श्रीकारा ।
 पार्श्वजिनेश्वर वीर जिनंदा । आत्महित कारा । (जय०)
 ॥ ४ ॥ इण विधि आरति जे भवि करसौ । भवसाथर तर
 सी । श्रीजिन चंद अखयपद फरसी । सिव कमला वर
 सी । (जय०) ॥ ५ ॥ इति श्रीकृष्णमंजुल आरती ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ कृष्णमंजुल सुणनेको (वा) पूजनेको विधि ॥ ॥

॥ ॥ (प्रथम) ॥ ॥ आद्यन्ताक्षरसंलग्न० । यह । कृष्ण
 मंजुलस्तोत्र । धूप दीपादिविधि संयुक्त आठ महिने तक
 प्रभात समय सुणे । कृष्णमंजुलमे (जो) मूलमंत्र है (सो)
 शुभदिन शुभवर्ती । हाथमे फल फूल भेट सक्ति माफक
 लेई । गुरुके पास जावे । भेट धरके विनयसंयुक्त मूलमंत्र
 ग्रहण करै । उसका ८००० जाप आठ महिनामे करै
 आविल करणको शक्ति होय (तो) सदा करै । नहिं तो ।
 आठम । चवदस । दो आविल जरूर करै । आठ महि
 नां ऊया बाद उजमणो करै । उजमणोके दिन १०८ बेर
 सुणे । पीठै शक्ति होय (तो) विधिसंयुक्त । कृष्णमंजुल
 स्थापन करायके पूजा करै । विशेष शक्ति होय तो (२४)
 प्रकारी पूजा करावे । पूजामे सामग्री ज्यो पहली नव
 पदजीकी विधि के ठिकाणे लिखी है (सो) सब सामग्री इहां
 (२४) चोईस लेणी । एक एक माहाराजकी पूजा पढाव
 के । प्रथम जल । पीठै चंदन । ऐसे अष्टद्रव्य अनुक्रमसे
 चढावे । पीठै संपूर्ण पूजा ऊया बाद । गुरुभक्ति करै ।

साहसी बल करै । इहां विशेषविधि गुरुके मुखसे स
मज्जे करणी ॥ ए ऋषमंडल सुणनेवाले पूजनेवाले भव्य
जीवोंके घरमें कभी उपद्रव न होगा । सदा आनंद उहा
ह रहेगा । इत्यलंविस्तरेण । इति ऋषमंडल सुणने (वा)
पूजन करनेकी विधि ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥ ॥ अथ भगवंत के (६) अंग पूजन दूहा ॥ १ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ जलभरी संपुटपत्रनां । युगल कि नरपूजंत । रिष
भचरण अंगूठने । दायक भवजल अंत ॥ १ ॥ जानुं बले
काउसग रक्षा । विचर्या देशविदेश । खड़ा (२) केवल ल
ह्या । पूजो जानुनरेस ॥ २ ॥ लोकांतिक वचनें करौ ।
वरखा वरसी दान । करकंठे प्रभु पूजनां । पूजो भविष्य
मान ॥ ३ ॥ मानमयुं दो अंशयी । देखौ वीर्य अनन्त ।
भुजावले भवजलतथा । पूजो खंघ महन्त ॥ ४ ॥ रत्नवय
गुण ऊजली । सकल सुगण विसराम । नाभि कमलनी
पूजना । करतां अविचल धाम ॥ ५ ॥ हृदय कमल उपसम
वले । वाल्मी रागनें द्वेष । हेम दहै वन खंठनें । हृदय ति
लकसंतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देई देशना । कंठ विवर वर
तल । मंधुर धुनि सुर नर सुणें । तिम गले तिलक अमूल
॥ ७ ॥ तौर्यं कर पदपुन्य थी । लिभुवन जिन सेवत । लिभुवन
तिलक समा प्रभु । भाल तिलक जयवत ॥ ८ ॥ सिद्धसिला
गुण ऊजली । लोकांतिक भगवंत । वसिया तिण कारण
वहौ । शिर संख्या पूजंत ॥ ९ ॥ उपदेशक नव तत्वना । तिम
नव अंग जिणंद । पूजो बह्विध भाव थी । कहै सज्ज वीर

सुगिंद ॥ १० ॥ ॐ ॥ इति श्रीजिनवर नवअंग पूजन दूहा
समाप्त ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ शिखाकारक दूहा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ जीवन्ता जिनवर पूजिइ । पूजाना फल जोय ।
राजा नमै परजा नमै । आण नलोपे कोय ॥ १ ॥ कुंभे बांध्यो
जल रहे । जल विना कुंभ न होय । ज्ञाने बांध्यो मन
रहे । गुरु विना ज्ञान न होय ॥ १ ॥ गुरु दीपक गुरु देवता ।
गुरु विन घोर अंधार । जेगुरु वाणी वेगला । रत्नवाहि
या संसार ॥ १ ॥ भावे जिनवर पूजिये । भावे दीजै दान ।
भावे भावना भाविये । भावे केवल न्यान ॥ १ ॥ प्रभू नाम
को उपधी । सुख चित्त सेखाय । रोग पीडा आपे नही ।
महा दोष मिट जाय ॥ १ ॥ पांच कोटीने फूलने । पाया
देश अटार । कुमार पाल राजा थयो । वरयो जै जैकार
॥ १ ॥ मनमोहन पारस मिल्यो । मोहन गुण सुखकंद ।
मोहनी मूरत देखके । मोहण चित्त आनन्द ॥ १ ॥ पारस
प्रभुके नामसे । सज्ज संकट मिटजाय । ईत लपट्रव भय
टलै । मोहण गुण प्रगटाय ॥ १ ॥ इति दूहा ॥

॥ ॐ ॥ अथ आइदिनछलय (ओ०) देवदंन भाष्यसे मंदर

जाणैकी पूजन करणैकी विधि लि० ॥ ॐ ॥

सू० ॥ ॐ ॥ बंदितायुद्धयुत्तेहिं । गिहिबिंवाणिसावउ ॥ पञ्च
क्लाणंतउगिरहे । अप्पणीदेवसक्खियं ॥ १ ॥ तउहयगया
भा० ॥ ॐ ॥ अबआवक घर देहरासर संबंधी जिन बिंनों को
स्तुति स्तोत्रोंसे वांदके (पीठै) पञ्चक्लाण ग्रहणकरै । आत्मा

ईहिं । जाणेहिंअ रहेहिय ॥ बंधुमित्तपरिखित्तो । वित्तं
पूयंसुत्तमं ॥ २ ॥ अन्नोसिंभवसत्ताणं । दायंतोमंगसुत्त
मं ॥ वच्चएजिणगेहम्मि । पभाविंतोयसासणं ॥ ३ ॥ अहो
धन्नोऽज्जसोउ । अहोएअस्सजीवियं ॥ अहोमाणुस्सिअंजमं ।
एयस्सय सुलइयं ॥ ४ ॥ अहोभत्तोअहोराउ । अहोएयस्स
आयरो ॥ तिलोयनाहपूयाए । पुन्रवंतस्सपच्चं ॥ ५ ॥ धन्ना
एअस्सरिबीउ । धन्नवायंपरिस्समो ॥ धन्नोअपरियणोसय

साखसै देवसाखसै ॥१॥ (अब आवक जिनालय वांदणेको कि
सीतरे जावै सो कहैहै) ॥ ॥ ॥ घोटो छाथी रथ पालकी
आदि शब्दसँ सिपाही नोकर चाकर भाई बंधु मिल (इत्या
दिक परिवार सहित) पूजाके लायक फूलफल प्रमुख उत्त
म द्रव्यलेके ॥२॥ (उरभी) भव्य जीवोको उत्तम मोक्षमार्ग
दिखाता ज्ञात्रा । जिनशासन की प्रभावना करता ज्ञात्रा ।
जिनमंदिर जावै ॥३॥ (अब वह प्रभावनाही ठगाथासे कहै
है) ॥४॥ (अहो धन्य) अहो यह पुरुष धन्यहै । अहो इस
का जीवित सफल है । अहो इसका सनुष्यजन्म पाना भी
सफल है ॥ ४ ॥ (अहोभत्तो) अहो इसको कैसी भक्ति
है । (अहो राउ कहिये) । अहो इसका बड़ा रागहै ।
अन्तरंगप्रीति है । क्या रोमरोम खुसी है । अहो तीनलो
कके नाथको पूजामे दिनदिन अधिक निर्मल बुद्धीहैं ॥५॥
(धन्यएण) धन्य इसकी रिही ज्यो दानभोग उपयोगमे
आवै है । धन्यहै यह परिश्रम जो प्रत्यक्ष देखते हैं । धन्य
हैं परिवार इसका (जो) इसकी पीछे रहता है ॥६॥

लो । जिएयमणुवत्तई ॥ ६ ॥ अहोएयसइत्थेव । जम्मेचेव
 पसंसउ ॥ भयवं अरिहंतत्ति । सबसुखाणदायउ ॥ ७ ॥
 अन्नहाएरिसीइही । कहमेयसउत्तमा ॥ रयणायरसेवाए ।
 होति रयणवंतहा ॥ ८ ॥ एएणपुखवंतेण । अखं जम्मि
 वाविउ ॥ पुखसक्खोमहाकाउ । सोइणिहंफलिउइमे ॥ ९ ॥
 (कव्वं) ॥ एवंपसंसंपकुणंतयाणं । अणेगसत्ताणदुहाहयाणं ॥
 सम्भत्तसक्खस महाफलस । तेसंतुसोचेवयकारणंतु ॥ १० ॥
 ॥ (भणियंच) ॥ जत्तियगुणपट्ठिवत्ति । सबन्नु मयम्मिअविच
 लाहोई । सच्चियवोअजायइ । बोहीएतेणनाएणं ॥ ११ ॥

(अहो ए अ०) अहो इसके इसी जन्म में सर्व सुखदाता
 अरिहंत भगवंत प्रसन्न ऊये हैं ॥ ७ ॥ (अन्नहा०)
 बिना भगवानकी प्रसन्नताकी ऐसी रिही कहाँसे आई
 (सुख्य अर्थ अन्वय करके समर्थन करे हैं) रत्नाकर
 समुद्रकी सेवासे रत्नवंत ही होय ॥ ८ ॥ इस पुन्यवंतने
 पूर्वभवके विषे महाकाय पुन्यरूपी दृष्ट बोया है । सो अबार
 इस भवके विषे फला है । प्रत्यक्ष प्रहिचाना जाता है । सुख
 संपत्तिके पाने से ॥ ९ ॥ (अब प्रभावनाका फल बतलाते हैं)
 ॥ १० ॥ इस प्रकारसे प्रशंसा करते ऊवे दुखदुर्गति से तपे
 ऐसे जीवोंके । बने है फल जिसके । ऐसा सम्यक्तेद्वका ला
 भमे । प्रशंसा कारक मनुष्योंके । वंह प्रभावक याव कही
 कारण है ॥ १० ॥ जितनी क्षमादिक गुणकी प्रतिपत्ति
 अनुमोदना प्रमुखसे भगवान का मतमे अविचल होय
 सोही जिन धर्म प्राप्ति का बीज कारण होय । धर्मपाल वरु

॥(कम्प)॥ अलङ्घ्युषिभभवोअहम्भि । लहंतितित्यस्सपभावणा
ए ॥ तित्येसरत्तअमरिंदपुज्जं । दसारसिंहोइवसेणिव्व ॥
१२ ॥ एवंविहाहिंनग्गूहिं । युवंतोअ पर्देदिणं ॥ वच्चएजिण
मेहम्भि ॥ जावयजिणवलाणयं ॥ १३ ॥ ❀ ॥

पालको दृष्टान्तसे ॥ ११ ॥ (अब दृष्टान्त करके प्रभावनाका
सर्वोत्तमफल कहै) पूर्वे नही पाया चोसठ इन्द्रो करके
पूजित । ऐसा तौर्य करपणा । तौर्यकी प्रभावनासे पावे । भव
समुद्रमे । (किसकी तरै) कृष्णकी तरै । अथवा । श्रेणिककी
तरै (जैसे) कृष्ण धावच्चापुवादिकोंकी दोक्षाका महोत्सव
कीया । श्रेणिकने वोरप्रभुकी भक्तिकरी । जिनधर्मको उन्न
ति करते तौर्य करपद उपार्जनकीया ॥ १२ ॥ अहोषन्नो
इत्यादिक पहलेकहीवाणोसे स्तुतिकरतोयको । निरंतर
जावे । भगवा नका मंदिरके दरवज्जैतक ॥ १३ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अब देवबंदन भाष्यसे प्रवेशविधि कहैहै ॥ ❀ ॥

॥❀॥ इसमें पहिला द्वार दसलिकका कहा । अब
दसलिक मध्ये (पहलालिक) ३ । निस्सही कह्योका ॥❀॥
(१ निस्सही) जिन मंदरमे पैसतां कहनो । (कहे पीठै)
वरका काम विचारणा न करै ॥ १ ॥ (दूसरी निस्सही)
प्रदक्षणा तौन दिये पीठै कहनो ॥ जिनमन्दिरमे फूटा
टूटा ठोक कराणेंको सार संभाल रक्खी थो (सोनी ठोने)
इहां द्रव्यपूजा करणी रही ॥ २ ॥ अब (तोसरी निस्सही)
कहे पीठै । निकेवल भावपूजा करै (पिण) द्रव्यपूजा न
करै ॥❀॥ ए पहला निस्सही लिक कहा ॥❀॥ (अब दूस

॥ॐ॥ मण्युत्तोवयमुत्तो । कायगुत्तो जिह्दिउ ॥ १ ॥
रियाणउवउत्तो । विक्खेवाणंविबज्जे ॥ १ ॥ (कव) सुत्त
णजंकिंचिविदेवकज्जं । नोअन्नकज्जं तु विचिंतइज्जा ॥ इत्थी
कहं भत्तकहं विबज्जे । देसस्सरन्नो नकहं कहिज्जा ॥ २ ॥
(भणियंच) ॥ मग्गाणुवेहं न वइज्जवक्कं । नजग्गकग्गाणुग
यंविबुद्धं ॥ नालीयपे सुन्नसुकक्कसंवा । योवंहियंघग्गपरंल

रात्रिक) ॥ॐ॥ ज्ञानत्रिकौ आराधना करणेंकुं तीन प्रद
क्षिणा देवै ॥ॐ॥ (तीसरात्रिक) ॥ मूलनायकगौके विंभकुं
पंचांग मिलायकर तीन प्रणाम करना ॥ॐ॥ (अवचोया
त्रिक) ॥ॐ॥ अंग ॥१॥ अग्र ॥२॥ भाव ॥३॥ विवध प्रकार
पूजा करै ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अब पूजाका अधिकार मूलगाथा संयुक्त लि
खित हैं । ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (अब प्रदक्षिणा और निसहै में कृत्याष्टक
कहे हैं) ॥ मनोगुप्तौ वचनगुप्तौ कायगुप्तौ करके युक्त
रहै । पांचों इंद्रियोंको बशराखै । गमनागमनमें उपयोगी
रहै । गीतादिक में व्याकुलता न राखै ॥ १ ॥ ज्यो कुठमी
देवकार्य को छोड़के और कार्य न विचारै । लोकया
भोजनकथा (फेर) देशकथा राजकथा न कहे ॥ २ ॥ मर्मकुं
भेदन करनेवाला ऐसा वक्त्रवचन नहो बोलै । जम्मा और
कर्मके अनुगत वचन न बोलै । किसीकुं (अर्थात्) किसी
के मा बाप का किया ज्यो खोटाकाम उसको प्रगट नही
करना (और) कर्मानुगत वचन नोकरकुं नोकर । गोलकुं

विज्जा ॥ ३ ॥ जोहोइ निसिद्धप्पा । निसीहिया तस्स भावउं
होई ॥ अनिसिद्धस्स निसीहिया । केवलमित्तं हवइसहो ॥ ४ ॥
मिहो कहाउसवाउ । जोवज्जेइजिणालए ॥ तस्स निसीहिया
होई । इइ केवलिभासियं ॥ ५ ॥ पुणो निसीहियंकायं ।
पविसेइ जिनालए ॥ पुब्बुत्तेण विहाणेणं । कुणइ पूयंतउवि
उ ॥ ६ ॥ कायं कंठूयणं वज्जे । तहा खेलाविगिंचणं ॥ थुइ
युत्तं भणेअब्बं ॥ पूयंतो जगवंधुणो ॥ ७ ॥ धुसिण कप्पूर मी

गोला (इत्यादि न बोलै) अलोक ऊठावचन न बोलै ।
चुगली न करै । अत्यन्त कठोर वचन न बोलै । (तो कैसे
बोलै) प्रमाणो पेट । आत्माकुं हितकारी । धर्म संयुक्त ऐसा
वचन बोलै ॥ ३ ॥ (ज्यो निषिद्धात्मा) । मन वचन कायाके ।
खोटेव्यापारों का निषेध । अपणी आत्मासे जिसने किया
है । उसके भावसे निस्सही होय । (जिसने) निषेध नहीं
किया (उसके) निस्सही केवल शब्दोच्चारण मात्र ही है ॥ ४ ॥
(ज्यो) जिनमन्दिर में । आपस में सब कथा न करै । उसके
निस्सही होय । (यह केवलियुं का कहा है) ॥ ५ ॥ (फेर)
आठ तह करको । उज्जल वस्त्रसे । मुखकोस बांधे ।
(पीठे) पूपादिकसे अंग शुद्धकर । निस्सही कहको । मूल गुंभा
रे में प्रवेश करै । (पीठे) पण्डितपुरुष जयणा संयुक्त पूजा
करै ॥ ६ ॥ पूजा करते ऊये शरीर में खाज न खिणै । तै
सेहो खेल खंखार न करै । जगवांधव भगवान की पूजा
करते ऊये । स्तुति स्तोत्र पढै ॥ ७ ॥ (अब पखाल कराने
की विधि कहै है) ॥ चंदन कप्पूर से मिला ऊवा । अष्टांग

संतु । काउं गंधोदगं वरं ॥ तं भुवणनाहेउं । एहवेदभक्ति
 संजुउं ॥ ८ ॥ (अन्यथाप्यक्तं) गंधोदणनहवणं । विलेवणं प
 वरं पुष्पमाईहिं ॥ कुज्जापूर्य फलेहिं च । वत्येहिं आभरण मा
 ईहिं ॥ ९ ॥ सुकुमालेण वत्येण । सुगंधेण तहेवय ॥ गाय
 इ विगयमोहाणं । निगाण मणुलुहए ॥ १० ॥ कप्पूर मी
 सियं काउं । कुंकुमं चंदणं तथा ॥ तं यं निगविंवाणि ।
 भावेण मणुलिंपए ॥ ११ ॥ वस्य गंधोवमेहिं च । पुष्पेहिं पवरे
 हिय ॥ नाणापयार वंधेहिं । कुज्जापूर्य वियक्खणो ॥ १२ ॥
 वत्य गंधेहि पवरेहिं । हिं वयाणंद दावए ॥ विले भुवण म

धजल करके । (पीठे) भुवननाथ कुं भक्तियुक्त होके । स्नान
 करावै ॥ ८ ॥ (मूलकार इसही वातकुं । दूसरे ग्रंथके
 वचनसे पुष्ट करता है) ॥ सुगंधयुक्त पाणोंसे स्नान करावै
 चंदनादिकसे विलेपन करै । प्रधान फूल (आदि शब्दसे) फल
 वत्त आभरण चंद्रवा प्रमुखसे पूजा करै ॥ ९ ॥ (इसही
 अर्थकुं विस्तारको नव गायसे कहै है) ॥ (सुकुमालेण)
 सुकुमार अल्ला कोमल सुगंधयुक्त वत्तसे । गया है मोह
 जिनका (अर्थात् जीता है मोह जिनोने) ऐसे तीर्थ करों का
 शरीरकुं बूहै ॥ १० ॥ (पीठे शुद्धभावसे) कप्पूर मिश्रित
 केसर चंदनको करके जिनविंओंको विलेपन करै ॥ ११ ॥
 वस्य गंध करके है उप्रमा जिनको (अैसे) मनोहर वर्ण ।
 मनोहर गंधसंयुक्त अनेक प्रकार के चिह्नित । जीवादि
 रहत । निर्दोस पुष्पों से उत्तम आवक पूजा करै ॥ १२ ॥
 प्रधान वत्त गंध संयुक्त । अैसे चोनांशुक । (तिनसे) हृदय

हिएड। पूयए भक्तिसंयुज ॥ १३ ॥ संखकुंदो वमेहिंच ।
अखंड फुटिएहिय ॥ अखणहिं विसिडेहिं । लिहई अठ मं
गले ॥ १४ ॥ दम्पण (१) भद्रासण (२) वद्धमाण (३) । सिरिवत्स
(४) मन्त्र (५) वरकलसो (६) ॥ सत्यिअ (७) नंदावत्तो (८)
लिहई अठ मंगलया ॥ १५ ॥ कुसुमेहिं पंचवखेहिं । पूयए
अठ मंगले ॥ चंदणेणं विसिडेणं । दले पंचंगुलौतलं ॥ १६ ॥
अगर कप्पूर मीसंतु । दहेधूवं विअखणो ॥ आरत्ति आई
पज्जंतं । करेकिच्चंतं पुणो ॥ १७ ॥ देविंद दाणविंदेहिं । नार
एणं जहा कयं ॥ पभावईए देवीए । तहा नटं करेविड ॥ १८ ॥

कों आनंद के देने वाले । विभुवन के पूजनीक । ऐसे
भगवानकों । भक्तिसंयुक्त ऊँचा यका पूजे ॥ १३ ॥ संख जैसा
नखल । कुंदके फूल सरीखा निर्मल । अखंड फूटे टूटे नही
(अैसे) चावलों करके अष्टमंगलीक लिखै रचना करै ॥ १४ ॥
दर्पण १ । भद्रासण २ । वर्द्धमान सरावसंपुट (अथवा)
सुकपासट पुरुष ३ । धीवत्स ४ । मत्स्य ५ । कलश ६ ।
खम्बिक ७ । नंदावर्त ८ । येआठ आठ मंगलोक लिखै
॥ १५ ॥ पांचवर्गके फूलों करके अष्ट मंगलीक पूजै ।
सुंदर कुंकुम मिथित चंदन से हत्यो देवै ॥ १६ ॥ अगर
कप्पूर मिथित बिचक्षण पुरष धूप खेवे (पूजा की विधि
आरती पर्यन्त) रायपमेणो । जीवाभिगम । ग्याता धर्मकथा
(इत्यादि शास्त्रों में) प्रगट देखना । पीठे भक्तों से नाटक
करै ॥ १७ ॥ (जैसे) देवेन्द्र । दानवेन्द्र । नारद । इनो
जै (आर) प्रभावती । उदायी नामा राजा की राखी ने ।

नाटक किया (और) रावण प्रमुख 'केई जीवोंने' नाटक करके । तीर्थ कर गोत्र उपांजन किया (तैसें) संका रहत होके । उत्तम पुरस नाटक करै ॥ १८ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (अब) जल चंदन पुष्पादिकसे पूजा करै । सो अगपूजा ॥ १ ॥ प्रभूके सन्मुख नैवेद्य प्रमुख चढावै (सो) अग्र पूजा ॥ २ ॥ प्रभूके सन्मुख सक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करै (सो) भावपूजा ॥ ३ ॥ (यह द्रव्य पूजाका विचार गर्भित चोथा बिक कहा) ॥ ४ ॥ (अब पांचमातिक) ॥ ५ ॥ तीन अवस्था विचारणी ॥ पिंद्रस्य (१) पदस्य (२) रूपातीत ॥ ३ ॥ इसमें पिंद्रस्य अवस्थाके तीन भेद ॥ जन्मावस्था ॥ १ ॥ राज्यावस्था ॥ २ ॥ अमणावस्था ॥ ३ ॥ (और) केवल अवस्थाको विचार करणा (सो) पदस्य अवस्था ॥ निरंजनाकार (सो) सिद्धावस्था । तिसकुं रूपातीत अवस्था कहते हैं ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ (अब षष्ठातिक) ॥ ६ ॥ तीन दिसा ठोढ़के प्रभूके साम नें निजर रखै । उर्ध्व १ ॥ अध २ ॥ तिरछी ३ ॥ दहणी । बांइ पिछांछी । निजर नहीं करै ॥ ७ ॥ (अब सात मातिक) । तीन वेर धरती प्रमार्जकै । उस ठिकाणें चैत्यवर्द्धन करै ॥ ८ ॥ (अब आठमातिक) ॥ ९ ॥ वर्णादिक तीन संपदाका ॥ हरफ सुइ उच्चारण करै (सो) वर्ण सुद्धि ॥ १ ॥ हरफोंको अर्थ पर आलंबन रखै (सो) अर्थसुद्धि ॥ २ ॥ आलंबन एक जिन प्रतिमाको रखै (सो) मन सुद्धि ॥ ३ ॥ ॥ १० ॥ (अब नवमातिक ॥ ११ ॥ तीन मुद्रा करनी ॥ जोग मुद्रा १ ॥ जिनमुद्रा २ ॥ मुक्ता मुक्ति मुद्रा ३ ॥ (इसमें) जोग मुद्रा किसकुं कहते हैं ॥ पद्म कोसाकारै । दोनुं हाथ परस्पर अंगुली मिलानी । एजोग

मुद्रायें संक्रस्तं कहियै ॥ काउसग मुद्रा (सो) जिन
मुद्रा ॥ (अर) दोसीपका जोड़ा तिस आकार हाथ रख
ना । उसकुं मुक्तां शुक्तिमुद्रा ॥ इस मुद्रासें प्रणिधान
(जय वीरराय) इत्यादिक करै ॥३॥ (अब दस मातिका) ॥
प्रणिधान तीन ॥ जिन बंदन प्रणिधान ॥ मुनिबंदन प्रणि
धान ॥ प्रार्थना प्रणिधान ॥ इसमें (जो) जावति चेइ
याइ (इत्यादि) इहसंतो तत्थ संताइ (इहां तक) जिनबंद
नप्रणिधान ॥ जावति केवि साइ (इत्यादि) तिविहेण
तिदं विरियाणं । (इहां तक) मुनि बंदन प्रणिधान ॥
जय वीररायसें (लेकै) आभवम खंजां तक । प्रार्थना रूप
प्रणिधान ॥ ॥३॥ (ऐसें दसलिका का पहला द्वार कहा) ॥
॥३॥ [अब पांच अभिगमन सांचवणे का दूसरा द्वार कह
तेहे] ॥३॥ सचित्त द्रव्य कुसमादिक अपने पास होय
उसकुं अलग रख देना ॥ (उर) राजं चिह्न मुगट ठव
खड्ग चामर पादुका अचित वस्तु ठोढ़ना । आभूषण प्रसु
खपहत्या रखना ॥ मन एकाग्र करना ॥ एक पट्ट उत्त
रासंग करना ॥ जिन विंश देखतेही (नमो भुवणबंधुणो)
ऐसें नमस्कार करना ॥ ॥३॥ ए दूसरा द्वार कहा ॥३॥
[अब तीसरा द्वार दो दिशौका] ॥३॥ पुरुष दहणी दिसा
बैठा । भगवंत को वांटे ॥ स्त्री वांटे दिस बैठके भगवंतकुं
वांटे ॥३॥ (अब चौथा द्वार तीन अभिग्रह) ॥३॥ अभि
ग्रह देव वांटेना में कहा ॥ (जयन्त) नव हाथ दूर बैठके
देव वांटे ॥ (मध्यम) नव हाथ से उपरांत बैठके देव
वांटे ॥ (उत्कृष्ट) ६० हाथ दूर बैठके देव वांटे ॥३॥

(अब पांचमा द्वार चैत्यबंदनका) ॥३॥ (सो) जघन्य ॥
 मध्यम २॥ उत्कृष्ट ३॥ तीन भेद है ॥ तिहां । एमो अरिहं
 ताणं (इत्यादिक कहके) वा । एक दोय गाथाका नमस्कार
 कहके । सक्रस्तव कहना (ए जघन्य चैत्यबंदन १) जिस देव
 बंदनमें स्थापनार्हत स्तवदंजक । नमोत्युणसें (लेके) अरिहंत
 चेइवाणं (इत्यादिक संपूर्ण कहौ) एक स्तुति कहै (सो) ॥
 मध्यम चैत्यबंदन (तथा) केई आचार्य कहै ॥ पांच दंजक
 सहित । युई गाथा (४) नौ कहनो (सो) मध्यम चैत्य बंदन
 कहिये ॥ (तथा) विधिपूर्वक सक्रस्तवादि पांच दंजक । जय
 बीय राय पर्यंत । आठे युई ए देव बांदणा । (सो) उत्कृष्ट
 चैत्यबंदन कहिये ॥३॥ (अब ठूठा द्वार) पंचांग प्रणिपात
 करै । दो जानु । दो हाथ (ऊर) मस्तक (ए) पांच अंग मि
 लावके जमीन में लगावै ॥३॥ (अब सातमा द्वार) ॥३॥
 जघन्ये एक गाथासें लेकर उत्कृष्ट एक सो आठ होक
 (तथा) काव्यसें प्रभूनौ स्तवना करै ॥३॥ (अब स्तवना कर
 नेके प्रसंगसें प्रथम नव पदके (६) चैत्यबंदन (८) स्तवन (९)
 युई लिखते हैं ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ अथ अरिहंतपद चैत्यबंदन लि० ॥३॥

॥३॥ सोइष्टदेवाय नमः ॥३॥ जय२ श्योअरिहंत भासु
 भवि कमल विकासौ । लोकालोक अरुपि रूपि समवस्तु
 प्रकासी ॥१॥ समुद्वात सुभ केवलै । जय छत मल रासी ।
 शुक्ल चरम शुचि पादसें । भयो वर अविन्यासौ ॥२॥ अंतर
 कुरिपु गण हणीए । जय अथा अरिहंत । तसु पद पंक

जमै रहित । होर धरम नित रंत ॥३॥ इति अरिहंत पद
चैत्यवंदनं ॥ जिंकिं चि० । नमोर्हत् ॥ ॥ ॥

॥३॥ अथ प्रथम पद स्तवन लिख्यते ॥३॥

॥३॥ (पूजो मनरली हां हो दादा कुशल सुरिंद पू०
एदेसी) ॥ श्री तेरमगुण वसिकै कंत । कर्मकुं भंजै श्री
अरिहंत । (मन मानले) । अष्टसमय में समय तोन । सर्व
आहार थो होवें हीन ॥ (म०) वादर काये मन वच भोग ।
तसु२ सें फुन दृढतनु योग ॥ (म०) सुषम कायते मन वच
रोक । निज बीर्ये ताकुं कर फोक (म०) ॥३॥ संचौ मातके
मन व्यापार । वेइं द्रीनें बाक्य प्रचार (म०) । आदि समय
रह्यो पणक सुजीव । सुषम लह्यो तिण जोग अतौव (म०)
(एषां योग थो समयें एक । हीना संघ गुणो कर ठेक
(मनमा०) । समया संखें जोग निरोध । कृत्वा जो लह्यो
पेध (मन०) । वेद सखें ना हारता पाय । कुशल
जिनराय । (म०) तेरमे गुणमें गुण समै देव ।
कुं नितमेव (म०) ॥५॥ इति अरिहंतपद स्तव

॥३॥

॥३॥

॥३॥

॥३॥ (अथ युई) ॥३॥ सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक
कालोक सख्यो जी । केवल ग्यान की ज्योति प्रकासक
अनंतगुणै करि पूरो जी । तौजै भव धानक आराधी गोव
तीर्यं कर नूरो जी । बारै गुणाकरी एहवा अरिहंत
आराधी गुण भूरो जी ॥ इति अरिहंत पदस्तुतिः ॥३॥

॥२॥ अथ सिद्धपद चैत्यवन्दन ॥२॥

॥३॥ श्री शैलेसौ पूर्व प्रांत । तनु हिंनत भांगी । पुब
पडथपसंगसे । ऊरधगत जागी ॥१॥ समय एकमें लोकप्रांत ।
गयो निगुण निरांगी । चेतन भूपे आत्मरूप । सुदि सालही
सागी ॥२॥ केवल दंसण नाण घीए । रूपातीत स्वभाव ।
सिद्ध भये तनु हीर धर्म । बंदे धरि सुभ भाव ॥३॥ इति
सिद्धपदचैत्यवन्दन ॥२॥

॥४॥ अथ सिद्धपद स्तवन लि० २ ॥

॥५॥ धारे महिला ऊपर मेह ऊरोखे बीनली (एदेसी)
॥६॥ अष्ट वरस नग भास हीना कोनी पूर्व में (स्हारा
लाल हो०) । उतछेटो करै बास संयोगी धाममें (स्हा०
स०) ॥ अजोगी को अंत तजे भव भव्यता (स्हारा० त०) ।
शैलेसौल है कर्मदलै गुणखणिता (स्हा० द०) ॥१॥ वखात्त
र पांच काल रहै ते योगमें । (स्हा० र०) तेरस प्रकृतिनो
अन्त करीने अन्तमें (स्हा० क०) गमन करै नगरऊसे ।
अक्रिय होयने (से०) पुव प्रयोग असंग स्वभाव अव
धने (स्व०) दूषु गुण नवपरमाण जोजन लखे कही । जो०
वर्तुल बिसदा भास निरालंबन सही (स्हा० नि०) मध्ये
जोजन अष्ट घनाकृति अन्तमें (घ०) मली पलथी हीन
भणी सिद्धांत में (भ०) ॥३॥ तनुपम्भारा नाम सिलासे जो
यने (सि०) जुग लोचन में भाग । अलोककुं सुशने
(अ०) लघु अंगुल बत्तीस प्रमाण जगहणा (प्र०) दृष्टि
धनुं शतपंच गुणासे हीनता (स्हा०) मिलिया एकमें
नंत अबाधानालही [स्हा० अ०] अष्ट प्राणधरि रस

सिरीही जो सही (सि०) बीजोपद श्रीसिद्ध धरो मन
गेहमे (स्था० धरो०) कुसलभये जगजीव मिलोगा तेहमे
[स्था० मि०] ॥५॥ इति सिद्धपद स्तवनम् ॥ २ ॥

॥ ॥ (अथ युद्धे) ॥ अष्ट करमकुं धमन करौने
गमन कियो सिववासी जी । अव्या वाध सादि अनादि
चिदानंद चिद रासी जी । परमात्म पद पूरण बिलासी
अव धन दीध विनासी जी । अनंत चतुष्टमय शिवपद
भावो केवल ग्यानी भासी जी । इति सिद्धपद स्तुतिः ॥ २ ॥

॥ ॥ अथ तृतीय पद नमस्कारः ॥ ॥

॥ ॥ जिन पदकुल सुखरस अनिल । मितरस गुण
धारी । प्रबल सबल धन मोहको । जिणते चमुहारी ॥ १ ॥
ऋग्वेदिक जिनराज गीत । नयतन विस्तारी । भव कूपै
पापे पतत । जगजन निस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारौ जीवके ।
आचारिज पदसार । तिनकुं बंदे हीर धर्म । अट्टोत्तर सो
वार ॥ ३ ॥ इति आचार्यपद नमस्कारः ॥ ३ ॥

॥ ॥ अथ आचार्यपद स्तवनलि० ॥ ॥

॥ ॥ (नणदल वींदली लैएचाल) ॥ ॥ खंती खड्गयी जे
गो । हणयो क्रोध सुभट समदेणेंहो । (गणपति गुणपेखी) ।
मान माहा गिरि बयेंरे । अति सोभन महुव बयरें
(होग०) । दंभरूप विस बेली । वर अज्जव कोलै ठेलीहो
(ग०) । सुद्धी बेलधी भरियो । लोह सागर सुत्तें तरियो
हो (ग०) ॥ १ ॥ मदन नाग मद हीनो । जिण दम सम
जंवे कीनो हो (ग०) । मोह महामल्ल ताड्यो । पुण बैराग

सुगरं पादो हो (ग०) ॥ ३ ॥ दोस गयंद वस कीनो ।
 धरि उपसम अंकुस लीनो हो (ग०) । अंतरंग रिपु
 भेदा । सुर वर पिण जिण शिषेद्याहो (ग०) । रस दानि
 गुण थी लीणो । सुत्र अरथ आगम पीनोहो (ग०) । आ
 चारिज पद दृहवो । धरी जीव कुसलता सेवोहो (ग०) ॥ ५ ॥
 इति आचार्यपद स्तवनम् ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (अथ युई) ॥ ॥ पंचाचारकुं पालै उजवाले
 दोष रहित गुणधारौ जी । गुण ठत्तीसे आगमधारौ हा
 दश अंग विचारी जी । प्रयत्न सबल घनमोह हरणकुं
 अनिल समो गुणवाणी जी । अमा सहित जे संयम पालै
 आचार्य गुणध्यानीजी । इति आचार्यपदस्तुति ॥ ३ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ चतुर्थपद नमस्कारः ॥ ॥ ॥

॥ ॥ घन घन श्री उवजाय राय । सठता वन भंजन ।
 जिन वर दिसत दुवाल संग । कर दत्त जन रंजन ॥ १ ॥
 गुणबण भंजन मण गयंद । सुख शृणि कियगंजन । कुणा
 लंघ लोय लोयणे । जत्यय सुय मंजण । महा प्राणमे जिन
 लह्योए । आगमसे पद तुर्य । तिनपे अहि निस हीर धर्म ।
 बंदे पाठक वर्य ॥ ३ ॥ ॥ इति उपाध्यायपद चैत्य ॥ ४ ॥

॥ ॥ अथ उपाध्यायपदस्तवन लि० ॥ ॥ ॥

॥ ॥ सांवलिया अलगा रङ्गेने । (एदेशी) ॥ ऊचने ३
 दूरी ऊचने । चैतन भाषै सठने (दूरीहोयने) तुं मुऊ वा
 स क्य आवै (दू०) । तुऊने कुण वतलावे । (दू० आंकसी)
 लो संगे निज मंचेद्रीनो । रचना चरस भुलाणो । नाग्यगर

शो खय उप समसे । भावेद्रौ मंजराणो (दू०) ॥१॥ द्रव्यै ते
परजाप्ते कीना । जाति नाम व्यप्रदेस । एवंतो गो तुरग
गजादिक । किण्कर्म उपदेस (दू०) ॥२॥ इत्यादिक वज्र
सुज्जु संका । तेरे संगे लागो । नीलवर्ण की समता सेतो
में भयो तोसुं रागो (दू०) ॥३॥ उप कहिये हणौयो भवि
वानो । अधियां लाभत आय । आधोनां मन पीडानामे ।
मायो येन बिलाय (दू०) ॥४॥ अधिकौ सारौये वर आगम ।
सुलसें ते उवज्जाय । तत्सेवाते हणि सठताकुं । चेतन
कुशलता पाय (दू०) ॥५॥ इति चतुर्थे पद स्तवनम् ॥॥

॥॥॥ (अथ युद्धे) ॥॥॥ अंग इग्यारै चउदै पूरव गुण
पचकौसना धारौ जी । सूत्र अरयधर पाठक कहिये
जोग समाधि विचारौ जी । तपगुण सूरु आगमपूरा नय
निष्प्रेतारी जी । सुनि गुणधारी बुध विस्तारी पाठक
पूजो अविकारी जी ॥॥॥ इति उपाध्यायपदस्तुति ॥ ४ ॥

॥॥॥ अथ पंचमपद नमस्कारः ॥॥॥

॥॥॥ दंसण नाण चरित्त करी । वर सिवपद गामी ।
धर्म सुक्त सुचि चक्रसे । आदिम खय कामी ॥१॥ गुण पमत्त
अपमत्तते । भये अंतर आसो । मानस इंदिय दमनभूत
सम दम अभिरामी ॥२॥ चारुति घन गुण गण भखो ए ।
पंचम पद सुनिराज । तत्पद पङ्कज नमत है । हौर धर्म
के काज ॥३॥ ॥ इति साधुपद चैत्यवंदन ॥ ॥ ५ ॥

॥॥॥ अथ साधुपदस्तवनलि० ॥॥॥

॥॥॥ मालन मालन मति कहो (एदेशो) ॥॥॥ निकपा

चाहत अवकास ॥३॥ इति ज्ञानपद चैत्यवर्दनं ॥ ॥॥

॥॥ अथ ग्यानपद स्तवन लि० ७ ॥॥

॥॥ इहारे अति उठरंगे (एदेसी) जिनवर भाषित
आगम भणिया । तत्त्व यथास्थिति गमिया जी (इहाँरै ।
जगजनतारु) ते उत्तम वर नाण कहायै । भवि जन अह
निस चाहै जो (इहाँ) ॥ १ ॥ भक्षा भक्ष कुपंथ सुपंथा ।
पेयापेय अग्रंथाजो (इहाँ) देव कुदेव अहित हितधारी ॥
जाणें जेण बोचारी जो (इहाँ) । २ । श्रुति मक्ति दोयठै
इंद्रौ सारु । तेण परोक्ष विचारु जो । (इहाँ) उहौ
मण केवल हैवारु । जीव प्रतक्ष सुधारु जो (इहाँ) ॥ ३ ॥
अथवि जस बलें जगजाणें । लोकादिक अनुमानें जी ।
(इहाँ) लिभुवन पूजै जासु पसायें । धारी सुभ अष्टवसा
यें जी (इहाँ) ४ ॥ नाणा वरणी उपसम ज्ञायौ । चेतन
नाणकुं बिलसै जी (इहाँ) । सप्तम पदमें भविजन हरषै ।
निसदिन कुशलता निरखै जी (इहाँ) । इति सप्तम
नाणपद स्तवनं ॥ ७ ॥ ॥॥ ॥॥ ॥॥

॥॥ (अथ घुई) ॥॥ मतिश्रुत इंद्रौ जन्मित कहि
यै लहियै गुण गंभीरो जी । आतमधारी गणधर विचारौ
दादस अंग विस्तारो जी । अवधि मनपर्यव केवल बलि
प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी । ए प्रांच ग्यानकुं बंदो पूजो भवि
जननें सुखकारो जी ॥॥ इति ज्ञानपदस्तुति ॥ ७ ॥॥

॥॥ अथ अष्टमपद नमस्कार लि० ॥॥

॥॥ जस पसायें साड पाय । जुगर् समितेद । नमन

करे सुभ भावलाय । फुण नरपति वृन्द ॥ १ ॥ जंपै धरि
अरिहंतराय । करि कर्म निकंद । सुमति पंच तोनगुप्ति
युत । दैसुख अमंद ॥ २ ॥ इषु कृति मान कसाय थोए ।
रहित लेस सुचिवंत । जोव चरंतकुं होरधर्म । नमन
करत नितसंत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदनं ॥ ८ ॥

॥ ॥ अथ चारित्रपद स्तवन लि० ॥ ॥

॥ ॥ निर्विकल्प अज निर्गुणी । चिदा भास निस्संग ।
(सुग्यानी सांभलो) । मूर्तिहीन चेतन करै । रूपी पुदगल
रंग ॥ (सुग्यानी सां०) ॥ १ ॥ सईक कारण वर्गणा ॥ कार्ये
कारण भाव (सु०) कृत्वा जोग सुधामता । लब्धा संख ख
भाव (सु०) ॥ २ ॥ पर्याप्ता लघु जोगमें । वृद्धि लहै जगमान
(सु०) मध्ये बसु समयें लहै । अंतें द्वौ तेजाण (सु०) ॥ ३ ॥ सह
कारी मानस सुखा । कारण रस्य बलेण (सु०) प्राप्तावस
प्रकारता । सप्त पृष्ठतका तेन (सु०) ॥ ४ ॥ तद्रोधन रूपी भ
लो । चेतन संयमधाम (सु०) कर वन मिल पद धर्ममें । कु
सल भवतु अभिराम (सु०) ॥ ५ ॥ इति चारित्रपदं ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (अथ युई) ॥ ॥ करम अपचय दूर खपावै आ
तम ध्यान लगावै जो । नारै भावना सूधी भावै सागरपार
उतारै जो । षटखंड राजकुं दूर तजीनें चक्रौ संजम
धारै जो । एहवो चारित्रपद नित बंदो आतम गुण हि
त्वकारै जो ॥ ॥ इति चारित्रपद स्तुतिः ॥ ८ ॥ ॥

॥ ॥ अथ तपपद नमस्कार लि० ॥ ॥

॥ ॥ श्रीकृष्णभादिक तीर्थनाथ । तद्भव सिव जाण । नि

हिअ तै रपि बाह्य । मध्य द्वादस परिमाण ॥१॥ वसु कर
मित आंमोसही । आदिक लब्धि निदान । भेदै समतायुत
खिणें । दृग्धन कर्मविमान ॥२॥ नवमो श्रोतपपद भलोए ।
इष्टा रोध सरूप । बंदनसें नित हीरधर्म । दूरभवतु भवकूप
॥३॥ इति तपपद चैत्यवंदन ॥६॥ ॥३॥

॥३॥ अथ तपपद स्तवन लि० ॥३॥

॥४॥ वारस भेद भग्या जिनराजै । बाह्य मध्यतणा
जगकाजैरे । (शिवपद श्रेणि) । तिय भव सिद्धितणा नर
ग्याता । जिनवर पिण तपना कर्तारे ॥१॥ (शि०) । समता
सहितें जिनते भागै । भली कर्म चसु पिणकारी रे (शि०)
जीव कनकसें कर्मकचोरा । दहै तप पावकका जोरारे (शि०)
॥२॥ तप तह वरना कुसमहै ऋद्धि । देव नर नौ फलते
सिद्धी रे (शि०) पाप सकलहै तमनी राखी । तपभानुसें
जाये नासीरे (शि०) ॥ जख पसायें लहियै बारू । लब्धां
सगलौ जगहित कारुरे (शि०) अति दुक्कर फुण साध्यता
हीना । काम तातें बारूकीनारे । (शि०) ४॥ इष्टा रो
धन रूपौ कहियै । तपपदही चेतन बहियै रे (शि०) पाठ
कस्यो हीरधर्म छपासें । नवपद कुसलाकुं भासैरे ॥ (शि०)
५॥ इति श्रौतपपद स्तवनम् ॥ ३॥ ॥३॥

॥३॥ (अथ युद्ध) ॥३॥ इष्टारोधन तपते भाष्यो आग
म तेहनो साखी जो । द्रव्य भावसें द्वादश दाखी जोगसमा
धि राखी जो । चेतन निजगुण परणित पेखी तेहीज तप
गुण दाखी जो । लब्धि सकलनो कारण देखी ईश्वरसें
सुख भाषी जो ॥३॥ इति तपपद स्तुतिः ॥ ६॥ ॥३॥

॥ ॐ ॥ श्रीमद्दृषभ सर्वज्ञ । दृषभांक सुवर्णसक् । जय
देवाधिदेवार्ह । न्नाभि राजेन्द्रनन्दन ॥ १ ॥ यगस्यादौ त्वया
येन । ज्ञानत्रय युतेन यत् । जनन्या मरुदेवायाः । पावनं
जठरं द्रुतं २ ॥ ॐ ॥ इति ऋषभ स्तुतिः ॥ १ ॥

॥ ॐ ॥ अर्हताजितनाथेन गजलांठन शालिना । जित
सत्त्व महीपाल । पुत्रेण कनकत्विषा ॥ ३ ॥ विजया कुक्षिर
त्रेन । भगवंस्त्वयका जिन । जिता रागादयो येन । वंदेत्वां
सर्वदा मुदा ॥ ४ ॥ ॐ ॥ इत्यजितस्तुतिः ॥ २ ॥

॥ ॐ ॥ जितारि नृपतेर्वर्थात् । संभवः संभवाभिधः । से
नायानन्दनो ह्येव । वर्णा गंधर्वलांठनः ॥ ५ ॥ सर्व सौख्य
प्रदो सुख्य । ज्ञान दर्शन संयुतः । सुनीनां पुङ्गवो देवो ।
नित्यं दिशतुर्माजिनः ॥ ६ ॥ ॐ ॥ इति संभव स्तुतिः ॥ ३ ॥

॥ ॐ ॥ सिद्धार्थानन्दनं सार्वं । वीतरागं जगत्पतिं । श्रीसं
वर समुत्पन्नं । पुत्रगांकं हिरण्यभं ॥ ७ ॥ अभिनन्दननामा
नं । विशुद्ध हृदयः सदा । यस्तौति परयाभक्त्या । सनालो
केभिनन्दते ॥ ८ ॥ ॐ ॥ इत्यभिनन्दन स्तुतिः ॥ ४ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ मेधाभिध धरित्रीश । तनयो मङ्गलप्रदः । क्रौंच
लक्षण भृङ्गेम । मरौचिर्मङ्गलांगजः ॥ ९ ॥ सत्त्वं सुमतिनाथे
श । सुमतिं तनुसत्तमां । भविनां पुण्यकर्तृणां । स्वर्गसौख्या
वलिप्रदं ॥ १० ॥ ॐ ॥ इति सुमति स्तुतिः ॥ ५ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सुसीमा पुत्रसत्त्वोक्त । नदद्यति धराधर । धरा
भिधनृपोद्भूत । पद्मलक्षणधारक ॥ ११ ॥ भवाद्यै अवसंकीर्णै ।
दुस्तरे पततां नृणां । बाणाय सततं देव । पद्मप्रभ जिनेश्वर
॥ १२ ॥ ॐ ॥ इति पद्मप्रभ स्तुतिः ॥ ६ ॥ ॐ ॥

॥ॐ॥ श्रीसुपार्श्वभिधो देवः । पृथ्वीजः स्वस्तिकांकभृ
त् । प्रतिष्ठ नृपसंजात । श्वाभीकर करोजिनः ॥१३॥ समुद्र
इव गंभीरः कर्मणां हेदनेपरः । यः सार्वः परमब्रह्मा ।
रतनौमि सदा विभू ॥ १४ ॥ॐ॥ इति सुपार्श्व स्तुतिः ॥७॥

॥ॐ॥ चंद्रमथ प्रभोकांत । चंद्रलक्षण संयुत । तमापति
द्विविज्ञान । तमोव्यूह विनासन ॥ १५ ॥ संसारजलधेनीव
महसेन नपोद्भव । लक्ष्मणाः पुत्रमांश्वामि । नव केवल बोध
भृत् ॥ १६ ॥ॐ॥ इति चंद्रमथ स्तुतिः ॥ ८ ॥ ॥

॥ॐ॥ अत्राद्यशुक्लबंधः श्लोकः ॥ संस्तुतो वोददत्वा
शु । सुरासुर नरेश्वरैः । सुविधिवींठित शर्मा । सुग्रीव नृ
पनंदनः ॥१७॥ यस्यासौज्जननी रामा । माननीया दिवौ
कसां । मानसुक्तोवदातोयो । मायौ मकरलांठिनः ॥ १८
॥ ॥ इति सुविधनाथ स्तुतिः ॥ ९ ॥ ॥

॥ ॥ (चामर बंधाविमौ) ॥ॐ॥ श्रीमद्योतलनाथेश ।
नन्दादृढरयात्मजा । भास्वत्सुवर्णवद्देह । श्रीवत्सांक्षांक धा
रक ॥१९॥ त्वदीय चरणांभोज । सेवकानां वपुर्भृतां । प्राक्
कृतंरजनव्यूहं । दुष्टंशंभोदाहे विभौ ॥ १० ॥ॐ॥ इति शीत
लनाथ स्तुतिः ॥ १० ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ विष्णुर्वंशार्कवद्देवो । विष्णु पुत्रो हिरण्यभः ।
श्रेयोदृष्टि करोजिह्व । खड्गलांठिन मृज्जिनः ॥२१॥ हित्वा
कर्म रिपूनसार्व । श्रेयांस श्रेयसैः सह । परज्ञान मयेनत्वं
महानन्दपदं परं ॥ इति श्रेयांसस्तुतिः ॥ ११ ॥ ॥

॥ॐ॥ वरौवर्त्तिरामोहा । भवतां भवतां यदि । ऊढि
तिस्त्रेदिहं चित्ते । भोभव्याः प्राप्तु मक्षरं ॥२३॥ तदाभजध

मेनंहि । वामपूज्यं जयासुतं । वसुपूज्य कुलोत्तमं । महि
षां कंचरक्षभं ॥ २४ ॥ इति वासुपूज्य स्तुतिः ॥ १२ ॥

॥ ॥ श्रीमद्विमलनाथेद्र । द्रुतवर्म समुद्भव । शूकरांक
घरस्थामा । पुत्रकण्ठ्यण दीधिते ॥ २५ ॥ चंद्रवद्विमल ज्ञान
त्वदोय स्मरणं विना । कुर्वन्मप्येतिनो ब्रह्म । प्रक्रियां नाति
विस्तरां ॥ २६ ॥ इति विमल स्तुतिः ॥ १३ ॥

॥ ॥ हेमवर्णस्य पुत्रस्य । सुयशः सिंह सेनयोः । देवस्य
श्येनचिह्नस्य । वर्णानन्त गुणोदधेः ॥ २७ ॥ इंद्रादयोपि
यस्यां तं । गुणानां लेभिरे नहि । अनन्तस्य गुणान्तस्य ।
क्षमोवक्तुं नरः कथं ॥ २८ ॥ इत्यनन्तस्तुतिः ॥ १४ ॥

॥ ॥ सुव्रतापुत्रवजांक । भानुवंशार्कसन्निभ । कनकप्रभ
सर्वज्ञ । धर्मानाथभिषेक्ष्वर ॥ २९ ॥ तवागोपि पुरश्चारी । भू
तले यात्यशोकतां । अनुत्तरकलाः संति । सतां संगतयोपि
हि ॥ ३० ॥ इति धर्मानाथ स्तुतिः ॥ १५ ॥

॥ ॥ विश्वसेन धराधीशं । नन्दनं मृगलक्षणं । आचि
रेयं सुवर्णांगं । कलावामि जिनेश्वरं ॥ ३१ ॥ तं श्रीमद्भान्ति
नामानं । यस्याग्रे कुर्वते मुदा । प्राज्यां सुमनसां दृष्टिं ।
विबुद्धा विबुधप्रियां ॥ ३२ ॥ इति शान्तिनाथ स्तुतिः ॥ १६ ॥

॥ ॥ श्रौयतायाः शिवपुत्र । श्रेयस्कार हिरण्यभ । सूरि
भूपति संजात । ज्वाललक्षणधारक ॥ ३३ ॥ कुंयुनाथजिनेश
स्य । तीर्थंकर जगत्पते । मदीयं पापसंदोहं । भवांतर द्रु
तं वनं ॥ ३४ ॥ इति कुंयुनाथ स्तुतिः ॥ १७ ॥

॥ ॥ सुदर्शन नृपोद्भूतं । नन्दावर्त्ताकसंयुतं । अंभोज
वज्रिरालेपं । देवीपुत्रं सुवर्णभं ॥ ३५ ॥ जगन्मुखागुणाः सर्वे

धुर्यं प्रभुतया जिनं । चरीकर्म्मि नमस्तस्मा । अरायपर
मात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथ स्तुतिः ॥ १८ ॥

॥ ॥ कुंभ प्रभावतो पुलौ । नीलवर्णो घटाकभृत् ।
जगन्मित्र इव ध्वान्त । नाशनाद्विदितः सदा ॥ ३७ ॥ ठव
वययुतोभाति । देवयो विष्टपत्वये । तस्य श्रीमल्लिनाथस्य
स्मरणेन सुदा सखे ॥ ३८ ॥ इति मल्लिनाथ स्तुतिः ॥ १९ ॥

॥ ॥ सुमित्र नृपतेः सूनो । पद्माकुक्षि प्रविव्रत ।
कुर्मलक्षण भृङ्गर्म्भ । दायक श्यमलव्रवे ॥ ३९ ॥ सुनिसुव्रत
देवेन । क्षौणकर्म्मार्ति मंजुल । देहि त्वं मेव्ययीभावं । पदं
तत्पुरुषोत्तमः ॥ ४० ॥ इति सुनिसुव्रत स्तुतिः ॥ २० ॥

॥ ॥ श्रीमद्विजय भूपाल । कुलोत्तंस हिरण्यवक् । व
प्रासुत नमिनाथ । नीलोत्पल सदंकभृत् ॥ ४१ ॥ यस्य पंच
जनोदेव । निन्दाच कुरुते श्रव्यं । स एति परमज्ञानं । कोपि
न ह्यत्र संशयः ॥ ४२ ॥ इति नमिनाथ स्तुतिः ॥ २१ ॥

॥ ॥ शिवायास्तनयेवर्य्य । समुद्रविजयोद्भवे । हरिवंस
हरौ शंभौ । शंखांके कमल प्रभे ॥ ४३ ॥ त्यक्त राजीमती स्ने
हे । नेमनाथे जितस्वरे । सिद्धिप्रमदयामाला । प्रत्यक्षेपि जिने
श्वरे ॥ ४४ ॥ इति नेमनाथ स्तुतिः ॥ २२ ॥

॥ ॥ अश्वसेनाख्य भूपाल । सुतेन परमेष्ठिना । वामेये
न दितायेन । कमठ स्याभिमानता ॥ ४५ ॥ तस्मै श्रीपार्श्वना
थाय । नमोस्तु मामकं सदा । पवनासन विन्हाय । नीलवर्णा
य संभवे ॥ ४६ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥ २३ ॥

॥ ॥ श्रीमत्सिद्धार्थवंशार्क । लिशलेय जगन्नाथे । महा
नाद ध्वजांहेत । कल्याणं कर सर्वदा ॥ ४७ ॥ चरमस्तोत्र

कहीर । मोहेभहनने रूगात् । त्वङ्गतिदत्तचित्ताय । कमलां
देहिमे जिन ॥ ४८ ॥ इति वीरप्रभु स्तुतिः ॥ २४ ॥ ॥

॥ ॥ इति श्रीक्षमा कल्याणजी कृत २४ जिनेश्वर स्तु
वना संपूर्णम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ (१) गाथाके । केई (२) गाथाके कुटकर
नमस्कार लि० ॥ ॥

॥ ॥ यत्न श्रीभरतेश्वरः शुचिमनाः पूर्वादि दिक्षु क
मात् । तीर्थेशः किल युग्मवर्णवसुदिक् संख्यान संख्यश्रियः ।
साधु स्थापयति स्म विद्वित हृदा दृश्यं नगाधीश्वरं । तं
चाष्टापद तीर्थराजमनिशं द्रष्टुं समीहे स्वयं ॥ १ ॥ ॥ ॥
इत्यष्टापदस्तुतिः ॥ ॥ ॥

॥ ॥ लसद्दिपंचाशदधौश्वरालयै । विराजिते श्री
मति शाश्वताश्रये । नन्दीश्वरे द्वौपदे जिनेश्वरान् । वंदे प्र
मोदाद्भवमिति शांतये ॥ इति नन्दीश्वरस्तवः ॥ ॥

॥ ॥ सकल कुशलवल्ली पुष्करावर्तमेषो । दुरितति
मिर भानुं कल्पवृक्षोपमानः । भवजलनिधिपोतः सर्व संप
त्ति हेतुः । स भवतु सततं वः श्रेयसे पार्श्वदेव ॥ इति श्री
पार्श्वजिनस्तुतिः ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ दर्शनाद्दुरितघ्नसौ । वंदनाद्वांछितप्रदः । पूजना
त्पूरकः श्रीणां । जिनसाक्षात्सुरद्रुमः ॥ १ ॥ इति जिन
स्तुतिः ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ सुवर्ण वर्णं गजराजगामिनं । प्रलंब वाङ्गं सुवि
शाल लोचनं । नरामरेद्रैस्तु तपादपंकजं । नसामि भक्त्या

ऋषभं जिनोत्तमं ॥ १ ॥ इति आदिजिन स्तुतिः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ नमस्कार समोमंलः । सलुंजय समो गिरिः । वीत
राग समो देवो । न भूतो न भविष्यति ॥ॐ॥ १ ॥ॐ॥ दिङ्हे
तुह सुहकमले । तिन्निविण्ढाद् निरवसेसाद् । दारिद्दो
हम् । जम्भान्तर संचियं पावं ॥ॐ॥ १ ॥ॐ॥ पाताले यानि
विंवानि । यानि विंवानि भूतले । खर्गेपि यानि विंवानि ।
तानि वंदे निरन्तरं ॥ॐ॥ १ ॥ॐ॥ प्रसमरसनमग्नं । दृष्टि
युग्मं प्रसन्नं । वदनकमलमंकः । कामिनीसंगमन्यः । कर
युगमपि यत्ते शूलसंबंध बंध्यं । तदसि जगति देवो वीत
राग स्वमेव ॥ॐ॥ १ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ हत्था जेठ सुलक्खणा । जे जिनवर पुजन्त ।
एकण वस्यो बाहिरा । परवर कम्मकरंत ॥ १ ॥ॐ॥ भव
बीजांकर जनना । रागादाः क्षयसुपागता यस्य । ब्रह्मा वा
विष्णु वा हरो जिनो वा नमस्तस्मै ॥१॥ॐ॥ इति गृह
देवनमस्कारः ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ सदाके देववन्दनमे (तथा) दशमे दिन । उल्लो
पारणकी विधिमें कहणेंका (चै०) (स्त०) युई लि० ।

जो धुरि सिरि अरिहंत मूलदठ पीठिपइठिउ । सिद्धि
सूरि छवजाय साऊ चिऊंसा हगरिठिउ । दंसल नाण
चरित्त तवहिं पद्मसाहे सुन्दरु । तत्तक्खरसरवणि लद्धि
गुरुपयदल मंवरु । दिसिवाल जक्खजक्खणीपमुह सुरक
सुमेहि अलंकिउउ । सो सिद्धचक्क गुरुकम्पतर अरह मन
वंठियदियउ ॥ १ ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ पुनः नवपद चैत्थवंदनलि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ श्रौअरिहंत उदार कांति । अति सुन्दर रूप ।
सेवो सिद्ध अनन्तरंत । आतम गुण भूप ॥ १ ॥ आचारज
उवजाय साधु । समता रसधाम । जिनभाषित सिद्धांतशुद्ध
अनुभव अभिराम ॥२॥ बोधबीज गुणसंपदाए । नाण चर
ण तव सुद्ध । ध्यावो परमानन्दपद । ए नवपद अविरुद्ध ॥३॥
इह परभव आनन्द कंद । जगमाहि प्रसिद्धौ । चिंतामणि
सम जास जोग । वज्र पुण्यै लद्धौ ॥४॥ तिज्जअणसार अपा
र एह । महिमा मनधारो । परिहर परजंजालजाल । नित
एह संभारो ॥५॥ सिद्धचक्र पदसेवतां । सहजानन्द स्वरूप ।
अमृतमय कल्याण निधि । प्रगट्टै चेतन भूप ॥ ६ ॥ ॐ ॥
इति श्रौसिद्धचक्र नमस्कार संपूर्णम् ॥ ॐ ॥

॥ॐ॥ अथ नवपदद्वय स्तवनलि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ सुरमणी समसज्ज संवर्मा । नवपद अभिरामीरे लोय ।
(अहो नव०) कल्याण सागर गुणनिधौ । जग अंतरजामीरे
लो० । (अहो जग०) ॥१॥ विभुवन जनपूजित सदा । लोका
लोकप्रकाशी रे । लो० (अहोलोका०) । एहवा श्रौअरिहंत
जो । नसुं चित्त उल्लासी रे लो० । (अ०न०) २ । अष्ट करम
दलक्षय करी । यया सिद्ध सरूपीरे लो० (अ०य०) सिद्ध नमो
भवि भावधी । जे अगम अरूपीरे लो० (अ०जे०) ३॥ गुण
ठत्तीसे सोभता । सुंदर सुखकारीरे लो० (अ०सु०) आचा
रज तीलै पदै । वंडुं अविकारी रे लो० (अहोव०) ४॥ आ
गमधारी उपशमी । तप दुविध आराधीरे लो० । (अ०त०)

चोथै पद पाठक नमो । संवेग समाधीरे लो० । (अ० सं०) ५ ॥
 पंचाचार पालणपरा । पंचाश्रव त्यागीरे लो० । (अ० होप०)
 गुण रागी सुनि पांचमै । प्रणसुं वप्रभागी रे लो० । (अ०
 प्र०) ६ । निज परगुणनें उलखै । श्रुत अद्वा आवै रे लो० ।
 (अ० शु०) ठड्डै गुण दरसण नमो । आतम शुभ भावै रे ।
 (लो० अ० आ०) ७ ॥ ग्यान नमो गुण सातमे । जे पंच प्र
 कारै रे लो० (अ० जे०) । खपर प्रकासक दिनमणी । अज्ञा
 न निवारै रे (लो० अ० आ०) ८ ॥ आठमै चारित्रपद नमो
 परभाव निवारै रे । (लो० अ० प०) । खंत्थादिक दस धर्म
 नो । जेह ठै अधिकारौ रे लो० (अ० जे०) ९ ॥ नवमे वलि
 तपपद नमो । बाह्याभ्यन्तर भेदैरे लो० । (अ० वा०) बांध्या
 काल अनंतना । जे कर्म उल्लेदै रे लो० । (अ० जे०) १० ॥ ए
 नवपद बडमानथी । ध्यावै शुभ भावै रे लो० । (अ० ध्या०) ।
 नृप औपालतणी परै । मन वंठित पावै रे लो० । (अ० म०)
 ११ ॥ आसु चैलकमासमां । नव आबिल करियै रे लो० ।
 (अ० न०) । नवउलीं विधियत करी । शिव कमला वरियै रे
 लो० । (अ० शि०) १२ ॥ सिद्धचक्रनी बडपरै । बर महिमा
 कीजै रे लो० । (अ० व०) औजिनलाम कहै सदा । अनुपम
 जस लीजै रे लो० । (अ० अ०) १३ ॥ इति नवपद स्तवन ।

॥ ॥ अथ पुननवपद स्तवन लि० ॥ ॥

॥ ॥ (राग माह) ॥ ॥ तोरथनायक जिनवरु जी ।
 अतिसय जास अनूप । सिद्ध अन्त महागुणी जी । पर
 मानंद सहप । भविक मनधारज्योरे ॥ १॥ धारज्यो नव

पदध्यान (भ०) श्रीआचारज गणधरुरे । गुण ठत्तोस नि
वास । पाठक पदधर सुनिवरु जी । श्रुतदायक सुविलासः
(भ०) २ ॥ सुमति गुपतिधर सोमता जो । साधू समता
वंत । सम्यग् दर्शन सुंदरु जी । ज्ञान प्रकाश अनन्त ।
(भ०) ३ ॥ संवर साधना चरण ठै रे । तप उत्तम विधि
दोय । ए नवपदना ध्यानथी रे । निरुपाधिक सुख होय ।
(भ०) ४ ॥ अमृतसम जिनधर्मनो रे । मूलए नवपद जाण ।
अविचल अनुभव कारणे जी । नित प्रति नमत कल्याण
(भ०) ५ ॥ ॥ इति नवपद स्तवनम् ॥ ॥

॥ ॥ (राग प्रभातो) ॥ ॥ नवपद ध्यान धरो रे
(भविका न०) । मन वच काया कर एकंते । विकथा दूर
हरो रे (न०) ॥ १ ॥ मंजज्झी अरुतंल वणेरा । इन सबकुं
विसरो रे । अरिहंतादिक नवपद जपने । पुण्य भंजार
भरो रे ॥ २ ॥ (न०) अमृसिध नव निध मंगल माला । संपति
सहज वरो रे । लालचंदयाकी बलिहारो । शिवतर वीज
खरो रे ॥ ३ ॥ (नव०) ॥ इति श्रीसिद्धचक्र स्तवनं ॥

॥ ॥ अथ नवपद युईलि ॥ ॥

॥ ॥ नित प्रति ऊं प्रणमुं सिद्धचक्र सुभ भाव । हिव
कारज सिद्धिनो लाघो एह उपाय । तुज नाम पसाये
आरति व्याधि पुलाय । इग तुज अनुग्रहथी सुख संपति
सुज थाय ॥ १ ॥ श्री अरिहंत नमियै सिद्ध सूरी उव
जाय । सुनिवर त्रिक करने दंसण नाण सुहाय । दुगविधि
चारित्ते बुधविध तप मन भाय । ये नवपद ध्यावतां निरु

पंम शिव सुख घाय ॥२॥ विद्या परवाहै जानो ए अधिकार
 श्रीगुरु उपदेशे सिद्ध चक्र उद्धार । प्रवचन अनुसारें भाष्यो
 एह विचार । भविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणमंडार ॥३॥
 जिनघरम अनुरागी चक्रसरि सुखकार । सेवकनें आपै
 सुख संपति परिवार । हिव निहिव उदयकरि चारित्र नंदी
 मन भाव । जिनचंद सूरौ सर खरतर पति सुपसाय ॥ इति
 नवपदस्तुतिः ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ अथ जैतीसंगुक्त नवपदउलौ करण विधिलि० ॥३॥

॥३॥ (प्रथम) आसोज शुदि ७ (अथवा) चैत्रशुदि ७ से
 उलौ सरु करै । (कदास) । तिथि बढी ऊवे तो (६) । से
 बढी होय तो आठिम से सरु करै । (पिण) आंबिल (८)
 पुनिमताई करै । (तिहां) प्रथम भूमि शुद्ध करके । मांड
 णादिक से चिह्नित करै । पीठे बाजोट ऊपरि सिद्ध
 चक्र थापे बिकाल पूजा करे । (सोलिखते हैं) प्रभात
 समय राई पत्तिकमणो करिके । पीठे वरु पडिले है ।
 (जहां) सिद्ध चक्र स्थापना है (तहां) आयके पांच शक्रसवे
 देव वादै । पीठे नव चैत्ये । (अथवा) नव प्रतिमा आगे ।
 नव चैत्यवंदन करै । वस छेप पूजा करै । पीठे केसर
 चंदणसे पूजा करै । पीठे मध्याह्न समय पांचशक्र सवे
 देव वादै । पीठे गुरु पासे आयके । राई आलोवे । अभुष्टि
 उमि खमायके आंबिलनो पञ्चक्वाण करै । प्रथम अरि
 हंत पदके वरण सपेद है । (इससें) आंबिल से चावल
 (अने) गरम पाणी यह दोइ द्रव्य लेख । असो आंबिल

पञ्चखके । पीठै अरिहंत पदके बारे गुण है सो चिंतवि के
बारै नमस्कार करै । सो लिखते हैं (प्रथम सब ठिकारों)
इष्टामिखमासमणो । वं० इत्यादि कहि के नमस्कार करै॥

१ ॥ अशोकटक्ष प्रातिहार्यसंयुताय औअरिहंताय नमः ।

२ ॥ पुष्पट्टिप्रातिहार्यसंयुताय औअरि० ।

३ ॥ दिव्यधुनि प्रातिहार्यसंयुताय औअरि० ।

४ ॥ चामरयुग प्रातिहार्यसंयुताय औअरि० ।

५ ॥ खर्णसिंहासण प्रातिहार्यसंयुताय औअरि० ।

६ ॥ भामंजल प्रातिहार्यसंयुताय औअरि० ।

७ ॥ दुंदुभिप्रातिहार्यसंयुताय औअरि० ।

८ ॥ ठवलव प्रातिहार्यसंयुताय औअरि० ।

९ ॥ ज्ञानातिशय संयुताय औअरि० ।

१० ॥ पूजातिशयसंयुताय औअरि० ।

११ ॥ वचनातिशय संयुताय औअरि० ।

१२ ॥ अपायापगमातिशयसंयुताय औअरि० ।

॥❖॥ इति द्वादश अरिहंतगुणः ॥❖॥

॥ ❖ ॥ इत्यादि नमस्कार करिके । अन्वत्यूससियेण ।
(कहिके) (१२) बारे लोगखनो काचसग करै । एकलो
गस प्रगट कहै । पीठे खस्थानक जाके । चैत्यवंदन करै ।
पञ्चक्खण पारिके । आंविल करै । पहले जल पीवे (जव)
चैत्यवंदन करिके पीवै । पीठै फेर चैत्यवंदन करिके तिवि
हार पञ्चक्खण करै । गुणगो (२०००) वुं हौं एमो अरि
हंताणं । इस पदको करै । औपालनीके चरित नवपद
महिमा सुणै । पुण पहिर दिन रहणेसें (तीसरीवेर)

पांच शक्रस्तवे देव वांदै। सामायिक लेके दिन छते पडिक
मणो करै। आरतौके समय दीप घूप कुसम पूजा करै।
(अथवा) पडिले आरती प्रमुख करिके। प्रौढ पडिक
मणो करै। (सोणैके समय) इरिया वही पडिकमके
चैत्यबंदन करिके। राई संधारा गाथागुणके सोवै। निद्रा
न आवे जहांतक नवपदका गुण स्मरण करै ॥ १० ॥ इति
प्रथम दिवसविधिः ॥ ११ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥

॥ १० ॥ अथ द्वितीय दिवस विधिलि० ॥ ११ ॥

॥ ११ ॥ अब इसीतरे दूसरे दिन प्रमाति करणी सब क
रिके सिवपदरो लालवर्ण है। (इसीसे) गड्ढेके रोटीको
आंबिल करै। ऊं ह्रीं एमो सिद्धाणं (इसपदको) गुणणो
दो हजार करै। सिद्धपदके आठगुण है। सो (८) गुणां
को गुरु नमस्कार करावै (सो लिखते हैं)।

- १ ॥ अनन्तज्ञानसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ।
- २ ॥ अनन्तदर्शनसंयुताय श्रीसि० ।
- ३ ॥ अव्यावाध गुणसंयुताय श्रीसि० ।
- ४ ॥ अनन्तसम्यक्तचारिवगुण संयुताय श्रीसि० ।
- ५ ॥ अक्षयस्थितिगुण संयुताय श्रीसि० ।
- ६ ॥ अरूपो निरंजनगुण संयुताय श्रीसि० ।
- ७ ॥ अगुरुलघु गुणसंयुताय श्रीसि० ।
- ८ ॥ अनन्तवीर्यगुण संयुताय श्रीसि० ।

॥ ११ ॥ इतिसिद्धा अष्टौ गुणाः ॥ ११ ॥

॥ ११ ॥ यह आठे नमस्कार करिके। अनन्तसि० ।

आठलोगखनो काउसग करै। एकलोगस कहिके पारै
पोछे पूर्वोक्त करणी। अनुक्रमसें करै ॥३॥ इति द्वितीय
दिवसविधिः ॥२॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ अथ तृतीय दिवसविधि लि० ॥३॥

॥३॥ पूर्वोक्त विधिसें प्रभातकर्त्तव्य करै आचार्यपद
पीले वर्ण है (इसीसें) चिणाकी दालका आंवल करै।
(३) हीं एमो आचरियाण) इस पदको गुणणो दोहजार
करै। आचार्य पदके (३६) गुण याद करके ठत्तीस
नमस्कार करै (सो लिखते है)।

॥३॥ अथ आचार्य पदके (३६) गुण लि० ॥३॥

- १ ॥ प्रतिरूप गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
- २ ॥ सूर्यवत्तेजस्वी गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
- ३ ॥ युगप्रधानागम संयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
- ४ ॥ मधुरवाक्य गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
- ५ ॥ गाम्भीर्य गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
- ६ ॥ धैर्यगुण संयुताय श्रीआ० ।
- ७ ॥ उपदेश गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
- ८ ॥ अपरिचयावी गुणसंयुताय श्रीआचा० ।
- ९ ॥ सौम्यप्रकृति गुणसंयुताय श्रीआ० ।
- १० ॥ शीलगुणसंयुताय श्री० ।
- ११ ॥ अविग्रह गुणसंयुताय श्री० ।
- १२ ॥ अविकथकगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।

- १३ ॥ अचपल गुणसंयुताय श्रीआ० ।
 १४ ॥ प्रसंत वदनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 १५ ॥ क्षमागुण संयुताय श्रीआ० ॥
 १६ ॥ षट्जगुण संयुताय श्रीआ० ।
 १७ ॥ षट्दुगुण संयुताय श्रीआ० ।
 १८ ॥ सर्व संगसुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ।
 १९ ॥ द्वादश विधितपगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 २० ॥ सप्तदशविध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ॥
 २१ ॥ सत्यवतगुण संयुताय श्रीआ० ।
 २२ ॥ सौचगुण संयुताय श्रीआ० ।
 २३ ॥ अकिंचन गुण संयुताय श्रीआ० ।
 २४ ॥ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ० ।
 २५ ॥ अनित्य भावना भावकाय श्रीआ० ।
 २६ ॥ असरण भावना भावकाय श्रीआ० ।
 २७ ॥ संसार स्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ।
 २८ ॥ एकत्व स्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ।
 २९ ॥ अन्यत्व भावना भावकाय श्रीआ० ।
 ३० ॥ असुचि भावना भावकाय श्रीआ० ।
 ३१ ॥ आश्रय भावना भावकाय श्रीआ० ।
 ३२ ॥ संवर भावना भावकाय श्रीआ० ।
 ३३ ॥ निर्जरा भावना भावकाय श्रीआ० ।
 ३४ ॥ लोकस्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ।
 ३५ ॥ बोधदुर्लभ भावना भावकाय श्रीआ० ।
 ३६ ॥ धर्मादुर्लभ भावना भावकाय श्रीआ० ।

॥ ॐ ॥ इति षड्विंशदाचार्य गुणाः ॥ ॐ ॥ यह
ठत्तीस नमस्कार करिके । अन्तर्गुण ससि एणं इत्यादि कहि
के ठत्तीस (३६) लोगसनो काउसग करै । एक लोगस
जं चै खरसें कहि के पारै । यथोक्त करणी । अनुक्रमसें
करै । इति तृतीय दिवस विधि ॥ ३ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (३) हौं नमो उवज्जायाणं इस पदको (३) ह
कार गुणको करै । हस्या मूंगके दाल प्रमुखनो आविल
करै । उपाध्याय पदके (३५) गुण यादकरि के । नमस्कार
करै ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ उपाध्याय पदके ३५ गुणलि० ॥ ॐ ॥

- १ ॥ आचारांगसुख पठनगुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ।
- २ ॥ सुयगदांगसुख पठनगुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ।
- ३ ॥ श्रोतांगसुख पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ।
- ४ ॥ श्रीसमवायांगसुख पठनगुण युक्ताय० ।
- ५ ॥ श्रीभगवतीसुख पठनगुण युक्ताय० ।
- ६ ॥ श्रीज्ञातासुखपठनगुणयुक्ताय० ।
- ७ ॥ श्रीउपासकदशासुख पठनगुण युक्ताय० ।
- ८ ॥ श्रीअन्तगद्गदशासुख पठनगुण युक्ताय० ।
- ९ ॥ श्रीअशुत्तरोववाईसुख पठनगुण युक्ताय० ।
- १० ॥ श्रीप्रश्नव्याकरणसुख पठनगुण यु० ।
- ११ ॥ श्रीविपाकसुख पठनगुण यु० ।
- १२ ॥ उत्पादपूर्व पठनगुण यु० ।

- १३ ॥ आग्रायणी पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
 १४ ॥ वीर्यप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
 १५ ॥ अस्तिप्रवाद पूर्व पठनगुणयुक्ताय० ।
 १६ ॥ ज्ञानप्रवाद पूर्व पठनगुणयुक्ता० ।
 १७ ॥ सत्यप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
 १८ ॥ आत्मप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
 १९ ॥ कर्मप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
 २० ॥ प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
 २१ ॥ विद्याप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
 २२ ॥ अविध्यप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
 २३ ॥ प्राणाद्यामप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
 २४ ॥ क्रियाविसाल पूर्व पठनगुण यु० ।
 २५ ॥ लोकविंदुसार पूर्व पठनगुण यु० ।

॥ॐ॥ इति पंचविंशति उपाध्याय गुणाः ॥ॐ॥

इस रीतसे पंचवीस नमस्कार करै (खड़ाहोके) अन्तयूस०
 (इत्यादि कहिके) पंचवीस लोगसके काउससग करै । एक
 लोगस कहके पारे । (पीठे) पूर्वोक्त करणी करै ॥ॐ॥
 इति चतुर्थ दिवस विधिः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ पंचम दिवस विधिलि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (अ) द्वौ एमोलो ए सवसाज्जणं इस पदको (२) ह
 ज्जार गुणनो करै । साधुपद कालै वर्ण इससे उद्गदका
 आविल करै । सर्व साधुपदके सत्ताईस गुण चिंतवके नम
 स्कार करै ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ साधुपदके (२७) गुणलि० ॥ॐ॥

- १ ॥ प्राणातिपात विरमणव्रत युक्ताय श्रीसाधवे नमः ।
- २ ॥ ऋषावाद विरमणव्रत यु० श्रीसा०
- ३ ॥ अदत्तादान विरमणव्रत यु० श्रीसा० ।
- ४ ॥ मैथुन विरमणव्रत यु० श्रीसा० ।
- ५ ॥ परिग्रह विरमणव्रत यु० श्रीसा० ।
- ६ ॥ रात्रिभोजन विरमणव्रत यु० श्रीसा० ।
- ७ ॥ पृथ्वीकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
- ८ ॥ अप्यकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
- ९ ॥ तेजकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
- १० ॥ वाजकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
- ११ ॥ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
- १२ ॥ वसकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
- १३ ॥ एकेंद्रौ जीवरक्षकाय श्रीसा० ।
- १४ ॥ वेद् द्वौ जीव रक्षकाय श्रीसा० ।
- १५ ॥ तद् द्वौ जीव रक्षकाय श्रीसा० ।
- १६ ॥ चौरिन्द्रौ जीव रक्षकाय श्रीसा० ।
- १७ ॥ पंचेंद्रौ जीव रक्षकाय श्रीसा० ।
- १८ ॥ लोभनिग्रहकाय श्रीसा०
- १९ ॥ क्षमागुण युक्ताय श्रीसा० ।
- २० ॥ शुभभावना भावकाय श्रीसा० ।
- २१ ॥ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा०
- २२ ॥ संयम योगयुक्ताय श्रीसा० ।
- २३ ॥ मनोगुप्त युक्ताय श्रीसा० ।

२४ ॥ वचनगुप्त युक्ताय श्रीसा० ।

२५ ॥ कायगुप्त युक्ताय श्रीसा० ।

२६ ॥ सीतादि द्वाविंशति परीसहस्रहण तत्पराय० ।

२७ ॥ मरणांत उपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा० ।

॥॥॥ इति सप्तविंशति साधुभ्यो गुणाः ॥॥॥५॥

॥॥॥ इस रीतसे सातवीस नमस्कार करै । (खप्ता हो के) अन्नत्यू स० (इत्यादि कहिके) सातवीस लोगसकेकाउ स्मरण करै । एक लोगस कहके पारे । (पीठे) पूर्वोक्त करणी करै । (यह पंच परमेष्टि पदके सब गुण मिलाने से (१०८) होय (इसीसे) मालाके दाणे (१०८) होते है । ॥॥॥ इति पंचम दिवस विधिः ॥॥॥

॥॥॥ अथ षष्ठ दिवस विधिलि० ॥॥॥

॥॥॥ (३ ह्रीं एमो दंसणस) इस पदको (२) हजार गुणनो करै । दर्शनपद सपेदवर्ण (इससे) तंडुलका आविल करै । सम्यक्तके सतसङ्खिगुण चिंतवके नमस्कार करै ॥

॥॥॥ अथ सम्यक्तके सतसङ्खि भेदलि० ॥॥॥

१ ॥ परमार्थ संस्तवरूप सद्दर्शनाय नमः ।

२ ॥ परमार्थ ज्ञातसेवनरूप सद्दर्शनाय नमः ।

३ ॥ व्यापन्नदर्शन वर्जनरूप सद्दर्शनाय नमः ।

४ ॥ कुदर्शन वर्जनरूप सद्दर्शनाय नमः ।

५ ॥ शुश्रूषारूप सद्दर्शनाय नमः ।

६ ॥ धर्मरागरूप सद्दर्शनाय नमः ।

७ ॥ वैद्याद्युत्तरूप सद्दर्शनाय नमः ।

- ८ ॥ अर्हद्विनयरूप सदृशनाय नमः ।
- ९ ॥ सिद्धविनयरूप सदृशनाय नमः ।
- १० ॥ चैत्यविनयरूप सदृशनाय नमः ।
- ११ ॥ श्रुतविनयरूप सदृशनाय नमः ।
- १२ ॥ धर्मविनयरूप सदृशनाय नमः ।
- १३ ॥ साधुवर्ग विनयरूप सदृशनाय नमः ।
- १४ ॥ आचार्य विनयरूप सदृशनाय नमः ।
- १५ ॥ उपाध्याय विनयरूप सदृशनाय नमः ।
- १६ ॥ प्रवचन विनयरूप सदृशनाय नमः ।
- १७ ॥ दर्शन विनयरूप सदृशनाय नमः ।
- १८ ॥ संसारे जिनसार मिति चिंतनरूप सह० ।
- १९ ॥ संसारे जिनमतिसार मिति चिंतन० ।
- २० ॥ संसारे जिनमतिस्थित साध्यादिसार मिति० ।
- २१ ॥ संका दूषण रहिताय सदृशनाय नमः ।
- २२ ॥ कांचा दूषण रहिताय सदृशनाय नमः ।
- २३ ॥ विचिकित्सारूप दूषण रहिताय० ।
- २४ ॥ कुदृष्टि प्रसंसा दूषणरहिताय० ।
- २५ ॥ तत्परिचय दूषण रहिताय० ।
- २६ ॥ प्रवचन प्रभावकरूप स० ।
- २७ ॥ धर्मकथा प्रभावकरूप स० ।
- २८ ॥ वादी प्रभावक० स० ।
- २९ ॥ नैमित्तिक प्रभावक० स० ।
- ३० ॥ तपस्वी प्रभावक० सह० ।
- ३१ ॥ प्रज्ञप्तादि विद्या मृत्प्रभावक० स० ।

- ३२ ॥ चूर्णं जनादि सिद्धप्रभावक० स० ।
 ३३ ॥ कविप्रभावकरूप सदृशनाय नमः ।
 ३४ ॥ जिनसासने कौसलता भूषण० स० ।
 ३५ ॥ प्रभावना भूषणरूप स० ।
 ३६ ॥ तीर्थसेवा भूषण० स० ।
 ३७ ॥ स्थैर्यता भूषणरूप सदृशनाय नमः ।
 ३८ ॥ जिनसासने भक्ति भूषण० ।
 ३९ ॥ उपशम गुणरूप सदृशनाय नमः ।
 ४० ॥ संवेग गुणरूप श्रीस० ।
 ४१ ॥ निर्वेद गुणरूप श्रीसदृशनाय नमः ।
 ४२ ॥ अनुकंपा गुणरूप श्रीस० ।
 ४३ ॥ आस्तिका गुणरूप श्रीस० ।
 ४४ ॥ परतीर्थकादि वंदन वर्जन रूप श्रीस० ।
 ४५ ॥ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जन० श्रीस० ।
 ४६ ॥ परतीर्थकादि आलाप वर्जन० श्रीस० ।
 ४७ ॥ परतीर्थकादि संलाप वर्जन० ।
 ४८ ॥ परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन० श्रीस० ।
 ४९ ॥ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषण वर्जन० श्रीस० ।
 ५० ॥ राजाभियोगाकार युक्त श्रीस० ।
 ५१ ॥ गणाभियोगाकार युक्त श्रीस० ।
 ५२ ॥ बलाभियोगाकार युक्त श्रीस० ।
 ५३ ॥ सुराभियोगाकार युक्त श्रीस० ।
 ५४ ॥ कांतारट्ट्याकार युक्त श्रीस० ।
 ५५ ॥ गुरु निग्रहकार युक्त श्रीस० ।

- ५६ ॥ सम्यक्त चारवधर्मस्य मूलमिति चिंतन० श्री० ।
 ५७ ॥ चारव धर्मपुरस्य द्वारमिति चिंतन० श्रीस० ।
 ५८ ॥ चारव धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतन० श्रीस० ।
 ५९ ॥ चारवधर्मस्याधारमिति चिंतन० श्रीस० ।
 ६० ॥ चारव धर्मस्य भाजनमिति चिंतन० श्रीस० ।
 ६१ ॥ चारव धर्मस्य निधिसन्निभमिति चिं० श्रीस० ।
 ६२ ॥ अस्ति जीवेति अज्ञानस्थान यु० श्रीस० ।
 ६३ ॥ सचजीव नित्येति अज्ञान स्थान यु० श्रीस० ।
 ६४ ॥ सचजीव कर्माणि करोतीति अज्ञानस्थान यु० श्री० ।
 ६५ ॥ सचजीव कृतकर्माणि वेदयतीति अज्ञान स्थानयु० ।
 ६६ ॥ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति अज्ञान स्थान यु० ।
 ६७ ॥ अस्ति पुनर्मोक्षो पायेति अज्ञानस्थान यु० श्रीस० ।

॥ॐ॥ इति सप्तषष्टि दर्शनस्य गुणाः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ इस रौतसे सतसठ्ठि नमस्कार करै । (खफा होके) अन्नत्थू ससि एणं (इत्यादि कहिके) (६७) लोगस (अथवा) ७ लोगस नो काउसगग करै । एक लोगस कहिके पारै । (पौठे) पूर्वोक्त करणी करै ॥ॐ॥ इति षष्ठ दिवस विधिः ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ सप्तम दिवस विधि लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (ॐ ह्रीं नमो नाणस्य) इस पदको (२) हजार गुणनो करै । ज्ञानपद उक्त्वल वर्ण । तंदुलका आंबिल करै । इकावन भेद ग्यानपदके चिंतवके नमस्कार करै ॥

॥ॐ॥ अथ ज्ञानपदके (५१) भेदलि० ॥ॐ॥

१ ॥ स्यान्नैन्द्रौ व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।

- २ ॥ रसनेंद्रौ व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
 ३ ॥ घ्राणेन्द्रौ व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
 ४ ॥ श्रोत्रेन्द्रौ व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
 ५ ॥ स्पर्शनेंद्रौ अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
 ६ ॥ रसनेंद्रौ अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
 ७ ॥ घ्राणेन्द्रौ अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
 ८ ॥ चक्षुरिन्द्रौ अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
 ९ ॥ श्रोत्रेन्द्रौ अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
 १० ॥ मनःशर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
 ११ ॥ स्पर्शनेंद्रौ ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
 १२ ॥ रसनेंद्रौ ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
 १३ ॥ घ्राणेन्द्रौ ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
 १४ ॥ चक्षुरिन्द्रौ ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
 १५ ॥ श्रोत्रेन्द्रौ ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
 १६ ॥ मनःकरो ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
 १७ ॥ स्पर्शनेंद्रौ अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
 १८ ॥ रसनेंद्रौ अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
 १९ ॥ घ्राणेन्द्रौ अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
 २० ॥ चक्षुरिन्द्रौ अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
 २१ ॥ श्रोत्रेन्द्रौ अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
 २२ ॥ मनःकरो अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
 २३ ॥ स्पर्शनेंद्रौ धारणा मतिज्ञानाय नमः ।
 २४ ॥ रसनेंद्रौ धारणा मतिज्ञानाय नमः ।
 २५ ॥ घ्राणेन्द्रौ धारणा मतिज्ञानाय नमः ।

- २६ ॥ चक्षुरिन्द्रिधारणा मति० ।
 २७ ॥ श्रोत्रेन्द्रिधारणा मति० ।
 २८ ॥ मनो धारणामतिज्ञानाय नमः ।
 २९ ॥ अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ।
 ३० ॥ अनक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ।
 ३१ ॥ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ।
 ३२ ॥ असंज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ।
 ३३ ॥ सम्यक् श्रुतग्यानाय नमः ।
 ३४ ॥ मिथ्या श्रुतग्यानाय नमः ।
 ३५ ॥ सादि श्रुतग्यानाय नमः ।
 ३६ ॥ अनादि श्रुतग्यानाय नमः ।
 ३७ ॥ सपर्यवसति श्रुतग्यानाय नमः ।
 ३८ ॥ अपर्यवसति श्रुतग्यानाय नमः ॥
 ३९ ॥ गमिक श्रुतग्यानाय नमः ।
 ४० ॥ अगमिक श्रुतग्यानाय नमः ।
 ४१ ॥ अंगप्रविष्ट श्रुत० ।
 ४२ ॥ अनंग प्रविष्ट श्रुत० ।
 ४३ ॥ अणूनामि अवधिग्यानाय नमः ।
 ४४ ॥ अणूनामि अवधिग्यानाय नमः ।
 ४५ ॥ वटुमान अवधि० ।
 ४६ ॥ हीयमान अवधि० ।
 ४७ ॥ प्रतिपातो अवधि० ।
 ४८ ॥ अप्रतिपातो अवधि० ।
 ४९ ॥ ऋजुमति मनः पर्यवग्यानाय नमः ।

५० ॥ विपुलमति मनः पर्यवग्यानाय नमः ।

५१ ॥ लोकालोक प्रकाशक औ केवलग्यानाय नमः ।

॥ॐ॥ इति एकपंचासत् ज्ञानभेदाः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ इस रीतसें (५१) नमस्कार करै । (खना होके)
अन्नत्थ ससिण्णं (इत्यादि कहै) (५१) लोगसके काच
संग करिके । प्रगट लोगस कहै । पीठे सब पूर्वोक्त करणी
करै । इति सप्तम दिवस विधिः ॥७॥

॥ॐ॥ अथ अष्टम दिवस विधि लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (ॐ ह्रीं णमो चारित्तस्य) इस पदको (२) हज्जार
गुणनो करै । चारितपदके उज्ज्वल वर्ण । (इसोसे) तंदुल
का आंवल करै । सित्तर भेद चारितपदके । चित्तवके
नमस्कार करै ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ चारितपदके (७०) भेदलि० ॥ॐ॥

१ ॥ प्राणातिपात विरमणरूप चारित्वाय नमः ।

२ ॥ ऋषावाद विरमणरूप चारित्वाय नमः ।

३ ॥ अदत्तादान विरमण रूप चारित्वाय नमः ।

४ ॥ मैथुनविरमणरूप चारित्वाय० ।

५ ॥ परिग्रह विरमणरूप चारित्वा० ।

६ ॥ क्षमा धर्मरूप चारित्वेभ्यो नमः ।

७ ॥ आर्यव धर्मरूप चारित्वेभ्यो नमः ।

८ ॥ श्रद्धता धर्मरूप चारित्वेभ्यो नमः ।

९ ॥ सुक्तधर्मरूप चारित्वेभ्यो नमः ।

१० ॥ तपो धर्मरूप चारित्वेभ्यो नमः ।

- ११ ॥ संयमधर्मरूप चारित्र्येभ्यो नमः ।
- १२ ॥ सत्यधर्मरूप चारि० ।
- १३ ॥ सौच धर्मरूप चारि० ।
- १४ ॥ अकिंचनधर्मरूप चारि० ।
- १५ ॥ बन्धधर्मरूप चारि० ।
- १६ ॥ प्रथवी रक्षासंयम चारित्र्येभ्यो नमः ।
- १७ ॥ उदग रक्षा संयम चारि० ।
- १८ ॥ तैज रक्षा संयम चारि० ।
- १९ ॥ वाज रक्षासंयम चारि० ।
- २० ॥ वनस्पति रक्षासंयम चारि० ।
- २१ ॥ वेद्द्री रक्षासंयम चारि० ।
- २२ ॥ तेद्द्री रक्षा संयम चारि० ।
- २३ ॥ चौरिन्द्री रक्षा संयम चारि० ।
- २४ ॥ पञ्चेन्द्री रक्षासंयम चारि० ।
- २५ ॥ अजीव रक्षासंयम चारि० ।
- २६ ॥ प्रेक्षासंयम चारि० ।
- २७ ॥ उपेक्षासंयम चारि० ।
- २८ ॥ अतिरक्तवस्त्रभक्तादिपरठण त्यागरूपसंयम चारि० ।
- २९ ॥ प्रमार्जन रूप संयम चारि० ।
- ३० ॥ मनसंयम चारि० ।
- ३१ ॥ वाक्संयम चारि० ।
- ३२ ॥ कायासंयम चारि० ।
- ३३ ॥ आचार्य वैयाट्यरूप संयम चारि० ।
- ३४ ॥ उपाध्याय वैयाट्यरूप संयम चारि० ।

- ३५ ॥ तपस्वी वैयाट्य रूप चारि० ।
 ३६ ॥ लघुशिष्यादि वैयाट्य रूपचारि० ।
 ३७ ॥ गिलाणसाधु वैयाट्यरूप चा० ।
 ३८ ॥ साधु वैयाट्यरूप चारि० ।
 ३९ ॥ अमणोपासक वैयाट्यरूप चा० ।
 ४० ॥ संघ वैयाट्यरूप चारि० ।
 ४१ ॥ कुल वैयाट्यरूप चारित्र्ये० ।
 ४२ ॥ गण वैयाट्य रूप चारि० ।
 ४३ ॥ पशुप्रांतादि रहित वशति वसण ब्रह्मगुप्तचारि० ।
 ४४ ॥ स्त्रीहास्यादि विकयावर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ।
 ४५ ॥ स्त्रीआसन वर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ।
 ४६ ॥ स्त्रीअंगोपांग निरीक्षणवर्जन ब्रह्म० ।
 ४७ ॥ कुड्यांतर सहित स्त्रीहाव भावसुगण वर्जन ब्रह्म० ।
 ४८ ॥ पूर्व स्त्रीसंभोग चिंतनवर्जन ब्रह्म० ।
 ४९ ॥ अति सरसआहार वर्जन ब्रह्म० ।
 ५० ॥ अति आहार करण वर्जन ब्रह्म० ।
 ५१ ॥ अंग विभूषावर्जन ब्रह्म० ।
 ५२ ॥ अणसण तपोरूप चा० ।
 ५३ ॥ ऊणोदरी तपो रूप चा० ।
 ५४ ॥ वित्तसंखेव तपोरूप चा० ।
 ५५ ॥ रसत्याग तपो रूप चा० ।
 ५६ ॥ कायकिलेस तपोरूपचा० ।
 ५७ ॥ संलेखणा तपोरूप चा० ।
 ५८ ॥ प्रायश्चित्ततपो रूपचा० ।

- ५८ ॥ विनय तपोरूप चा० ।
 ६० ॥ वेयावच्चतपो रूप चा० ।
 ६१ ॥ सिवजायतपो रूप चा० ।
 ६२ ॥ ध्यानतपो रूप चा० ।
 ६३ ॥ उपसर्ग तपो रूप चा० ।
 ६४ ॥ अनंत ग्यान संयुक्त चा० ।
 ६५ ॥ अनंत दर्शन संयुक्त चा० ।
 ६६ ॥ अनंत चारित्र संयुक्त चा० ।
 ६७ ॥ क्रोधनिग्रह करण चा० ।
 ६८ ॥ माननिग्रह करण चा० ।
 ६९ ॥ मायानिग्रह करण चा० ।
 ७० ॥ लोभनिग्रह करण चारित्रेभ्यो नमः ।

॥ॐ॥ इति सित्तर चारित्र भेदाः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ इस रौतसे (७०) नमस्कार करै । (खटा हो के) अन्नत्यू ससि एणं (इत्यादि कहै) (७०) लोगसके का उसग्न करिके । एक लोगस कहै । (पीठे) पूर्वोक्त करणी सब करै । इति अष्टम दिवस विधिः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ नवम दिवस विधिलि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (ॐ ह्रीं यमो तवस्स) इस पदको (२) हज्जार गुण नो करै । तपपदके उज्ज्वल वर्ण (इसीसे) तंदुलका आबिल करै । पचास भेद तपपदको चिंतवके नमस्कार करै ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ तपपदके (५०) भेदलि० ॥ॐ॥

१ ॥ जावत कथक तपसे नमः ।

- २ ॥ इत्वर तपभेद तपसे नमः ।
- ३ ॥ बाह्यजणोदरी तपभेद तपसे नमः ।
- ४ ॥ अन्तर जणोदरी तपभेद तपसे नमः ।
- ५ ॥ द्रव्यतप वित्तोसंखेप तपभेद तपसे नमः ।
- ६ ॥ ज्ञेयतप वित्तोसंखेप तपभेद तपसे नमः ।
- ७ ॥ कालतप वित्तोसंखेप तपभेद तपसे नमः ।
- ८ ॥ भावतप वित्तोसंखेप तपभेद तपसे नमः ।
- ९ ॥ कायकिलेस तपभेद तपसे नमः ।
- १० ॥ रसत्याग तपभेद तपसे नमः ।
- ११ ॥ इंद्रो कषाय जोग विषयक संलौघता तपसे नमः ।
- १२ ॥ स्त्रीपशुपक्षिकादि वर्जितस्थान अवस्थित संलौघ ता० ।
- १३ ॥ आलोचन प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
- १४ ॥ पञ्चकर्मण प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
- १५ ॥ मिथ प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
- १६ ॥ विवेक प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
- १७ ॥ उपसर्ग प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
- १८ ॥ तप प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
- १९ ॥ भेद प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
- २० ॥ मूल प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
- २१ ॥ अणवस्थित प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
- २२ ॥ पारंक्षिप प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
- २३ ॥ ग्यान विनयरूप तपसे नमः ।
- २४ ॥ दर्शन विनयरूप तपसे नमः ।
- २५ ॥ चारित्र्य विनयरूप तपसे नमः ।

२६ ॥ गुर्वीदिक मनविनयरूप तपसे नमः ।

२७ ॥ वचनविनयरूप तपसे नमः ।

२८ ॥ काय विनयरूप तपसे नमः ।

२९ ॥ उपचारक विनयरूप तपसे नमः ।

३० ॥ आचार्यवेयावच्च तपसे नमः ।

३१ ॥ उपाध्याय वेयावच्च तपसे नमः ।

३२ ॥ साधु वेयावच्च तपसे नमः ।

३३ ॥ तपस्वी वेयावच्च तपसे नमः ।

३४ ॥ लघुसिख्यादि वेयावच्च तपसे नमः ।

३५ ॥ गिलाण साधु वेयावच्च तपसे नमः ।

३६ ॥ अमणोपासक वेयावच्च तपसे नमः ।

३७ ॥ सिष वेयावच्च तपसे नमः ।

३८ ॥ कुल वेयावच्च तपसे नमः ।

३९ ॥ गण वेयावच्च तपसे नमः ।

४० ॥ वायणा तपसे नमः ।

४१ ॥ प्रव्रजना तपसे नमः ।

४२ ॥ परावर्त्तना तपसे नमः ।

४३ ॥ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ।

४४ ॥ धर्माकथा तपसे नमः ।

४५ ॥ आर्त्तध्यान निवृत्त तपसे नमः ।

४६ ॥ रोद्रध्यान निवृत्त तपसे नमः ।

४७ ॥ धर्माध्यान चिंतन तपसे नमः ।

४८ ॥ शुक्लध्यान चिंतन तपसे नमः ।

४९ ॥ बाह्य उपसर्ग तपसे नमः ।

५० ॥ अर्धंतर उपसर्ग तपसे नमः ।

॥३॥ इति पंचासत् तपभेदाः ॥३॥

॥३॥ इस रौतसें (५०) नमस्कार करै । (खटा हो के) अन्नत्यू ससि एणं (इत्यादि कहै) (५०) लोगसके काउसग करिके । एक लोगस कहै । (पीठे) पूर्वोक्त करणी करै । इति नवम दिवस विधिः ॥३॥

॥ अथ तपस्या ग्रहण करणें को गुरुके पास जाणेंकी विधि लि० ॥

॥३॥ प्रथम शुभ दिन शुभ घड़ी देखके । अष्टा वस्त्र आभूषण पहरै । लिलाटके तिलक करै । दोव । सरसु । मस्तकमें धारण करै । हाथके मोली बांधके । अक्षत । सुपारो । औफल । नेवेद्य । यथाशक्ति रोकनाणो लेके । नवकार गुणतोयको । गुरुके पास जावै । द्वादशावर्त्त बांदणा करके । ग्यान पूजा करै । पीठे वज्रत प्रमोदवंत होके । गुरुके मुख सें उलौ तप ग्रहण करै (सो) तपस्या ग्रहण करणेंकी विधि आगै लिखी है ॥३॥ इति तपस्याग्रहण करणेंको पोसाल जाणेंकी विधि ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ अथ संक्षेप कृजमणाविधि लि० ॥३॥

॥ ३ ॥ पंच वर्णके धान्यसें सिद्धचक्रको मंजून करै । सिद्धचक्रको के चौ तरफ तीन गठ चूड़ीके आकार बनावै पहिले गठमांहे । अष्टदल कमलके आकार नव पद स्थापन करै । पद (२) के वर्ण गुण प्रमाणै । रत्नादिक चढावे ।

(ओर) पंचवर्णके फूल । पंचवर्णके धान्य । नवनालेर प्रमुख को गोटा रंगको । जिसपदको जैसे वर्ण छोड़ (तैसे ही) रंग का गोला चढावै । पंच वर्णी (६) घजा चढावै । दूसरै बलयमें । सोले ओफल (अथवा) पूंगी फल चढावै । तीसरै बलयमें (४८) ठुहारा चढावै । नव निधानके ठिकाणें (६) नव वट्टा फल चढावै दश दिग्पाल । नवग्रह को । पक्वान्न प्रमुख चढावै । इत्यादिक विधिसंयुक्त । सिद्ध चक्र स्थापना । घर देहरासर आगे करै । और जिनमंदिर मांहे । बाह्य मंत्रपै ५॥७ हाथ प्रमाणें मंत्रल रचना करै । विस्तारसें सब विधि गुरुके वचनसें करके । नव पदजी की पूजा पढायके कलस ढालै । धवल मंगल गीतगान गावै । वालिल वजावै । (दूसी तरे) महामहोत्सव । उदारचित्तसें करै । मंगल दीप आरती प्रमुख करै । दूसरै दिन विसर्जन करै । इति संखेप सिद्धचक्र मंत्रल विधिः ।

॥३॥ अब (१०) में दिन गुरुके पास आके उली तप को पारै । तप पारण की विधि आगे लिखी है । तथा उद्यापनमें ग्यान भक्तिके कारण । ६ पूठा । ६ बी टांगणा । ६ पुस्तक । ६ लेखण । ६ ठवणौ । नव जिल मिल । ६ रुमाल । ६ ढोरा । ६ मिजासणा । ६ थापना । ६ चंद्र आ । ६ पूठिआ । ६ आरती । ६ कलश । ६ जापमाला । ६ मंदर । ६ प्रतिमा । ६ तिलक । ६ सुगट । (इत्यादिक) अनेक नव नव चीज वणावै । शक्ति न होय तो यथाशक्तै रोकनाणो चढावै । देव पदको देवपदमें देवे । गुरु पदको गुरु पदमें देवे । ग्यानपद को ग्यानखाते लगावे । इत्यादिक

यथाजोग्य शुभ ज्ञेय खरच करै । इति सिद्धचक्र संचेप
उद्यापनविधिः ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ प्रथम चैत्र मासमें पर्वाराधन स्वरूप लिखते
है ॥ॐ॥ चैत्रमास में । चैत्र सुद ७ (सें लेके) चैत्र सुद १५
पर्यन्त ८ दिन अति उत्तम है । (सो) अति उत्तमता का
कारण कहते है । बारै मासमें तीन अष्टाहो महोत्सव
आते है । (जिसमें) । चैत्र आसोज के (२) अष्टाह महो
त्सव साखते है । चैत्र सुद ८ (सें) चैत्र सुद (१५) आ
सोज सुद ८ (सें) आसोज सुद १५ (यह) दोनुं मास
के (८) दिनो में । निम्नै सेती । चारुनिकाय के
देवता इंद्र सब भेला होके । आठमा नंदीसर द्वीप
जावै (पुन्याहंर) कहते थके । अष्ट द्रव्यसें पूजन करै ।
गोत गान नाटकादिकसें अनेकतरे की भक्ति करै । पीठे
नवमें दिन । अर्पणें जन्माकुं सफल मानते ऊए । अर्पणें
देवलोक जावै । (इसी माफक) तीसरी अष्टाह आसाह
चौमासे की (१४) पीठे । (४२) दिन जाणेंसें संबहुरी पर्व
साचवणें को (८) दिन अष्टाह महोत्सव करै । प्रिणसा
खतो नही । कोई काल में चारुनिकायके देवता एक
हु नहिं बी जाय सके । पहली पीठे कर लेवे । (इससें)
साखतो नही कही ॥ॐ॥ अब यह (८) दिनोमें । (४)
पर्व सेवन करणे जोग्य है ॥ॐ॥ प्रथम नव पद जोकी
उली । इसी नव दिनुमें विधिसंयुक्त करै । (सो) विधि
पूर्व लिखी है । इससें इहां न लिखी । यह सिद्ध चक्रमंडल

(ओ) नव पदजीको उलीके अधिकार (दसमा विद्या प्रवाद पुर्वसे) उद्धरण करके । भव्य जीवोंके अनन्त सुखप्राप्तिके कारण । चवदे पूर्वधारक श्री भद्रवाङ्ग स्वामी जीने प्रसिद्ध किया । (इसी से) सब भव्य जीवोंके यह तप प्रमाण है । यह तपकों अपणी कृत्युक्ति लगायके । जो पुरस खंडन करते हैं । इसका अनंत संसार । भगवानका वचनसे मालुम होता है (शास्त्रोंसे लिखा है) है गोतम । अपणी कुटलताई से (जो) सुखको एक हरफ उत्थापण करेंगे (सो) अनंत संसार बढावेंगे । (सुख किसकुं कहते है) सुत्तंगण हर रइयं । तहेव पत्तेय बुद्धि रइयंच । सुय केवलिया रइयं । अभिन्न दस पुबिया रइयं ॥१॥ (अर्थ) गणधरोका रचा ऊबा (तेसेही) प्रत्तेकबुद्धिका रचा ऊआ । अतकेवली चवदे पूर्वधारो का रचा ऊआ । संपूर्ण दश पूर्व धारी का रचा ऊआ को । भगवानने सुखको संज्ञा कही है । इसीसे प्रमाण है ॥३॥

॥३॥

॥३॥ अथ अष्टापद उली करण विधि ॥३॥

॥३॥ इसी चैवमाससे सुद (ट) से लेके । पूर्णमासी तक । (केइ भव्य जीव) अष्टापदजीको उली करते है (जिससे) पट्टिकमणा । देववंदन । देवपूजा । इत्यादिक सब विधि नवपदजीकी उली तुल्य करै (इतना विशेष है) श्रीअष्टापद तीर्थाच ननः । (इसी पदको) २००० गुणनो (वा) बीस जाप करै । अरिहंत पद को १२ गुण को नमस्कार करै । १२ लोगखनो वाउल्लग्य करै । आं विल (वा) एकासर्गेको पञ्चक्खण करै । पीठे पूर्णमासी को

दिन । अष्टापदजी पर्वतकी स्थापना करके। विधिसंयुक्त (२४) भगवंत की पूजा करै (एसे) चैत्र । आसोज । (२) उलौ करणें से । (४) वरसमें । एक उलौ करणेंसे (८) वरसमें संपूर्ण होय । पीछे भक्तिसंयुक्त जवमणो करै गुरु भक्ति करै (साहमी वृत्तल करै (इत्यादि) विशेष विधि गुरु के मुख में जाण के करै ॥३॥ इति द्वितीय अष्टापद उलौ पर्वोधिकारः कथितः ॥३॥

॥ ३ ॥ (अब तीसरो पर्व) । चैत्र सुद १३ के दिन । श्रीमहावीरस्वामी को जन्म कल्याण भयो है (इसोसे) सब ठिकाणें । धर्मरागी पुरस । गुरुके मुखसे समझके जल जात्रादिक संपूर्ण । जन्मकल्याणकको महोत्सव करै । (एसेही) ऋद्धीवंत यावकों धर्मका उद्योत के खातर सब भगवंतके कल्याणक के दिन (जो) कल्याणक होय । उसीका महोत्सव करणा चाहियै । औसी शक्ति नहोय(तो) सासनके अधिपति । देवाधिदेव (श्रीमहावीर स्वामी के) च्यवन कल्याणकसे लेके । निर्वाण कल्याणक पर्यन्त । (जिस दिन) जो कल्याणक होय । उसीका महोत्सव पूजन करणा चाहियै (इसी से) धर्मका उद्योत होय । श्रीसंघसे परम आणंद होय ॥३॥ इति शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्वोधिकारः कथितः ॥३॥

॥ ३ ॥ अब चैत्री पुनस पर्व के अधिकार (सामाचारी सतकानुसारे) लिखते है ॥ ३ ॥ प्रथम चावलके पुंजसे सेतुंजय पर्वतको स्थापन करै (तिसपर) पट्टा रखके । श्री पुंढरीक गणधर (वा) श्रीकृष्णभ देव स्वामीके विंवस्थापन

करै । अक्षत मोत्यां करके पर्वतकों वधावै । केसर चंदन
 से पर्वतकों पूजे । सब औसंव इकठे होके । पर्वतके । चौफेर
 तीन प्रदक्षणा देवै । पौठे पूजन सुरू करै (यथा) ॥ॐ॥ दश
 बीस (२०) तीस (३०) चत्ता (४०) । पन्ना (५०) पुष्पदामेण
 लहई । चउत्थ ठठ अठ्ठम । दसम दुवालसम फलाइ च
 ॥ १ ॥ अब प्रथम (१०) प्रकार से पूजनके अधिकार लिख
 ते है ॥ ॥ एकाग्रचित्तसे । अष्टमंगलीक आगे रखके
 शुद्धोदक से मूलप्रतिमा को न्हवण करावै । पौठे औसंव
 खनो होके । (१०) नमस्कार उच्चार पूर्वक । १० फूल
 (यथा) १० फूलमाला चढाके । प्रतिमाके १० तिलक करै ।
 (यथा शक्ति) सुपारी । नालेर (इत्यादि सब चीज उत्कृष्टसे
 दश २ ॥ जघन्ये नालेर १ सुपारी १० और फल फूल
 यथासंभव चढावै । धूप खेवै । कपूरकी आरती करै ।
 पौठे सिद्धगिरौ गुणगर्भित चैत्यबंदन करके । पांचशक्र स्त
 वे देव वांदै । १० खमा समण देके (औसिबक्षेव पुंनरीक
 गणधराय नमः) इस पदकों १० बेर नमस्कार करै । पौठे
 (औसेबुंजय पुंनरीक आराधनार्थं करोमि काउसगं) ।
 अन्नत्थु ससिं कहके । १० लोगसके कावसग्न करै । (इहां
 कोई आचार्य कहै) वज्रत उज्जव होय । बेला कम रहै ।
 (तब) एक लोगसग्नो कावसग्न करै । १० जै तीके ठिकाणें
 १० गाथाको स्तवन कहै । पौठे अनेक प्रकारका वाजिल
 बजावै ॥ॐ॥ इति प्रथम पूजाविधिः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (अब इसी तरै) बीस । तीस । चालीस । पचास
 यह च्यारोंपूजाके भेद जाण लेणा । (इतनाही विसेष है)

दूसरी पूजामें १० के ठिकाणें २० की विधि करै । तीसरी पूजामें १० के ठिकाणें ३० की विधि करै । चौथी पूजा में १० ठिकाणें सब विधि ४० की करै । पांचमी पूजामें सब विधि ५० की करै तथा सिद्ध क्षेत्र श्रीपुंढरीकाय नमः । इस पदको २००० गुणनो करै । उत्कृष्टसे पांचू पूजा में । जूदी २ घजा चढावै । जघन्यसे पांच पूजा किये पौठे १ घजा चढावै । यह तप । गुरुको सुखसे लेके । जघन्य १ बरस । (बेसी हो सकै तो) ७ बरस । उत्कृष्टसे १२ बरस । विधिसंयुक्त तपस्या करै । गुरुको सुखसे उपदेस सुणें । संपूर्ण तप ऊयांपौठे । सिद्धगिरौको जालाकरै । ग्यान पूजा करै । गुरुभक्ति करै । साहमी बल्ल करै । (यह) चैत्रपूनमको दिन । श्रीकृष्णभदेव खामीके । प्रथम गणधर श्री पुंढरीक जी । पांचकोटि साधूसाध अक्षयसुखको प्राप्त भये । (इसीसे) प्रथम श्रीभरथ चक्रवर्त्ति । चैत्र पूनमको आराधन करके । श्रीपुंढरीक गणधर को प्रतमा स्थापन करके । (यह) चैत्र पूनम पर्व प्रसिद्ध किया ॥ यह चैत्र पूनम आराधन करणसे । इस भवमें अनेक सुखसंपदा प्राप्त होय । स्त्रियोंके पुत्र पुत्रादिक की बांठा पूरण होय । (और) आधि व्याधि सोग संताप सब दूर होय । परभवमें देवादिक ऋद्धिप्राप्त होय । जीणकमी होणसे अक्षय सुखको प्राप्त होय ॥३॥ इति चैत्रमास पर्वधिकारः ॥३॥

॥३॥ अथ चैत्र पूनम स्तवन लि० ॥३॥

॥३॥ (ढाल) पयप्रणमोरे जिनवरना सुपसाउलै ।

पुंनरगिररे गादसङ्गं सुमभाउलै । मतिसुरगिररे सहस
जौभ जो सुख ऊवै । किम ते नररे विमलाचलना गुण
तवै । (उल्लालो) किम तवै गुणगण एहगिरिना जिहां
मुनि सीधा वड्ड । गिररायना गुण ठे अनंता कहै जिणवर
सुख सङ्ग । नियजनम सफलो करण कारण केतला गुण
भाषियै । तिर यंच नारक तणी गतिना दुख दूरै राखियै
॥१॥ (चाल) जिन राजा रे पहिलो आदि जिनेसरु । तसु
नंदनरे चक्रवर्त्ति भरतेसरु । तसु अंगजरे पुंढरीक गुणगण
निलो । समदमरसरे विनय विवेक गुणे भलो (उल्लालो) गु
णभलो अनुक्रम आदि जिणवर पास संजम सिवपुरी । पुं
ढरीक गणधर प्रथम विहरै सुमति गुप्तै संचरी । पण
कोटि साथे विमलगिरवर सुगति पदवी पावए । सुदि चैत्र
पूनिम तेण ए गिरि पुंढरीक कहावए ॥२॥ (चाल) हिव
चैत्री रे पूनिम पर्व सुहामणो । सेवुंजैरे आराध्यां फल
ऊवै षणो । मनसुद्धै रे आपणपैथानक रही । आराध्यां
रे याव पुन्य पामे सही (उल्लालो) ते पुन्यपामे दान तप जप
धर्म ध्यान मने धरै । वड्ड भाव भक्तै त्रिविध पूजा आदि
जिनवरनौ करै । भावना भावै तेण दिवसै पंच कोटि
गुणो फलै । अनुक्रमे ते नर सुगति पामी सिद्ध सुंदर
ने मिलै ॥३॥ (चाल) दसवीसारे तीस चालीस पूजा कही ।
पन्नासारे आवक निरतौ सरदही । चउथ ठहरै अट्टम
दसम दुवालसै । पूजा फलरे अनुक्रम ए सुऊ मनवसै ।
(उल्लालो) मनवसै पूज कपूर धूवै मासखमण फले वलौ ।
सामन्न धूवै पक्खनो फल जे करै मननोरली । हिव

पूजनौ विधि जेम गुरु सुख सुणी अठै परंपरा । तेमोह
 माया कपट ठंणी सुणो भवीयण सादरा ॥ ४ ॥ (ढाल)
 तंदुल रासि विमलगिर थापी । तसुजपरि पट्टादिक आपी
 प्रतिमा आदिजिणेसर करी । पुंठरौकनी थापीनिवेरी ॥ ५ ॥
 सेबुंज गिरिनें मनचिंतो जै । करमतणामल दूर करीजै
 मोती तंदुल करीय वधावो । तीन प्रदक्षिण पूजरचावो
 ॥ ६ ॥ मंगलीक पहिला तिहां आठ । करमबंध दूरै करि
 आठ । प्रतिमासूल सनाख करेवा । जिनवरना गुणहोयमै
 धरेवा ॥ ७ ॥ ऊभाथई नवकार गुणंता । दस दस जैती
 तिलक करंता । मालापुष्प पुंगोफल ढोवो । मेर भरण
 वर धूपछखेवो ॥ ८ ॥ (ढाल) शक्र स्तव पांचे देववांटे ।
 जवन्यना वंदण पाप ठैदै । दसे नमस्कार करंत जैती
 राखी करौ दृष्टि जिनेंद्र सेती ॥ ९ ॥ आराधिवा काजै
 काउसग । जिणें कीयै भाजै कर्मवग । लोगस उज्जोय
 दसेवखाणुं । वेलां प्रमाणें अहि एगआणुं ॥ १० ॥ इणै
 प्रकारै धुर पूज एह । इसी परै बीजी चार तेह । दसां
 तणो दृष्टि तिहां गिणीजै । एकचित्त सूधै सुभ पुन्य
 कीजै ॥ ११ ॥ धजा तणो रोप तिहां करीजै । एकैक पूठे
 अथवा गिणीजै । मज्जतरै आरति मंगलेवो । पठै प्रभुआ
 गलि तेकरेवो ॥ १२ ॥ (कलश) दूम करिय पूजा यथाजोगै
 संघपूजा आदरो । साहमी वज्रल करो भविका भव ससुद्र
 लीलावरो । संपदा सोहग तेह मानव ऋद्धि दृष्टि वज्रलहै ।
 थो अमरमाणिक सीस सुपरै साधु कोरति दूम कहै ॥ १३ ॥
 इति श्रीचैत्री पूनिमस्तवनम् ॥

॥ॐ॥ अथ नंदीसर द्वीप स्तवनलि० ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ नंदीसर वावन्न जिणालै । शाश्वता चौमुख
 मोहै रे । ऋषभानन चंद्रानन वारषेण । वरधमान मन
 मोहै रे (नं०) ॥१॥ आठमो द्वीप नंदीसर अदभुत । बलया
 कार विराजै रे । तेहनें मध्य चिह्नं दिश शोभत । अंजन
 गिरवरठालै रे ॥२॥ (नं०) जोयण सहस चउरासी ऊंचा
 ऊंचपणें अभिरामारे । मूलै पृथुल सहसदस जोयण ।
 उवरि सहस इक श्यामारे ॥ ३ ॥ (नं०) ते ऊपर प्रासाद
 प्रभुना । अति उत्तंग उदारा रे । साधूजंघा विद्याचारण
 षांदै विविध प्रकारा रे ॥ ४ ॥ (नं०) चैत्यै चैत्यै इकसो
 चौवीस । बिंब संख्या सविदाखीरे । ध्यावो सेवो भविजन
 भक्तो । सुध आगम करि साखीरे ॥ ५ ॥ (नं०) ऊंच पणें
 सऊ जोयण बहुतर । सो जोयण आयामारे । पिड्डल
 पणें पंचास जोयणना । प्रभु प्रासाद सुठामारे ॥ ६ ॥ (नं०)
 धनुष पांचसै आयत प्रभुनो । विविध रतनमय कायारे ।
 जिन कल्याणक उल्लव करवा । सुरपति भगतें आयारे ॥ ७
 (नं०) अंजन अंजन चिह्नं गिर उवरे । चौमुख वावि
 बिशालारे । वावि वावि बिच इक इक पर्वत । राजतरंग
 रसालारे ॥ ८ ॥ (नं०) चौसठि सहस जोयण उत्तंगै ।
 दस सहस सम पिड्डलारे । चिह्नंदिशि सोल सोहै दधि
 मुख गिर । तिहां प्रासाद सुविमलारे ॥ ९ ॥ (नं०) वावि
 वाविनै अंतर विदिसें । रतिकर पर्वत रुद्रारे । दोय दोय
 संख्या ए जगदीसै । कछा नही ए कृमारे ॥ १० ॥ (नं०) जोय
 णसहस मान दस ऊंचा । दश दशसहस विमलारे । ऊल्ल

रिसम संठाण जगत गुरु । निश्चय ए निरधारा रे ॥११॥
 (नं०) ते ऊपर प्रासाद स्तोरण । अंजनगिरि परि माणें रे
 जिन प्रतिमानी संख्या तेहिज । श्रीजिनराज वखाणें रे ॥
 १२॥ (नं०) इम प्रासाद प्रभूना बावन । नंदीसर वरदीपे
 रे । द्रव्य भाव विध पूज करंता । मोह महाभद्र जोपै रे
 ॥१३॥ (नं०) प्रवचन सार उबार प्रकरणें । जोवाभिगमै
 जाणोरे । इम अधिकार ठै ग्रंथ अनेकै । इहां संका मत
 आणोरे ॥१४॥ (नं०) जिम सुरपति विरचै तिहां पूजा ।
 ते अनुभव इहां ब्यावो रे । ध्यावो जिम पावो परमात्म ।
 जैन चंद्र गुणगावो रे ॥ १५ ॥ (नं०) इति नंदीसर द्वीप
 स्तवनम् ॥ ॥ ॥ ॥

॥॥॥ अथ नंदीसर तपस्याकरण विधिलि० ॥॥॥

॥॥॥ अथ शुभ दिन शुभ व्रती गुरुके पास नंदीसर
 तप ग्रहण करै । नंदीसर द्वीपके चारु दिश तरफ पू२
 चैत्यकी अपेक्षाये । अमावसके अमावस (पू२) उपवास
 करै । जिस दिन ज्यो माहाराजके नाम का उपवास
 होय । उसी नामको २००० गुणनो करै (सो लिखते है) ।

१ ॥ ऋषभाननजी सर्वज्ञाय नमः ।

२ ॥ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ।

३ ॥ श्रीवारषेणजी सर्व० ।

४ ॥ श्रीवर्द्धमानजी सर्व० ।

(यह) चार नामकों (४) बेर सुलटा (४) बेर उ
 लटा गिणें । अनुक्रमे (१३) उपवास करणेंसे एक उली
 होय । (४) उली करणेंसे यह तप संपूर्ण होय । पीठे शक्ति

माफक उजमयो करै । नंदीसर दीप को मंजल बणावै ।
पूजा करावै । (इत्यादि महामहोत्सव करके) । ग्यान पूजा
करै । गुरुभक्ति करै । साहमी बल्लल करै । मंजल पूजा
की विशेष विधि गुरुके बचनसें जानके करै । इति नंदी
सर तपस्याधिकारः ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ अथ वैशाख मासमध्ये पर्वोधिकार लि० ॥३॥

॥३॥ वैशाख के महिनेमें (मिती) वैशाख सुद ३ है
(सो) अक्षय तृतीया नामसें पर्व प्रसिद्ध है (इस दिन) श्री
ऋषभ देव स्वामीके । चारित्र ग्रहण किया पीठे । बारैमा
सौका पारणा । सोमयश राजाके पुत्र । श्रीश्यांस कुमारजो
के हाथसें । इक्षुरस सेतो ऊवा (उसी समय) उत्तमदान
के प्रभावसें । सब देवगण प्रमोदवन्त होके । सुगंध जलको
वर्षा ॥१॥ सुगंध पुष्पोंको वर्षा ॥२॥ (१२॥) कोट सोनइयों
की वर्षा ॥३॥ आकास में अहोदानं ऐसें उदघोषणा ॥४॥
देव दुंदुभि बाजित ॥५॥ ऐसी पांच द्रव्यप्रगट किये । श्यांस
कुमारके जस तीन भुवनमें विस्तरण ऊआ । (उसदिनसें)
आहार देणेंकी विधि सबको मालुम ऊई । इस दान के
प्रभावसें श्यांस कुमार अक्षय सुख कीं प्राप्त ऊवा । (इसी
सें) अक्षय तृतीया पर्व श्रांसवमें परममंगलकारी है ।
इस पर्वके आणसें । अष्ट वक्त्र आभूषण पहरेके । भगवत
के मंदर आवै । अष्ट द्रव्यसें पूजन करै । स्नान । अष्टप्र
कारी । सतरभेदी । इत्यादिक पूजा करावे । पीठे गुरुके
मुखसें एकासणादिकके पंचस्त्राण करके । पर्वकी महिमा

सुणें । अपने घरमें मंगलीक भोजन तयार होखे । गुरु
को वह रायके । सब कुटुंब इकट्ठे होके जैसे । ओर
(जो) मंगल कार्य करणा होय (सो) इसी दिन करे । (इस
मासक) इस पर्वको जो भव्यजीव सेवन करेंगे । उसीके
तप तेज सदा बढ़ते रहेंगे । अलं विस्तरेण । इति अक्षय
तौज पर्वधिकारः ॥२॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ तृतीय ज्येष्ठमासाभ्यंतर पर्वधिकारः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ ज्येष्ठकृष्णत्रयोदशी (१३) के दिन । (शोलसा)
श्रीशान्तिनाथ स्वामीके निर्वाण कल्याणक है । (इसीसे)
यह दिन बड़ा उत्तम है । सब ठिकाणें औसंब इकट्ठे
होके । विधि संयुक्त शान्ति पूजाका महोत्सव करावै । शान्ति
जल लेजाके । अपने घरमें ठीक । इस शान्ति पूजाके करा
एसे । मारी । डेजा । (इत्यादि समुदाइक रोग) कभी श्री
संघमें व्याप्त न होय (अथवा) कोई आवक के घरमें
रोग चालो रहतो होय (वा) बड़त चिंता रहती होय
(तो) इसी दिन शान्ति पूजा का उत्सव करणा चाहिये ।
(इसीसे) आधि व्याधि ग्रहादिक को पौडा सब दूर होय ।
अनेक मंगल ऐणी प्रवर्त्तन होय ॥ ॐ ॥ इति ज्येष्ठवद
(१३) पर्वधिकारः । ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ आपाढ मास मध्ये पर्वधिकार लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ आपाढ सुद १४ के दिन । चौमासी १४ इस नाम
से पर्व अस्ति है (सो लिखते हैं) । (यथा) सामान्यकाल

स्यकपोषधानि ॥ देवाच्चैन स्नातविलेपनानि । ब्रह्मक्रिया दान
तपोमुखानि । भव्या अतुर्मासक मंडनानि ॥१॥ (अर्थ) भो
भव्या एतानि सामायकादि धर्म कृत्यानि । चतुर्मासकस्य
मंडनानि अलंकारभूतानि विद्यांते ॥ अहो भव्याप्राणीजीवो
(यह) सामायक को आदलेके (जो) धर्म कृत्य है (सो) चौमा
स के मंडन है । अलंकार समान है । (यथाशक्ति) यह
चौमास पर्व में । कोइ जीव । सामायक । पडिकमणा ।
पोसा । करै । कोइ भगवान के मंदरमें । नानाप्रकारकी
पूजा करै । कोइ सीलवत पालै । कोइ सुपाव दान देवै ।
कोइ नाना प्रकारको तपस्या करै । जैसे धर्मकाम अणौ
शक्तिसे बण आवै (सो करै) इसमें विरोध नहीं । (पर) कोइ
प्रकारसे धर्मका उद्योत करणा चाहियै । जिससे सब
श्रीसंघमें कृतवाणमाला प्रगट होय । और चौमासी (१४)
के दिन । सब मंदर दरशन करने को जावै । पांच शक्र
सब देव बाँदै । पीठे गुरुको पास जाके । चौमासे पर्वका
व्याख्यान सुणै । सबचीजका प्रमाण करके । उपरांत सोग
न लेवै । सांऊ को चौमासी पडिकमणो करै । (इसी
भाषका) कातो चौमासै । प्रागुण चौमासैको पिण सेवन
करै ॥ इति चतुर्मास पर्वधिकारः कथितः ॥३॥

॥३॥ अब आवण मास मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥३॥

॥३॥ आवण मासमें कोइ भव्य जीव । मर्याद
आदिक लेखों में । नाना प्रकारकी पूजा करायके
चौमासै पर्वका उद्योत करते हैं । (इसी भाषका) सब

ठिकाणें नाना प्रकारकी पूजा कराणी चाहिये । और बड़
त ठिकाणें की आवश्यकता । इस महिने में । कई तरैकी
तपस्या करै है । (जिसमें) उत्तम फलकी दैणें वालो कई
तपस्या (विधिप्रपाक ग्रंथसे) उद्धरण करके । संक्षेपविधि
से इहां लिखते हैं ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ अथ ठुठकर तपस्याविधि लि० ॥३॥

॥३॥ पुरिमड्ड १ । एकासण १ । नौवो १ । आंबिल १ ।
उपवास १ । (यह १ उली) इसी तरै पांच उली करै । तपो
दिन २५ । ऊजमणें (२५) । लाहू चढावै ॥३॥ इति इन्द्रि
जय तप ॥१॥ ॥३॥ एकासण १ । नौवो १ । आंबिल १ । उप
वास १ । (इसी तरै) उली चार करै । तपोदिन १६ । ऊज
मणें १६ लाहू चढावै ॥३॥ इति कषाय जयतपः ॥ २ ॥
॥३॥ नौवो १ । आंबिल १ । उपवास १ । (इसी तरै) उली
३ । करै । तपोदिन ६ । ऊजमणें (६) । लाहू चढावै ॥३॥
इति योगशुद्धि तप ॥३॥ ॥३॥ इकसार उपवास ३ । (अथवा)
एकांतर उपवास ३ । ऊजमणें ज्ञान पूजा करै ॥३॥ इति
नाणतप ॥४॥ ॥३॥ इकसार उपवास ३ । (अथवा) एकांतर
उपवास ३ । ऊजमणें स्नातपूजा करवै ॥३॥ इति दर्शनतप
॥५॥ ॥३॥ इकसार उपवास ३ । (अथवा) एकांतर उपवास (३)
ऊजमण्ड । गोतम स्वामीकी पूजा करै । इति चारिततप ।
॥६॥ ॥३॥ अड्डम १ । ठड्ड १ । उपवास १ । एकासण १ । एकल
ठाणो १ । दन्ति १ । नौवो १ । आंबिल १ । (यह एक उली)
इसी तरै उली आठ करै । तपोदिन (८८) । ऊजमणें

रूपानो वृक्ष । सोनानो कुहानो करायके । ग्यान खाते देवै ॥ इति आठ कर्मसूत्रण तप ॥ ७ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ भाद्रवा वदि चउथ से लेके । पनरै दिन पर्यंत (इकसार) एकासणा (अथवा) विआसणा करै । वर देहरा सर आगे (अथवा) अठ्ठै ठिकाणें कलश स्थापन करै । एक सुडो आवल सदा कलसमें भरै । संवत्सरीके दिन कलश ऊपरि नालेर रखके । महोत्सव पूर्वक मंदर लाके देव आगे रक्खे । स्नाव पूजा करै । ज्ञान पूजा करै ॥ ॥ ॥

इति अक्षयनिधि तपः ॥ ८ ॥ ॥ श्रीवासु पूज्य पूजा पूर्वक । रोहिणी नक्षत्र दिने । उपवास । नौवौ आबिल । सात वरस सात मास करै ॥ (श्रीवासु पुज्य खामौ सर्व ज्ञाय नमः) ॥ इस पदको २००० गुणनो करै । गुरुके पास तवन सुणें (सो) तवन आगे लिख्यो है ॥ जजमणें ज्ञानके उपगरणसे । ज्ञानभक्ति । गुरुभक्ति करै ॥ ॥ इति रोहिणी तपः ॥ ९ ॥ सुदपक्षके पांचमके दिन । अश्विनेमि । अंबिका । पूजा पूर्वक । पांच एकासणादिक तप करै । अंबिका देवी को बेस चढावै ॥ ॥ इति अंबिका तपः ॥ १० ॥ सुद

पक्षके इग्यारसके दिन । सिंहांत पूजापूर्वक । मोन संयुक्त उपवास करै ॥ ११ ॥ इति श्रुतदेवता तपः ॥ १२ ॥ सुद पक्षमें एकांतर । उपवास ८ । पारणें आबिल ८ । एवं दिन (१६) जजमणें ग्यानपूजा करै ॥ १३ ॥ इति सर्वांग सुन्दरतपः ॥ १४ ॥ ॥ चैत्रमासि एकांतर उपवास १५ ॥ एवं दिन (३०) जजमणें सोनेको (अथवा) रुपैको वृक्ष । अनेक फल सहित चढावै ॥ इति सौभाग्य कल्पवृक्ष

तपः ॥ १३ ॥ ॐ ॥ प्रतिवा । बीज । तीज अनुक्रमसे पूनिस
पर्यंत १५ उपवास करै । जो तिथि भूलै सो तिथि और
करै । जजमणें एकसो बीस [१२०] लाट् मंदर चढावै ।
ज्ञाव करावै ॥ इति सर्व सुखसंपत्ति तपः ॥ १४ ॥ ॐ ॥ वर
सातना चार मास (और) पोस । चैव । यह षट्मास टाल
के । ठोटी पांचम तप सुरू करै । अंधारी अजुआली पां
चम । मास पू लग । एकासणादिक तप करै । जजमणें ज्ञान
पूजा करै । इति ठोटी पांचम तपः ॥ १५ ॥ ॐ ॥ सुदपांचमकों
पांच वरस पांचमास उपवास करै । उपवासके दिन देववां
दनादिकक्रिया करै । जजमणें पुस्तकादिक ज्ञानोपकरण ।
प्रकवान फल कलसादिक पांचर चढावै ॥ सतर भेदों पूजा
करावे । साहमी बहल करै । इति ज्ञानपांचमौ तपः ॥ १६ ॥
॥ आस सुदि । प्रतिवा । बीज । तीज । चोच । पांचमें । एका
सणादिक तप करै । असोगहृक्ष पूजापूर्वक देवआगै नेवेदा
चढावे । इसीतरै वरस ५ । तपकरै । जजमणें चावलसें ।
असोगहृक्ष लिखके पूजाकरै ॥ इति असोगहृक्ष तपः ॥ १७
॥ ॐ ॥ आसाठ वदि (७) श्रीविमलनाथ पूजा पूर्वक
उपवास ॥ आवण वदि (७) श्रीअनन्तनाथ पूजा पूर्वक
उपवास ॥ काती वदि (७) श्रीआदिनाथ पूजा पूर्वक
उपवास ॥ मिगसर वदि (७) श्रीमहावीर पूजा पूर्वक
उपवास ॥ पोसवदि ७ श्रीपार्श्वनाथ पूजा पूर्वक उपवा
स करै । ज्ञाव करै । जजमणें । चावलसों लोकनाल वणाके
साते राज सात पावनों करिके । तिस ऊपरि सिद्धिदेव
(तिसकों) सोनें रत्नोंको सुकट चढावै ॥ इति सुकटसप्तमौ

तपः ॥१८॥ ॥ आसोज सुदि ८में लेके । दिन ८ तांई एका
सणादि तप करै । आठ प्रकारकी पूजा करै । नेवेदा च
ढावै । पहिलै वरस अष्टापदनी एक पावनी । इसी तरै
आठेवरसे आठ पावनी । अष्ट प्रकारी पूजा पूर्वक
आराधियै । जजमणें अष्टापद पूजा करावै । पकवान फल
सब चउबोस चढावै ॥ इति अष्टापद पावनी तपः ॥१९॥
॥ सुदपक्षके ८ आठमके दिन । उपवास (अथवा) आंबि
ल (८) करै । जजमणें दूधका कटोरा भरके । आठ लान्,
देव आगलि चढावै ॥ इति अष्टत आठमि तपः ॥२०॥ ॥

॥ ॥ बृदपक्ष (अथवा) सुद पक्षके दशमके दिन । दश
उपवास । [अथवा] बीस एकासणा करै । जजमणें अखं
मित्त धो धार पूर्वक तीन प्रदक्षिणा देवै ॥ इति अखं
दशमी तपः ॥ २१ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ बृदपक्ष (अथवा) सुद पक्षके ११ इग्यारसके
दिन । सिहांत पूजा पूर्वक । एकासणा । नौवौ । आंबिल ।
(वा) उपवास ११ करै । जजमणें ११ अंगकी पूजा करै ॥
इति श्री इग्यारअंग तपः ॥ २२ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ सुद पक्षके १४ चउदस के दिन । एकासणादि
(१४) तप करै । जजमणें ग्यानपूजा करै । चवदप्रकारके
पकवान प्रमुख चढावै ॥ इति १४ पर्वतपः ॥ २३ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पांच अष्टत तैला । मास ६ में करै । (प्रथम तैले)
सिखण्य पारणो । (दूसरै तैले) सौरैको पारणो । (तीस
रै तैले) लापसीको पारणो । (चौथै तैले) लाडुको पारणो ।
(पांचमै तैले) खीरको पारणो । सर्वपारणें प्रथम साधने

विहराको पारणो करै ॥२४॥ इति पंचाशत तैला तपः ॥
 २४॥॥ अष्टम १ । एकासणो १ ॥ अष्टम १ । एकासणो १ ॥
 अष्टम १ । एकासणो १ ॥ ए मोटो रलोत्तर तपः ॥२५॥॥
 आबिल २४ करकै जजमणें रूपानो चक्र मंदर चढावै (तो)
 सदा जय होय । विणज जोपारमें लाभ होय । जगडै जीत
 होय । इति धर्म चक्र तपः ॥२६॥॥ उपवास ५ व्यासणां
 ५ । एकांतरै करै । इति पांच महाव्रत तपः ॥२७॥॥ उप
 वास १ । एकासण १ । नीवी १ । आबिल १ । व्यासणो १ ॥
 उपवास १ । एकासणो १ । नीवी १ । आबिल १ । व्यासणो १ ।
 एवं दिन १० । पूनम से सख करै । पारणै साधू पण्डिताने
 ग्यान पूजा करै ॥२८॥॥ इति दालिद्र हरण तपः ॥२८॥॥
 एकेंद्रिये उपवास १ । त्रैलोक्ये ठह १ । त्रैलोक्ये अष्टम १ । चौरिं
 द्रिये दशम १ । पंचेंद्रिये द्वादशम १ । ठहार्थ चतुर्दशम
 १ । तप करै । जजमणें सुखजीसें ली ६ बीमावै ॥ इति
 ठहार्थ आलोचन तपः ॥२९॥॥ नीवी (आठ) निरंतर
 करै । इति सासुसुखतपः ॥३०॥॥ आबिल (आठ) निरंतर
 करै ॥ इति सुसरसुख तपः ॥३१॥॥ ठह (पांच) करै ॥
 इति पुढी सुख तपः ॥३२॥॥ अष्टम (पांच) करै ॥ इति
 घेठा सुख तपः ॥३३॥॥ उपवास (आठ) एकांतर करै ॥
 इति भर्तार सुख तपः ॥३४॥॥ नीवी (पांच) निरंतर
 करै । इति जेठ सुख तपः ॥३५॥॥ एकासणा (पांच)
 निरंतर करै । इति देवर सुखतपः ॥३६॥॥ ठह ५ ।
 एकासणा पांच । एकांतर करै ॥ इति पिता माता सुख
 तपः ॥३७॥॥

॥ ॐ ॥ इत्यादिक कोई तरैकी तपस्या बज्जत ठिकारणें को आबिका करै है। (इसी से) सब आबिकाको उपगार्य शास्त्रोंसे। उदरण करके। संखेप विधिसें इहां लिखी है। बेसी सक्ति होय (तो) पूजा। साहमौ बहल। तीर्थ जावा। (इत्यादिक) सातुं शुभखेलोंमें। अपणाधन खरच करै। धर्मका उद्योत करै। इस तपस्या को प्रभाव से। (इस भवमें) संसार संबंधी दुखदालिद्र दूर होके। सब कुटं वमें सुख संपदा होय। (परभवमें) देवादिक ऋद्धि प्राप्त होय। (किं बज्जना) इति छुट कर तपस्या विधिः ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ अथ भाद्रवमासमर्थ पर्व्याधिकारलि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ भाद्रवमहिनेमें। मितौ भाद्रवसुद ४ (तथा) कोई मतके अपेक्षायें ५ तिथकों। संबहुरी नाससे पर्वप्रसिद्ध है। (प्रथम इस संबहुरी पर्वकी महमा कहते है) (जैसे) जगत्में अनेक मंत्र है। परे नवकार मंत्र समान कोई मंत्र नहीं (१)। तीर्थोंमें सेवुं जय समान कोई तीर्थ नहीं (२)। पांच दानमें। अभयदान। सुपावदान। समान कोई दान नहीं (३)। गुणमांहे विनयगुण (४)। व्रतमांहे ब्रह्म व्रत (५)। नियम मांहे संतोष नियम (६)। तपमांहे उपशम तप (७)। दर्शनमांहे जैनदर्शन (८)। जलमांहे गंगाजल (९)। अलंकार मांहे चूनामणि (१०)। ज्योतषी मांहे चंद्रमा (११)। तेजवंत मांहे सूर्य (१२)। तुरंग मांहे पंचवल्लभ किसोर (१३)। नृत्यकलावंत मांहे मोर (१४)। गज मांहे औरावण (१५)। दैत्यमांहे रावण (१६)। वनमांहे

नन्दनवन (१७) । काष्ठमांहे चंदन (१८) । साहसौक मांहे
विक्रमादित्य (१९) । न्यायवंत मांहे श्रीराम (२०) । रूप
वंत मांहे काम (२१) । सती मांहे सीता (२२) । सुगंध
मांहे कस्तूरी (२३) । वस्तु मांहे तेजनतूरी (२४) । वा
जिवमांहे मंभा (२५) । स्त्रीमांहे रंभा (२६) । धातुमांहे
खर्ण (२७) । दातारमांहे कर्ण (२८) । गौ मांहे कामधेनु
(२९) । वृक्ष मांहे कल्पवृक्ष (३०) । जलमांहे अमृत (३१) ।
स्नेहमांहे धृत (३२) । (इत्यादिक) सब वस्तु में एक एक चीज
उत्तम होती है । (इसी माफक) सब पर्वों में उत्कृष्ट रा
जाधिराज श्रीसंबल्लरी पर्व (दूसरो नाम) श्रीपर्युषणा पर्व
को । भगवंत श्रीमहावीर स्वामीजीने उत्तम वर्णन कियो
॥३३॥ (अब श्रीपर्युषणा पर्व आनेसे) (प्रथम) श्रीसाधुके क
रवा योग्य धर्मदातृ कहते है ॥३४॥ संबल्लरी प्रतिक्रमण
करै ॥१॥ लोचकरावै २ । तैलैका तप करै ३ । सब संदरोमें
भगवंतकी भाव स्तवना करै ४ । सब श्रीसंघसे खमावै
५ । यह पंचकारणके वास्ते श्रीतीर्थ कर गणधरोनि श्री
पर्युषणा पर्व प्रवर्त्तन किया ॥३५॥ ॥३६॥

॥३७॥ अब शुद्धआवक संबल्लरी पर्व आराधन करणेको
आठदिन अष्टाही महोत्सव करै (सो) कल्पलता शालसे लि
खतेहैं ॥३८॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी भक्ति करै । कल्पसुख जी
को विधि संयुक्त अपने घर लेजावै । रातौ जागरण करा
वै । (प्रभात समय) नगरके सब श्रीसंघको निमंत्रण करै ।
यथायोग्य सत्कार सन्मान करै । पीठे पुस्तक ग्राहक पुरब
सबसे उत्तम वस्त्र आभूषण पहारकै । सुगट ठठ चामर

(इत्यादिक सहित) साख्यात इन्द्र माहाराजको रूप बनाके
 हाथी ऊपर (अथवा) पालखी ऊपर बैठे। अष्टमंगलीक
 रचित थालमें पुस्तक धरके। अपने दोनुं हाथमें थाल
 रखे। दोनुं तरफ पुरष अथवा बल्ल आभूषण पहरे। चम
 र टाले। अनेक प्रकारके बाजिल बाजते जुये। दान देते
 जुये। नानाप्रकारके श्रुतज्ञानको गुण वर्णन करते जुये
 नगरमें प्रदक्षिणा तुल्य फिरके। गुरुके पास आवै। गुरु
 पित्त खटा होके। विनय संयुक्त पुस्तकको नमस्कार करके
 आगे रखे। श्री संघके आज्ञासे वाचना पूर्वक वाचै ॥१॥
 नगरमें सब ठिकाणें अमारि पट्टाहो फेरवै। दूसरो अपने
 बचनसे (तथा) द्रव्यसे। कसाई। धोबी। भद्रभुजा (इत्या
 दिक) सबके आरंभ ठोम्रावै ॥२॥ सुपात्र दान देवै ॥३॥ वि
 दाम सुपारी नालेरादिककी परभावना करै ॥४॥ श्रीवीत
 राग देवकी उदार भक्तिसे पूजा करै। चौदसके दिन। सब
 छुरीके दिन। चतुर्विध श्रीसंघ इकट्ठे होके। सब मंदर
 दरसख करणें को जावै ॥५॥ सचिन्तका परिहार करै ॥६॥
 ब्रह्मचर्य पाले ॥७॥ चउत्य। ठट्ट। अठमादिक। तप करै ॥८॥
 अपने २ वित्तके अनुसारै जन्म कल्याणक को महोत्सव
 करै ॥ ९ ॥ अठ पहरी चौ पहरी पोसो करै ॥ १० ॥
 संबल्लरी प्रतिक्रमण करै ॥ ११ ॥ निशल्प होके सब श्रीसं
 घसे खमावै ॥ १२ ॥ पारणिके दिन पोसह पट्टिकमणें वाले
 साधमी भाइयोंकी भक्ति करै ॥ १३ ॥ गुरुभक्ति करै ॥ १४ ॥
 संबल्लरी दान देवै। साहमी बल्लल करै ॥ १५ ॥ इस विधि
 संबुद्ध (यह) कल्पसुख एकचित्त सुणनेसे आराधन करनेसे

आठ भवमें सिद्धि स्थानकों प्राप्त होय । (और) केइ उत्तम जोव । अत्यन्त शुभ भाव रखके । अष्टमादिक तप करिके युक्त कल्पसुखजीकों बाचते है । और सुगनेवाले प्रमाद निद्रा बिकथा छोड़के । अष्टमादिक तप करके युक्त । इकषि तसें शुद्ध भाव रखके । इकवीस वेर सुणते है (सो) पुरष देवगतिकों प्राप्त होके । तीसरै भव सिद्धि स्थानकों प्राप्त होते है ॥ ॐ ॥ इस पर्युषण पर्वके महोत्सव (जो) भव्यजोव करते है । (सो) धन्य है । धर्मके प्रभावोंक है । अपने लक्ष्मी से धर्मका उद्योत करै है । उसी पुरषों को नमस्कार है ॥ ॐ ॥ (अब कल्पसुख जीके महात्म कहते है) । यह कल्पसुख नवमा पूर्वसे उद्घरण किया ऊवा । दशानुतस्कांधका आठमा अध्ययन है । सब औसंधके मंगलके कारण । श्रुतकेवली । औभद्रवाज स्वामी प्रसिद्ध किया । यह कल्पसुखके अनन्ते विषय है । (जैसे) सब नदीको बालूके जितने कण होय (तिससें पिण) एक सुख के अनन्ते विषय है । इस कल्पसुखके महात्म (जो) देवाचार्य । हजार जीभ करके कहै (तो पिण) महात्मके एक अंस कह सकाते नहीं । ऐसा इस पर्वका महात्म जानके (जो) भव्यजोव शुद्धभावसे सेवन करेंगे (सो) अनेक तरै से ऋद्धि वृद्धि सुख सौभाग्य को प्राप्त होंगे । परभव से देवादिक ऋद्धिप्रायके सुखसुख को प्राप्त होंगे ॥ ॐ ॥ इति पर्युषण पर्वोधिकारः ॥ ॐ ॥ ६ ॥

॥ ॐ ॥ अथ आश्विनमास मध्ये पर्वोधिकारलि० ॥ ॐ ॥

प्रातसमें देवताओंके आते जाते वचन सुणके । श्री गौतम
खामीकों केवलज्ञान उत्पन्नहुवो । (दूजके दिन) सुदर्शन
बैन । अपणें भाई नंदवर्द्धन राजाकों घरमें बुलायकी जिमावा
शोक दूर करायो । जिससें भाईबीज प्रवर्त्तन हुई । इसीसें
यह दीवाली पर्व बड़ा उत्तम है । इस दीवालीके रात
(जो) गुणनो करै (सो लिखते हैं) ॥१॥ ॥२॥ ॥३॥

१ ॥ श्री महावीर खामी सर्वज्ञाय नमः ।

२ ॥ श्री महावीर खामी पारंगताय नमः ।

३ ॥ श्री गौतम खामी सर्वज्ञाय नमः ।

॥ इस एकद्वय पदको ५००० गुणनो करै । उपवास करै ।
रात्री जागण करै । निर्वाणके समय अष्ट द्रव्यसें बाल
भरके मंदर जावै । रोसनी करै । निर्वाण कल्याणक की
आरती करै । स्तवन बोलै । निर्वाण कल्याणक अधिकार
सुणै । गौतम रास सुणै । (इत्यादिक) उदार चित्तसें सब
ठिकाणें दीवाली पर्वका उल्लव करना चाहिये ॥१॥

॥१॥ अथ निर्वाण आरती लि० ॥१॥

॥१॥ जय जगदीश्वर अति अलवेसर । नीर प्रभुराया ।
पतित उधारण भव भयभंजन । बोधबौज दाया । (जय
जिनराया । आरतिकरं मनभाया । होय कंचनकाया) ॥१॥
(ज०) ॥ खलीकुंड नगर अति सुंदर । सिद्धारथ राया ।
सुदि आसाढ़ ठठके दिवसे । विसला कुक्षआया (ज०) ॥१॥
अवदै सुपन देखी अति उत्तम । निज प्रीतम भाषै । अरब
भेद सङ्ग निजै करने । जिन गुणरस चाखै (ज०) ॥२॥ चैन

सुदौ तेरस दिन उत्तम । सज्ज ग्रह उच्चपावै । जन्म लेइ दिस
कुमरौ सज्जना । आसन कंपावै ॥३॥ (ज०) उल्लव कर जावै
निज थानक । इन्द्र सज्ज आवै । मेरु सिखरपर आब महो
ल्लव । करि आनंद पावै (ज०) ॥४॥ वसुधारा दृष्टोकर सज्ज
सुर । निज थानक जावै । सिद्धारथ करै जन्म महोल्लव
अचरन् सज्ज पावै (ज०) ॥५॥ कंचन वरण तेज अति दीप
त । हरिलंठेन ठाजै । कुल इखागु अंग सज्ज लक्षण । ससि
ज्युं सुख राजै (ज०) ॥६॥ दान संबल्लर दे प्रभु लेवै ।
आरिख सुख दाई । मार्गसौख दसमी बढ पछै । उत्तम तर
पाई (ज०) ॥७॥ बार वरस ठग्नस्थ पणामे । दुक्कर तप पा
लै । माघव सुद दसमी के दिनकुं । दोख सज्ज टालै (ज०)
॥८॥ केवल पाय सबौसुर संगै । पावा पुर आवै । गुणगण
लंछत देसना देकै । संघे सज्ज पावै ॥९॥ भूमंजल बिच बज्ज
तजीवकुं । अविचल सुख देवै । नर सुर इन्द्र सबौमिल पूजै
जगमें जस लेवै (ज०) ॥१०॥ चरम चौमासि पावापुरि कर
कै । अंत समय जाणौ । हस्ति पालकी गुल्ल सालमे । सोलै
पहरबाणौ (ज०) ॥११॥ पर्यंकासन ठग्न तपस्या । इक चित
गुणधामौ । कार्तिक कृष्ण अमावसकै दिन । सिक्कमल्ला
पामौ (ज०) ॥१२॥ इन्द्रादिक निर्वाण महोल्लव । करि प्रभु
गुण गावै । देवमुखै गणधर गुरु गोतम । सुणनें पठतावै
(ज०) ॥१३॥ वीतराग गुण मनमें धारी । अनित्यभाव भावै ।
केवल ग्यान प्रगट्ठय ततखिण । सुर नर गुणगावै (ज०)
॥१४॥ पंच कल्याणक सासन पतिकी । आरति ज्यो गावै ।
सिवसुख लक्ष्मी प्रधान मिलै जब । मोहन गुण पावै (ज०)

॥१५॥ इति पंच कल्याणक आरती संपूर्णम् शुभंभवतु ॥

॥ॐ॥ अथ निर्वाण कल्याणक स्तवन लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ मारग देसक मोक्ष नोरे । केवल ग्यान निधान
भावदया सागर प्रभूरे । पर उपगारी प्रधानोरे ॥१॥ (वीर
प्रभु सिद्ध यथा) । संघ सकल आधारो रे । हिव इण भरत
मां । कुण करस्यै उपगारो रे ॥२॥ (वीर प्रभु सिद्ध यथा) ।
नाथ विह्वणी सैन्य जूरे । वीर विह्वणो रे संघ । साधै कुण
आधार थीरे । परमानंद अमंगोरे ॥ ३ ॥ (वीर०) ॥ मात
विह्वणा बालज्युरे । अरहो परो अथनाथ । वीर विह्वणा
जोवनारे । आकुल व्याकुल थायैरे ॥४॥ (वी०) ॥ संसय छेदक
वीरनोरे । विरह ते केमखमाय । जे दौठे सुख ऊपजै रे ।
ते विरु किम रहिवायो रे ॥५॥ (वी०) ॥ निर्यासक भव समु
द्रनो रे । भव अटवौ सत्यवाह । ते परसेसर विण मिल्यारि
किम वाधे दुखाहोरे ॥६॥ (वी०) ॥ वीर थकां पिण श्रुततणो
रे । ऊंतो परम आधार । हिवणा श्रुत आधारठै रे । एह
जिन आगम साखोरे ॥७॥ (वी०) ॥ इण काले सव जीवठे रे ।
आगमथी आनंद । ध्यावो सेवो भविजना रे । जिन पद्मिमा
सुख कंदो रे ॥८॥ (वी०) ॥ गणधर आचारज मुनीरे । सड
नें इणपरि सिद्ध । भवभव आगम संगथीरे । देवचंद्र पद
लीघो रे ॥ ९ ॥ (वी०) ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ॐ॥ इति दीपमालिका पर्वाधिकार ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अब दूसरो कार्तिक महिनेमें काती सुद पंचमी ।

(सो) ग्यानपंचमी नामसे पर्व प्रसिद्ध है । (स दिन) सब

भव्य जीवोंको ज्ञानको विशेष आराधन करणो चाहिये । ज्ञानके समान संसारमें उत्तम पदार्थ कोईबी नहीं । सब तत्वमें ज्ञान समान कोई तत्व नहीं । मोक्ष मार्ग साधन को ज्ञान समान कोई उपाय नहीं । इस ज्ञान पंचमीको आराधनसे अनेक दुष्ट कर्म बिच्छेद होय । गुं गापणो मुखं पणो वक्रपणो (और) कोटादिकके रोग सब दूर होय । (अनुक्रमे) ज्ञानावरणी कर्मके जय होणेंसे पांचों ज्ञान प्रगट होय । जैसे वरदत्त गुणमंजरीके । रोगादिकके सब उपद्रव दूर होके । मनोरथ पूर्ण भए । उसी भाषक (जो) ज्ञान पंचमीके आराधन करेंगे । उसीके मनोरथ पूर्ण होंगे ॥ ❧ ॥ अब गुरुके पास जाके ज्ञानपंचमी को देव वंदन विधि करै (सो लिखते हैं) ॥ ❧ ॥

॥ ❧ ॥ प्रथम पवित्र स्थानकै । चौकी पड़े ऊपर ग्यान को स्थापन करै । तिस आगे पांच साधियां करै । फल फूल प्रमुख चढ़ावै । पांच वत्तीको दीपक चढ़ावै । अगर कपूरनो धूप खेवै । पूजा पढके । वास छेप कपूरसें ग्यान पूजा करै । यथा शक्ती । रोकनाणो चढ़ावै । (तथा) पूठा पिटांगणादि चढ़ावै । (अब ज्ञानपूजा लिखते हैं) ॥ ❧ ॥ नमंति सामंत महीवनाहं । देवाय पूयंसुविद्ध्यै पुर्वि । भक्तीय चित्तं मणिदामएहिं । मंदार पुष्पं पसवेहिं नाणं ॥ १ ॥ तद्देव सद्वा मणि मुत्ति एहिं । सुगंधपुष्पेहि वरंसि एहिं । पूयंति वंदंति नमंति नाणं । नाणस्सलाभाय भवस्सवयाय ॥ २ ॥ यह पूजा पढके ज्ञान पूजा करै । इसी तरै द्रव्य पूजा करके पौठे भावपूजा करै (सो लिखते हैं) । १ खमासमण

देके । इरिया वही पत्रिकमें । लोग सब कहै । (वैसकै) मुह
पत्ती पत्रिलेहै । अणुजाणह । मेमि उगहं (इत्यादिक) दो
वांढणा देवै । पीठे पांच खमा समण देके । ज्ञानको नम
स्कार कहै ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥

॥१॥ अथ ज्ञानको नमस्कार लिख्यते ॥१॥

॥१॥ सकल वस्तु प्रतिभास भानु निरमलसुख कारण ।
सम्यग्दर्शन पुष्टहेतु भव जलनिधि तारण । संयम तप
आनंद कंद अन्त्याण निवारण । मार विकार प्रचार ताम
तापित जिन तारण ॥१॥ स्याद्वाद परिणाम धर्मपरणति
प्रतिबोद्धण । साङ्ग साङ्गणी संघ सर्व आराधन मोहण ।
मोह तिमर विध्वंस सूर भिव्यात्व पणासण । आतमशक्ति
अनंत सुद्ध प्रभुता परगासण ॥२॥ मति श्रुति अवधि विसुद्ध
नाण मणप्रज्जव केवल । भेद पचास ज्ञायोपशमिक एक
ज्ञायिक निरमल । दोय परोक्ष प्रथम तिहां दुगपरतत्त्वदोस
तः । सकल प्रतत्त्व प्रकास भास ध्रुव केवल अपरमित ॥३॥
धर्म सकलनो मूल सुद्ध विपदी जिन भासै । बाहिर अंग
प्रधान खंघ गणधर सुप्रकासै । शाखा स्त्रीनिर्युक्ति भाष्य
प्रतिशाखा दोपै । चूरण टीका पलपुष्प संशय सब जीपै ॥४॥
पंचांगोसार बोध कह्यो जिन पंचम अंगे । नंदो अनुयोग
द्वार शाख मानो मन रंगे । वीरपरंपर जीत अनुभव उप
गारी । अभ्यासो आगम अगम निरुपम सुख कारी ॥५॥
मोह पंकहर नीरसम सिद्धांत अबाधै । देव चंद्र आशा
सहित नय मंग अगाधै । ए श्रुतज्ञान सोहामयो सकल

मोक्ष सुखकंद । भगतै सेवो भविकजन पामो परमानंद ॥६॥
 ॥॥ इति ज्ञानस्तुति ॥॥ (इत्यादि) नमस्कार कहिके
 रामोत्पुणं जावन्ति चेदयाइ० । जावन्ति केवि साह० ।
 नमोर्हत्सि० (कहके) प्रणमुं श्रीगुरु पाय० । (इत्यादि) ज्ञान
 के स्तवन बोलै । जय वीरराय० कहै । वंदण० अनत्पू०
 कहके । एक नवकारनो काउसगा करै । थुई कहै ॥॥

॥॥ अथ थुई लि० ॥॥

॥ ॥ देविंद वंदिय पणहि पखविवाणि । नाणणि
 केवल मणोहि मईसुवाणि । पंचावि पंचम गई सिय पंच
 मौए । प्रया तवो गुणरवाण जियाणदिंतु ॥ १ ॥ ॥ यह
 स्तुति कहके । (ज्ञान आराधना निमित्त) करेमि काउ
 सगां तसुत्तरौ । अनत्पू० कहके । १ लो गखनो काउसगा
 करै (पारके) बोधा गाध० (इत्यादि गाथा पढ़के) । पौठै
 अभिणिवोहियनाणं । सुयनाणं चैव उहिनानां च । तह
 मणपज्जवनाणं । केवलनाणं च पंचमयं ॥ १ ॥ यह गाथा
 कहके । इहामि खमा० । ओमतिज्ञानाय नमः ॥१॥ औ
 न्नुतिज्ञानाय नमः ॥२॥ औअवधिज्ञानाय नमः ॥३॥ औ
 मणपर्यवज्ञानाय नमः ॥४॥ समस्त लोकालोक भास्कर औ
 केवलज्ञानाय नमः ॥५॥ (इसी तरै) पांच नमस्कार करै ।
 धिरता होय तो (५१) ज्ञानके गुणांको नमस्कार करै
 (सो) पूर्वे नवपदणी के गुणनेमें लिखा है । उसी माफक
 करै । पौठे (उ हीं रामो नाणस) इस पदको २००० गुण
 नो करै । कम धिरता होय तो (५) जाप करै । ज्ञान
 पंचमोका व्याख्यान सुणें । धिरता होय तो इग्यारै

अंगकौ सिञ्जायों पढै (वा) सुणें (सो) इग्यारै अंगकौ
सिञ्जायों लिखते हैं ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ अथ प्रथम आचारांग सिञ्जाय लि० ॥३॥

॥३॥ (ढालं हठीलानी) पहिलो अंग सुहामणो रे ।
अनुपम आचारांगरे । (सुगुण नर) वीर जिनदै भाषियो रे
लाल । उववाई जास उवंगरे (सु०) ॥१॥ बलिहारौ ए अंगनौ रे
लाल । जं जाउं वारंवार रे (सु०) विनयै गोचरी आदरै रे
लाल । जिहां साधुतणो आचार रे (सु० बलि०) ॥२॥ सुयखंध
दोय ठै जैहनारे । प्रवर अध्ययन पचवीसरे (सु०) उहै सा
दिक जाणियै रे लाल । पिच्यासी सुजगीसरे (सु० ब०) ॥३॥
हेतु जुगतिकर सोमतारे । पद अड्डार हजार रे (सु०) अक्ष
रपदनें ठेहडै रे लाल । संख्याता ओकार रे (सु० ब०) ॥४॥
गमा अनंता जेहमारे । बलि अनन्त पर्यायरै (सु०) । बस
परित्ततो छै इहारे लाल । यावर अनन्त कहाय रे (सु०
ब०) ॥५॥ निबड निकाचित सासतारे । जिनप्रणीत ए भाव
रे (सु०) सुणतां आतम जलसै रे लाल । प्रगटै सहज खभा
वरे (सु० ब०) ॥६॥ सुगुण आवक वारू आविका रे । अंगै
धरोय उल्लास रे (सु०) । विधिपूर्वक तुमे सांभलो रे लाल ।
गौतारथ गुरु पासरे (सु० ब०) ॥७॥ ए सिद्धांत महिमानि
लोरे । ऊतारै भव पाररे (सु०) । विनयचंद्र कहै माहरै
रे लाल । ए हिज अंग आधार रे (सु० बलि०) ॥८॥ इति
आचारांग सिञ्जाय ॥१॥ ॥३॥ ॥३॥

॥ॐ॥ अथ सुयगङ्गांग सुत सिञ्जाय लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (ढाल रसीयनी) । धौजो रे अंग तुमे सांभलो ।
मनोहर श्रीसुगङ्गांग (मोरा साजन) । बिणसै तेसठ पाखं
हौ तणो । मतखंडो धर रंग (मो०) ॥१॥ मीठीरे लागै
वाणी जिन तणी जागै जेह थोरे ग्यांन (मोरा सा०) । ए
वाणी मन भाणी माहरै । मानुं सुधारे समान (मोरा०)
(मीठी०) ॥२॥ रायपसेणी उवांग ठै जेहनो । एतो सुव
गंभीर मो० । बड्ढ्युत अरथ जाणै सड्ड । क्षोर नौर
धनुर तौर (मो०मौ०) ॥३॥ एहनारे सुयखंध दोय ठै ।
वलि अध्ययन तेवीस (मो०) ॥ उहेसा ससुहेसा जिहां
भला । संख्यायै रे तेवीस (मो०मीठी०) ॥४॥ नय निक्षेप
प्रमाण भखा । पद ठत्तौस हजार (मो०) । संख्याता
अक्षर पद मांहे । कुण लहै तेहनो रे पार (मो० मी
ठी०) ॥५॥ गमा अनंता पर्याय वलौ । भेद अनन्त
जिणमांहि (मो०) । गुण अनन्त तस परित्त कछ्छा । थावर
अनन्ता जेमांहि (मो०मी०) ॥६॥ निबड्ड निकाचित जेसा
सयकफा । जिणपन्नत्तारे भाव (मो०) । भाषीरे सुंदर
एह प्ररुपणा । चरण करण नोरे जाव (मो०मीठी०) ॥७॥
कटोयै भगत जुगत ए सुवनी । निहचै लहीयै रे सुक्ति
(मो०) । विनयचंद्र कहै प्रगटै एह थौ । आतम गुणनीरे
शक्ति (मो०मीठी०) ॥८॥ इति श्रीसुयगङ्गांगसिञ्जायः ॥२॥

॥ॐ॥ अथ (३) ठाणांग सुत सिञ्जाय लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (ढाल) आठ टकै कंकणो लीयोरी (एहनी) ॥ॐ॥

॥ लोकोत्तरंग भलो कछोरे । (जिनजी) नामे औठाणांग ।
 (मोरो मन मगन थयो) । हारे देखो भाव । हारे जीवा
 जीव स्वभाव (मो) ॥१॥ सबल जगत करौ ठाजतो रे ।
 जि० । जीवाभिगम उपांग (मो०) । एह अंग सुऊ मन
 वस्यो रे । जि० ॥ जिम कोकिल दल अंब (मो०) ॥२॥
 गुहिर भाव कर जागतोरे ॥ जि० ॥ आजतो एह आलंब
 (मो०) । कूट सेल सिखरी सिलारे ॥ जि० ॥ काननमें बलि
 कुंठ (मो०) ॥३॥ गह्वर आगर द्रह नदी रे ॥ जि० ॥ जेह
 में अठै रे उदंड (मो०) । दशठाणा अतिदोपतारे ॥ जि०
 गुणपर्याय प्रयोग (मोरो०) ॥४॥ परित्त जेहनी वाचनारे ।
 जि० ॥ संख्याता अनुयोग (मो०) । वेष्टशिलोक निजुत्तमुं
 रे ॥ जि० ॥ संगहणौ पडिचित्त (मो०) ॥ ५ ॥ ए संज सं
 ख्याता जिहारे ॥ जि० ॥ सुणतां उलसै चित्त (मो०) ।
 सुयखंध दूक राजतो रे (जि०) । दश अध्ययन उदार
 (मो०) ॥६॥ उहेसादिक वीस ठैरे । (जि०) पंद बहत्तर
 हज्जार (मो०) । रागी जिन शासन तणो रे ॥ जि० ॥
 सुणें सिद्धांतवषाण (मो०) । विनय चंद्रकहै तेज वैरे । जि०
 परमारथराजाण (मो०) ॥ ७ ॥ इति औठाणांग सुव सि
 ज्जायः ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ अध (४) समवायांग सुव सिञ्चाय लि० ॥३॥

॥३॥ (ढाल) थारा महिलां ऊपरमेह ऊरोखे कोयली
 (एहनी) ॥३॥ चौथो समवायांग सुणो औता गुणी हो
 लाल । सुणो० । पन्धवणा उपांग करौ सोभावणी हो लाल

करी सो० । अरघ मागधी भाषा साखा सुरतणी हो
 लाल । साखासु० । समकित भाव कुसुम परमल व्यापी घणी
 हो लाल । पर० ॥१॥ जीव अजीवनें जीवाजीव समास
 यी हो लाल ॥ जीवा० ॥ लहीयै एह्यी भाव विरोध
 कांड नयी हो लाल । वि० । भांगा तीन खसमयादिकना
 जाणीयै हो लाल । यादि० । लोक अलोकनें लोकालोक
 बखाणीयै हो० । लो० एक यकी ठै सत समवाय प्ररूपणां
 हो लाल । रुम० । कोप्ता कोप्ता प्रमाणक जीव निरूपणा
 हो० । जी० । बारसविह गणि पिटक तणी संख्या कही
 हो०त० । सासता अरथ अनंतकि ठै एहना सही होलाल
 । ठै०॥३॥ सुय खंध अध्ययन उद्देशादिके भला होलाल ॥
 । उ० । संख्यायें एक एक प्रत्येकै गुणनिंला हो० । प्रत्ये० ।
 पद एक लाख चोमाल सहसते उत्तरा हो० । स० । पदनें
 अग्र उदग्र संज्ञाता अक्षरा हो० । सं० ॥४॥ भाष्य चूर्णि
 निर्युक्ति करी सोहैं सदा हो०करी० । सुगतां भेद गंभौर
 बिपत न होय कदा हो० । विप० । जेहनमावै अंगकि
 अन्तरगतिहसी हो० । अन्त० । जलवरसंते जोर कुणन
 ऊवै खुसी हो० कुण० ॥५॥ जाग्यो धरम सनेह जिणंदसुं
 माहरो हो० । जिखं० । तजिया शास्त्र मिथ्यात सूत्र
 पाखो खरो हो० । सु० । जिम मालतो लही भृंग करीनें
 नविरहै हो० । करी० । ईश्वर शिरसुरगंग तजी परि नवि
 वहै हो० । तजी० ॥६॥ एप्रवचन निग्रंथ तणो जुगतै वप्नो
 हो० । तणो० । साकर सेलानी द्राप यकी पिण मीठनो
 हो० । यकी० । स्यं कहीयै बडवात विनयचंद्र दूम कहै

हो० । वि० । एहना सुगने भाव ओता अति गहगहै हो०
ओता० ॥७॥ इति श्रीसमवायंग सुवसिष्ठाय संपूर्ण ॥४

॥ॐ॥ अथ (५) भगवती सुवसिष्ठाय लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ 'ढाल पंथोडानी' । पंचम अंग भगवतो जालीयै
रे । जिहां जिनवरना वचन अथाह रे । हिमवंत परबत
सेती नीकत्यारे । मानुं परतिख गंगप्रवाह रे (पां०) ॥१॥
सूरपन्नत्तौ नामे परगजो रे । जेहनो ठै उद्दाम उवांगरे ।
सुल तणो रचना दरीयाजिसो रे । मांजिला अरथ ते सज
ल तरंग रे (पां०) ॥२॥ इहां तो सुयखंध एक अति भलो
रे । एक सो एक अध्ययन उदार रे । दश हजार उद्देशा
जेहना रे । जिहां किण प्रण ठप्तीस हजार रे (पां०) ॥३॥
पद तो दोयलाख अरथे भझा रे । ऊपरि सहस अठासी
जाण रे । लोकालोक स्वरूपनी वर्णना रे । विवाह पन्न
त्तौ अधिक प्रमाण रे (पां०) ॥४॥ करियै पूजा अने परभाव
नारे । धरियै सदगुरु ऊपरराग रे । सुखियै सुल भगवतो
रागसुं रे । तो होय भव सागरनो त्याग रे (पां०) गोतम
नामे द्रव्य चढाइयै रे । सम्यक् ज्ञान उदय होय जेमरे
कोजै साधु तथा साहसी तणीरे । भगति युगति मन आ
णो प्रेम रे (पां०) ॥५॥ इण विधिसुं एह सुल आराधता रे
इण भव सीजै वंछित काज रे । पर भव विनय चंद्र कहै
तेलहै रे । मोहन सुगति पुरीनो राज रे (पां०) ॥७॥
इति श्रीभगवती सुल सिष्ठाय सं० ॥५॥ ॥ॐ॥

॥०॥ अथ (६) ज्ञातासुख सिद्धिः ॥०॥

॥०॥ (ढाल) कितलखलागा राजा जीरै मालियै । (ए देशी) । ठहो अंग ते ज्ञाता सुख वखाणियै जी । जेहना ठै अरथ अधिक उहंड हो । म्हारा सुखज्यो धरिनेह सिद्धांत नी वातजो । अवणे सुखतां गाढो रस अपजै जी । सुधुर तातर्जित जिन मधु खंड हो (म्हां०) ॥१॥ जंबूदौव प्रनत्ती उपांगठै जेहनो जी । इण मांहे जिन पूजानी विधि जोर हो म्हं० । अर्चिक सुखि परम शांतिरस अनुभवै जी । चर्चिक सुखि करै सम सोर हो (म्हां०) ॥२॥ नगर उद्यान चैत्य वनखंड सोहामणो जी । समवसरण राजाना मातनै तात हो (म्हां०) । धरमाचारज धर्मकथा तिहां दाखवै जी । इहलोक परलोक ऋद्धि विशेष सुहात हो (म्हां०) ॥३॥ भोग परित्याग प्रवज्या पर्यवाजी । सुख परिग्रह बारू तप उपधान हो (म्हां०) । संलेहण पख्खण पादपोषगमन ताजी । स्वर्गगमन शुभकुल उत्पत्ति हो (म्हां०) ॥४॥ वो धिलाभ वलितंतते अंतर्धिया कहीजी । धर्मकथाना दोयठै खंध हो (म्हां०) । पहिलाना उगणीस अध्ययन ते आज ठै जी । वोजाना दशवर्ग महा अनुबंध हो (म्हां०) ॥५॥ जंठ कोटि तिहां सबल कथानक भाषिया जी । भाष्या वलि उगणीस उद्देश हो (म्हां०) । संख्याता हजार भला पद एहना जी । एह थकी जायै कुमति कलेश हो (म्हां०) ॥६॥ विनय करै जे गुरुनो बड प्ररै जी । तेहनें न्युतसुख तां व ऊफल होय हो (म्हां०) । ते रसिया मन वसिया विनय चंद्रने जी । सो मांहे मिलै जोयां एकवै दोय हो ।

(म्हां०) ॥७॥ इति श्री ज्ञाताधर्म कथाङ्क सिष्ठायः ॥६॥

॥३॥ अथ (७) उपासकदशा सुवसिष्ठाय लि० ॥३॥

॥३॥ (ढाल विठियानी) । हिवै सातमो अंग ते सांभ
खो । उपासक दशानामें चंगरे । अमणोपासकनो वर्णना
जसु चंदपन्नत्ती उपांगरे ॥१॥ मन लागो मोरो सुवखी ।
एतो भव वैरागतरंगरे । रसराता ज्ञाता गुण लहै । पर
मारथ सुविहित संगरे (म०) ॥२॥ इण अंगै सुवखंभ एक
है । अध्ययन उद्देश विचार रे । दश दश संख्यायें दाखव्या
पद पिय संख्यात हजार रे (म०) ॥३॥ आर्णदादिक आ
वक तखरे । सुणतां अधिकार रसाल रे । रस लागै जागै
मोहनौ । ओता जवनें ततकाल रे (म०) ॥४॥ ओता आ
गलतो वाचतां । गीतारख पांमैं रीऊ रे । जे अर्द्ध दग्ध
समझै नही । तेहसुं तो करवौधीज रे (म०) ॥५॥ दश
आवकतो इहां भाषिया । पिय सुव भख्यो नही कोब
रे । ते माटै शुब आवक भखी । एक अरथनी धारणा
होय रे (म०) ॥६॥ साची होव ते ग्रहपौखे । निसंक
धणें सुजगोसरे । कविविनय चंद्र कहै खं यवो । जो कु
मती करखै रीसरे (म०) ॥७॥ इति श्रीउपासक दशाङ्क
सिष्ठायः ॥ ७॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ (८) अंतगददशांग सिष्ठावलि० ॥३॥

॥३॥ (ढाल) वीर बखाणी राणी चेलखानी । इस बाब
में ॥३॥ आठमो अंग अंतगद दशांगी । सुबो कतो

कान पवित् । अंतगद् केवली के थया जो । तेहनारे ।
 इहां चरित् (आ०) ॥१॥ कर्म कठिन दल चूरता जी ।
 पूरता जगतनी आस । जिनवर देव इहां भासताजी । सप्त
 ता अर्थ सुविलास (आ०) ॥२॥ सकल निक्षेप नय भंग धौजी
 अंगना भाव अभंग । सहिज सुखरंगनी तल्पिकाजी ।
 कल्पिका जासु खवंग (आ०) ॥३॥ एक सुय खंघ इण अंग
 नो जी । वंग ठै आठ अभिराम । आठ उद्देश ठै वली
 जी । संख्याता सहस पद ठाम । (आ०) ॥४॥ आठमा अंग
 ना पाठमें जी । एहवो अठै रे मौठास । सरस अनुभव रस
 ऊपजै जी । संपदै पुण्यनीरास (आ०) ॥५॥ विषय लंपट
 गर के ऊवै जी । निरविषयो सुण्या थाय । जिम नहाविष
 विषधर तणो जी । नागमंचें सुण्यां जाय (आ०) ॥६॥ अष्ट
 त वचन सुखवरसती जी । सरस्वती करोरे पसाय । जिस
 विनय चंद्र इण सुवना जो । तुरतलहै अभिप्राय (आ०)
 ॥७॥ इति श्रीअंतगद् दशांग सिम्हायः ॥ ८ ॥

॥१॥ अथ (२) अणुत्तरोवाई अंग सिञ्जायलि ॥

॥२॥ (ढाल नणदल विंदलीलै एहनी) ॥ नवमो
 अंग अणुत्तरो वाई । एहनीरुच सुम्ननें आई हो । आवक
 सुख सुणो । सुख सुणो हित आणो । एतो वीतरागनी वा
 ली हो (आव०) ॥ १ ॥ जसु कल्पवतंसिकानामें । सोहै
 उवांग प्रकामें हो (आ०) एतो आगमनें अनुकूल । मासु
 मेरु शिखरनो चूला हो । (आ०) ॥१॥ एतो सुवनो नाम
 सुणीजै । तिम तिम अंतर गतिमीजै हो (आ०) । प्रगटै

नवलसनेहा । एह थी उलसै मोरी देहा हो (आ०) ॥३॥
 अणुत्तर सुरपद पाया । तेहना गुण दूखमें गाया हो
 (आ०) । नगरादिक भाव बखाण्या । तेतो ठहै अंगै
 आख्या हो (आ०) ॥४॥ इहां ऐक सुखखंघ बाहू । बिणव
 गर्वली मनोहाहू हो (आ०) । उद्देशा बिणसनूरा । संस्था
 त संहस पद पूरा हो (आ०) ॥५॥ सुख सुखावुं अमे ते
 हने । सांचो अद्वा डय जेहने हो (आ०) ओताथी प्रीत
 लगावुं । निंदकने सुह न लगावुं हो (आ०) ॥६॥ जे सु
 णतां करै बकोर । तेतो माणस नही पियढोर हो (आ०) ।
 कवि विनयचंद्र कहै सांचो । अत रंगै सझको राचो हो
 (आ०) ॥७॥ इति श्रीअणुत्तरो वाई सिञ्जायः ॥८॥

॥१॥ अथ (१०) प्रणव्याकरणांग सिञ्जायलि० ॥२॥

॥३॥ (ढाल) आधा आम पधारो पूज (एहनी) ॥४॥
 दशमो अंग सुरंग सुहावै । प्रणव्याकरण नामै । सुख
 कलपतरु सेवै ते तो । चिदानंद फल पासे । (आवो२ गु
 णना जाण तुमनें सुख सुखावुं) । (टेक) ॥ १ ॥ पुष्पकली
 ल्युं परिसल महकै । गुरु परागनें रागै । तिम उपांग
 पुष्पिका एहनो । जोर जुगति करि वागै । (आवो०) ॥२॥
 अंगुष्ठादिक जिहां प्रकास्यां । प्रणवादिक अतिरुजा । तेहै
 अठोत्तर सत एतो । सुखमध्य मणि भूजा (आ०) ॥३॥ आ
 अव द्वार पांच इहां आण्यां । पांचे संवर द्वारा । महा
 संलवाणो मालहीयै । लवधि भेद सुखतारा । (आ०) ॥४॥
 सुख खंघ एकठै दशमें अंगै । पणयालीस अवजयणा ।

पणयालौस उद्देशवलीपद । सहस संख्यात नीरयणा (आ०)
॥५॥ जेनर सुतसुणें नही कानै । केवल पोषै काया । माया
मांहि रहै लपटाणा । ते नर इम हीन आया । (आ०)
॥६॥ सुत मांहि तो मारग दोय ठै । निश्चय नय व्यवहारा ।
विनय चंद्र कहै ते आदरियै । तजि मन मदन विकारा
(आ०) ॥७॥ इति श्री प्रश्नव्याकरण सुतसिञ्जायः ॥१०॥

॥१॥ अथ (११) विपाकसुत सिञ्जायलि० ॥१॥

॥२॥ (ढाल कान्खानौ) ॥३॥ सुणारे विपाक नृत अंग
दुग्यारमो । तजो विकथा दृष्ट जे अनेरौ । ललित उवांग
जसु प्रवर पुष्प चूलिका । मूलिका पाप आतंक केरी (सु०)
॥१॥ असुभ किंपाक सम दुष्टतफल भोग्यौ । नरकमांगर
कथया जेह प्राणी । सुष्टतफल भोग्यौ स्वर्गमां जे गया ।
तास वक्तव्यता इहां आणी (सु०) ॥२॥ दोय अत खंधने
वौश अध्यपन बलि । वौश उद्देश इहां जिन प्रयुजै । सहस
संख्यात पद कुंदमचकुंद जिम । बहल परिमल भ्रमर चित्त
गुंजै (सु०) ॥३॥ सरसचंपकलता मुरभि सज्जनें रुचै । अन्य
उपगारनी बृद्धि माटै । सुत उपगार तेह थौ सबल जाणियै
जेहथी पुरुष सुख अचल खाटै (सु०) ॥४॥ बंधनै मोक्षना
बेचं कारण अठै । दुष्टतनें सुष्टत जोवो बिचारी । दुष्टतनें
पर हरी सुष्टतनें आदरी । जिन वचन धारियै गुणसंभा
री (सु०) ॥५॥ मकररे मकर निंदा निगुण पारकी ।
नारकी तथौ गति कांड बांधै । नारकौ प्रकृत तजि सहज
संतोष भज । लाग नृत सांभली धरम धंधै (सु०) ॥६॥

सुखने दुख विपाक फल दाखव्या । अंग इग्यारमे बीत
रामे । चिरजयो वीरशासन जिहां सुख थी । कवि विनय
चंद्रगुण ज्योति जागै (स०) ॥ ७ ॥ इति ओविपाकसुख
सिञ्जायः ॥११॥ ॥३३॥ ॥३३॥

॥३३॥ अथ इग्यारै अङ्की वर्णनालि० ॥३३॥

॥३३॥ (ढाल वधावनौ) । अंग इग्यारहमेंधुण्या । (सहे
लीए) आज थया रंगरोलकि (स०) । नन्दोसुख मांहि एहनो
(स०) । भाष्यो सर्वनिचोल कि ॥१॥ (सहेलीए आज वधाम
णा) पसरौ अंगइग्यारनौ (स०) । सुऊ मन मंजुप बेलकि । सौं
चूँ तेहरखै करौ (स०) अनुभव रसनौ रेलकि ॥२॥ हेज ध
री जे सांभलै (स०) । कुंण वूढा कुण बालकि । तो ते फल
लहै फूटरा (स०) । खादे अतिहि रसाल कि ॥३॥ हरख
अपार धरो हीयै (स०) । अहम्मादावाद मऊारकि । भासक
रौ ए अंगनौ (स०) वरल्या जयकार कि ॥४॥ संवत
सतर पचावनें (स०) । वरषा कृतु नभ भासकि । दशमौ
दिन शुदि पक्षमां (स०) पूरण थई मन आसकि ॥५॥
ओजिन धर्मसूरि पाठवौ (स०) । ओजिनचंद्र सूरौसकि ।
खरतर गठना राजीया (स०) तसु राजै सुजगौसकि ॥६॥
पाठक हरख निधान जौ । (सहे०) । ज्ञान तिलक सुपसा
यकि । विनय चंद्र कहै में करौ स० । अंग इग्यारसिञ्जा
यकि (सहे०) ॥ ७ ॥ इति ओइग्यारै अंग सिञ्जायः ॥

॥३३॥ पुनः ज्ञानको स्तवनलि० ॥३३॥

॥३३॥ रागठमरौ ॥ मेरै रे मनमानै ज्ञानजरी ।
(मे०) परछपगारौ सुगुरुवतार्द । पांचुं भेदेकरो । मति

श्रुति अवधि अवरमनपर्यव । केवलबोधवरी । (मे०) १ ॥
तपकर अग्नि मूसदंशनकौ । करमें धनलकरी । सक्रियसं
यम करता सुमिल । सिद्धरसानधरी । (मे०) २ । पूरण
पुन्य मिली सोय सजनौ । सकलानन्ददरी । बालकहै अब
विसरतनाहीं । पलठिन एकधरी । (मे०) ३ ॥ इति पदम् ॥

॥॥ पुनः आगम स्तवन लि० ॥॥

॥॥॥ अत अतिहमलो । संघसकल आधारनसुं त्रिभु
वनतिलो । (आंकली) अरथै श्रीवीरजिणंद आख्यो । सुवै
श्रीगणधर गुरु भाष्यो । तदुभय यौ जे सुनिवर राख्यो ।
१॥ (शु०) । जेह यौ जगभाव सकल जायें । नय एकंत सुनि
जन नवितायें । निश्चिद् व्यवहार ते मन आयें ॥२॥ (अ०) जि
हां अक्क उपाकृते अतिरुजा । ठठेद पदन्तानहिं कूजा । मू
लसुख नन्दी अनुयोगबूजा ॥३॥ (शु०) । जिहां निरयुगतो
सुवै सङ्गी । बलि भाष्य चूरणि टीका चङ्गी । पंचम अंगै क
ही पंचाङ्गी ॥४॥ (शु०) । जिहां साधु आवक मारग लहियै ।
सवेग पखौ बलि सरदहियै । ए त्रिण विन भवमारग कहि
यै ॥५॥ (शु०) । जेहनी अनुपेहा नित करियै । उपचारै दूषण
परिहरियै । आराध्यां निज अनुभव वरियै ॥ ६ ॥ (शु०) ।
जिन आगमना जे गुणगावै । शुद्धाशय जे मनमें ध्यावै ।
ते समा कल्याण सदा पावै ॥७॥ (शु०) ॥ इति आगमस्त०

॥॥॥ इति ज्ञानपञ्चमी पञ्चाधिकारः ॥॥॥

॥॥॥ अज कार्तिक शोभासाधिकार लि० ॥॥॥

॥॥॥ कार्तिक महिने में मितौ कार्तिक सुद १४ के

दिन । सब मन्दिर दर्शन करनेको जाना । व्याख्यान सुनना ।
सामायकादिक घमंदाय करना (इत्यादिक) सब अधिकार
पूर्वे आसाढ चौमासे हुल्य जानके कार्तिक चौमासेका
सेवन करै ॥ इति कार्तिकचौमासा सेवनविधिः ॥३॥

॥३॥ अथ कार्तिक पूर्णमासीके अधिकार लि० ॥३॥

॥३॥ प्रथम कार्तिक वद १ से सेवुं जरासंमुखे । नि
वी (वा) एकासण व्यासणादिक तप करै । दोनुं टंक पति
क्रमणो करै । देव वंदनादिक करै । (ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचेल
अनन्तसिद्धाय नमः) इसी को एक जाप सदा करै । शक्ति
होय (तो) सिद्ध गिरी जावा करने को जावै । काती
पूनमके दिन विस्तार संयुक्त सिद्धगिरीकी पूजा करावै ।
अष्टाहो महोत्सव करै । विस्तारसे देववंदनादिक विधि
करै (२१) बेर सेवुं जरासंमुखे । ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचेल अ
नन्त सिद्धाय नमः । इसी पदसे (२१) जैतो देवै । (कदास)
सिद्ध गिरी जाणें को सक्तिन होय (तो) जहां सिद्धगिरी
का पटमंड्या होय । उहां महोत्सव संयुक्त दर्शन करने
को जावै । पूजादिक सब विधि करै । छठ भक्त करके (वा)
चतुर्थ भक्त करके (इस पर्वको) आराधन करै । गुरुभक्ति
करै । साहसो बल्लल करै । (इत्यादिक) विधिसंयुक्त सिद्ध
गिरीको सेवन करनेसे । सब असुभ कर्म विघ्नस होके
मंगलमाला प्रवर्त्तन होय ॥३॥ (इस दिन) श्रीद्रावण
बारिखिल प्रमुख दशकोटि साधु सिद्धिस्थानक प्राप्त भए ।
जिससे इस दिन (जो) घमंदाय किया ऊवा निषादे

दशकोटि गुणा फलै । इस भरतक्षेत्रमें सिद्धगिरीके समान कोई उत्तम तोर्य नहिं । सन् उगणीसै तौसमें । चैवीपुन मकों जावा करते ज्ञए । सब भगवंतकै विंवांके दरसन किये (जिसमें) वारे हज्जार । तीनसै । अट्ठावन (१५३५८) विं व ज्ञए । और वज्रत ठिकाणें चरणोंकी स्थापना है । अनन्ता साधु अणसण लेके परमपदकों प्राप्त भए हैं । इसी सें (जो) आसन भव्नी जीव हेगि (सो) दुइभावसें इस तीर्थको सेवन करेंगे । और (जो) सेवन करते हैं । उसी पुरुषोंकों नमस्कार है । उसी पुरुषोंके जीवतव्य धन्य है ॥

॥५॥ अथ सिद्धगिरौके स्तवन लिख्यते ॥५॥

॥५॥ (देशी गरवानी । ते दिन क्या रे आवसी है । (जोरे वहिनी) । जासुं सिद्धाचलनी जात (मोरी सहीयां) है । पाजै चढतां प्रेम सुहे । (जोरे वहिनी) । गाइवै गुण अखियात । (मोरी सहीवांहे । तेदि०) ॥१॥ अद्भुत जं चो देहरो है । (जोरे वहिनौ) मूल नायक आदिनाथ । (मोरी सहीयां है) । भोली भगत भली परै है । (जोरे०) निरख्यां होय सनाथ । (मोरी० ते०) ॥२॥ नाही निरमल नीरसुं है । (जोरे०) पहिर खौरोदक चौर । (मोरी०) केसर भरीय कचोलनी है । (जोरे०) पूजसुं सुगुण सुवीर । (मोरी० ते०) ॥३॥ स्रष्टा रायण ठांछनी है । (जोरे०) आदि जिगंद उदार । (मोरी०) तिहां जगनाथ समो सखा है । (जोरे०) पूरव निनाणुं वार । (मोरी० ते०) ॥४॥ इण गिर वरिवै जपरा है । (जोरे०) । सौधा साधु अनंत । (मोरी०)

चौमासे रक्षा दोय जिनवरा हे । (जोरे०) अजित जिणसर
 शांति । (मोरी० ते०) ॥५॥ चेलणा तलाई सिद्ध सिला हे
 (जोरे०) अद्भुत उलका जोल । (मोरी०) सिद्धवद्र सेलुं जे
 नदी वहे । (जोरे०) करियै नित रंग रोल । (मोरी० ते०) ॥६॥
 इण मंगर दीठां यकां हे । (जोरे०) ऊपजे परमानंद ।
 (मोरी०) गहिरौ गिरवर ठांहरी हे । (जोरे०) चाहै नित
 जिणचंद । (मोरी० तेदि०) ॥७॥ ॥ इति सिद्धाचल जी
 स्तवनम् ॥१॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ आज आपे चालो सहीयो सिद्धाचल गिर
 जइयै ॥ सुणि वहनौ ए गिरनी महिमा । आदिजिनंद इम
 भाषी । भरथादिक नरपतिने आगल । इंद्रादिक सज्ज सा
 खौरे (आज०) ॥ १ ॥ इण गिरवारियै काल अनंते । साधु
 अनन्ता सीधा । जनम मरणनां दुख ठोड़ीने । अमल अख
 यगुण लीधारे (आ०) ॥ २ ॥ इण गिर सनमुख पगला भरतां
 आतम खुब सुभावै । कोप भवारां पातिक कीधा । एकपल
 कमें जावै रे (आ०) ॥ ३ ॥ सासतो तीरथ ए सेलुं जो । जो
 तांलागै मीठो । तीन भुवनमें इण गिर तोलै । बीजो कीर्ति
 न दीठो रे (आ०) ॥ ४ ॥ नीरंजनसुनेह धरोने । आगै
 डलंग करस्या । अद्भुत आदि जिनेसर निरखौ । प्रेम
 सुधारस प्रीत्यां रे (आ०) ॥ ५ ॥ पुहपसुगंधा लेइ पचरंगा ।
 हार सुगंधा गूंथौ । पहिरावौ प्रभु कंठै लहिस्यां । सिव
 मारगनी सूधीरे (आ०) ॥ ६ ॥ गहिर खरे जिनवर गुण
 गातां । जाव निनाणू करियै । मन गमती भमती विचभ

मतां । भव सायर निसतरियै रे (आ०) ॥७॥ पूरवनिनाणूं
वार प्रथम जिन । रायणहूँ खै आया । ते तीरथ सुभ भाव
फरसी । करियै निरमल काया रे (आज०) ॥८॥ लाभउदै
ए गिरवर लहियै । कहै दूम केवलनाणू । श्रीजिनचंदं सदा
हित वल्लल । प्रेम वणें चित आणीरे (आ०) ॥९॥ इति
सिद्धाचल जी स्तवनम् ॥२॥॥

॥३॥ (श्रीचंद्रा प्रभू प्राङ्गणोरे ए देशी) ॥३॥ नमोरे
नमो सेलुंज गिरौ रे । विकरण शुद्ध त्रिकालरे । पाप पद्म
लदूरै टलैरे । तूटै करम जंजाल रे । (नमो०) ॥१॥ पूरवनि
नाणूं समोसखा रे । प्रथम जिनंद जगदौसरे । वावोसम
जिनवर विनारे । समो सखा तैवीसरे । (नमो०) ॥२॥
साधु अनन्त अणसण ग्रहीरे । सौधा एहिज ठोहरै । काल
आगामौ बलि सौऊस्यै रे । साधु अनन्ती कोटिरे (नमो०)
॥३॥ अनंत कल्याणक भूमि कारे । सहिमावंत सहन्त रे ।
सासतो तीरथ ए सहोरे । अतिसख जास अनन्त रे (न०)
॥४॥ कोडि भवंतर जेकिया रे । पातिक विविध उपाय रे
सेलुंजै सनमुख चालतां रे । पगपगते सज्ज जायरे । (नमो)
॥५॥ धनदिन तेहिज जाणसुं रे । वहिस्युं सेलुंज केरीवा
टरे । ठहरौ यथाविध पालस्युं रे । संव सहित गहिगाटरे
(नमो०) ॥६॥ पगपग उल्लव अतिषणारे । पग पग जाचक
दानरे । प्रेम भगति साहमी तणीरे । जीर्णोद्धार प्रधान रे
(नमो०) ॥७॥ धन ते गिर राय निरखसुं रे । वटती मंगल
मालरे । मणि मोतीयद्रवेषावसुं रे । रजत सोवन भर
घाल रे (नमो०) ॥८॥ धन दिन ते गिर फरस सुं रे ।

करसुं पावन मोरी कायरे । भगति जुगति जुहारसुं रे ।
 नाभि नन्दन जिन रायरे (नमो०) ॥ ९ ॥ द्रव्य भाव करसुं
 सुदारे । पूजाविविध प्रकार रे । भावै भावना भावसुं रे ।
 करसुं सफल अवतार रे (नमो०) ॥ १० ॥ रतनबयौ भमती
 भली रे । देसुं ते घर बुद्धि रे । भवभव भ्रमण निवारसुं
 रे । लहसुं आतम सुद्धिरे । (नमो०) ॥ ११ ॥ विघ फरसण
 मनमाहरो रे । मोहि रह्यो दिन रातरे । पुन्य प्रबल थौ
 पासियो रे । उज्जलगिरि करौ जातरे (नमो०) ॥ १२ ॥
 नाथ धूलेवासुपसाय थौरे । कारज सगला सिद्धरे । कहै
 जिन हरष सूरौ सदारै । होय ज्यो मंगल दृढ़रे (नमो०)
 ॥ १३ ॥ इति सिद्धाचल जी स्तवनम् ॥३॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥❀॥ (देशी पंथोझानो) ॥❀॥ अंग उमावो मोनें अति
 बणो । भेटवा विमल गिरंदरे । (पंथोझा) । नाभिरायाकुल
 चंदलो । जिहां वसै मरुदेवी नन्द रे । (पंथोझा) वहिलुं
 बोलैरे पंथो झंझारा वहिलुं बोलैरे ॥१॥ सेबुं जो ठै कित
 नीक दूररे (पंथोझा वहि०) । पालीताणो नगर सुहामणो
 रूझी ललिता सरनी पालरे (पंथोझा) । जिहां अंबलारे
 वडला घणा । ऊकरहौ चंपलारि झालरे (पंथोझा) वहि०)
 ॥२॥ धन ते पंखौ पारेबझा । सेबुं ज वसिया कैं सो
 ररे (पंथोझा) । जमाहो करीनें जे घररहै । मांणस नहीं
 ते होर रे । (पंथोझा वहिलुं०) ॥३॥ सेबुं ज वाटें जो चाल
 तां । जौली जीणी ऊझै खेहरे । (पंथोझा) । मैला थायै
 संवना कापझा । निरमल थायै देहरे । (पंथोझा वहिलुं०)

॥४॥ जं चो देहरो आदि नाथ रो । आगल चौक बिसाल
रे (पंथीदा) । जिहां मिलमिल वणा मानवी । गावै प्रभुगुण
मालरे । (पंथीडा वहिलुं०) ॥५॥ वस केसर भरवाटका ।
पूजै जिनवर अंगरे । (पंथीदा) । फूलाहं दोसोहै प्रभुसिर
सेहरो । दिवलानौ जोति अभंग रे । (पंथीदा व०) ॥६॥
ए गिरवर दीठां माहरै । ऊपजै परम आनन्द रे । (पंथी
दा) मोनें भेटणरोजी कोमठै । प्रेम वणें जिनचंद रे ।
(पंथीदा व०) ॥७॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनम् ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जावानिनाणूं करियै विमल गिर (जावा०) ।
पूरवनिनाणूं वार सेबुंज गिर । ऋषभजिनंद समोसरियै
(विम०जा०) । कोमि सहस भव पातिक तूटै । सेबुंज सामे
मग भरियै । (विमल० जा०) ॥ १ ॥ चौघ ठडु दोय अडम
तपस्या । करि चढियै गिरवरियै । (वि०जा०) पुंनरीक पद
जपियै हरखें । अध्यवसाय सुभ धरियै (वि०जा०) ॥ २ ॥
पापौ अभवौ निजरन देखै । हिंसक पिण ऊधरियै (वि०
जा०) । भूमि संथारीनें नारितणो संग । दूर थकी पर
हरियै (वि०जा०) ॥ ३ ॥ अकेल आहारीनें सचिन्त परि
हारी । गुरु साथे पद चरियै (वि०जा०) पद्मिकमणा दोय
विष सुंकीजै । पाप पद्मल विषहरियै (वि०जा०) ॥४॥ कलि
काले ए तीरथमोटो । प्रवहण सम भवदरियै (वि०जा०) ।
उत्तम ए गिरवर सेवता । पदम कहै भवतरियै । (विम०
जावा०) ॥५॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनम् ॥५॥ इति कार्त्तिक
कमास पर्वाधिकारः ॥ ८ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ अथ मार्गशीर्ष मास मध्ये पर्वधिकार लि० ॥

॥ॐ॥ भिगसर महिनेमें मितो भिगसर सुद ११ (सो)
मोन इग्यारस नामसें पर्व प्रसिद्ध है। इस दिन दैढ़ सै
कल्याणक ज्ये (सो लिखते हैं) जन्म। दिक्षा। केवलज्ञान
यह तीन कल्याणक। श्रीमल्लिनाथ स्वामीके ज्ये। श्री
अरनाथ स्वामीनें दिक्षो अंगीकार करी। श्रीनमिनाथ
स्वामीनें केवल ग्यान उत्पन्न भयो। (एसें) इस भरतक्षेत्र
में वर्त्तमान चौबीसीके पांच कल्याण ऊए (इसी माफक)
पांच भरत। पांच ऐरवतमें चौबीसी के पांच कल्याण
कमिलानेसें। प्रचास कल्याक ज्ये। अतीत। अनागत।
वर्त्तमान कालके अपेक्षाये। दैढ़सै कल्याणक ऊए। इसी
सें यह दिन वना उत्तम है (इस दिन) मोन संयुक्त उपवास
करै। अठ पहरों पोसो करके मोन इग्यारसको गुणनो
करै। पोसहकी शक्ति न होय (तो) देसावगासी लेके गुण
नोकरै। (एसें) इग्यारै बरसमें इग्यारै उपवास करै।
और (जो) इग्यारस करने की इच्छा होय (तो) मासमें
बद। सुदकी। दोसुं एकादसी। इग्यारै बरस इग्यारै महिनां
करै। यह तपस्या करतां इग्यारै अंग सुदभावसें सुणें।
इग्यारै अंग लिखायके देवै। पढनें वालूके सहाज्य करै
तपस्याग्रहण करनेको। पारनें को (गुरुके मुखसें) विधि
करै। (समवसरण बैठा भगवंत०) इत्यादि इग्यारसको
स्तवन पूर्वे लिख्यो है। सो पढै (वा) सुणें। पीठै उद्यापन
में पेंतालीस आगमकी पूजा करै। यथासक्ति साहमी
ब्रह्मल करै ॥ॐ॥ इति विधि।

॥३॥ अथ मोन एकादशौको गुणनो लि० ॥३॥

॥३॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे
अतीत २४ पञ्च कल्या

एक नामः ॥३॥१॥

। प्रथम ।

४ । श्रीमहायश सर्वज्ञाय नमः ।

५ । श्रीसर्वानुभूति अर्हते नमः ।

६ । श्रीसर्वानुभूतिनाथाय नमः ।

७ । श्रीसर्वानुभूतिसर्वज्ञाय नमः ।

८ । श्री अधरनाथाय नमः ।

॥३॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे
वर्तमान २४ जिन पंच
कल्याणक० ॥३॥२॥

२१ । श्रीनमि सर्वज्ञाय नमः ।

२२ । श्रीमहि अर्हते नमः ।

२३ । श्रीमहिनाथाय नमः ।

२४ । श्रीमहि सर्वज्ञाय नमः ।

२५ । श्रीअरिनाथाय नमः ।

॥३॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे
अनागत २४ जिन पंच
कल्याणक० ॥३॥३॥

४ । श्रीख्यंभु सर्वज्ञाय नमः ।

५ । श्रीदेवश्रुत अर्हते नमः ।

६ । श्रीदेवश्रुत नाथाय नमः ।

७ । श्रीदेवश्रुत सर्वज्ञाय नमः ।

८ । श्रीउदय नाथाय नमः ।

॥३॥ घातकीखण्डे पूर्वभरते
अतीत २४ जिन पंचकल्या

एक नामः ॥३॥४॥

। द्वितीय ।

४ । श्रीअकलङ्क सर्वज्ञाय नमः ।

५ । श्रीसुभंकर अर्हते नमः ।

६ । श्रीसुभंकरनाथाय नमः ।

७ । श्रीसुभंकर सर्वज्ञाय नमः ।

८ । श्रीसप्तनाथाय नमः ।

॥३॥ घातकीखण्डे पूर्वभरते
वर्तमान २४ पंच कल्या
एक नामः ॥३॥५॥

२१ । श्रीब्रह्मेन्द्र सर्वज्ञाय नमः ।

२२ । श्रीगुणनाथ अर्हते नमः ।

२३ । श्रीगुणनाथ नाथाय नमः ।

२४ । श्रीगुणनाथ सर्वज्ञाय नमः ।

२५ । श्रीगंगिलनाथाय नमः ।

॥३॥ घातकी खण्डे पूर्वभरते
अनागत २४ जिन पंच
कल्याणक नामः ॥३॥६॥

४ । श्रीसंप्रति सर्वज्ञाय नमः ।

५ । श्रीसुनिनाथ अर्हते नमः ।

६ । श्रीसुनिनाथ नाथाय नमः ।

७ । श्रीसुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः ।

८ । श्रीविष्टि नाथाय नमः ।

॥१॥ पुष्करार्द्धपूर्वभरते
अतीत २४ जिन पंच
कल्याणक० ॥३॥७॥

। प्रथम ।

- ४ । श्रीसुद्ध सर्वज्ञाय नमः ।
- ६ । श्रीव्यक्त अर्हते नमः ।
- ६ । श्रीव्यक्त नाथाय नमः ।
- ६ । श्रीव्यक्त सर्वज्ञाय नमः ।
- ७ । श्रीकलाशत नाथाय नमः ।

॥१॥ पुष्करार्द्ध पूर्वभरते
वर्त्तमान २४ जिनपंच
कल्याणक० ॥३॥८॥

- २१ । श्रीअरण्यवास सर्वज्ञायनमः ।
- १८ । श्रीयोगनाथ अर्हते नमः ।
- १८ । श्रीयोगनाथ नाथाय नमः ।
- १८ । श्रीयोगनाथ सर्वज्ञाय नमः ।
- १८ । श्रीसयोग नाथाय नमः ।

॥१॥ पुष्करार्द्ध पूर्वभरते
अनागत २४ जिन पंच
कल्याणक नामः ॥३॥९॥

- ४ । श्रीपरमसर्वज्ञाय नमः ।
- ६ । श्रीशुद्धार्ति अर्हते नमः ।
- ६ । श्रीशुद्धार्ति नाथाय नमः ।
- ६ । श्रीशुद्धार्ति सर्वज्ञाय नमः ।
- ७ । श्रीनिक्श नाथाय नमः ।

॥३॥ घातकीखंडे पश्चिमभरते
अतीत २४ जिन पंच कल्याणक
नामः ॥३॥१०॥

। द्वितीय ।

- ४ । श्रीसर्वार्थ सर्वज्ञाय नमः ।
- ६ । श्रीहरिभद्र अर्हते नमः ।
- ६ । श्रीहरिभद्र नाथाय नमः ।
- ६ । श्रीहरिभद्र सर्वज्ञाय नमः ।
- ७ । श्रीमगधाधि नाथाय नमः ।

॥३॥ घातकीखंडे पश्चिमभरते
वर्त्तमान २४ जिन पंच
कल्याणक नामः ॥११॥

- २१ । श्रीप्रयच्छ सर्वज्ञाय नमः ।
- १८ । श्रीसन्नोभ अर्हते नमः ।
- १८ । श्रीसन्नोभ नाथाय नमः ।
- १८ । श्रीसन्नोभ सर्वज्ञाय नमः ।
- १८ । श्रीमहिसिंह नाथाय नमः ।

॥३॥ घातकीखंडे पश्चिमभरते
अनागत २४ जिन पंच
कल्याणक० ॥३॥१२॥

- ४ । श्रीआदिकरसर्वज्ञाय नमः ।
- ६ । श्रीघनद अर्हते नमः ।
- ६ । श्रीघनद नाथाय नमः ।
- ६ । श्रीघनद सर्वज्ञाय नमः ।
- ७ । श्रीपौषनाथाय नमः ।

॥ॐ॥ पुष्करार्द्ध पश्चिमभर
रते अतीत २४ जिन पंच
कल्याणक० ॥ॐ॥१३॥

। प्रथम ।

- ४ । श्रीप्रलंबसर्वज्ञाय नमः ।
- ५ । श्रीचारित्र्यनिधि अर्हते नमः ।
- ६ । श्रीचारित्र्यनिधि नाथाय नमः ।
- ७ । श्रीचारित्र्यनिधि सर्वज्ञाय नमः ।
- ८ । श्रीप्रथमजित नाथाय नमः ।

॥ॐ॥ पुष्करार्द्ध पश्चिमभर
ते वर्त्तमान २४ जिन पंच
कल्याणक० ॥ॐ॥१४॥

- २१ । ओस्वामि सर्वज्ञाय नमः ।
- १२ । श्रीविपरीत अर्हते नमः ।
- १३ । श्रीविपरीत नाथाय नमः ।
- १४ । श्रीविपरीत सर्वज्ञाय नमः ।
- १५ । श्रीप्रसाद नाथाय नमः ।

॥ॐ॥ पुष्करार्द्ध पश्चिमभरते
अनागत २४ जिन पंच
कल्याणक० ॥ॐ॥१५॥

- ४ । श्रीभवटित सर्वज्ञाय नमः ।
- ५ । श्रीभ्रमणेन्द्र अर्हते नमः ।
- ६ । श्रीभ्रमणेन्द्र नाथाय नमः ।
- ७ । श्रीभ्रमणेन्द्र सर्वज्ञाय नमः ।
- ८ । श्रीरिष भचन्द्र नाथाय नमः ।

॥ॐ॥ जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे
अतीत २४ जिन पंच
कल्याणक० ॥ॐ॥१६॥

। द्वितीय ।

- ४ । श्रीदयांतसर्वज्ञाय नमः ।
- ५ । श्रीअभिनन्दन अर्हते नमः ।
- ६ । श्रीअभिनन्दननाथाय नमः ।
- ७ । श्रीअभिनन्दनसर्वज्ञाय नमः ।
- ८ । श्रीरत्नेश नाथाय नमः ।

॥ॐ॥ जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे
वर्त्तमान २४ पंच कल्या
णक नामः ॥ॐ॥१७॥

- २१ । श्रीशामकाष्ट सर्वज्ञाय नमः ।
- १२ । श्रीमरुदेव अर्हते नमः ।
- १३ । श्रीमरुदेवनाथाय नमः ।
- १४ । श्रीमरुदेव सर्वज्ञाय नमः ।
- १५ । श्रीअतिपार्श्व नाथाय नमः ।

॥ॐ॥ जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे
अनागत २४ जिन पंच कल्या
णक नामः ॥ॐ॥१८॥

- ४ । श्रीनन्दपेणसर्वज्ञाय नमः ।
- ५ । श्रीव्रतधर अर्हते नमः ।
- ६ । श्रीव्रतधरनाथाय नमः ।
- ७ । श्रीव्रतधरसर्वज्ञाय नमः ।
- ८ । श्रीनिर्वाणनाथाय नमः ।

॥ॐ॥ धातकीखंडे पूर्वएरवते
अतीत २४ पञ्च कल्या
णक नामः ॥ॐ॥१८॥

। प्रथम ।

४ । श्रीसोदय सर्वज्ञाय नमः ।

६ । श्रीनिविक्रम अर्हते नमः ।

६ । श्रीनिविक्रम नाथाय नमः ।

६ । श्रीनिविक्रम सर्वज्ञाय नमः ।

७ । श्रीनारसिंह नाथाय नमः ।

॥ॐ॥ पुष्करार्द्ध पूर्वएरवते
अतीत २४ जिन पंचकल्या
णक नामः ॥ॐ॥२२॥

। द्वितीय ।

४ । श्रीमहाद्विक सर्वज्ञाय नमः ।

६ । श्रीवणिक अर्हते नमः ।

६ । श्रीवणिक नाथाय नमः ।

६ । श्रीवणिक सर्वज्ञाय नमः ।

७ । श्रीचन्द्रज्ञान नाथाय नमः ।

॥ॐ॥ धातकीखंडे पूर्वएरवते
वर्त्तमान २४ जिन पंच
कल्याणक नामः ॥ॐ॥२०॥

२१ । श्रीखेमन्त सर्वज्ञाय नमः ।

१२ । श्रीसन्तोषित अर्हते नमः ।

१२ । श्रीसन्तोषित नाथाय नमः ।

१२ । श्रीसन्तोषित सर्वज्ञाय नमः ।

१८ । श्रीकाम नाथाय नमः ।

॥ॐ॥ पुष्करार्द्ध पूर्वएरवते
वर्त्तमान २४ जिन पंच
कल्याणक० ॥ॐ॥२२॥

२१ । श्रीतमोकन्दन सर्वज्ञाय नमः ।

१२ । श्रीसायकाक्ष अर्हते नमः ।

१२ । श्रीसायकाक्ष नाथाय नमः ।

१२ । श्रीसायकाक्ष सर्वज्ञाय नमः ।

१८ । श्रीखेमन्त नाथाय नमः ।

॥ॐ॥ धातकीखंडे पूर्वएरवते
अनागत २४ जिन पंच
कल्याणक० ॥ॐ॥२१॥

४ । श्रीमुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः ।

६ । श्रीचन्द्रदाह अर्हते नमः ।

६ । श्रीचन्द्रदाह नाथाय नमः ।

६ । श्रीचन्द्रदाह सर्वज्ञाय नमः ।

७ । श्रीदिक्षादिह नाथाय नमः ।

॥ॐ॥ पुष्करार्द्ध पूर्वएरवते
अनागत २४ जिन पंच
कल्याणक नामः ॥२४॥

४ । श्रीमिर्वाण सर्वज्ञाय नमः ।

६ । श्रीरविराज अर्हते नमः ।

६ । श्रीरविराज नाथाय नमः ।

६ । श्रीरविराज सर्वज्ञाय नमः ।

७ । श्रीप्रथमनाथ नाथाय नमः ।

॥ॐ॥ धातकीखंडे पश्चिम एर ॥ॐ॥ पुष्करार्द्ध पश्चिम एरवते
वते अतीत २४ जिन पंच अतीत २४ जिन पंच
कल्याणक० ॥ॐ॥२५॥ कल्याणक नामः ॥ॐ॥२६॥

। प्रथम ।

। द्वितीय ।

- ४ । श्रीगुरुव सर्वज्ञाय नमः ।
- ६ । श्रीभवबोध अर्हते नमः ।
- ६ । श्रीभवबोध नाथाय नमः ।
- ६ । श्रीभवबोध सर्वज्ञाय नमः ।
- ७ । श्रीविक्रमेन्द्र नाथाय नमः ।

- ४ । श्रीअश्वहृन्द सर्वज्ञाय नमः ।
- ६ । श्रीकुटिल अर्हते नमः ।
- ६ । श्रीकुटिल नाथाय नमः ।
- ६ । श्रीकुटिल सर्वज्ञाय नमः ।
- ७ । श्रीवर्द्धमान नाथाय नमः ।

॥ॐ॥ धातकीखंडे पश्चिम एर ॥ॐ॥ पुष्करार्द्ध पश्चिम एरवते
वते वर्त्तमान २४ जिन पंच वर्त्तमान २४ जिन पंच
कल्याणक नामः ॥ॐ॥२६॥ कल्याणक० ॥ॐ॥२६॥

- २१ । श्रीसुशान्त सर्वज्ञाय नमः ।
- १८ । श्रीहर अर्हते नमः ।
- १८ । श्रीहरनाथाय नमः ।
- १८ । श्रीहर सर्वज्ञाय नमः ।
- १८ । श्रीनन्दकेश नाथाय नमः ।

- २१ । श्रीनन्दिक् वर्द्धमानाय नमः ।
- १८ । श्रीधर्मचन्द्र अर्हते नमः ।
- १८ । श्रीधर्मचन्द्र नाथाय नमः ।
- १८ । श्रीधर्मचन्द्र सर्वज्ञाय नमः ।
- १८ । श्रीविवेक नाथाय नमः ।

॥ॐ॥ धातकीखंडे पश्चिम एर ॥ॐ॥ पुष्करार्द्ध पश्चिम एर
वते अनागत २४ जिन पंच वते अनागत २४ जिन पंच
कल्याणक नामः ॥ॐ॥२७॥ कल्याणक० ॥ॐ॥२७॥

- ४ । श्रीमहाग्रेन्द्र सर्वज्ञाय नमः ।
- ६ । श्रीमसौचित अर्हते नमः ।
- ६ । श्रीमसौचित नाथाय नमः ।
- ६ । श्रीमसौचित सर्वज्ञाय नमः ।
- ७ । श्रीधर्मेन्द्र नाथाय नमः ।

- ४ । श्रीकलाप सर्वज्ञाय नमः ।
- ६ । श्रीविसोम अर्हते नमः ।
- ६ । श्रीविसोम नाथाय नमः ।
- ६ । श्रीविसोम सर्वज्ञाय नमः ।
- ७ । श्रीभारण नाथाय नमः ।

इति श्रीमैत्रिणी एकादशी गुणनो संपूर्णम् ।

॥ॐ॥ अथ विधि ॥ॐ॥ एकेक कल्याणक की एकेक माला गुणने से दैदसै माला होय (जो) मय्यजीव शुद्ध चित्तसे गुणेंगे (सो) अल्प भवमें अनन्त सुखको प्राप्त होंगे ॥ इति मार्गशीर्ष मास पर्व्याधिकारः ॥ ॐ ॥

॥ॐ॥ अथ पोष मास मध्ये पर्व्याधिकार लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ पोष महिनेमें मितौ पोषवद १० (सो) पोष दसमी नामसे पर्व प्रसिद्ध है। इस दिन श्री पार्श्व नाथ स्वामीको जन्म कल्याणक है। इसीसे यह दिन श्री संघमें परम आनंदकारी है। इस दिन श्री पार्श्व नाथ स्वामीकी अधिकार सुणें। एकासणादिककी पंच कक्षाण करै। जहां श्री पार्श्व नाथ स्वामीके नामसे तीर्थ प्रसिद्ध होय। उहां यात्रा करणें को जावै। कदास जात्रा करने को न जाय सकै (तो) जहां श्री पार्श्व नाथ स्वामीको स्थापना होय। उहां महोत्सव संयुक्त दर्शण करने को जावै। जलजात्रादिक महोत्सव करके अष्टोत्तरी स्नान करावै (अथवा) पंचकल्याणक जो की (वा) सतर भेदी पूजा करावै। रात्री जागरण करावै। तोरण बांधै। गीत गान नाटकादिकसे अनेक तरै के उत्सव करै। और जन्म कल्याणकादिक ॥ पांस जिनेसर जगति लोए ॥ बाणी ब्रह्मा वादनी ॥ इत्यादिक पार्श्व नाथ स्वामीके गुण गर्वित स्तवन पढ़ै। (वा) सुणें। इसी तरै इस पर्वको सेवन करनेसे। आधिव्याधि सोग संताप सब दूर होंगे। अनेक तरैसे ऋद्धि वृद्धि सुख सौ भाग्यको प्राप्त होंगे।

॥ॐ॥ अथ जन्म कल्याणकको स्तवन लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ श्रीचंद्रा प्रभु-जिनवर साहबसुणियो० (इस चालमे) । पोस दसम दिन पारस प्रभुको । जन्म भयो सुखदाई । (मे'वारी जावुं०) । कासी देस बणारसी नगरी । अखसेन कुल आई । (मे०) वांमाउर अवतार-लियो है ॥ सज्ज जीवन गुण दाई ॥ (मे० १) ॥ एक सहस्र अडोत्तर लक्षण । अनुपम रूप सुहाई । (मे०) नील वरण ठवि तीन ग्यान युत । पार्श्व प्रभु बरदाई । (मे'वा० २। पो०) ॥ नरक जीव पिण लक्षण सुख पावत । दिस कुमरौ मिलआई । (मे०) सूतिका कर्मकरौ निजथानक । गई सज्ज हरष भराई । (मे'वा० ३। पो०) ॥ आसन कंषित सज्ज सुरवरना । देख ग्यान भेद पाई । कोप्ता कोप्ता देव देवांगना । मिल सज्ज आगल धाई । (मे'वा० पोस० ४ ॥ सुरपति सक्र पंद्रव रूपै कर । मेरु सिखर ले जाई । (मे०) । सुखमहोन्नव अधिक आनंद से । बसुविध पूजर चाई । (मे'वा० ५। पो०) । बत्तीस बड़नाटक प्रभु आगल त तायेई तान सुणाई । (मे०) सात तीन इकवौस भेद कर । मिट बचन गुण गाई । (मे'वा० ६। पो०) । इम उन्नवकर प्रभुको लेई । मातापास बैठाई । (मे०) । रत्नकुक्षि धार कतुं जगमे । तंसज्ज सुर नर माई । (मे'वा० पोस०) ॥ ७। हरखधरी धनधान्य बह्विध । राजरिद्ध फैलाई । (मे०) नंदी सर अड्डाई महोन्नव । करि सज्ज थानक जाई । (मे'वा० ८। पोस०) । अखसेन कुलकाम आचारै । जन्मउन्नव अ धकाई । ध्वजतोरण बाजिल बह्विध । मंगलध्वनि बरताई । (मे'वा० पोस०) ॥ ९। इम प्रभु जन्म कल्याणक दिवसै ।

सज्जसंघ हरख वधाई । (मे०) लक्ष्मी प्रधान मोहन प्रमुसेवै
अहिनिस ध्यान लगाई । (मे० वा० पो०) । १० । इति श्री
पोसदसमीको जन्म कल्याणक स्तवन संपूर्णम् ॥३॥

॥३॥ अथ श्रीगौडीपार्श्वजिन दृष्टस्तवनलि० ॥३॥

॥३॥ (दूहा) बाणी ब्रह्मावादनी । जागे जगविख्यात
पासतणा गुणगावतां । सुऊ सुख वस ज्यो मातं ॥१॥ नारं
गैअणहलपुरै । अहमदा वादै पास । गौडीनो धणी
जागतौ । सज्जनी पूरे आस ॥ २ ॥ सुभ वेला सुभदिन धनी
मज्जरत एकसंज्ञाण । प्रतिमा ते इह पासनी । यई प्रतिष्ठा
जाण ॥ ३ ॥३॥ (ढाल) ॥३॥ गुणहि विसाला मंगलीक
माला । वामानो सुत साचोजी । धण कणकंचण मणि
माणकदे । गौडीनो धणी जाचोजी ॥४॥ (गु०) अणहलपुर
पाटण मांहे प्रतिमा । तुरक तणें घर ज्जंतीजो । अश्वनी भूमि
अश्वनी पौद्गा । अश्वनी वालि विगूती जो ॥५॥ (गु०) जागं
तो जल्ल जेहने कहियै । सुहणो तुरकनै आपैजो । पासजिने
सर कैरी प्रतिमा । सेवक तुऊ संतापै जो ॥६॥ (गु०) ग्रह
जठीने परगट कर जे । मेवा गोठीने देजे, जो । अधिको
म लेजे उठो मलेजे । टका पांचसै लेजेजो ॥७॥ (गु०) नहिं
आपिस तो मारौस सुराजीस । मोर बंध बंधास्यैनी । सुल
कलव धन हय हाथो तुऊ । लाठ धणी घर जास्यै जो
॥८॥ (गु०) मारग पहिलो तुऊने मिलस्यै । साहयवाह
जेगोठीजो । निलवट टीलो चोखा चेका । वस्तु बहै त
सुपोठी जो । ॥९॥ (गु०) ॥३॥ (दूहा) ॥३॥ मनसुंवीहो

तुरकडो। मानें वचन प्रमाण। बीबीने सुहणा तणो। संभला
 बैसहिनाण ॥१०॥ बीबी बोलै तुरकनें। वजा देव है कोइ
 अवसताव परगटकरो। नही तरमारै सोय ॥११॥ पाठ
 लीरात परोडीयै। पहली बंधै पाज। सुहणा माहेंसेठनें
 संभलावै जख राज ॥१२॥ (ढाल) ॥ एम कहौ यक्ष
 आयो राते। सारथ वाङ्गनें सुहणें जी। पासतणी प्रतिमा
 तुंलेजे। लेतो सिरमत धुणें जी ॥१३॥ (एम०) पांचसैटका
 तेहनें आपे। अधिको मा आपिस वाखजौ। जतन करौ पुह
 चाप्ते थानकि। प्रतिमा गुण संभारै जी ॥१४॥ (एम०) तुज
 नें होसी बड़ फलदायक। भाई गोठीनें सुणजे जी।
 पुजीस प्रणमौस तेहनापाया। ग्रहउठीनें युणजे जी ॥१५॥
 (एम०) सुहणो देईनें सुरचालयो। अपनें थानक पड़तो
 जी। पाठण माहिं सारथवाङ्ग। हौडै तुरकनें जोतोजी
 ॥१६॥ (एम०) तुरक जातां दीठो गोठी। चोखा तिलक
 लिलाडै जी। संकेत पड़तो साचोजाणौ। बोलावै वड़लाप्ते
 जी ॥१७॥ (एम०) सुज वरि प्रतिमा तुजनें आपुं। पास
 जिणेंसर करीजौ। पांचसैटका जो सुज आपे। मोलन
 मागुं फेरीजौ ॥१८॥ (एम०) नाणो देई प्रतिमालेई। थानक
 पड़तो रंगैजी। केसरचंदन ष्ठगमद घोली। विधसुं पूजा
 रंगे जी ॥१९॥ (एम०) गादौ रुनी रुनौ कीधी। ते माहि
 प्रतिमा राखै जी। अनुक्रम आव्यापरिकरमाहें। श्रीसंघनें
 सुरसाखै जी ॥२०॥ (एम०) छव दिन अधिकाथाये। सत्तर
 भेद सनावो जी। ठामर ना दरसन करवा। आवै लोक
 प्रभातो जी ॥२१॥ (एम०) (दुहा) ॥ इकदिन देखै अवध

सु। परिकर पुरनो भंग । जतनकरं प्रतिमा तणो । तीरथ
 अठै अभंग ॥२२॥ सुहणो आप्रै सेठने । थल अटवी उज्जाड ।
 महिमा थास्यै अति घणी । प्रतिमा तिहां पुहचाड ॥२३॥
 कुसल खेम तिहां अठै । तुज्जनें सुज्जनें जाणि । संका ठोडो
 काम करि । करतो मकरि संकाणि ॥ २४ ॥ (ढाल)
 ॥२५॥ पास मनोरथ पूराकरै । वाहण एक ठषम जो तरै
 परिकरथी परियाणो करै । इक थलचढ बीजो जतरै ॥२५॥
 बारै कोस आव्या जेतलै । प्रतिमा नविचालै ते तलै ।
 गोठौ मनह विमासण थई । पास भुवन मंजावूं सही
 ॥२६॥ आ अटवी किमकरं प्रयाण । कुठको कोइनदीसै
 पाहाण । देवल पास जिनेसर तणो । मंजावूं किम गरथै
 विणो ॥ २७ ॥ जलविन श्रीसंवरहस्यै किहां । सिलावटो
 किम आवै इहां । चिंतातुर थयो निद्रालहै । यक्षराज
 आवीनें कहै ॥२८॥ गुं हली ऊपर नांयो जिहां । गरबवणो
 जाणो जे तिहां । खस्तिक सोपारीनें ठाणि । पाहण तणो
 उल्लटस्यै खाणि ॥२९॥ श्रीफल सजल तिहां किल जूओ ।
 अमृत जलनौसरसो कूओ । खाराकूआ तणो इह सैनांग
 भूम पडो ठै नीलो ठाण ॥३०॥ सिलावटो सीरोही वसै ।
 कोटपराभवियो किसमिसै । तिहां थकी तूं इहां आण
 जे । सत्यवचन माहरो मान जे ॥ ३१ ॥ गोठौनो मनथिर
 थापियो । सिलावटैनें सुहणो दियो । रोगगमौनें
 पूह आस । पास तणो मंजि आवास ॥ ३२ ॥ सुपन मांहे
 मान्यो तेवैण । हेम वरण देखाडो नैण । गोठौ मनह मनो
 रथ ऊवा । सिलावटैनें गखा तेडवा ॥३३॥ सिला वटो आवै

सरमो । जौमें खोरखांन घृत चरमो । घटै घाट करै को
 रणो । लगन भलै पाया रोपणो ॥३४॥ थंभर जौधौ पूतली ।
 नाटक कौतिक करतो रली । रंग मंजुप रलियामणो रसै ।
 जोतां मानवनो मन वसै ॥३५॥ नीपायो पूरो प्रासाद ।
 खर्गसमो मंडे आवास । दिवस विचारी ईंढोषढो । तत
 खिण देवल ऊपर चढो ॥३६॥ शुभ लगन शुभ वेलावास
 पद्मासन बैठा औपास । सहिमा मोटो मेरुसमान । एकल
 मिलवगटै रहै वान ॥ ३७ ॥ वात पुराणी में सांभली ।
 तवन मांहि सूधौ सांकली । गोठौ तणा गोतरौया अठै
 याव करौने परने पठै ॥३८॥ (दूहा) ॥ विघन विद्धारण
 यक्ष जगि । तेहनो अकल सरूप । प्रोत करै औसंधने ।
 देखांनै निजहप ॥ ३९ ॥ गिरुओ गौडौ पासजिन । आपै
 अरथभंजार । सानिध करै औसंधने । आस्था पुरणहार ॥
 ४० ॥ नील पलाणै नीलहय । नीलो थइ असवार । मारग
 चुकामानवी । वाट दिखावण हार ॥ ४१ ॥ (ढाल) ॥
 वरण अटार तणो लहै भोग । विघन निवारै टालै रोग ।
 पवित थइ समरै जे लाप । टालै सगला पाप संताप ॥
 ४२ ॥ निरधननइ धरि धन नो सूत । आपै अपुलीयाने
 पुव । कायरने सुरापण धरै । पार उतारै लह्यो वरै
 ॥ ४३ ॥ दो भागोने दै सोभाग । पग विह्वलाने आपै पग
 ठामनहीं तेहने दौ ठाम । मन वंछित पूरै अभिराम ।
 ॥ ४४ ॥ निरघास्या ने दौ आधार । भवसावर ऊतारै
 पार । आरतोचनी आरत भंग । धरै ध्यान ते लहै
 सुरंग ॥ ४५ ॥ समस्यां साद दीयै यक्ष राज । तेहना मोटा

अथै दिवाज । बुद्धि हीरणे बुद्धि प्रकास । गूंगाने द्यौ वचन
 विलास ॥४६॥ दुखियाने सुखनो दातार । भय भंजन रंजन
 अवतार । बंधन तूटै वेडी तणा । श्रीपार्श्वनाम अक्षर सम
 रणा ॥४७॥ (दूहा) श्रीपार्श्वनाम अक्षर जपै । विश्वानर
 विकराल । हस्त यूथ दूरेटलै । दुद्धरसीह सियाल ॥४८॥
 चोर तणा भयचकवै । विष अमृत उडकार । विषधरनो
 विष जतरै । संग्रामं जयजयकार ॥४९॥ रोग सोग दालिद्र
 दुख । दोहग दूर पुलाय । परमेसर श्री पासनो । महिमा
 मन्त्र जपाय ॥५०॥ ॥ॐ॥ (कडखानीचाल) २ ॥ॐ॥ उंजितुं
 उंजितुं उंज उपसम धरी । उं ह्रीं श्रीं श्रीपार्श्व अक्षर जप
 तै ॥ भतने प्रेत जोटिंग व्यंतरसुरा उपसमै । बार इकवौस
 गुणंतै ॥५१॥ (उं०) दुद्धरा रोग सोगा जरा जंतने । ताव
 एकांतरा दुत्तपंतै । गर्भबंधन ब्रह्मं सर्पविष्णू विषं । चालि
 का बालमेवा ऊखंतै ॥५२॥ (उं०) साइणी माइणी रोहणी
 रं कणी । फोटका मोटका दोष जंतै । दाढ उं दरतणी को
 ल नोला तणी । खान सौयाल विकरालदंतै ॥५३॥ (उं०)
 धरणेंद्र पदमावती समरसोभावती । वाट आषाढ अष्टवी
 अष्टतै । लखमो लोडुं मिलै सुजस वेलावलै । सयल आस्था
 फलै मन हसंतै ॥५४॥ (उं०) अष्टमहाभय हरै कान पौडा
 टलै । जतरै सूल सीसगमणतै । वदत वरप्रोतसुं प्रीति
 विमला प्रभू । श्रीपास जिण नाम अभिराम संतै ॥५५॥
 उंजितु ॥ ॐ ॥ इति श्रीगौडी पार्श्वनाथ जी द्वाद्व स्तवन
 समाप्तम् ॥ॐ॥ इति पोषमास पर्वाधिकारः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ माघ मास मध्ये पर्वोधिकार लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ माघ महिनेमें मितौ माघ बदि १३ (सो) मेरु तेरस नाम से पर्व प्रसिद्ध है। (इस दिन) श्रीकृष्णभदेव स्वामीको निर्वाण कल्याणक है। (इसीसे) भगवंत माहा राज इसदिन कों उत्तम कहा। (इस दिन) चौविहार उपवास करै। रत्नामई पांच मेरु भगवानकी आगे चढावै। बीचमें १ बटो मेरु। चारुं दिस ठोटा मेरु। एसे पांचमेरु चढावै। ऐसी सक्ति नहोय (तो) सोनेके। चांदीके (वा) हतके। मेरु करके चढावै। आगे चारुं दिश तरफ चार नंदावर्त्त करै। अष्टप्रकारो। सतर भेदो। पूजा पढायके। अष्ट द्रव्यसे पूजा करै ॥ॐ॥ पौठे। १। श्रीकृष्णभदेव स्वामी पारंगताय नमः॥ इसी पदको दो हजार गुणनो करै। और जो कोई तेरसके दिन पोसह करै (तो) पूजादिक सब विधि पारणके दिन करै। अतिथि संविभाग करके पारणो करै। इसी विध संयुक्त १३ तेरै बरस (अथवा) १३ तेरै मास तपस्या करै। पौठे शक्ति माफक बज्जत उल्लव से उद्यापन करै। तीर्थों की जावा करै। साहमी बल्लल करै ॥ इहां दृष्टांत कहतेहैं ॥ (जैसे) अयोध्या नगरीमें। अनन्तवीर्य राजा के पुत्र। पिंगल राय कुमर। गांगिल मुनीके पास। इस पर्वका अधिकार सुणके। तपस्या करी। तपस्याके करनेसे। सब रोग दूर ऊये। तपस्या पूर्ण होनेसे। तेरै १३ मंदर बनवाया १३। रत्न मई। सुवर्ण मई। रूपैमई। प्रतिमा स्थापन करी ॥ १३ बेर संघ सहत तीर्थों की जावा करी। तेरै बेर साहमी बल्लल

किया । बद्धत प्रकारसें ज्ञान भक्ति करी । अंतमें सहसेन
कुमरकों राज्य देकै । श्रीसुव्रताचार्य समीपै दिक्षाग्रहण
करी । अनुक्रमेण चवदै पूर्वकों पढके । सब कर्मकों क्षय
करके । अनन्त सुखकों प्राप्त हुवा । इसी का विस्तार
संबन्ध । मेरु तीरसका बखाना सुणनें से मालुम होगा । जो
भय्य जीव इस पर्व कों बिधि संयुक्त सेवन करेंगे । (सो)
इस भवमें परभवमें अनेक सुखकों प्राप्त होंगे ॥ॐ॥ इति
माघ मास पर्वाधिकारः ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ फाल्गुन मास मध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ फाल्गुन महिनेमें मितौ फाल्गुन सुद १४
(सो) तीसरे चौमासै की चौदस नामसे पर्व प्रसिद्ध है । इस
दिन को सब कर्त्तव्य आसाठ चौमासै तुल्य करै । सो पूर्व
लिख्यो है ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ इहां विशेषहोली को अधिकार लिखते हैं ॥ॐ॥
अमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी वारै मासमें ६ ठ मोट
का पर्व कहा । ३ तीन चौमासा । २ दो उली । १ पर्युषणा
एवं ६ । (जिसमें) २ उली । १ पर्युषणा । यह ३ पर्व के
अद्वाइ महीछवतो सब ठिकाणें भय्य जीव करते हैं । अर
कार्तिक चौमासैके उल्लव प्राये बद्धत ठिकाणें होता है ।
पर कलकत्तै जैसा महीछव कोई ठिकाणें देखा नहीं ।
और फाल्गुन चौमासैके उल्लव सुशिदावादमें अज्ञा होता
है । पर कोई महीछव में आज्ञाविरुद्ध जो काम होय
(सो) प्रशंसनीक नहीं । एकतो भगवंतके समोसरणके साथ ।

आज कालके। केई अमौर लोक । धूपकै ढरसें । खेहके ढरसें । आपतो जाते नहीं (निकेवल) दो चार असमज पुरुषोनें भेज देते हैं । पीठे बेपुरुष मदोन्मत्त हुए थके । कूदतां नाचतां भागतां । समवसरणकों उठाला देते ले जाते हैं । उसमें जितनी आसातना होती है । जितनो कर्मबंधता हैं । उसका भागौ हम नहीं ॥ भगवंत को धर्म विनय मूल १ । दया मूल २ । चारित्र्य मूल ३ है । (इस से) धन्य है । जिसके माता पिता (सो) विनय विवेकसंयुक्त शुद्ध भावसे । सब धर्मकार्य करके धर्मको उद्योत करै है । उसी पुरुषोको नमस्कार है । उसी महोद्भवकी प्रशंसा है । (इसीसे) आत्माधी धर्मज्ञ पुरुष है (सोतो) शेषका चौमा सा पर्व जानके । सब ठिकाणें । भगवंतकै धर्मको उद्योत करते थके । शुभ ध्यानरूप अग्नीसें (अष्टकर्म रूपौ काट को जलाके होली करते हैं । पीठे सुबोध जलसें स्नान करके अत्यन्त सुन्दरता को प्राप्त होते हैं ॥ अब द्रव्य भावै दो प्रकारसें होलीके अधिकार कहणें को इष्टाये (प्रथम) द्रव्य होलौके अधिकार लिखते हैं ॥ ॐ ॥

॥ॐ॥ इस फाल्गुण मासमें चौदस पूर्णमासी के दिन जो अज्ञानो जौव विवेकसें विकल हुए थके । नीच जातके परंपराकों प्राप्त हुए थके । श्री जिनधर्मसें विकल हुए थके । लक्षण ठाणादिक जलायके अग्निमई द्रव्य होलि का करै है । महा उत्तम चौमासै पर्वका विराधन करै है । (दूसरे दिन) मलसुवादिक्सें क्रीडा करै है । खोटा वचन बोले है । रासभ माये चटै है । अनेक जीवांकों दुख

उत्पादन करै है। ऐसे जीव शुद्ध वीतराग देवकी आग्या
 ठोढ़के। भांढ भरद्वा के कुल परंपरा कों प्राप्त होते है
 मिष्टान्न भोजनका खाणा ठोढ़के। बिष्टाको भोजन करते
 हैं। दूध का पीणा ठोढ़के। जानते थके पिसाब पीते हैं।
 (ऐसे पुरुष) निकेवल कर्मोंके बंध सधन करके। नीच
 गतिकों उपार्जन करते हैं। अनर्थदंष्ट्रसे अनन्त भव संसा
 रकी स्थिति बांधते हैं। (इस वास्ते) आत्मार्यों भव्यजीवां
 कों। इस माफक। द्रव्य होली करनी उचित नहिं। (निके
 वल) भाव होली करनी उचित है ॥ वसंतके स्तवन बोलै।
 राखी जागण करावै। भगवान के मंदिरमें पूजा करावै।
 महोत्सव निकालै। नाना प्रकारके नाटक करै। साहसी
 बल्लल करै। साधमी भाई आपसमें नाना प्रकारकी क्रीडा
 करै। (आगै) राजा लोकबी वसंत ऋतु आने से सज्जन स
 बंधी साथ। नाना प्रकारके। जल। चंदन। केसर। अबीर।
 गुलाल। इत्यादिकसे क्रीडा करी (सोतो) फेरबी सालोंमें
 देखते हैं। पर यह मलमुत्थादिकसे खेलना। होली जला
 नी। पादुवाण खाणा। भांढ चेष्टा करनी। अपने धर्मकी
 मर्यादा। अपने कुलकी मर्यादा। सब ठोढ़के। भांढ
 भरद्वाके गौदी बैठना। भांढ भरद्वाके कुलकी मर्यादा
 करनी। ऐसी क्रीडा उत्तम पुरुषोंके (अर) जिनधर्म वाले
 भव्य जीवों के। कोई ठिकाण करनी कही नहीं। यह
 क्रीडा निकेवल महामिथ्यात्वो नीच पुरुषोंने चलाई ही।
 उसी पुरुषोंके देखादेख प्राये अज्ञानी जीव सबकोई कर
 ने कों लग गए। (देखो बडा आश्चर्य है)। जब मंदिरजीमें

पूजादिक महोत्सवका काम होता है। उस बखत बङ्गतकों फुरसत न होती है। (और जो कोई आते हैं)। उधोंकों स्वाविया होने में। अगाधो नाटक करने में। बढो लज्जा मालुम होती है। (अर होलीके दिन) माता पिता भाई वैन सबको लज्जा ठोडके। बङ्गत दिल में खुसी होके प्रागलके माफक। उपानत खाते फिरते हैं। मन आवे ज्युं बोलते हैं। कोई बेश्यादिक का नाटक करायकै हज्जार बगसीस कर देते हैं। मनमें जानें हमने बढा नांव किया पर अहो भाइयो। इसमें तुमारा कुठ नाम नहीं है। निकेवल महा असुभ कर्म पैदा होते हैं। तुमारा कल्याण जवई होगा। ऐसी उमंगसें सब को लज्जा ठोडके। भगवान का उत्सव करो। रात्री जागण करो। नाटक करो। धर्मका उद्योत करो। (इसी तरै) होली खेलो (सो) तुमारा इह भवबौ सुधरेगे। परभवबौ सुधरेगे। यह द्रव्य भावै दोनुं होलीका यथावस्थित स्वरूप लिखा है। इसमें आत्मार्यौ धर्मज्ञ पुरष तो देख करके प्रसन्न होंगे। यह खोटं मारग को बंध करने की प्ररूपणा रक्खेगे। (अर जो) महामूर्ख अज्ञानी जीव होंगे (सो) अपने खेलनेके वास्ते। सबी बातकोबी कुयुक्ति लगायके ऊठ ठहरावेंगे। महारोस धारण करेंगे। (जैसे) कोईके पिताको गाली देनेसे रोस उत्पन्न होय (इसी तरै) यह भंड बंछा कौ निंदना देखके महारोस धारण करेंगे। (अर जो) मध्यस्थ जीव होंगे (सो) ऐसा बोलेंगे। यह बात सच है। किसका पर्ब है। किसका खेलना है। निकेवल

इसमें अनर्थ दंष्ट्र लगता है। पर हम इकेला क्या करें। सब भाइ बंध को खेलते देखके। हमसे रखा जाता नहीं। इससे खेलते हैं। (पर) यह घथा बंध होयतो अक्षी है। (इसो से) अहो देवानुप्रियो। सब ठिकाणें यह नौच खेल कों ठोमको। उत्तम खेल खेलनेकी प्रवर्त्तना करो। जिस से तुमारा तप तेज सदा बढता रहै। सदा आनन्द रहै। यह बारै मास के सब कर्त्तव्य। हमने हमारौ बुद्धिसे न लिखा है। (किंतु) प्राचीन आचार्योंके व्याख्यान की पद्धति देखके। सब बालजन के उपगारकों शुद्ध भाषामें प्रगट किये हैं (इसमें) आगम विरुद्ध उठो अघ को कहनेमें आयो होय (तो) विकरण सुद्धे मित्रामि दृक्कट देते हैं। और नौच कर्मके बंध ठोमानेकों। कठोर वचनबी बोला है (सो) बाचके। गुणकों ग्रहण करना। पर रोस धारण न करना। हमारै तो शुद्ध नवकार मन्त्र गुणने वाले है (सो सब) परम मित्र है। सबके तप तेज बढते देखके हमारा चित्तमें परम आनंद होता है। और सब जीवा जोनिसे बेर बेर खमाते हैं ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ खमिय खमाविय में खमिय। सबह जीव निकाय। सिद्धह साख आलोचण। मज्झह बैर नभाय। सबे जीवा कम्मवत्सु। चवदह राज भमंत। तेमें सब खमाविआ। मज्झवितेह खमंतु ॥ॐ॥ इति फाल्गुनमास पर्वाधिकारः ॥

॥ॐ॥ अथ होली खेलनके विचार स्तवन लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (रागधमाल) ॥ॐ॥ होरी खेलियै नरबजरन

ऐ सोदाव । (हो०) दयामिठाई अति भलीरे । तपमेवा पर
घान । सील अघाणो अति भलौ (वारि) । संयम नागर
पांन । (हो०) ॥१॥ लेखा मादल भाव फफरे । क्रोध मान
दोय ताल । पांच सुमतको अरगजो (वारी) । नवतत्व लेज्ज
गुलाल । (हो०) ॥२॥ सुमता केसर घोलीचैरे । दसवाको
ठिरकाव । ग्यान पिचरको पकरकै (वारी) । सुगत वधू चिंत
लाय । (हो०) ॥३॥ ऐ सा साज वनायकैरे । ऋषभदेव गुण
गाय । श्रीजिनचंद इम खेलतां । (वारी) । भवभव पातिक
जाय । (हो०) ॥४॥ इति पदम् ॥॥॥॥— ॥॥॥॥

॥॥॥॥ (राग वसंत होरी तालयत्) ॥॥॥॥

॥॥॥॥ जय बोलोरे पासजिनेसरकी । (ज०) । मस्तक
सुगठसोहै मनमोहन । अंगीयां सोहै केसरकी । (जै०)
॥ १ ॥ त्रिभुवन ज्योति अखंडित तनकी । स्याम घटा जैसी
जलधरकी । (जै०) ॥ २ ॥ बालपणमें अदभुत ग्यानसुं ।
करणा कीधी विषधरकी । (जै०) ॥ ३ ॥ कमठ उनाय
वायज्युं वादल । जीतकरी अपने घरकी । (जै०) ॥४॥
मात वामा उयरे जिनजायो । राणी अश्वसेन नरेसरकी
(जै०) ॥५॥ आठ करम दल सबल खपाए । अणि चढ्या जे
शिवपुरको । (जै०) ॥६॥ कहै जिनचंद सेरे प्रभु पारस ।
जैसो ठाया सुर तसकी (जै०) ॥७॥ इति पदं ॥॥॥॥॥॥॥॥

॥॥॥॥ (पुनः वसन्त । होरी) ॥॥॥॥ .

॥॥॥॥ मधुवनमें जाय मची होरी । (म०) । ग्यान
गुलाल अवीर उगावो । सुमता केसर रंमघोली । (म०)
॥ १ ॥ अस्त रूप घरम जिनवरकौ । सुदृढमा कहै कर

जोनी । (म०) ॥ २ ॥ इति पदं ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ (पुनः वसन्त होरी) ॥३॥

॥३॥ यादव मनमेरो हरलीयो रे । (या०) । संजम
दूती कान लगी जब । सिवनारी पर चितदीयो रे । (या०)
॥ १ ॥ तोरणथी रथ फेर चलेहो । नवभव नेह अलग
कीयो रे (या०) ॥३॥ मोह ठोम गिरनार सिधाए । नेमि
जिणंदनें कहा कीयोरे । (या०) ॥ ३ ॥ तुमहो तीन भुवनको
साहिब । सुरनर कहै तुमे चिरंजीयोरे । (या०) ॥४॥ वार
वार मेरी वंदना जयज्यो । चंद कहै मनहरखीयो रे ।
(या०) ॥५॥ इति पदं ॥३॥४॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ (पुनः वसन्त होरी) ॥३॥

॥३॥ इक सुगलै नाथ अरज मेरी (इ०) ॥ १ ॥ इह
संसार गहरतर सिंधु । भमर पतत जिहां भवफेरी (इ०)
॥ २ ॥ क्रोधादिक बड मगर मनु है । ग्रहत जंत नकरत
देरी । (इ०) ॥ ३ ॥ ऐसे जलधर पारकरो तौ । तारण
तरण विरुदतेरी । (इ०) ॥४॥ धरम जिनैसर जगपरमेसर ।
दूरकरौ दुखकी बेरी । (इ०) ॥५॥ परम क्षमागुण दायक
लायक । अनुपम कीरति जगतेरी । (इ०) ॥६॥ इति पदं ॥

॥३॥ (पुनः होरी) ॥३॥

॥३॥ सांवरो सुखदाई जाकी ठवि वरणि न जाई ।
(आंकली) । श्रीअश्वसेन वामानन्दन की । कीरति लिभवन
ठाई । समेत सिखर गिर मगहन प्रभु को । देख दरस हर
खाई । हृदय मेरो अति जलसाई (सांव०) ॥१॥ आज हमा
है सुरतर प्रगद्यो । आज आनन्द वधाई । तीन भुवन को

नायक निरख्यो । प्रगटी पूर्व पुण्याई । सफल मेरो जनम
कहाई (सां०) ॥२॥ प्रभुके सरस दरस विन पाये । भव भव
भटखोमें माई । अब तेरो चरण शरण चित चाहत ।
वाल कहै गुण गाई । प्रभुजी सेः लगन लगाई (सां०) ॥३॥
इति पदम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (पुनः रागिण्यो वसन्त) ॥ ॥

॥ ॥ नैना हरखाइ । आज तेरी मूरत निरखी (ने०)
भव भव सञ्चित पाप करम सब । देखत दूर पुलाई । सु
मति वधारण कुमति विप्रारण । ज्ञान विमल उलसाइ
(आज०) ॥ १ ॥ वामानन्दन अतिठवि सुन्दर । सहमा
वरणी नजाई । दीन दयाल दया कर दीजै । आनन्दहरख
सवाइ (आ०) ॥२॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (पुनः होरी) ॥ ॥

॥ ॥ मनमोहन गजगतकी गामनी । आज चली
गिरनार कामिनी ॥ (म०) (आंकली) ॥ सुन्दर रूप बनाय
सखी सब । सिखरसेल जेसे चमके दामनी (म०) ॥१॥ नेम
प्रभुको व्याह मनायो । मोसे प्रीत लगाइ भामनी ॥ (म०)
तोरण आय चले मोह डोली । कौन चक मोपे काढी भा
मनी ॥ (म०) ॥२॥ मेन तजूंगो नव भव कैरी । प्रीत बनी
जैसी इंदु दामनी (म०) ॥३॥ राजुल पहली प्रीतम सेती ।
वाल कहै भइ सुगत भामनी (मन०) ॥४॥ इति पदम् ॥ ॥

॥ ॥ (पुनः होरी) ॥ ॥

॥ ॥ रङ्ग लग्यो गुरु ज्ञान । होरी चेतन खेलै ।
शील सुरङ्गी चीर रङ्गाये । पहिरै आप सुजान (हो०) ॥

पर नन्दिर तज अविचल लीजै । धर्म दया धर ध्यान ॥
 (हो०) ॥ हिल मिल आप परमरस चाखे । सुमत सखी
 पहिचान (हो०) ज्ञान गुलाल लाल रङ्ग लागे । सोमै अद
 भुत वान (हो०) कुमत अवौर उजाय जगतमें । बैठे शिव
 पुर थान (हो०) अनुभव राग मगन गुण गावै । तप जप
 सुन्दर तान (हो०) ऐसा खेल भविक जन धारै । वंठित
 पावै दान (हो०) इति पदम् ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ (पुनः होरी ताल बत्) ॥३॥

॥ ३॥ चिदानन्द खेलै फाग । हो हो होरी आई ।
 जन मृदङ्ग बजे तन मांहि । गावत आगम राग (हो०) ॥
 ज्ञान गुलाल सदा रङ्ग लागे । खेलत सुमत सुहाग (हो०)
 समकित केसर चौर रङ्गाउं । पहिरो मन बेराग (हो०) ॥
 लख चौराशी रामत ठांती । चारु गत सें भाग (हो०) ॥
 अविचल सुख पञ्चम गत पावै । योग बतन कर जाग ॥
 (हो०) ऐसा खेल भविक जन धारै । पावै भव दधि पार
 (हो०) । चेतनता सुष होय जगत में । समकित के रङ्ग
 लाग (हो०) ॥३॥ इति पदम् ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ (पुनः होरी) ॥३॥

॥ ३॥ होरी आई मेरो मन भयो प्रसन प्रसन भयो
 प्रसन न न न हे (हो०) । ब्रज वनिता मिल नेम कुमर सङ्ग ।
 फाग रमत हियै हसन हसन हसनन ननहे (हो०) ॥ १ ॥
 बाजे तैताल मृदङ्ग ऊंऊ मफ । वीणा कौ धुनि जिम मेघ
 गरजन गरजन गरजन न ननहे (हो०) ॥ २ ॥ उजत गुलाल
 लाल भए बादल । हरि हलधर हियै हरखन हरखन हर

खन न ननहे (हो०) ॥ ३ ॥ सबल आधार चरण जिनजौको
सेवक कों नित दीजीयै दरशन दरशन दरशन न न नहे
(हो०) ॥४॥ इति पदम् ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (पुनः होरी) ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ होरी खेलो नेमसें घाय घाय । दुरजन की
लाज मेरो करै रे बलाय (हो०) ॥ ज्ञान गुलाल अबीर उ
द्रावो । जसा करो रङ्ग लाय लाय (हु०हो०) ॥१॥ शील
संजम व्रत पान मिठाई । ध्यान धरुङ्गी में गाय गाय
(हु०हो०) ॥ २ ॥ अष्ट कर्म की खेह उद्रावो । ज्ञान हियेमें
लाय लाय (हु०हो०) ॥३॥ जगत चन्द की अरज बौनती ।
शरण गहीमें तेरी भाव २ (हु०हो०) ॥४॥ इति पदम् ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (पुनः होरी) ॥ॐ॥

॥ॐ॥ मेरै बटकी गगरिया रङ्गसें भरी । सिव पुरकी
वात पूतुं कबकी खरौ । (मे०) परम जोत प्रभु सिद्धसिला
पर । परमात्म निज ध्यान धरी । (सि०) ॥१॥ मोहन रङ्ग
भरो रङ्ग सिवपुर । अजर अमर पद सुक्लकारी (सि०) ॥२॥
॥ॐ॥ इति पदम् । ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (पुनः होरी) ॥ॐ॥

॥ॐ॥ मेनें देखी अनोखी होरी रे (मे०) सहसा
वनकी कुंजगलिनमें । अनुपम सोर मच्यो रौ (अ०) ॥१॥
यादवपति औनेमकुमरजो । सुमतासखी मिल गोरी (अ०)
॥२॥ सुमता केसर भर पिचकारी । मारत है वर जोरो ॥
(अ०) ॥३॥ ज्ञानगुलाल उटै अतिभारी । अबीर उटै भर
ऊरी (अ०) ॥४॥ कपूर कहै प्रभु मोकुं खेलावो । अरज

सुणौ इक मोरो (अ०) ॥५॥ इति पदम् ।

॥ॐ॥ मङ्गल ॥ॐ॥

॥ॐ॥ मङ्गल राजै गिरनार । नेम पद मङ्गल है देवा०
मङ्गल राजिमतो पद पङ्गल । मङ्गल रह नेमि राय (ने०)
मङ्गल गणपति मङ्गल पाठक । सब तपसी विचसार (ने०)
मङ्गल धन धन्ना मुनि नायक । मङ्गल सब अन गार (ने०)
जय जय खेम कुशल गुरु जंपै । आनन्द धन अवतार
(ने०) । इति पदम् ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ मंगल कलश ॥ॐ॥

॥ॐ॥ इम मास द्वादश मध्य जे सङ्ग पर्व सेवन कार
ने । सङ्ग बालजन उपगार कारन शुद्ध भाषा सारने ॥
संबत् रसानलनंदवसुधा भाद्र शित एकादशी । गुरु गन्ध
खरतर किलकिला पुर मोहन भाषा उपदिशी ॥ १ ॥ ॐ ॥
इति द्वादशमास पर्वधिकारः ॥ॐ॥ १२ ॥ सं १८३६ ।

॥ॐ॥ अथ द्वादश मास मध्ये प्रसिद्ध पर्वधिकार
कथनानंतरं । सांप्रति मखिलजिन पंचकल्याणक स्वरूप
सुच्यते ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ जिस मासमें जितने दिन भगवंतके कल्याणक
केहै । सो सब भव्यजीवों के सेवन करने योग्य है । पर
कीण तिथकों क्या कल्याण कहै । सो जाण्या विना से
वन कर सकते नहीं । (और विशेष में) पंच कल्याणक
तपस्या करनेवाले भव्यजीवोंके अवश्य पंच कल्याणक
टीप गुणने विना काम चलता नहीं । इसीसे गुणनो करने

माफक विधि प्रपाकसें पंच कल्याणक टोप लिखते हैं ॥

॥ॐ॥ अथ पंच कल्याणक टोपलि॥ॐ॥

(कार्तिक कृष्णपक्षे) ॥५॥

(कार्तिक शुक्लपक्षे) ॥२॥

५ । असंभवनाथजी सर्वज्ञाय नमः । ३ । असुविधिनाथजी सर्वज्ञाय० ।

१२ । अपद्मप्रभजी अर्हते नमः । १२ । अचरनाथजी सर्वज्ञाय० ।

१२ । अनेमिनाथजी परमेष्ठि० । (मार्गशौर्ष कृष्णपक्षे) ॥६॥

१३ । अपद्मप्रभजी नाथाय० । १० । अचरनाथजी अर्हते नमः ।

३० । अबद्धमानजी पारंगताय० । १० । अचरनाथजी पारंगताय० ।

(मार्गशौर्ष शुक्लपक्षे) ॥४॥

११ । अचरनाथजी नाथाय० ।

५ । असुविधिनाथजी अर्हते० । ११ । अमल्लिनाथजी अर्हते० ।

६ । असुविधिनाथजी नाथाय० । ११ । अमल्लिनाथजी नाथाय० ।

१० । अबद्धमानजी नाथाय नमः । ११ । अमल्लिनाथजी सर्वज्ञा० ।

११ । अपद्मप्रभजी पारंगताय० । ११ । अनेमिनाथजी सर्वज्ञाय० ।

(पौष कृष्णपक्षे) ॥५॥

१४ । असंभवनाथजी अर्हते० ।

१० । अपार्श्वनाथजी अर्हते० । १५ । असंभवनाथजी नाथाय० ।

११ । अपार्श्वनाथजी नाथाय० ।

(पौष शुक्लपक्षे) ॥५॥

१२ । अचंद्रप्रभजी अर्हते नमः । ६ । अविमलनाथजी सर्व० ।

१३ । अचन्द्रप्रभजी नाथाय० । ६ । अशान्तिनाथजी सर्व० ।

१४ । अशीतलनाथजी सर्वज्ञा० । ११ । अशजितनाथजी सर्वज्ञा० ।

(माघ कृष्णपक्षे) ॥५॥

१४ । अशमिनंदनजी सर्वज्ञा० ।

६ । अपद्मप्रभजी परमेष्ठिने० । १५ । अधर्मानाथजी सर्वज्ञा० ।

१२ । अशीतलनाथजी अर्हते० । (माघ शुक्लपक्षे) ॥६॥

१२ । अशीतलनाथजी नाथाय० । २ । अशमिनन्दनजी अर्हते० ।

१३ । अक्षप्रभदेवजी पारंगता० । २ । अवास्तुपुज्यजी सर्वज्ञाय० ।

३० । अत्रेयांसजी सर्वज्ञाय नमः । ३ । अविमलनाथजी अर्हते० ।

(ફાલગુન કૃષ્ણપક્ષે) ॥૧૦॥ ૩ । ઓઘર્ષનાથજી અર્ચતે૦ ।

૬ । ઓસુપાર્શ્વનાથજી સર્વજ્ઞાય૦ । ૪ । ઓવિમલનાથજી નાથાય૦ ।

૭ । ઓસુપાર્શ્વનાથજી પારંગ૦ । ૮ । ઓઅજિતનાથજી અર્ચતેનમઃ ।

૭ । ઓચન્દ્રપ્રભજી સર્વજ્ઞાય૦ । ૨ । ઓઅજિતનાથજી નાથાય૦ ।

૮ । ઓસુવિધિનાથજી પરમેષ્ઠિ૦ । ૧૨ । ઓઅમિનન્દનજી નાથાય૦ ।

૧૧ । ઓઋષભદેવજી સર્વજ્ઞાય૦ । ૧૩ । ઓઘર્ષનાથજી નાથાય૦ ।

૧૨ । ઓએવાસજી અર્ચતે નમઃ । (ફાલગુન શુક્લપક્ષે) ॥૫॥

૧૨ । ઓનિસુવ્રતજી સર્વજ્ઞા૦ । ૨ । ઓઅરનાથજી પરમેષ્ઠિને૦ ।

૧૩ । ઓએવાસજી નાથાય૦ । ૪ । ઓમહિનાથજી પરમેષ્ઠિ૦ ।

૧૪ । ઓવાસપૂજ્યજી અર્ચતે નમઃ । ૮ । ઓસંભવનાથજી પરમેષ્ઠિ૦ ।

૩૦ । ઓવાસપૂજ્યજી નાથાય૦ । ૧૨ । ઓમહિનાથજી પારંગતા૦ ।

(ચૈત્ર કૃષ્ણપક્ષે) ॥૫॥

૧૨ । ઓનિસુવ્રતજી નાથાય૦ ।

૪ । ઓસુપાર્શ્વનાથજી પરમેષ્ઠિ૦ । (ચૈત્ર શુક્લપક્ષે) ॥૮॥

૪ । ઓપાર્શ્વનાથજી સર્વજ્ઞાય૦ । ૩ । ઓકુંથનાથજી સર્વજ્ઞાય૦ ।

૫ । ઓચન્દ્રપ્રભજી પરમેષ્ઠિને૦ । ૫ । ઓઅજિતનાથજી પારંગ૦ ।

૮ । ઓઆદિનાથજી અર્ચતે૦ । ૫ । ઓસંભવનાથજી પારંગ૦ ।

૮ । ઓઆદિનાથજી નાથા૦ । ૫ । ઓઅનંતનાથજી પારંગ૦ ।

(વૈશાખ કૃષ્ણપક્ષે) ॥૬॥

૬ । ઓસુમતિનાથજી પારંગ૦ ।

૧ । કુંથનાથજી પારંગતાય૦ । ૧૧ । ઓસુમતિનાથજી સર્વજ્ઞા૦ ।

૨ । ઓશીતલનાથજી પારંગ૦ । ૧૩ । ઓવર્ધમાનજી અર્ચતે૦ ।

૫ । ઓકુંથનાથજી નાથાય૦ । ૧૫ । ઓપદ્મપ્રભજી સર્વજ્ઞાય૦ ।

૬ । ઓશીતલનાથજી પરમેષ્ઠિને૦ । (વૈશાખ શુક્લપક્ષે) ॥૮॥

૧૦ । ઓનિમિનાથજી પારંગ૦ । ૪ । ઓઅમિનન્દનજી પરમે૦ ।

૧૩ । ઓઅનન્તનાથજી અર્ચતે૦ । ૭ । ઓઘર્ષનાથજી પરમેષ્ઠિ૦ ।

૧૪ । ઓઅનન્તનાથજી નાથા૦ । ૮ । ઓઅમિનન્દનજી પારંગ૦ ।

૧૪ । ઓઅનન્તનાથજી સર્વ૦ । ૮ । ઓસુમતિનાથજી અર્ચતે૦ ।

- १४ । ओकुंथनाथजी अर्हते० । १० । श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय० ।
 (ज्येष्ठ कृष्णपक्षे) ॥६॥ १२ । श्रीविमलनाथजी पर० ।
 ६ । श्रीत्रेधांसजी परमेष्टि० । १३ । श्रीअजितनाथजी पर० ।
 ८ । श्रीसुनिखव्रतजी अर्हते० । (ज्येष्ठ शुक्लपक्षे) ॥८॥
 ९ । श्रीसुनिखव्रतजी पारंग० । ५ । श्रीवर्द्धमानाथजी पारंग० ।
 १३ । श्रीशान्तिनाथजी अर्हते० । ९ । श्रीवासुपूज्यजी परमेष्टिने० ।
 १३ । श्रीशान्तिनाथजी पारंग० । १२ । श्रीसुपार्श्वनाथजी अर्हते० ।
 १४ । श्रीशान्तिनाथजी नाथाय० । १३ । श्रीसुपार्श्वनाथजी नाथाय० ।
 (आषाढ कृष्णपक्षे) ॥३॥ (आषाढ शुक्लपक्षे) ॥३॥
 ४ । श्रीआदिनाथजी परमेष्टि० । ६ । श्रीवर्द्धमानजी परमेष्टि० ।
 ७ । श्रीविमलनाथजी पारंग० । ८ । श्रीनेमनाथजी पारंग० ।
 ९ । श्रीनेमनाथजी नाथाय० । १४ । श्रीवासुपूज्यजी पारंग० ।
 (आवण कृष्णपक्षे) ॥४॥ (आवण शुक्लपक्षे) ॥५॥
 ३ । श्रीत्रेधांसजी पारंगताय० । २ । श्रीसमन्तिनाथजी परमेष्टि० ।
 ७ । श्रीधनन्तनाथजी परमेष्टि० । ५ । श्रीनेमनाथजी अर्हते नमः ।
 ८ । श्रीनेमनाथजी अर्हते नमः । ६ । श्रीनेमनाथजी नाथाय० ।
 ९ । कुंथुनाथजी परमेष्टिने नमः । ८ । श्रीपार्श्वनाथजी पारंग० ।
 (भाद्रवा कृष्णपक्षे) ॥३॥ १५ । श्रीसुनिखव्रतजी परमे० ।
 ७ । श्रीचन्द्रप्रभजी पारंगता० । (भाद्रवा शुक्लपक्षे) ॥१॥
 ७ । श्रीशान्तिनाथजी परमे० । ९ । श्रीसुविधिनाथजी पारंग० ।
 ८ । श्रीसुपार्श्वनाथजी परमे० । (आश्विन शुक्लपक्षे) ॥१॥
 (आश्विन कृष्णपक्षे) ॥३॥ १५ । श्रीनेमनाथजी परमेष्टि० ॥
 १३ । श्रीसहावीरजी गर्भाप० । ॥३॥ इति पञ्चकल्याणक संपूर्णम्
 ३० । श्रीनेमनाथजी सर्वज्ञाय नमः । ॥३॥ गर्भापहार षट्सप्ततिः ॥
 ॥ ॐ ॥ इति पञ्चकल्याणक संपूर्णम् ॥ ॐ ॥

॥ॐ॥ अथ पञ्चकल्याणक विधिः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ प्रथम शुभ दिन शुभ घण्टौ गुरुकै पास । पञ्चकल्याणक तप ग्रहण करै । उपवास (वा) आबिल (वा) एका सणा दिवाको पञ्चकल्याण करै । तीन टंक देव बंदन कर । पट्टिकमणो करै । (जिस दिन) जो माहाराजको कल्याणक होय । उसीको १००० गुणनो करै । और (पास) जिनेसर जगति लोए० इत्यादि पञ्च कल्याणक भावगर्भित स्तवन पठ (वा) सुणै । जहां भगवंत के कल्याणक भूमि होय । (उहां) वज्रा महोन्नवसे संव सहत जावा करने कों जावै । विधिसंयुक्त वाला करै । और सब भगवंतोंकै पञ्च कल्याणकको उन्नव करै । (जो) शक्ति न हो (तो) शशन के अधिपति श्रीमहावीर स्वामी के षट् कल्याणकका उन्नव जहर करै ॥ ॐ ॥ अब २३ भगवंत की अपेक्षाये पांच श्रीवीर प्रभुकी अपेक्षाये षट् कल्याणक संक्षेप उन्नव विधि लि० ॥ ॐ ॥ १ ॥ चवन कल्याणक कों (परमेष्ठिने नमः) कहियै (इस दिन) चवद स्वप्नादिक की पूजा करायकै । चवन कल्याणक को उन्नव करै । होरा चढावै ॥ १ ॥ ॥ ॐ ॥ २ ॥ जन्म कल्याणक कों (अर्हते नमः) कहियै (इस दिन) जलयात्रादिक महोन्नव करकै । अष्टोत्तरी स्नातादिक करावै । वस्त्र चढावै ॥ २ ॥ ॥ ॐ ॥ ३ ॥ दिक्षाकल्याणक को (नाथाय नमः) कहियै (इस दिन) समोसरण निकाल । अशोक वृक्षादिकके नीचै स्थापन करकै । दिक्षाको उन्नव करै । घृत गुग्गु वस्त्रादिक चढावै । शक्तिमाफक दान देवै ॥ ३ ॥ ॥ ॐ ॥ ४ ॥ केवल ग्यान कल्याणकको (सर्वज्ञाय

नमः) कहीयै । (इस दिन) समोसरणमे भगवंतकों स्थापन करकै । आठ प्रातिहार्य प्रगट करै । नाना प्रकारके उल्लव करै । बख आभूषण चढावै । सपेदगोला चढावै ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ निर्वाण कल्याणककों (पारंगताय नमः) कहीयै । (इस दिन) निर्वाण कल्याणक के भावमर्भित उल्लव करै लाफ चढावै ॥ ५ ॥ (और) ठुथा गर्भापहार कल्याणकका उल्लव करणा होय तो चवण कल्याणकके उल्लव समान करै ॥ ६ ॥ (इसौ तरै) सब कल्याणकके उल्लव करै । तपस्या पूर्ण होखे से । पंचकल्याणक जौकी पूजा करावै । गुरु भक्ति करै । साहमौ बखल करै । (इत्यादिक) विधि संयुक्त यह तपस्या (जो) भव्य जौव करेगे (सो) अनन्त सुख को प्राप्त होगे ॥ इति पंचकल्याणक तपस्याधिकारः ॥

॥ ॥ अथ पख वासैको स्तवन लिख्यते ॥ ॥

॥ ॥ सीमंधर करज्यो मया (एदेशो) ॥ ॥ जंबूद्वीप सोहामणो । दक्षिण भरत उदार । राजग्रहो नगरी भली । अलिका पुर अवतार ॥ १ ॥ (श्री) सुनिसुव्रत स्वामी जी । समरंता सुख थाय । मनवंछित फल पामौयै । दोहन दूर पुलाय ॥ २ ॥ (श्री०) राज करै तिहां राजियो । सुमित्र नरे सर नांम । पटराणी पद्मावती । सौलगुणै अभिराम ॥ ३ ॥ (श्री०) आवण ऊजल पंनमे । श्रीजिनवर हरिवंस । माता कुचि सरोवरे । अवतरौयो रायहंस । (श्री०) ॥ ४ ॥ जेठपढम पक्ष अष्टमौ । जायो श्री जिनराय ॥ जनम महोल्लव सुर करै । विभुवन हरख नमाय (श्री०) ॥ ५ ॥ सामल वरण सोहा

मणो । निरुपम रूपनिधान । जिनवर लंठन काठवो । वीस
 धनुष तनुमान (श्री०) ॥६॥ परणी नारप्रभावती । भोगपुरं
 दर साम । राजलीला सुखभोगवै । पूरै बंठित काम (श्री०)
 ॥७॥ तब लोगांतिक देवता । आवि जंपै जयकार । प्रभु फा
 गुणवदि वारसै । लौघो संजम भार (श्री०) ॥८॥ शुभ फा
 गुणवदि वारसै । मनधर निरमल ध्यान । चार करम प्रभु
 चूरिया । पास्यो केवलग्यान (श्री०) ॥९॥ (ढालं२) ॥१०॥
 सुखकारण भवियण (एहनी) ॥११॥ ततखिण तिहां मि
 लिया चलिया सुरनर कोटि । प्रभुना पदपंकज प्रणवै वे
 करजोति । वेकरजोती मल्लर ठोति समवसरण विरतंत ।
 माणक हेम रूपमय विंगटो ठव तय ऊलकंत । सिंहासन
 बैठा तिहां खामी चौविह धर्मप्रकासै । बार परखदा
 वैठी आगलि सुखे मन उलहासै ॥१२॥ तपने अधिकारै
 पखवासो तपसार । पट्टिवा थी कौजै पनरह तिथ जदार ।
 पनरह तिथि कौजै गुरु सुख लौजै जिस दिन ऊवै उप
 वास । ओसुनिमुप्रत नाम जपीजै वांटी देव उलास । तप
 ऊजमणै रजत पालणो खवन पूतलीचंग । मोदक थाल
 देहरै मूंकी जिनवर सुख सुरंग ॥१३॥ तप करियै निर
 न्तर अऊरव दर्शनो जेम । मनबंठित केरा सुखपामी जै
 तेम । पुख मित परिवार परं अति वल्लभ भरतार । जस
 कोरत सोभाग वंदाई महियल महिमा जाण । परभव
 सुगति फल लह्यै एतपने प्रमाण ॥१४॥ धिर थापी चतु
 विध संघ तणो अधिकार । अखवट्ट प्रसुख नगरादि करि
 या विहार । विहार करौ प्रतिबोवै खंदक पंचसयां परि

वार । कार्तिकसेठ जितसत्रु तुरंगम सुव्रतनाम कुमार ।
तोस सहस वरस आज्ञखो पालै जग दया सार । औस
स्नेत सिखर परमेसर पुहता सुगति मज्जार ॥ १३ ॥ इम
पंच कल्याणक युणिया विभुवन ताय । सुनिसुव्रत स्वामी
वैसमो जिनवरराय । वैसमो जिनवरराय जगत गुरु भय
भंजण भगवंत । निराकार निरंजन निरूपम अजरामर
अरिहंत । औजिनचंद्र विनय शिरोमणि सकल चंद गणि
सीस । वाचक समय सुन्दर इम पभणै पूरो मनह जगोस
॥ १४ ॥ इति पखवासा स्तवन संपूर्णम् ॥ ५० ॥ ॥ ❧ ॥

॥ ❧ ॥ अथ पखवासा तपविधि लि० ॥ ❧ ॥

॥ ❧ ॥ प्रथम शुभ दिन गुरुको पास तप ग्रहण करके
सुद (१) पद्मिवासे । पूर्णमासी तक । इकसार पनरै उपवास
करै । जो शक्ति न हो (तो) प्रथम सुद पक्षकी पद्मवा १
द्वितीय सुद पक्षकी दूज २ (एसें) अबुक्रमसे पनरै सुद
पक्षमे तपस्या पूर्ण करै । औ सुनिसुव्रत स्वामीके पंच
कल्याणक भावगर्भित तवन पढै । गुरुको संयोग होय
(तो) गुरुको पास सुये ।

१ ॥ औसुनिसुव्रत स्वामी सर्वज्ञाय नमः ।

॥ ❧ ॥ इसीको (२०००) दो हजार गुणनो करै । और
तपस्या ग्रहण करनेकी (तथा) देवबंदनादिककी विधि । पूर्वे
खुलासा लिख दीनो है । उसी सुजव बिबेकी जीव सब
तपस्या की विधि करै । विधि संयुक्त करने से उत्तम फल
मिलता है ॥ ❧ ॥ इति पखवासा तप विधिः ॥ ❧ ॥

॥ॐ॥ अथ दस पञ्चक्लाण स्तवन लिख्यते ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (दूहाः) सिद्धारथ नन्दन नमूं । महावीर भग
वंत । विगट्टै वैठा जिनवर । परषदवारमिलंत ॥१॥ गणधर
गौतम तिण समें । पूठे ओजिनराय । दस पचक्लाणकिसा
कह्या । कौयां कवण फल थाय ॥२॥ ढाल ॥१॥ॐ॥ सीमंघर
करज्योमया (एदेशी) ॥ॐ॥ ओजिनवर इम उपदिसै । सांभल
गोयम खाम । दस पचक्लाण कियांथकां । लहौयै अवि
चल ठाम ॥ (ओ० ३) ॥ नवकारसी १ । बोजी पोरसी ॥२॥
साठ पोरसी ३ । पुरमड्ड ॥४॥ एकासण ५ । नौवी ६ । कही
एकलठाण ७ । देवड्डि ॥ (ओ० ४) ॥ दात ८ । आंबिल ९ ।
उपवास १० । हो ॥ एहौज दस पचक्लाण । एहना फल
सुण गोयमा । जू जूवा करूं वखाण ॥ (ओ० ५) ॥ रतन
प्रभा १ । शर्कर प्रभा ॥२॥ वालुक ३ । तीजी जाण । पंक
प्रभा ४ । तिम घूम प्रभा ॥५॥ तम प्रभा ६ । तम तम ७ ।
ठाम । (ओ० ६) ॥ नरकसात कही एसहौ । करम कठिन
करजोर । जीव करम वस ते सही । उपजै तिणहौज ठोर
(ओ० ७) ॥ ठेदन भेदन ताप्पना । भूख बिषा बलिवास । रोम
रोम पौप्पा करै । परमाहम्मी तास (ओ० ८) ॥ रात दिवस
खेववेदना । तिलभर नहीं जिहां सुक्ख । कौया करम जे
भोगवै । पामें जीव बज्जदुक्ख (ओ० ९) ॥ इकदिनरौ नवकार
सी । जे करै भावविशुद्ध । सो वरस नरकनो आछखो । दूर
करै ज्ञानबुद्धि (ओ० १०) ॥ नित्य करै नवकारसी । ते नर नर
क न जाय । नर है पाप बलि पाठला । निरमल होवैजी का
व (ओ० ११) ॥ॐ॥ ढाल २॥ श्रीविमलाचल सिरतिलो (एह)

नी चाल)॥३॥ सुण गोतम पोरसी कियां । महाभोटो फल
होय । भावसुं जे पोरसी करै । दुरगति ठेदै सोय (सु० १२) ।
नरक मांहे जे नारकी । वरसें एक हजार । करम खपावै
नरकम । करता वज्रत पुकार (सु० १३ ॥ एक दिवसनी पोर
सी । जीव करै इकतार । करमहणें सहस एकना । निहचैसुं
गणधार (सु०) १४ ॥ दुरगति मांहे नारकी । दसहजार प्र
माण । नरक आय खिण एकमें । साट पोरसी करै हांण
(सु०) १५ ॥ पुरमठ करै नितजीवजे । नरके ते नविजाय ।
लाख वरस करमनें दहै । पुरमठ करम खपाय (सु०) १६ ॥
लाख वरस दस नारकी । पामें दुःख अनन्त । इतरा करम
एकासण । दूर करै मनखन्त (सु०) १७ ॥ एककोटि वरसां
लगे । करम खपावै जीव । नौवीय करतां भावसुं । दुरगति
हणै सदीव सु० १८ दसकोटि लौव नरकमें । जितरो करै
कर्म दूर । तितरो एकलठांणही । करैसही चकचूर (सु०)
१९ ॥ दात करंतो प्राणीयो । सो कोटि परमाण । इतरा व
रस दुरगति तणा । ठेदै चतुर सुजांण (सु०) २० ॥ आविलनो
फल वज्र कह्यो । कोटिौ एक हजार । करम खपावै इणपरै
भाव आविल अधिकार (सु०) २१ ॥ कोटि सहस दसवरस
ही । सहे दुख नरक मजार । उपवास करै इक भावसुं । तो
पामें सुगति मजार (सु०) २२ ॥ ढाल३॥॥ केकेइ वरलाधो
(एदेशी)॥॥ लाख कोटिौ वरसां लगे । नरके करतां रीवरे ।
(गोतम गणधारो) । ठडम तप करतां थकां । सहै नरक
निवारै जीवरे (गो० २३) ॥ नरकेवरस कोटि लाखही । जीव
लहें तिहां दुःखरे । ते दुख अटमतप जंती । दूर करै पामें

सुखरे (गो०) २४॥ ठेदन भेदन नारकी । कोफाकोफि वर
 सोइरे । कुगति कुमतिनें परहरो । दसमें एतो फल होइरे
 (गो० २५) नितफासू जल पीयतां । कोफा कोफी वरसनो
 पापरे । दूरकरै खिण एकमे । निश्चै होय निःपापरे (गो० २६) ।
 वलिय विसै फल कछो । पांचम करै उपवासरे । पामे
 ग्यांन पांचेभला । करता बिभुवन परकासरे (सु०) २७ ॥
 चवदस तपविधसुं करै । चवदह पूरव होय धाररे । इम
 अनेक फल तपतणा । करितां बलि नावैपाररे (सु० २८) ॥
 मन वचने काया करी । तप करै जे नर नाररे ॥ इग्यारै
 वरस एकादशो । करतां लहै भवपाररे (सु० २९) ॥ आठम
 तप आराधतां । जीव न फिरै संसाररे । अनन्त भवाना पाप
 यो । ठुटै जीव निरधाररे (सु० ३०) ॥ तप ऊंती पापी
 तस्या निसंतरीयो अरजुन मालरे (सु० ३१) ॥ तपनाफल
 सुखे कया । पञ्चक्वाण तणा दस भेदरे । अवर भद पिणठै
 घणा । करतां ठेदै वय वेदरे (सु० ३२) ॥ ॐ ॥ कलशः ॥ ॐ ॥
 पञ्चक्वाण दसविध फल प्रख्या महावीर जिण देव । जे
 करै भवियण तप अखंतिता तासु सुरपव सेवण । संवत्त
 विधिगुण अश्व शशि बलि पोससुद दशमी दिनें । पदम
 रंग वाचक सीसगणिवर रामचंद्र तपविधि भणें (सु० ३३)
 ॥ इति दस पञ्चक्वाण दस स्तवन ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ १० पञ्चक्वाण तपविधिः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ यह दस १० पञ्चक्वाण के स्तवनमें । खुलासा
 दस पञ्चक्वाण के भिद (और) बला । तेला । पांचम । आठ

म। चौदश। (इत्यादिक) तपस्या करनेके फल। भगवंत औ
महावीर स्वामीके। बचन माफक। उत्तम पुरुषोंने रचना
करी है। (इसोसे) धर्मरागी पुरुष। इसी तवनको पढके।
तपस्या करनेमें आदरवंत होता है। और कोईकै दश
पञ्चव्वाण तप करनेकी इज्ञा हो (तो) पहलै दिन। नव
कारसौ दूसरै दिन पोरसौ (इसी तरै) तवन सुजव १०
पञ्चव्वाण तप। दस दिनमें सेवन करै। सदा तवन छुणै।
गुरुको संयोग न हो (तो) आप पढै। अंतमें पूजाशरावै
शक्ति माफक उद्यापन करै (इसी तपस्याके प्रसाद)
खोटी गतिको दूर करकै। अछौ गतिके बंध बांधै। महा
ऐश्वर्यवंत होय। भाग्यवंत होय ॥३॥ इति दश पञ्चव्वाण
तप विधिः ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥ ३ ॥ अथ बीस थानक तवन लिख्यते ॥ ३ ॥

॥३॥ ओसिद्धाचल भेटियै (एदेशी) ॥३॥ बीस थानक
तपसेवीयै। घर करि सुभ परिणाम लाल रे। तीजे भव
सेव्योथको। बांधै तीर्थकर नाम लालरे (वी०) ॥१॥ तप रच
ना अधकी कही। ग्याता अंग मज्जार लालरे। सुण ज्यो
भवि तुमे भावसुं। किंचित करियै उचार लालरे (वी०)
॥२॥ सुविहंत गुरु पासै ग्रहै। बीस थानक तप एह लाल
रे। निरदूषण सुभमज्जरते। उचरीजै स सनेह लालरे (वी०)
॥३॥ अरिहंत १। सिद्ध २। प्रवचननसुं ३। सूरि ४। धिवर ५।
उवजाय ६। लालरे ॥ साधु ७। नाण ८। दंस ९। अरु ॥
विनय १०। नसुं उलसाय लालरे (वी०) ॥४॥ चारित्र ११।

वंम १२। क्रियापदे १३॥ तप १४। गोयम १५। जिण १६। ईस
 लालरे ॥ चारित्र १७। ग्यानने १८। गुंत १९। मणी ॥ नमं
 तीर्थ २०। पदवीस लालरे (वी०) ॥५॥ वीस दिवसमें एकही।
 पद गुणनो करभेव लालरे। अथवा दिन वीसांलगे। वीसे
 पद गुणमेव लालरे (वी०) ॥६॥ एक उली षट्मासमें। पुरीजो
 नविहोय लाल रे। फेरनवी करणी पडै। पिठली निफल
 जोय लाल रे (वी०) ॥७॥ ठड अडम उपवाससुं। (अथवा
 देखी सक्ति लालरे। पोसहकर आराधियै। देववाँदै निज
 भक्तिलाल रे (वी०) ॥८॥ संपूरण पद सेवतां। पोसहरो
 नहौं जोग लालरे। तोही सात पदे सही। पोसह करियै
 संजोग लालरे (वी०) ॥९॥ सूरि थिवर पाठक पडै। साधु
 चारित्र सुजांण लालरे। गौतम तीर्थपदे सही। सात थान
 क मनमान लालरे (वी०) ॥१०॥ पद पद दीठ करै सदा
 दोय दोय जाप हजार लालरे। पट्टिकसणो दोय टंकही।
 करियै पूजा सार लालरे (वी०) ॥११॥ सक्ति सुजब तप
 कीजीयै। एक उली करो वीस लालरे। वीसां वीसौ चारसै
 तपसख्या कह्यै एम लाल रे (वी०) ॥१२॥ जिसदिन जो पद
 तप करै। तिसके गुण चितधार लालरे। काउसग्य पर
 दक्षणा। सुखं भणियै नव कार लालरे (वी०) ॥१३॥ जिस पद
 कीस्तवना सुणै। कीजै जिन पद भक्ति लालरे (वी०) ॥१४॥
 मृतक जनम रिनु कालमें। कविघाख्यो उपवास लालरे।
 सोलेखै नहिं लेखवो। निकेवल तपजास लालरे (वी०) ॥१५॥
 सावज त्याग प्रणो करै। सोकन धारै चित्त लालरे। सील
 आभूषण आदरै। सुखसुं बोलै सत्य लालरे (वी०) ॥१६॥

जेठ आसाठ बैसाखमे । भिगसर फागुण मांह लालरे ।
 एषट् मासे मांहिने । व्रत ग्रहीयै व्रत भाग लाल रे (वी०)
 ॥१७॥ तप पूरण जुवां थकां । ऊजमणो निरधार लालरे ।
 कोजै सक्ति विचारने । उल्लव विवध प्रकार लालरे (वी०)
 ॥१८॥ बीस बीस गिणती तणा । पुस्तक पूठा आदि लालरे ।
 ग्यान तणी पूजा करै । सुंकोजै हठ वाद लाल रे (वी०)
 ॥१९॥ फलवधो नगरनो आविकाः । कौवी विध चितलाय
 लालरे । जनम सफल करवा भणी । ओहिज मोक्ष उपाय
 लालरे । (वी०) ॥२०॥ (कलस) ॥॥॥ इम बीर जिन वर तणी
 आग्या धार चित्त मजारण । सज्जदेख आगम तणी रचना
 रचो तप विधसारण ॥ वसुनंद सिद्धि चंद्र वरसे चेख मास
 सुहं करु । सुनि केसरी शशि गल्ल खरतर भणी स्तवना मन
 हरु ॥ २१॥ इति बीस स्थानक तप स्तवनं संपूर्णम् ॥ ॥॥

॥॥॥ अथ बीस स्थानक तपकरण विधि लि० ॥॥॥

॥॥॥ तिहां प्रथम सुभ मङ्गलके दिन । नंदी स्थापना
 पूर्वक । सुविहित गुरुके समीप । बीस स्थानक तप । विधि
 पूर्वक उबरै । एक उली दो माससे लेकै (यावत्) ठम्मासे
 पूरी करै । (कदाचित्) ठम्मास मध्ये पूरी न कर सकै (तो)
 वा उली गिणती में नहीं । और नवी करणी पढ़ै । एक
 उलीके बीस पद है (तिहां) कोई बीस दिनमें । बीसों पद
 जुदा २ गिणें । कोई बीसों दिन में एकज पद गिणें । दूसरै
 बीसों दिनमें दूसरो पद । (ऐसे) बीसों पदकी बीस उली
 करै । तिहां पदाराधनके दिन प्रबल शक्तिवंत । अद्भुत तप

करिकै आराधै । वीस अङ्गमें एकडली होय । (ऐसे, वीसडली (४००) अङ्गमें आराधै । और तिससे हीनशक्ति ठठ तप करकै आराधै । तिससे हीनशक्ति चौविहार उपवास करकै आराधै । तिससे हीन शक्ति विविहार उपवास करकै आराधै । तिससे हीन शक्ति आंबिल (तथा) विविहार एका सण करकै आराधै । तिहां शक्तिवान प्राणी । सब तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करै । (हीन शक्ति) दिन पोसह करै । वीसों पद पोसह सेतो आराधै (जो) पोसह शक्ति सर्व पद में न हो (तो) आचार्य पदै १ उपाध्याय पदै २ धिवर पदै ३ साधू पदै ४ चारित्र्य पदै ५ गौतम पदै ६ तीर्थ पदै ७ यह सात ध्यानकै तो पोसहज करकै आराधै । तथा पि शक्ति न हो (तो) तिस दिन देसावगासिक करै । सावदा व्यापार त्यजै । सो पिण नहोइ (तो) यथाशक्ति तप करै आराधै । अपणी हीनताभावै (तथा) मृतक जातक का सुतकमें उपवासादि तप न गिणै न जावै । स्त्रीयां पिण षट्ठ समय का तप न गिणै (तथा) तपके दिन पोसह सहित करै (तो) बहोत श्रेयकारी है । सो न होसकै (तो) तपके दिन उभय टंक प्रक्रियमाण करै । तीन टंक देव बंदन करै । दो सहस्र (१०००) एक पंदका जप करै । ब्रह्मचर्य पालै । भूमि शयन करै । तपके दिन अतिसावदा आरंभ व्यापार न करै । असत्य न बोलै । सब दिन तप पदके गुण कीर्त्तनमें रहै । (तथा) तपके दिन पोसह करै । (तो) पारणों के दिन जिन भक्ति करके पारणो करै । (जो) तपके दिन पोसह नहो (तो) उसी दिन श्रीजिन भक्ति करै । करावै ।

भावना भावै । (तथा) तपकै दिन पदके गुण भेद प्रमाण
संख्याइं काउसग्न करै । (तावन्मात्र) तङ्गुण स्मरण पूर्वक
खमासमण देई वंदना करै । उस पदका महिमा गुण
याद करके उदात्त स्वरै स्तवना करै । हर्षित रहै ।

॥ॐ॥ अब बीस स्थानक गुणनो और काउसग्नके
प्रमाण लिखते हैं ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ (गमो अरिहंताणं) (२०००) गुणनो । लोगस
१२ काउसग्न ॥ॐ॥ १॥ॐ॥ (गमो सिद्धाणं) (२०००) गुणनो ।
लोगस १५ काउसग्न ॥ॐ॥ २॥ॐ॥ (गमो प्रवयणस्य) (२०००)
दो हजार गुणनो । लोगस ७ काउसग्न ॥ ॐ ॥ ३ ॥ॐ॥
(गमो आयरियाणं) (२०००) दो हजार गुणनो । लोगस
३६ काउसग्न ॥ॐ॥ ४ ॥ॐ॥ (गमो धेराणं) (२०००) दो ह
जार गुणनो । लोगस १५ काउसग्न ॥ॐ॥ ५ ॥ॐ॥ (गमो
उवज्जायाणं) दो हजार गुणनो । लोगस २५ काउसग्न
॥ॐ॥ ६ ॥ॐ॥ (गमो लोए सबसाह्णं) २००० गुणनो ।
लोगस २७ काउसग्न ॥ॐ॥ ७ ॥ॐ॥ (गमो नाणस्य) २०००
गुणनो । लोगस ५ काउसग्न ॥ॐ॥ ८ ॥ॐ॥ (गमो दंस
णस्य) (२०००) गुणनो । लोगस १७ काउसग्न ॥ॐ॥ ९ ॥ॐ॥
(गमो विनयसंप्रसाणं) २००० गुणनो । लोगस १० काउ
सग्न ॥ॐ॥ १० ॥ॐ॥ (गमो चारिवस्य) २००० गुणनो । लो
गस ६ काउसग्न ॥ॐ॥ ११ ॥ॐ॥ (गमो बंभवयधारीणं)
२००० गुणनो । लोगस ८ काउसग्न ॥ ॐ ॥ १२ ॥ ॐ ॥
(गमो किरिआणं) २००० गुणनो । लोगस २५ काउसग्न

॥३॥ १३ ॥३॥ (यमो तवस्सोणं) २००० गुणनो । लोगस
 १५ काउसग्न ॥३॥ १४ ॥३॥ (यमो गोयमस) २०००
 गुणनो । लोगस १७ काउसग्न ॥३॥ १५ ॥३॥ (यमो नि
 णाणं) २००० गुणनो । लोगस १० काउसग्न ॥३॥ १६ ॥३॥
 (यमो चरणस) दो हजार गुणनो । लोगस १२ काउसग्न
 ॥३॥ १७ ॥३॥ (यमो नाणस) २००० गुणनो । लोगस ५
 काउसग्न ॥३॥ १८ ॥३॥ (यमो सुअनाणस) २००० गुणनो
 लोगस १० काउसग्न ॥३॥ १९ ॥३॥ (यमो तित्थस) २०००
 गुणनो । लोगस ५ काउसग्न करै ॥३॥ २० ॥३॥ इति
 बीस स्थानिक गुणनो संपूर्णम् ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

इत्यादि विधिसंयुक्त बीसों उल्लोमे सब पदके उल्लव
 महोत्सव प्रभावना जनमणा पूर्वक करै । जिन साशन
 को उन्नतिके कारण करै । इतनी शक्ति न हो (तो)
 एक उल्लो (तो) विशेष उल्लवादि सहित करणी चाहिये ॥
 इहां विधि प्रयाक ग्रंथसे बीस स्थानक सेवनविधि संक्षेप
 मात्र लिखी है (जो) गुरुको संयोग ऊय । तबतो विस्तारसे
 बीसों पदकी जूदी जूदी विधि । गुरुके मुखसे समझके करै
 जो गुरुका जोग न हो (तो) विवेक संयुक्त इस विधिकों
 देखके बीस स्थानक तप सेवन करै । बीस स्थानक तपन
 पढै (वा) सुणें । बीस स्थानकजी की पूजा करावै । अपनी
 शक्ति माफक बीस बीस ग्यानोपगरण करावै । देव पदको
 हेंव खाते लगावै । ग्यान पदको ग्यान खाते लगावै । गुरु
 पदको गुरु खाते लगावै । सब तीर्थों की जाता करै ।
 साहमी बखल करै (इत्यादिक) द्रव्य भावै विधिसंयुक्त सु

भावसें (जो) मध्य जीव यह बौस स्थानक तपकों सेवन
करेंगे (सो) जिन नाम कर्मकों उपार्जन करकै। तीसरै
भव अनंत सुखको प्राप्त होंगे इत्यलंविस्तरेण ॥४६॥ इति
बौसस्थानक तपउल्लो विधि संपूर्णम् ॥४७॥ ॥४८॥

॥४९॥ अथ रोहणी तप स्तवन लिख्यते ॥४९॥

॥४९॥ सांसेणदेवत सांमणीए। सुऊ सानिध कीजै ॥ भूलो
अक्षर भगति भणौ। समझाई दौजै ॥ मोटो तप रोहण त
खोए। जिणरा गुण गावुं ॥ निम सुख सोहण संपदाए। वं
ठित फल पावुं ॥१॥ दक्षिण भरते अङ्गदेस ठै चंपानयरी
मधवा राजाराज करै तिण जोता बैरो। पाटतणी राणी
रुवणीए लखमौ इण नामें। आठ पुत्रजाया जिणें ए मनमें
सुख पांमें ॥२॥ रोहणि नामें पुत्रकाए सबकुं सुखकारी।
आठां पुत्रां ऊपरए तिणलागै प्यारौ। वाघे चंद्र तणी
कलाए निम पख उजवालै। तिम ते कुमरीधाय माय पांचे
प्रतिपालै ॥३॥ कुमरीरूपे रुवणीए घर अङ्गण बैठी। दौठी
राजा खेलतोए तिण चिंता पैठी। तीन भुवन विच एहवो
ए नहीं दूजौ नारौ। रंभा पउमा गवर गंग इण आगल
हारी ॥४॥ पुरष न दौसै कोइ इसो जिणनें परणावुं। आ
स्थां आगल साल वधै तिण चयन न पावुं। देस ना राज
वीए ततखिण तेझाया। सबल सजाई साथ करी नरपति
पिण आया ॥५॥ बीत सोक राजा तणोए ठै कुमर सोभा
गो। कन्या कै रौआखणीए तिण सेती लागी। ऊभा देखै
सकल लोक चढीया कोइ पाला। चित्तसेन रै कंठ ठवी

कुमरौ वरमाला ॥६॥ देव अने देवंगनाए जपैजय२ कार ।
 रलियायत थयो देखने ए सारो संसार । करजोती कहै
 लोक वखत कन्यारो जाओ । वीत सोकनो कुमर थयो
 सिर ऊपर लाओ ॥७॥ इम वीवाह थयो भलो ए दीया
 दांस अपार । धरि आया परणी करीए हरखो परिवार ।
 वीतसोक निज पुत्रभणौ अपणो पाट दीधो । आपण संयम
 आदरी ए जगमें जस लीधो ॥८॥ डाल ॥ प्रभु प्र
 णमु२ रे पासजिनेसर थंभणो (एदेशी) ॥ तिण नयरोरे
 चिलसेन राजा थयो । सुख माँहै रे केतलो काल वही ग
 यो । इण अवसररे आठ पुत्र ज्जवा भला । चढतै पखरे चं
 द जिसी चढती कला (उल्लाखो) चढती कलाहिव राय बै
 ठो पास बैठी रोहणी । सातमौ भूमें कंत सेतौ करै कौआ
 अति धणी । आठमो बालक गोद ऊपर रंगसुं राणी लोयो
 पुत्रने प्रीतम आंख आगल देखतां हरखै हियो ॥९॥ (चाल)
 इक कामणरे गोख चढौ द्रष्टे पडौ । सिर पौटैरे दीनखरे
 रोवैखनौ । बूढा पणरे मनगमतो बालक सुं ओ । हं एक
 जरे तिण अधिकैरो दुखज्जवो । (८०) दुख ज्जवो देखो रोह
 णी हिव कहै इम प्रीतम भणी । एनार नाचै अने कूदै
 कहो किम मोटा धणी । एहवो नाटक आजताइ में कदे
 देख्यो नहौ । सुजनें तमासो अने हासो देखतां आवै
 सहौ ॥१०॥ (चाल) इण वचनेरे रौसांणो राजा कहै । तं
 पापणरे परतखी पौआ नवि लहै । ए दुखणीरे पुत्र सुं ए
 तन फाट करै । जब वीतैरे वेदना जाणी जै तरै । (८०)
 जाणें तरै तं वात दुखनी गरव गहली कामनी । इम कहौ

राजा हाथ जाल्यो तेहना बालक भणी । सातमी भुंय
थी तले नाख्यो तिसै हाहारवधयो । रोहणी हस्तो कहै
प्रीतम पुब नीचै किम गयो ॥११॥ (चाल) हिव राजारे पुब
तणें सोकै करो । थयो मुरठितरे रोवै अति आंख्यां भरी ।
पढतो सुतरे सासणदेवत जाणियो । कञ्चन मद्दरे सिंहा
सण वैसाणियो । (उल्लालो) वैसाणियो करजोढ आगै
करै नाटक देवता । गोदीखिलावै को हसावै प्राय पंकज
सेवता । जपनो भूपतिनै अचंभो देखी ए कारण किसो ।
जो कोइ ग्यानी गुरुपधारै पूठियै सांसो ईसो ॥१३॥
(चाल) चिंतवतारै चारितिया आया तिसै । राजा
पियरे पुहतो वांदणनें तिसै । सुण देसनारै पूठै प्रसन
सुहामणो । कहो खामीरे पूरब भव बालक तणो ॥
(उल्लालो) बालक तणो भवभूप पूठै कहै इण पर केवली ।
रोहणी राणीरो भवांतर अनें राजानो वली । श्रीगुरु
पासे पाठले भव रोहणीतप आदख्यो । तप तणें सगते
साधु भगते तुम भवसायर तख्यो ॥१३॥ (चाल) कहै राजा
रे किम रोहणीतप कीजीयै । विधि भाषारे जिम तुम पासे
लीजीयै । तब मुनिवररे विधि रोहणीरा तप तणी । इम
जंपैरे चित्सेन राजा भणी ॥ (चाल) राजा भणी विधि
एह जंपै चंद्र रोहणी तप आवियै । उपवास कीजै लाभ
लीजै भली भावना भावियै । बारमा जिनवर तणो प्रतिमा
पूजियै मनरङ्गसु । इम सात वरसां लगे कीजै तजो आ
लस अङ्गसु ॥१४॥ (ढाल) ३ ॥ वीरसुणो मोरो वीन
तो (एचाल) ॥१४॥ तप करियै रोहणी तणो । वली करियै

हो ऊजमणो एम । तपकरतां पातिकटलै । तिण कीजै हो
 तपसेतो प्रेम ॥१५॥ (त०) ॥ देव जुहारो देहरै । तिण आगै
 हो कीजै दृढ अशांक । गुणनो बारम जिन तणो । भलाने
 वज हो भरौयै सऊ थोक ॥१६॥ (त०) ॥ केसर चन्दन चरचौयै
 कीजै आगै हो आठे मङ्गलौक । विधसुं पुस्तक पूजौयै । ते
 पामें हो शिवपुर तहतोक ॥१७॥ (त०) ॥ सेवा कीजै साधुनौ
 बलि दीजै हो सुंह मांग्यादान । संतोषी जै साहमी । म
 नरङ्गे हो कर ३ पकवान ॥१८॥ (त०) ॥ पाटो पोथो पुंठणा ।
 मिस लेखण हो जिल मिल सुजगोस । नवकरवाली वींठ
 णा । गुरु आगै हो धरो सत्तावौस ॥१९॥ (त०) ॥ चोथो
 व्रत पिण तिणदौनै । इम पालै हो मन आण विवेक । इण
 विध रोहणी आदरै । तेषामें हो आनन्द अनेक ॥२०॥ ॐ ॥
 (ढाल ४ धरम करो जिणवर तणो) ॥ ॐ ॥ इम सहिमा रो
 हण तणी । ओग्यानी गुरु परकासैरे । चिलसेनने रोहणी
 वासपूज्य तिर्थकर पासैरे ॥ २१॥ (इ०) ॥ इणपरि रोहणी
 आदरौ । ऊपर उजमणो कीधो रे । चिलसेनने रोहणी
 मनसूधै संजम लीधोरे ॥ २२॥ (इ०) ॥ आठे पुनै आदरौ
 दिख्वा बारम जिन आगै रे । बलि नानाविध तप तपे
 धरम तणो मत जागैरे ॥ २३॥ (इ०) ॥ करि अणसण आरा
 धना । लहि केवल सिवपद पायारे । जिनवाणी आणी
 हीयै । प्रभु चरणं चितलाया रे ॥ २४॥ (इ०) ॥ मनमोहन
 सहिमानिलो । भेंटवियो सिवपुर गामीरे । मनमान्या सा
 हिव तणी । हिव पुन्ये सेवा पामी रे ॥ २५॥ (इ०) ॥ ॐ ॥
 कलश ॥ ॐ ॥ इम गरान दुग सुनि चंद्र वरसे (१७२०)

चोय आवण सुद भली । में कही रोहण तणी महिमा ।
सुगुरु सुख जिम सांभली । वास पूज्य अमनें थया
सुप्रसन चित्तनी चिंता टली । श्रीसारजिन गुण गावतां ।
हिव सकल मन आस्था फली ॥ ३८ ॥ इति रोहणी तप
स्तवन संपूर्णम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ रोहणी तपविधिः ॥ ॥

॥ ॥ शुभ दिन गुरुके पास रोहणी तप ग्रहण करै ।
रोहणी नक्षत्रके दिन उपवास करै । बारमा ओ वासु
पूज्य स्वामी का पूजन करै । आगै अष्ट मंगलीक रचना
करै । अष्ट द्रव्य चढावै । देव बंदनादिक करकै । धर्मोप
देश गुणै ॥ ॥

१ ॥ ओवासु पूज्य स्वामी सर्वज्ञाय नमः ।

इसी को (२०००) गुणनो करे । एसें सात बरस (यह)
तप करनेसे । सुख सौभाग्य बढ़ेगा । विशेष अधिकार । यह
रोहणी तपका स्तवन सुणनेसें मालुम होगा (अलं विस्त
रेण ॥ ॥ इति रोहणी तप विधिः ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ ठग्यासी तप स्तवन लिख्यते ॥ ॥

॥ ॥ गोतम स्वामीरे बुध दो निरमली । आपो करिय
पसाय । महावीर स्वामी जे जे तप कीया । तेहनो कहिसुं
विचार (बलि १ बाहुं वीरजी सुहामणा) ॥ १ ॥ भावठ
भंजण सेयां सुख करै । गातां नवनिधि थाय । बारै बर
सां वीरजी तप कीयो । अनुवर तेरै की पाप (ब०) ॥ २ ॥
बे करजोती एहं वीनवुं । श्रीजिन सासन राय । नाम

लियांथी नव निध संपजै । दरसण दुरित पुलाय (व०)॥३॥
 नव चौमासा जिनजीरा जांणियै । एक कियो ठम्मास ।
 पांचे ऋणा ठ वलि जाणीयै । वारै के को नौ मास (व०)
 ॥ ४ ॥ बज्जत्तर मास खमण जग जीपता । ठ दोमासी रे
 जाण । तोन अट्ठाई दो दो दो कीया । दो दोटमासी वखा
 ण (व०) ॥ ५ ॥ भद्र महामद्र सिवगति जाणीयै । उत्तम ए
 च्छना प्रकार । विचमे पारणो खामी नवि कीयो । नवि
 कीयो चौधो आहार ॥ ४ ॥ (व०) तिज्जं उपवासे प्रतिमा
 बारमी । कीधा वारै जी मास । दोयसै बेला जिन जी
 रा जाणीयै । इम गुणतीस विलास (व०) ॥ ५ ॥ तौनसै
 पारणा जिनजीरा जांणीयै । तीन गुणतीस पचास । एह
 मे खामी केवल पामिया । पांम्या सुगति आवास (व०)
 ॥ ६ ॥ (कलशः) इम वीर जिनवर सयल सुखकर अतही
 दुक्कर तप करी । संयम सुपाली कर्म टाली खामी सिव
 रमणी वरौ । सेवकप्रभणें वीर जिन वर चरण बंदित तुम
 तणा । संसार कूप प्रहंत राखो आपो खामी सुखवणा
 ॥ ७ ॥ इति ठम्मासी तप स्तवनं ॥

॥ ॐ ॥ अथ ठम्मासी तप विधिः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ शासनके अधिपति श्री महावीर खामी । सबसे
 उत्कृष्ट ठम्मासी तप किया । (इसीसें, इस कालमें संवयण
 बेल पराक्रम के जैनप्रणासें इकसार ठम्मासी तप न कर
 सकै (ता पिण) ठम्मासीके (१८०) उपवास करनेसें । जवन्
 ठम्मासी तपकै फलको प्राप्त होय । और देव बंदनादि

सब क्रिया करै । ठप्पासी तपका स्तवन सुणै । इस ठप्पासी तपकै स्तवनमें । सब तपस्या की संख्या कही है ।

१ ॥ यो महावीर स्वामी नाथाय नमः ।

इसो को (२०००) गुणनो करै । भगवंत श्रीमहावीर स्वामीके नामसे तीर्थ प्रसिद्ध होय । उहां जावा करनेको जावै । अनेकतरे से शुद्धभावना भावै । शक्ति माफक उद्यापन करै । इस तपस्याके प्रसाद लघुकर्मी होके अनन्त सुखको प्राप्त होय ॥ इति ठप्पासी तपविधिः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ वारै मासी तप स्तवन लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ दानं उल्लुट धरौ दीजौयै । (एदेशी) ॥ ॐ ॥ विभुवन नायक तं घणो । आदि जिणेसर देवरे । चौसठ इंद्र करै सदा । तऊपद पंकज सेवरे (वि०) ॥ १ ॥ प्रथम भूपाल प्रभु तं ययो । इण अवसरपणी कालरे । तऊ सम अवसरन को प्रभु । तं प्रभु दोन दयालरे (वि०) ॥ २ ॥ प्रथम तोर्यंकर तं सही केवल ग्यान दिनंदरे । धर्म प्रग्यापक प्रथम तं । तंही है प्रथम जिनंदरे (वि०) ॥ ३ ॥ अंतर अरिजे आतमतणा । काल अनादि धिति जेहरे । ते तप यत्तै तैं हणवा । आत्म वीरज गुण गेहरे (वि०) ॥ ४ ॥ ताहरो शक्तो कुण कह सकै । जे जनो अंत न पाररे । दादश मासनो तप कण्यो । तेह अपा नक साररे (वि०) ॥ ५ ॥ ए उत्कृष्ट तप वरणया । आग ममे जिन राजरे । ते करवुं अति आकरं । तप विना किस सरै काजरे (वि०) ॥ ६ ॥ तीनसै साठ उपवास ते । जे दण पंचम कालरे । अवसर आदरे क्रम विना । ते पिण

भुवि सुविसालरे (वि०) ॥७॥ ए तप गुरुसुख आदरै । साल
तयै अनुसाररे । पत्रिकमणादिक भावथी । सुह क्रिया मन
धाररे (वि०) ॥८॥ चित्तसमाधि सुभ भावथी । जे धरै
ताहरो ध्यानरे । ते नर उत्तम फल लहै । बलिलहै उत्त
मग्यानरे (वि०) ॥९॥ काल अनादि संसार मे । जग
मरण तणा दुखरे ते लह्या धर्म पाया बिना । तप बिना
किम ह्वै सुखरे (वि०) ॥१०॥ हिव लह्यो नर भव पुन्य
थी । बलिलह्यो श्रीजिनधर्मरे । तत्वनौ रुचिई सुजे । हिव
मिथ्यो मन तणो भर्मरे (वि०) ॥११॥ भवइ एक जिनराजनो
सरण हो ज्यो सुख काररे । कुरुर कुदेव कुधर्मनो । मे
कीयो हिवै परिहाररे (वि०) ॥१२॥ दर्शन ग्यान चारित
ए । मोक्षमारग सुविसाल रे । भवइ जे सुज संपजै । तो
फलै मंगल मालरे (वि०) ॥१३॥ श्रीजिनसासन तप कह्यो ।
ते तप सुरतर कंदरे । धनइ जेनर आदरै । काटै ते कर
मनो फंदरे (वि०) ॥१४॥ (कलशः) इम नाभिनन्दन जगत
वंदन सकल जन आनंदनो । मेथुख्यो धन दिन आजनो सुज
मात मरु देवी नन्दनो । संवत सुनेवा कास निधि शशि
नयर श्रीबालूचरै । श्रीजिन सौभाग्य सुरिंदके सुपसाय
विजयविमल वरै ॥ १५ ॥ इति श्री बारैमासी तप स्तवन
संपूर्णः ॥॥ ॥॥ ॥॥

॥॥ अथ बारैमासी तपविधिः ॥॥

॥॥ प्रथमतिर्थ कर श्री ऋषभदेव आमी उत्तर
बारै मासी तपस्या करी (इसीसे) भव्य जीव बारै मासी

तपस्याका भाव लायके (३६०) तीन सै साठ उपवास करै
जिस दिन ब्रत होय । उस दिन देवदंनानादि क्रिया करै ।
बारै मासी तपका तवन सुणें ॥

१ ॥ श्री ऋषभदेव खामी नाथाय नमः ।

इसीको (२०००) गुणनो करै । तपस्या पूर्ण होनेसे
सिद्ध गिरौ जावा करनेको जावै । शक्तिभाफक उद्यापन
उल्लव करै । यह तपस्याके प्रसाद भव्य जीवोंके कभी
दुख दो भाग्य प्राप्ती न हो । सदा तप तेज बढ़ती रहै ।
इति बारै मासी तपस्याविधिः ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ अथ अष्टाईस लवधौ तप स्तवन लि० ॥३॥

॥३॥ (द्रुहा) प्रणसुं प्रथम जिनेसर । सुद्धमनें सुखकार
लवधि अठावीस जिन कहौ । आगमनें अधिकार ॥ १ ॥
प्रण आकरणें प्रगट । भगवती सखमज्जार । पन्त्रवणा आव
सके । बाहु लवधि विचार ॥ २ ॥ आंविन तप कर ऊपजै ।
लवधां अष्टावौस । एहिब परगट अरथसुं । सांभलज्यो सुज
गौस ॥ ३ ॥ (टाल) ॥३॥ सफल संसारनी ॥३॥ अनुक्रमे
हैव अधिकार गाथा तणें । लवधिना नाम परिणाम सरि
षा भणें । रोग सज्ज जाइ जसु अंग फरसां सही । प्रथम
ते लवधि ठै नाम आमो सही ॥ ४ ॥ जासु मल सुख उषध
समा जाणीयै । वीय विप्योसही लवधि वखाणीयै । श्लेषमा
उषध साखिखो जेहना । तीजी खेलो सही नाम ठै तेहना
॥ ५ ॥ देहना मैलथी कोठ दूरै ऊवै । चौथो जल्लोसही नाम
तेहना ठवै । केस नख रोमं सज्ज अंग फरसै सही । रहै

नहीं रोग सबोसहो ते कहौ ॥६॥ एक इंद्रिय करौ पांच
 इंद्रिय तणा । भेद जाणें तिका नाम संभिन्नणा । वस्तु
 रूपौ सह जाणियै जिण करौ । सातमी लवधि ते अवधि
 ग्यानें करौ ॥ ७ ॥ (ढाल) आव्यो तिहां नरहर (एदेसी)
 ॥ ॐ ॥ हिव आंगुल अढीयै ऊणो मानुष क्षेच । संया
 पंचेंद्री तिहां जेवसय विचित्र । तसु मननो चिंतत जाणें
 थल प्रकार । ते ऋजुमति नामें अठुम लवधि विचार ॥ ८ ॥
 संपूरण मानुष क्षेच संचावत । पंचेंद्रिय जे ठै तसु मन
 वातांतत । सुखम परजाये जाणें सज्ज परिणाम । ए नव
 मी कहौयै विपुलमतौ सुभ नाम ॥ ९ ॥ जिण लवधि प्रभा वे
 उद्गौजाय आकास । ते जंवा विज्ञाचारण लवधि प्रकास ।
 जसु वचन सरापै खिणमे खेदथाव । ए लवधि इग्यारमी
 आसौ विस कहवाय ॥ १० ॥ सज्ज सुखम बादर देखै लोका
 लोक । ते केवल लवधि बारमौये सज्ज थोक । गणधर पद
 लहीयै तेरम लवधि प्रमाण । चवदम लवधि करौ चवदै
 पूरव जाण ॥ ११ ॥ तोर्यंकर पदवौ पांमे पनरमी लवधि ।
 सोलम सुखदाई चक्रवर्त्ति पदरिद्धि । बलदेव तणो पद ल
 हियै सतरमि सार । अड्डारम आखा वासु देव विस्तार ॥
 १२ ॥ मिसरी घत खीरै मेल्या जेह स्वाद । एहवी लहै
 वाणी उगणौ सम परसाद । भणीयो नवि भूलै सूख अरथ
 सुविचार । ते कृष्टिक बुद्धौ वौसम लवधिविचार ॥ १३ ॥
 एकै पद भणीयै आवै पद लख कोट । इक वौसमी लवधि
 पायाणु सारणी जोट । एकै अरथै करो उपजै अरथअनेक ।
 बावीसम कहौयै बौज बुद्धि सुविवेक ॥ १४ ॥ (ढाल ३) ॥

॥३॥ कपूर ऊँ वै अति ऊजलोरे (एदेशी) ॥३॥ सोलह देस
तणो सहीरे । दाहक संगत वखाण । तेह लवधि तीवीसमीरे
तेजोलेखा जाण ॥१५॥ (चतुरनर सुण ज्यो ए सुविचार) ।
आगमनै अधिकार । वारू लवधि विचार (च०) ॥ चवदह
प्रव धर सुनिवहरे । उपजन्ता संदेह । रूप नवीरचि
मोकलै रे । लवधि आहारक एह (च०) ॥१६॥ तेजो लेखा
अगनने रे । उपसम वा जलधार । मोटो लवध पचवीस
मीरे । सीतो लेखा जाण (च०) ॥१७॥ जेण सगति सुं
विकुरवैरे । विविध प्रकारै रूप । सदगुरु कहै ठावीसमी
रे । बेक्रिय लवध अनूप (च०) ॥१८॥ एकणपावे आदमीरे
जोमावै केइ लाख । तेह अक्षोण महाणसो रे । सत्तावीस
मी साख (च०) ॥१९॥ चूरैसेन चक्कीसनो रे । संघादिकने
काम । तेह पुलाक लवधि कहीरे । अष्टावीसमी नाम (च०)
॥२०॥ तेज सौत लेखा बिज्जरे । तेम पुलाक विचार ।
भगवती सूत्रमे भाषियो रे । ए बिज्जने अधिकार (च०) ॥
२१॥ चक्रवर्त्त बलदेवनी रे । वासुदेव विण एह । आवस्यक
सूत्रे अठैरे । नहीं इहां संदेह (च०) ॥२२॥ पन्तवणा आ
हारनी रे । कलपसूत्र गणधार । तीन तीन इक २ मिली रे
वारू आठ विचार (च०) ॥२३॥ प्रण व्याकरणे कही रे ।
बाकी लवधां वीस । सांभलतां सुख ऊपजै रे । दोलत ऊँ वै
निस दीस (च०) ॥२४॥ (कलशः) ॥ संवत सतरै सै
ठवौसै मेरु तेरस दिन भलै । औनगर सुख कर लूण करण
सर आदि जिन सुपसावलै । वाचना चारन सुगुरु सांनिध
विजय हरष विलासए । औधर्म वर्द्धन तवन भणतां प्रगट

ग्यान प्रकास ए ॥ २५ ॥ इति (२८) लब्धि स्तवनं ॥

॥ॐ॥ अथ अष्टाईस लब्धि तप विधि: ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (शुभदिन) गुरुके पास २८ लब्धि तप ग्रहण करै ।
अनुक्रमसे २८ उपवास करै । स्तवन सुणें । (जिस दिन) जो
लब्धी को उपवास होय । उसी लब्धी के नामको गुणनो
करै । तप पूर्ण होनेसे । शक्ति माफक उद्यापन करै । यह
तपस्या करनेसे निर्मल बुद्धि उत्पन्न हो । सदा आनंद रहै
इति २८ लब्धि तपविधि: ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ अथ १४ पूर्व स्तवन लिख्यते ॥ ॐ ॥

॥ॐ॥ (ढाल) ॥ॐ॥ बेकर जोड़ी तांम (एदेशी) । जिनवर
औ ब्रधमान । चरम तिर्थंकर । मह ऊठौ प्रणसुं सुंदा ए ॥
शुतधर श्रीगणधार । सूरिशिरोमणी । नमतां नव निधि
संपदाए ॥१॥ चवदै पुरन नाम । सूत्रै जूजूवा । बीर जिणंदे
भाजीयाए ॥ तेहिब सुगुरु पसाय । वरणवसुं इहां । आ
गमसें जिम उपदिस्थाए ॥२॥ पहिला पूर्व उत्पाद १ । दूजो
अग्रायणी २ । वीर्यवाद ३ । तीजो नमुंए ॥ अस्ति नास्ति प्र
वाद ४ । सत्ता जाणौयै । नारगरयण ५ पंचम गिणुंए ॥३॥
छठो सत्यप्रवाद ६ । सत्तम आतम ७ । कर्म प्रवाद अहम
गिणोए ८ ॥ प्रत्याख्यान प्रवाद ९ । नामें नवम । विद्या प्र
वाद दसमो कह्योए १० ॥ ४ ॥ इग्यारम नाम कल्याण
११ । प्राणायु बारमो १२ । क्रिया विलास तेरम भणोए
१३ ॥ विंदुसार इण नाम १४ । चवदै एकह्या । साख थकी
सें संग्रह्याए ॥ ५ ॥ (ढाल २) श्री विमलाचल चिरति

लो (एदेशी) ॥ उत्पादपूर्व सोहामणो । कोटी पद परि
मांण । षट्भाव प्रगटवै ते जिहां । लिपदी भाव विनांण ॥१
सर्वद्रव्य पर्यंत तणो । जीव विशेष प्रमाण । दूजो पूर्व अ
ग्रायणी । ठिन्नुं लख पद जांण ॥२॥ पदलख सत्तर जेहनी ।
संख्या परगट एह । वीर्य प्रवलता जीवनी । भाषी तीजे
तेह ॥ ३ ॥ चौथे पूर्वे जे कयो । अस्ति नास्ति प्रवाद । पद
संख्या साठ लाखनी । सत मंगौ स्याद्वाद ॥४॥ ग्यानप्रवाद
पद पंचमो । सुखे आण्यो जोम । सत्यादिकपण भेदसुं ।
पद संख्या इक कोटि ॥ ५ ॥ सत्वप्रवाद ठडोकजं । भापुं
सत्यस्वरूप । संख्यापद इग कोटिनी । भाषी अगम अनूप
॥६॥ नित्यानित्य पणो इहां । आतमद्रव्य सुभाव । ठवीस
पद कोटि जेहना । सुखे आण्यां भाव ॥ ७ ॥ कर्मप्रवाद
तणो हिवै । प्रगट पणें अधिकार । लाख असी पद जेह
ना । कोटि इग निरधार ॥ ८ ॥ नवमो पूर्व कजं हिवै ।
नामं प्रत्याख्यान । लाख चौरासी जेहवा । पद संख्या
चित आन ॥९॥ अतिसय गुणसंयुत भणौ । साधन साध्य
निदान । विद्या अनुपम सातसै । कोटि दस लख जान ॥१०
कल्याण नाम इग्यारमो । ठवीस कोटि प्रमाण । ज्योतिष
शास्त्र विचारणा । चौवीह देवकल्याण ॥११॥ प्राणायुपद
वारमो । ठप्पन्न लख इग कोटि । प्राण निरोधन जे क्रिया
सालें आण्यो जोम ॥१२॥ व्याधिक्यादिक जे क्रीया । ठं
क्रिया सुविसाल । पद संख्या नव कोटिनी । तेरमी किरि
या विसाल ॥ १३ ॥ लोकसार विंदु चवदमो । नामें अरथ
निहाल । पद संख्या इग कोटिनी । लाख पचवीस संभाल ॥

लोक प्रत्यय देखण भणौ। संख्या गज परिमाण। सोलसहस
 अर तीनसै। उरतयांसी जाण॥१५॥ पूरव संख्या एकही। गु
 णमालाथी देख। आगै वुध जन सोधज्यो। बाकी देसविसे
 स॥३॥ (ढाल३) वीर जिणेसर उपदिसै (एचाल)॥३॥ सुखे
 गुंथै गणधर। अरथे अरिहंत भाषैरे। ते श्रुत ग्यान नसुं
 सदा। पाप तिमर जिमनासैरे॥१॥ (वाणीरे जिनंदनौ) सुण
 ज्यो चितहित आणीरे। तत्व रमणता अनुसरै। संपूरण
 गुण खाणीरे (वा०)॥२॥ विषयकषाय तजौ करौ। ग्यान
 भगत उरधारौरे। विधि संयुत जिन मंदिरै। प्रमुखपास
 जुहारौरे (वा०)॥३॥ तप जप संयम आदरी। औचुत
 ग्यान निधानो रे। सदगुरु चरण नमौ करौ। संवर जोग
 प्रधानोरे (वा०)॥४॥ अक्षत लेई अजला। गुंहली सुंदर
 कौजै रे। नांण दंसण चारिखनौ। दिगली तौन धरौजै रे
 (वा०)॥५॥ चवद पूर्व व्रत इणपरै। सुगुरु संजोगै लेईरे।
 विधिसुं पुस्तक पूजियै। चित अति आदर देईरे॥६॥ (वा०)
 इम तप संपूरण थयां। अजमणो हिव कौजै रे। घरसार
 धनखरचनें। नर भवलाहो लीजैरे (वा०)॥७॥ पृठा परत
 विटंगणा। पूरव नाम प्रमाणो रे। नवकरवालौ कोथलौ
 लेखण ठवणी जाणोरे॥८॥ देहरै देवजुहारने। आरती
 मंगल कौजै रे। सनात पूजा बलि साचवौ। तत्वसुधारस
 पीजैरे॥९॥ (वा०) इण पर तप आराधतां। दुरगति कारण
 ठेदैरे। चवदह रज्जु सिरोमणि। जौव अक्षय गति वेदैरे
 ॥१०॥ (वा०) तप आराधन विषभणौ। आगम वचने जो
 ईरे। भविष्य पिणतुमे आदरो। जसुं भव भ्रमण न होई

रे ॥११॥ (वा०) (कलशः) इमसयल सुख कर गह्व खरतर
तपै रविजिम क्रांतए । सौभाग्य सूरि सुखिंद इण पर
कह्यो पूर्ववृत्तंतए । संवत अठारै वरस ठिन्नूं नयर ओ
बालूचरै । ए तवन भणतां अवण सुणतां सयलमन बंठित
फलै ॥१२॥ इति चवदै पूर्व स्तवनं संपूर्णम् । ॥॥

॥॥ अथ (१४) पूरव तपविधिः ॥॥

॥॥ चवदै पूर्वकी तपस्याको (१४) उपवास करै ।
(जिस दिन) जो पूर्वका उपवास हो । उसी पूर्वको नामसे
(२०००) गुणनो करै । स्तवन सुणें । इस तवनमें १४ पूर्वकी
नाम । और विधि सब लिखी है । उसी मुजव बिबेको
जीव गुरुसे समझके करै । यह तपस्याको करनेसे ज्ञाना
वरणादि कर्मका क्षयोपशम होय । शुभ ज्ञानका उदय
होय । इति १४ पूर्व तपविधिः ॥

॥॥ अथ तिलक तपस्या स्तवन लिख्यते ॥॥

॥॥ (द्रुहा) ॥॥ सासण देवौ सारदा । वांणी सुधारस
वेल । बालक हितभणौ वगसियै । सुवुधि सुरंगौरैल ॥१॥
नवम अंग जिनपूजतां । मनलहि सुभपरिणाम । तप तिलकी
फल पामिये । दवदंतौ गुणधाम ॥२॥ (ढाल ॥॥ वीर
जिणैसर उपदिसै (एदेशौ) ॥॥ कमला जिम कुं ङणपुरै । भुज
बल नरपति भीमोरे । पदमनी पदम सुवासना । श्वेतगज ख
भे नौमोरे (पदम०) ॥१॥ परतख्य फल ए पुन्यना । प्रसवीसु
ता पूरै मासैरे । दववंतौ नाम दीपतो । गुणमणि बुद्धि प्र
कासैरे (प०) ॥२॥ बोसठ कला विचक्षणा । रूप गुणै क

रौ रंभारे । देव गुरु धर्म दीपावती । व्रतधारी दृढ बंभारे
 (प०) ॥३॥ प्रतिमा पूजै श्रीसांतिनौ । देवे दौघौ बिकालो
 रे । मात पिता प्रमोदसुं । स्वयंवर वरमालोरे । (पद्मनी०)
 ॥ ४ ॥ उवजाया धिपथी निषदनो । नल लिखीयो निला
 मै रे । आनन्दसुं पंथ आवतां । पूरव पुन्य उवागै रे
 (प०) ॥ ५ ॥ मज्जमरयणौ तमभरी । मधु रव कुंत इहां
 वनमें रे । मणि भाले तेज दिनमणि । जाग्रत देखी अहो
 मनमै रे (प०) ॥ ६ ॥ ग्यानधारी गुरु कोइ मिलै । पूछोयै
 एह प्रसन्नो रे । कर्मवलै सुनि आवीया । परिसह जीत मद
 न्नोरे (प०) ॥ ७ ॥ पंच जीत पंचपालता । टालता दुसह स
 बलारे । संजम सुध संभालता । उद्यम सिव सुख कमलारे
 (प०) ॥ ८ ॥ (दूहा) ॥ मणि तेजै सुनि तरुठये । रथ
 थकी लीभरतार । देवे तौन प्रदक्षिणा । विधसुं चरण जु
 हार ॥ ९ ॥ देसन सुण पावन यथा । ग्यान सुधारस पाय ।
 को तप परभव तिल कहै । कहियै श्रीसुनिराय ॥ १० ॥
 (ढाल भरयनूप भावसुं ए (एदेशी) ॥ मधुरखरै सुनिवर
 कहैए । नाणी गुरु सुप्रसाय । दौपक सज्ज लोकनाए ॥ कर्म
 सुभासुम परभवै ए । इह भव फल निपजाय । करम गति
 वांकरीए ॥ ११ ॥ उहि नांग भव प्रागनोए । नृप सुणै निर
 मल भाव । समकित साहीयो ए ॥ धर्मवतीको नृपवधु ए ।
 जांख्योहे तत्व प्रस्ताव । साची जिन वाचनाए ॥ १२ ॥ चोख
 प्रमुख तप चूपसूं ए । किरिया सुझ करी एह । भलै चित्त
 भावसुं ए ॥ नवांग पूजै तिलकसुं ए । चाढै जिन चोवीस ।
 रयण कंचण जड्याए ॥ १३ ॥ तिलक २ से पांमियो ए । सम

कित एह सतीस । जनम सफलो गिणें ॥ भगवन तपविधि
भाषीयै ए । नल कहै बोध वरीस । पौहर षट्कायनाए ॥
१४॥ आदिनाथ अरिहंतनाए । षट् उपवास कहीस । बिचौ
वोहारसुं ॥ चोष दोय जिन वीरनाए । अजितादिक बा
वीस । आणा गुरुसिर वहीए ॥ १५ ॥ प्रोषध तीस लीनै
थयाए । पूजन तिलक चढाय । तारक जगदीसनं ए । उ
द्यापन संव भक्तिसुं ॥ जन्म सफल नल राय । सुधैमन
साधोयै ॥ १६ ॥ सुण वांणी समकित ग्रहैए । प्रयप्रणमौ
गुरु वीर । चित्त उमाहीयो ए ॥ इण पर जे भवि आदरै
ए । थायै चरम सरौर । मूल सुख सासतो ए ॥ १७ ॥ ॥
कलशः ॥ ॥ ॥ औसांतिदाता विजगत्ताता भविक ध्याता
सुखकरा । इम सतीस साध्यो तप आराध्यो सुजस बांध्यो
शिव घरां । आगमे आखै सरीय साखै सुगुरु भाषै सुण
यथा । सुब्र ध्यावै भविक भावै विजय विमल जिनवर कथा
॥ १८ ॥ इति तिलक तपस्या स्तवन संपूर्णम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ तिलक तपस्याविधिः ॥ ॥

॥ ॥ शुभ दिन गुरुके पास । तिलक तपस्या ग्रहण
करकै । तीस (३०) उपवास करै । (प्रथम) श्रीकृष्ण देव
स्वामीके (६) ठ उपवास करै (जब)

१ ॥ श्रीकृष्ण देव स्वामी सर्वज्ञाय नमः ।

इस पदको (२०००) गुणनो करै । फेर श्रीमहावीरस्वामी
के (२) दो उपवास करै । (जब)

१ ॥ श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञाय नमः ।

इस पदको (२०००) गुणनो करै । और श्रीअजितनाथ

स्वामींकों आदलेकै (२२) बाईस भगवंतके (२२) उपवास करै

१ ॥ ओअजितनाथस्वामी सर्वज्ञाय नमः ।

इसो अनुक्रमसे बाईस भगवंतको गुणनो करै । (जिस दिन) जो माहाराजकै नाम को उपवास होय । उसी नाम को २००० गुणनो करै । और सब विधि तवनमें लिखी है । उसी सुजब करै । इति तिलक तपस्याविधिः ।

॥ ❀ ॥ अथ सोलीयैको स्तवन लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीर जिनेसर भाषीयोरे लाल । सज्ज व्रतमें सिरा ताज (भवि प्राणीरे) । कषाय गंजन तप आदरो रे लाल । इणयो पातिक जाय (भ०) कोठ वरस तप आदरै रे लाल । क्रोध गमावै फलतास (भ०) । मान करै जे प्राणियारे लाल । ते जगमें न सुहाय (भ०) ॥२॥ व्रतमें माया आदरीरे लाल । स्त्री पणोपायो मल्लिनाथ (भ०) रूप पराव्रत कीया वषारे लाल । आषाढभूति गणिका साय (भ० ३ वौ०) चार कषाय ठै मूलगारे लाल । उत्तम सोलै भेद (भ०) इम भ० २ भमतो थकोरे लाल । जीव पामै वज्र खेद (भ० ४ वौ०) एकासण व्रत जे करै रे लाल । लाख वरस दुख हांणरे (भ०) नीवी व्रत दूजो कछा रे लाल । एधारो जिन वर वांण (भ० ५) आबिलनो फल बज्र कछोरे लाल । उपजै लबधि अपार (भ०) उपवास करतां भावसुं रे लाल । पा में भवनो पाररे (भ०) इम दिन सोलै तप करै रे लाल । पूरण एव्रत थाय (भ०) देव गुरु पूजा करै रे लाल । तिणयो पातिक जाय (भ० ७) ए तप आदरथी करै रे लाल । मन

बंधित फल थाय (भ०) नर सुर रिबि पिण भोगवैरै लाल
निश्चै सुगति जाय (भ० टबी०) । इति कपाय गंजन सोली
यै को स्तवन संपूर्णम् ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ सोलियै तपका विधि लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ क्रोध १ । मान २ । माया ३ । लोभ ४ । (यह ४
कषाय में) । अनंतान बंधियो १ । अप्रत्याख्यानियो २ ।
प्रत्याख्यानियो ३ । संजलणो ४ । (इस माफक) एकीक कषा
यके चार चार भेद करनेसे १६ भेद ऊय (यह) । १६ भेद
कषायको दूर करने को । प्रथम (एकासणो १ । निवौ २ । चां
बिल ३ । उपवास ४ । इसी अनुक्रमसे १६ दिन तप करै
स्तवन सुणें । तप पूर्ण होणेंसे । यथाशक्ति उद्यापन करै ।
इति सोलिया तपविधि: ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ (४५) पेंतालीस आगम तप विधि: ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ शुभ दिन गुरुके पास पेंतालीस आगम तप
ग्रहण करै । २ दूज । ५ पांचम । ११ इग्यारस । (इत्यादि)
ग्यान तिथिके दिन । अनुक्रम से उपवास (वा) एकासणा
करै । जिस दिन जो आगम को तप होय । उसी आगम
को गुणनो करै । सिद्धांत लिखावै । सिद्धांत सुणें । पढ़ने
वालुंको सहाज्य करै । अपने शक्तिमाफक । सब ठिका
णें ज्ञानकी टट्टि करै । (प्रणसुं श्रीगुरुपाय०) इत्यादि
ज्ञानके स्तवन सुणें । ऐसे (४५) दिन तपस्या पूर्ण होने
से । पेंतालीस (४५) आगम की पूजा करावै । संदर पो
सालमें ग्यानका उपगरण चढ़ावै । (इत्यादि) अत्यन्त खुसौ

होके (४५) आगमका आराधन करै । यह तत्पस्या के क
रने से । मूरखपणा दूर होके । शुद्ध आत्म ज्ञानको प्राप्ति
हो ॥ॐ॥ (अब (४५) आगमको नाम लिखते हैं) ॥ॐ॥

॥ॐ॥ प्रथम द्वायारै अङ्गको गुणनो ॥ॐ॥

- १ ॥ श्रीआचाराङ्ग जी सुवाय नमः । ११
- २ ॥ श्रीसुयगद्गाङ्ग जी सुवाय नमः । १२।
- ३ ॥ श्रीठाणाङ्ग जी सुवाय नमः । १३।
- ४ ॥ श्रीसमवायाङ्गजी सुवाय नमः । १४।
- ५ ॥ श्रीभगवती जी सुवाय नमः । १५।
- ६ ॥ श्रीज्ञाताधर्मजी सुवाय नमः । १६।
- ७ ॥ श्रीउपासग दसाजी सुवाय नमः । १७।
- ८ ॥ श्रीअन्तगद्ग दसाजी सुवाय नमः । १८।
- ९ ॥ श्रीअनुत्तरोववाईजी सुवाय नमः । १९।
- १० ॥ श्रीप्रत्रव्याकरण जी सुवाय नमः । १००।
- ११ ॥ श्रीविपाकजी सुवाय नमः । ११।

॥ॐ॥ अथ वारै उपाङ्ग नामः ॥ॐ॥

- १ ॥ श्रीउववाइजी सुवाय नमः । १२।
- २ ॥ श्रीरायपसेणीजी सुवाय नमः । १३।
- ३ ॥ श्रीजीवामिगमजी सुवाय नमः । १४।
- ४ ॥ श्रीपन्नवणाजी सुवाय नमः । १५।
- ५ ॥ श्रीजंबुद्वीप पन्नत्तोजी सुवाय नमः । १६।
- ६ ॥ श्रीचंदपन्नत्तोजी सुवाय नमः । १७।
- ७ ॥ श्रीसूरपन्नत्तोजी सुवाय नमः । १८।

- ८ ॥ श्रीकप्पियाजी सुवाय नमः । १६ ।
 ९ ॥ श्रीकप्पवत्तंसियाजी सुवाय नमः । २० ।
 १० ॥ श्रीपुत्तियाजी सुवाय नमः । २१ ।
 ११ ॥ श्रीपुत्तिलियाजी सुवाय नमः । २२ ।
 १२ ॥ श्रीवत्तोदसाजी सुवाय नमः । २३ ।

॥ॐ॥ अथ ठ छेदको गुणनो ॥ॐ॥

- १ ॥ श्रीव्यवहारठेद सुवाय नमः । २४ ।
 २ ॥ श्रीटहत्कल्पजी सुवाय नमः । २५ ।
 ३ ॥ श्रीदसामुत्तस्संधजी सुवाय नमः । २६ ।
 ४ ॥ श्रीनिशीथजी सुवाय नमः । २७ ।
 ५ ॥ श्रीमहानिशीथजी सुवाय नमः । २८ ।
 ६ ॥ श्रीजीतकल्पजी सुवाय नमः । २९ ।

॥ॐ॥ अथ दस पयन्ना नामः ॥ॐ॥

- १ ॥ श्रीचोसरणपयन्नाजी सुवाय नमः । ३० ।
 २ ॥ श्रीसंघारपयन्नाजी सुवाय नमः । ३१ ।
 ३ ॥ श्रीतंदलपयन्नाजी सुवाय नमः । ३२ ।
 ४ ॥ श्रीचंदाविज्जिया सुवाय नमः । ३३ ।
 ५ ॥ श्रीगणविज्जिया सुवाय नमः । ३४ ।
 ६ ॥ श्रीदेवविज्जिया सुवाय नमः । ३५ ।
 ७ ॥ श्रीवीरपुवोजी सुवाय नमः । ३६ ।
 ८ ॥ श्रीगहाचारजी सुवाय नमः । ३७ ।
 ९ ॥ श्रीजोतिक्करंजी सुवाय नमः । ३८ ।
 १० ॥ श्रीमहापक्खलाणजी सुवाय नमः । ३९ ।

५०८ । मूलसुख नामः (घो) ११ गणधर तपस्याविधिः ।

॥ॐ॥ मूलसुखजी का नामको गुणनो ॥ॐ॥

- १ ॥ श्रीआवस्यकजी सुखाय नमः । ४० ।
- २ ॥ श्रीउत्तराध्ययन जी सुखाय नमः । ४१ ।
- ३ ॥ श्रीउषनिर्वृत्तिजी सुखाय नमः । ४२ ।
- ४ ॥ श्रीदसवीकालकजी सुखाय नमः । ४३ ।
- १ ॥ श्रीअनुयोगद्वारजी सुखाय नमः । ४४ ।
- २ ॥ श्रीनंदीसुखजी सुखाय नमः । ४५ ।

॥ इति ४५ सुखांका नाम (तथा) गुणनो संपूर्णम् ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ ११ गणधर तपस्या विधि लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ शुभ दिन शुक्र को पास (११) गणधर तप ग्रहण करै । (११) दिन उपवास (वा) एकासया करै । (जिस दिन) जो गणधर माहाराजको तप होय । उसी नामको (२०००) गुणनो करै ॥ॐ॥ अथ (११) गणधरों का नाम लिखते हैं ॥

- १ ॥ श्रीइन्द्रभूति गणधराय नमः ।
- २ ॥ श्रीअग्निभूति गणधराय नमः ।
- ३ ॥ श्रीवायुभूति गणधराय नमः ।
- ४ ॥ श्रीव्यक्तभूति गणधराय नमः ।
- ५ ॥ श्रीसुधर्मास्त्रामौ गणधराय नमः ।
- ६ ॥ श्रीमंजित खामौ गणधराय नमः ।
- ७ ॥ श्रीमौर्विपुत्रजी गणधराय नमः ।
- ८ ॥ श्रीअकंपितजी गणधराय नमः ।
- ९ ॥ श्रीअचलजी गणधराय नमः ।
- १० ॥ श्रीसेतार्द्रजी गणधराय नमः ।

११ ॥ श्रीप्रभवजी गणधराय नमः ।

॥ यह (११) गणधर । भगवंत श्रीमहावीर खा
मी के पास अर्थ शुणकै । सब सुखको रचना करनेवाले
भए । (इसी से) सब भव्यजीव । परम मङ्गल जानकै । यह
तपस्या करै । शुद्ध भविसे गणधरपद आराधन करै ।
गोतमरास सुणै । पूर्ण होनेसे । गणधर माहाराजकौ
पूजा करै । आचार्योदिककी भक्ति करै । (यथाशक्ति) पर
मान्न भोजनसे साहमी बढल करै ॥ ॐ ॥ इति एकादश
गणधर तपविधिः ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ नवकार तपविधि लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ शुभदिन गुरुक पास नवकार तप ग्रहण करै ।
जिस पदका जितना हरफ होय । इतनाइ उपवास करै
उसी पदको (२०००) गुणनो करै । (सो लिखते है) ॥

१ ॥ गमो अरिहंताणं । उपवास । ७ ।

२ ॥ गमो सिद्धाणं । उपवास । ५ ।

३ ॥ गमो आयरियाणं । उपवास । ७ ।

४ ॥ गमो अवज्जायाणं । उपवास । ७ ।

५ ॥ गमो लोए सब्बसाह्गं । उपवास । ६ ।

६ ॥ एसो पंच गमुक्कागो । उपवास । ८ ।

७ ॥ सब्बपावप्पणामणो । उपवास । ८ ।

८ ॥ मङ्गलाणंच सुवेमिं । उपवास । ८ ।

९ ॥ पदमंहवइ मङ्गलं । उपवास । ६ ।

॥ ॐ ॥ ऐसे नवकार संलका । ६८ उपवास करै । (किं

कप्पत्तर रे अथाण०) इत्यादि नवकार मंत्रका फलगर्भित स्तवन सुणे (सो) पूर्वे लिख्यो है। तप पूर्ण होनेसे। यथाशक्ति नवपदको उल्लव करै। (यह) नवकार मंत्र १४ पूर्वको सार भूत है। जो मव्यजीव शुद्धभावसे सेवन करेगे (सो) अनेक सुखको प्राप्त होंगे। इति नवकार तपविधि संपूर्ण ॥

॥ॐ॥ अथ सब तपस्या प्रथम गुरुके पास ग्रहण करै (सो) विधि लिख्यते ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (प्रथम) पू साधिया करै। (नमंत सामंत०) यह गाथा पठकै। शक्ति माफक ग्यान पूजा करै। इरियावही पट्टिकमें। एकलोगसको काउसग्न करै। (पारकै) प्रगट लोगस कहै। नीचा बैसकै। सुहपत्ती पट्टलेहै। दो वांङणा देवै। स्थापनाजीकों खमासमण देई (भगवन्) असुक तप गहणत्वं चेइयं वंदावेह। (इसो कहकै) चैत्य वंदन करै। णमोत्थुणं (इत्यादि)। अरिहंत चेइयाणं० (अनत्थ०) कहकै (४) थुइ कहै। चौथी गाथा कहकै। नीचा बैसै। णमोत्थुणं कहै। (जभा होकै) (श्रीशान्तिनाथ स्वामी आराधनार्थ करेमि काउसग्न)। अनत्थु कहकै १ लोगसको काउसग्न करै (पारकै) नमोऽर्हत् सिद्धा। कहकै ॥ॐ॥ श्रीमते शान्तिनाथाय। नमः शान्तिविधायिने। त्रैलोक्या मराधौस। सुकुटाभर्चितां ऊये ॥ १ ॥ॐ॥ यह थुइ कहै (शान्तिदेवता आराधनार्थ करेमि काउसग्न) अनत्थु० कहै १ नवकारनो काउसग्न करै। नमोऽर्हत् सिद्धा कहकै ॥ॐ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्। शान्तिं दिशतु मे गुरुः।

शांतिरेव सदा तेषां । तेषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ १ ॥ यह थुई कहै । पीठे श्रुतदेवता । जेव देवता । भुवन देवताको कालसग्न अनुक्रम सें करै । एक एक नवकारनो कालसग्न करकै । अपणीइ थुई कहै । पीठे (शासन देवताको कालसग्न १ नवकारको करै ॥ १ ॥ या पाति शासन जैन । सदा प्रत्यह नाशनौ । साभिप्रेतसमृद्धार्थ । भूयाद्वासनदेवता ॥ १ ॥ यह थुई कहकै (समस्त वेद्यावृत्तिकर आराधनार्थ करेमि कालसग्न) अनत्य० एक नवकारनो कालसग्न करै । (पारकै) श्रीशक्र प्रमुखा यक्षाः । लिनशासन संस्थिताः । देवान् देव्यस्तदन्येपि । संघरक्षन्तुपायतः ॥ १ ॥ ॥ यह थुई कहकै । नीचा वैसै । एमोत्युणं कहकै । जयवीर राय ताई चैत्यवंदन करै । खमासमण देकै । भगवन् (अमुक तप गहण्यं करेमि कालसग्न) एक लोगसको कालसग्न करै (पारकै) लोगस कहै । खमासमण देकै । ३ नवकार गुरे । फेर खमासमण देकै (इच्छकार भगवन् (अमुक तप गहण्यं दंष्ट्रक उचरावो जी) (गुरु कहै उचरावेमो) । ऐसा कहै ॥ ॥ अहहं भंते । तुम्हाणं समौवे । अमुकतवं उवसंपज्जत्ताणं विहरामि । (तंजहा) दब्बड । खित्तड । कालड । भावड । दब्बडणं अमुकतवं । खित्तडणं इत्थवा अन्नत्थवा । कालडणं जावपरिमाणं । भावडणं जावगहेणं नगहिज्जामि । ठलेणं न ठलिज्जामि । जाव सन्निवाएणं न भविज्जामि । जाव अणेणवा । केणइ रोगायंकादि परिणामवसेण । एसो मे परिणामो न परिवज्जइ । तावसे एस तवो । (अन्नत्थ) रायाभियोगेणं । वलाभियोगेणं । गणाभि

योगेण । देवाभियोगेण । गुरुनिग्गहेण । वित्तोक्तारिणं ।
 अन्नत्यणा भोगेण । सहस्रागारेण । महत्तरागारेण । सब
 समाहिवत्तियागारेण वोसरामि ॥ जो तप ग्रहण करै
 उसी तपका नाम लेकै । गुरुकी पास ३ वेर यह पाठ सुणै
 गुरु न हो (तो) थापनाचार्यजी समचै । तीन वेर यह पाठ
 पढै ॥ (पीठै गुरु कहै) हत्येणं । सुत्तेणं । अत्येणं । तदुभएणं
 सभ्मं धारिणीयं । चिरं पालणीयं । गुरुगुणेहिं बुद्धाहि
 नित्यारगपारगाहोहि । (ऐसा गुरु कहै) पीठै खमासमण
 देके (गुरु सुखै) पञ्चक्खाण करै । (अथवा) गुरु न हो (तो)
 आपसुखै करै । इति सब तपस्या ग्रहणविधिः संपूर्णम् ॥

॥ॐ॥ अथ सब तप पारण विधि लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ प्रथम ग्यान पूजा करके । इरियावहो पट्टिकर्मे ।
 (अमुक तप पारिवा० सुहृपत्ती पट्टिलैहै) २ वांदणा देव ।
 इद्धाकारेण संदिसह भगवन् तुभे अन्नं अमुक तर पारा
 वेह (गुरु कहै पारावेमो) इद्धामि खमासमणो० । इद्धाका
 रेण संदिसह भगवन् । अमुक तप निक्खवणत्थं काउसग्गं
 करावेह । (गुरु कहै करावेमो) अमुक तप पारणार्थं करेमि
 काउसग्गं । अन्नत्य कहकै । १ नवकारनो कावसग्ग करै
 स्तुति गाथा कहै । पीठै णमात्युणं कहै । (वैसकै) भगवन्
 अमुक तप करतां । अविधि आसातनार्ये करी । जो दूषण
 लागो होय । सो मनवचन कायायें करी मिद्धामि दुक्कं ।
 और ग्यानं भक्ति द्रव्यसे भावसे किया (सो) प्रमाण फलदाय
 कहो ज्यो । (गुरु कहै नित्यारगपारगाहोह) । पीठै पञ्च

क्याण करै (असुक तप आलोयण निमित्तं करेसि काउ
सगं) अन्त्य कहै । ४ लोगसको काउसग्न करै । प्रगट
लोगस कहै । पीठे उपगरण पाव सत्तपानादिक से साधु
भक्ति करै । अपने शक्ति साफक । जैन विद्याध्यास कराये
वाले । विद्यागुरुकी भक्ति करै । साहसो वल्लभ करै । पहरा
वणो करै । पीठे जाचकाको दान सम्मान करै । इति सब
तपस्या पारणैका विधी संपूरणम् ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ सूतक विचार लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पुत्र जन्म होणैसे १० दिन सूतक । पुत्री जन्म
दिन १२ सूतक । (और) जो स्त्रीको पुत्र होय । उस स्त्रीको
एक मास को सूतक । पुत्र होते मरण पामे (तो) दिन १
सूतक । परदेसे लव्य-होइ (तो) दिन १ सूतक । गाय
भेस । बोझी । सांठ । घर सांहे व्यावै (तो) दिन १ सूतक ।
मरण जुवां कलेवर घर बाहर लेजाय । जहां तक सूतक ।
दास दासी अपनी नेष्टायें रहते । पुत्र पुत्रादिकका जन्म
मरण हो (तो) दिन ३ सूतक । (और) जितना महिलाको
गर्भ गिरै । तितना दिन सूतक । (अब) कोईको जन्म मरणका
सूतक होणैसे १२ दिन देवपूजा न करै । (जिसमे) सूतक
को सूतकमे । घरका मूलकाधिया १२ दिन देवपूजा न करै ।
उर घरका तीन दिन देव पूजा न करै । (और) सूतक ने
ठूवा हो (तो) २४ पहर प्रतिक्षमण न करै । (जो) सदाका
अखंड नियम हो । (तो) समता भाव रखके संवर प्रणाम
रहै । पर मुखसे नवकार मन्त्रकावी उच्चारण करै नहीं ।

५१४ । सूतकविचार (जो) दिनप्रति १४ नियमका विचार ।

स्थापना जो कौ हाथ लगावै नहीं । और जो सूतक को
ठूँवा न हो (तो) आठ पत्तर प्रतिक्रमण न करै । भेसकै
जब बच्चा होय । तब १५ दिन पीठै दूध पीणो कल्पै । गा
यकै बच्चा होय (तो) १७ दिन पीठै दूध पीणो कल्पै ।
बकरीको दूध दिन ८ पीठै पीणो कल्प । (इत्यादि) संक्षेप
सूतकका विचार इहाँ लिखा है । विशेष विचार शास्त्रां
तरसें जानना ॥३॥ इति सूतक विचार संपूर्णम् ॥३॥

॥३॥ अथ दिनप्रति आवक चवद्वै नियमका प्रमाण
करै (सो) विचार लि० ॥३॥

॥३॥ सचित्त १ । द्रव्य २ । विगई ३ ॥ पाणहि ४ ।
तंबोल ५ । वस्त्र ६ । कुसुमेसु ७ ॥ बाहण ८ । सयण ९ ।
विलेखण १० ॥ बंध ११ । दिशि १२ । ज्ञाण १३ । भत्तेसु १४ ।
(अर्थः) ॥३॥ आवक नितप्रति नियम संभालै । दिनमें जो
वस्तु अपने अंग खाते लगै । उसीका प्रमाण रक्खै । उप
रांत त्याग करै । तहां प्रथम (सचित्त वस्तु को परिमाण
करै) ॥३॥ मट्टी सर्व जाति । पाणो सर्व जाति । जल अग्नि
वायु । वनस्पतीका छेदन भेदन । तरकारी सर्वजाति । फल
सर्वजाति । परवल । तोरी । केला । खरबूजा । नींबू । आंव ।
नारंगी । जामूणि । कमल गड्डिका ठत्ता (इत्यादि) धारणा
प्रमाणै सचित्त परिमाण करै ॥ १ ॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ (दूसरा द्रव्य परिमाण) ॥३॥ तहां घाह वस्तु को
शली । (तथा) अपणो आंगुली विनां । जो वस्तु मुखमें
दीजै । सो सब द्रव्यकी गिणती में आवै । नामांतर । खा

दांतर । खरूपान्तर । परिणामान्तर । द्रव्यान्तर होणेंसे द्रव्यां
तरं होइ । (यथा) गज्जं एक द्रव्य । तिसकी पतली रोटी ।
फोणा रोटी । वेढवा रोटी । बाटो । यह सब जूदा द्रव्य
कहियै । (इस प्रकारै) सब द्रव्य खाणेंमें आवै । भातं
दालि । रोटी । मांझियो । पलेव । तरकारी सब जाति ।
पापन । खोचीया । लड्डू सब जाति । फोणी । घेवर । हेस
मी । खाजा । (इत्यादि ससस्त द्रव्य परिमाण करै) । इहाँ
उत्कृष्ट द्रव्यको नाम ले रक्खै (तो) एकही द्रव्य कहियै ।
(जैसे) मेवैकी खोचनीका नाम लेकै रक्खै (तो) । अनेक
द्रव्य निःस्पन्द है (तोभी) एक द्रव्य कहियै ॥ ३॥ इति
द्रव्य प्रमाण दुसरा नियमः ॥ ३॥ ॥ ३॥ ॥ ३॥

॥ ३॥ (तीसरा विगय परिमाण नियमः) ॥ ३॥ (तहां)
दश विगयमें- चार महाविगयका तो त्याग होता है ।
(और ६ विगय) वृत् १ । तेल २ । मीठा ३ । दूध ४ । दही
५ । कड़ाह विगय ६ । यह ७ विगय धारणा प्रमाण रखै ।
इति विगय नियमः ३ ॥ ३॥ ॥ ३॥ ॥ ३॥

॥ ३॥ (अथ चौथा पांदवाणनियमः) ॥ ३॥ तहां । जूती ।
खंजाऊ । मोजा । अण्णा । इतना विराणा । ऐसे दिन प्रते
धारणाप्रमाण मोफलारक्खै ॥ ३॥ इति पाण्हि नियमः ।

॥ ३॥ (पांचमा तंबोल नियम मध्ये) ॥ ३॥ पान (तथा)
बीजा । सुपारी । लवंग । इलायची । ठोट्टी बन्नी । जायफल ।
जावंलो प्रमुख सब खादिम वस्तु । किरियाणा प्रमुख सब
जात धारणा प्रमाण रक्खै ॥ इति तंबोल नियमः ५ ॥ ३॥

॥ ३॥ (ठट्टा वस्तु नियम मध्ये) ॥ ३॥ पोसाख २ । तथा ४ ।

ठूटा वस्त्र ५ । तथा ७ । मोकला रखवै । पोसाख १ मध्ये
पवनी १ । जामो १ । कमरबंधो १ । धोतौ १ । इकपट्टो उत
रासण १ । यह पांच वस्त्रकी एक पोसाख कहियै । अैसे
नही कर सकै (तो) ४० तथा ५० कपड़ा दिन मध्ये मोक
ला । पराया वस्त्र भूल चूकमे आवै (तो) जयणा ॥ ३॥
इति वस्त्र नियमः ६ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (अथ सातमा फूल नियमः) ॥ ॥ तिहां गुलाब ।
चंपेली । बेला । केवड़ा । कैतकी । कुंद । मचकुंद । सेवती ।
हजारा । कमल (इत्यादि) सब फूलका धारणा प्रमाणे
परिमाण करै ॥ ॥ इति फूल नियमः ७ । ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (आठमा वाहन नियमः) ॥ ॥ तिहां रथ । गादी ।
घुड़वहिल । खटसल । कोच । पालकी । घोड़ा । हाथी । चो
पाला । खाना (इत्यादिक) सब थल वाहन जाति ॥ मोर
पंखी । बतक । घुड़दोढ़ । लचकार । मगर । पनसोई । पल
वार । बजरा । (इत्यादि) सब नावजाति । सर्व तरता ।
फिरता । चरता । यह तीन प्रकारके वाहन धारणा
प्रमाणे राखै ॥ ॥ इति वाहन नियम ८ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (अथ शय्या नियमः) ॥ ॥ तिहां पिलंग । खाट ।
तखत । चौकी । पट्टा गद्दी । कुरसी । वनात । पट्टसुजनी ।
सेलुंजी । डुलौचा । चांदखी । सीतल पट्टी । सफ । चटाई
सबजाति । दरखतकी ठालका चमड़ाका कांवला । सुखमल ।
कारचोवी (इत्यादि) धारणां प्रमाणे शय्या प्रमाण करै ।
॥ ॥ इति शय्या नियमः ९ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (अथ दशमा विलेपन नियमः) ॥ ॥ तिहां । सरसों

का । राईका । आटैका । तेल । फुलेल । सब जातिका ।
केसर । चंदन । कपूर । कस्तूरी । रोल्ली (इत्यादि) सरीर
सुख वास्ते । (तथा) रोगादिकारणें उषधादिकका विलेपन
फोटां ऊपरि मलम प्रमुख । आंखिमें अंजन (इत्यादि)
अंगोपांगमें लगाणा (सो) विलेपन धारणा प्रमाणें परि
माण करै ॥ॐ॥ इति विलेपन नियमः १० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (अथ ब्रह्मचर्यनियमः) ॥ॐ॥ तिहां रात्रिकों (तथा)
दिनकों सुईनोरैके दृष्टांत भोगादिक का प्रमाण करै ।
स्वप्नकी मन वचनकी जयणा ॥ॐ॥ इति ब्रह्मचर्यनियमः ॥११॥

॥ॐ॥ (अथ दिशि नियमः) ॥ॐ॥ तिहां । पूरव १ । पश्चिम
२ । उत्तर ३ । दक्षिण ४ । अग्निकूण ५ । नैऋतकूण ६ ।
वायव्यकूण ७ । ईशानकूण ८ । अधोदिशि ९ । ऊर्ध्वदिशि
१० । यह दश दिशिकों अपने जाणैका प्रमाण करै । चिट्ठी
लिखणी । आदमी भेजणा । देशांतरकी चीठी वाचणी ।
तिसकी जयणा ॥ॐ॥ इति दिशि नियमः १२ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (अथ तेरमा स्नान नियमः) ॥ॐ॥ तिहां । आज
दिन मध्ये स्नान २ । तथा ४ । वेर सोकला । परंतु पाणी
का तोल रखै (तथा) ब्रह्मा प्रमुखका प्रमाण रखै । स्नान
एक मध्ये इतनो पाणी खरच करुं । अधिक नहौ डोलुं ।
॥ॐ॥ इति स्नाननियमः १३ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ॐ॥ (अथ चौदसा भात नियमः) ॥ॐ॥ दिनमध्ये भात
सेर २ तथा ४ । दो वेर (तथा) चारवेर खाऊं । उपरांत
दुविहार । (तथा) चौविहार धारणा प्रमाणै रखै (तथा)
दिनमध्ये जल पीणै में आवै । तिसका प्रमाण रखै ।

तोलसें तथा मापसें ॥३॥ इति चौदह नियम भाषा ॥१४॥
समाप्तम् ॥३॥ ॥३॥ ॥ ॥

॥३॥ अथ द्वादश व्रतग्रहण करण विधि लि० ॥३॥

॥३॥ प्रथम जिनभवन (अथवा) जिण प्रतिमा आगै ।
शुद्ध सपेद वस्त्र पहिरकै । चंदन केसरको तिलक करै ।
चावल चाठै । पीठै । अलं तंदुल मुड्डि ३ थाल मध्ये रखै
तिन ऊपर नालेर रोकनाणो धरै । तीन प्रदक्षिणा देकै ।
इरियावहौ पद्मिकमै । (इच्छाकार०) सम्यक्त सामाई आरो
हणार्थं चेइयाइ वंदावेह (गुरु कहै वंदावेमो) चैत्यवंदन
करै । वाम पासै चावलांको साथीयो करै । औफल धरै ।
पीठै गुरु वर्द्धमान विद्या अभिमंतत आवक मस्तकै वास
क्षेप करै । वर्द्धमान श्रुतीसें देववंदन करावै । पीठै सतरै
यूइमे नवकार १ एकको काउसग्न करै । पीठै शासन देवी
निमत्ते लोगस ४ काउसग्न करै । (पारकै) प्रगट लोगस
कहै । पीठै नमस्कार ३ गुणकै । सकस्तव कहै । नमोदत्त
सिद्धा० कहकै । बज्रो स्तवन कहै । पीठै जयवीरराय क
है ॥३॥ इति नंदी विधिः ॥३॥ पीठै खमासमण देई ।
श्रुतसामायक । सम्यक्त सामायक । आराहणार्थं काउसग्न
करावेह (गुरु कहै करावेमो) पीठै सम्यक्त सामाई आरो
हणार्थं करैमि काउसग्न । चार ४ लोगसको काउसग्न
करै (पारकै) प्रगट लोगस कहै । पीठै ३ वेर नवकार गुण
कै गुरुकै पास ३ वेर सम्यक्त दंनक उच्चरै । गुरु पाठ बोलै
उसी की मनमे धारणा रखै (सो) लिखते हैं ॥३॥

॥ॐ॥ (सुखं) (अहन्नं भंते) तुम्हाणं समौवे मिष्ठत्ताउं पन्ति
 वमामि । सम्भत्तं उवसंपज्जामि । नोमेकप्पइ । अज्जप्पभिइ
 अन्नतोत्थिएवा । अन्नतोत्थिदेवयाणिवा । अन्नतोत्थि परिग्ग
 हिय अरिहंतचेइयाणिवा । वंदित्तएवा । नमंसित्तएवा । पु
 विं अणालित्तएणं आलवित्तएवा (तेसिं) असणंवा । पाणंवा ।
 खाइमंवा । साइमंवा । दाउंवा । अणप्पाउंवा । तेसिं गं
 धमस्साइं पेसिउंवा । (नन्नत्थ) रायाभियोगेणं । गणाभियो
 गेणं । बलाभियोगेणं । देवाभियोगेणं । गुरुनिग्गहेणं । वि
 त्ती क्तंतारेणं । तंचउविहं (तंचहा) दब्बउ । खित्तउ । का
 लउ । भावउ । तत्थ (दब्बउ) दंसणदब्बाइं अहिगिच्च ।
 (खित्तउ) जाव भरह मविज्जमखंते (कालउ) जावज्जीवाए ।
 (भावउ) जाव ठलेणं न ठलिज्जामि । जाव सन्निवाएणं नभ
 विज्जामि । जाव केणइउम्माइ वसेणं । एसोदंसण पालण प
 रिणामो नपरिवद्दइ । तावमे एसौ दंसणाभिग्गहो । अन्न
 स्थणा भोगेणं । सहसागारेणं । महत्तरागारेणं । सब्ब
 समाहिंवित्ति आगारेणं । वोसिरइ ॥ॐ॥ पौठे उ वीं श्रीं
 अहं नमः ॥ॐ॥ ऐसे अक्षर श्रीगुरुकै पास हाथमे लि
 खाकै । जिनप्रतिमा कौ वासत्तेप चढावै । नवकार पढतो
 थको ३ प्रदक्षिणा देकै (देव गुरुप्रते वंदै) पौठे श्रुत सा
 मायिक धिरो करणार्थे । सत्तावीस उत्सासप्रमाणे । एक
 लोगसको काउसग्न करै । एक लोगस कहकौ पारै ।
 पौठे सम्यक्तरूपी कल्पटत्त पायकै । अति आनन्द से ऐसा
 अभिग्रहं बचन बोलै ॥ॐ॥ अरिहंतो महदेवो । जावज्जीवं
 सुसाज्जणो गुरुणो । जिन पन्नत्तंतत्तं । इय सम्भत्तं मए ग

हियं ॥ १ ॥ पौठे गुरु धर्मदेशना देवै । मिथ्यात्व वरजै ।
 नित्य चैत्यवंदन इतनी वेरकरुंगा । इतना नवकार नित्य
 गुणुंगा । फल केसरादि वर्षप्रते इतना चढावुंगा । ग्यान
 दर्शन चारित्रको भक्ति अर्थे इतनो द्रव्य खरचुंगा । सील
 व्रत इतनो पर्व तिथि पालुंगा । नित्य प्रचक्खणिं इस माफक
 करुंगा । दिनकों नवकारस्यादि व्रत (तथा) रात्रीकों चउ
 विहार । त्रिविहार । दुविहार । प्रसुख । और । बावीस
 अभक्ष । बत्तीस अनंतकाय । विदल प्रसुख सब ठोडुंगा ।
 (इत्यादि) अपनो धारणा माफक सबवस्तुका प्रमाण । गुरु
 के सन्मुख करै । बारै व्रतका टीप सुणै । जिसमें लिया ऊ
 वा व्रतकों अतौचार न लगै ऐसा उपियोग सदा रखै ॥ ३ ॥
 इति सम्यक्तारोपण विधिः ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ अथ प्राणातिपातव्रत दंष्टक लि० (१) ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ (अहन्नं भंते । तुम्हाणं समीवे । थूलग पाणाइ
 वायं संकप्पिउ निरवराहं प्रचक्खामि । जावज्जीवाए । एग
 विहं । एगविहेणं (अथवा) दुविहं । त्रिविहेणं । मण्येणं ।
 वायाए । काएणं न करेमि । न कारवेमि । तस्स भंते । पणि
 क्काममि । निंदामि । गरिहामि । अप्पाणं बोसरामि ॥ ३ ॥
 यह पहला व्रतका दंष्टक वार ३ उचरावै ॥ १ ॥

॥ ३ ॥ (अहन्नं भंते । तुम्हाणं समीवे । थूलगं सुसाइ
 वायं । जीहाल्लेयाइहेउअं । कन्नालीयं । गोवालीयं । भूमा
 लीयं । थापणमोसा । कूटसाखीयं । पंचविहं प्रचक्खामि ।
 दक्खिन्नाइ अविसए । दब्बउ । खित्तउ । कालउ । भावउ ।

दब्बउणं सुसावायं । खित्तउणं इत्थवा अणत्थवा । कालउणं
जावज्जीवाए । भावउणं जावगहेणं न गहिज्जामि । जाव
ठलेणं न ठलिज्जामि । अन्नेण केणवि रोगाइयं । एसो परि
णामो न परिवद्दइ । ताव अभिग्गह । दुविहं । तिविहेणं ।
अन्नत्थणा भोगेणं । सहसागारेणं । महत्तरागारेणं । सब्ब
समाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ २ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (अहन्नं भंते तुम्हाणं समीवे । अदिन्नादाणं । खत्त
खणणाइयं । चोरंकारकरं । रायनिग्गहकारयं । सचित्ता
चित्तवत्युविसयं पच्चक्खामि । दब्बउ । खित्तउ । कालउ । भा
वउ ॥ दब्बउणं अदिन्नादाणं । खित्तउणं इत्थवा अणत्थवा ।
कालउणं जावज्जीवं । भावउणं जावगहेणं न गहिज्जामि ।
जावठलेणं न ठलिज्जामि । अण्णेण केणवि रोगाइयं । एसो
परिणामो न परिवद्दइ । ताव अभिग्गह । दुविहं । तिवि
हेणं । अन्नत्थ० सहसा० महत्त० सब्ब० वोसिरइ ॥ ३ ॥

॥ ॥ (अहन्नं भंते तुम्हाणं समीवे । उदारिय वैक्रिय
भेयं । धूलमेज्जणं पच्चक्खामि । अहागहियभंगएणं । दिवं
तिरित्थं । माणसियं । एगविहं । एगविहेणं । पच्चक्खामि ।
दब्बउ । खित्तउ । कालउ । भावउ ॥ दब्बउणं मेज्जणं । खित्त
उणं इत्थवा अणत्थवा । कालउणं जावज्जीवाए । भावउणं ।
जावगहेणं न गहिज्जामि० । अन्न० सह० मह० । सब्ब० ।
वोसिरइ ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (अहन्नं भंते तुम्हाणं समीवे परिग्गहं पणुच्च ।
अपरिभियपरिग्गहं पच्चक्खामि । धणधन्नाइ नवविहवत्यु
विसयं । इहापरिमाणं उवसंपज्जामि । अहागहियभंगए

णं । (तंजहा) दव्वं । खित्तं । कालं । भावं । दव्वं ।
नवविहपरिग्गहं । खित्तं इत्यवा अन्नत्यवा । कालं
जावज्जीवं । भावं जावगहेणं । नगहिज्जामि० । अन्न०
सह० । मह० । सव्व० । वोसिरइ ॥५॥ ॥३॥

॥३॥ (अहन्नं भंते तुम्हाणं समीवे । दिशिपरिमाणं
पञ्चखामि । (तंजहा) दव्वं । खित्तं । कालं । भावं ।
दव्वं । दिशिपरिमाणं । खित्तं धारणा प्रमाणं । का
लं जावज्जीवाए । भावं जावगहेणं न गहिज्जामि
जाव ठले० तावअभिग्गह । अन्न० सह० मह० । सव्व० ।
वोसिरइ ॥ ६ ॥ ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ (अहन्नं भंते तुम्हाणं समीवे । भोगोवभोगये (भो
यणं) अनंतकाय वज्जवीया राइभोयणाइं परिहरामि ।
(कम्मओणं) पन्नरसकम्मादाणाइं । इंगालकम्माइयाइं । वज्ज
सावज्जाइं खरकम्माइयाइं । रायाभियोगं च परिहरामि ।
(तंजहा) दव्वं । खित्तं । कालं । भावं ॥ दव्वं भो
गोवभोगवयं । खित्तं इत्यवा अन्नत्यवा । कालं जा
वज्जीवाए । भावं जावगहेणं नगहिज्जामि० । अन्न०
सह० । सव्व० । मह० । वोसिरइ ॥७॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ (अहन्नं भंते तुम्हाणं समीवे । अन्नत्यदं पञ्च
क्खामि । अवज्जणा । पापोपदेश । हिंसोपकरणदाणं प्रमा
दचरितं । चउव्विहं अन्नत्यदं । जहा सत्तीए परिहरामि
(तंजहा) दव्वं । खित्तं । कालं । भावं ॥ दव्वं अ
न्नत्यदं । खित्तं इत्यवा अन्नत्यवा । कालं जावज्जी
वाए । भावं जावगहेणं नगहि० । अन्न० सह० मह० ।

सव० । बोसिरइ ॥ ८ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (अहन्तं भन्ते) तुङ्गाणं समीवे । सामादयं । पो
सहोववासं । देसावगासियं । अतिथिसंविभागवयं । जहा
सत्तीए पद्विज्जामि । इच्चयं सम्भत्तमूलं । पंचाणुवयं ।
सत्तिसिकलावयं । दुवालसविहं सावगघम्भं उवसंपज्जत्ताणं
विहरामि । अन्नत्थणाभोगेणं । सहसागारिणं । महत्तरा
गारिणं । सब्बसमाह्वित्तियागारिणं । बोसिरइ । ॥ ॐ ॥ षट्
साख । ठ ठंती । आर आगार सहित पालुं । ६ । १० ११
१२ ॥ इति यावकको संक्षेप बारैयत उचरावणविधिः ।

॥ ॐ ॥ अथ सुनिमालका लिख्यते ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ऋषभ प्रमुख जिणपाय युग प्रणमुं । सिवसुख
दायक मन उल्लास । पुंद्गरीक औ गोतम आदिक । गण
धरगुरु मन कमल विकास ॥ १ ॥ (प्रहसम सूधासाधु नमुं
नित । भावे श्रमण सुगुरु भगवंत । नाम ग्रहण कर पाप
प्रखालुं । परमानंद सुमति विकसंत ॥ २ ॥ (प्र०) भरथ महा
मुनि प्रथम चक्रोसर । बाहुबल उपसम भंजार । सूर्यसा
दिक आठमुनीसर । पांथो विमलाचल भक्क पार ॥ ३ ॥
(प्र०) रिषभ वंस जै अलुक्रम ऊवा । सुनिवर कोडी लाख
असंख । श्रीसेलुं जै सिवपुर सीधा । कल मल कालक सुं
को कंख ॥ ४ ॥ (प्र०) सगर प्रमुख निरुपम नव चक्रावर्त्ति
साधु महाबल संथम सौंह । अचलादिक बलदेव अष्टमुनि
राम रिपी सर नवम अबीह ॥ ५ ॥ (प्र०) श्रीपतिवुद्धि प्रमुह
ठह सुंदर । श्रीमल्लिनाथ पूरवभव मित । पङ्कता परम

उत्तोर सिवपुर । पाली श्रीजिन आण पवित ॥६॥ (प्र०)
 वंदुं विश्वकुमार लवधि निधि । खंदग सूरनासीस सै पंच ।
 कार्तिक सेठ सुसाधु कीर्त्तधर । अमण सुकोसल व्रतनिर
 वंच ॥७॥ (प्र०) श्रियदुवंस अन्नोम सुसागर । प्रमुख आठ
 अणगार प्रधान । औरहनेमि नेमि जिन बंधव । निरमल
 गुण गण रयण निधान ॥८॥ (प्र०) चाली मयालीनें उव
 याली । पुरस सेण वारसेण प्रयुन्न । संब अने अनिरुद्ध रिषी
 सर । सत्यनेमि दृढनेमि सुधन्न ॥९॥ (प्र०) कुमर अनीकज
 सादिक पट्सुनि । गुणगिरुवो श्री गजमुकमाल । दंडण
 रिष श्री यावच्चा सुत । सहस साधु संजम सुहापाल ॥१०॥
 (प्र०) (राग घन्याथी) ॥ सहस अमणसुं सुक संयम धरो ।
 पंचसयांसुं सेलग सुनिवररो । सिद्ध थयाथी पुंठर गिरवररो ।
 कुरुणाकर प्रणसुं संपद करो । (उल्ला०) संपद करो सम दम
 रिषीसर साधु सारण सोहण । अंतर प्रकासै तिमर नासै
 भविकजन मन मोहण । प्रत्येक वुडि प्रबुद्ध नारद मुनि प्रमु
 ख पेंतालण । दमदंत महारिष कुंजवारै साधु नमुं विड्डं
 कालण ॥११॥ (चाल) रंग रिषमदत्त रतन लय मुणी । समरुं
 देवामंदा साज्जणी । पांचे पांठव प्रणमुं सुनिपती । केस
 पणसी बोधक जिनमती । (उल्ला०) जिनमती कालक पुल
 मेहलं धिवर आणंद रक्खिओ । अणगारका सब धर्म भा
 ष्यो सोधि सिवपुर सक्खिओ । कालासवेसौ पुल आतम अ
 रथं साधकं उपसमइ । श्रीपुंठरीक महासुनौसर प्रणमीयै
 सुभ संयसौ ॥१२॥ (चाल) वंदुं बलकल चीरी केवलौ । श्री
 अमत्तो सुनिवर मनरलौ । श्रीकर कंडू दुमह नमि निमा

या । निज२ देसे नरवर श्रीजुवा । (उल्लालो) श्रीजुवा ए
 रिषभादि देखी यथा वद वदरागोया । संजम सिरी भजि
 मोह निद्रा तजीय जोगै जागीया । प्रत्येक बुद्धा चार
 सिद्धा सिद्ध यथा एकण समे । सुप्रसन्न चंद मुनिंद निरमम
 प्रेम प्रणसुं प्रहसमे ॥१३॥ (चाल) खंतै खुल्ल कुमार सुध्या
 ईयै । लोहवासुनि चरणे लयलाईयै । कालउदाई प्रमुख
 महासुणी । संजम सुद्ध जयंती साङ्गणी (उल्लालो) साङ्गणी
 जाणी जग बखाणी परम पद सुख पामीया । श्री अमण
 भद्र सुभद्र सुंदर अचल आतम रामीया । श्रीसुप्रतिष्ठ
 यतीस सुव्रत साधुसुव्रत सेहरो । चारित्रि रिष गुणवंत
 गोभद्र गरुआ गरिमा सागरो ॥१४॥ (चाल) सिरी
 सिव राय रिषीसर बंदोयै । दसारण भद्र नसुं दुख
 ठंदोयै । अर्जुन मालो सुख संजम धरो । सुदृढ प्रहारी
 सिवरमणी वरो । (उ०) सिवरमणी वरो श्रीकुरगद्गू जमा
 वंत प्रसिद्धउ । वलि चार उग्रविहार तपसी सहत सुविह
 तसिद्धउ । कोटिन्न दिन अनै सेवाली पनर सतक तिहो
 सरा । गोतम प्रबोधत सिद्ध पुहता नसुं चरण करणा धरा
 ॥१५॥ (चाल) गरुआ श्रीगुणसागर गाईयै । प्रथवी चंद्र
 प्रणम्यां सुख पाईयै । खंद कुमार सदा अभिनंदोयै । नमिह
 अरहमिल मन आणंदोयै । (उ०) आणंदोयै मेतार्य मुनिवर
 भगतिस्सुं समरी करी । षट्प इलापुल चिलापुल रुगापुल
 हीयै धरी । श्रीइंद्रनाम नियंथ निर्मम धर्मरुचि धर्मांगि
 रो । तैतलौपुल सुबुद्धि बोधितसु जितसल मुनीसरो ॥१६॥
 (चाल) उदयर कर जगि२ जस तणो । अमणसुदंसणसील

सुहावणो । श्रीअन्नयसुत आद्रकुमारए । चित्तचतुरनर
 चित्तचमकारए । (७०) चमकार सार सुजात रिषवरदेव
 सांनिधजसधणी । गंगेय गिरुवो गुणगाजे सुजिनपालत
 हितधणो । श्रीधर्मघोष सुसौस धर्मरुचि साधु श्रीजिनदेव
 ए । ओकपिलरिष हरिकेस वलिमुनि नित नमुं निरलेव
 ए ॥१७॥ (चाल) जति जयघोष विजयघोषै जुड । सेवुं सुत
 धर ओदेवलसुड । श्रीइखुकार नृपति कमलावती । राणो
 ष्टगु सुप्रोहित सुभमतो । (७०) सुभमतो जेहनीं नसा
 भार्या पुत्र दोय बखानौयै । ए ठऊंलेई चारि चारिव सु
 गति पुहता जानौयै । जत्रिय सुनीसर साधु संजम धर्मरुचि
 महावती । निग्रंथनाथ अनाथ वंदुं समुद्रपालसु संसती ॥
 १८ ॥ (चाल) कुम्भापुत्र नमुं केवल कस्यौ । विधसुं सीतल
 सिवकमला मित्यौ । धन२ धनो सुरगिरघोरए । वीर प्रसं
 खी तपगुण वीरए । (७०) औवीर दिक्खित श्रीसुवाळ भद्र
 नंदकुमारए । आदिक दसेरिष चरिय जेहनां सुख विपाक
 उदारए । श्रीचंद्ररुद्र सुसौसखंदग विमानिधि कहीवैइण
 कलै । कुरुदत्तसुत तीसग सरोरुह रिष नय्यां आस्त्राकलै
 १९ ॥ (चा०) अंगप्रसुख रिष च्यारे आदरी । विधिसुं संजम
 सिद्धि वधू वरी । अमै कुमार सुनि अभय करो । हल्लविहल्ल
 सु आतम हितकरो । (७०) हितकरो दयावर मेघसुनिवर
 नंदपेण आराधीयै । सुनिखलनै सर्वाभुमति समर सिवसुख
 साधीयै । श्रीसौहसाधु अने उदायन चरम राज रिषीस
 रो । ओसालभद्र सुधेन सुनिवर समरतां मज्जल करो ॥
 २० ॥ (राग धन्नासरी) ॥ २० ॥ भद्र वैरागो वरनसुं ।

जुगवर जंवूसामि । प्रभव सिव्य भव परगटौ । सुजस जसो
 भद्र खाम ॥ २१ ॥ (महामनौसर नित नमुं जी । नामें घर
 नवनिह । वाधै रिह सखद) ॥ २२ (म०) ॥ जग संभूति वि
 जै जयो । भद्रवाज्ज हतभद्र । जग जोगीसर जागतो । मुनि
 वर ओथूलभद्र ॥ २३ (म०) ॥ भद्रवाज्ज खामी तणा । चारि
 सिध्य मुनिराय । सौत परीसह जिण सद्धा । साखा १ आ
 तम काज ॥ २४ (म०) ॥ अज्ज महागिर जांणी थै । अज्ज
 सुहत्थि विसाल । संप्रति नृप पट्टि वोहीयो । ओअ
 वंतो सुकमाल ॥ २५ (म०) ॥ आरिजसांमि पसंसीयो । अ
 ज्जसुभद्दमुनीस । अज्जमंगु महिमानिलो । सींहगिरौस मु
 णीस ॥ २६ (म०) ॥ घन गिरि थिवर महामुनौ । ओवय
 र खामि मुनिराय । अरहदिण मनिअपहख्यो । भद्रगुप्त ।
 निरमाय ॥ २७ (म०) ॥ वयरसेन विद्यावरु । ओरत्तत गुस
 दत्त । पसमिल गुण गह गहै । प्रभु दरवलका पत्त ॥ २८
 (म०) ॥ विंजसाघ सुविधइ भख्यो । ओ ठांजिल सुमहिइ ।
 सुव अरव रतनें भख्यो । खमासमण देवइ ॥ २९ (म०) ॥
 पंचमकाल महामुनी । ओदुपसै सूर दयाल । सुद्धजिया
 खरतर सहो । जिन आग्या प्रतिपाल ॥ ३० (म०) ॥ इम पन
 वं कर्मभूमी जिके । ऊआ ऊसै अनंत । वर्त्तमान ओसाधु
 जी । रतनघई गुणवंत ॥ ३१ (म०) ॥ ब्राह्मो सुंदरीराय मै ।
 साऊणो चंदन वाल । आदिक सौलवतो सतो । तिकरण
 सुहत्थिकाल ॥ ३२ (म०) ॥ संवत सोल ठत्तीसए । ओविम
 लनाय सुरमाल । दिजा कल्याणक दिनें । गुंधी ओमुनि
 माल ॥ ३३ (म०) ॥ रिणोपुरै रलोवा मणो । ओसौतल

जिण चंद । सूरविजै राजै मदा । संघ अधिक आणंद ॥ ३४
 (म०) ॥ ओमति भद्र सुगुरु तणें । सुपसायै सुखकार ।
 चारित संघ वखाणौयै । सदा २ जयकार ॥ ३५ (म०) ॥
 मनहर श्रीमनिमालका । गुणगण परमलपूर । कंठवद
 उत्तम जिक्के । पामे सुखभरपूर ॥ ३६ (क०) ॥ महामुनीसर
 गावतां । सुरतरु सफल समान । अष्ट महा सिध घर फलै ।
 सदा २ कवयाण ॥ ३८ (म०) ॥ इति मुनिमालका संपूर्ण ॥

॥ ❧ ॥ द्विभूजिन स्तवनलि० ॥ ❧ ॥

॥ ❧ ॥ वरतमान चोवीसौवंदुं । मन सूघै नितमेवरी
 माई । ऋषभ अजित संभव अभिनंदन । सुमति पदम प्रभु
 सेवरीमाई ॥ १ ॥ (वर०) श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रभु प्रणसुं । सुवि
 ध सीतल अथांसरी माई । वासपूज्य विमल अनंत धरम
 जिन । सांति कुंथु परसंसरी माई ॥ २ ॥ (व०) अरजिन मल्लि
 अने सुनि सुव्रत । नमि नेमि पास जिणंदरी माई । चोवी
 समा श्रीवीर जिणसर । प्रणसुं परमाणंदरी माई ॥ ३ ॥
 (व०) ॥ ढाल २ ॥ प्रहसम सुधा साधु नसुं नित (एहनी) ।
 नित नित अतीत चोवीसी नमीयै । जेहना नाम प्रगड ए
 जाण । केवलन्यानीनें निरवाणी । सागर महाजस विमल
 वषाण ॥ ४ ॥ (नि०) सर्वानुभूति औधर दत्त जिनवर । दामो
 हर सुतजा श्रीसांसि । मुनिसुव्रत सुमति सिवंगति जिन ।
 श्रीअस्ताग नेमौसर नाम ॥ ५ ॥ (नि०) अनल जसोधर तेम
 छतारथ । श्रीजिनेसर सुधमति सुजगीस । सिवकरखंदन
 संप्रतिनामे । वंदीजै जिनवरचोवोस ॥ ६ ॥ (नि०) (ढाल ३)

सफल संसारनी) ॥३॥ जे भविष्यंति अनागए कालए । तेह
चोवीस प्रणमीस बिज्जं कालए । प्रथम महाराज अणक
तणो जीवए । श्रीपदमनाम प्रणमीस सदीवए ॥१॥ वीरनोपि
तरौयो नाम सुपासए । ऊसी जिन बीय सुरदेव सुप्रकासए
कोणिक सुत उदाई नरिंदए । तीसरो तेह सुपास जिणंदए
॥२॥ सिष्य श्रीवीरनो पोडुलो साधए । चोथो स्वयंप्रभु नां
मधाराधए । द्दढायुष जीव सिद्धांतमें जाणीयै । पंचम सर्वा
नुभूति प्रमाणीयै ॥३॥ कीर्त्त इण नाम इक जीव कहीजीयै
देवश्रुत तेठो स्वामि स लहीजीयै । संप्रभावक ऊखै उद
यजिण सातमो । आणंदनो जीव पेठाल जिण आठमो
॥४॥ सुनंदनो जीव ते नवम पोडुल जिणं । सतक आवक
शतकीर्त्त दसमो भणुं । देवकी जीव सुनिचुवत इग्यारमो ।
सत्यकी जीव ते अमम जिण वारमो ॥५॥ वासुदेव जीव नि
कषाय जिन तेरमो । वलदेव जीव निपुलाक चवदम नमो ।
पनरमो निरमम देव सुलसाकही । रोहणी जीव चित्रगुप्त
सोलम सही ॥६॥ समाध जिन सतरमो आवका रेवती ।
अठारमो शटाल जीव संवर जिनपती । दीपायन जीव यशो
धर उगणीसमो । कृष्ण कोइ जीव ते विजय जिनवीसमो
॥७॥ मल्लि इकवीसमो जीवनारद तणो । देव षावीसमो अं
बद्र आवक भणुं । तेवीसमो अमर जीव अनंत वीरजनमो ।
स्वात बुध जीवते भद्र चोवीसमो ॥८॥ एह आगाम चो
वीस जिण जाणीया । प्रवचन सार उद्धारथी आणीया ।
कीई परसिद्धने कीई अप्रसिद्ध कछ्या । साल अनुसार घी
साच कर सर दछ्या ॥९॥ ॥१॥ (ढालइ) ॥१॥ आज नहेजोरे

दीसै नाहलो० ॥३॥ विहर मान जिण बीसै वंदीयै । महा
 विदेह विख्यात । सीमंधर युगमंधर बाहुजी । श्रीसुबाहु
 सुजात ॥६॥ (वि०) स्वयं प्रभु रिषभानन अनंत वीरजी । सूर
 प्रभु तेमविसाल । वज्रधर चंद्रानन चंद्रबाहुजी । भुजंग ई
 सर नेम भाल ॥७॥ (वि०) वैरसेन महाभद्र नमुं वली ।
 देवयसा यसो रिद्ध । अठौ दीपमें विचरै आजए । नाम ली
 यै नव निद्ध ॥८॥ (वि०) ठाल४ ॥३॥ रे जीव जिन धम कौ
 जीयै० ॥३॥ चार तीर्थकर सासता । इणहीज अभिधान ।
 ऋषभानन चंद्रानन । वारिषेण वर्द्धमान ॥९॥ (चा०) अठ
 कोटि ठप्पन लाखसुं । सत्ताणुं हजार । चउसैठयासी दे
 हरा । बिहुं लोक मज्जार ॥१०॥ (चा०) नवसै पणवीस को
 णीया । बिंव तैपण लाख । सहस अठावीस चारसै । अ
 ठासी भाख ॥११॥ (चा०) छिन्नूजिणवर नामए । समखां
 सुखदाय । प्रणय्यां पाप मिटै परा । समकित सुध धाय ॥
 १२॥ (चा०) ॥३॥ कलसः ॥३॥ इम बिण चौवीसी बीस वि
 हरमान चौजिण सासता । संघुण्यां सतरैसै बयालै अधि
 क आण्णी आसता । जिन रतन चिंतामणि तणी परि प्र
 षल वर्द्धित पूरए । ग्रहसमै विकरण सुद्ध प्रणमै सदा जिन
 चंद सूरए ॥१३॥ ॥ इति श्रीविण चौवीसी बीस विहर
 रमान चौजिण सासता एवं छिन्नूभगवंत नाम स्तवनं ॥

॥३॥ अथ उपधानतपवर्णन स्तवनलि० ॥३॥

॥३॥ श्रीमहावीर धरम परगासै । बैठी परषद
 बारजी । अमृत वचन सुणी अति मीठा । पामे हरष

अप्रारजी ॥ १ ॥ सुणो २ रे आवक उपधान वह्यां विन ।
 किम सूँ नवकारजी । उत्तराध्ययन वज्जुत अध्ययने
 एह भण्णो अधिकार जी ॥ २ (सुणो) ॥ महा निसीध सिद्धांत
 मांहे पिण । उपधानं तप विस्तार जी । अनुक्रम सुद्धपरंपर
 दीसइ । सुविहित गल्ल आचार जी ॥ ३ (सु०) ॥ तप उपधान
 वह्यां विन किरिया । तुल्ल अलप फल जाण जी । जे उपधान
 वह्या नरनारी । तेहनो जनम प्रमाणजी ॥ ४ (सु०) ॥ तप
 उपधान कछो सिद्धांते । जो नवि मानै जेह जी । अरिहंत
 देवनी आण विराधै । भसख्यै भव २ तेह जी ॥ ५ (सु०) ॥
 अघडा घाटसमां नर नारी । विण उपधाने होय जी । कि
 रिया करतां आदेस निरदेस । काम सरै नछी कोइ जी ॥
 ६ (सु०) ॥ इक वेवरनें खांमै भरियो । अति षणो सौठो
 याय जी । एक आवक उपधान वहै तो । धन २ ते कह
 वाय जी ॥ ७ (सु०) ॥ (ढाल) ॥ नवकार तणो तप
 पहिलो वीसइ जाण । इरियावहीनो तप बीजो वीसइ
 आण । इण विज्जं उपधाने निस्सइ नाण मंझाण । वारै उप
 वासे गुरु मुख बेवे वाणि ॥ ८ ॥ पेलीसइ लौजो एमो त्युणं
 उपधानं । विण वायण उगणीस तप उपवास प्रधान ।
 अरिहंत चेई तप चोथोचोकइ एह । उपवास अढाइ वाण
 एक गुण गेह ॥ ९ ॥ पांचमो लोगस तप अट्ठावीसइ नाम ।
 साढादनरह उपवास वायण विण्टाम । पुक्खरवरदी
 तप ठहो ठकइ सार । साढावरण उपवास वांण एक सुवि
 चार ॥ १० ॥ सिद्धाणं बुद्धाणं सातमो उपधान माल । उपवास
 वारै इक चौविहार ततकाल । एक वाणिकरै वलि गुरुसुख

सरस रसाल । गह्वनायक प्रासै पहरै माल विसाल ॥११॥
 माल पहरण अवसर आणी मन उलंग । घर साहू वाहू
 खरचै धन बड़ भंग । अति उलूव कौनै राती जोगो दिल
 खोल । गीतगान गवावै पावै अति रंग रोल ॥१२॥ ॐ ॥
 (ढाल) ॥ ॐ ॥ ए साते उपधान । विधसों जे वहै । ते सूधी
 किरिया करै ए । खिण नकरै परमाद । जीव जतन करइ ।
 पुंजि २ पगला भरै ए ॥१३॥ न करै क्रोध कषाय । ह्रद २
 हसै नही । भरम कहनो नवि कहै ए । नाणै घरनो मोह ।
 उत्छाष्टी करै । साधु तणी रहणी रहै ए ॥१४॥ पड़रसौ
 म सिञ्जाय । करपोरसि भणौ । जं चै खरबोलै नहीं ए ।
 मनमांहे भावै एम । धन २ ए दिन । नरभव मांहि सफल
 सहै ए ॥१५॥ जेसा ते उपधान । विधसेती वहै । पहिरै
 माल सोहावणीए । तेहनौ किरिया सुद्ध । बड़ फलदायक ।
 करम निर्जरा अति वणी ए ॥१६॥ परभव प्रामै रिद्ध । देव
 तणा सुख । वलीसवड नाटक प्रतै ए । लाभै नौल विलास
 अनुक्रम सिव सुख । चढतौ पदवौ जे चढै ए ॥१७॥ ॐ ॥
 (कलशः) ॥ ॐ ॥ इम वीरजिणवर भुवण दिणवर मात विस
 ला नंदणो । उपधानना फल कहै उत्तम भवियजण आण
 दणो । जिणचंद जुग परधान सदगुरु सकल चंद मुनीसरो ।
 तसुसीसवाचक समय सुन्दर भणै बंठित सुख करो ॥१८॥
 इति सात उपधानं गर्भित औमहावीर स्वामी दृढ़ स्तवन
 संपूर्ण ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (यह) स्तवनमें उपधान तप करनेकी सब विधि
 है । इसी सुजब विवेकी जीव करै । और उपधान तप ग्रहण

(तथा) माला पहरण विधि इहां न लिखौ है (सो) सुझ
गरुकै पास । विधि प्रपाक ग्रंथसें जानकै करै इति
तत्वं ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ राग रागिणी स्तवन लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (राग कल्याण) ॥ ॐ ॥ (६)

॥ ॐ ॥ टुक निजर महरदी करणाहो ॥ टु० ॥ मेळं अघम
पापकी मूरत । मेरा दोस न घरणा हो ॥ (टु०) १ ॥ अष्ट भव
नको प्रीत हमारी । नवमे भव निरवाहना हो ॥ (टु०) २ ॥
रूपचंद भगतनकी वीनतौ । आवागमण निवारणा हो ॥
(टु०) ३ इति पदम् ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ लोक चवदके पारं किनारै । पूरण ब्रह्मका वासा
है । (लो०) पेंतालीस लाख जोजनकी सिद्धा । फिटक रतन
उजासा है । निरमल जोत विराजै साहिब । ग्यान ध्यान
परकासा है ॥ (लो०) १ ॥ पंच वरण की भजा फरकै । क्या
कड़ अजब तमासा है । नाथ निरंजन नाम तुमारी । उर
नको क्या आसा है ॥ (लो०) ३ ॥ चोसठ इन्द्र खडे वाकेद्वारे ।
खिजमत बंदा खासा है । रूपचंद कहै नाथ निरंजन । च
रण कमलका दासा है ॥ (लो०) ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सवो सखि वन ठन (सवी०) ठाढे नाभ नृपत जुके
द्वारे आगै । (स०) रियभ कुमरको जनम भयो है । मज्जल
मुख्य उचारैरौ ॥ (स०) १ ॥ ताल रुदक रवाव मधुरी धुनि

वौणा वाजै सुरतारे । नाचत हावभाव करौ राजत । ता
नलेत सुरतारेरौ ॥ (स०) १ ॥ सुरवनिता मिल गाइ वधाइ
मोतौयन चोक सवारै । जगबंधव जगपतिकुं निरखत ।
आनंद हर्ष अपारेरौ ॥ (स०) ३ ॥ इति पदम् ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ हो जिनतेने दरस परवारीयां (हो०) । तुम विन
भव मे भटकंदा । अब मेंदौ ओर निहारौयां ॥ (हो०) १ ॥
अष्ट करम मेंदौ लार लगे है । उनकुं वेग विमारौयां । च
रण सरणगहे आण तु सादै । रूपचंद गुणगारीयां ॥ (हो०)
२ ॥ इति पदम् ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ हारे म्हांरा रिषभा जिणंदने गजरो चढाउं रे
(म्हां०) चंवेली चंपा गुलाब ल्याउं रे । जाईजुई भोगरो
मालती । विधगुं शावुं रे ॥ (म्हां०) १ ॥ अगर चंदन अक्षत
नै वेद्य लाउं रे । धूप दौप फलसुगंध पुण्य पावुं रे ॥ (म्हां०)
२ ॥ इष्ट धरम आदिनाथ भाव भावुं रे । रिषभ दास पूरो
आस गुण गावुं रे ॥ (म्हां०) ३ ॥ इति पदम् ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ मन लीनो हमारो जिन चरणा रे । पोत जल
धि भव तरणारे ॥ (म० टेर) ॥ आदि पुरस जगतारणनि
सुण्यो । कर्म विकट धन हरनारे ॥ (म०) १ ॥ नाभि तात
मरु देवौ माता ॥ नंद ऋषभ सुप करनारे ॥ (म०) २ ॥
सत्यादिक प्रगट न जग तत्पर । कुमतांगन दलटनारे ॥
(म०) ३ ॥ सारंग हृग शशिवदन मनोहर । अंग कनक धम

वरनारे ॥ (म०) ४ ॥ श्रीजिन हंस सुरीसर जंपै । जिन
समरण दिल धरनारे ॥ (म०) ५ ॥ इति श्री ऋषभदेव
स्तवनम् ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ (राग जिंजोटी) ॥ ॐ ॥ (२)

॥ॐ॥ अजित अजित जिन ध्यान । (म्हारै मनरे) (अ०)
(टेरः) ॥ जितसलु विजयाको नंदनरे । वंदन लय युतग्यान ।
(म्हा०) १ ॥ लिङ्गं जग तारन टारन अव कोरे । वारुं तन
धन ज्यांन ॥ (म्हा० अ०) २ ॥ जिन वचनामृत पान करो
जै रे । केवल निरमल ग्यान ॥ (म्हा० अ०) ३ ॥ श्रीजिन
हंस सूरि प्रभु पाए रे । निवृत पुरिं दरस्यान ॥ (म्हा० अ०)
४ ॥ इति श्रीअजितनाथ स्तवनम् ॥ ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ॐ॥ यह अरजी मोरी सहियां । मोहितारलोगह
बहियां । (य०) मैं नाहि जानुं सहियां (य०) । मैं तारण
तरण सुखो ठै । मैं यातें सरणो गह्वीयां । इन तैं उवा
रलहियां ॥ (मो० य०) २ ॥ इन करमनकै दस होवकै । मैं
भट क्यौ चिङ्गंत सहियां । मैं नाहि जानुं सहियां ॥
(य०) २ ॥ हित करकै दास निहो रै । कर जोद्रि पद्रि ऊं
पदयां । सिव देति क्युं न सहियां । (मो० द०) ३ इति ॥

॥ॐ॥ (राग काफ़ी) ॥ॐ॥ (५)

॥ॐ॥ मुजरो भानी लौने हो गोप्नीराव अरज चुणी
नें म्हारो ॥ (मु०) १ ॥ किरपा काज करी सेवगनें । दिलभर

दरसण दीजै हो ॥ (गो०) २ ॥ तूं अविनासी अंतरवसीयो
 दूजो दिल न पती जै हो ॥ (गो०) ३ ॥ गुणनिध गवतौ
 दरसण दीजै । सकल करम दलठौजै हो ॥ (गो०) ४ ॥ रूप
 विविध कहै मो मनपभणें । प्रह जठौ प्रणमौ जै हो ॥
 (गो०) ५ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥ ॥

॥ ॥ तुमैना प्रभु इण दिल बसणावे । तेना तो गुण
 सुर गावंदाहो ॥ (प्र०) १ ॥ संतके सागर गुणके आगर ।
 जोही धावै सो पावंदाहो ॥ (प्र०) २ ॥ तुमहो तत्वज्ञान
 के दाता । भविजन ताप मिटाव दाहो ॥ (प्र०) ॥ कहै नि
 नचंद ऐसे प्रमुसेरे । चरणकमल चित लावंदाहो ॥ (प्र०)
 ३ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥ ॥

॥ ॥ हम जानतहै तुम तारोगे । (हम०) नाभिराय
 मरदेवौ को नंदन । मेरी ओर निहारोगे ॥ (हम०) १ ॥
 आदि जिनेसर अन्तरजामौ । खासी कठुन विचारोगे ॥
 (ह०) २ ॥ जगजीवन जगतारक तुमहो । एही विरद संभा
 रोगे ॥ (ह०) ३ ॥ श्रीजिन सौभाग्य सुरिंदकुं साहिव । भ
 वजलपार उतारोगे ॥ (ह०) ४ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पंथीना पंथ चलैगो । प्रभु भजलै दिन चार ।
 (पं०) ऊठोकाया ऊठोमाया । ऊठो सब परवार ॥ (पं०)
 १ ॥ बालपणमें खेल गमायो । जीवन मायाजाल ॥ (पं०)
 २ ॥ बूढापण आयो धरम न पायो । पौछे करत पुकार ॥

(पं०) ३ ॥ क्वा ले आयो क्वा ले जासी । पापपुण्य दोय ला
र ॥ (पं०) ४ ॥ दया मया कर पास एवंतौ । अब तेरो
ही आधार ॥ (पं०) ५ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥ ॥

॥ ॥ तेवीसमा जिनराज । जोदौ थांहरै कौन जुदौ गो
(ति०) अखसेन तात वामादेवी माता । तं तारण संसार
॥ (जो०) १ ॥ कमठ विद्धारण नागकुं तारण । संभलाव्यो
नवकार ॥ (जो०) २ ॥ विविध कुसल कर जोदौनें वीनवै ।
भव २ देज्यो दीदार ॥ (जो०) ३ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (राग खंभायचौ) ॥ ॥ (२)

॥ ॥ कैसें काज सरै महाराजा विन (कैसे०) भृमत २
लख चौरासौमें । सुख दुखसें जीया रलत फिरै (म०कै०) ।
ए रिपु कर्मवैरौ भटकावै । जाहीसें मेरो प्राण मरै ॥ (म०
कै०) २ ॥ जो जीव सुखकी वंठा चाहै । प्रभु सेव्यां सें सब
काज सरै ॥ (म०कै०) ३ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥ ॥

॥ ॥ राजरी वधाई वाजै ठै (महा०) । सरणाई सिरै
नोचत वाजै । धनज्युं गाजै ठै ॥ (महा०) २ ॥ इन्द्राणी मिल
मङ्गल गावै । मोतीयन चोक पुरावै ठै ॥ (महा०) २ ॥ सेव
ग प्रभु जीसें अरज करै ठै । चरणारी सेवा प्यारी लागै
ठै ॥ (महा०) ३ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (राग अनाणो) ॥ ॥ (१)

॥ ॥ मोतिनकी माला जिनगल सोहै । (मोति०)

मस्तक सुगट सोहै मनमोहन । कुंठल लागत वाला ॥
 (जि० १) ॥ भजोरी भजो तुम लोक सहिरके । नहीय भजै
 सो काला । साणकपर प्रभु सहिर करे तो । अग्रणा विरु
 द संभाला ॥ (जि०) २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

❀ ॥ (राग सोरठ) ॥ ❀ ॥ (४)

॥ ❀ ॥ रहे तुम आज क्युं जीवन दुराय ॥ (रहे०) ॥
 जीय जीवन सखीयनमे प्यारी । हरौ हाहा खाय ॥ (र०)
 १ ॥ अविरत घुंघट पट उवारी । अनुभव मुख निरखाय ।
 एते परभी मान न भेलै । मूलै व्याज बढाय ॥ (रहे०) २ ॥ भव
 परणित परिपाक इतै पर । आई घाई माय । अति आयह
 सब ग्यान सारकुं । लीने कंठ लगाय ॥ (रहे०) ३ ॥ इति पदम्
 ॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हेमाय वांकली करमगति जांयनां कही । वितत
 अर वनत कठु औरै । हौनहार सो होय रही ॥ (हेमाय
 वां०) १ ॥ सकल साज सजीवौ व्याहनकुं । राजुलकों तब
 चाह भई । सुनी नेम गिरनार सिधाए । वदन विलष सुर
 जाय रही ॥ (हेमाय वां०) २ ॥ सीता सतीयोही पति
 भगता । जानत सकल मही । ऊठो दोसदियो जब बध
 पति । पावक कुंठमे घीज दही ॥ (हेमाय वां०) ३ ॥ जायक
 सबष्टी अणक राजा । निज सुत कोणक बंधठई । सुध बुध
 विसरगई नरपतकी । आपणकी अपवात लही ॥ (हेमाय वां०)
 ४ ॥ ठिनमे रंक ठिनकमे राजा । अकल कथा किम जाण
 कही । उलट पलट बाजी नटसौको । नवल सरबमे व्यापर

हो ॥ (हिमाय वां०) ५ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ रहांबुं प्यारो लागै ठै जी । थारो उपदेस ।
(रहां०) ॥ ग्यान जगावण औगुण भेटण । संसय रहै न
लेस ॥ (रहां०) १ ॥ मोहतिमिर दुख दूर करनकुं । भगत
बढावत हैत । चंद फतै नित एही चाहै । समकित सुखको
खेत ॥ (रहां०) २ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ मेरो प्रीया पर संगरमत है । में कैसे मनावूं री
(मे०) । सोतन संग रैन दिन रमतां । माहि न बुलावै रौ
(मे०) ॥ १ ॥ हाहा करत सषी प्रईयां परतंज । कोईपौया
मिलावैरौ । विरहानल अति दुसह प्रीया विन । कोन बुझा
वैरौ (मे०) ॥ २ ॥ सुमता संग ले अनुभव आयो । सब परठसु
नावैरौ । ग्यान सार प्यारो दोउ हिलमिल । सोरठ गावै
रौ (मे०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (राग सोरठ मलार) ॥ ॥ (३)

॥ ॥ वरषित वचन ऊरी हो (सुगुरु मेरे) (व०) श्री
श्रुत ग्यान गगन तैं जंमटी । ग्यानघटा गहरौ हो (सुगुरु
मेरे व०) ॥ स्याद बाद नय विजुरी चमकित । देखत कुमति
नरी । अथ विचार गुहर धुनि गरजित । रहत न एक
वैरौ हो ॥ (सुगुरु मेरे) २ ॥ अज्ञानदी चढी अति जोरै सुझ
सुभावधरी । सुभर मखौ सुमता रससागर । समकित
भूमि हरी हो ॥ (सुगुरु मेरे) ३ ॥ प्रगटे पुन्य अंकुरे चिह्न

दिस । पाप जवास जरौ । चातक मोर पपइया भविजन ।
बोलत भक्तिधरी हो ॥ (सुगुरु मेरे व०) ४॥ दया दान व्रत
संयम खेतौ । भविका कसांन करी । हरष चंद सुर नरसिव
सुखकी । सहज सुभाव फली हो ॥ (सु० व०) ५॥ इति पदम् ॥

॥ ❧ ॥ पुनः ॥ ❧ ॥

॥ ❧ ॥ या घरी में रंग बन्यो है झंझरै । (या०) तत्वा
रथकी चरचा पाई । साधरमौको संग (व० या०) १॥ श्री
जिनराज दयानिधि भेटे । हरष भयो अंग अंग । असी
विष भवई मां है मिलीयो । धर्मप्रसाद अभंग (व० या०) २॥
इति पदम् ॥ ❧ ॥ ॥ ❧ ॥ ॥ ❧ ॥

॥ ❧ ॥ (राग मलार) ॥ ❧ ॥ (२)

॥ ❧ ॥ चिऊं डरवहरिया वरसै (आलीरी) । अब घरर
घरर घन गरजै ॥ (चि०) ॥ नेम प्रभु गिरनार सिधाए । दि
खणकुं जीयातरसै ॥ (चि०) १॥ दादुर मोर सोर सुन अब
गों । नयनभए घन जरसै ॥ (चि०) २॥ दुंढत दुंढ सकल वन
वनमें । कवड प्रीयानां दरसै ॥ (चि०) ३॥ सोइ सफल जा
लेंगे सजनी । दिवसघरी जिन फरसे ॥ (चि०) ४॥ इति ।

॥ ❧ ॥ पुनः ॥ ❧ ॥

॥ ❧ ॥ मोरवा पपइया बोले प्रीउर घनमें । नेम प्रीया
रहे सहसावनमें ॥ (मो०) ॥ निस अधीधारी कारी वीजुरी
मरावै । दूजो विरह आकुल भई तनमें ॥ (मो०) १॥ जिर
मिर बरषत गरंजत दादुर ॥ सोरकरत रहे नदीयां रनमें ।
(मो०) २॥ आणंद ए सम देखण चाहै । राजुल भई है

वैराग्य छिनमें ॥ (मो०) ३ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (राग विहाग) ॥ ॥ (२)

॥ ॥ समज नर जीवन थोरो । थोरो थोरो थोरो ।
(स०) ॥ पल २ आयु घटत छिन छिन ही । गलत जात जै सें
उरो ॥ (स०) १ ॥ या तनको तोही न भरोसो । छिन मासो
छिन तोरो । जो कठ करै सो अवही करलै । पुन परही
जिम जोरो ॥ (स०) २ ॥ तन धन आदि सकल सामग्री । ग
रज २ धनधोरो । रूपचंद विसनाको बांध्यो । जान बूझ
भयो भोरो ॥ (स०) ३ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥ ॥

॥ ॥ मत कर मान गुमान । योवन धन ठगहै । (म०)
बेलूकीभैंत उसको मोती । कोई धनी कोई पलहै ॥ (यो०
म०) १ ॥ नदियां गहिरौ नाव पुराणी । तारण हारा जि
न है । रूपचंद कहै नाथ निरंजन । आखर जंगल घर है ॥
(यो०म०) २ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (राग माह) ॥ ॥ (१)

॥ ॥ निसदिनजोउं थारी वाटनी घर आवोनी ढोला ।
(नि०) सुऊ सरिखा गुऊ लाख है । मेरै तूही अमोला ।
(नि०) १ ॥ जोंहरी मोल करै लालन का । मेरा लाल अमो
ला जिसके पटंतर को नहीं । उसका क्या मोला ॥ (नि०) २ ॥
कोन सुनें किसपै कड़ । किस मांजुं खोला । तेरे सुखदीठे
टलै । मेरै मनका जोला ॥ (नि०) ३ ॥ मीत विवेक कहै

हि तुं । सुमतां सुन बोला । आणंदधन प्रभु आवसी । से
ऊझौ रंगरोला ॥ (नि०) ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

❀ ॥ (राग जैवन्ती) ॥ ❀ ॥ (१)

❀ ॥ आज तो हमारे भाग वीर प्रभु आए है (आ०)
चंदनां खझी दुवार चित्तसें करै विचार । देखत दीदार
होये हरष भराये है ॥ (आ०) १ ॥ आज मेरी आसफली ।
अलौ मेरे रंगरली । विकरीं आतमकली । प्रभुपाव पाए
है ॥ (आ०) २ ॥ धनदिन आजमेरो गयो सब कर्मऊरो ।
सुकुत बज्ज तेरो भगवान दिल भाए है ॥ (आ०) ३ ॥ सिद्धा
रथ राय नंद सोहत सरद चंद । कहै जिनचंद चित आ
नंद वधा ए है ॥ (आ०) ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

❀ ॥ (राग परज) ॥ ❀ ॥ (१)

❀ ॥ वावरो रे आज मनबो मारो ॥ (वा०) ॥ आप रं
गीला वाकी सेज रंगीली । और रंगीलौ वाको सांवरो
रे ॥ (आ०) १ ॥ आपन आवै वारो न लिख भेजै । प्रीतकर
न कुं उंतावरो रे ॥ (आ०) २ ॥ अनंद धन प्रीया निजवर
आवै । मिठगयो मोह संतावरो रे ॥ (आ०) ३ ॥ इति पदम्

❀ ॥ (राग जंगलो) ॥ ❀ ॥

❀ ॥ कष्टभविहारो थारी तो ठवि न्यारी ॥ (रि०) ॥
प्रथम तीर्थ कर प्रथम जिनेसर । प्रथम यतीव्रत धारी हो
॥ (रि०) १ ॥ धनुष पांचसै मान समोहर । काया कंचन
बानी हो ॥ (रि०) २ ॥ नाभिराय मरुदेवीको नंदन । वाप

रजोया कुरवानी हो ॥ (रि०) ३ ॥ युगला धरम निवारण
स्वामी । प्रभुतो पर उपगारी हो ॥ (रि०) ४ ॥ केवल पाय
प्रभु सुक्ति सिधाए । आवागमन निवारी हो ॥ (रि०) ५ ॥
आनंद वन प्रभु एती वीनती । तुम पर जाडं बलिहारी हो
॥ (रि०) ६ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ सुण मन हो न हार नटरी रे ॥ (सु०) ॥ चित
कतु उर विचारत है नर । उरही उरवने रे ॥ (सु०) १ ॥
ऊपर वाज पारधीनीचै । चिद्रियां कैसै वचै रे ॥ (सु०) २ ॥
होनहार वस दस्यो है पारधी । सर सौचांण मरै रे ॥ (सु०)
३ ॥ होत पदारथ भाव्री भइया । क्युं जगचाह धरै रे ॥
(सु०) ४ ॥ उदय करमगत देख जगत की । जिनवर क्युं न
भजै रे ॥ (सु०) ५ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ सहियोरी मिलचालो प्रभु पूजन काज ॥ (स०)
समर्वसरन विच आप विराजै । वीरनाथ माहाराज ॥
(स०) १ ॥ अणक भूप चेलणा राणी । भक्ति करत हैं आ
ज ॥ (स०) २ ॥ निज निज द्रव्य लीयै पुरके जन । उमंग
उमंग सुभ साज ॥ (स०) ३ ॥ वे प्रभु दीनदयाल जगतके ।
हितकर धर्म जिहाज ॥ (स०) ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (राग कैहरवो) ॥ ॥ (२)

॥ ॥ मनवा जिणंद गुण गायरे ॥ (म०) ॥ याजिनजी
के दरस सरस ते । दुखदोहग मिट जायरे ॥ (म०) १ ॥

सुगुरु वचन पर तीत मानले । आतमसुं लय लायरे ॥
(म०) २ ॥ भव२ में तो कुं सुखदाई । आनन्द बंठित पाय
रे ॥ (म०) ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चालो देखोरी मधुवन को रात्र (चा०) वामानं
दन पासजिनेसर । सिरपररे वाके चवर ढोलाय ॥ (चा०)
१ ॥ तारण तरण जिनेसर लखके । भेटै सङ्ग भवि चित सुख
पाय ॥ (चा०) २ ॥ गङ्गा दरस उमाहोलागो । कवफरसुं
वाके मन वचकाय ॥ (चा०) ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग घाटो) ॥ ❀ ॥ (२)

॥ ❀ ॥ मेरो मन वसकर लीनो । जिनवर प्रमुपास ।
(मे०) १ ॥ अखीयां कमल पांखनीयां । सुख सुन्दर जास ।
(मे०) १ ॥ काने कुं मल दोय ऊलकै । ससि सूरज सम भास
(मे०) २ ॥ नीलवरण तनु सोहै । विभुवन परकास ॥ (मे०)
३ ॥ प्रभु तुम सरण रहौने । समरुं सासोसास ॥ (मे०) ४ ॥
लालचंद अरज सुणीने । पूरो बंठित आस ॥ (मे०) ५ ॥
इति पदम् ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राखुं रे हमारा घटमै । जिनराज नाम तेरा ॥
(रा०) ॥ जागै प्रभाव मेरा । अग्यानका अंधेरा । भागा
भया उजेरा ॥ (रा०) १ ॥ सूरति तेरौ रागै । देख्यां विभाव
त्यागै । अध्यात्म रूप जागै ॥ (रा०) २ ॥ सुद्रा प्रमोदकारी ।
कृषभेस जु तिहारौ । लागत मोहि प्यारी ॥ (रा०) ३ ॥

लैलोखनाथ तुम ही । हम है अनाप गुन ही । करियैस
नाथ हम ही ॥ (रा०) ४ ॥ प्रभुजी तिहारी साखे । जिन
हर्ष सूरि आखे । दिलमां ऊया ही राखे ॥ (रा०) ५ ॥
इति पदम् ॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ (राग ठमरी जंगलौ) ॥३॥ (३)

॥३॥ सुखो सुजाण नेमजी । हारे मैं खजौ पुकारं
नेम तूं ही तूं ही तूं ही । (सु०) । अरज करत जूं मैं पदयां
परतजूं । इतनी अरज मेरी भांनो सुजाण (नेमजी) हां
मैं खजौं ॥ १ ॥ विन अवगुण कां तजो मेरे साहिब ।
महिर निजर मोपैं आखो सुजाण (नेमजी) ॥ २ ॥ हरष
चंद नेमो राजेसर । जूं भवइ को चरो सुजाण (नेमजी)
॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ पुनः ॥३॥

॥३॥ तेरै दरख को चाह लग्यो । सखीखान वरण बत
लाजा रे (ते०) । वनमैं जाय प्रभु दिखा लौनी । हमकुं
लार लगा जारे (ते०) ॥ १ ॥ जाय चढे प्रभु गिरनार ऊपर
अव कैसे विसराजा रे (ते०) ॥ २ ॥ चैन विजै वहै धनइ राजु
ल । प्रभु चरणां चित लावजारे (ते०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥३॥ पुनः ॥३॥

॥३॥ धरि सुखदारीहो वारी राज । धारीठवि वरणी
न जाय (धां०) सौस सुगट सोहै सिरटीको । कानि धारै कुं
मल सोभाय (धां०) ॥ १ ॥ मोहन गारी सूरत सारी । देख्यो
म्हारे मनमो लोभाय (धां०) चरित्त नैन भए निरखत

है । थांसुं प्रभु प्रीतलली लगाय (थां०) ॥२॥ भवस् पास
जिहंदजी की सेवा । ऐसी म्हारै दिलडैमै चाव (थां०) ।
वालक है तुमही प्रभु मेरे । म्हारै प्रभु तुमही सहाय ।
(थां०) ॥३॥ इति पदम् ॥ ॥३॥ ॥०॥

॥३॥ (राग काफ़ी कनफ़ौ) ॥३॥

॥३॥ ऐसी विधतैनै पाईरे । कतु करणी करजा (ऐ०)
उत्तम नर भव जैन धरम रुचि । सुगुरु सेवा सुख दाईरे ।
जसु पातक ऊरजा (ऐ०) ॥१॥ हिंसा जूआ ऊठ परलिया
परिग्रह मद फल चोरीरे । घट जायगा दरजा (ऐ०) ॥२॥
तप जप संयम सौलदान कर । आनंद सुमति सुहाई रे ।
भव जलनिधि तर जा (ऐ०) ॥३॥ इति पदम् ॥ ॥३॥

॥३॥ (राग कालंगटो) ॥३॥

॥३॥ मोहि अपनो कर जाणो प्रभुजी ॥ (मो०) ॥ मे
मतिहीण महा हठवादी । सो तुमतै नहीं ठानो । राग द्वेष
अरु मोह महामद । वाघो खोट खजानो ॥ (प्र० मो०) ॥१॥ ए
रियु कर्म पडो सुऊ केदौ । किसविध ठूटै पानो । कुमति
कदा ग्रह मांहि जलूऊो । ज्युं मदपान वयानो ॥ (प्र०)
२ ॥ ऊं भववासी तूं सिववासी । जानें सकल जिहानो
विरुद लाखीणो साम संभारो । तो हिव किस चित तां
णो ॥ (प्र०) ३ ॥ भक्ति सदाई सिवसुख दाता । संभवनाथ
कहानो । श्रीजिन सौभाग्य सूरिनै निजवर । दोजै सुख
प्रधानो ॥ (प्र०) ४ ॥ इति पदम् ॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ (राग भैरवी) ॥३॥ (४)

॥३॥ नेम जिहंद जी सैं आखल्लो । मोरी रैन दिवस
नित लगरहीरे ॥ (मो०ने०) ॥ पहली आय उन दोस्ती की
नी । ले पौठै छिड़काय दर्ई रे ॥ (ने०) २ ॥ प्रसुवन पर प्रभु
दया करीनै । सिवरमणीनै वर लेई रे ॥ (ने०) २ ॥ केइ
भविक रसना कर दोस्ती । रत्न विमल पद पाय लई रे ॥
(ने०) ३ ॥ इति पदम् ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ पुनः ॥३॥

॥३॥ आज प्रभु तेरै चरण लाग । मिथ्यातनींद में
खोई रे ॥ आ० ॥ दरसन कर परसन भयोमेरे । आनंद
चित अव पोई रे ॥ (आ०) १ ॥ तुम विन ओर न कोइ मेरै
देख्यो बिभुवन जोई रे ॥ आ० २ ॥ दास तुमारो करत
वीनती । तुम प्रभु भव भव होई रे ॥ (आ०) ३ ॥३॥ इति
पदम् ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ पुनः ॥३॥

॥३॥ रात गई अब प्रात होन भयो । क्या सोवे जि
या लागरे (रा०) दोय घड़ी तनको अब रहींयो । ऊठ धरम
में लागरे ॥ (रा०) १ ॥ जिनवाणी उर बीच धारलै । ऊर
भरम सब त्यागरे ॥ (रा०) २ ॥ आणंद सुगुरु वचन हित
मानो । ए सूषो सिव मागरे ॥ (रा०) ३ ॥ इति पदम् ॥३॥

॥३॥ पुनः ॥३॥

॥३॥ तुम विन दीनानाथ दयानिध कोन खबरलै भेरी ।
(तु०) भ्रमति फिह्यो संसार जगतमें । मेटो भवनी फेरी ।
(तु०) २ ॥ भवई के प्रभु तुम जगनायक । राखो सरणों ते

री । उदय आसरो पकाडो तेरो । सरन ग्रहीमें तेरी ॥
(तु०) ३ ॥ इति पदम् ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ (राग विभास) ॥३॥

॥३॥ भोरभयो अब जाग वावरे ॥ (भो०) कोन पुन्य
ते नर भव पायो । क्युं सूतो अब पाय दावरे ॥ (भो०) १ ॥
धन वनिता सुत तात आतकी । मोहमगन एह विकल भा
वरे । को इन तेरो तू नही का को । इह संजोग अनादसु
भाव रे ॥ (भो०) २ ॥ आरज देस उत्तम गुरु संगत । पाई
ते पुन्य प्रभाव रे । ग्यांनसार जिनमारग लाधो । क्युं
मूवै अब पाय नावरे ॥ (भो०) ३ ॥ इति पदम् ॥३॥

॥३॥ (राग पट) ॥३॥

॥३॥ जागरे सब रेन विहानी (जा०) उदयो उदयावल
रवि मंजल । पुन्यकाल क्युं सोवै प्रानी ॥ (जा०) १ ॥ क
मल खंज वन वन विकसानी । अजुवन तेरी द्रग उवरानी ।
चेतन धर्म अनादि तुमारो । जग संगतसें सुख विसरानी ।
(जा०) २ ॥ तुम कुल होय अवस्ता पदवै । नौद सुपन ए
जग नौसानी । आतम रूप संभार आपणो । कब तुमारे
घर कुमती घरानी ॥ (जा०) ३ ॥ सुख बुध भूली निरुपम
रूपकी । तातै घट वच होत कहानी । निश्चै ग्यान स्वरूप
तुमारो । ग्यांनसार पद निज रज धानी ॥ (जा०) ४ ॥
इति पदम् ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥ॐ॥ (राग वेलाउल) ॥ॐ॥

॥ॐ॥ सांवरो सलणो सखी मेरे मन भावनो । रूप दे
खाय मेरो मन ललचावनो ॥सां०॥ १॥ तीरणसुं रथ फेर
चले प्रीया । ना जालुं ए काहिको ससावनो ॥ (सां० २ ॥
नव भव नेह निवाहो नेम तुम । याहीते कहा वदन दुरा
वणो । आनंद राजल याकी प्रीत कपटकी । भयो प्रीया
सुगत सखीको पावनो ॥ (सां०) ॥ इति पदम् ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (राग ललित) ॥ॐ॥

॥ॐ॥ आज ऋषभ घर आवै (देखो माई आ०) । रूप
मनोहर जगदानंदन । सबहीके मन भावै (दे०) ॥१॥ केई
सुगता फल याल विशाला । केई मणि माणक ल्यावै । हय
गय रथ पायक केईकन्या । लेप्रभु वेग वधावै (दे०) ॥ २ ॥
औंयेयांसं कुमर दानेसर । इक्षुरस दान वहिरावै । उत्तम
दान अधिक अमृत फल । साधुकीरत गुण गावै । (दे०) ॥३
इति पदम् ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (राग रामकली) ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अंगण कलप फलयोरी । हमारे माई (अं०) । ऋ
द्धि वृद्धि सिद्धि सुख संपति दायक । श्रीशान्तिनाथ मिलयोरी
(ह०) ॥ १ ॥ केसर चंदन मृग मद धोली । माहि वरास
मिलयो री । पूजित श्री शान्तिनाथजी की प्रतिमा । अलग
उदेग टल्योरी (ह०अं०) ॥२॥ सरणें राख कृपाकर साहिब
ज्युंपारियो पतयोरी । समय सुंदर कहै तुम्हारो कृपा

सें। ऊंरहिखुं सोहिलो री (ह० अ०) ॥३॥ इति पदम् ॥

॥ॐ॥ पुनः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ ऊठोनें मोरा आतमराम । जिन सुख जोवा ल
इयै रे ॥ जिनजीनो दरसण ठै अति दोहिलो । ते किम
सोहिलो जाणो रे । वार २ मानव भव एहवो । जुझवो
सुसकल टाणोरे ॥ (ज०) २ ॥ चार दिवसनो चटको मट
को । देखोनें मतराचौ रे । विनसी जातां वार न लागै ।
काया घट ठै काचोरे ॥ (ज०) २ ॥ अनन्तगुण भरिगो हे
जिनवर । पूरव पुण्यै पायोरे । एहनें देखी दिलमे आ
नन्द । करतुं सदा सवायो रे ॥ (ज०) ३ ॥ हीरो हाथ अमो
लक आयो । मूढ हिवै मति गमजोरे । सहज सलूणा
पास जिहंद जीउं । राजो ऊय चित रम ज्योरे ॥ (ज०) ४ ॥
मन मानीता माहरा आतम । करजे सुखत कमाईरे । लाभ
उदय जिनचंद्र लहीनें । वरतुं सिद्ध वधाईरे । (ज०) ५ ॥ इति

॥ॐ॥ (राग कीदारो) ॥ॐ॥

॥ॐ॥ भज मन नाभि नन्दन देव (भ०) ध्यान सुनोजन
अग्निग धारै । सुर नर करत है सेव ॥ (भ०) १ ॥ चक्रौ भूप
ति वप्रे सुरपति । वासुदेव बलदेव । नमत ब्रह्मा रुद्र मारद ।
सेस मणिधर सेव ॥ (भ०) २ ॥ असरन सरन है विरद जाको ।
भक्तिबल्लभ भेव । राजसिंह प्रभु कृष्णम सिरपर । नाथ है
नित मेव ॥ (भ०) ३ ॥ इति पदम् ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (ताल ठुमरी) ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ आवोनेम रह जावो सदन । हम कौन संतावो

रे (आ०) व्याहन आए सऊके सजन । पसुवन को सुन ।
देख रुदन । गिरनारि चले निज छाद्रि वतन । तक सीर
वतावोरे ॥ (आ०) १ ॥ पूनम जैसे चंद्रवदन । मनमोहन
मूरत-स्थाम वरन । मेरे नीकी लगी नव भवकी लगन ।
मती ठेह दिषावो रे (आ०) ॥ २ ॥ संयम दूती लागी अरण
प्रभुकुं सिखाये नीकी भवन । सब ऊठे पढ़ैगे कोल वचन
रथ फेरि न जावोरे (आ०) ॥ ३ ॥ कपूर कहै प्रभुजीकी चरण
राजुल मन वैराग धरन । लेऊं दोऊ नेम जिनजीकी सरण
सिरपुर तो बतावोरे (आ०) ॥ ४ ॥ इति श्रीनेमिनाथस्तवन
संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (खेमटा ताल दादरा) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अधम जगकाम भये आगीवान । हे ना निकला
सुखसे कभी भगवान ॥ यार नहीं देखा समो सरणा । किया
भवदधिमें उदर भरणा । दोऊजोलेते प्रभुसरणा । दूर दुख
होते जनम सरणा । बैठ भव वरमें लगाया नहीं ध्यान ।
राज सिवपुरमें ऊँचा अपमान । दूरो अब देखके काल खग
वान ॥ हि० ॥ १ ॥ नाम जो जिनके दान देते । तो आठुं मद तुम
से दूर रहते । यारजो जिनके चरण सेते । तो सषी सुमता
कों तुमें देते । रहे तप जपमें सदा जोसूर । वरैवो भव भव
अगम सुख भूर । करै कपूर करम चकचूर । देखा जिन
नूर ऊँचे दुख दूर । करो भव पार सुनो महरवान ।
नानि० ॥ २ ॥ इति जिनपद स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ॐ॥ (राग प्रीति) ॥ॐ॥

॥ॐ॥ आयो सही अब जाऊं कहां सरणागत कों
सरणागत तेरौ । 'आ०' तोह समान मिल्यो नहीं कोई ।
ढूँढ़ फिखो धरती सब हेरौ ॥ (आ०) होय दयाल महा
प्रभुजी अब । आन भई तुम से भट भेरी ॥ (आ०) १ ॥ दास
कल्याण करै वीनती सुन । पारसनाथ सुपारस भेरी ॥
(आ०) ३ ॥ इति पदम् ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (राग खाम्बाज) ॥ॐ॥

॥ॐ॥ वनै पल २ दिन २ निस दिन । प्रभुजी समरण
करलैरे । (व०) प्रभु समरण सब पाप कटत है । अशुभ करम
सब हरलैरे ॥ (व०) १ ॥ मन वच काय लगी चरणन नित
ज्ञान हियेमें धर लैरे ॥ (व०) २ ॥ दोलत राम प्रभु गुण
भावै । मनबंधित फल वरलैरे ॥ इति पदम् ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ शिखरगिरी स्तवन ॥ॐ॥

॥ॐ॥ तुमतो भले विराजो जी । सांवलिया महाराज
शिखरपर भले विराजो जी । तेरै घाटे चौको लागै । आ
वक जाण न पावै । ऊकम कियो औपासजिनेसर । बांह
पकड़ लेजावै ॥ (तु०) १ ॥ ऊँचा नीचा परवत सोहै । त
लै मिलन का वासा । पैर पैर पर सिंह भद्रकै । जिहां
लिया तुम्ह वासा ॥ (तु०) २ ॥ टूंक टूंकपर घना विराजै ।
जालरकै ऊणकारै । जालरकैऊणकार सेती । वानै अ
विचल वाजा ॥ (तु०) ३ ॥ दूर देशधी थावौ आवै । पूजा
आण रचावै । अष्टद्रव्य पूजामें लावै । मनबंधित फलपा

वै ॥ (तु०) ४ ॥ सुर नर सुनिवर वंदन आवै । सहा परम
सुख पावै । चंदखुसाल चरणको सेवक । हरष हरष गुण
गावै ॥ (तु०) ५ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥ ॥

॥ पुनः ॥

॥ ॥ शिखर गिरेंद्र जुहारो । निज पातक दूर
निवारो रे ॥ (भविचां सि०) ॥ इण सम तीर्थ न कोई । सैं
देखा सऊ जग कोई रे ॥ (भ० सि०) १ ॥ वीस जिनेसर आ
या । इहां मुक्ति पुरी सुख पाया रे ॥ (भ०) ॥ कोना को
नो सुनि सोचा । जिहां अजर अमर पद लीधा रे । (भ०)
वीस चरण जिन सोहै । भविजन चालक मनमोहै रे ॥ (भ०)
२ ॥ ध्रुव मठ मंदिर ठालै । जिहां पास प्रभु सचाराज रे ॥
(भ०) ३ ॥ पावन तीरथ एहवो । इहां संसय धरवो न केहो
रे (भ०) ॥ तीर्थ आसात न टालो । भविजन ठहरीवत पालो
रे ॥ (भ०) ४ ॥ नर भव लाहो लीजै । इण तीरथ नहिमा कौ
जै रे (भ०) । सय उगणीस ते तीसै । अगहन सुदि पंचमी
दीसै रे ॥ (भ०) ५ ॥ दूगल गोल खुहावै । भवि चंद गोविं
द गुण गावै रे (भ०) । जावा करौ मनरंगै । चंद शिखर
भणै अति चंगै रे ॥ (भ०) ६ ॥ इति शिखरगिरि स्त० ॥

॥ पुनः ॥

॥ ॥ सांवरिया जैसें वणै तैसें तारो ॥ (इस
चालमे) ॥ सांवरियामें दीठो दरस तिहारो । मेरी भव
भव बाधा टारो (सां०) अखुसेन नंदन जगवंदन । जगबंधव
जगप्यारो । नीलवरण द्युति श्रीजिनवरदी । वामा उद
र अवतारो ॥ (सां०) १ ॥ कसठ विहारण जिय खुस का

रण । तारण तरण निहारो । अलख अगोचर अगम अ
 रूपी । निर्दामक सत्यवारो ॥ (सां०) २ ॥ सिखर गिरी मं
 ढन जिनवरजी । अद्भुत महिमा वारो । करजोती
 दोउ वीनतों करत है । वुधसिंह अरजी धारो ॥ (सां०)
 ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

❀ ॥ पावापुरी स्तवन लि० ❀ ॥

❀ ॥ चरम प्रभु सरज हमारी धारो । मेरी आवाग
 मन निवारो (च०) (आंकली) ॥ सिद्धारथ कुल जनम लियो
 है । विसला उदर अवतारो । सुरगण कोट मिली सुरगि
 र पर । सुख महोद्वेग सारो ॥ (च०) १ ॥ वसुविध पूज
 रचत जिनवर कौ । सफल करत अवतारो । जय २ शब्द
 करत सुर नरवर । जय २ जगदाधारो ॥ (च०) २ ॥ बाल
 अवस्था अतुल बली प्रभु । सहजा अतिसय वारो । दिजा
 ले प्रभु केवलपायो । शोसंघ आनंदकारो ॥ (च०) ३ ॥ सु
 दर सूरत मोहनौ मूरत । नाथ निरंजन प्यारो । सीस
 सुगट सोहै अति हृदर । गल मोतियन को हारो ॥
 (च०) ४ ॥ समवसरत को अद्भुत महिमा । देखत नयन
 ठारो । भविजन चालक अति हरषावै । स्वामी नाथ नि
 हारो ॥ (च०) ५ ॥ चरम चोमासी पावा पुरि में । वीधी
 जग हितकारो । सोलै पहर लग अडग देसना । पदनिरवा
 ण पधारो ॥ (च०) ६ ॥ काल अनन्त भयो भव वनमें ।
 कहत न आवै पारो । अब तो प्रभुको सरण ग्रही में ।
 कवड न ठोडुं लारो ॥ (च०) ७ ॥ दूगड गौले इन्द्र चन्द्र

सुत । चंद्र गोविंद धमकारो ।। जावा करी प्रभुकी उठ
रंगै । जनम छातारथ मारो ।। (च० ८) । सय उगणी ते तीस
मनोहर । अगहन दसमी उजारो । सिपरचंद प्रभु सिव
सुख दायक । पूरव पुन्य जुहारो ॥ (च०) ९ ॥ इति पदम् ॥

॥५५॥ वैराग्य लावणी लिख्यते ॥५५॥

॥५५॥ जब तन दोली है इह मस्ती । काया मंगलकी ।
सासो स्वास समर लै साहिब । आउ घटे दिलकी ॥ १ ॥
(खबर नहीं है) जुगलें पलकी । सुझत करणा हो सी बर
लै । जुग जाणै कलकी (ख०) तारामंगल रवि चंद्रमा ।
सवही चलाचल की । दिवस च्यारका चमत्कार है । बीज
लियां भलकी ॥ (ख०) २ ॥ वो जुग है सुपनैकी माया ।
उस बूंद जलकी । बिनस जावतां वेरन लुगै । दुनियां जा
य खलकी ॥ (ख०) ३ ॥ हंसाया देहो में जब लैग । खुसी है
मज्जल की । हंसा ठांज चल्या जब देहो । मिटिया जङ्गल
की ॥ (ख०) ४ ॥ मनमावत तन चंचल हस्ती । मस्ती है
बलकी । सदगुरु अंकुस दीया अनका सातां भई सलकी ॥
(ख०) ५ ॥ मात पिता सुत बंधव भाई । सब जन सुतलब
की । काया माया सबे कारमी । ए तेरै कब की ॥ (ख०)
६ ॥ ऊठ कपट कर माया जोझौ । कर वातां ठलकी ।
बोझकी गांठ बंधौ सिर तेरे । कैसें होय हलकी ॥ (ख०)
७ ॥ देवधरम साहिब को समरण । ऐ वातां थलकी ।
राग द्वेष ऊपजै नही जिनकुं । वीनती अखेमलकी ॥ (ख०)
॥ इति लावणी संपूर्णम् ॥५५॥

॥३॥ पुनः ॥३॥

॥३॥ अरजं हमारौ सुणौ दीनपति । कौन भांति तिर
 शां । हम दुखी फिरत संसार चतुरंगति । सो तुमसैं निर
 ना ॥ (अ०) १ ॥ घोराघोर नरक कै भीतर । नाना दुख भर
 ना । मारन तापन छेदन भेदन । अर देख धरनां ॥ (अ०)
 २ ॥ कबहुँ तिरयंच योनि पायकै । गलै पौस परना ।
 जुधा टपा अन्न सीत उष्णता । मार मार करेनां ॥ (अ०)
 ३ ॥ देव शिबुन पायकै सुंदर । देख देख जुंरना । जब
 मालो सुर जावण लागी । सोच कियै मरनां ॥ (अ०) ४ ॥
 मनुषा जनम पायकै भटक्यो । काहुँ नाही धरनां । सा
 हिव तुम सरणागत राखी । जनम मरण करेनां ॥ (अ०) ५ ॥
 इति लावणी सं० ॥३॥ ॥३॥ ॥३॥

॥३॥ सुक्ति जाणेंकी डिगरी ॥३॥

॥३॥ (हुंहा) तिर्थङ्कर महावीरने । बौसल गणधर सांजे ।
 जानून प्रख्या है दया । सब जीवन हित कांज ॥१॥ दाने
 सील तप भावना । असल खुलासा सार । जिणपुरसां धा
 रण किया । मोहचा सुगति मज्जार ॥२॥ चवदै सहस साधु
 जबा । आर्या ठत्तीस हजार । लाखों आवक आवका ।
 पाया अब जल पार ॥३॥ (चाल चीर रंऊ का स्थालकी) ।
 ॥३॥ सेरो अदालत प्रभुजो कीजियै । जिन सासननायक मुगे
 ती जाणें की डिगरी दीजियै (जि० टेर) खुद चेतन सुदई
 बना है । आठुं करम सुदाला । दावा रस्ता सुगति मारग
 का । घोखा देजाय टालाजो (जि०) ॥१॥ तपे कागद इष्टाम

लिया । तलवांणां पिमा बिचारै । सिगुंथे ध्यान मज
सुंन वनांकर । अरजी आन गुजारी जी (जि०) ॥२॥ मे
जाता था सुंगति मारगमे । करसुंने आवेरा । घोखा दे
कर राह भुलाया । लुंठ लिया सब ढेराजी (जि०) ॥३॥ वो
हत खराब किया करसुंने । चौरासीकै मांहीं । दुख अन
ता पाया मेने । अंत पार कठु नांहीं जी (जि०) ॥ ४ ॥
सच्चे मिलै वकीलकानूनी । पंच महाव्रत धारी । सुल देख
मसोदा कौना । तवमें अरजी ढारी जी (जि०) ॥५॥ पांचे सु
मती तीन गुप्तीए । आठुं गवा बुलावो । सील असेसर बंदा
चौधरी । उसकुं पृठ मंगावो (जि०) ॥६॥ अरजी गुजरी चे
तन तेरी । जुवा सफीना जारी । हाजर आवे जुवाब लिखा
वो । लावोसावूती सारीजी (जि०) ॥७॥ आठुं मुदाले हा
जर आए । मोह सुग त्वार बुलाये । चारकषायर आठे मद
कुं । साथ गवाई मे लाए जी (जि०) ॥८॥ (टेर) ॥९॥ (सुदा
लैकी) ॥१०॥ जिनसासन नायक । ऊंठा दावा है चेतनजीव
का । (जि०) हमने नहीं भखाया इसकुं । ए हमरै धर
आया । करजा लेकर हमसे खाया । ऐसा करेव मचाया
(जि०) ॥ ६ ॥ विषयभोग में रमिया चेतन । घाटा नफा न
जाना । करजदार जब लारै लागा । तब लागा पिस्ताना
जी (जि० ऊ०) ॥१०॥ हाजर खदे गवाह हमारै । पूठि
यै हालजु सारा । बिनां लिवां करजा चेतनसे । कैसें करे
किनागजौ (जि०ऊ०) ॥११॥ (टेर) ॥१२॥ चेतन कहै सतावो
मांहीं । सुन सासन सिरदार । इमानदार है गवा हमारै ।
जाणें सब संसार जी । (जि०मे०) ॥ १५ ॥ में चेतन अनाथ

प्रभूजी । करम फरेबोभारी । जीव अनंते राह चलतकुं ।
 लूट चौरासीमें मारी जो (जि०) ॥ १३ ॥ बनेइ पंढत इण
 लुटे । ऐसा दम बतलाया । धरम कहा डर पाप कराया
 ऐसा करज चढायाजी (जि० मे०) हिंसा मांहीं धरम बता
 या । तपस्या सेतो ढिगाया । इंद्रिय सुखमें भगन करी
 ने । फूटा जाल फैलाया जो (जि० मे०) ॥ १५ ॥ ऐसा करो
 इनसाफ प्रभूजी । अपील होन नपावै । हक्करसी चेतनकी
 होवै । जनम मरण मिट जावैजो (जि०) । ग्यान दर्शन करी
 सुनसंफो । दोनुं कुं समजाया । चेतनकी ढिगरी करदीनी ।
 करसुं का करज बताया जो (जि०) ॥ १७ ॥ असल करज जो
 या कर्मोका । चेतनसेतो दिलाया । सुध संजम जद करी
 जमानत । आगैका सृध मिटाया जो (जि०) ॥ १८ ॥ आखव
 डोढ संबरको धारो । तपस्यामें चितलावो । जलदी करज
 अदा कर चेतन । सीधा सुगतिको जावो जी (जि० मे०)
 ॥ १९ ॥ सुध संजम जद करी जमानत । चेतन ढिगरी पाई ।
 फागुणसुद दसमी दिन मंगल । सन् उगणीसै अठाई जो
 (जि० मे०) ॥ २० ॥ इति श्रीवीरप्रभु बीनती संपूर्णम् ॥ २० ॥

॥ २० ॥ अथ अनुभव पद ढिगरी लि० ॥ २० ॥

॥ २० ॥ साहव अदालतपर बैठ । श्रीपारस प्रवीण अैन
 उत्तम चलाए है । सील है सिरदार और दान है दरोगा
 जाके दयारूपि वारण सत्तआवगण पर आए है । ग्यान
 है चपरासो ताको लग्यो है मोहोसल ताकी मानजामनोमें
 श्रीजिनवरजी लिखाये है । रोसको रसुम और कमीसेन

लगे कर्मनकुं मोहकुं म्याद इस तार लटकाए है ॥१॥ बैठकें
लिखैगा जब जीवकी जुवानवंदी तबके कुठ खाल जवाव
सत्तगुरनें वताए है । ठोऽ कारसाजी पायो पकऽगो अरि
हंत जीको अनुभवपद पायवैकी डिगरी कराय लाए है ।
अब तो दरकास मैनें करी है तुमारै पास साहब जिनरा
ज अरज मेरी सुणलीजीयै ॥ अष्टकर्म आठुं जाम करत है
कारसाजी साहब बुलाय इनकुं प्रिसे भान कौजीयै ॥ १ ॥
में तो झं गरीब मेरी करैगा उकौली कोन पारस प्रवीण
मेरी मिसल आज कौजीयै । हारं तो हाजर हजूरहीमे
रह्यां करं जीतूं तो लगाय जुगल चरननमें लौजीयै । अब
तो फरीयाद नाथ करी है तुमारै पास मेरी दाद दीजीये
तो रावरी वऽाई है । सुनसबकी बात ओर सामलत अदा
लतकी अबतोमें अफिलमांन अरजी लगाई है । ऊठ मूठ
कारसाजी करत है पांच तीन साचो मत जैन जाकी अन
अधिकाई है । मेरे ही पांच लोक मोहीकों ऊठावत
है जातै में ग्वाही ओजिनराजकी लिखाई है । ठोऽ
कारसाजी पायो पकऽगो अरिहंत जीको अनुभवपद पाय
वैकी डिगरी कराय लाए है ॥२॥ इति अनुभवपद प्राणें
की डिगरी संपूर्णम् ॥३॥ ॥४॥ ॥५॥

॥३॥ श्रीकुंधु जिनालय प्रतिष्ठा स्तवन ॥४॥

॥५॥ दादा चिरंजीवो (इस चालमें) । आज हर्षभयो
बिभुवन नायक कुंधु जिनेसर भेटिया ॥ (आ०) प्रभु मस्तक
सुगट विराजैठै । रवि जिस कुंऽल युगठाजैठै । गुणसगला

अंग समाजैठै (आ०) ॥१॥ प्रभु चौतीस अतिसय धारक
 ठै । बांणीना गुण विस्तारक ठै । सज्ज देवेंद्र जिणना पाथ
 कठै (आ०) ॥२॥ प्रभु सिंहासण पर सोहै ठै । जसु ठव
 चामर सिर होवै ठै । भवियणना मनकुंभोहै ठै (आ०)
 ॥३॥ प्रभु ध्यानं जे होय रंग राता । ते पांमं नवनिधि सुख
 साता । अवसानं सुक्तिपुरी पाता (आ०) ॥४॥ प्रभु कुगुरु
 कुदेवकुं मे ध्यायो । जव काल अनादी दुखपायो । अबतो
 तुम सरणं जं आयो (आ०) ॥५॥ प्रभु बिरुष तुम्हारा चित
 धरने । भव भय दालो सुनिजर करने । निम जगमें
 सज्ज जस तुम वरने (आ०) ॥६॥ संवत् उगणीसै इकतीसै ।
 जैठ उखल दसमी मन हीसै । करी चैत्य प्रतिष्ठा सुभ
 दीसै । (आ०) ॥७॥ प्रभु आज सफल भयो दिन मेरो ।
 रवि निम प्रगट्ठा बौकानेरो । सज्ज आनंदकारक संघ तेरो
 (आ०) ॥८॥ जिन हंस सूरिखुर माहाराजा । थाप्या अति
 सय धर जिनराजा । गुरु लक्ष्मीप्रधान सेवणकाजा (आ०)
 ॥९॥ इति विक्रमपुर मध्ये श्रीकुंथुनाथ जी चैत्यप्रतिष्ठा
 स्तवनम् ॥❧॥ ॥❧॥ ॥❧॥

॥❧॥ श्रीशीतल जिन स्तवन ॥❧॥

॥❧॥ (श्रीसंखेसर पासजिनेसर (इस चालमें) ॥❧॥
 श्रीशीतल जिणचंद अनंत गुणाकर । महा गोप महामा
 हण जगपति सुख कर । जगगुरु जगदाधार सरण तोरै
 सदा । रहतां स्वप्नमें दुख पांसुं नहीं जं कदा ॥१॥ तूही
 चिदानंद देव तूही सुऊगुरु अठै । तूही तात तूही मात

तुंही बंधवजठै । कांम धेनुं चिंतामणि सुरतब तुं सही
अक्षय सुख दातार तुंही पायो मही ॥ २ ॥ तुम नामें
अमृसिद्ध नवेनिध पाइयै । दिन २ बढतो तेज कीरति जग
भाइयै । इंद नरिंद सह्र वस होय तुम सेवतां । उल्लस
आनंद होय सह्रगुण कैवतां ॥ ३ ॥ तप जप संजम भार
कठू नहीं वणसकै । वज्रल कर्मकै जोर चित्त नहिं रहसकै
जो आतम गुण ग्यान प्रगट होय माहरो । तो पांडुं सज्ज
भेद छिनकमें ताहरो । ब्रह्मा विष्णु महेश जाणुं सुजसा
रषा । बीतरागतुं देव करीमें पारषा । दीनदयाल दया
निधि सिवसुख दीजियै । मोहन निजगुण पाय एही जस
लीजियै ॥ इति जगन्मंथन श्रीशीतलजिन स्तवन ॥ ❧ ॥

❧ ॥ पुनः ॥ ❧ ॥

❧ ॥ (श्रीसंखेसर पास०) (और) नदी जसुनाकै तीर
उटै दोय पंखिया । (म्हारा लाल उ०) इस चालमें ॥
❧ ॥ हठरथ नंदानंद पुरण अतिसय घरू । बदन कम
लको तेज देखी ठिपै दिन करू । अंग उपांग लक्षण
दीसै सज्ज दीपता । रूपै सुर नर इंद सह्रकुं जीपता
॥ १ ॥ मुगट कुंठल गलहार वाजू बंध सोहता । घस्रस्थ
ल श्रीवत्स तिलक मनमोहता । ठल चासर आमंठल गुण
सज्ज फरसता । अणियाला दोय नेव अमौरस वरसता
॥ २ ॥ देव भुवन जिम चैत्यवण्यो वज्र भाव से । देखी प्रफु
ल्लित होय सह्र गुण दावसे । अनुपम महमा देखि चित्त
अति मोहियो । आनंद अधिक अपार हिय में सोहि
यो ॥ ३ ॥ कुरुर कुदेव कुधर्ल सेव्यो वज्रकालमें । मोह

मिथ्यातकै जोर पड़ो बड़जालमें । पूरण पुन्य हिव जोग
प्रभु दरसण मिलयो । भवभय संकट दुक्ख सह्र निश्चै टख्यो
॥ ४ ॥ तारण भवजल मांहि शीतल प्रभु जाणियो । तुम
गुण अपरंपार हिया में पिठाणियो । सिवसुख लच्छी प्र
धान सेवक बट्टी भणी । मोहन प्रभु सुख कंद मिलै शीतल
घणी ॥ ५ ॥ इति किलकिलासंरण औशीतलनाथजी स्तवनम् ॥

॥ ॐ ॥ ताल ठुमरी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ वीर प्रभु तेरी दोस्तीमें । मेरी सुमता सखी मेह
रवान भई रे (बी०) आप नहीँ आवै बोधा पठावै । तेरी
सुरत कुरवांन भई रे ॥ (बी०) १ ॥ शासन नायक एहीँ अ
रज है । दीजै दरस वली वेर भई रे (बी०) आस दासकी
पूरन कीजै । चरण शरण लपटाइ रहै रे (बी०) ३ ॥ इति
पदम् ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ जिन जीसें मोरी० (इस चालमें) ॥ ॐ ॥ सदा
सहाई शांति जिनेसर भवदुख दूर गमाय (भलांजी भला
भव०) । विश्वशेनके कुलमें सुरतर । अचिराके नंद कहाय
(भ०) । जनम भूनि हथणा पुर जाके । खग लंठन सुख
दाय (भ० ॥ १ ॥ स०) ॥ तीस अधिक दस बहुष प्रमाणें ।
काया कंचन सोभाय (भ०) कुरुवंस कुल लाख बरस
स्थित । केवल ग्यांन बरदाय (भ० ॥ २ ॥ स०) गर्भ धकां
प्रभु शांति करी जब । शांतिनाथ पद पाय (भ०) भव भव
भमतां शरणे आयो । अबतो करियै सहाय (भ० ॥ ३ ॥ स०)

ज्युं पारेवा ऊपर तुमने। करुणा अधिक कराय (भ०) पर
तिख प्रभुपुर किल किलामे। सज्जन बांछित दाय (भ०
॥४॥ स०) सुक्तिकमल कहै शिवसुख दायक। संकट दूर पु
लाय (भ०॥ ५॥ स०) इति किलकिला मंजुन श्रीशांति
नाथजी स्तवनम् ॥४॥ ॥४॥

॥४॥ पुनः ॥४॥

॥४॥ प्रभुजीको महमा अजब बनौजी भारो मनप्रो
लियो रे लोभाय। (भलां जी भला मन प्रोलियो रे लो
भाय जी)। विश्वसेन अचराजीके नंदा। शांतिनाथ मन
भाय (भ० प्र०) मस्तक सुगट काने युग कुंजल। उर अं
गियां रहौ ठाय (भलां० प्र०) १ ॥ मोहनौ सूरत सोहनौ
सूरत। सज्जन कुं सुखदाय (भलां० प्र०) नाम ग्रहण कर
तां जिनजी को। सुरगण प्रदौ सज्ज प्राय (भलां० प्र०) २ ॥
ईत उपद्रव दुख सज्ज टालै। नितप्रति मंगल थाय (भ०)
सुक्तिकमल कहै सुरतख दरिखा। मनबांछित फल दाय
(भलां० प्र०) ३ ॥ इति द्वितीय शांतिनाथजी स्तवनम् ॥४॥

॥४॥ अथ काती महोन्नव बघाई लि० ॥४॥

॥४॥ रथ चढ जादु नंदन आवत है। (इस चालमे)
॥४॥ आज नगरमे हरख बघाई। समवसरण प्रभु आवत है।
(आ०) घरम जिनेसर जग परमेसर ॥ शांति सूरत मनभाव
त है (आ०) ॥१॥ अनुपम रयण जप्ती उर अंगियां। सुगट
कुंजल मन भावत है (आ०) ॥ २ ॥ ठल चासर भासंजल
दीपत। नवसर हार सुहावत है (आ०) ॥ ३ ॥ सरदशशि

सुख कमल विराजत । रविजिम तेज फैलावत है (आ०)
 ॥४॥ नर नारी सङ्ग अंग आभूषण । लुल लुल सीस नभा
 वत हैं (आ०) ॥५॥ मणि सुगता फल अन्नत श्रीफल ॥ भर
 भर घाल बघावत हैं (आ०) ॥६॥ वीणा ब्दंग ताल कंसा
 ला । मधुर धनी गुण गावत हैं (आ०) ॥७॥ सङ्गपुर इन्द्र
 घना अति दीपत । विविध बाजित सुहावत है ॥८॥ (आ०)
 इत्यादिक आलंकार बङ्गविध । कहतां पार न आवत है ॥९॥
 (आ०) कार्तिक सुद पूनम दिन छत्रव । देख सङ्ग सुख
 पावत है (आ०) ॥१०॥ घन्यभाग कलिकत्ता पुरमें । मोहन
 प्रभु गुण गावत है । (आ०) ॥ ११ ॥ इति कलकत्ता पुरमें
 कार्तिक महोत्सव गुण वर्णन श्रीधरमनाथ स्वामी बघाई
 संपूर्णम् ॥ ---॥❖॥ ॥❖॥ ॥❖॥ ॥❖॥

॥❖॥ अथ शासन नायक बघाई ॥❖॥

॥❖॥ (किसरियाने भगजको लोक० इस चालमें ॥❖॥
 हमारै आज आनंद बघाई । प्रभु बीरचरण सुखदाई ।
 (हमारै आज आनंद बघाई) ॥ सिद्धारथ नंदन जगवंदन ।
 विसला मात कहाई । जलौ कुंठमें जन्म लियो है । सुर
 नर आवै धाई (ह० आ०) ॥ १ ॥ कंचन वरण अधिक तन
 सीमत । लंछन व्याघ्र सुहाई । तीन ग्यान संयुत प्रभु कहि
 यै । भवियणकुं सुखदाई (ह० आ०) ॥२॥ किवल पाय सबी
 सुरसंगै । पावा पुरमें आई । समवसरण विच देसनादेतां
 परखदा बार बनाई (ह० आ०) ॥३॥ भूमंजल विच बङ्गत
 जीवजुं । खजल पार लंघाई । चरम चौमासि पावा पुरि

करकै । सिवपुर पंथ सिधार्ई (ह० आ० ॥४॥ चौरासी लख
जोनीमें फिरतां । काल अनादि गमाई । पुन्य संयोगे प्रभु
तुम भेद्या । पातिक दूर पुलाई (ह० आ०) ॥ ५ ॥ तारण
तरण भगतिजन बल्लल । सिवरमणी बरदाई । लक्ष्मी प्रधान
सेवै कर जोती । मोहन कहै सुखपाई (ह०) ॥६॥ इति
शासननायक बघाई संपूर्णम् ॥७॥ ॥७॥

॥७॥ अथ आवकको करणी लि० ॥७॥

॥७॥ आवक तूं ऊठे परभात । चारवती ले पिठला
रात । मनमें समरे अिनवकार । जिम लाभै भवसायर
पार ॥ १ ॥ कवण देव कवण गुरुधर्म । कवण हमारै
ठै कुलकर्म । कवण हमारै ठै व्यवसाय । एहवो चिं
तवजे मन मांह ॥ २ ॥ सामाइक लेजे मनगुडि । धरम
तणी धरी हियनै बुडि । पादिकमणो कर रयणी तणी ।
पातक आलोए आपणो ॥ ३ ॥ काया सगति करे पञ्चखा
ण । सूधी पाले जिनवर आण । भण जे गुण जे तवन
सिजाय । जिण डंतौ निसतारौ थाइ ॥ ४ ॥ चौतारे नित
चउदै नेम । पाले दया जीवै तां सीम । देहरै जाय जुहा
रे देव । द्रव्यत भावित कर जे सेव ॥ ५ ॥ पोसाले गुरु
वंदन जाय । सुणे वखाण सदा चितलाय । निरदूषन सूऊ
ता आहार । साधाने दीजे सुविचार ॥ ६ ॥ साहमी ब
ल्लल करि जे घणा । सगपण मोटा साहमी तणा । दुखी
या हीणा दीना देष । करि जे तास दया सु विसेष ॥ ७ ॥
घर अनुसारै दीजे दान । मोटांसूं मकरे अभिमान । गु

रत्न सुख लेजे आखट्टी । धरम न मेलहे एका घट्टी ॥ ८ ॥
 वाहुसुद्ध करे व्यापार । उठा अधिकानों परिहार । मभरे
 कहनी कूट्टी साष । कूट्टासोंस कथन मत भाष ॥ ९ ॥ अ
 नंतकाय कहियै वत्तीस । अभक्ष वावीसे विसवा वीस । ते
 भक्षण न करी जै किमै । काचा कवलाफल मत जिमै ॥ १० ॥
 रात्रीभोजननो बड़ दोष । जाणीनै करिजे संतोष । साजी
 साबू लोहने गुली । मधु घाहट्टी मवेचे वली ॥ ११ ॥ व
 लि मकरावे रंगण पास । दोषण घणा कछ्या ठैतास ।
 पाणी गल जे बेबे वार । अणगल पौधां दोष अपार ॥
 ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करे जतन । पातक ठोटी करिजे
 पुन । ठाणां इंधण चूलहै जोय । वावर जे जिम पाप न
 होइ ॥ १३ ॥ घृतनीपर वावर जे नीर । अणगल नीर मधो
 ए चीर । वारै व्रत सूधा पाल जे । अतीचार सगला टाल
 जे ॥ १४ ॥ कहिया पनरै करमा दान । पाप तणी पर ह
 रि जे खान । सीस म लेजे अनरथ दंढ । मिथ्या मैल मभ
 रिजे पिंढ ॥ १५ ॥ समकित सुद्ध हीयट्टी राख जे । बोल
 विचारीने भाष जे । उत्तम ठामे खरचे वित्त । परउप
 गार करे शुभचित्त ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूधनै दही ।
 उगघाट्टा मतमेले सही । पांचे तिथ मकरे आरंभ । पाले
 सील तजे मनदंभ ॥ १७ ॥ दिवस चरम कीजे चउविहार ।
 च्यारे आहार तणौ परिहार । दिवस तणा आलोए पाप ।
 जिम भाजै सगला संताप ॥ १८ ॥ संध्या आवस्यक साच
 वे । जिनवर चरण सरण भव भवे । च्यारे सरणां दृढ
 करि रए । सागारी अणसण ले सुए ॥ १९ ॥ करे मनोरथ

मन एहवा । जाऊं तीर्थ सेलुं जे जेहवा । समेत सिखर
आबू गिरनार । भेटौंस कवड्डं धन अवतार ॥२०॥ आवक
कौ करनी ठै एह । एहथी थायै भवनो ठेह । आठे कर
म पट्टै पातला । पापतणा ठूटै आमला ॥२१॥ वारू लहीयै
अमर विमान । अनुक्रम पावै सिवपुर थान । कहै जिन
हर्ष धणें ससनेह । करणी दुखहरणी ठै एह ॥ २२ ॥ इति
आवककै अहनिशि कर्त्तव्य संपूर्णम् ॥॥ ॥॥

॥॥॥ श्रीपार्श्वजिन स्तवन लि० ॥॥॥

॥॥॥ सुण अर दासा सुगुण निवासा । अमचीपूरो प्र
भु आसाराज (सु०) देख उदासा अपणा दासा । दीजै कठु
क दिलासाराज ॥ १ (सु०) ॥ चाट्टी चटकी भव मांहे भ
टकी । नाच्यौ में विघ नटकी राज (सु०) हिव मन चटकी ।
आपसुं अटकी । लागुं प्रभुपाय लटकी राज ॥ २ (सु०) ॥
ते हम टाली सुगत संभाली प्रीत अमे हीज पाली राज
(सु०) एक हथाली वाजै ताली । वात अचंभा वाली राज ॥
३ (सु०) ॥ ते उपगारी पास तुम्हारी । सेवामें विघ सारी
राज (सु०) तत्व विचारी मन सुघ घारी श्रीधमसी सुख
कारी राज ॥ ४ (सु०) ॥ इति श्रीपार्श्व जिन स्तवनम् ॥॥॥

॥॥॥ अथ चौपड खेलन विचार स्तवन लि० ॥॥॥

॥ ॥ (राग सोरठी) ॥॥॥ अरे माहरा प्राणीया
(चतुर नर) चौपड द्रणविघ खेलरे । असुभ करम मलजा
रकै (च०) । जाजम कर वैराग रे । वट्टीय विठायत वैस

जो (च०) । जहां नहीं कुमतिको लाग रे (अरे०) ॥ १ ॥
 दानसील तप भावना (च०) ॥ चौपड एह पसार रे । आठ
 दाव एक बोल में (च०) ॥ आठुंई करम निवार रे ॥ २ ॥
 (अरे०) देव गुरु धर्म तीनुं भला (च०) । पासा एही जाण
 रे । अवसर कर हाथे लीया (च०) ॥ उज्जल लेखा आण रे
 ॥ ३ ॥ दरसण ग्यांन चारिब भला (च०) । तीनुंई गुपती वि
 चार रे । नव तत्व सात हिरदे धरो (च०) । एसब सोला
 सार रे ॥ ४ ॥ (अ०) पडा अठारै रहणदे (च०) । पोवारा ब्रत
 धार रे । दस लक्षिण दस धरम है (च०) । हितकर हीये
 विचार रे ॥ ५ ॥ (अ०) षट्काया ठकनीपनी (च०) । हिरदै
 दया विचार रे । पुन्य उदै पंजनी पनी (च०) । पंच महा
 ब्रत धार रे ॥ ६ ॥ (अ०) चार तीन काणा पडा (च०) । सा
 तुंई विसन निवार रे । जे दुरगति दायक सही (च०) ।
 वाधे अनंत संसार रे ॥ ७ ॥ (अ०) चिडंगति वाजी लग
 रही (च०) । दुख सझा भरपूर रे । करमकटै सुख उपजै
 (च०) । रतनसागर कहै सूर रे ॥ ८ ॥ (अ०) इति श्रीचौपड
 खेलन हित उपदेस सिञ्जाय संपूर्णम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ सेबुंज खेलन विचार स्तवन लि० ॥ ॥

॥ ॥ सेबुंज खेल खिलारी । सब समझ देख सेबुंज
 की घात । लख दोउं दल अपने परायै की जात । काज
 विध कर मोह बादस्याहकों मात । जब जाणुं ताय चतुर
 खेलन खिलार (हे से०) ॥ १ ॥ आठुं कर्म प्रियादे आगे ऊक
 तेही आवै । काम क्रोध गज चलत थंभत नहिं थंभै । लोभ

जंठ चारुं खूंटकी मरोद्र चल ध्यावै । मान मायाके
तुरंग चाल चपल दिखावै । मिथ्या मत सो वजीर वीर
वाकै ढंग ठाढो । वाकै मारवैकों दल अपनो संभार (हे
से०) ॥१॥ तेरो ग्यान सो वजीर वीर तेरे ढंग ठाढो ।
आठों अंग समकितके पियादे हलकारो । त्याग सांढिया
सवार पर सांढियां को ढारो । सत्य वचन तुरंगसुं तुरंग
निवारो । क्षमासील दोय फील राखो दलकै अगाढी ।
परदल कर ढारो छिन में संहार (हे से०) । जप तप सत
व्रत याकै घेरै चिह्नं डर । जब वाकै चलणें की काइ रहै
नइं ठोर । जब तेरी होगी जीत दूजो हारैगो खेलारी ।
जब सुजस को तेरैमिर वधैगो मोद्र । ठाढे इंद्र धरणिंद्र
तोरे ढोलैंगे चवर । तेरो भजन भजैगौ गुण अगाह (हे
से०) ॥३॥ इति सज्जनपुरषोंकै सेवुं ज खेलन विचार
संपूर्णम् ॥

॥॥ अथ श्रीमहावीर खामीको पारणो लि० ॥॥

॥॥ (दुहा) ॥॥ श्रीअरिहंत अनन्त गुण । अतिसय
पूरणगाव । सुनि जे ज्ञानी संयमी । ते कहौवै उत्तम पाव ॥
१ ॥ पाव तणी अनुमोदना । करतौ जीरणसेठ । आवक
अच्युतगति लहै । नव ग्रैवेकांहेठ ॥२॥ दस चउमासा वीर
जी । विचरत संयम वास । वेसालापुर आवीया । इग्यारमी
चौमास ॥३॥ ढाल एकवर घोडा हाथीया जी (एहनी)
॥॥ चौमासी एह इग्यारमी जी । विचरत साहस धीर ।
वेसालापुर बाहिरै जी । आव्या श्रीमहावीर ॥ १ ॥ (जगत्

गुरु विसला नन्दन जी । भलैमें मेघा श्रीजिनराय । सखी
 री चौक पूरावो आय । मेरै भाग अनोपम धाय ॥ (ज०) २॥
 बलदेवनो छै देहरौ जी । तिहां प्रभु कावसगा लीष । प्रभु
 कखाण चउमासनो जी । खामी एतप कौष (जग०) ॥ ३ ॥
 जीरणसेठ तिहां रहै जी । पालै आदक धर्म । आकारै ति
 णं डलखा जी । जाणै श्रीजिन मर्म ॥ (ज०) ४॥ आज अठै
 उपवासीवा जी । खामी श्रीवधमान । कालिह सहै प्रभु
 लीम स्यै जी । सैं हथ देखुं दान ॥ (ज०) ५॥ रुद्रा सेठ इम
 चै तवै जी । होसी सफल सुऊ आस । पक्षमास गिरतां ध
 कां जी । पूरीधई चउमास ॥ (ज०) ६॥ सामग्री आहारनी
 जी । जीरण कौष तयार । प्रभुनो मारग देखतो जी । बैठो
 घरनै बार ॥ (ज०) ७॥ घरि आवै छै प्राज्ञणा जी । निज्जत्या
 एकएवार । प्रभुजी कान मधारसी जी । मै निज्जत्या वारंवा
 र ॥ (ज०) ८॥ पीठै करिखुं पारणौ जी । जूं प्रभुनै प्रदिलार
 म । होय मनोरथ एहवो जी । तोय विनवरसै आभ ॥ (ज०)
 ९॥ अवसर ऊठा गोचरै जी । श्रीसिद्धारथ पृत । वेसाला
 पुर आवतां जी । पूरण बरेय पद्धत ॥ (ज०) १०॥ मिथ्यात्वी
 जाणै नहीं जी । जंगरु तीरथ एइ । चेत्तिनै कहै एहवो जी
 काइका भित्ता देह ॥ (ज०) ११॥ चाटुभरनै बाकुला जी । प्र
 भुनै आणी दीष । जीरणौ तेही लीया जी । तिहां प्रभु मा
 रणो लीष ॥ (ज०) १२॥ देव बजावै हुंहुसौ जी । जय बोलै
 करजोति । हेम दृष्टिहई तिहां जी । लटौबारह कोति ॥
 (ज०) १३॥ कहौ सेठ हम्हैखुं दौयौ जी । कीदौ पारणो वी
 र । लोकां प्रते इम कहै जी । मे वैराई क्षीर ॥ (ज०) १४॥

राजादिक महु एकहैं जी । धन धन पूरण मेठ । ऊंचै क
रणी तैं बरी जी । अवर रुह तुज हेठ ॥ (ज०) १५॥ जीर
ण मेठ सुगै तवै जी । वाजित दुंदुभी नाद । अन्न कीयो
किछां पारणो जी । मनमें धयो विप्रवाद ॥ (ज०) १६॥ ऊं
जगमें अभागियो जी । मेरै नाया सांस । कल्पवृक्ष किस
पामोयै जी । मारु संतल ठाम ॥ (ज०) १७॥ जेता मनोरथ
में सोया जी । तेता रक्षा मनसाहि । निरधन जिस जिस
चिंतवै जी । तिस तिस निरफल याहि ॥ (ज०) १८॥ स्वामी
तिहां कीयो पारणो जी । कीयो अनेध विचार । आया पा
म संतानीया जी । तिहां सुनि केवल धार ॥ (ज०) १९॥ वे
सागापुर राजीया जी । लोकासुं आगंद । राय प्रभु पृठे
तिहां जी । सुगुरु चरण अरविंद ॥ (ज०) २०॥ मेरै नगरमें
को अठे जी । जीवपुन्य जसवंत । कहै केवली आजतो जी
जीरण मेठ मरंत ॥ (ज०) २१॥ राय कहै किण कारगै
जी । जीरण सेठ मरंत । दान दीयां जिनवीरनें जी । पूरण
ते जसवंत ॥ (ज०) २२॥ राय प्रभु कहै केवली जी । पूरण
दीनो दान । हेमदृष्टि फल तेजनें जी । अवरन कोई प्रमा
ण ॥ (ज०) २३॥ देवलोकां तिण बारमें जी । जीरण घानयो
बंध । प्रिया दान दीना लख्यो जी । उत्तम फल संबंध ॥ (ज०)
२४॥ जलौ एक मुर दुंदुभी जी । लो न मुगं तो कान । न
हि तो जीरण तो मही जी । केवल अविचन ठाग ॥ (ज०)
२५॥ गज्जा जीरणनें दीयां जी । अधिक मान समान । न
नगरमें छायेही जी । लोयो पुन्य प्रमाण ॥ (ज०) २६॥
दान दीयां सुपाखमें जी । ते निरफल नहि आय । पावदान

अनुमोदतां जी । जीरण जिम फल थाय ॥ (ज०) १७ ॥ इस
जाणी अनुमोदनाजी । दान सुपाव रसाल । दान देवै सुपा
वनें जी । तेहनें नमे सुनिमाल ॥ (ज०) १८ ॥ इति श्रीम
हावीरखामीको पारखो संपूर्णम् ॥ ११ ॥

॥ ११ ॥ अथ सब पापादिक आलोयण स्तवन लि० ॥ ११ ॥

॥ ११ ॥ वेकरजोडी वीनवूं जी । सुणि खामी सुविदौत ।
कूट कपट मूकी करीजी । वात कड आपवीत ॥ १ ॥ (दुपा
नाथ सुऊ वीनती अवधार) तुं समरथ विभुवन धणी जी ।
सुऊने दुत्तर तार ॥ (द०) १ ॥ भवसायर भसतां थकां जी ।
दीठा दुःख अनन्त । भाग संयोगे भेटौयो जी । भय भंज
ण भगवंत ॥ (द०) २ ॥ जे दुख भांजे आपणो जी । तेहनें
कहीये दुःख । परदुख भंजण तं सुखो जी । सेवकने द्यो सु
क्व ॥ (द०) ३ ॥ आलोयण लोधां पखै जी । जीव रुलै संसार ।
रूपी लच्छणा महासती जी । एह सुखो अधिकार ॥ (द०) ४ ॥
द्रुसम कालें दोहिलोजी । सुधो गुरु संयोग । परमारथ प्री
ठै नही जी । गदर प्रवाही लोग ॥ (द०) ५ ॥ तिण तुऊ आ
गलि आपणा जी । पाप आलोक आज । माय वाप आग
लि बोलतां जी । बालक केही लाज ॥ (द०) ६ ॥ जिन धम
रस कहै जी । थापै अपणी वात । सामाचारो जू जूई जी
संसय पट मिथ्यात ॥ (द०) ७ ॥ जाण अजाण पणै करो
जी । बोलया उत्तमूख बोल । रतने काग उजावतां जी । हा
खो जनम निटोल ॥ (द०) ८ ॥ भगवंत भाव्यो ते किहां ओ
किहां सुऊ करणो एह । गजपाखर खर किस सहै जी । स

धल विमासण तेह ॥ (क०) १० ॥ आप पहपुं आकरो जी
 जाणै लोक महंत । पिण न करं परमादीयो जी । मासाह
 स दृष्टांत ॥ (क०) ११ ॥ काल अनंत मै लह्या जी । तोन र
 तन ओकार । पिण परमादै पाप्मिया जी । किहां जई करं
 पुकार ॥ (क०) १२ ॥ जाणुं उच्छष्टी करं जी । उद्यत करं
 अ विहार । धीरज जीव घरै नहीं जी । पोतै बड़ संसार ॥
 (क०) १३ ॥ सहज पद्यो सुज आकरो जी । नगमे रूप्तीवा
 त । परनंद्या करतां थकां जी । जायै दिनने रात ॥ (क०)
 १४ ॥ किरिया करतां दोहिली जी । आलस आणै जीव ।
 धरम पखै धंधै पद्यो जी । नरगै करस्यै रोव ॥ (क०) १५ ॥
 अण्डांता गुण को कहै जी । तो हरपुं निस दीस । वो
 हितसीख भली कहै जी । तो मन आणुं रोस ॥ (क०) १६ ॥
 वाद भणौ विद्या भणौ जी । पर रंजण उपदेस । मन संवेग
 धख्यो नहीं जी । किम संसार तरेस ॥ (क०) १७ ॥ सूत्र सिद्धांत
 वखांणतां जी । सुणतां करम विपाक । खिण एक मनमांछि
 ऊपजै जी । सुज मरकट वैराग ॥ (क०) १८ ॥ त्रिविधरू क
 रि ऊचरू जी । भगवन्त तुम्ह हजूर । वारवार भांजुं वली
 जी । ठूटकवारो दूर ॥ (क०) १९ ॥ आपकाजि सुख राचि
 तां जी । कीधा आरंभ कोट । जयणा न करी जीवनी जी
 देव दयापर डोट ॥ (क०) २० ॥ वचन दोष व्यापक कह्या
 जी । दाख्या अनरथ दंढ । कूट कपट बड़ केलवी जी । व्रत
 कौधा शतखंड ॥ (क०) २१ ॥ अण दोषो लीजै बिणो जी ।
 तोहो अदत्तादान । ते दूषण लागा घणाजी । गिणतां नावै
 ग्यान ॥ २२ ॥ (क०) चंचल जीव रहै नहीं जी । राचै रम

शो रूप । काम विटवण सौ कडं जी । ते तूं जाणै सहप ॥
 २३॥ (कृ०) माया ममता मै पडोजी । कौधो अधिको लोभ
 परग्रह मेस्यो कारमो जी । न चढी संयम सोभ ॥ २४ ॥
 (छ०) लागा सुऊनै लालचै जी । रातौ भोजन दोष ।
 मै मनसूँक्यो माहरो जी । न घस्यो धरम संतोष ॥ २५ ॥
 (छ०) इण भव पर भव दूह व्याजो । जीव चौरासौ लाष ।
 ते सुऊ मिथ्यामि दुकडंजी । भगवंत तोरौ साष ॥ २६॥ (कृ०)
 करमा दांन पनरै कछ्याजी । प्रगट अढारै पाप । जेमै को
 धा ते सहजो । बगसई माई बाप ॥ २७॥ (कृ०) सुऊ आ
 धारठै एतलोजी । सरदहिणाठै सुड । जिन धम मीठो जग
 तमेंजी । जिस साकरनै दूध ॥ २८ ॥ (कृ०) रिषभदेव तुं
 राजीयोजो । सेलुं जगिनि सिणगार । पाप आलोया आप
 णाजी । करप्रभु मोरी सार ॥ २९ ॥ (छ०) मर्म एह जिन
 धर्मनो जी । पाप आलोयां जाय । मनसुं मिथ्यामि दुकडं
 जी । देतां दूर पुलाय ॥ ३० ॥ (छ०) तुं गति तुं मति तुं धणौ
 जी । तुं साहिब तुं देव । आणधरुं सिरताहरी जी । भवई
 ताहरी सेव ॥ ३१ ॥ ॐ ॥ (कलशः) ॥ ॐ ॥ इम चढीय सेलुं ज
 चरण भेद्या नाभि नन्दन जिनतणा । करजोडि आदि
 जिणंद आगै पाप आलोया आपणा । श्रीपूज्य जिनचंद
 सूरि सदगुरु प्रथम शिष्य सुजस वणै । गणि सकल चंद
 सुसीस वाचक समयसुंदर गणि भणै ॥ ३२ ॥ इति आलो
 यणागर्भित श्रीऋषभदेवस्वामी स्तवनं ॥ ॐ ॥

॥४॥ अथ भव के पापकर्म दूर करनेको पद्मावती
की सिद्धाय लि० ॥४॥

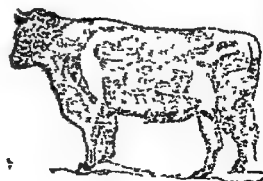
॥४॥ हिवै राणी पदमावती । जोवरासिखमावै । जाण
पणुं जगदोक्तिलो । इणवेला आवै ॥१॥ (ते०) सुज मिहामि
दुक्कणुं । अरिहंतनी साप । जेमें जोवविराधिया । चउरासी
लाप ॥२॥ (ते०) सात लाप प्रथवोतणा । साते अप्पकाय ।
सातलाप तेऊकायना । सातेवली वाय ॥३॥ (ते०) दस प्रत्ये
कवनस्यति । चउदह साधारण । विति च उरिंद्री जीवना
वेवेलाप विचार ॥४॥ (ते०) देवता तिरयंच नारकी । चार
प्रकासी । चउदह लाप मनुष्यना । एलापचउरासी ॥५॥
(ते०) ॥ इण भव परभव सेविया । जे पाप अटार । विप्रिध
करिपरिहृक् । दुरगति दातार ॥६॥ (ते०) हिंसा कीधी जी
वनौ । बोलया मिरपावाद । दोष अदत्तादानना । मैथुन उन
माद ॥७॥ (ते०) परिग्रह सेल्यो कारिमो । कीधो क्रोध
विसेप । मान साया लोभमे कीया । वलि रागने द्वेष ॥
८॥ (ते०) कलहकरी जीव दृहव्या । दीधा कूना कलह ।
निन्दा कोधी पारको । रति अरति निस्संक ॥९॥ (ते०) चा
नी खाधी चैतरे । कीधो घांपण मोमो । कुगुरु कुदेव कु
धर्मनो । भलो आण्यो भरोसो ॥१०॥ (ते०) पाटकीनें भव
में किया । जीवना बधवात । चिन्तीमार भव चिह्नकला
माखा दिनगति ॥११॥ (ते०) माठीगरभव माठना । ऊ
ग्या लजवास । धीवर भील कोलीभवे । गृग माग्या पास
॥१२॥ (ते०) काजी मुझाने भवै । पटी मंथ कठोर । जीव
अनेक जने किया । कीधा पाप अघोर ॥१३॥ (ते०) कोटवा

लनें भवमे' किया । अकराकर दंष्ट्र । बंदिवांन मराविया ।
 कोरनाठनी दंष्ट्र ॥ १४ ॥ (ते०) परमाधरमीनइ' भवे ।
 दीधा नारकी दुक्ख । ठेदन भेदन वेदना । तादृणा अति
 तिक्ख ॥ १५ ॥ (ते०) कुंभारनें भवमे' कीया । निम्माह पंचा
 स्या । तेलौ भव तिल पीलौया । पापी पेट भराय ॥ १६ ॥
 (ते०) हालीनें भव हल खड्या । फाड्या पृथवी पेट । सूड नि
 दान बणा किया । दीधा बलघचपेट ॥ १७ ॥ (ते०) मालीनें
 भव रोपिया । नानाविध वृक्ष । मूल पत्र फल फूलना । ला
 गा पापना लक्ष ॥ (ते०) १८ ॥ अधोवाद् अंगमी । भद्या
 अधिकाभार । पोठी जंठ कौडा पडा । दया नावीलिंगार ॥
 (ते०) १९ ॥ ठौ'पाने' भव ठेतखो । कीधा रांगणि पास ।
 अग्नि आरंभ कीया वणा । धातुरवाद अभ्यास ॥ (ते०)
 २० ॥ सूरपणें रण ऊऊतां । माद्या मांससदृष्ट । मदिरा
 मांस भक्षा वणा । खाधा मूलनें कन्द ॥ (ते०) २१ ॥ खाण
 खुणावोधातुनी । पाणी जलंच्या । आरंभ कीधा अति व
 णा । पोतै पापज संच्या ॥ (ते०) २२ ॥ अंगार कर्म किया
 वली । धरमेंद्व दीधा । सुंसलेई वौतरागना । कूटाको
 सज पीधा ॥ (ते०) २३ ॥ विल्ली भव उंदरुलिया । गौलो
 ई हत्यारी । मूढगमार तणें भवे । में जूं लीख मारी ॥
 (ते०) २४ ॥ भाद्र भूजातणें भवे । एकन्द्री जीव । उवारि चि
 णा गड्ड सेकिया । पादंता रीव ॥ (ते०) २५ ॥ खांण पी
 सण गारना । आरंभ अनेक । रांधण इंधण आगिना ।
 कीया पाप उदेग ॥ (ते०) २६ ॥ विकथा च्यार कीधी व
 ली । सेव्या पंच प्रमाद । इष्ट विद्योग पद्यां किया । रोदन

विषवाद ॥ (ते०) २७ ॥ साधु अने आवक तणा । बत लेई
भागा । मूल अने उत्तर तणा । दूषण सुऊ लागी ॥ (ते०)
॥ २८ ॥ साप विहू सिंह चीतरा । शिकराने शमली ।
हिंसक जोव तणे भवै । हिंसा किधी सवली ॥ (ते०) २९ ॥
सूआवत दूषण घणा । बलि गरभ गलाव्या । जोदाणी
ढोल्या घणा । सौलवत भंजाव्या ॥ (ते०) ३० ॥ भव अनंत
भसतां थकां । कौद्या कुटंब संबंध । निविध २ करि बोसहं ।
तिणसुं प्रतिबंध ॥ (ते०) ३१ ॥ इण भव परभव इण परै ।
कीधा पाप अखल । निविध २ करि बोसहं । कहुं जनम
पवित ॥ (ते०) ३२ ॥ राग वैराग्यो जे सुणे । एवीजी ढाल ।
समय सुन्दर कहै पापघी । छुटै ततकाल ॥ (ते०) ३३ ॥
इति श्रीआलोचन सिद्धाय संपूर्णम् ॥ ॥

॥ ॥ पापकृत्यकौ आलोचन श्रीसंघकों
सदा करणी चाहिये ॥ ॥

॥ ॥ आलोचन करते ऐसे तिर्यं च पिण
देवलोक कों प्राप्त होते है ॥ ॥





॥ ॐ ॥ सकल गुणगरिष्ठान् सत्तपोभि र्वरिष्ठान् ।
 शम दमय मनुष्टांश्चारुचारिण निष्ठान् । निखिल जगति
 पीठे दर्शितात्मा प्रभावान् । मुनिप कुशलसूरीन् स्थापया
 म्यत्र पीठे ॥१॥ ॐ श्रीं श्रीजिन कुशलसूरिगुरो अ
 वावतरावतर स्वाहा ॥१॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरि
 अत्र तिष्ठ ठः ठः स्वाहा ॥ॐ॥ इति प्रतिष्ठापनं ॥ॐ॥ २॥
 ॥ॐ॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीजिनकुशल सूरिगुरो अत्र मम सन्नि
 हितो भव वषट् ॥ॐ॥ इति सन्निधौ करणं ॥ॐ॥ ३ ॥

॥ ॐ ॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ (द्रुहा) गंगाजल तिम नृवलवलि । तीर्थोदक
 भरपूर । कलशभरी गुरु चरणपर । ढालै तस दुखदूर ॥१
 ॥ॐ॥ (ढाल) देशीसूरती महीनांनी ॥ॐ॥ गंगाजल अति
 निरमल अमल सुकमलै पूर । खीरोदधि वरदधि ज्यौं उ
 ज्जल जलभरपूर । तेह उदकवलि तीर्थ नीर भरि कलश
 सनूर । गुरुचरणे जे ढालै ढालै दुकृतदूर ॥१॥ ॐ श्रीं
 श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरु चरणकमलेभ्यः जलं निर्वपामि
 ते स्वाहा ॥ॐ॥ इति जलपूजा ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ चंदन पूजा ॥ॐ॥

॥ॐ॥ बावन्ला चंदन अंगर । वस केसर धन सार ।
 चरचै ले गुरु चरणनै । पांसें जै जैकार ॥१॥ (ढाल) ॥ॐ॥
 मलयांगर तिम अंगर चंदन बलिकेसर सार । कस्तूरी
 अतिगंधै पूरी वस धनसार । कुसल सूरि गुरुचरणे चरचै
 चढतै भाव । सकल रोग तन सोग हरै बलि जप्तता भाव
 ॥२॥ॐ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीनिज कुसलसूरिगुरुः चरण कम
 लेभ्यः चंदनं निर्वपामि ते स्वाहा ॥३॥ इति चंदन पूजा ॥

॥ॐ॥ पुष्प ॥ॐ॥

॥ॐ॥ केतकि चंपक फूल यी । पूजै जे गुरुपाय । तसु जस
 सूर उदै ज्यै । अपजस तिमिर नसाय ॥१॥ॐ॥ (ढाल) ॥ॐ॥
 चंपक केतक मलबो दमन सेवती फूल । जाई जूई मोगरो
 मालती तेम उमूल । कमल गुलाब चंबेली बेली परनल
 पूर । गुरुचरणे जे होवै होवै जस ज्यूसूर ॥२॥ ॐ ह्रीं
 श्रीं श्रीनिजकुशलसूरिगुरुः चरणकमलेभ्यः पुष्पं निर्वपा
 मिति स्वाहा ॥३॥ इति पुष्पपूजा ॥३॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अक्षत ॥ॐ॥

॥ॐ॥ उज्जल ज्यो शशि अंकविण । खंडित नहीं वि
 शाल । अक्षत गुरुचरणे ठवै । तसु घर मंगल माल ॥१॥
 ॥ॐ॥ (ढाल) ॥ॐ॥ सरल सुगंधित तंदुल उज्जल जल उत्
 पन्न । ज्युंवर मोती आभा झंती उज्जलवन्न । जलघोई
 ससमोई साई अक्षत नय्य । खस्तिज कुशल वधावै पावै
 मंगल भव्य ॥२॥ॐ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीनिज कुशलसूरिगुरुः
 चरणकमलेभ्यः । अक्षतं निर्वपामि ते स्वाहा ॥३॥ इति

॥ॐ॥ दीपं ॥ॐ॥

॥ॐ॥ कंचन मणिमय रत्ननौ । दीवी कर घृतपूर । वा
ती मौली सूत घर । करौ प्रदीप सुनूर ॥ १ ॥ॐ॥ (ढाल)

॥ॐ॥ कंचन घटित जटित गति नानाविध नवरत्न । दीवी
अतिकारीगर कौवी अधिकै यत्न । घृतपूरी ससनूरी मौ
ली वाती जोय । दीप करै गुरु आगै ज्योत उद्योती होय
॥ २ ॥ॐ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरुः चरण कम
लेभ्यः दीपं निर्वपामि ते स्वाहा ॥ॐ॥ इति दीपपूजा ॥५॥

॥ॐ॥ धूपं ॥ॐ॥

॥ॐ॥ बावन्ना चंदन अगर । सेल्लारस वनसार । धूपै
जे गुरु धूपयो । तस घर रिधविसतार ॥ १ ॥ॐ॥ (ढाल) ॥ॐ॥
अगर चंदन सेल्लारस ठांठ ठांठीलौ मेल । कपूर काचरी
वलि वनसारै षडमद भेल । धूप अडंग करौ गुरु धूपै च
ढते चित्त । ते नरवित्त सुमारग पामैं नव नव नित्त ॥ २ ॥

॥ॐ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः
धूपं निर्वपामि ते स्वाहा ॥ॐ॥ इति धूप पूजा ॥ ३ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ नैवेद्यं ॥ॐ॥

॥ॐ॥ साल दाल पकवान घन । अंजन नव नव भांत ।
नेवज गुरु आगल ठवै । क्षुधा दोष उपसांत ॥ १ ॥ॐ॥

(ढाल) ॥ॐ॥ पेठा मगद सेवइया लामू मोतीचूर । खाजा
ताजा लापसौ दोठानै घृतपूर । पिस्ता दाष विदाम तुहा
रा पिंठखनूर । गुरुचरणे जे ढोवै भोग लहै भरपूर ॥ २ ॥

॥ॐ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः
नैवेद्यं निर्वपामि ते स्वाहा ॥ॐ॥ इति नैवेद्य पूजा ॥ ३ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ फलं ॥ॐ॥

॥ॐ॥ श्रीफल शीताफल सदा । फल पूंगीफल लेय ।
ढोवै जे गुरुचरणपर । तसु उत्तम फल देय ॥ १ ॥ॐ॥ ढा
ल ॥ॐ॥ श्रीफल शीताफल नारंगी दाप्तम दाष । खरबू
जा तरबूज जंभेरी पाकी साख । करुणा कवला केला नीबू
फनस सफार । गुरु चरणे फल ढोई फल पामै श्रीकार ॥
२ ॥ॐ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन कुशल सूरि गुरुः चरणकम
लेभ्यः । फलं निर्बपामि ते स्वाहा ॥ॐ॥ इति फलपूजा ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अर्घं ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (अथ कलश) द्रुहा ॥ॐ॥ इम जिनकुसल सुरिंदनै ।
पूजै अष्ट प्रकार । तसु वर नवनिधि संपजै । पुतादिक परि
वार ॥ १ ॥ भट्टारक खर तर गठै । श्रीजिन लाभसुरिंद
रत्नराजसुनि भमरपर । सेवै पद अरविंद ॥ २ ॥ तासुचरण
रजकणसमो । ग्यान सार बुद्धिमंद । श्रीसद्गुरु पूजा रची
सोधौकविजन दृंद ॥ ३ ॥ॐ॥ इति श्रीजिनकुशल सुगुरुणां
अष्ट प्रकारी पूजा ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ लव अष्टप्रकारी पूजा लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ सुरनदी जल निर्मल धारया । प्रबल दुष्कृत दा
ष निवारया । सकल मङ्गल बंछिन दायकं । कुशल सूरिगु
रोच्चरणांयजे ॥ १ ॥ॐ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन कुशल सूरिः ।
चरण कमलेभ्यो जलं० ॥ॐ॥ अथ चंदन पूजा ॥ॐ॥

॥ॐ॥ मलय चंदन केसर वारिणा । निखल जाड्यरुजा
तप हारिणा । सकल० ॥ १ ॥ॐ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन कु

शल सूरि गुरुः चरण कमलेभ्यो चंदनं॥ॐ॥ १ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ पुष्प पूजा ॥ॐ॥

॥ॐ॥ कमल केतकि चंपक पुष्पकैः । परिमला हृत षट्
पद वंदकै ॥ सकल० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन कुशल सू
रि गुरुः० ॥ॐ॥ पुष्पं यया० ॥ ३ ॥ ॐ॥ अथ अक्षत पूजा ॥

॥ॐ॥ सरल तंदुल कैरित निर्मलैः । प्रवर मोक्षिक-
पुंजवदुच्चलैः । सकल मङ्गल० ॥ॐ॥ ॐ ह्रीं श्रीं । अक्षतं
यया महेखाहाः ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥ॐ॥

॥ॐ॥ बज्र विधैश्चरुभिर्वटकेय कैः । प्रवर मोदक पुंजसु
खर्जकैः । सकल मङ्गल० ॥ॐ॥ ॐ ह्रीं श्रीं । नैवेद्यं यया
महेखाहाः ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ अथ दीप पूजा ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अति सुदीप्तमयै खलु दीपकै । विमल कंचन भा
जन संस्थिते । सकल मङ्गल० ॥ॐ॥ ॐ ह्रीं श्रीं । दीपं
यया महेखाहाः ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ अथ धूप पूजा ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अगर चंदन धूप दशांगै । प्रसरिता खिल दिक्षु
सुधुमकैः । सकल मङ्गल० ॥ॐ॥ ॐ ह्रीं श्रीं । धूपं यया
महेखाहाः ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ अथ फल पूजा ॥ॐ॥

॥ॐ॥ पनशमोचसदा फलकर्कटै । सुसुखदैः किल श्रीफल
चिर्मटै । सकल मङ्गल० ॥ॐ॥ ॐ ह्रीं श्रीं । फलं यया म
हेखाहाः ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ अथ अर्घ पूजा ॥ॐ॥

॥ॐ॥ जल सुगंध प्रसून सुतंदुलै । अरु प्रदीपक धूप फ
लादिभिः । सकल० ॥ॐ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन कुशल सूरि०
अर्घं० खाहा ॥ॐ॥ इति श्रीदादाजीकी लघु अष्टप्रकारी
पूजा संपूर्णम् ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ सदगुरुणां आरती लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ पहली आरती दादाजीकी कीजै । दुखदोहग
सब दूर हरीजै । (जैजै सदगुरु आपतौ कीजै । श्रीजिन
कुशल सूरि समरीजै । (जै जै०) ॥ १ ॥ बीजी बीज पदंती
धारा । भयवारण तूं ही सुखकारा (जै०) ॥ २ ॥ तीजी पर
चा पूरकतरी । दूर हरौ सब दुर्मति मेरी ॥ (जै०) ॥ ३ ॥
चौथी सुगलपूत लिय दायक । सुरवर ङ्कम धरै ज्युं पा
यक ॥ (जै०) ४ ॥ पांचमी पांच नदी जिण तारी । संव स
कलनौ संकट वारी ॥ (जै०) ५ ॥ छठी थांभौ वज्र विदारी ।
विद्या पोथी परगट कारी ॥ (जै०) ६ ॥ सातमी चौसठ
जोगण साधी । सूरमंत सुरनै आराधी ॥ (जै०) ७ ॥ इण
विध सात आरती कीजै । मनवंडित संपति फल लीजै ॥
(जै०) ८ ॥ जैन लाभ खरतर गणधारी । सदगुरु चरण
कमल बलिहारी ॥ (जै०) ९ ॥ इति श्रीदादेजीकी आर
ती संपूर्णम् ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ श्रीदादाजीको स्तवन लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ विलसै कटि सखि मिलौ । सुभयोगै पुण्यदशा
सफलौ । जिन कुशलसूरि गुरु अतुल बलौ । मनवंडित आ
पै दादौ रङ्गरली ॥ १ ॥ मङ्गल लौल समे विपुला । नव नवय
महोन्नव राजयला । सुपसायै गुरु चढतीकला । सुकलीणी
पुववती महिला ॥ २ ॥ सबही दिन थायै सबला । सदा
स कपूर तणाकुरला । हय गय रय पायक बङ्गला । कल्लो
ल करै मंदिर कलला ॥ ३ ॥ वींऊँ चमर निसाण घुरै ।

नरवै दरवार खटा पुहरै । जय जय करजोती जचरै ।
 सानिद्ध गुरु सब काज सरै ॥ ४ ॥ सरसा भोजन पांन स
 दा । दुखरोग दुकाल न होय कदा । अविचल जलट अंग
 मुदा । गुरु कूरम दृष्टि प्रसन्न सदा ॥ ५ ॥ धम धम माहल
 नाद धुमें । बत्तीसे नाटक रङ्ग रमै । प्रगच्छो पुण्य प्रताप
 हमै । सबला अरियण ते आय नमै ॥ ६ ॥ तन सुख मन
 सुख चीर तनै । पहिरै बेलाउल होय रनै । ध्यावो कुसल
 गुरु एक मनै । जूँभक सुरमंदिर भरै धनै ॥ ७ ॥ ततखि
 ण वण खंच्यौ आवै । करि स्यामघटा मेह वरसावै । ति
 सीयां तोय तुरत पावै । जलदाता बिजग सुजस गावै ॥
 ८ ॥ लहिछां जल कल्लोल करै । प्रवहण भवसागर मज्जि
 नरै । बूढ़ता वाङ्मण जे समरै । ते आपद निश्चै सुं उव
 रै ॥ ९ ॥ खल खल खलंग प्रहार वहै । सोदामनि जिम
 सम सेल सहै । कुसल २ गुरुनाम कहै । ते खेम कुसल रि
 णमज्ज लहै ॥ १० ॥ युंभ सकल परचापूरै । औनागपुरै
 संकठ चुरै । मंगलोर अधिकै नूरै । देरावर भय टालै दूरै
 ॥ ११ ॥ वीरमपुर वानै सुधरै । खंभाइतपुर वीक्रम नयरै ।
 जिणचंद सूरि पाटै प्रवरै । जसु कौरति महिमंतल पस
 रै ॥ १२ ॥ पूरब पश्चिम दक्षिण आगै । उत्तर गुरु दौपैसौ
 भागै । दह दिशि जन सेवा मंगै । औखरतर गछनौ महि
 मा जागै ॥ १३ ॥ पुर पट्टण जनपद ठामै । गार्डजै कुसल
 नयर गामै । पूजै जे नर हितकामै । ते चक्रवर्त्ति पदवी
 पांमै ॥ १४ ॥ औजिनकुसलसूरि साखै । सेवकजननै सुखि
 याराखै । समखां गुरुदरसन दाखै । औसाधु कौरति पा

ठक भाषै ॥ १५ ॥ ॐ ॥ इति श्रीदादाजी स्तवन ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ श्रीजिन दत्तसूरजी उत्पत्ति स्तोत्रलि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सिरि सुयदेव पसाय करे । नृष श्रीजिनदत्त
सूरि । वंदिसु खरतर गठरयण । सूरि जेम गुण पूरि ॥
१ ॥ संवत् इग्यारै वरसै । वृत्तीसै जसु जन्म । वाढिग मंवि
पिता जणणो । वाह्मि देव सुरम्भ ॥ २ ॥ इकतालै जिण
वइ गहिय । गुणहत्तरै जसु पाट । वइसाखां वदि ठडि
दिन । पइ प्रणमै सुरथाट ॥ ३ ॥ अंबट सावइ कारलि
हिय । सोवन अक्षर अंब । जुगप्रधान जगप्रयट्टियोए । सि
रि सोहै पट्टि विंब ॥ ४ ॥ जिण चउसठि जोगिण जणिय ।
खित्तपाल वावन् । साइख ढाइख विज्जुलिय । पुहविह
नामनयन् ॥ ५ ॥ सूरिमंत वलकर सहिय । सारिय जिम
धरणिंद । सावइ साविय लक्ख इग । पट्टि वोहिय जिण
विंब ॥ ६ ॥ अरि करि केसरि दुइदल । चउविह देव निका
य । आण नलोपै कोई जुगे । जसु प्रणमै नरगाय ॥ ७ ॥
संवत वार इग्यारसमे । अजयमेर पुर ठाण । इग्यारसि
आसाठ सुदि । सगिपत्तन सुह जाण ॥ ८ ॥ श्रीजिनवल्लह
सूरि पण । श्रीजिनदत्त सुणिंद । विम्वहरण मङ्गल करण ।
करो पुण्य आणंद ॥ ९ ॥ इति श्रीजिनदत्तसूरिज्येष्ठकं ॥

॥ ॐ ॥ श्रीजिन कुशल सूरजी उत्पत्ति स्तोत्रलि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ रिसह जिणेसर सो जयौ । मंगलकेलि निवा
स । वासव वंदिय पयकमल । जमसङ्ग पूरै आस ॥ १ ॥

॥ॐ॥ (चौपई) ॥ॐ॥ चंदकुलंबर पूनिम चंद । बंदो श्रीजिन
 कुशल सुखिंद । नाम मंत्र जसु महिम निवास । जोसमरै
 तसुपूरै आस ॥ २ ॥ मरुमंजुल समियाणो गाम । धण कण
 बांचण अति अभिराम । जिहां वसै जीतहागर मंत्र । जैत
 सिरी तसुधरणी कलल ॥ ३ ॥ असु तेरै सै तीसै जन्म । सै
 तालै सिर संयम रत्न । पाटण सतहत्तरै जसु पाट । नि
 व्यासियै तसु सुरगैवाट ॥ ४ ॥ अमंजुल सरगै पायाल ।
 अचिराचिरजुग दूण कलिकाल । प्रभु प्रताप नविमानै
 सोय । सै नविनयणे दीठो जोय ॥ ५ ॥ निरधन लहै धन
 धन सुवन्न । पुन्नहीण पामै बड पुन्न । असुखी पामै सु
 षसंतान । एकमना करतां गुरु ध्यान ॥ ६ ॥ प्रभु समरण
 आपद सज्ज ठलै । सयल सांति सुखसंपति मिलै । आधि
 व्याधि चिंतासंताप । ते ठंजौ नवि मंजै व्याप ॥ ७ ॥ पाप
 दोष नवि लागै तिहां । प्रभु दरसन उत्कण्ठा जिहां ।
 सेवतां सुरतरुनी ठांहि । निजै दालिद्र भेटै बांहि ॥ ८ ॥
 विस हर विस नर विस नरनाह । भूत प्रेत ग्रहव्यंतर
 राह । प्रभु नामै जेन करै पीठ । भाजै भावठ भव भय
 भौठ ॥ ९ ॥ रोग सोग सवि नासै दूर । अंधकार जिम ऊ
 नै सूर । मूरष फीटी प्रमित घाय । प्रभुपसाय दुख दुरिय
 पुलाय ॥ १० ॥ दिन दिन जिन सासन उद्योत । तिहां अठै
 भव सायर पोत । सा सदगुरुमै भेज्यौ आज । रत्नीय रंग
 सीधा सवि काज ॥ ११ ॥ (ढाल) ॥ आज घर अंगण
 सुवतर फलियौ । चिंतामणि कर कमलै मिलियौ । उदयो
 परमाणंद घरे ॥ १२ ॥ आज दीहमें धनै गिणियौ । जुगप्रव

रागंम जोमे युणियो । चंद्रगच्छ सहिमा निलोए ॥ १३ ॥
 काई करो पृथिवी पतिसेवा । काई मनाओ देवी देवा । चिंता
 आंणो काई मने ॥ १४ ॥ वार वार ए कवत भणीजे । श्रीजिन
 कुशलसूरि समरीजे । सरै काज आयास विणे ॥ १५ ॥ संवत्
 चवद् इन्द्रासी वरसै । सुलका वाह्यापुरं मे मव हरसै ।
 अजिय जिलेसर वरभवणै ॥ १६ ॥ कीयो कवित ए संगल
 कारण । विघन हरण सज्ज पाप निवारण । कोई मत संसो
 धरो मने ॥ १७ ॥ जिनइ सेवै सुरं नरराया । श्रीजिन कुशल
 सुनीसर पाया । जयसागर उवजाय युणै ॥ १८ ॥ इम
 जो सदगुल गुण अभिनंदै । कटि सखइ सो चिरनंदै । मन
 वंछित फलसुख जवो ए ॥ १९ ॥ इति दादाजो श्रीजिन
 कुशल सूरजी उत्पत्ति विचारगर्भित परम मङ्गलीक श्लोक
 संपूर्णम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ श्रीजिन कुशल सूरजीको ठंड लि० ॥ ॥

॥ ॥ समस्त माता सरस्वती । कुलारी करजोड । क
 वि माता कवियण तणा । पूरै वंछित कोड ॥ १ ॥ कुशल
 कारण जग कुशल गुरु । दायक वंछित देव । अहनिधि तो
 उलग करै । सुर नर सारै सेव ॥ २ ॥ पुर पट्टण गांमै प्रगट ।
 जग रुगलै जस वास । पुरावदी तौ पालियै । वसैचु दादौ
 वास ॥ ३ ॥ ठंडमोती दांस ॥ ४ ॥ दादो वासदियै दौलत्त ।
 कछै ठव ठाया सेवक वित्त । वधारै मांस दिसो दिसवान ।
 धरै इक चित्त जिके गुरुध्यान ॥ ४ ॥ पूनिम पूनिम पूजै
 पास । नवा नवा नेवज वार निपाय । चंपावलि कीनकि

च उल्लगो । वीकाणवांन वाघतो । सुथान ध्यानसावतो ॥
 १७ ॥ प्रभावना रिणीपुरै । नौसाण वाजतां घुरै । नागोर
 नाम दीपतो । दाणव देवजीपतौ ॥ १८ ॥ तोरण तेम सोह
 ए । जगत्त मन्त्रमोहण । सरूप मेहतै सही । अपार लहि
 जां लही ॥ १९ ॥ सहिम्मा मालपूरतो । लाहोर दुक्खं चूर
 तो । कला अनेक आगरै । ठत्तीस पौनऊलरै ॥ २० ॥ दा
 दारी करंत सेव । हिंदआं तुरकां देव । सदा शुद्ध सांगा
 नेर । जालमी करंत जेर ॥ २१ ॥ अमरसरै अनेक । राख
 तौ जु ठोमै टेक । मालपुरै मज्झिमान । खान खान सेव
 थान ॥ २२ ॥ ब्रह्माणपुरै राजरौत । जै तारणें जगज्जीत ।
 सोजित सुख सद्दयं । वेनातटे विरुद्दयं ॥ २३ ॥ खेजल्लै
 खरो सदा । बाहल मैस संपदा । जोधाण जुगल्लतरा ।
 जुगति देस देसरा ॥ २४ ॥ बोरम्मपुर तिम्रगै । करंत नृत्त
 अम्मरौ । जालोर जैत सिंधरी । खंभायते खराखरी ॥ २५ ॥
 प्रगट् आप पाटणें । सूरत रुक्ख सांघणें । अनत्त तेज अ
 हम्मदा । समझलोर सर्वदा ॥ २६ ॥ साचोर भुज्ज सासतो
 तुरत्त शत्रु वासतां । उदपुरै जुईमरै । सेवावे कोटले
 गुरै ॥ २७ ॥ गुरु सदा उदौ करै । एकांत ध्यान जो धरै ।
 भमंत भाण जेतली । कीरत्त कोट ते तली ॥ २८ ॥ (दूहा)
 ॥ २९ ॥ कला अनेकां कुसल गुरु । समग्र्यां होय हजूर । अलगी
 टालै आपदा । जिम अंधारै सूर ॥ ३० ॥ (कलस) सूर तेज
 जिम नूर । दूर आपट् भय टालै । सावौतां ज्यु मयाकरी
 सेवक नित प्रतिपालै । मनवंडित मा वाप । कुसल गुरु का
 नित दाता । पुनिम पूजै पाय । रहै जै ध्यान राता । सुम

सादे सोम सुंदर सुगुरु । अभय सोम उलंग करी । प्रगटि
 यौ धंभ पाली पुरे । विजे सिंध लीलावरी ॥ ३० ॥ ॥ इति
 श्रीजिन कुशलसुरिजी कों सब स्थानक नमस्कार ठंद
 संपूर्णम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (गग जैतसरी) ॥ ॥

॥ ॥ सहाई मेरै श्रीजिन कुशल गुरु ॥ कुशल करण
 कलि मांहै प्रगथो । खरतर गल्लवह (स०) बावनो चंदन
 नृगमद भेली । पूजो प्रेमभर ॥ (स०) १ ॥ चिंता चुरण
 विघ्न विप्रारण । दालिद्र दूर हर ॥ (स०) २ ॥ दिन दिन
 साहिब चटितै वाने । ध्यावो ग्यान धर ॥ (स०) ३ ॥ वाजै जेहना
 जसना वाजा । ठावो ठामै जर ॥ (स०) ४ ॥ संबत् अठार स
 मे अरुसट्टै । निगसर मास थिर ॥ (स०) ५ ॥ संव सहित श्री
 सदगुरु भेटै । श्रीजिन हर्ष सर ॥ (स०) ६ ॥ गांव गजालै
 चरण नमंता । तूठो कल्पतरु ॥ (स०) ७ ॥ पाठक श्रीविद्याहेमग
 लीनै । उदय रतन कर ॥ (स०) ८ ॥ इति दादाजी स्तवनम् ॥

॥ ॥ देशीकी चालमें ॥ ॥

॥ ॥ (दादा चिरंजीवो सेवक जन सुखदाई दरसण
 सदा देवो । दादौ दीनदयाल सदा दाता । दादौ समखां
 आपै सुषसाता । दादौ जगनायक जगगुरु आता (दा०) ॥
 १ ॥ दादौ परचा जगसगलै पूरै । दादौ सेवकना संकटचूरै
 दादौ दुरित हरै सज्जनौ दूरै (दा०) ॥ २ ॥ दादा अलगांथी
 जाली आवै । दादौ देषीनेते सुख पावै । म्हांरा दादाजीनी
 जोडै कोई नावै (दा०) ॥ ३ ॥ दादौ राज नगर मांहै राजै ।

जिहां सुजस नगारा नितरात्रै । दादौ ठोगालां सेहर
 ठाजै ॥ ४ ॥ (दा०) दादा घस केसर सूकन धोलौ । हाथे
 लेई सोवन कचोलौ । पूजो दादाजीनै मिल टोलौ (दा०)
 ॥ ५ ॥ दादौ आरतियां आरति ठालै । दादौ सेवगजननै
 प्रतिपालै । दादौ जिनशासन नित उजवा । लै ॥ ६ ॥
 (दा०) दादौ महिमावंत महाराजा । दादौ राजै खरतर
 गह्वराजा । दादौ समखां सफल करै काजा (दा०) ॥ ७ ॥
 दादौ कुसल सुरिंद बह्मगुण धारी । दादौ परतिख सुर
 तर अवतारी । जाजं दादाजीनौ जं बलिहारी ॥ ८ ॥
 (दा०) दादौ श्रीजिन चंद सुरिंद पाठै । दादौ गाजै गुणि
 थण गहगाढै । जसु थान सोहै जगधिर थाठै (दा०) ॥ ९ ॥
 दादा महिर निजर सुऊ परिकरियै । दादा आरतिपीना
 दुख हरियै । दादा जिम जग जय कमलावरियै (दा०) ॥ १० ॥
 दादा सेवगनै सानिध करज्यो । दादा दुसमणनै दूरै हर
 ज्यो । जिणचंदना मन वंठित फल ज्यो (दा०) ॥ ११ ॥ इति
 दादाजी स्तवनं ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ (आषाढै भैरु आवै इस चालमे) ॥ गाजै जिनकु
 शलगमालै । सेवकनां संकट ठालै हो गा० ॥ १ ॥ परतिखगुरु
 परचा पूरै । सेवकनी चिंता चूरै हो (गा०) ॥ २ ॥ ठतरौ
 नितरी ठबिठाजै । विचमें धिर धुंभ विराजै हो (गा०)
 ॥ ३ ॥ ऊलरे आली मिल आवै । दादौ जी दीठां सुखपावै
 हो (गा०) ॥ ४ ॥ केसर घुस भरिय कचोलौ । मांहें बलि
 मृगमद धोलौ हो (गा०) ॥ ५ ॥ पूजौ पग नीर पछालौ । गावो

गुण मीत ससाला हो (गा०) ॥ ६ ॥ दादोजी दुखियां सुख
 देवै । निरधनियां निजधन देवै हो (गा०) ॥ ७ ॥ हय हाथी
 स्थपति बडला । गुरुनामें पामें कमला हो (गा०) ॥ ८ ॥ स
 कजासुत सुंदर नारी । पामें परिकर सुखकारी हो (गा०)
 ॥ ९ ॥ अलगांथी रोग गमावै । गुरु पूज्यां बंझि पावै हो
 (गा०) ॥ १० ॥ पावै गुरु तिसियां पाणी । तिणवेला जलधर
 आणी हो (गा०) ॥ ११ ॥ ग्रहगोचर जेह जंजालै । पौढा
 ऊवै आलै मालै हो (गा०) ॥ १२ ॥ बाजै जगजसना बाजा
 राजै खरतरमञ्ज राजा हो (गा०) ॥ १३ ॥ जमु जैज सिरी
 वरमाता । जीवहागरमंलि विख्याता हो (गा०) ॥ १४ ॥ संवत
 सतरै सै इक्यासी । कातौ पुनिम परकासी हो (गा०) ॥ १५
 सज्ज संव सहित सुविलासै । अधिके हर हित उतहासै हो
 (गा०) ॥ १६ ॥ इम याव करी आणदैं । जिन भक्ति जती
 सर वंदै हो (गा०) ॥ १७ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ (राग धन्यासरी) ॥ ॥ ॥

॥ ॥ आयो आयो जी समरंता दादो जी आया । सं
 कट देख सेवक कुं सद्गुरु । देरावरतें ध्यायो जी समरंतां
 (दा०) दादा वरसै मेहनै रात अंधेरी । बायपिण सबलौ
 बायो । पंच नदी हम बैठे बेझौ । दरीवै हो दादा दरी
 यै चित्त मरायो जी ॥ (स० दा०) २ ॥ दादा उच्च भणी पो
 हचावण आयो । खरतर संव सवायो । समय सुंदर कहै
 कुशलर गुरु । परमानन्द सुख पायो जी । समरंतां ॥ ३ ॥
 ॥ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ॐ॥ (राग लज्जरी) ॥ॐ॥

॥ॐ॥ भाया भक्तिसुं पूर रहो रे । दुरजन सब दूरह
रो रे (भा०) मेरे मनमें भक्ति वैरागी । चित्त परणित ल
गनसुं लागी । मोरी भाग्यदसा अब जागी ॥ जीया हो ॥
(भा०) १ ॥ सब सज्जन मिलकर आवो । गुरुचरणे चोक
पूरावो । बलि अक्षत धवल वधावो (जीया हो) ॥ (भा०) २ ॥
गुरु सहिमावंत सवाई । गुरुनाम सदा सुखदाई । गुरु
सेव्यां पाप पुलाई (जीया हो) ॥ (भा०) ३ ॥ वस केसर भर
कैं कचोली । मांहे ऋगमद कुं कुम घोली । गुरु पूज रहो
भरजोली (जीया हो) ॥ (भा०) ४ ॥ श्रीजिनहर्षसूरी सर रा
जा । बालै जग जसना बाजा । सत्य रत्न करै सुभ बाजा
(जीया हो) ॥ (भा०) ५ ॥ इति स्तवनम् ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (राग कीरवो) ॥ॐ॥

॥ॐ॥ कुशल सुरिंद गुरु पूजो भवि कितसुं (कुश०)
केशर चंदन कपूर अरगजा । भाव धरी करो पूजा चित
सुं ॥ (कु०) १ ॥ मोगरा लालगुलाब मालती । मनसुध माल
करै भवि कितसुं ॥ (कु०) २ ॥ अक्षरण सरण परमगुरु
सेवा । धरम ध्यान धरो आतम कितसुं ॥ (कु०) ३ ॥ सेव
गजन प्रतिपाल जगत्गुरु । आसा पूरै गुन वरु दत्तसुं ॥
(कु०) ४ ॥ ध्यान सुधारै ग्यानवधारै । रूप रंग देवै दित
हित मतसुं ॥ (कु०) ५ ॥ कुशल सुरिंद गुरु सानिध कारी ।
परतिष्ठ परचापूरै सतसुं ॥ (कु०) ६ ॥ श्रीजिनहर्ष सदा
सुखिलासी । सत्यरत्न सुख रची ठतसुं ॥ (कु०) ७ ॥ इति

॥ॐ॥ (राग देवश्री चलत) ॥ॐ॥

॥ॐ॥ आज करोरे उवाह । श्रीजिनकुशल सरिंद आगे ।
 (आ०) आआठी वेलानै छ आछो दाव । इण आठी वेला
 क्यूं करो लाज ॥ (आ०) १ ॥ विविध प्रकार पूजो मनरंग ।
 हिल मिल गावो साजन संग (आ०) घूप दीप करो नैवेद्य
 सार । फुल वारीनो नहीं जिहां पार ॥ (आ०) २ ॥ अलत
 श्रीफल ढोवै खेह । पुत्र कलत्र पामें संपदा तेह ॥ (आ०) ३ ॥
 सुर नर नारी जमा करै जोड़ । कौण करै म्हांरा दादा
 जीनोहोड़ ॥ (आ०) ४ ॥ श्रीखरतर गह्वरति सिरदार । रा
 जा राणा सेवै इकतार ॥ (आ०) ५ ॥ मंहिर निजर करो
 श्रीगुरराज । कुशल सुरिंदगुरु गरीव निवाज ॥ (आ०) ६ ॥
 श्रीजिनहर्ष करै उल्लरंग । सखरत्न मन ग्यान उमंग ॥
 (आ०) ७ ॥ इति स्तवनम् ॥ ॐ ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (राग बंगाली घाटो) ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ मे' निरख्या गुरु महाराज । ठतीयां हर्षभरी
 (मे०) अमल अनन्तगुण आगहरे । समता रसनो घाम ।
 परम परम परमातमा रे । बंछितदायक खांम ॥ (ठ०मे०)
 १ ॥ करुणानिध गुरु दोलती रे । सेवक जन प्रतिपाल ।
 भविजन भक्तौ भावसुं रे । ल्यावै भर भर धाल ॥ (ठ०मे०)
 २ ॥ केसर चंदन कुंकुमारे । भरीय कचोली हाथ । पदम
 ण आवै मलपती रे । पूजै सहोयर साथ ॥ (ठ०मे०) ३ ॥
 कुशल सूरिसर साहिबारे । श्रीजिनचंदसूरि पाट । बलि
 हारी जिन कुशलनी रे । गावै धणुं गहि गाट ॥ (ठ०मे०)

४ ॥ अष्टसिद्धि सानिध करै रे । सुखसंपूरण सार । श्रीजि
न हर्ष सूरौ सहरे । सत्यरतन सुखकार ॥ (७० में०) ५ ॥
इति स्तवनम् ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (राग प्रभातो) ॥ ॥

॥ ॥ चरणकी चरणकी चरणकी । वारी जाउं गुह
राय चरणकी (वा०) श्रीजिनदत्त सूरौसर सदगुरु । सफल
घनौ सेवा चरणकी ॥ (वा०) १ ॥ प्रथम मङ्गल गुहारायकी
सेवा । अशुभः करम सब हरणकी ॥ (वा०) २ ॥ दालिद्रभंज
ण अरि सब गंजण । पग पग सानिध करणकी ॥ (वा०)
३ ॥ मोह नहीं परवाह अनेरी । सरनग्रही हन चरणकी ॥
(वा०) ४ ॥ श्रीजिनहर्ष तुम चरणां को दासा । आसापू
रो सुखः करणकी ॥ (वा०) ५ ॥ इति दादाजी स्तवनम् ॥
॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ कुशलगुरु अब मोहि दरसण होजै । (अ०) असौ
भांति करो मेरे सदगुरु । ज्युं मन मूढपती जै (कु०) ॥ १ ॥
जलदातार विरुद अमृततरस । अवन अंजलि भर पीजै ।
सुरतक सम दरसण विनदेखा । कहो नयण किमरीजै
(कु०) ॥ २ ॥ परम दयाल कृपाल कृपानिधि । इतनी अरज
सुलीजै । परम भगत जिनराज तुमारो । अपनो करचाणी
जै (कु०) ॥ ३ ॥ इति स्तवनम् ।

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ कुशल गुरु कुशल करो भरपूर । सेवक जन
मन वंछित पूरण । समस्यां होय हजूर (कु०) ॥ १ ॥ पर

मदयाल पेम रस पूरण । असुभ हरण भये दूर । संघ उदो
कर सदगुरु मेरा । वीनवै श्रीजिन चंदसूर (कु०) ॥२॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ (देशीकी चालमें) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सदगुरु पूजन जावस्यां । महेतो कुशल सूरिंद
गुण गास्यां हे माय (स०) । श्रीफल भेट चढावस्यां ।
महेतो चरणारी पूज रचास्यां हे माय (स०) ॥१॥ मारुदेस
में सोभता । नगर वीकाणै राजै हे माय । गांम गमालै
दीपता । ज्यांरी महीयल महिमा ठाजै हे माय (स०) ॥२॥
समस्यां संकट चूरता । कुसल करण अवतारी हे माय ।
सुखदायक श्रीसंघनै । परतर गठ अधिकारी हे माय (स०)
॥३॥ दूर देसांतर थी घणा । हिल मिल यात्री आवै हे
माय । लुल२ सौस नमावता । संत सुजस मिलगावै हे माय
(स०) ॥४॥ सऊ सिणगार मनोहर । ठम२ पाय ठमका
वै हे माय (स०) । तनमन प्रांण लोभावती । गौरी मंगल
गावै हे माय (स०) ॥५॥ विठुड्यां साजन मेलवै । अनमीपा
य नमावै हे माय । मनरा मनोरथ पूरवै । पर बल लख
मी ल्यावै हे माय (स०) ॥६॥ विषमी वेलावाटमें । समस्यां
सांनिध आवै हे माय । भूषां भोजन मेलवै । तिसियां नीर
मिलावै हे माय (स०) ॥७॥ यात्री आवै नितनवा । थान
आगल थिर थाट हे माय । सीरणीयां नित सांमठी । गावै
गुण गहगाट हे माय (स०) ॥ ८ ॥ कुसल सूरिंद गुरु आ
गलै । भविमिल भावना भावै हे माय । चंदफतै सुनि नित
नमें । परमानंद सुख पावै हे माय (स०) ॥९॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ॐ॥ पुनः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ आयो सज्ज श्रीसंघ आसधरे । गुरु मौन गह्यां का
हो केम सरे । दरसण वहिलो सदगुरु दाखो । निज सेव
क ज्ञाण महिर राखो ॥ १ ॥ इह विषमौ वेला आयवखी ।
केहवी करीयै तुज अरज घणी । अलगाठो तो वेगाआवो
हिव ढील घाती भर न करावो ॥ २ ॥ तं सदगुरु खरतर ग
ठ साचो । कोई न जाणें तुमनें काचो । इण संकठमें आल
स न करो । दादा दुसमणनें दूर हरो ॥ ३ ॥ काई चूक
पत्नी सदगुरु हमसुं । तो जिम कहिस्यो तिणपरि खमसुं ।
पिण हिवणां हठ थे मति तांणो । निहचै पोतानो कर जां
णो ॥ ४ ॥ आया सज्ज मिलकर अठां लगे । पाठा किम जा
वां इणें पगे । इणपरि गुरु सुणीयै अरज इसी । हिव सब
कों मेलो करीय खुसी ॥ ५ ॥ जिन कुशल सूरीसर जगचा
वो । अपणायतकर वेगा आवो । अगला विरद ते अजुवालो
परघल निज ठोरु प्रतिपालो ॥ ६ ॥ गुणगाम गजालै ए
गाथी । सुणतां सदगुरु वेगो आयो । राजौ ऊव सगलारं
गरली । जिनचंद्रनी आसा सफल फली ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ॐ॥ (ताल ठमरी) ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ सदा सहाई कुसलसुरिंद गुरु द्यो दौलत गुरु
रायजी (सदा०) । खाई न खूटै खरची न तूटै । दिन२ वधे
सवाय जी (स०) ॥ १ ॥ सकजा सुत अर सुन्दर नारी । सुभ
परिकर सुख दायजी (स०) । मिल समागम सुजसवधारण
नित प्रति हरष उझाहजी (स०) ॥ २ ॥ राजा परजा पाय

नमैं रुह । गुरु समरण सुपसाय जी (स०) दोषी दुसमण
 नृपभय पट्टियां । सदगुरु करय सहाय जी (स०) ॥३॥ वि
 षमी विरियां संकट पट्टियां । समखां आवै घाय जी (स०)
 भूखां भोजन तिसियां पांणी । निरधनियां धनदाय जी
 (स०) ॥४॥ संव सकलनें द्यो सुख साता । जिम कौरत जग
 घाय जी (स०) । थांनक थिरता पर वल भोजन । पग पग
 कुसल सहाय जी (स०) ॥५॥ अभय महा सुखदाई सद
 गुरु । नवनिधि बंठित थाय जी (स०) । सुमति सवाई नित
 घर संपद । दान विसाल लहाय जी (स०) ॥६॥ इति०
 ॥०॥ पुनः ॥०॥

॥०॥ जिन कुसल सुरिंद गुरु सदा नमो (जि०) ॥ सुख
 संपति रिद्धि सिद्धि सब हाजर । देस देसांतर काई भंमो
 (जि०) ॥१॥ वाट घाट अरु विषमी विरियां । विघन बुराई
 दूर गमो (जि०) ॥२॥ अह निसि नांम संव उरघारो । सु
 गुरुचरण चितरमो रमो (जि०) ॥३॥ इक मन ध्यावो वं
 ठित पावो । विपत व्यथा सब दमो दमो (जि०) ॥४॥ अभय
 महासुख संपति पावो । सुथिर थांनक थिति जमो जमो ।
 (जि०) ॥५॥ इति दादाजी पदं ॥०॥ ॥०॥

॥०॥ ठवपतो थारै पायनमे जी । सुरनर सारे सेव ।
 ज्योति थारै जग जागती जी । दुनियामे परतिख देव ॥१॥
 जंतो मोहि रह्यो जौ म्हांरा राज । दादरै दरवार (जं०)
 केशर अंबर केवटो जी । कस्तूरी करपूर । चांपो चंदन
 राय चंबेली । भक्ति करूं भरपूर (जं०) ॥२॥ पांगुलियाने

पाव समापै । आंधलीयानें आंख । रूपहीणानें रूप देव
 ॥दो । पंख हीणानें पांख (ॐ) ॥३॥ चंदपाटो धर सा
 हिवो जी । श्रीजिनकुशल सूरिंद । आठ पोहर धानें उ
 लगे जी । रंग धरै राजिंद (ॐ) ॥४॥ इति पदम् ।

॥ ॐ ॥ सदगुरु जी सुणो मोरी अरजी (स०) पहिली
 काम कीये बह तेरे । अपणा विरुद विचारी । पल पल
 चूक परी सदगुरु जी । मैं सुतलवका गर ली ॥ (स०) १ ॥
 ध्यान तुमारो कबहु न ध्यायो । पूजा करी नहीं तेरी ।
 तोई सेवक बंठित पूछा । आही थारी मर जी ॥ (स०)
 २ ॥ निश्चै सेती तुम गुण गावै । तुरत कटत दुख वेत्ती ।
 भक्त उधार कहावत जगमें । ताहै करत ॐ अरजी (स०)
 ३ ॥ और देव कुं में नहीं ध्याउं । सरणग्रही मैं तेरी ।
 दूर थकी में भेटण आयो । विपत दिसर सब तरजी ॥
 (स०) ४ ॥ कुशल गुरुका में हूं सेवक । लोक जाणें सब को
 ई । जमा रतनकी वीनती सुण कै । दरसण दीयो सद
 गुरु जी ॥ (स०) ५ ॥ इति स्तवनम् ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ होरीकी चालमें ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ होरी खेलो नेम सैं धार (इस चालमें) ॥ ॐ ॥
 सदगुरुकी चरण चित लाय लाय । जिनदत्त सूरिंद गुरु
 करो रे सहाय । (सद०) वावन दौर अनै वलि चौसठ । जो
 गणि वसकीनी हर्ष लाय । विद्या पुस्तक सोवन अच्छर ।
 धामो वज्र विप्रार पाय (सद०) ॥१॥ सुलतानमें पंच पीर

महाबल । पंच नदी साधो चित्तलाय । इत्यादिक बड़ पर
चा पूरक । गुरु समखां सब दुख जाय (सद०) ॥१॥ गुरुको
नामसैं अत्रसिद्धि नव निधि । गुरु गुण गावो सबहौ धाय
श्रीजिन सौभाग्य सूरि सुगुरु पर । महिर करो गुरु मुख
दाय (सद०) ॥३॥ इति श्रीजिनदत्त सूरिजी पदं ॥

॥ॐ॥ पुनः ॥ॐ॥ -

॥ॐ॥ नेम स्खामसैं कहियौ मोरी (इस चा०) गुरुपूज
रचो रे सुग्यानी । भली हीयै भक्ति भरानी (गुरु०) । श्री
जिन कुसलसूरी सर साहिब । खर तर गन्न राजानी । देस
देस मैं थानक गुरुका । सोभा जगपहिचानी । सदा रवि
तेज समानी (गुरु०) ॥१॥ केसर चंदन मृगमद भेली । चरणां
री पूजरचानी । धूप दीप वलि आगै ढोवो । बड़विध पुष्प
चढानी । भला फल भेट धरानी । (गुरु०) ॥२॥ वाट घाटमैं
परचा पूरक । हाजर होत सहानी । श्रीजिन सौभाग्य
सूरि के साहिब । बंझित काज करानी । सदा गुरु महिर ल
खानी (गुरु०) ॥३॥ इति पदम् ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ कैसे कैसे अवसरमें गुरु राखी लाज हमारी ।
(कैसे०) मोकुं सबल भरोसा तेरा । चंदसूरि पटधारी ।
(कै०) ॥१॥ तुम विन और न कोई मेरे । या जगमें हित
कारी । मेरा जीवन हाथ तुमारै । देखो आप विचारी ।
(कै०) ॥२॥ आगै तो कई बेर हमारी । चिंता दूर निवा
री । अब की विरियां भूल मती जावो । सदगुरु परउप
गारी (कै०) ॥३॥ अबकै आप लाज गूजरकी । रखीयै गुरु

जसधारी । मेरै कुशल सूरिंद गुरु तेरा । वना भरोसा
भारी (कै०) ॥४॥ इति पदम् ॥॥

॥॥ (राग प्रभाती) ॥॥

॥ ॥ श्रीजिन कुशल सूरीसर साहिव । तुमहो पर-
उपगारी (श्रीजि०) । खरतर गब्रु नायक गुणलायक । जि-
नचंदसूरि पठधारी (श्री०) ॥१॥ संत उधारण सुजस वधा-
रण । भौद्र भंजन अति भारी । नाम तुमारो कुशल करण
जग वारी जाउं वार हजारौ (श्री०) ॥२॥ जगवब्रुल तुम
हो हो जगद्गुरु । करुणानिधि करतारी । कहै जिनचंद
मेरे हो सदगुरु । हमहै सरण तुमारी (श्री०) ॥३॥

॥॥ पुनः ॥॥

॥॥ श्रीगणधर गुरु कुशलसूरिंद कै । चरण कमल
परिवारी । (श्री०) केसर चंदन अक्षत कुंकुम । जलभर
कंचन ऊरौ । देवक आगै मंगल दीपक । फूल धरं फूल
वारी । (श्री०) ॥१॥ एसी भांति करुं विध पूजा । आनकै
चित्त दूकतारौ । राज कहत मेरे परम गुरु कौ । बेर बेर
बलिहारी (श्री०) ॥२॥ इति पदम् ॥॥

॥॥ (रेखता) ॥॥

॥॥ कुशल गुरु देखकै दरसन । मेरा दिल होत है
परसन । जगतमें या समो कोई । न देखा नयन भर जोई
॥१॥ विरुद भूमंतलै ठजै । फारसतां पाप सज्ज भाजै । पूज
तां संपदा पावै । अचिंतौ लल्लि धरआवै ॥२॥ इकै सुख गुण
कड़ुं कैता । सुजै विज्ञान नह्नीं एता । खालचंदकी अरज

सुन लीजै । चरण की सरण मोहि दीजै ॥३॥ इति पदम् ॥

॥०॥ (राग कहरवो) ॥०॥

॥०॥ कुशल गुरु दरशण दीजै हो (कु०) खरतर गह्व
पति कुशल सुरिंद गुरु । सुऊपर महिर घरीजै हो (कु०)
॥१॥ पतित उधारण विरुद तुम्हारो । इतिनो अरज सुणी
जैहो (कु०) ॥२॥ आधि व्याधि अरु दोषी दुसमण । ए सब
दूर हरी जै हो (कु०) ॥३॥ खेम रतन सेवक कुं निस दिन
सदगुरु सानिध कीजै हो (कु०) ॥४॥ इति पदम् ॥०॥

॥०॥ वंसो हमारी दीजै (इस चालमें, पूजो भजो रे
भाई । गुरु महिमा योत सवाई (पू०) । रूग मद केसर
चंदन अरचो । सुंदर पुष्पचढ़ाई (पू०) ॥१॥ तन मन वस
कर ध्यान हीयै धर । जिन दत्त जपो वरदाई (पू०) ॥२॥
मविका जीव मिल गुरु गुण गावो । वाकै सदगुरु होत स
हाई । (पू०) ॥४॥ श्रीजिन सौभाग्य सूरि सुगुरु मेरे । निस
दिन हर्ष वधाई (पू०) ॥५॥ इति पदम् ॥

॥०॥ (ढाछ) ॥०॥ मालण ल्यावै फूलजा (शदेशी) ॥
॥०॥ ऊंतो अरज करुं करजोदनै जौ । म्हारो अरज सुणो
महारज । (सदगुरु) विरुद घणा ठै राज राजी । सूरि सक
ल सिरताज (स०) सुनिजर जोय जो साहिवा । थारे राव
ल राणा राजबीजी । थारा पुनिम पूजै पाय (स०) ॥ १ ॥
केसर अजरज कुंकुमां जी । काई खगमद रहीं महिकाय

(स०) (सुनिजर जोव जो साहिवा) ॥ ५ ॥ थारै धुल्लारै
आगल वृषराजी । दुल्लत चमर गजदाल (स०) कारण सेवै
कामनी जी । काई निरख करै जो निहाल (स०) (सुनि
जर०) ॥ ३ ॥ थारै ठावी ठोमै थापना जी । काई उद
थापुर आवेर (स०) महिमा भली गुरु भेदतै जी काई
सालू मै बाली सांगानेर ॥ (सदगु० सु०) ॥ ४ ॥ थारै ज्योति
षणी गुरु ङिगमिगै जी । काई बधतै गढ वीकाण (स०)
आसा पूरण आवज्यो । धेतो देरावररा दौवांण । (स० सु०)
॥ ५ ॥ म्हांरै वीनतली भलै मानिज्योनी । काई दादाजी
दौन दयाल (स०) कुसल सदा कविराजरै । काई पाटोघर
प्रतिपाल ॥ (स० सु०) ६ ॥ इति पदम् ॥ ॥

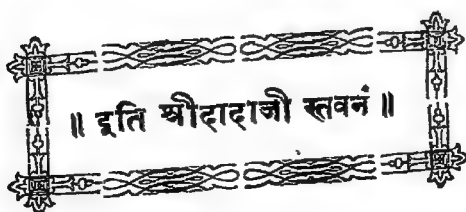
॥ ॥ (लावणीकी चालसे) ॥ ॥

॥ ॥ सदगुरुजी म्हांरा सरणें आयां की लज्या राख
ज्यो (स०) पतित उधारण विरुद सुणीने । आयो तुमरै
पास । अब मनबंधित पूरो माहारा । ए हीज दिलकी आ
स जी ॥ (स०) १ ॥ काम क्रोध मद लोभ तनौ ने । तज
दियो सब संसार । नवपदनो इक ध्यान धरीने । पाया स
ऊ गुणपार जी ॥ (स०) २ ॥ देश देशमें धुंभ विराजै । पर
चा जग विज्ञात । इण कलु मांहे सुरतस सरिखा । प्रगट
रह्या साख्यात जी ॥ (स०) ३ ॥ चिंतालखि और कामधेनु
सम । माहरै तुं हीज देव । आण धरुं सिरता हरौ (सिरे)
करुं तुमारी सेव जी ॥ (स०) ४ ॥ मात पिता बंधव तुं ज
गमें । हितकारी गुरुराय । राजा राणा सऊ जग मांहे ।

सैवै तुमरा पाय जी ॥ (स०) ५ ॥ आज प्रभु तुम चरण प
साये । सीधा बंठित काज । लक्ष्मी प्रधान तुमारा दरसण ।
मोहन गुणका राजजी ॥ (स०) ६ ॥ इति लावणी संपूर्णम् ॥

॥ ❀ ॥ (राग कहरवो) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आजकी घट्टी म्हारै हरष बघाई । गुरु दरसण
पायो सुखदाई ॥ (आ०) १ ॥ गुरु जग नायक बंठित दाय
क । गुण गण लंछत सज्ज मन भाई ॥ (आ०) २ ॥ उत्तम
धर्म प्रभाव करीने । जैनो कुलकी रीत देखाई ॥ (आ०) ३ ॥
गुरु परतक्ष सज्ज संघ सुखदायक । देश देशमें प्रगट रहा
ई ॥ (आ०) ४ ॥ धन दिन आज सफल थयो माहरै । सुर
तरु सम मिलियो फलदाई ॥ (आ०) ५ ॥ बंठित पूरण सं
कट चूरण । सज्ज भवि मात पिता बरदाई ॥ (आ०) ६ ॥
कलिकत्तापुर मंजुन साहिब । कुशल करो मोहन गुणदाई
॥ (आ०) ७ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥





॥ अथ खरतर गच्छ समाचारी ॥

॥ ❀ ॥ जो प्रतिपदा १ तिथी कम हो (तो) प्रतिपदा १। का अक्षराण व्रत। पिठली अमावस्या (३०) तिथियों का है। ८ अष्टमी कम हो (तो) अष्टमीका व्रत सप्तमी ७कों करे। और (जो) १४ चौदस कम हो (तो) १४ का उपवास। अमावस (वा) पूनम कों करे (इसका कारण) यह दोनुं तिथी समान है। (जैसे) चौदस बड़ी तिथि है। (तैसे) अमावस पूनमवौ चिरंतन पक्षीका दिन है। इसी से यह दो दिन बड़े हैं। यह दो दिन में उत्तम भव्यजीव यथा शक्ति पोसह पट्टिकमणादि धर्मकृत्य करे। पारणो उत्तर पारणो धर्मका उद्योत करे। (इहां विशेष कहते हैं)। इस समय में जैनी पत्ता प्रसिद्ध नहीं। मिथ्यात्वी के पत्तो से देखके सब तिथी गिणनेमें आती है। और इस पत्तेका कुछ प्रमाण नहीं। हर कोई तिथि कम हो जाती है। इसी से (जो) चौदस कम हो (तो) उपवास (ओ) पक्खी पट्टिक मण (निस्संदेह) पूनम १५ (तथा) अमावसकै दिन करे। पर तेरस चौदस के वितत्येकों न करे। और जो बेला करे तथा हरी ठोमै (तो) यह दोनुं दिनमानें ॥❀॥ अब कोई

बैर संबन्धरी की चौथ कम हो (तो) पंचमों ५ के दिन संबन्धरी पन्निक्कमण करै । परतो ज ३ के दिन कदापि का लै न करै । और जो चौथ ४ दो होय (तो) पहली चौथ संबन्धरी करै । और बी कोई तिथ दो हो (तो) पहली तिथ मान्यनी कहै । दूसरी लुंन तिथी रहौ । (दूसरी यह प्रमाण है) साठ ६० घन्टी की अखंन तिथी ठोन्नकै ! घन्टी अघ घन्टी को (दूसरी) तिथी कोण मानें । (इहां कोई कहै) अणें उदय तिथी मानें है । सूर्य जगै इहां तक कोई तिथी हो (तो) उस दिन उसी तिथ को मानें है (इसी से) जो दूसरी तिथ अघ घन्टी बी हो (तो) मानणें में क्या दोष है । (इसका उत्तर) जो पहलै दिन तीज मानी है (और) तो ज ३ के दिन चौथ बद्धत घन्टी भुगतै गा । तो पिण उस दिन तीज मानी जै गा । (इसीतरै) चौथ के दिन सूर्य जगै (इहां तक) घन्टी अघ घन्टी बी चौथ हो (तो) चौथ ४ मानी जै गा । (पर) जो तिथी दो होय । उस में तो पहली तिथ सूर्य उदय अस्त दोनु में रहौ । इसी से पहली तिथ ठोन्नकै दूसरी तिथ करणायुक्त नहीं । (और) कार्तिक मास बढै (तो) पहलै कार्तिक चौमासो करै । फाल्गुण बढै (तो) दूसरै फाल्गुण चौमासो करै । आसाढ बढै (तो) दूसरै आसाढ चौमासो करै ॥ आसाढ चौमासै को १३ चौदस सें । पचासे दिने चौथकों संबन्धरी पर्व करै । चौथ कम हो (तो) ५ पांचमके दिन संबन्धरी करै । आवण । भाद्रवो । आसोज । बढै (तो) पांचमासी चौमासो करै । जो आवण मास बढै (तो) दूसरै आवण

सुद ४कों संबधुरी करै । पर चौमासै की चौदशसे पचास दिन उल्लंघकै संबधुरी पर्य कदापि कालै न हो । यह कल्पसुख जी कै पहली समाचारी में प्रसिद्ध पाठ है । और चौमासै में आबण । भाद्रवो । आसोज । यह तीन मास बढै सो पंचमासी चौमासो करै । (और) मास दो हो (उस में) पहला मासका कृष्णपक्ष । (दूसरै मासका) शुक्लपक्ष । (ऐसे) एक मास में जो कल्याणक तिथी हो । उसीका व्रत पञ्चक्खाण करै । बीचका ३० दिन लुं जाण ना । यह सोस दिन में कल्याणकादिक के व्रत पञ्चक्खाण न हो सकौ । इसी से बिबेकी जीव सब तिथीका विचार स मऊकै व्रत पञ्चक्खाण करै तो व्रतभंग कभी नहो । यह तिथीका परमाण श्रीहरिभद्र सूरजी माहाराजकै किया ऊवा । तत्वतरंगणी ग्रंथमें प्रसिद्ध है (सो) इहां किञ्चित् लिखते हैं ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ तिहि पणणे पुब्ब तिही । कायवाजुत्त धम्मक ज्ञेय । चाउहसी विलोवो । पुन्नमिय पक्खि पण्डिक्कमणं ॥ १ ॥ तत्थेव पोसह विही । कायवा सव्वगेहि सुह हेज । नज्ज तेरसीइ कीरइ । जल्ला नाणाइणो दोसा ॥ २ ॥ सूरुगेदय पणियावि । तेरसी ज्जंति न पक्खियं कुज्जा । चाउम्मा सिय करणे । एसविही देसिउ समणा ॥ ३ ॥ तिहि बुढी ए पुव्वा । गहिया पणि पुन्न भोग संजुत्ता । इयरावि माण णिज्जा । परंघोवत्ति तत्तुल्ला ॥ ४ ॥ ॐ ॥

॥ॐ॥ (तथा) ज्योतिषकरं पाज्जन्ते इदं कथितमस्ती ॥ तिहि सहिया न अड्ढमि । तेरसि सहिया न पक्खिया

होई । पणिवै सहिया न कयावि । इइ भणिया वीयराने
 ण ॥ १ ॥ अइमि दिनंमि पायं । कायवा अइमीय पा एण
 कइयावि सत्तमंमि । नवमी ठड्डी न कायवा ॥ २ ॥ पनरस
 मिय दिवसे । कायळं पक्खियं तु पाएण । चाउहसेवि क
 इया । नज्ज तेरसि सोलसमे कहवि ॥ ३ ॥ ॥॥ इति
 औखरतरगच्छ शुद्ध सामाचारी संपूर्णम् ॥॥ ॥॥

॥॥ अथ खकुल प्रकाशणम् ॥॥

॥॥ हिव कही माहरो कुल प्रकासुं अहो भवियण
 तुम सुणो । कोरंटगच्छे चंद्रकुल अरु वयरि शाखा चित
 भणो । गुण गण जिनेसर सूरि गुज्जर विरुद पायो गुण
 करी । सोजयउ खरतर गच्छ मोहण प्रगट सज्ज भविहित
 धरो ॥ १ ॥ ॥॥ ॥॥ ॥॥ ॥॥

॥ ॥ गुरु गच्छ खरतर तेज दीपै विक्रमपुर सो है
 सही । जिनहंस सूरौसर तणें पद चंदसूरी जिन मही ।
 गणधार लक्ष्मीप्रधान पाठक नसुं मन उल्लास ए । वज्र
 रत्नसंग्रह किलकिलापुर किया मोहन भासए ॥ २ ॥ ॥॥

समाप्तोऽयं रत्नसागरः प्रथमभागः

